भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 — ९·१२



ओ३म् — कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री — सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १२ अङ्क १ — २८ नवम्बर १९८४ — वार्षिक शुल्क १५) — विदेश में ५ पौंड — एक प्रति ३० पैसे

तीसरी भेंट

जरा संभल के

लेखक—श्री भीमसैन दीवान गुड़गांव

नैपोलियन बोना पार्ट तब छात्र था। उसने अपने रहने के लिये एक नाई का मकान किराया पर ले रखा था। नाई की एक नवयुवती एवं अति सुन्दर कन्या थी। वह किसी न किसी प्रकार उसे अपने प्रेम पाश में फंसाना चाहती थी। इसलिए वह उसके सामने कई प्रकार कामुक क्रीडाएं करती रहती। नेपोलियन यह सब कुछ देखता, परन्तु उसका मन डोलायमान नहीं होता, प्रत्युत चुपचाप अपने अध्ययन में रत रहता। कुछ दिन बाद नेपोलियन सेना में भर्ती हो गया। शैशव में उसने बड़ी सतकर्ता से एवं घोर परिश्रम से अपने मानसिक तथा शारीरिक बल को सम्भाल कर रखा था, इसी से वह पच्चीस वर्ष की की अल्पायु में ही सेनापति के सम्मानित पद पर आसीन होगया।

एक दिन किसी कार्य वश उसे अपने उस पुराने विद्यालय जाने का अवसर मिला, जहां उसने बचपन में शिक्षा प्राप्त की थी। वह उस नाई की लड़की से भी मिला और उससे पूछा कि आपके मकान में कभी नवयुवक छात्र किराये पर रहता था, जिसे वह छेड़छाड़ करती रहती थी। क्या उसकी तुम्हें याद है? यह सुनकर उस लड़की ने मुंह बना कर रूखेपन से उत्तर दिया कि वह तो एक किताबी-कीडा, अर्धविक्षिप्त तथा अरसिक नवयुवक था। नेपोलियन ने उसे कहा—मैडम! यदि वह युवक वासना के प्रवाह में बह जाता, तो वह आज आपके सम्मुख एक सेनापति के रूप में न खड़ा होता। यह है—जीता-जागता उदाहरण पैर सम्भाल कर रखने का।

वर्तमान और भविष्य में तुलना करते हुए हम सम्भवत: ऐसा मानते हैं कि भागना (पलायन) ही उन्नति है। एक नवयुवक अपनी तीस वर्षीय आयु में ३५ शादियाँ कर चुका है। अब कारागार की लोह शृंखलाओं में बन्द होकर शादी के मजे ले रहा है। क्या सुन्दर प्रतीत था हम भारतीयों का। शादी को 'खाना-आबादी' कहकर सम्बोधित किया जाता था। विवाह दो आत्माओंका पुनीत मिलन समझा जाता था। मगर रूस और दूसरे देशों पर दृष्टिपात करें। वहां शादियां मजाक बन कर रह गई हैं। बात बात पर तलाक (सम्बन्ध-विच्छेद) की धूम मची हुई है। योरुप की इस घृणित सभ्यता को देखकर स्व० अल्लामा सर मोहम्मद 'इकबाल' ने क्या ही अच्छा कहा था—अरे योरुपियनो!

तुम्हारी तहजीब आप अपने खंजर से ही खुद कुशी करेगी।
जो शाखे नाजुक पे आशियाना बनेगा, नापायदार होगा॥

वर्तमान के आंकड़ों और 'हिन्दुस्तान टाइम्स' देहली के अनुसार एक हजार में १३० औरतें मर्दों के मुकाबले अच्छे वेतन, सुन्दर आजीविका के कारण विवाह से पराङ्मुख हो जाने में रजामन्द हैं। उन्हें विवाह से अरुचि है। सम्पादकीय के अनुसार वहां सोसायटी की गलत व्यवस्था जोर जबरदस्ती की शादी, अचानक शादी, तलाक—ये एक मजाक बन गए हैं। यही स्थिति हर जगह पनप रही है। 'जरा सम्भल के' की उक्ति न ख्याल में आई न, ही समझ में बैठी। 'जल्द बाजी' जीवन का अभिन्न अंग बन गई है। खेद बहुत है। कहां तो विवाह मृत्यु उरान्त भी पत्नी-पति दोनो के लिये इबादत (उपासना) थी। कहां अब सबर (शान्ति) का पैमान (वर्तन) लबरेज (लबालब) हो गया है। जरा सम्भल के चलने में कदम जमते, उन्नति पथ पर अग्रसर होते हैं। जीवन भर की धरोहर होते, यादगार बनते और जन्म-जन्मातर की ये रिश्ते मिसाल बनते हैं। मगर अब प्रश्न ही दूसरा हो गया है। स्कूल देखो, बाजार देखो, कारखाने देखो—हर स्थान सम्प्रति विवाह स्थल बना हुआ है। प्रेम विवाहो की भरमार है। सोच विचार, गुणों की पडताल खून को पवित्रता आदि सभी छुट्टी पा रहे हैं। फर्क या कमी है उसी सम्भल की जो हम से शनै शनै. दूर होनी जा रही है। नेपोलियन बोना पार्ट का उदाहरण कितना शिक्षाप्रद तथा शानदार उदाहरण था, जिसने तमीज (सभ्यता या जांच) को ही वजन दिया। कहा तो हम भगवान से वायदे करते हैं। आशीर्वाद लेने हेतु प्रार्थनाएं करते हैं और कहां अब कुतो को खातिर, धन-दौलत को खातिर, इज्जत और ईइज्जती की खातिर गांठे तोडने मे नाम कमाए जा रहे हैं। तरतीब (सुन्दरक्रम) तरकीब (उपाय) का कारण है। आयुर्वेद में औषधि को अधिक रगडने से उसमे एक विशेष ताकत पैदा होती है। होम्योपैथी में पोटेंसी की बुनियाद भी यही सिद्धान्त है।

सम्भाल कर चीज की बनावट, मिलावट, शक्ति और नवैयत (प्रकार) बनाती है। शरीर एक पूर्ण कारखाना है। इसमें सभी यन्त्र फिट है। अन्तर केवल प्रत्येक विशेषता को स्थान देने का है। जीवात्मा के मानव से नया मानव ऋषिदेव मानव बनते हैं। यही दिव्य आत्माएं ऋषि आत्माएं कहलाती हैं। विराट् में जो विशेषाएं विद्यमान हैं, वे कभी छोटी शक्ल में हरपिण्ड मे भी मौजूद हैं। अन्तर केवल उनके उन्नत करने प्रयोग करने, उनसे काम लेने, लाभ उठाने, सम्भालने और उस सम्भाल से उन्नत होने का है। मनुष्य यह नहीं सोचता कि जब वह विवाह करता है, तो अग्निदेव को साक्षी बनाकर क्या क्या प्रतिज्ञाए करता है। परन्तु थोडी सी भूल में फँसकर अपने ही जीवन, अपनी ही आयु को समाज मजाक बना लेता है। आजकल जीवन में दूरदर्शिता, शान्ति, सहनशीलता रही नही। चलना, फिसलना एक कारीगरी बन गई है। उस्तादी हो गई है। जीवन को स्थिरता देना, कदम जमाकर रखना, एक यादगार पैदा करता है। जिन्दगी कभी कभी इन्सानी चोला को सरफराज (उन्नत) करके मानो वरदान प्राप्त करना है। भविष्य में एक माइल स्टोन (संगे-मील बनाना है, अपनी यादगार पैदा करना है—अपने लिये और अपनी आने वाली सन्तति (औलाद) के लिये।

अब तो तलाको (सम्बन्ध-विच्छेदो) से बच्चे अनाथ (यतीम) बनते जा रहे हैं। संस्कार, माता पिता की जीती जागती तस्वीर बोलती हकीकत का तो नाम मिटना जा रहा है। सन्तान का उद्देश्य सदा के लिये अपने परिवार का नाम पैदा कर जाना है। एक सिलसिला बना

(शेष पृष्ठ ६ पर)

दक्षिण-पूर्वी एशिया की सांस्कृतिक यात्रा

(लेखक—डा० सत्यकेतु विद्यालंकार)

(गताक से आगे)

लघु इन्डोनेसिया के समीप ही एक भव्य हिन्दू मन्दिर है। इसे सुदूर देश के हिन्दू किस ढग से दैनिक प्रार्थना उपासना करते हैं, इसे देखने का अवसर हमें इस मन्दिर में जाकर प्राप्त हुआ। सायंकाल का समय था। साठ से अधिक नर नारी वहां उपस्थित थे। मन्दिर के प्रांगण में एक ऊंचे चबूतरे पर सब बैठे हुए थे। हम भी एक ओर बैठ गये प्रार्थना उपासना प्रारम्भ हुई। ओ३म् भूर्भुव स्वः के गायत्री मन्त्र के साथ सन्ध्या के मन्त्रों का उच्चारण प्रारम्भ हुआ। सब उपस्थित नर नारियों ने समवेत स्वर में वेद के मन्त्रों तथा पुराण, महाभारत आदि के श्लोको से प्रार्थना उपासना की। जकार्ता के हिन्दुओं की संध्या के बाद हम सबने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा विहित विधि से सन्ध्या तथा प्रार्थना मन्त्रों का पाठ किया। कैसा अद्भुत दृश्य था। हम इन्डोनैसिया की भाषा नहीं समझते थे और वहां के लोग हिन्दी से अनभिज्ञ थे, पर हमें परस्पर जोड़ने वाली हम सब में एकात्मता की भावना उत्पन्न करने वाली वेदशास्त्रो की वे धार्मिक एव सांस्कृतिक परम्पराएं थी, जिन्हें हमने समान रूप से विरासत में प्राप्त किया था। ओ३म् के नाम, गायत्री मन्त्र तथा वैदिक सूत्रों व महाभारत के श्लोकों ने हमें इस ढंग से एक मजबूत सूत्र में बांध रखा था, कि सैकड़ों वर्ष बीत जाने पर भी उसके सुदृढ बन्धन में ढील नहीं आई थी। श्री पुण्यात्मज इस अवसर पर हमारे साथ थे। वे भी अपने देश के हिन्दुओं के पूजा पाठ में अन्य पण्डितो के समान ही भाग ले रहे थे। पालियामेंट के सदस्य होने के नाते उनमें अपने उच्च व श्रेष्ठ होने की भावना प्रादुर्भूत नहीं हुई थी। हमारे स्वागत में जकार्ता के हिन्दू मन्दिर में जलपान की भी व्यवस्था की गई थी। हमने अपने इन्डोनेसिया हिन्दू भाईयों के साथ बैठकर फल, मिष्ठान, चाय, दूध आदि ग्रहण किये। सब कोई यह अनुभव कर रहे थे, कि दो सुदूरवर्ती देशों के हिन्दू सैकड़ों वर्षों के पश्चात् आज फिर मिलकर एक साथ बैठे हैं। धर्म और संस्कृति की उनमें ऐसी एकात्मता है, जिसने हजारों मीलों की दूरी शिथिल कर सकी है और न सैकड़ों वर्षों का अन्तराल।

दो दिन जकार्ता का परिभ्रमण कर हम लोग जकार्ता गये। यह मध्य जावा का प्रधान नगर है। बोरोबदूर की विशाल बौद्ध महाचैत्य उसके समीप ही है। उसकी गिनती संसार के सात आश्चर्यों में की जाती है। जिसके देखने के लिए अमेरिका, यूरोप, जापान आदि सब देशों से लाखों पर्यटक प्रतिवर्ष लोग जकार्ता जाते हैं। इन्डोनेसिया का एक अन्य द्वीप सुमात्रा है, जिसके शैलेन्द्र वंशी राजा बौद्ध धर्म में अनुयायी थे। इनकी राजधानी श्रीविजय थी। शैलेन्द्र राजा बड़े प्रतापी थे। अपनी शक्ति का विस्तार करते हुए आठवीं सदी में उन्होंने जावा को भी जीत लिया था। श्रीविजय (सुमात्रा) के इस वैभवशाली बौद्ध सम्राटो ने ही जावा में जोग जकार्ता के समीप बोरोबदूर के महाचैत्य का निर्माण कराया था। यह महाचैत्य नौ विशाल चबूतरों या चक्करो से मिलकर बना है, जिनमें से प्रत्येक ऊपर का चक्कर अपने से नीचे वाले चक्कर की तुलना में थोड़ा भीतर की ओर सिमटा हुआ है। नौ चक्करों या चबूतरों में से निचले छह समकोण चर्तु भुज के रूप में हैं। और ऊपर के शेष तीन चक्कर गोलाकार हैं। सबसे निचले चबूतरे या चक्कर की लम्बाई ४०० फीट है, और सबसे उपर वाले की ९० फीट। महाचैत्य के चबूतरों की दीवारों पर रूपावलियां बनाई गई हैं, जिनमें बुद्ध की जीवनी को प्रस्तरों पर उत्कीर्ण किया गया है। मूर्तिकला की दृष्टि से ये रूपावलियां अत्यन्त उत्कृष्ट हैं। इस प्रकार जो चित्रावलियां बोरोबदूर के महाचैत्य पर उत्कीर्ण हैं, उन्हें यदि एक साथ एक पंक्ति में लगा दिया जाए, तो उनकी लम्बाई साढे तीन मील हो जाएगी। चित्रावलियों के बीच बीच में गवाक्ष बने हैं। जिनमें से प्रत्येक में ध्यानी बुद्धों की एक एक मूर्ति प्रतिष्ठापित है। सारे महाचैत्यमें ऐसी ४३२ मूर्तियां हैं। हमारी मण्डली में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के चित्रकार श्री खेन्द्रे भी थे। वे इन मूर्तियों और रूपावलियों को देखकर इतने अभिभूत हो गये, कि उन्हें न अपना ध्यान रहा और न समय का। वे एक टक हो इस अद्भुत महाचैत्य और उसकी उत्कृष्ट कला को देखते रह गये।

जोग जकार्ता के क्षेत्र में कितने ही प्राचीन हिन्दू मन्दिर भी विद्यमान हैं। प्राम्बनन का शिव महादेव का मन्दिर इनमें सबसे अधिक महत्त्व का है। यह मन्दिर एक ऊंचे विशाल चबूतरे पर खड़ा है, और इसके चारों ओर चार द्वार हैं। मन्दिर की दीवारों को अलंकृत करने के लिए प्रस्तरों पर पत्र पुष्पों आदि की आकृतियों को उत्कीर्ण किया गया है, और रामायण की सम्पूर्ण कथा रूपावलियों के रूप में अंकित की गई है। पौराणिक देवी देवताओं की भी कितनी ही मूर्तियां मन्दिर की दीवारों के साथ निर्मित हैं। शिव महादेव के इस विशाल एवं गगन चुम्बी मन्दिर के दोनों ओर दो अन्य मन्दिर हैं और उनसे कुछ हटकर छोटे छोटे मन्दिरों की शृंखला ने चारों ओर से उन्हें घेरा हुआ है। इस प्रकार मुख्य मन्दिर के अतिरिक्त जो अन्य मन्दिर खण्डित या अखण्डित दशा में वहां विद्यमान हैं, उनकी संख्या २४० है। हम उस समय की कल्पना कर रोमान्चित हो गये जब कि ये सब हिन्दू मन्दिर पूर्ण व अखण्डित दशा मे थे, और जब इनमें पूजा पाठ के लिये श्रद्धालु हिन्दुओं की भीड़ रहा करती थी। उस समय भगवान् शिव महादेव के विशाल मन्दिर का यह सुविस्तृत परिसर कितना भव्य एवं आकर्षक होगा, इसकी कल्पना से ही चित में एक सात्विक भावना तथा श्रद्धा का प्रादुर्भाव होने लगता है।

शिव महादेव के विशाल मन्दिर के अतिरिक्त अन्य भी बहुत से मन्दिर प्राम्बनन के क्षेत्र में हैं। इनमें चण्डी कालसन, चण्डी सरी और चण्डी मेन्दुत के मन्दिर उल्लेखनीय हैं। हमने इन पर भी दृष्टिपात किया और यह तथ्य स्पष्ट रूप से हमारे सम्मुख आ गया कि अब से कुछ सदी पूर्व तक सम्पूर्ण जावा में हिन्दू धर्म का प्रचार था। अब जावा के बहुसंख्यक निवासी इस्लाम को अपना चुके हैं, पर उन्होंने अपनी संस्कृति का परित्याग नहीं किया है। प्राम्बनन के मन्दिरों का दर्शन करते हुए हमने एक कृषक परिवार से बातचीत की। पूछने पर ज्ञात हुआ कि वे सब मुसलमान हैं। पर उस परिवार की पुत्रियों का नाम सु श्री था और सन्तान के दुष्यन्त तथा सुकीर्ति। जावा में सर्वत्र यही दशा है। हम चाहते थे, कि पूर्वी जावा भी जाएं। दसवीं सदी के द्वितीय चरण में इन्डोनेसिया की राजशक्ति पूर्वी जावा में केन्द्रित होनी प्रारम्भ हो चुकी थी। वहां एर्लङ्गदेव, विजयोतुङ्गदेव, कृतनगर आदि अनेक ऐसे राजा हुए, जिनके प्रताप के कारण जावा का बहुत उत्कर्ष हुआ। ये सब राजा हिन्दू धर्म के अनुयायी थे, और इन्होने बहुत से भव्य व विशाल मन्दिरो का निर्माण कराया था। पूर्वी जावा के इन मन्दिरों में सुराबाया के मन्दिर सब से प्रसिद्ध हैं। समय के अभाव से हम इनका अवलोकन नहीं कर सके। हम शीघ्र से शीघ्र बाली द्वीप जाना चाहते थे जो वर्तमान समय में भी वस्तुत: एक हिन्दू प्रदेश है। २८ सितम्बर को तीसरे पहर हम बाली की राजधानी पहुँच गये थे।

क्रमश:

कन्या की आवश्यकता

हमारे एक आर्यसमाज के सदस्य बिना दहेज के आर्ष विवाह करना चाहते हैं। वह वैश्य (अग्रवाल) हैं। उनका गोत्र गर्ग है। उनका सुपुत्र स्टेट बैंक हरयाणे में कार्य करता है। वेतन १३०० रुपये है। उस के लिए लड़की चाहिये। लड़की किसी राष्ट्रीयकृत बैंक में लगी हो, अथवा दिल्ली में अध्यापक हो। इच्छुक जन अपनी आर्यसमाज मुख्यालय मंत्रीजी से सम्पर्क करें।

सम्पादकीयः-

सर्वहितकारी १२वें वर्ष में

प्रस्तुत अंक के साथ आपका प्रिय पत्र सर्वहितकारी १२वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। आज से ११ वर्ष पूर्व दयानन्दमठ रोहतक के एक छोटे कमरे में इसका प्रकाशन आचार्य वेदव्रत जी शास्त्री ने आर्य नेताओं के आशीर्वाद एवं सहयोग से ४ पृष्ठों से आरम्भ किया था। उस समय हरयाणा आर्यसमाज की अवस्था आज से भिन्न थी। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उस समय प्रधान स्वा. इन्द्रवेश थे। अतः सर्वहितकारी को सभा को आर्थिक सहायता न मिल सकी। १००-१०० रुपये के कुछ आजीवन सदस्य बनाये गये और छपाई, डाक व्यय तथा कागज के खर्च को छोड़कर इस पर किसी प्रकार का आर्थिक बोझ नहीं डाला जाता था। आर्यसमाज की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा के आदेश तथा पंजाब सभा के सर्वसम्मत प्रस्तावानुसार १९७५ में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को स्वीकृति मिलने पर सर्वहितकारी को सभा का मुख-पत्र बनाया गया। तब से सर्वहितकारी अपने नाम के अनुरूप आर्यसमाज के प्रचार, प्रसार कार्य में बढ़-चढ़ कर अपनी भूमिका निभा रहा है। अपने सीमित साधनों के अनुसार वर्ष भर में ३, ४ विशेषांक प्रकाशित होते हैं। प्रत्येक आर्य पर्व के अवसर पर किसी न किसी विद्वान् लेखक से लेख लिखवाकर पाठकों की ज्ञान-वृद्धि हेतु दिये जाते हैं।

हरयाणा प्रदेश में आर्यसमाज की गतिविधियों के अतिरिक्त अन्य प्रदेशों से भी आर्यसमाज सम्बन्धी प्रचार का सूचनाएं प्रकाशित की जाती हैं। हम यत्न करते हैं कि विदेशों में भी जहां वैदिक धर्म प्रचार सम्बन्धी कार्य होते हैं, उनकी भी सूचना अपने पाठकों को देने का प्रयत्न किया जा रहा है।

शराब तथा दहेज आदि की सामाजिक बुराइयों को समाप्त कराने के आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण योगदान सर्वहितकारी ने दिया है। ग्राम बालावास जिला हिसार में शराब के ठेके को बन्द करवाने के लिये जन मत तैयार करने में पूरी शक्ति के साथ प्रति सप्ताह आर्यसमाज की गतिविधियां प्रकाशित की गई। इसके प्रचार फलस्वरूप जनशक्ति के सम्मुख धन शक्ति की हार हुई। इसी प्रकार ग्राम बादशाहपुर जिला गुड़गाव में शराब के ठेके को जिसके संचालक शराबी तथा उग्रवादी थे, को शराब विरोधी जनता ने आग लगाकर समाप्त कर दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से शराबबन्दी आन्दोलन के अन्तर्गत ग्रामीण पंचायतों से प्रस्ताव पारित करवाकर प्रधानमन्त्री तथा मुख्यमन्त्री हरयाणा को भिजवाये गये। इस कार्य में भी सर्वहितकारी के माध्यम से जनमत तैयार किया गया। सभा कार्यालय में प्राप्त पत्रों के अनुसार अनेक स्थानों से पंचायतों ने आगामी वर्ष से शराब के ठेके न खोलने के प्रस्ताव पारित किये हैं। राष्ट्रीय विशेषकर हरयाणा के हितों की रक्षा करने तथा उग्रवादी अकालियों की राष्ट्र विरोधी चालों का भाण्डा फोड़ने में सर्वहितकारी पहली पंक्ति में खड़ा रहा।

२८ दिसम्बर को लोकसभा के चुनाव हो रहे हैं। इस सम्बन्ध में भी जनता का मार्ग दर्शन करने हेतु गत सप्ताह सम्पादकीय लेख द्वारा निवेदन किया गया है कि मतदाता अपने अपने लोकसभाई क्षेत्र में चरित्रवान् तथा श्रेष्ठ प्रत्याशी का समर्थन तथा भ्रष्ट, दुराचारी तथा स्वार्थी प्रत्याशी का विरोध करें।

आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं तथा समाजसेवी पाठकों से अनुरोध है कि वे सर्वहितकारी की प्रसार संख्या में वृद्धि करने के लिये २०० रुपये देकर इसके आजीवन सदस्य बनकर अपना सहयोग प्रदान करें। प्रसन्नता की बात है कि सभा के अनुभवी तथा पुराने उपदेशक पंडित चन्द्रसैन जी वैदिक मिशनरी तथा नवयुवक क्रान्तिकारी सभा उपदेशक पं० अत्तरसिंह आर्य, नये सदस्य बनाने के कार्य में पूरी लगन तथा परिश्रम से कार्य कर रहे हैं। पं० चन्द्रसैन जी जहां सर्वहितकारी के पुराने सदस्यों से शुल्क प्राप्त कर रहे हैं वहां प० अत्तरसिंह जी आर्य नये सदस्य बनाकर सर्वहितकारी परिवार में वृद्धि कर रहे हैं। सभा के अन्य उपदेशक भी इस कार्य में जुटे हुए हैं।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरद्वार के व्यवसायाध्यक्ष डा० हरिप्रकाश जी और महाशियां दी हट्टी नई दिल्ली के संचालक महाशय धर्मपाल आर्य महानुभावों ने भी वार्षिक विज्ञापन के रूप में आर्थिक सहायता देकर अनुकरणीय योगदान दिया है। इसके प्रति सभा आभारी है।

आशा है १२वें वर्ष में सर्वहितकारी कार्यों में सभी विघ्न बाधाओं का सामना करते हुए आगे बढ़ता रहेगा। हमें आर्य जनता का यथापूर्व सहयोग मिलना चाहिए, ऐसी हमारी कामना है।

रणजीतसिंह सभा मन्त्री

ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी द्वारा नरवाना तहसील में वेद प्रचार

ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी ने १३ से १६ नवम्बर तक ग्राम डूमरखां कलां, भील धन्नौरी, काबरछा व आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तथा आर्य कन्या महाविद्यालय नरवाना मे ४ दिन वैदिक धर्म प्रचार किया।

प्रचार के आरम्भ में श्री हरिशकुमार जी आर्य नरवाना तथा श्री महेन्द्रसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज गांव भील के मधुर भजन होते और फिर ब्र० जी का अनेक विषयों पर जैसे—शराब, मांस, गोहत्या, पाखण्ड, बीड़ी, सिग्रेट, तम्बाकु, आतंकवादियों द्वारा की जा रही गलत कार्यवाही के प्रति क्रान्तिकारी प्रवचन हुए। पुरुष, स्त्री व बच्चों की उपस्थित काफी संख्या में होती था जो हरीश कुमार व महेन्द्रसिंह के भजन तथा ब्र० जी का क्रान्तिकारी प्रवचन सुनकर मन्त्र मुग्ध हो जाते थे।

ब्रह्मचारी जी के साथ जो अन्य सहयोगी थे डूमरखां कला से श्री धर्मवीर आर्य, रामप्रताप आर्य, भील से श्री महेन्द्रसिंह आर्य, श्री वीरभान आर्य, श्री हवासिंह आर्य, नरवाना से श्री रामकुमार जी आर्य मन्त्री आर्यसमाज, श्री हरीशकुमार आर्य, श्री वीरभान आर्य, काबरछा से श्री सेठ महेन्द्रसिंह आर्य तथा धरोदी से एक अध्यापक आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

ब्र० आर्य नरेश जहां भी प्रचार हेतु पहुँचे, ये व्यक्ति साथ होते थे और आर्यसमाज अमर रहे, वेद की ज्योति जलती रहे, ओ३म् का झण्डा उच्चा रहे, बाप शराब पीता है, बच्चे भूखे मरते हैं। बीड़ी, सिग्रेट, मांस अण्डा खाना पीना छोड़ दो देश के गद्दारों को गोली मारो फांसी दो। महर्षि दयानन्द गोमाता व भारत माता के जयकारों से आसमान को गूंजा दिया, जिसे सुनकर जनता में एकदम जोश छा जाता और काफी संख्या में पुरुष, स्त्री व बच्चों ने इकट्ठे होकर वैदिक धर्म प्रचार सुना तथा ज्ञान गंगा में गोते लगाये।

प्रचार मन्त्री आर्यसमाज नरवाना

शोक समाचार

श्री जयभगवान् आर्य कोषाध्यक्ष आर्यसमाज सफीदों जि० जीन्द की माता सरतीदेवी आर्या का २५-११-८४ रविवार को शरीर पूरा हो गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति दे तथा उनके परिवार इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

मन्त्री आर्यसमाज सफीदों

आर्यसमाज पानीपत की सफल शताब्दि

अनेक अनुकरणीय यज्ञ एवं ग्रन्थ-प्रकाशन

आर्यसमाज (बड़ा बाजार) पानीपत को स्थापित हुए सौ वर्ष हो चुके हैं, आर्य समाज (बड़ा बाजार) पानीपत का शताब्दी समारोह बड़ी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ।

रविवार १४-१०-८४ का दृश्य भव्य था, जबकि आर्यसमाज के सम्पूर्ण भारत के उच्चस्तरीय विद्वानों को, जिन्होंने अपना जीवन वैदिक साहित्य के अवगाहन में झोंक दिया, सम्मानित किया गया। जन-समाज में विशाल मंच पर बैठे विद्वानों को श्रद्धा से फूल मालाओं के साथ स्वागत किया प्रत्येक को १५०० रुपये व शाल, दो पुस्तकें, प्रशस्ति-पत्र तथा आने जाने का मार्ग व्यय दिया। सम्मानितों में एक थीं अमर शहीद श्री रामप्रसाद बिस्मिल की बहन श्रीमती शास्त्री देवी जी भी हैं।

समारोह के आयोजकों ने ग्राम जनता को जानकारी के लिए आग्रयणेष्टि (नवपूस्येष्टि) तथा पौर्णमासेष्टि यज्ञों को कराने की व्यवस्था की। इन यज्ञों को कराने के लिए दक्षिण के विद्वान श्री रंगनाथ कृष्ण सल्लूकर वाजपेयी को महाराष्ट्र से, श्री अग्निहोत्री रामानुज ताताचार्य कुम्भकोणम को तमिलनाडू से, तथा पं० विश्वनाथ जो होत्री को आंध्र-प्रदेश से आमन्त्रित किया गया। इनकी देख-रेख में यज्ञ किये गए। इन विद्वानों के विचारों को जनता ने अपार श्रद्धा व शांति से सुना यद्यपि वे भाषण संस्कृत भाषा में थे।

आर्यसमाज की शताब्दियों व अन्य शताब्दियों के अवसरों पर स्मारिका निकालने की परम्परा में आर्यसमाज, पानीपत ने एक नई परम्परा स्थापित की है। स्मारिका के स्थान पर एक ग्रंथ प्रकाशित किया है। धर्म और संस्कृति नामक इस ग्रथ में वेद विषयक उच्चकोटि के विद्वानों के लेख हैं। लेखों की विभिन्नता इसी से स्पष्ट होती है कि उसमें वैदिक गणित जैसे लेखपूर्ण आयग्रामों के साथ है। इसके अतिरिक्त यह पुस्तक व्यमद चित्रों व कविताओं के साथ एक पृथक विशेषता रखती है। आर्यसमाज ने यह पुस्तक अर्थ को दृष्टि से नहीं अपितु वैदिक साहित्य के प्रचार की दृष्टि से प्रकाशित की है।

आर्यसमाज ने इस अवसर पर नेत्रहीनों के लिए भी आयोजकों ने ब्रेनलिपि में आर्याभिविनय का प्रकाशन किया जो शीघ्र ही नेत्रहीनों के हाथों में पहुंच जाएगा। हैदराबाद से आमन्त्रित सृष्टि-विज्ञान की प्रदर्शनी भी दर्शनीय थी जिसमें वेदानुसार सृष्टिकाल की गणना चित्रित की गई थी।

शताब्दी तथा गोहत्या सम्बन्धी प्रस्ताव पारित हुए तथा लोगों ने शराब न पीने व मांस न खाने का प्रण किया।

शताब्दी समारोह में सम्मिलित विद्वानों की अनेक विषयों पर गोष्ठिया हुई थी 'विद्वत् परिषद्' के नाम से एक परिषद् का गठन हुआ। स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को सर्वसम्मति से इस परिषद् का प्रधान मनोनित किया गया।

"ऋषि सन्देश"

देशराज खीरबांट, २६० इन्दिरा कालोनी, रोहतक

२४ अक्तूबर के अंक में मैंने लिखा था कि वेद पर आधारित जो ग्रंथ ऋषियों द्वारा रचे गये हैं, वे सब ऋत हैं। मेरा भाव यह था कि उनमें जो कुछ लिखा गया है उनमें परिवर्तन नहीं हो सकता और हम लोगों को वेद उपदेशों के अनुकूल अपना जीवन को बनाना चाहिए। परन्तु मनुष्य कृत ग्रन्थों को वेद नहीं माना जा सकता। वेद तो केवल चार ही हैं जिनका उपदेश ईश्वर ने चार ऋषियों द्वारा दिया।

वेदों के उत्पन्न करने में ईश्वर का क्या प्रयोजन था ?

यदि परमेश्वर अपनी विद्या का हम लोगों के लिए उपदेश न करे तो विद्या का जो परोपकार करने का गुण है, वह समाप्त हो जाता है। इससे परमेश्वर ने अपनी वेद विद्या का हम लोगों के लिए उपदेश करके सफलता सिद्ध की है, क्योंकि परमेश्वर हमारे माता-पिता के समान है। हम लोगों—जो उसकी प्रजा है उन पर नित्य परमेश्वर कृपा दृष्टि रखता है। जैसे अपनी संतानों के ऊपर पिता माता सदैव करुणा को धारण करते हैं कि सब प्रकार से हमारे पुत्र सुख पावें, वैसे ही ईश्वर भी सब मनुष्योंदि सृष्टि पर कृपा दृष्टि सदव रखता है, इससे ही वेदों का उपदेश हम लोगों के लिए किया है। यदि परमेश्वर अपनी वेद विद्या का उपदेश मनुष्यों के लिए नहीं करता तो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि यथावत किसी को प्राप्त न होती, उसके बिना परम आनन्द भी किसी को प्राप्त न होता। जैसे परम कृपालु ईश्वर ने कन्द, मूल, फल और घास आदि छोटे-छोटे पदार्थ भी रचे है। सो ही ईश्वर सब सुखों के प्रकाश करने वाली सब सत्य विद्याओं से युक्त वेदविद्या का उपदेश भी प्रजा के सुख के लिए क्यों न करता ?

इससे क्या सिद्ध हुआ कि यदि हम सुखमय जीवन व्यतीत करते हुए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि करना चाहते हैं तो केवल एक ही मार्ग है कि ईधर-उधर भटकना छोड़कर वेदों को जान कर उस परम परमात्मा की शरण में आवे। जिसका आश्रय ही मोक्ष-सुख दायक है और जिसका न मानना मृत्यु आदि दुःखों का हेतु है।

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

सर्वहितकारी के गताकों में हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन किया गया है कि जिन आर्यसमाजों ने अभी तक अपने यहां वार्षिक उत्सव अथवा वार्षिक प्रचार नहीं करवाया है, वे सभा को पत्र लिखकर प्रचार की व्यवस्था करवा लेवें। वेदप्रचार तथा दशांश का वर्ष समाप्त होने जा रहा है। अतः आर्यसमाजें वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी आदि का प्राप्तव्य धन सभा प्रचारकों अथवा मनीआर्डर द्वारा यथाशीघ्र सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें, ताकि चुनाव की तिथि निश्चित करने पर प्रतिनिधियों को समय पर फिजस्टा आदि भेजा जा सके।

जिन आर्यसमाजों से अभी तक प्राप्तव्य धनराशि प्राप्त नहीं हुई है, उनके पास सभा कार्यालय से पत्र लिखे जा रहे हैं।

आर्यसमाजों को अपने क्षेत्र के ग्रामों से शराबबन्दी तथा हरयाणा के हितों की रक्षा हेतु प्रस्ताव भी पास करवाकर शीघ्र सरकार के पास व एक प्रति सभा कार्यालय में भिजवाने का कष्ट करें। दोनों प्रस्तावों का प्रारूप आर्यसमाजों को डाकद्वारा पूर्व भेज दिया गया था। आशा है आर्य समाजें इस ओर अवश्य ध्यान देंगे।

रणजीतसिंह
सभा मन्त्री

अपने बच्चों को धार्मिक बनायें

धर्म प्रवेशिका का प्रकाशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की आर्य विद्या परिषद् की ओर से आर्य स्कूलों में ५ वीं तथा ६ वीं कक्षाओं में धार्मिक शिक्षा पढ़ाने के लिए "धर्मप्रवेशिका" पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। इसका लेखन सभा के सुयोग्य मन्त्री डा० रणजीतसिंह जो कि शिक्षा शास्त्री हैं ने किया है। एक प्रति का मूल्य २ रुपये है। अतः अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए इस पुस्तक को मंगवाकर धर्म लाभ उठावें।

प्राप्ति स्थान
प्रस्तोता, आर्य विद्या परिषद् हरयाणा
सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक

आर्य समाज की गतिविधियाँ

हिसार क्षेत्र में वैदिकधर्म के प्रचार की धूम

भारत मूल रूप से ग्रामों में बसता है। गांव के निवासी नरनारियों में अपने धर्म के प्रति विशुद्ध एवं अगाध श्रद्धा है। ग्रामीण लोगों के हृदय में विद्यमान धर्म के बीज को प्रचार की जलधारा से विकसित किया जा सकता है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुये आर्यसमाज की पहली पीढ़ी पं० बस्तीराम, चौ० ईश्वरसिंह, स्वामी नित्यानन्द, स्वामी भीष्म आदि कोसों पैदल चलकर बिस्तर आदि सिर पर धर कर, भूखे प्यासे रहकर हरयाणा के गांव गांव में वैदिक धर्म का नाद बजाते रहे हैं। अपने पूर्वजों के पद चिन्हों पर चलते हुये हमें भी वैदिक धर्म का गांव गांव में प्रचार करना चाहिये। इसी पवित्र भावना से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से ग्राम कंवारी, सातरोड़ कलां, धमाना, उमरा, बूरा, बालावास गांव में वैदिक धर्म के प्रचार का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य (उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा) स्वामी आनन्द मुनि पं० तेजपाल भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, ब्र० नारायण देव, ब्र० संजयकुमार, स्वामी कीर्तिदेव, स्वामी रामानन्द जी, महाशय सूण्डाराम, महाशय रिसालसिंह, महाशय सूबेसिंह, ब्रह्मचारिणी बहन कलावती, बहन सावित्री आदि विद्वान्, संन्यासी, उपदेशक महानुभाव के ईश्वर, वेद, दहेजप्रथा, शराब, नारी शिक्षा, गुरुकुल पद्धति वैदिक संस्कृति, भारत की महिमा, चरित्र निर्माण, ब्रह्मचर्य पालन, वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था आदि विषयों पर महत्त्वपूर्ण प्रवचन एवं शिक्षाप्रद भजन हुए। प्रत्येक गांव में प्रतिष्ठित परिवार के लोगों ने इन आर्य विद्वानों का हृदय से स्वागत किया और सभी ने ये अनुभव किया आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है जो कि देश में बढ़ते हुये अत्याचार, अन्याय, मतमतान्तर, गुरुडम, पाखण्ड, व्यभिचार, दहेज, शराबखोरी; दुराचार आदि को हटा कर रामराज्य की स्थापना कर सकती है। सभा को ४५० रु० वेदप्रचार के मध्य दान दिया गया।

अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी सभा उपदेशक

दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर के भजनोपदेशक विभाग में प्रवेश

आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री पन्नालाल जी पीयूष संगीताचार्य के आचार्यत्व में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर में संगीत (भजनोपदेशक) का शिक्षण शीघ्र आरम्भ किया जा रहा है। अतः इच्छुक व्यक्ति जो वैदिक धर्म प्रचार में रुचि रखते हों वे अपना प्रार्थना पत्र "मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक" के पते पर शीघ्र भेजें।

प्रत्याशी की आयु १६ से ३० वर्ष के बीच में होनी चाहिए।

शिक्षा—संस्कृत विषय के साथ हाई स्कूल और उसके समकक्ष होनी चाहिये।

चयन के उपरान्त प्रविष्ट किये जाने वाले छात्रों को भोजन तथा आवास की निःशुल्क सुविधा प्रदान की जायेगी।

प्रार्थना पत्र भेजने की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर १९८४ है।

रणजीतसिंह
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक—१२४००१

पुस्तक समालोचना

वेद पथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारी द्वारा विरचित पुस्तक 'ओ३म् नाम की महिमा' का अवलोकन किया है। सरल एवं सुबोध भाषा में ओ३म् नाम के रहस्य को समझाने का प्रयास श्लाघ्य है। इससे पाठकों को ओ३म् नाम की महिमा और महत्त्व का सहज ही में बोध हो सकेगा ऐसा मेरा विचार है। साथ ही साथ गायत्री मन्त्र का महत्त्व, उसका मानव जीवन पर प्रभाव, मोक्षसुख, सत्य स्वरूप की स्थापना और संस्कारों का मानव के उपयोग—इन सबका प्रतिपादन भी पुस्तक की उपादेयता को और भी बढा देता है। सभी जन इसे पढे और लाभ उठावें—ऐसी मेरी कामना है।

धर्मदेव विद्यार्थी द्वारा लिखित 'उन्नत गोपालन' नामक पुस्तक प्रत्येक पशुपालन के लिए एक उपादेय पुस्तक है। हमारा देश कृषि प्रधान देश है। गांव में पशुपालन आज एक उद्योग की तरह पनप रहा है। पशुपालन में पशुओं की सही देखरेख का बड़ा महत्त्व है। एक अनुभवी लेखक द्वारा लिखित होने के कारण प्रस्तुत पुस्तक उनके लिये बहुत ही लाभदायक सिद्ध होगी जो गोपालन के कार्य मे व्यस्त है। सरल भाषा में अपने अनुभव से प्राप्त परिणामो को देकर लेखक ने पशुपालन क्षेत्र में अपना एक बड़ा योगदान दिया है। आशा है इससे सभी सम्बन्धित व्यक्ति पूरा लाभ उठायेंगे।

परीक्षित कुमार पुस्तकाध्यक्ष

विश्वास घात

'नाज' सोनीपती

दुनियां का कुछ नहीं भरोसा।
दुनियां धोखा कर सकती है॥
रक्षक, भक्षक बन सकते हैं।
बाड़ खेत को चर सकती है॥
नेता का संहार नहीं यह।
जनता पर भी वज्र पात है॥
नहीं सुरक्षित जग में कोई।
होता अब विश्वासघात है॥
वह सुखों का साज कहां है?
जो कल था वह आज कहां है?
मान कहां है! प्रजातन्त्र का।
लोकतन्त्र की लाज कहां है॥
हँस सकती है रोती दुनियां।
हँसती दुनियां रो सकती है॥
सम्भव है, असम्भव सब कुछ।
अनहोनी भी हो सकती है॥
निर्मम हत्यारे भारत में।
हत्याएं करते मनमानी॥
आजादी का गला घोटकर।
आशाओं पर फेरें पानी॥
कौन है मेरा, कौन है तेरा।
यह सब कुछ अब जान लिया है॥
खुद को भी पहचान गया हूँ।
तुझ को भी पहचान लिया है॥

अन्तरंग सभा की बैठक के निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक २५ नवम्बर रविवार को सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन रोहतक में सभा प्रधान माननीय प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

इस बैठक में सर्वसम्मति से कुछ निर्णय इस प्रकार किये गये—

बहन सुभाषिणी देवी सभा उपप्रधान मनोनीत

सभा उपप्रधान चौ० माडूसिंह जी तथा प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी आदि दिवंगत नेताओं के निधन पर अन्तरंग सभा ने शोक प्रस्ताव पास करते हुए उनकी आत्माओं को सद्गति प्रदान करने की प्रार्थना की और सभी सदस्यों ने दो मिनट के लिये अपनी मौन श्रद्धांजलि भेंट की।



आचार्या सुभाषिणी देवी

सभा उपप्रधान चौ० माडूसिंह जी का स्थान रिक्त होने पर उनके स्थान पर कन्या गुरुकुल खानपुर कलां की आचार्या बहन सुभाषिणी देवी को सभा का वरिष्ठ उपप्रधान मनोनित किया है।

आगामी वर्ष के लिए ११७१४०५/८४ का बजट स्वीकार

सम्वत् २०४१ (१९८४-८५) के लिए सभा ने अपने विभिन्न विभागों वेदप्रचार, सर्वहितकारी, साहित्य प्रकाशन, शराबबन्दी, शहीद परिवारों की सहायता और भवन निर्माण आदि के लिए ११ लाख ७१ हजार ४०५ रुपये ८४ पैसे का प्रस्तावित आय व्यय का बजट स्वीकार किया है। वेदप्रचार विभाग में ब्रह्मचारी महेन्द्रसिंह विद्यावाचस्पति को उपदेशक पद पर तथा पं० बाबूराम जी की भजनोपदेशक पद पर नियुक्तियां की हैं। दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर में भजनोपदेशक प्रशिक्षण कार्य भी आरम्भ करने का निश्चय किया गया है।

सभा का वार्षिक अधिवेशन

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी को सर्वसम्मति से अधिकार दिया गया है कि वे लोकसभा के चुनाव सम्पन्न होने के पश्चात् सभा के आगामी अधिवेशन की तिथि निश्चित कर देवें। हरयाणा के आर्य समाजों से निवेदन किया गया है कि जिन आर्यसमाजों ने अभी तक अपना वार्षिक वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी का प्राप्तव्य धन सभा को नहीं भेजा है, वे शीघ्र ही धन मनीआर्डर अथवा सभा उपदेशकों द्वारा भेज देवें, ताकि उनके प्रतिनिधियों को समय पर चुनाव का ऐजण्डा भेजा जा सके।

आर्यसमाज के निर्माता ग्रन्थ का प्रकाशन

वैदिकयती मण्डल के सहयोग से आर्यसमाज के निर्माता नामक ग्रन्थ का प्रकाशन किया जा रहा है। श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के प्रस्ताव पर निश्चय किया गया है कि हरयाणा में जिन आर्य संन्यासियों, वानप्रस्थियों तथा गृहस्थी कर्मठ कार्यकर्त्ताओं ने आर्यसमाज के प्रचार हेतु अपना जीवन लगाया है। उनका परिचय तथा उन द्वारा किये गये कार्य विवरण को संग्रह करके सभा कार्यालय में प्रकाशनार्थ मंगवाया जावे। आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन किया गया है कि वे इस महत्त्वपूर्ण कार्य में यतीमण्डल तथा सभा को सहयोग प्रदान करें।

सभा मन्त्री

(पृष्ठ १ का शेष)

देना है। मगर सम्भल कर काम न करने की आदत सारी जिन्दगी का आनन्द किरकरा कर रही है। किये गये अपव्यय, बारातों की शहादत (साक्षी) बाजे गाजे, शान-शौकत का भी शर्म नहीं रहा। कितने राग रङ्गों से अपनी जिन्दगी को रंगा जाता है। इस सबको दृष्टिगत रखकर 'चट मंगनी पट विवाह' की बजाए 'चट विवाह पट तोड़-फोड़' का नक्कारा बज रहा है। हमारे यहां भी तो शादी ऐसी ही मिसाल बन गई है। चाहे रूठ के या आग लगाके रिश्ता तोड़ के धर दिया। ये सब कुछ लज्जास्पद बन रहा है।

अत: मैंने निवेदन किया है कि "जरा सम्भल के" की आदत अपनाना, स्वभाव बना लेना, मानो अपनी जिन्दगी को चार चांद लगा देना है। एक मधुर संगीत बनाना है। चीनी यात्री ह्यूनसांग ने हमारी दमदमाती सभ्यता का इस प्रकार मुक्त-कंठ से यशोगान किया है—

हम चू हिन्दू जन कसेदर आशकी मरदाना नेस्त।
सोखत न बर शमा मुर्दा कारेहर परवाना नेस्त।

क्रमश:

यहां रहने का अधिकार नहीं

रचयिता—कविराज पं० इन्द्रसैन 'विश्व प्रेमी' प्रचारक

भारत में रहकर भी जिनको भारत से होता प्यार नहीं।
ऐसे गद्दारों को 'प्रेमी' यहां रहने का अधिकार नहीं॥

भारत की धरती पर जन्मे भारत का सब कुछ खाते हैं।
एहसान फरामोशी इतनी बेशर्म नहीं शरमाते हैं।
देश के द्रोही गद्दारों से हम होते हुश्यार नहीं।
बंट जाता प्यारा देश शेष रहती अपनी सरकार नहीं।
ऐसे गद्दारों को प्रेमी यहां रहने का अधिकार नहीं।

बनकर जासूस विदेशों के यहां फैल रहे गद्दार बड़े।
नगरों ग्रामों सरकार में भी हैं, घुसे हुए दमदार बड़े।
हिन्दू मुस्लिम ईसाई भी ढूंढों मिलते सरदार बड़े।
करते गद्दारी देश से हैं फिर भी कहते गद्दार नहीं।
ऐसे गद्दारों……

इन्सान नहीं शैतान बने गुणवान नहीं बेइमान बने।
कहते हैं खालिस्तान बने या फिर ये पाकिस्तान बने।
इस देश के टुकड़े कर डालो, यह मिटकर कब्रिस्तान बने।
ऐसों को शर्म नहीं आती मिलता आदर सत्कार नहीं।
ऐसे गद्दारों……

ये थे तो हमारे भाई हो कितने जहरीले सांप बने।
हम दूध पिलाते थे इनको जहर हमीं पर उगल रहे।
ये नमक हरामी करने लगे हमने भी कितने कष्ट सहे।
कैसे इन पर विश्वास करें होता इन पर इतबार नहीं।
ऐसे गद्दारों……

यदि भारत में रहना है तो भारत माता से प्यार करो।
मिल जुलकर रहना सीखो, कुछ अपना और सुधार करो।
मानवता को धारण करके, नहीं किसी से बिगाड़ करो।
उल्टा जो चले तो जीवन में सुखशान्ति का संचार नहीं।
सच पूछो तो मिलता उसको भारत माता का प्यार नहीं।
ऐसे गद्दारों……

जो धर्म के नाम पे कत्ल करे वो धर्म नहीं शैतानी है।
गुरुओं के नाम ले करके करते अपनी बदनामी है।
बुगला भक्ति करने से तो दिल में आती बेईमानी है।
ऐसों को कोई न माफ करे रक्षा करता करतार नहीं।
ऐसे गद्दारों……

बन राक्षस गोली चलाते हैं, निर्दोषी रक्त बहाते हैं।
भारत को मिटाना चाहते हैं और पापी पाप कमाते हैं।
कहने को सन्त कहलाते हैं जालिम हैं जुल्म कमाते हैं।
गुरुओं का नाम तो लेते हैं गुरुओं के आज्ञाकार नहीं।
ऐसे गद्दारों……

हथकण्डे हैं गद्दारों के भारत के करें टुकड़े टुकड़े।
एजेण्ट विदेशों के हैं ये, इनके हथियारों से पकड़े।
चेतो सरकार अब कहती है दुष्टों के करो टुकड़े-२
यशगान करो फौजी भाइयों का जिनकी कभी हार नहीं।
विश्व प्रेमी' फौजी भाइयों के बलिदानों का उपहार नहीं।
ऐसे गद्दारों को 'प्रेमी' यहां रहने का अधिकार नहीं॥

भट्ठा बिठा दिया है--भारत का शराब ने

(वैद्य चिरंजीलाल 'जीव' थम्बड़वी बराड़ा)

हां! कितना भ्रष्टाचार फैलाया शराब ने।
भट्ठा बिठा दिया है भारत का शराब ने॥

बुद्धि गई इज्जत गई सब सभ्यता गई।
गुण इसमें अच्छा कौन सा छोड़ा शराब ने॥
शाहों के ताज गिर गए धूली में मिल गये।
धनवान को बना दिया कङ्गला शराब ने॥
ऊँचे घराने बहके इसमें हो गये तबाह।
उनको किसी न मूल्य पर बख्शा शराब ने॥
सड़कों पे लुढ़कते पड़े नालों में गिर रहे।
कुत्तों का मूत उनको पिलाया शराब ने॥
जहरीला जल है मारे बिन यह छोड़ता नहीं।
बहुतों को मृत्यु घाट पहुँचाया शराब ने॥
ऐ 'जीव' इसका पीना तू बिल्कुल दे छोड़ अब।
तेरे बदन का खून सब फूंका शराब ने॥

नवल विहान

आए भू पर नवल विहान,
जागे त्याग तथा बलिदान।
ऐश्वर्यों से पूरित हो सब,
खेत बाग घर व खलिहान।
जगती तल का कण कण हो
फिर सुखी सुशील तथा शांतिमय॥

दानवता का सर्वनाश हो,
स्वार्थ वृत्ति का पूर्ण नाश हो।
तिमिर धरा का दूर भगे अब,
सत्य धर्म का फिर प्रकाश हो।
जन विक्षत हो पूर्ण रूप से
धरती का अन्याय अनय॥

ओज तेज साहस हो जाग्रत,
शत्रु मनुजता का हो हेतु।
सम्मुख मानवता के सारा,
मानव भू का बने विनत।
इस धरती पर निर्भय होकर
जगे शुचितम भाव अभय॥

फैले नयी उषा अरुणायी,
जगे जवानों की तरुणायी।
अत्याचारों के विरोध हुये,
युवा शक्ति ले फिर अंगड़ाई।
करें सुगन्धित दिक्‌मण्डल को
स्वच्छ सुशीतल वायु मलय॥

शराब है खराब

पी पी के शराब ।
अपना दिमाग कर रहे खराब ।
जहन मे उतार रहे तेजाब ।
नाले को कर रहे आदाब ॥

मरियल घोडे सी उनकी चाल ।
पृथ्वी पर उबड खाबड़ ताल ।
मुरझाई हुई उनकी खाल ।
मुख से बाहर बकवास ख्याल ॥

बढ़ा रहे अपनी संख्या बेकार ।
व्यर्थ कार्य कर रहे साकार ।
देश की उन्नति में बेकार ।
पृथ्वी पर बढ़ा रहे भार ॥

माया का कर रहे अनादर ।
मानवता के हैं ये सौदागर ।
आंगन में गलत इनका व्यवहार ।
लक्ष्मी पर हो रहा अत्याचार ।

विश्वशांति के लिये हैं घातक ।
विनाश के हैं ग्राहक ।
स्वर्ण भविष्य के बाधक ।
विषैले अंधकार के वाहक ॥

सुबह शाम करते शराब का जप ।
शराब की बोतल पर तप ।
निर्बलता का लगा रहे चेप ।
शराबी का ये संक्रामक लेप ।

शराब है गन्दगी देशी हो या विदेशी ।
जो पीये इसे वो हो जाये बासी ।
शराब होती है खून की प्यासी ।
सेहत गिर जाती अच्छी खासी ।

इसके कड़वेपन से हों बेसुर ।
अपनों से कर दे यह दूर ।
सजीव निर्जीव रखते इससे बैर ।
त्याग कर इसको बन तू नूर ।

शराब से नहीं भुलाये जाते गम ।
बनाओ अपने आचरण को नीरम ।
तोड़कर बोतलें बनाओ मिठो शाम ।
बहिष्कार कर, करो देश का नाम ।

अनिलकुमार मंगला 'पिंकी'
१३ गोयल अपार्टमेंट, फैक्ट्री लेन, बम्बई-७२

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १,९६,०



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १२ अङ्क २ ७ दिसम्बर १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

चौथी भेंट

जरा संभल के

लेखक—श्री भीमसैन दीवान गुडगाव

न काम की कमी है, न इनाम की कमी है, न मैदान की कमी है और न ही इम्तिहान की कमी है। कमी है सिर्फ हमारे सूझ बूझ कर सम्भलकर कदम रखने की, निष्ठा की इरादे (निश्चय) मे लग जाने की। उसे पूर्णता तक पहुँचाने की। निराशा भी होती है। मगर अच्छे कामों में आशीर्वाद पा लेने की खुशी बड़ी प्यारी लगती है। मान प्राप्ति पर उत्साह बढता है जो भी अच्छा काम हाथ लगे आन्तरिक लगन, सुदृढ निष्ठा से उसे पूरा कर लेना, अपने आप मे बड़ा उपकार और सराहनीय है। 'हिन्दुस्तान टाईम्स' दिनांक १३-७-८४ के अनुसार राजस्थान के जिला बाड़मेर में वहां के निवासियों ने एक वर्ष पर्यन्त चाय न पीने का व्रत लिया था, कि किसी भी दशा मे चाय-पान नही करनी। यह व्रत सभी इलाके ने लिया। सफलता पूवक व्रत निभा दिया है, बल्कि पड़ोसी जिलो जेसलमेर, बीकानेर, जालूर, सिरोही, जोधपुर, पाली आदि में इस व्रत को ग्रहण करने और उसका कठोरता से पालन करने के हक में प्रचार हो रहा है। टी-स्टाल बन्द हो रहे हैं। वर्षभर एक इलाके का नियम या व्रत पूरा कर लेना प्रशंसनीय है। किसी नवयुवक का आगे बढना अपनी कृत-प्रतिज्ञा को क्रियात्मक रूप देना वास्तव में एक सराहनीय बात है।

मुझे यहां इस विवाद में नही पड़ना कि चाय अच्छी चीज है या नहीं। मुझे तो यहां इस खबर के दो पहलु (पक्ष) परखने हैं। प्रथम तो हमारे यहां चाय का प्रयोग बहुत आम हो रहा। कार्यालयों, बाजारों में जितना समय चाय पर व्यय होता है उससे होने वाली हानि का अनुमान लगाना आंकड़ों का विषय है। जहां जाओ, चाय से आवभगत होती है। थोड़े थोड़े समय के बाद इसकी याद सताने लगती है। यह एक ऐसा रोग हम लोगों को चिपट गया है, जिससे जान छुड़ानी मुश्किल हो रही है। शीत के दिनो मे यदि चाय दिन में एक दो बार पी ली जाये तो कुछ अखरने वाली बात नही, किन्तु चिल चिलाती गर्मी के दिनों में भी इस ने घर घर में प्रवेश कर लिया है। लोगो के मन से यह विचार सर्वथा निकल गया है कि हमारे देश का जलवायु कैसी है? यहां का जलवायु हमें इस बात की इजाजत नही देता कि हम भारतीय गौरांग यहां प्रभुओं का अनुकरण ही करते चले जाएं। बन्दगाहों पर भी इस (चाय) का प्रयोग कुछ आपत्ति जनक नहीं, क्योंकि वहां का जलवायु ही भरसूब होता है। मगर नगर नगर और ग्राम ग्राम में इसके प्रचार का क्या कहना? कमाल हो गया? इसके मुकाबले में उस इलाके के लोगों के दृढ़ निश्चय का भी विचार करें, जहां कोई भी ग्राम या नगर निवासी चाय नहीं पीता। अन्तर केवल अपने पक्के इरादे एवं दृढ़ निष्ठा का है। सूझ बूझ का है। समय बचाने का है। न जाने कितने दफ्तरों मे काम काज छोड़कर चाय राउण्ड (दौर) चलते हैं, चाहे कितने प्रार्थी हाथ में अपने प्रार्थना पत्र थामे, अपने आवश्यक कार्यों को छोडकर प्रतीक्षा में क्यों न खड़े हों, लेकिन ये बाबू लोग तो चाय सुन्दरी की सेवा करके ही इनके कार्य की ओर ध्यान देंगे। चाय की आड़ में अपना और जनता के अमूल्य समय को जो हनन किया जा रहा है, समय को तेजी से नष्ट करना हम लोगों को होबी या पेशा सा ही बन गया है।

पश्चिमी बगाल के मुख्यमन्त्री ज्योतिबसु महोदय ने एक दिन दफ्तरों का राऊण्ड लिया। अधिकारीगण उपस्थिति लगा चुके थे, आ भी चुके थे किन्तु कुछेक के सिवाय कोई भी अपनी सीट पर उपस्थित नही था। यहां तक कि कुछ अधिकारियों ने अगले दिन की उपस्थिति अग्रिम लगा रखी थी। बड़े खेद की बात है कि एक निर्धन राष्ट्र का, उसके राष्ट्रीय जीवन का कार्य क्षमता का गला घोटा जा रहा है। क्रियात्मक रूप से आर्थिक हानि की जा रही है। कितने लोगों के बहुमूल्य समय को आंखो से ओझल कर उनको आवश्यकताओं से उन्हें वंचित किया जा रहा है। एक ओर देश की आर्थिक स्थिति का नुकसान दूसरी ओर बहुमूल्य समय की हानि। इस पर गजब यह कि हर मुख्य मन्त्री स्वार्थ मे अंधा होकर, जनता को सर्व-प्रियता प्राप्त करने हेतु पाँच दिनो का सप्ताह आठ घण्टों का दिन मुकरर कर डालता है। हजारों की संख्या में प्रार्थना-पत्र एवं फाइले चक्कर खाती रहती हैं। मेजो पर अम्बार भले ही लगे रहें, पर बाबू लोग अपना समय नष्ट करने की शोहरत प्रसिद्धि बिगाड़ने को तैयार नहीं। जिन्हें रिश्वत सिफारिश रूपी नेत्र प्राप्त हैं, उनके लिये नौकरी प्रस्तुत है, कुर्सियां कायम हैं। इधर यह है इनका हाल। उधर इनके मुकाबले विश्व पटल पर वे लोग जो बेचारे दुर्भाग्यवश निर्धन या विकलांग हैं—उन पर कोई भूलकर दृष्टिपात नहीं करता। यह दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति प्रत्येक कार्य में है। प्रार्थना पत्रों के अम्बार रहते हैं। महीनो केसों का निपटारा या फैसला नहीं होता। कई कार्यालयों में तो प्रार्थना पत्रों को गुम कर दिया जाता है या वे स्वयं ही गुम हो जाते हैं। परीक्षाओं का हाल देख लीजिये। नकलबाजी, उत्तर पत्रिकाओं का गलत एवं पक्ष-पात पूर्ण अङ्कन, प्रश्नों पत्रों निश्चित तिथि से पूर्व आऊट हो जाना, अंकों का विक्रय, धनोपार्जन की लालसा मे बोगस (झूठी) कार्यवाहियां—ये सब राष्ट्र और कौम के लज्जास्पद नहीं, तो और क्या हैं?

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आवश्यकता

गुरुकुल किकाबला (करनाल में चन्दे के कार्य हेतु कुछ वानप्रस्थों की आवश्यकता है। भोजन के अतिरिक्त उचित दक्षिणा भी दी जायेगी।

ओमस्वरूप संचालक

दक्षिण-पूर्वी एशिया की सांस्कृतिक यात्रा

(लेखक—डा० सत्यकेतु विद्यालंकार)

(गताक से आगे)

बाली द्वीप में —

जब हम हवाई जाहज द्वारा बाली पहुँचे, तो एक अद्भुत दृश्य देखने में आया। हवाई अड्डे पर वाद्य संगीत को समा बन्धो थो, और दो दर्जन के लगभग गायको और गायिकाओं द्वारा मंगलगान गाया जा रहा था। हवाई जाहज से उतरते हुए यात्रियों की और गायिकाओं की यह मण्डलो आगे बढ़ने लगो। सबके हाथों में पुष्पमालाए तथा फूलों के गुच्छे थे। हम सोच रहे थे कि इन्डोनेशिया के कोई मन्त्री व उच्च प्रशासक बाली आये हैं। जिनके स्वागत में यह आयोजन किया गया है। पर हमारे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जबकि स्वागत के लिए आगे बढ़ती हुई नृत्याङ्गनाए हमारे सम्मुख रुक गई। वे हमारी मण्डली के नेता के गले में पुष्पमाला डालना चाहती थी। आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता स्वामी ओमानन्द सरस्वती हमारे साथ थे। मेरे संकेत पर जब एक नृत्याङ्गना उनके गले में माला डालने लगी तो स्वामी जी को सकोच हुआ। पर मेरे अनुरोध पर उन्होंने इस औपचारिक सम्मान को स्वीकार किया। पुष्प गुच्छ समर्पित किए गए। इन्हें बाली की परम्परगत कला के अनुसार अत्यन्त सुन्दर रूप से बनाया गया था। हमारे इस शानदार स्वागत का आयोजन ट्रेवल ट्रस्ट द्वारा किया गया था।

हमारे स्वागत के लिये बाली के अनेक हिन्दू नेता एवं विद्वान् भी हवाई अड्डे पर आये हुए थे। हमने उनके साथ अगले दिन का कार्यक्रम निर्धारित किया, और हम विश्राम के लिए होटल चले गये। डेनपसार (बाली की राजधानी) के जिस होटल में ठहरे वह समुद्र-तट पर एक रमणीक उद्यान में था। निवास के लिए छोटी छोटी कुटियां बनी हुई थीं। बाहर से देखने पर झोपड़ियां दिखाई देती थीं, पर उनके अन्दर आधुनिक वैज्ञानिक युग के सब सुख साधन विद्यमान थे। प्रत्येक कमरे के साथ पृथक् बाथरूम था जिसमें ठण्डे पानी के साथ-२ गरम पानी के नल भी थे। सब कमरों में टेलिफोन भी थे, और उनकी सज्जा आधुनिक ढंग से की थी। कुटी के अन्दर बैठकर ऐसा प्रतीत होता था, मानो हम किसी अत्याधुनिक होटल में ठहरे हुए हैं, और बाहर निकलने पर हम एक हरेभरे उद्यान में आ जाते, जिसमें प्रकृति की सब रमणीयता चरम सीमा पर विद्यमान थी। जोग जकार्ता का हमारा होटल भी कुछ इसी ढंग का था। जावा और बाली में भारत की जो प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा अभी तक सुरक्षित है, ये होटल उसके अनुरूप ही थे। इनके दरवाजों तक रामायण की कथा को रूपावलियां उत्कीर्ण थी, और हिन्दू देवी देवताओं के चित्र चित्रित थे।

२९ सितम्बर, शनिवार को बाली को उदयन यूनिवर्सिटी के इंस्टिट्यूट आफ हिन्दू धर्म में एक विशेष आयोजन किया गया। इन्डोनेसिया में सरकार का एक विभाग धर्म-मन्त्रालय (Ministry of Religions) के नाम से भी है। इसके अधीन हिन्दू धर्म के लिये एक अलग डाइरेक्टरेट (निदेशालय) है, जिसके डाइरेक्टर जनरल के पद पर श्री पूज (Pooja) या श्री पूज्य नियुक्त है। श्री पूज वेद शास्त्रों के प्रकाण्ड पण्डित हैं। गीता मनुस्मृति, ईशोपनिषद्, श्वेताश्वतर उपनिषद् आदि का वे इन्डोनैसियन भाषा मे अनुवाद कर चुके हैं, और आजकल वेदों का अनुवाद करने लगे हैं। ऋग्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का वेद अनुवाद कर भी चुके हैं, और इनके कुछ अंश प्रकाशित भी हो गये हैं। इन सबका प्रकाशन इन्डोनेसिया की सरकार द्वारा किया जा रहा है। सरकार के हिन्दू डाइरेक्टरेट की ओर से ही बाली कीउदयन यूनिवर्सिटी के तत्वावधान में इंस्टिट्यूट आफ हिन्दूधर्म का सचालन किया जा रहा है। हमारी बहुत इच्छा थी, कि इस संस्थान में जाकर बाली के हिन्दू विद्वानों के साथ सम्पर्क करें, और वहां प्रचलित हिन्दूधर्म के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करें। श्री पूज के प्रयत्न से इसके लिये समुचित आयोजन की व्यवस्था हो गई। हिन्दू धर्म के ये महान् विद्वान् एवं नेता इसी प्रयोजन से जकार्ता से एक हजार मील से भी अधिक दूरी पर स्थित डेन पसार आये थे और उनके निर्देशन में हमें उस आयोजन में सम्मिलित होने का सुअवसर मिला था, जिसमें बाली के अनेक प्रमुख विद्वान् उपस्थित थे। हमें यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि इंस्टिट्यूट आफ हिन्दू धर्म में दो हजार के लगभग विद्यार्थी वेद शास्त्र हिन्दू दर्शन, कर्मकाण्ड पुराण, महाभारत तथा सांस्कृतिक इतिहास का अध्ययन कर रहे हैं। सम्भवत: भारत में भी कोई ऐसी शिक्षा संस्था नहीं है, जिसमें इतनी अधिक सख्या में विद्यार्थी हिन्दूधर्म के अध्ययन में रत हों।

हिन्दूधर्म संस्थान (इंस्टिट्यूट) में हमें बाली में हिन्दूधर्म का जो स्वरूप है उसका परिचय प्राप्त करने का अवसर मिला। हिन्दूधर्म बहुत प्राचीन है समय समय पर उसके नये विचार सम्प्रदायों तथा पूजा पद्धतियों का विकास होता रहा है। भारत मे हिन्दू धर्म के कितने ही स्वरूप हैं। शैव, वैष्णव, शाक्त आदि विविध सम्प्रदाय हिन्दूधर्म के अन्तर्गत हैं, अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद और द्वैतवाद तीनों हिन्दू दार्शनिक विचार धारा में विद्यमान हैं। प्रतिमा पूजा के साथ साथ याज्ञिक कर्मकाण्ड और निराकार निर्गुण ब्रह्म की पूजा को भी हिन्दूधर्म में स्थान प्राप्त है। वेदशास्त्रों में सामान्य रूप से निष्ठा रखते हुए भी हिन्दुओं के विविध सम्प्रदायों की पूजा पद्धति तथा दार्शनिक मन्तव्यों में भारी अन्तर है। इस दशा में यह अस्वाभाविक नहीं है, कि भारत से हजारों मील की दूरी पर स्थित बाली के हिन्दू धर्म की पूजा पद्धति तथा मन्तव्य भारत के हिन्दूधर्म से कुछ भिन्न हों। हिन्दूधर्म के डाइरेक्टर जनरल श्री पूज तथा हिन्दू धर्म संस्थान के आचार्यों से बाली के हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में जो परिचय हमें प्राप्त हुआ उसको संक्षेप में यहां उल्लिखित करना उपयोगी होगा। बाली के हिन्दूधर्म के पांच मूल सिद्धान्त हैं-एकेश्वरवाद, आत्मा की अमरता, पुनर्जन्म, कर्मफल और मोक्ष। ईश्वर एक है। ब्रह्मा, विष्णु और शिव एक भगवान् के ही तीन रूप हैं। सृष्टि के उत्पादक के रूप में ईश्वर ब्रह्मा कहाता है। सृष्टि के पालनकर्ता के रूप में उसे विष्णु कहते हैं और जब वह सृष्टि को अपने में विलय कर लेता है तो उसे शिवमहेश की संज्ञा दी जाती है। बाली के हिन्दू यह नहीं मानते कि शिव सृष्टि का संहार करता है। उनका मत है कि सृष्टि या प्रकृति भी अनादि व अनन्त है। प्रलय में परमेश्वर सृष्टि का विलय करता है, सहार नहीं। विश्व की इस सर्वोपरि शक्ति को बाली के हिन्दू शिव महादेव कहते हैं। वही उनका सबप्रधान या एकमात्र उपास्य देव है जिसे हम मृत्यु कहते हैं, वह वस्तुत: शरीर की मृत्यु होती है आत्मा की नहीं। आत्मा भी अजर तथा अमर है। पंच महाभूतों से निर्मित शरीर के अन्त के साथ आत्मा का अन्त नहीं हो जाता। अपने कर्मों के अनुरूप आत्मा पर पुनर्जन्म होता है। मृत्यु के तत्काल पश्चात् या कुछ समय बाद प्रत्येक मनुष्य के लिए कर्मफल का प्राप्त करना आवश्यक है। कर्मफल परमेश्वर द्वारा दिया जाता है। मानव जीवन का चरमध्येय मोक्ष की प्राप्ति है।

क्रमश:

गोदान

आर्यसमाज छोटा माडल टाउन यमुनानगर को कोषाध्यक्ष माता चम्पावती ने अपनी सुपुत्री कुमारी प्रेमलता जी द्वारा अपनी शुभ कमाई में से वैदिक साधन आश्रम यमुनानगर के ब्रह्मचारियों को दूध पीने के लिए एक बहुत ही सुन्दर गाय १७५० रु० में मोल लेकर दान में दी है।

मन्त्री

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज गुरु तेग बहादुर नगर दिल्ली

प्रधान—श्री राजकुमार भाटिया एडवोकेट, मन्त्री- श्री ठाकुरदास आर्य, कोषाध्यक्ष — देवराज नारंग, प्रधाना—माता भगवानी देवी, प्रचारमन्त्री—श्री राजेन्द्र, मन्त्राणि—श्रीमती शारदा मलिक।

आर्यसमाज शान्तिनगर सोनीपत

संरक्षक—वैद्य जयकृष्णदास, प्रधान—श्री रामलाल मदान, उपप्रधान—श्री बिशनचन्द छाबडा, श्री अर्जुनदेव कालडा, मन्त्री—श्री हरिश्चन्द्र स्नेही, उपमन्त्री— मा० वेदप्रकाश, कोषाध्यक्ष— श्री मेहरचन्द।

आर्यसमाज भूरथला जिला रोहतक

प्रधान—श्री भगवानसिंह, उपप्रधान-श्री रोहनाथसिंह, मन्त्री—~~[illegible]~~ कोषाध्यक्ष-श्री फतेहसिंह, निरीक्षक—श्री सुरेन्द्रसिंह।

आर्यसमाज बाबरामोहल्ला रोहतक

प्रधान—श्री जयपाल आर्य, उपप्रधान—श्री जयचन्द, मन्त्री—श्री केसरदास आर्य, उपमन्त्री-श्री आनन्दसिंह, कोषाध्यक्ष-श्री महेन्द्रपाल आर्य, पुस्तकाध्यक्ष— श्री रामदयाल।

भजनोपदेशक सुलतानसिंह द्वारा वेदप्रचार

१२, १३ नवम्बर नोमड़ावालो, १४, १६ रूपगढ १६, १७ नन्दगांव, १८, १९ रासीवास, २० पैतावास खुर्द, २१, २२ चरखो, २३ हल्का, २५, २६ बोरण, २७ ढाणी बोरण में।

उपरोक्त गांवों में वैदिक धर्म का प्रचार हुआ। यज्ञ पर अनेक लोगों ने यज्ञोपवीत धारण किया और शराब, जूआ आदि दुर्व्यसनों को छोड़ने का व्रत लिया। महिलाओं ने भी संतोषी माता, कब्र पूजा आदि बुराइयों को छोड़ने को प्रतीज्ञा को। गणपतसिंह आर्य

दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर के भजनोपदेशक विभाग में प्रवेश

आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री पन्नालाल जी पीयूष (संगीताचार्य के आचार्यत्व में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर में संगीत (भजनोपदेशक) का शिक्षण शीघ्र आरम्भ किया जा रहा है। अतः इच्छुक व्यक्ति जो वैदिक धर्म प्रचार में रुचि रखते हों वे अपना प्रार्थना पत्र "मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक" के पते पर शीघ्र भेजें।

प्रत्याशी की आयु १६ से ३० वर्ष के बीच में होनी चाहिए।

शिक्षा—संस्कृत विषय के साथ हाई स्कूल और उसके समकक्ष होनी चाहिये।

चयन के उपरान्त प्रविष्ट किये जाने वाले छात्रों को भोजन तथा आवास की निःशुल्क सुविधा प्रदान की जायेगी।

प्रार्थना पत्र भेजने की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर १९८४ है।

रणजीतसिंह

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

दयानन्द मठ, रोहतक—१२४००१

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

पाकसमा मण्डल के सहयोग से वैद्य बलवन्तसिंह जी ने ग्राम बलियाणा के आर्यसमाज मन्दिर में २९ नम्बर से २ दिसम्बर १९८४ तक डा० देवव्रत व्यायामचार्य की अध्यक्षता में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न कराया। गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों ने वेद पाठ किया। यज्ञ के अवसर पर स्वामो ओमानन्द जो सरस्वतो, डा० वेदपाल जो बराहणा, आचार्य देवव्रत जी, ब्र० रामवीर एवं आचार्य विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महोपदेशक आचार्य ओमप्रकाश सिद्धान्त शिरोमणि के सुन्दर प्रभावशाली उपदेश और व्याख्यान होते रहे। रात्रि के समय ग्राम के विभिन्न मोहल्लों में आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक श्री चिरन्जीलाल की भजनमण्डली एवं स्थानीय अन्य गायकों के भजनों को भी वेदप्रचार में बड़ा सुन्दर सहयोग रहा। ३ ता० को २ बजे से ५ बजे तक गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियों का योगासन, लाठी, बल्लम, तलवार, मोगरी, मल्लखम, गले से लोहे के सिरया आदि मोड़ने का बड़ा सुन्दर प्रदर्शन हुआ। स्वामी ओमानन्द जो महाराज की विशेष प्रेरणा से सेकड़ों आर्यकुमारों एवं कन्याओं ने उत्साह पूर्वक यज्ञोपवीत ग्रहण किये। ग्राम के भाई बहनों ने मण्डल के अन्य ग्रामों के साथ साथ बढ चढ कर भाग लिया। इस शुभावसर पर सभा को वेदप्रचारादि के लिये २७२) प्रदान किये।

वानप्रस्थी महावीर

आर्यसमाज मुण्डाना में वेदप्रचार

आर्यसमाज मुण्डाना जिला रोहतक में २, ३ दिसम्बर को वार्षिक वेदप्रचार का आयोजन किया गया। सभा को युवा भजनमण्डली प० तेजपाल आर्य के प्रभावशाली भजन हुए। सामाजिक बुराइयों का खण्डन किया गया।

रामफल आर्य प्रधान

कुरुक्षेत्र मण्डल में वेदप्रचार की धूम

१—आर्यसमाज दामला जिला अम्बाला में १७, १८ नवम्बर को सभा के भजनोपदेशक पं० हरिश्चन्द्र जी, पं० विद्याभूषण तथा पण्डित शेरसिंह की मण्डलियों द्वारा वेदप्रचार कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। सभा को २०० रुपये वेदप्रचार आदि के लिए प्राप्त हुआ। प्रधान श्री किशोरीलाल ने प्रचार में बहुत सहयोग दिया।

२—आर्यसमाज बूबका जिला कुरुक्षेत्र मे २७, २८ नवम्बर को श्री पं० हरिश्चन्द्र जी, पं० विद्याभूषण एवं पं० शेरसिंह द्वारा ग्राम में भजनों द्वारा सफल वेदप्रचार का आयोजन हुआ। यहां भी वेदप्रचारार्थ २००) प्राप्त हुए। इस अवसर पर आर्यसमाज का चुनाव पं० हरिश्चन्द्र जी की अध्यक्षता में निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधान—चौ० मामराज, उपप्रधान—चौ० परमानन्द, मन्त्री—चौ० अमरसिंह, उपमन्त्री—श्री दसोन्दाराम, प्रचारमन्त्री—श्री जगतराम जी, कोषाध्यक्ष—बनारसीदास जी।

३—आर्यसमाज बदरपुर जिला करनाल में वार्षिक वेदप्रचार १, २ दिसम्बर को चौ० नत्थासिंह आर्यभजनोपदेशक ने इस अवसर पर सभा को १२२) वेद प्रचार दशांश के लिए प्राप्त हुआ।

इसी प्रकार पं० हरिश्चन्द्र जी पं० विद्याभूषण, पं० शेरसिंह जी की भजनमण्डलियों का जिला कुरुक्षेत्र तथा जिला अम्बाला के आर्य समाजों में वार्षिक वेदप्रचार का कार्यक्रम बनाया गया है। जिन आर्य समाजों में अभी तक किसी कारण प्रचार नहीं हो सका, वे वहां प्रचारार्थ पहुंच रहे हैं। अतः आर्यसमाजें प्रचार का प्रबन्ध करके धर्म लाभ उठावें।

गुड़गांव मण्डल में वेदप्रचार कार्य

गुड़गांव मण्डल में २१ से ३० नवम्बर तक आर्यसमाज सुखराली दौलताबाद तथा वजीराबाद में सभा के उपदेशक ब्रह्मचारी महेन्द्रसिंह शास्त्री तथा सभा की भजनमण्डली पं० ईश्वरसिंह तूफान द्वारा वार्षिक वेदप्रचार सम्पन्न हुआ। श्री जयभगवान जी एम० ए०, चौ० धर्मवीर सिंह सरपंच तथा श्री धन्तरसिंह बोहरा ने सराहनीय सहयोग दिया। प्रचार से प्रभावित होकर श्री धर्मवीरसिंह सरपंच ने भविष्य में धूम्रपान न करने का व्रत लिया।

आर्यवीर दल हरयाणा का गुड़गांव में सम्मेलन

१, २ दिसम्बर को आर्यसमाज भीमनगर गुड़गांव में आर्यवीर दल हरयाणा का वार्षिक सम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

१ दिसम्बर को नगर में विशाल शोभायात्रा निकाली गई जिसमें हरयाणा भर के आर्यवीर दल के सैनिकों के साथ आर्यावर्त युवक परिषद् के कार्यकर्त्ता भी ग्रामों से ट्रैक्टरों में सवार होकर भारी संख्या में सम्मिलित हुए। ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री तथा श्री खजानसिंह ने पूरा सहयोग दिया। १ की रात्रि व २ दिसम्बर को आर्यसमाज के नेताओं ने युवकों को आह्वान किया कि वे संगठित होकर समाज में फैली बुराइयों को समाप्त करने तथा आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ करने के कार्य में जुट जायें।

दिल्ली में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने बताया कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिसम्बर १९८४ में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी का आयोजन कर रही है। इस अवसर पर आर्यसमाज का सन्देश घर घर पहुँचाने के लिए दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर यज्ञ, भजन एवं वेदोपदेश आयोजित किए जायेंगे। प्रथम दिन की शोभायात्रा और अन्तिम दिन के कार्यक्रम सामूहिक रूप से केन्द्रीय स्थान पर आयोजित किए जाएंगे। वेद तथा आर्ष ग्रन्थों के आधार पर संक्षिप्त ट्रेक्ट छपवाकर आर्यसमाज का जनसाधारण में प्रचार करने हेतु वितरित किए जाएंगे। दिल्ली के प्रत्येक कोने में ग्रामों, पुनर्वास कालोनियों और पिछड़ी बस्तियों तक हम आपके सहयोग से आर्यसमाज का सन्देश पहुँचाना चाहते हैं।

उन्होंने दिल्ली के सभी आर्यसमाजों, स्त्री समाजों, डी० ए० वी० स्कूलों अन्य आर्य संस्थाओं के अधिकारियों तथा दानी महानुभावों से अपील की कि वे इस कार्य को सुचारु रूप से सम्पन्न कराने में तन, मन धन से सहयोग दें।

डा० धर्मपाल आर्य महामन्त्री

(पृष्ठ १ का शेष)

सोच विचार का तो काम ही नहीं। अनैतिकता का नग्न नृत्य हो रहा है। केवल थोथी खाना पुरी, झूठी नौकरी, जनसाधारण से धोखा, अपनी और दूसरों की वृतिच्छेद की आदत बढ रही है। यह सारा मजाक देश कौम और [illegible] के नाम पर किया जा रहा है। यह है यहां का हाल, जहां भगवत् कृपा से सभी वित्त-प्राप्त सुजाखे हैं। वेतनों में वृद्धि पर वृद्धि की मांग की जा रही है। दूसरी ओर कार्य करने की भावना अथवा कर्त्तव्य परायणता में दिन प्रतिदिन न्यूनता या गिरावट आती जा रही है।

मैक्सिको के एक भाग में सभी लोग अंधे हैं। इन्सान भी और पशु भी। वहां एक प्रकार की मक्खी सभी प्राणियों की बीनाई (दृष्टि) चट कर जाती है, मगर इतने पर भी वे लोग यथासमय जागते और अपने सभी काम समष्टि रूप से नियत समय पर सम्पादित करते हैं। बच्चे भी टटोल-टटोल कर सम्भल सम्भल कर खेलते कूदते और खुश रहते हैं अंधे कृषक सुचारु रूप से कृषि कार्य करते हैं। वे पंचायतें बनाते और निर्णय लेते अपना जीवन हंसी खुशी से यापन करते हैं। उनमें भेदभाव या ऊंच-नीच की भावना हो, तो कोई लिखे? मुझे तो केवल नैतिकता अथवा इखलाक का अजूबा पेश करना है। जितना जीवन अभावग्रस्त है, अपना सब काम निभा लेते हैं। जिनके पास ईश-कृपा से सब कुछ है, वे केवल अय्याशी, दिल लगी, आवारा गर्दी आदि में समय का हनन करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं मानते या करते। बेरोजगारी के दिनों में गरजमन्द लोग नौकरी प्राप्त करने हेतु नाक रगड़ते, सिफारिशें लाते और चापलूसी करते नहीं थकते, मगर जब नौकरी हाथ लग जाती है तो वे भी वही हथकण्डे अपनाते हैं, जो उनके पूर्ववर्ती तथाकथित अधिकारी अपनाए हुए होते हैं। खाली फार्म भी देने में आना कानी करते हैं। यह जुल्म की इन्तहा है। अन्याय की पराकाष्ठा है। मेरी राय में जितना नुकसान हमारा यह काली-कलूटी चाय कर रही है, शायद ही उतना स्वास्थ्य में लाभ पहुँचा रही हो। इसलिये जरा सम्भल के पेश कर रहा हूँ।

क्रमशः

(पृष्ठ ७ का शेष)

दिया जिससे ६-७ दस्तों के स्थान पर ३०-४० दस्त लगकर शरीर क्षीण होता गया, महर्षि वहां से १६ अक्तूबर १८८३ ई० तक जोधपुर रहने तक ही अलीमरदान चिकित्सक रहा। उससे भी पहले सच्चे प्रिय डा० सूरजमल का अच्छा उपचार हुआ। फिर १६ अक्तूबर को आबू और २६ अक्तूबर को अजमेर में उनकी चिकित्सा डा० सूरजमल, न्यूमैन और पीरजी ने की। ये तीनों डा० ठीक थे परन्तु अलीमरदान कपटी घातक था। जब के आर्यों ने अलीमरदान द्वारा विष दिए जाने की बात पूछी तब महर्षि जी मौन ही रहे अर्थात् विष दिया था। ३० अक्तूबर १८८३ को सायं ६ बजे कार्तिक दिवाली में विश्वोपकारक महर्षि देवदयानन्द मोक्ष में प्रभुगोद में चले गए। वे हम सब भूलोकवासियों के सर्वहितैषी शिरस्त्राण, अटूट अमर विभूति थे।

सम्पादकीय:-

सर्वहितकारी के आगामी विशेषांक

२१ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस आ रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम आर्यजगत् में बहुत ही श्रद्धा के साथ स्मरण किया जाता है। उन्होंने स्वामी दयानन्द जी के पश्चात् आर्यसमाज के इतिहास निर्माण में बहुत बड़ा योगदान दिया है और आर्य जाति की रक्षा हेतु अपना बलिदान भी दे दिया। अत: उनके कार्यों एवं आदर्शों को स्मरण करने के लिए सर्वहितकारी की ओर से २१ दिसम्बर का अंक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदानांक प्रकाशित किया जायेगा।

आर्यजगत् के लेखकों तथा कवि महानुभावों से निवेदन है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर अपने खोज पूर्ण लेख तथा कविताएं प्रकाशनाथ १९ दिसम्बर तक कार्यालय में भेजने की कृपा करें। इसी प्रकार २६ जनवरी १९८५ को गणतन्त्र दिवस भी आ रहा है। स्वतंत्रता संग्राम में आर्यसमाज के नरनारियों ने जितना [illegible] संग्राम में भाग लिया है इस ऐतिहासिक तथ्य को सभी मानते हैं। उस समय की कांग्रेस में भी आर्यसमाज के सदस्यों का ही बहुमत रहा है। परन्तु आर्यसमाज के उन नेताओ तथा कार्यकर्त्ताओं का उतना सम्मान नहीं किया गया, जितना करना चाहिए था।

अत: सभा ने गत अन्तरंग सभा की बैठक में स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के प्रस्ताव के अनुसार निश्चय किया है कि आर्यसमाज के निर्माता नामक ग्रन्थ के प्रकाशन मे वैदिक यती मण्डल को सभा की ओर से अधिक से अधिक सहयोग दिया जाये। इसी उद्देश्य की पूर्ति केलिए गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष में सर्वहितकारी का २१ जनवरी को हरयाणा के आर्य स्वतन्त्रता सेनानी विशेषांक छापने का निश्चय किया है। सर्व प्रथम जिले रोहतक के स्वतन्त्रता सेनानियों का परिचय छपेगा, उसके बाद हरयाणा के अन्य जिलो के स्वतन्त्रता सेनानियों का परिचय भी सर्वहितकारी में विशेषांक के रूप में क्रमश: छापा जायेगा।

अत: जिला रोहतक के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं से मेरा अनुरोध है कि वे अपने क्षेत्र के उन स्वतन्त्रता सेनानियों का परिचय लिख कर जनवरी के प्रथम सप्ताह तक सर्वहितकारी कार्यालय में भेजने का कष्ट करें।

स्वतन्त्र सेनानियों के परिचय में उनके जन्मस्थान, जन्म दिन, शिक्षा तथा उन द्वारा स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने का विवरण संक्षिप्त रूप में लिखना चाहिए। उनके चित्र भी उपलब्ध हो सकें तो वे भी भेजने का यत्न करें।

सार्वदेशिक सभा यत्न कर रही है कि निजाम हैदराबाद के विरुद्ध सत्याग्रह में सम्मिलित होने वाले सेनानियों को भी अन्य सेनानियों की भान्ति पेंशन दी जाये। अत: स्वतन्त्रता सेनानियों में हैदराबाद आंदोलन में भाग लेने वाले कार्यकर्त्ताओ को भी उतना हो सम्मान मिलना चाहिए जितना अन्य राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेने वालों का दिया गया है।

हरयाणा प्रान्त से हजारों की संख्या में हैदराबाद सत्यग्रह मे आर्य वीर जेल गये थे और उन्होने कठोर से कठोर यातनाए सहन की थी। इनमें से काफी महानुभावो का स्वर्गवास हो चुका है, परन्तु अब भी काफी सख्या में स्वतन्त्रता सेनानी जीवित हैं। अत: उनसे मिलकर स्वर्गवासो सेनानियों का परिचय मिल सकता है।

आर्यसमाज के अधिकारियों तथा कार्यकर्त्ताओं को इस कार्य में आज से कार्य प्रारम्भ कर देना चाहिए। यह बहुत बड़ा कार्य है। हमें अपने गौरवपूर्ण इतिहास को सुरक्षित रखना होगा। यदि हम इस समय आलस्य कर गये तो फिर पछताना पड़ेगा क्योंकि अब तक जो स्वतन्त्रता सेनानी जीवित हैं, उनके साथ सम्पर्क करके उनसे लाभ उठाया जा सकता है। उनके स्वर्गवास होने के साथ हमारा गौरवपूर्ण इतिहास लुप्त हो सकता है।

कुछ युवक प्राय: शिकायत करते हैं कि हमे कार्य करने का अवसर नहीं दिया जाता। अत ऐसे युवकों के लिए यह अवसर मिला है। वे अपने ग्राम अथवा नगर के रहने वाले स्वतन्त्रता सेनानी से सम्पर्क करे और उनको सेवा में बठकर उनसे, उनका तथा उनके साथी स्वतन्त्रता सेनानियों का परिचय तथा कार्य विवरण पूछकर तथा साफ कागज पर लिखकर सर्वहितकारी कार्यालय मे भेज देवें। सर्वहितकारी के विशेषांक में परिचय लिखने वालों के नाम भी प्रकाशित किये जायेंगे। इस विशेषांक के छपने के बाद इन स्वतंत्रता सेनानियो का परिचय आर्यसमाज के निर्माता महान् ग्रन्थ में प्रकाशित किया जायेगा।

रणजोतसिंह सभा मन्त्री

आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सिरसा के छात्रों को पुरस्कार

[illegible] में हमारे विद्यालय के दो विद्यार्थी प्रथम व द्वितीय आए। उन्होने बीस बीस रुपये का [illegible] पुरस्कार प्राप्त किया।

प्रिंसिपल

अपने बच्चो को धार्मिक बनाये

धर्म प्रवेशिका का प्रकाशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की आर्य विद्या परिषद् की ओर से आर्य स्कूलो मे ५ वी तथा ६ वी कक्षाओ मे धार्मिक शिक्षा पढ़ाने के लिए "धर्मप्रवेशिका" पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। इसका लेखन सभा के सुयोग्य मन्त्री डा० रणजोतसिंह जी ने शिक्षा शास्त्री हैं ने किया है। एक प्रति का मूल्य २ रुपये है। अत: अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए इस पुस्तक को मगवाकर धर्म लाभ उठावें।

प्राप्ति स्थान

प्रस्तोता, आर्य विद्या परिषद् हरयाणा

सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक

आर्य जगत्

आत्म–निरीक्षण करें

प्रो० ओमकुमार आर्य, जीन्द

यह एक सर्व विदित तथ्य और इतिहास प्रसिद्ध सच्चाई है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती गत सदी के सर्वाधिक क्रान्तिकारी महापुरुष और निर्भीक समाज सुधारक थे। उन्होंने सदियों से सोई आर्यसन्तान को झकझोर कर जगाया और भूली भटकी मानवता को सत्य सनातन वेद पथ दिखलाया। उन द्वारा संस्थापित आर्यसमाज एक प्रचण्ड आंदोलन के रूप मे तीव्रगति से प्रगति पथ पर बढ़ता रहा और इतिहास साक्षी है कि गत लगभग ११० वर्षों में जितना रचनात्मक, सुधारवादी और राष्ट्रहितकारी कार्य आर्यसमाज ने किया है उतना अन्य कोई संगठन नहीं कर पाया। आर्य समाज अपनी महान् उपलब्धियों पर गर्व कर सकता है।

किन्तु अब सभी ईमानदार आर्य सदस्य कुछ ऐसा महसूस करने लगे हैं कि कहीं कुछ गड़बड़ जरूर है। ... निर्वाण शताब्दी के भव्य आयोजन ने आर्यजनों की एकता और संगठन की अमिट छाप जनता पर अंकित कर दी है फिर भी अपने दोषों और त्रुटियों का विश्लेषण करके उन्हें दूर करना हमारे लिये लाभकारी ही सिद्ध होगा। मैं अधोलिखित कुछ सुझाव आर्य जनों की सेवा में रख रहा हूं। आशा है हमारे कर्णधार और जिम्मेवार अधिकारी तथा नेतागण इन पर विचार करेंगे। यदि मेरे इन सुझावों में कहीं कोई गलती हो तो उस ओर इंगित भी करने का कष्ट करेंगे ताकि उसका परिमार्जन किया जा सके—

१—मेरा सबसे पहला सुझाव यह है कि हमे हर संभव प्रयास कर के युवा पीढ़ी को आर्यसमाज मे लाना चाहिये। यह बात हमारे मंचों पर से पहले भी कई बार कही जा चुकी है, पर इस पर ज्यादा ध्यान अब तक नहीं दिया गया है। हमारे मन्दिरों में वे ही इने गिने वृद्ध चेहरे (कुछ अपवाद छोड़कर) दिखाई पड़ते हैं। यदि नई पौध नहीं पनपी तो आने वाले समय में ऋषि मिशन को आगे कौन बढ़ाएगा? इसके लिये हमें हर आर्यसमाज मन्दिर में आर्य वीर दल या आर्यकुमार सभा का निर्माण करना होगा। वे कार्यक्रम देने होंगे जो रचनात्मक हों और युवा पीढ़ी को अपनी ओर खिंच सकें। जिन वृद्ध सज्जनों ने अधिकारी आदि रहकर आर्यसमाज की लम्बी अवधि तक सेवा कर दी है किन्तु अब गर्दन हिलने लगी है और हाथ पैर कापने लगे हैं वे कृपा युवकों को उठाने दें। उनके संरक्षक तो बने रहें पर मैदान में नये रक्त को ही उतरने दे। यह सुझाव कटु अवश्य है पर इसके बिना अब चारा नहीं।

कड़वी भैषज बिन पीये, मिटे न तन को ताप।

२—आज हम यह भी देख रहे हैं कि हमारे यहां स्वाध्याय की प्रवृत्ति घट रही है। परिणामतः उच्चकोटि के विद्वान् और सिद्धान्त मर्मज्ञ पुरोहित वर्ग की परम्परा में भी शैथिल्य नजर आ रहा है। स्व० अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, शहीदे आजम पं० लेखराम आर्य मुसाफिर, पं० बुद्धदेव विद्यालंकार, पं० रामचन्द्र जी देहलवी तथा इसी तरह के अन्य अनेकानेक विद्वान् आर्यसमाज ने पैदा किये। किन्तु आज इस क्षेत्र में कमी आई है, इसे हमें मानना ही होगा। ठीक है हमारे पास उच्चकोटि के संन्यासी वक्ता, भजनोपदेशक आज भी मौजूद हैं, पर संख्या उतनी नहीं जितनी चाहिए थी। मेरा सुझाव है कि हमें अन्य सभी से ऊपर और पहले अपने विद्वज्जनों, पुरोहितों और उपदेशकों आदि का सम्मान करना चाहिये।

हमारे मध्य कुछ ऐसे भी तत्त्व मौजूद है जो पुरोहितों को अपना नौकर समझते हैं और दर दर घूमकर प्रचार करने वाले उपदेशकों को फालतू सा बोझ मानकर उनकी सेवा शुश्रूषा से बचते हैं। ये वे लोग हैं जो अपना स्वार्थ साधने आर्यसमाजों में आये और अब गद्दी पर जम कर बैठ गये। यदि हम ही अपने विद्वानों, संन्यासियों, पुरोहितों और उपदेशकों की उपेक्षा, अपमानना और अवहेलना करेंगे तो उनका आदर कौन करेगा? फिर यह अपमान का रास्ता अपनाने को तैयार भी कौन होगा। अतः हमारे उच्च पदस्थ आर्य नेताओं को अपने आचरण और व्यवहार से ऐसा वातावरण बनाना चाहिये जिसमें इन पूज्य व्यक्तियों की उपेक्षा की कोई गुंजायश कहीं न हो। फिर भी यदि कोई ऐसा समाज और सिद्धांत विरोधी कृत्य करने का दुस्साहस करे तो समस्त संगठन को उसका बहिष्कार करना चाहिए ताकि विद्वानों की अवमानना करने का दण्ड उसे मिल सके। यदि हम इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार नहीं करेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब सुयोग्य पुरोहित सिद्धान्त के ज्ञाता अच्छे वक्ता, उपदेशक आदि हमें ढूंढे से भी नहीं मिलेंगे। आर्यसमाज रूपी भव्य भवन की नींव में ईंट पत्थर नहीं बल्कि त्यागी, तपस्वी, संन्यासियों, पुरोहितों, उपदेशकों और प्रचारकों का तप और त्याग लगा हुआ है। उनकी उपेक्षा हमें सहन नहीं होनी चाहिए।

पाड़ा मोहल्ला रोहतक में वेदप्रचार

आर्यसमाज पाड़ा मोहल्ला रोहतक में ५ दिसम्बर की रात्रि को चौपाल में श्री पाल भारतीय हाई स्कूल के सहयोग से सभा की भजन मण्डली प० तेजपाल द्वारा वेदप्रचार हुआ। इस अवसर पर यज्ञ भी किया गया।

रोहताश किशोर आर्य मन्त्री

२१-१०-८४ के नवभारत टाइम्स के कैलाश सत्यार्थी के लेख पर

महर्षि दयानन्द को याद करना पुण्यात्मक धर्म कर्त्तव्य

निहालसिंह आर्य

२१-१०-८४ के नवभारत टाइम्स में श्री कैलाश सत्यार्थी ने अपने लेख दयानन्द को याद करने के मायने में जहां महर्षि जी की समाज सुधार कार्य पद्धति तथा पाखण्ड निवारण और वैदिक मन्तव्यों को ठीक बताया वहां कई बातें मिथ्या भी लिख दी। प्रथम तो लेख शीर्षक में ही इतने महान् युग द्रष्टा, आदित्य ब्रह्मचारी, वेद मर्मज्ञ महर्षि जगदाचार्य, आप्त पुरुष को केवल दयानन्द संज्ञा देना ही अशोभनीय उपेक्षा है। निर्वाण प्राप्ति से पहले उन्होंने अपनी अस्थियों को खेतों में जगह२ बिखेरने वाली बात नहीं कहीं थी अपितु किसी बाग में एक स्थान पर परोपकारक खाद के लिए गाडने को कहा था और अपने मन्तव्यों की सारी बातों पर बराबर बहस की जाये, यह भी कहीं नहीं लिखा। महर्षि जी ने सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में स्पष्ट लिखा है कि—किसी पक्षपाती के खण्डन-मण्डन पर ध्यान नहीं दिया जायेगा और मनुष्य मात्र के हितैषी निष्पक्ष आदमी की बात सत्य समझने पर संग्रहीत होगी।

सत्यार्थी जी ने महर्षि जी की निर्वाण शताब्दी अजमेर में मनाने जयजयकार करने, हाथी घोड़ों पर जलसे करने की तमाशे, पिकनिकें वाली बातों को पाखण्ड और व्यक्ति पूजा का नाम दिया है परन्तु यह द्वेष और संकीर्णता का भाव है क्योंकि महर्षि दयानन्द विश्वकल्याण के राष्ट्रीय महादेव, सर्वोपकारक, वेदोद्धारक महापुरुष थे। उनकी पुण्य स्मृति में महोत्सव समारोह मनाने; यज्ञ करने, वेद विद्या प्रचार करना समूचे राष्ट्र और प्राणीमात्र का कल्याण करना है यह व्यक्ति पूजा नहीं है। यह माना कि कुछ पद लोलुप व्यक्ति कुर्सी पर चिपके बैठे हैं जो राजनैताओं को बुलाते हैं।

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के छठे नियम में कहा है कि संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। इसलिये उन्होंने अपने समय में ८३ आर्यसमाज स्थापित किए जो अब बढ़कर पाँच हजार हो रहे हैं। जिन्हें अभी बहुत आवश्यक कार्य करने हैं। अतः महर्षि जी का आदेश पालन करना सर्वहिताए है व्यक्तिगत नहीं। आर्यों के संगठन मतैक्य की आवश्यकता है। वर्णाश्रम व्यवस्था करनी है। आर्यसमाज कल्याणप्रद है। सत्यार्थी जी काल मार्क्स को तो आर्थिक क्रान्ति का जन्मदाता बताते है और महर्षि दयानन्द को राजनीति और अर्थशास्त्र मे अनभिज्ञ मानते हैं। परन्तु ज्ञातव्य है कि महर्षि जी सकल वेद विद्याओं में विख्यात महा पण्डित थे। उनके पुस्तक भ्रान्ति निवारण के अनुसार उन्होंने ऋग्वेद से पूर्व मीमांसा पर्यन्त अनुमान ३ हजार मान्य ग्रन्थों को पढ़ा था और सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में मनु जी की राजनीति का पूरा उपदेश किया है। उन्होंने चाणक्य नीति और विदुर नीति की विद्या पढ़ी और लिखा है इसलिए कई राजाओं को भी ये ग्रन्थ पढ़ाए थे। महर्षि जी ने आर्याभिविनय ग्रंथ में चक्रवर्ती आर्य राज्य की शिक्षा कई स्थानों पर लिखी है। उन्होंने १८५७ के स्वाधीनता संग्राम का गुप्त रूप से संचालन किया था और आपस की फूट तथा शस्त्रास्त्रों की कमी के कारण संग्राम की असफलता के पश्चात् अजमेर में सारा धनुर्वेद प्रकाशित कर देने की बात कही थी। महर्षि जी ने भारत की आर्थिक उन्नति के लिए विदेशों में जाकर यन्त्र कला की विद्या सीखने की बात कही थी और संस्कृत वाक्य प्रबोध सत्यार्थप्रकाश आर्याभिविनय पुस्तकों में अर्थोपार्जन तथा सन्तुलन के बहुत वचन दिए हैं व भारत की निर्धनता अंग्रेजों द्वारा लूट खसोट और गोहत्या की आर्थिक हानि पर आंसू बहाते थे और प्राचीन धनाढ्य आर्यावर्त की स्वर्ण भूमि की स्मृति दिलाते थे इसीलिये एक बार एक बुढ्ढा स्त्री द्वारा अपने मृतक पुत्र के कफन को उतारकर नदी में बहाने पर रो पड़े थे। इसीलिये कृषि गोरक्षिणी सभा व्यापार यन्त्रविमान के अनेक मन्त्र श्लोक दिए हैं। कार्लमार्क्स में महर्षि से अधिक अर्थ विज्ञान नहीं थी।

अतः महर्षि जी ने राष्ट्र की चहुंमुखी उन्नति और स्वाधीनता के लिए आर्यसमाजों की स्थापना करके आर्ष शिक्षा पद्धति पर संस्कृत के गुरुकुल खोलने का जोरदार उपदेश दिया था। यद्यपि अभी आर्य समाज के जिम्मे महर्षि द्वारा निर्दिष्ट बहुत कार्य करने शेष हैं। जैसे जाति पाति उन्मूलन वेद संस्कृत पठन पाठन गोहत्या बन्दी गुरुकुल संचालनादि है। फिर आर्यसमाज का सगठन राष्ट्रीय सगठन लोकोपकार सर्वोपरि है। दिल्ली में ही दो सौ आर्यसमाजें हैं। इस समय आर्यसमाजों के प्रबन्ध व्यय से ही ३००० शिक्षण संस्थाएं ६० गुरुकुल ४०० अछूत पाठशालाए २०० अनाथालय ५०० व्यायाम शालाए एक हजार उपदेशक पांच सौ प्रेस पत्रपत्रिकाएं विद्याप्रचार लोकोपकार के लिए चला रखे हैं। ५४० आर्य वीर दल तथा दो सौ युवक व कुमार सभाएं हैं और राष्ट्रीय आपत्ति विपत्ति के समय देशहित कई बार लाखों करोड़ों रुपये चन्दा सरकार को दिया है। यह महर्षि दयानन्द का प्रताप है इसलिए उनकी पुण्य स्मृति मे मनाए जाने वाले जलसे तमाशे और पिकनिकें नहीं अपितु ये राष्ट्रीय सगठन के सम्मेलन और महोत्सव हैं जिन से लाखों करोड़ों मनुष्यों को धार्मिक चेतना स्वदेश रक्षा और विद्या समाज सेवा [illegible] पुरुष उठाने की कोई गुंजाइश ही नहीं है। ऐसे अमर यशस्वी धवल कीर्ति महर्षि महात्मा की शिक्षा विद्या का तो सार्वभौम सम्मान प्रसार करना चाहिए।

सत्यार्थी जी के कथन में महर्षि जी को शरीर भस्मि अस्थियों सत्य के ग्रहण असत्य के त्याग पाखण्ड खण्डन त्रैतवाद दर्शन मतवादियों द्वारा यातनाएं विषपान सत्यार्थप्रकाश में सम्प्रदाय विरोध "हिन्दु खण्डन" काशी में मूर्ति पूजा व जाति खण्डन फिर मुस्लिम ईसाई मत खण्डन सिख पारसी भी आर्य बने, चुनाव प्रणाली श्रमिक किसान व्यभिचार निवृत्ति में नियोग प्रयोग विधवा विवाह विषमय भोजन त्याग सम्पत्ति का अकेन्द्रीयकरण गोरे शासकों को खत्ताड़ अंग्रेजी विरोध स्वराज्य स्वदेशी का उद्घोष आदि बातें तो सत्य ठीक हैं। परन्तु बम्बई में एक मुसलमान के घर पर आर्यसमाज की स्थापना बताना, दारुल अलूमदेव बन्द के मोहम्मद कासिम को सौरम ग्राम में महर्षि द्वारा ४५०) का चन्दा देना जोधपुर में महर्षि के विषपान में अन्त समय तक डाक्टर अलीमरदान खा को महर्षि का चिकित्सक बताना ईसाईयों की थियोफीकल सस्था से गहरे रिश्ते आदि बातें सर्वथा गलत हैं।

बम्बई में महर्षि दयानन्द ने अप्रैल १८७५ ई० को मोहल्ला गिरगांव में साढ़े पांच बजे डा० मानकचन्द्र की वाटिका में श्री गिरधारीलाल कोठारी वकील की प्रधानता में आर्यसमाज की स्थापना की श्री किसी मुसलमान के घर नहीं की।

प्रसिद्ध पंचायती ग्राम सौरम में महर्षि के पधारने की अभी तक कोई जानकारी नहीं मिली है। महर्षि जी तो संस्कृत हिन्दी के प्रचारक होते हुए अरबी फारसी भाषा के विद्यालय का चन्दा क्यों देते उनका उपदेश तो आर्य गुरुकुलों में आर्ष शिक्षा पद्धति था, वे वर्णाश्रम के आचार्य थे। सौरम ग्राम के पीर जी अशरफअली ने उस गांव में मोहम्मद कासिम को बुलाया था वहां ग्राम मे उसकी पगड़ी और २५) से पचायती सम्मान किया और दारुलअलून का चन्दा हिन्दुओं ने २५०)+मुसलमानों ने २००)=४५०) जनता ने दिया था। यह उपरोक्त बात मुलतानपुर के श्री राजनाथ पाण्डे ने स्वयं गलत लिखकर फैलाई थी। उन्होंने ही शेष जानकारी मेरे (लेखक) से ही ली थी।

महर्षि जी ने थियासोफीकल वालों के कपट व्यवहार से अपने सम्बन्ध तत्काल तोड़ दिए थे और जोधपुर में वहां के राजा जसवन्तसिंह की वेश्या नन्ही भगतन और रसोइया जगन्नाथ द्वारा महर्षि को विष दिए जाने पर डा० अली मरदान ने महर्षि को और भी विष (कोलामेल) दे

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सुरा निषेध

मद्यपान करना अशोभन बताते वेद,
मद्यपान से ही लंक रावण मिटाया है।

मद्यपान आसुरी प्रवृत्ति मतधारीवीर
चित्त को तुम्हारे मद्यपान ने भ्रमाया है।

सुरा का ही पान कर सुर रण हारे सदा,
सुरा से ही कुंभकरण तन को गलाया है।

सुरा की विचित्र गति सुरासुर जान रहे,
सुरा ने बताओ सखे किसको बचाया है।

चित्र के समान सुरा सबको बनाता सदा,
ज्ञान हो करता विवेक हीन क्षण में।

इन्दिया शिथिल कर पंथ मे गिराता सदा,
रक ही बनाता सोच सोच मन में।

ईश से पृथक् कर शीश को झुकता सदा,
आनन छिपाता सदा देखो जन जन में।

नारकीय जीवन अजीवन समान किये,
...समान सुरा किये कण कण में।

मरण समान सुरा चरण बढाओ नही,
काम, क्रोध, मद का हरण कर बावरे।

करो हे पुनीत कर्म मीत है बताते यही,
जोत से प्रफुल्ल कर तन मन रावरे।

देश को जगाओ परिवार को बचाओ,
मान अपना बढाओ सदा पूर पूर घाव रे।

नक्र के समान सुरा बक्र की गति लिये हुये,
गज ग्राह के समान देख रहा दांव रे।

—गोविन्द प्रसाद त्रिपाठी
एम० ए०, बी० एड०, साहित्यरत्न सहायक अध्यापक
बसंतलाल इण्टर कालेज तुलसीपुर, गोण्डा



30वें संस्करण से उपरोक्त मूल्य देय होगा।



उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें।

शाखा कार्यालय :-
६३ गली राजा केदारनाथ,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६
(स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार से खरीदें) फोन नं० २६१८३८

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ; रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा राज नं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 4 ... वत् १,९६,०८५३,०८४



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री | सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १२ अङ्क ६ | ७ जनवरी १९८५ | वार्षिक शुल्क १५) | विदेश म ५ पौंड | एक प्रति ३० पैसे

अकालियों के साथ समझौता वार्ता में हरयाणा से अन्याय किया गया तो उसका डटकर विरोध होगा। —प्रो० शेरसिह

चुनाव समाप्त हो चुके हैं, नये मन्त्री परिषद् का गठन भी हो चुका है। पूरी आशा है कि देश में एक टिकाऊ और स्थिर सरकार बन जायेगा। इस बार के चुनाव अभियान में राष्ट्रीय एकता और अखंडता की बात खुलकर आई। देश की अखडता के लिए आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव के कुछ अग बहुत खतरनाक हैं। यह बात भी प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी ने खुलकर और देश में विभिन्न स्थानो पर कही। विरोधी दलो ने भी प्रस्ताव की उन मागो से अपनी असहमति प्रकट की है और अपने निरन्तर विरोध की बात कही। इस चुनाव की मैं यह उपलब्धि मानता हूँ। यह बात भी कही गई कि साम्प्रदायिक राजनतिक दलों पर पाबन्दी लगाई जाये, परन्तु सब दलो ने यह बात खुलकर नही कही। इस प्रश्न पर सब दलो की सहमति प्राप्त करना आवश्यक हो गया है।

प्रधान मन्त्री ने अपने भाषणो मे पजाब की समस्या के सुलझाने के काम को प्राथमिकता देने की बात कही है। अन्य दलो ने भी वार्ता आरम्भ करने के लिए कहा है। इसलिए अब यह बात निश्चित है कि शीघ्र ही अकालियो से वार्ता की बात चलेगी। इस सम्बन्ध मे हरयाणा रक्षा वाहिनी का सभी दलो के नेताओ से यह आग्रह पूर्वक निवेदन है कि जब तक अकाली आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के उन अंगों को वापस न लें, जिनसे देश की एकता को चोट पहुंचती है या जो संविधान की भावना और मान्यताओ के विरुद्ध है, उनसे कोई वार्ता न की जाये। यदि अकाली इस शर्त को पूरा करने मे इन्कार करते हैं और फिर भी उनसे वार्ता की बात कही जाती है तो यह मानने के लिए विवश होना पड़ेगा कि आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव के बारे मे पिछले एक महीने से सभी दलों ने जो बात कही, वे मतदाताओं के साथ धोखा था। अकालियों की जायज और न्याय संगत किसी भी मांग के माने जाने का हम डटकर विरोध करगे जिसके फलस्वरूप हरयाणा के साथ अन्याय हो, यह दुख की बात है कि ६ महीने से अधिक बीतने पर भी और पजाब में सेना की मौजूदगी मे भी सतलुज यमुना नहर की खुदाई का काम नाममात्र हो पाया है। सरकार जनता को विश्वास मे लें कि इन ६ महीनो में नहर के काम मे क्या प्रगति हुई है। हरयाणा ३० लाख रुपये से अधिक का घाटा प्रतिदिन उठा रहा है और इधर जो ध्यान शासन, दलो तथा जनता का जाना चाहिये उसका नितान्त अभाव है, जो हरयाणा निवासियो को बहुत अखरता है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी की उत्तराधिकारी सरकार को चुनाव में शानदार सफलता की बधाई के साथ साथ हम हरयाणा सम्बन्धी उनके अधूरे काम को पूरा करने की बात भी याद दिलाते हैं। जनवरी १९७० के चण्डीगढ़, फाजिल्का अबोहर के निर्णय को लागू करने से उनका अधूरा काम पूरा होगा। उनके द्वारा आरम्भ की हुई सतलुज यमुना लिंक नहर की खुदाई तीन साल बीतने पर भी वहीं की वहीं खडी है। १९८५ में उस काम को पूरा करने से ही उनको हम सच्ची श्रद्धांजलि दे पायेंगे। इन दोनों कामों में विलम्ब एक अर्थ में उनका अपमान ही होगा।

अब चुनाव समाप्त हो गये हैं। साम्प्रदायिक दलो पर पाबन्दी लगाने का मामला लटकाना भी देश के हित में ठीक नही, साथ ही संसदीय लोकतन्त्र पर अमल करते हुए जो विकृतिया देश के राजनैतिक तथा आर्थिक जीवन में आई है उनके निराकरण के लिए भी अब सक्रिय होने का समय आ गया है।

हरयाणा से निर्वाचित लोकसभा के सदस्यों का अब उत्तरदायित्व बढ़ गया है क्योंकि हरयाणा की जनता ने उन्हें सभी सीटों पर भारी बहुमत से चुनकर भेजा है। अतः हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए ससद तथा उससे बाहिर पूरी शक्ति से आवाज उठावें। अकालियो के साथ प्रधानमन्त्री शीघ्र ही पंजाबसमस्या के समाधान के लिए समझौता वार्ता आरम्भ करने की घोषणा कर चुके हैं। सम्भव है कि पूर्व की भान्ति पंजाब के कुछ बिचौलिये हरयाणा के हितों को हानि पहुँचाकर सौदाबाजी करने का यत्न करे। अतः उनसे सावधान रहना होगा और हरयाणा के सांसदों को अकालियों की हरयाणा विरोधी मांगों का डटकर मुकाबला करना चाहिए।

हरयाणा की जनता ने अकालियों की हरयाणा विरोधी मांगों को न मनवाने के लिए ही प्रधानमन्त्री श्री राजीव गान्धी के हाथ मजबूत करने के लिए सभी १० स्थानों पर कांग्रेस के प्रत्याशियों का समर्थन किया है।

राष्ट्र को सुदृढ करने तथा साम्प्रदायिक शक्तियों के षड्यन्त्र को विफल करने पर ही शहीद इन्दिरा गांधी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक चुनाव शीघ्र होने वाला है। अतः जिन आर्यसमाजों ने अभी तक अपने आर्यसमाजों का वेद प्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी का प्राप्तव्य धन प्राप्त नहीं हुआ है, उनसे निवेदन है कि वे मनीआर्डर अथवा सभा के प्रचारकों द्वारा शीघ्र भेजने की कृपा करें ताकि स्वीकृत प्रतिनिधियों को समय पर चुनाव ऐजण्डा भेजा जा सके।

रणजीतसिंह सभा मन्त्री

मानवता के अनन्य उपासक

ब्र० ज्ञानचन्द आर्य गुरुकुल खानपुर (महेन्द्रगढ़)

अंकित है इतिहास हमारे, त्यागपूर्ण बलिदानों से।
कौन नहीं है परिचित जग में, आर्यवीर सन्तानों से ॥

आर्यसमाज बलिदान पथ का राही रहा है, इतिहास साक्षी है कि इतने अधिक बलिदानी, देशभक्त व धर्मवीर और किसी संगठन ने नहीं पैदा किये जितने कि आर्यसमाज ने अपनी न्यून जीवन अवधि काल में राष्ट्र व समाज को दिये।

इस समाज के आर्य स्त्रोत, ज्योतिपुञ्ज महर्षि देवदयानन्द जी के जीवन से ही कई भूले भटके मुसाफिरों ने दिशा प्राप्त करके अपने आप को देश व धर्म पर आहूत कर यश प्राप्त किया। उन्हीं वीर पुर्वजों की शृंखला में हमारे चरित्र नायक स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का अपना एक अभिन्न स्थान है। जिस वीर सेनानी ने अपना सारा श्रेय उस ऋषि को दिया तथा कृतज्ञतापूर्ण शब्दों में उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर अपने उद्गार कहे थे कि—'तुम्हारे सहवास ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा जीवन लाभ करने को बनाया। मैं क्या बन गया और अब क्या हूँ? वह सब तुम्हारी कृपा का ही परिणाम है। भगवान्! मैं तुम्हारा ऋणी हूँ। उस ऋण से मुक्त होना चाहता हूँ। इसलिये जिस परमपिता की असीम गोद में तुम परमानन्द का अनुभव कर रहे हो उसी से प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारा सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करें।"

किस प्रकार से उस यशस्वी सन्त के जीवन में परिवर्तन आया आओ! उन्हीं के ही शब्दों में पढ़े—सत्यार्थप्रकाश के दशम समुल्लास में भक्ष्याभक्ष्य के विषय ने जीवन में एक घोर हलचल डाली। ज्यों-ज्यों मांस भक्षण के दोष पढ़ता गया त्यों त्यों प्रातःकाल का मूर्तिमान् होकर मेरे समक्ष खड़ा होता गया। एक एक शब्द ध्यानपूर्वक पढ़ते पढ़ते भोजन का समय आ गया। अपने विचार में निमग्न हाथ पांव धोकर मैं भी भोजन-गृह में आ बैठा। अन्य खाद्य वस्तुओं के साथ ही मांस भी कटोरे में आया ही था कि उसे देखकर उस दिन ऐसी घृणा हुई कि कांसी के कटोरे को उठा दीवार पर फेंक मारा। कटोरा टुकड़े टुकड़े हो गया। मेरे साथी सब घबराये—हे! हे! क्या तरकारी में मक्खी पड़ गई? क्या था ओ मिस्तर! कमबख्त यह क्या किया·········मैंने सबको रोककर कहा मिस्तर बेचारे को कुछ मत कहो एक आर्य के मत में मांस भक्षण भी महापापों में से एक है, मैं मांस का अपनी थाली में रखा जाना सह नहीं सकता। उसके पश्चात् कभी भी मांस भोजन की रुचि तक न हुई और कुछ दिनों के पश्चात् ही मांस भक्षण से ऐसी घृणा हुई कि मेरे लिए न केवल उस पंक्ति में बैठना असह्य हो गया जिसमें मांस परोसा जाए, अपितु मांसाहारियों के चौके में खाने से भी चित्त खिन्न होने लगा। (कल्याण मार्ग का पथिक)

'सङ्गच्छध्वं संवदध्वं स वो मनांसि जानताम्' इस श्रुति वचन की चरितार्थता उनके जीवन से उस क्षण प्रकट होती है, जो शब्द उन्होंने धर्मवीर पं० लेखराम जी की चिता के समीप खड़े होकर भावुकता पूर्ण भाषण में कहे थे—हम सभी को चाहिये कि इस वीर की चिता के समीप खड़े होकर यह प्रतिज्ञा करें कि आपस की फूट को हटाकर प्रेम पूर्वक मिलकर काम करेंगे। यदि फूट चलती रही तो मेरे लिये काम करना तो बहुत असम्भव हो जायेगा।

(आर्यसमाज का इतिहास प्रथम भाग)

ऐसे महामानव के प्रति श्रद्धावनत पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड जी ने बड़े सारगर्भित शब्दों में यथार्थ कहा है—

सुतः सर्वे तुल्याः जगति हि यतस्ते भगवतः,
ततः प्रीत्या प्रेक्ष्याः भुवि खलु समस्ता असुभृतः।
इतीमं सद्बोधं, ददत इह नित्यं हितकरं,
गुरुन् श्रद्धानन्दान्, सविनयमहं नौमि सततम् ॥

भगवान् की सृष्टि के सब लोग भगवान् के पुत्र होने के कारण बराबर है, इसलिये समस्त प्राणधारियों के साथ प्रीतिपूर्वक बरतना चाहिये। इस प्रकार जो सदा लोगों को उत्तम हितकारी उपदेश देते थे, ऐसे गुरु श्रद्धानन्द जी को मैं विनय पूर्वक सदा नमस्कार करता हूँ।

(महापुरुषकीर्तनम्)

अन्त में संस्कृत सूक्ति के अनुसार 'कीर्तिर्यस्य स जीवित' कि जिस का संसार में यश है, वह नश्वर देह त्याग के पश्चात् भी जीवित है। उनका यशोमय जीवन बेराहों के लिए पथ प्रदर्शक के रूप में हमेशा के लिए रहेगा। जगत्पति परमात्मा से प्रार्थना है कि वह हमें शक्ति दें जिससे उस यति के बताये मार्ग पर निर्भयता से चल सकें, तथा गर्वपूर्ण यह घोषणा कर सके—

हम आर्यसमाज के सैनिक हैं, रक्षा करने आये हैं।
श्रद्धानन्द बैरागी बनकर, इस पर मरने आये हैं॥

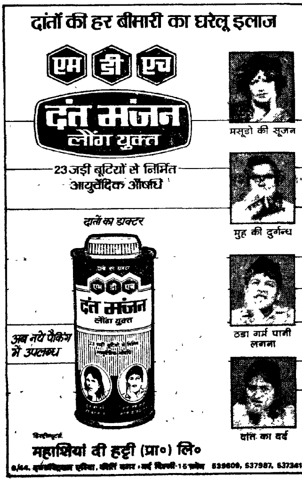
अपने बच्चों को धार्मिक बनाये

धर्म प्रवेशिका का प्रकाशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की आर्य विद्या परिषद् की ओर से आर्य स्कूलों में ५ वीं तथा ६ वीं कक्षाओं में धार्मिक शिक्षा पढ़ाने के लिए "धर्मप्रवेशिका" पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। इसका लेखन सभा के सुयोग्य मन्त्री डा० सत्यवीरसिंह जी शिक्षा शास्त्री हैं ने किया है। एक प्रति का मूल्य २ रुपये है। अतः अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए इस पुस्तक को मंगवाकर धर्म लाभ उठावें।

प्राप्ति स्थान
प्रस्तोता, आर्य विद्या परिषद् हरयाणा
सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक

१५ जनवरी को आर्य विद्यालयों में धर्म परीक्षा हो रही है।



सम्पादकीय:-

हरयाणा के सांसदों व विधायकों से निवेदन

प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने नया मन्त्री मण्डल बनाते समय घोषणा करते हुए पंजाब समस्या के समाधान के लिए पहल करने की बात कही थी, उसके अनुसार ही उन्होंने अपने मन्त्री मन्डल के वरिष्ठ सदस्यों गृहमन्त्री श्री एस० बी० चव्हाण, रक्षामन्त्री श्री नरसिंहराव शिक्षामन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त पर आधारित एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया है और पंजाब समस्या के सभी पहलुओं पर नये सिरे से विचार करने तथा सुझाव देने का कार्यभार सौंपा है। यह समिति पंजाब की वर्तमान स्थिति का जायजा लेगी और जनता के विभिन्न वर्गों द्वारा समस्या के हल के लिए दिये गये सुझावों की जांच करेगी। सरकारी सूत्रों के अनुसार सारी स्थिति का जायजा लेने के पश्चात् यह समिति पंजाब समस्या के समाधान के लिये नये सिरे से प्रयास आरम्भ करेगी।

उधर पूर्व की शान्ति एवं केन्द्रीय मन्त्री सरदार स्वर्णसिंह तथा पंजाब मार्क्सी पार्टी के सचिव सरदार गुरचरणसिंह रंधावा आदि नेताओं ने बिचौलिया बनने के लिए प्रधान मन्त्री को अपने प्रस्ताव भेजने आरम्भ कर दिये हैं और ले दे के रवैया अपनाने पर जोर दिया है। परन्तु हरयाणा की जनता इस प्रकार के बिचौलियों को स्वीकार नहीं करेगी। यह किस प्रकार सहन हो सकता है कि हरयाणा का पक्ष सुने बिना और हरयाणा से बाहर के पंजाबवासी जिनकी सहानुभूति अकालियों के साथ रहती है। बिचौलिया बनकर हरयाणा की कीमत पर सौदा करें? इस प्रकार के बिचौलियों द्वारा जब भी भारत सरकार तथा अकालियों का समझौता हुआ है, हरयाणा की जनता सदा घाटे में रही है। पंजाब का जब 1966 में विभाजन हुआ था तो पानी तथा बिजली का बटवारा करते समय हरयाणा के साथ भेदभाव हुआ था। भाखड़ा डेम जो हरयाणा के लिए ही बनाया गया था, उसे पंजाब सीमा में रखा गया और उस पर नियन्त्रण भी पंजाब का ही रखा गया जबकि उसके निर्माण पर हरयाणा का भी धन खर्च हुआ था। शाहकमीशन ने चण्डीगढ़ तथा खरड़ तहसील को हिन्दी भाषी क्षेत्र मानकर इसे हरयाणा में सम्मिलित करने का निर्णय दिया था। परन्तु अकाली नेता सन्त फतेसिंह के आमरण अनशन के दबाव के कारण अकालियों की सहमति से प्रधान मन्त्री ने इस निर्णय को अपने 1970 के ऐवार्ड में बदलकर सन्त फतेहसिंह की जान बचाने के लिए चण्डीगढ़ के बदले हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का हरयाणा को देने की घोषणा की थी उस समय अकालियों ने दीपमाला जलाकर स्वागत किया था और हरयाणा की जनता ने राष्ट्र हित के लिए घाटे में रहते हुए भी इसे सहन करके राष्ट्र प्रेम का परिचय दिया था। परन्तु थोड़े दिन के बाद अकाली इस सौदे से मुकर गये और उन्होंने चण्डीगढ़ के साथ अबोहर फाजिल्का को भी लेने के लिए हिंसक आन्दोलन आरम्भ कर दिया और आनन्दपुर साहब में बैठकर एक राष्ट्र के लिए हानिप्रद प्रस्ताव करके अपनी खालिस्तान समर्थक मांग प्रस्तुत कर दी।

हरयाणा की प्यासी धरती की प्यास बुझाने के लिए रावी ब्यास के फालतू पानी के सदुपयोग के लिए सतलुज यमुना लिंक नहर की खुदाई के लिए हरयाणा ने पंजाब क्षेत्र से नहर के निर्माणार्थ के लिये करोड़ों रुपये दिये परन्तु अकालियों ने इस नहर की खुदाई में रुकावटें डालते हुए मोर्चा लगा दिया। उन्हें रावी ब्यास का फालतू बहने वाला पानी पाकिस्तान को मुफ्त में देना तो स्वीकार है परन्तु वे अपने भाई हरयाणा को नहर की खुदाई का मूल्य प्राप्त करके भी पानी देना नहीं चाहते। इस प्रकार हरयाणा की जनता को प्रति वर्ष 10 करोड़ रुपए की हानि हो रही है। पानी के बिना इसकी फसलें सूख रही हैं। इसी प्रकार बिजली का वितरण भी अन्यायपूर्ण है। इसी कारण हरयाणा में बिजली का संकट है।

वर्तमान लोकसभा के चुनाव प्रचार के अवसर पर प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने अकालियों के आनन्दपुर साहब प्रस्ताव उनकी हरयाणा तथा राष्ट्र विरोधी मांगों का डटकर विरोध किया था। इसी से प्रभावित होकर हरयाणा के मतदाताओं ने सभी लोकसभाई क्षेत्रों से कांग्रेस के प्रत्याशियों को सफल बनाकर श्री राजीव गांधी के हाथ मजबूत किये हैं और हरयाणा से चुने गये सांसदों पर हरयाणा के हितों की रक्षा करने का भार डाला है।

अतः मैं हरयाणा से नवनिर्वाचित सांसदों तथा हरयाणा विधान सभा के विधायकों से नम्र निवेदन करता हूं कि वे हरयाणा की जनता की भावनाओं का आदर करते हुए अपने कर्त्तव्य का पालन करें तथा संगठित होकर एक स्वर में अपनी आवाज प्रधानमन्त्री तक पहुंचाने का कष्ट करें। इसके लिए सांझा मंच तैयार करना होगा। इसी उद्देश्य से हरयाणा रक्षा वाहिनी की ओर से 20 जनवरी रविवार को 12 बजे हरयाणा के ऐतिहासिक स्थान दयानन्द मठ रोहतक में हरयाणा की सभी धार्मिक सामाजिक तथा राजनतिक संगठनों के कार्यकर्त्ताओं की एक सम्मिलित बैठक आमन्त्रित की गई है, ताकि सभी के सहयोग से सांझा कार्यक्रम बनाकर हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए ठोस तथा प्रभावशाली पग उठाया जा सके।

—प्रो० शेरसिंह

हरयाणा के हितों की रक्षा हेतु आवश्यक बैठक

प्रधानमन्त्री श्री राजीव गान्धी ने वरिष्ठ मन्त्रियों की उच्च स्तरीय समिति बना कर पंजाब समस्या समाधान हेतु नये सिरे से विचार करने तथा सुझाव देने का कार्यभार सौंपा है।

हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह भी शीघ्र ही प्रधान मन्त्री तथा समिति के तीनों सदस्यों से मिलकर हरयाणा का पक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। सम्भव है अकालियों से भी शीघ्र समझौता वार्ता पुनः आरम्भ होगी। समझौता करते समय हरयाणा के साथ किसी प्रकार का अन्याय न हो, इसके लिए आवश्यक है कि हम संगठित होकर हरयाणा के हितों की रक्षा करने की तैयारी करें।

अतः हरयाणा रक्षा वाहिनी की सभी शाखाओं तथा अन्य धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं का 20 जनवरी रविवार को दोपहर 12 बजे दयानन्द मठ; रोहतक में सम्मिलित बैठक होगी।

अतः आपसे प्रार्थना है कि इस अत्यन्तावश्यक बैठक में समय पर सम्मिलित होकर अपने सुझाव तथा सहयोग प्रदान करें।

म० भरतसिंह वानप्रस्थी संयोजक

समालखा मण्डी में वैदिक सत्संग

8 नवम्बर सायं के 4 बजे श्री हरिसिंह प्रधान आर्य समाज गांव शोरा रसूलपुर जि० सोनिपत के यहां श्री वेदप्रकाश शास्त्री पुरोहित आर्य समाज समालखा मंडी ने पारिवारिक यज्ञ करवाया इस में गांव के काफी स्त्री और पुरुष सम्मिलित हुए-आर्य समाज समालखा मंडी के भी अधिकारी व सदस्य उपस्थित थे। इस अवसर पर 10 व्यक्तियों ने वे यज्ञोपवीत धारण किया स्वामी सेवानन्द महामन्त्री हिन्दू शुद्धि समिति समालखा ने वैदिक धर्म की विशेषता और शुद्धि की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर श्री कंवर सिंह मूले जाट ने अपने परिवार के 18 सदस्यों सहित यज्ञोपवीत धारण कर वैदिक धर्म की दीक्षा ली।

ओमप्रकाश आर्य

भोपाल में गैस दुर्घटना से पीड़ितों की सहायतार्थ अपील

मध्यप्रदेश के भोपाल नगर में 'युनियन कारबाईड फैक्ट्री' की जहरीली गैस से कितने ही हजार व्यक्तियों का निधन हो गया है और लगभग पच्चास हजार व्यक्ति गैस के दुष्परिणामों से अभी प्रभावित हैं। इस भयकर दुर्घटना से अपना देश ही नही सारा विश्व स्तब्ध रह गया है। कितनी ही महिलाओं का सुहाग उठ गया तथा कितने ही बच्चे अनाथ हो गये हैं, जिन्हे पालन-पोषण और मातृत्व प्रेम देने की आवश्यकता है।

विश्व के इतिहास की इस पहली भयंकर दुर्घटना में जहरीली गैस से बचने के लिए लाखों लोगों की भगदड़, चिकित्सालयों व शमशानों में लगे मुर्दों के अम्बार एवं सैकड़ों शवों का सामूहिक अन्तिम संस्कार होना यही बताता है कि भोपाल नगर में उन दिनों मृत्यु का साम्राज्य छाया हुआ था।

आर्यसमाज का इतिहास रहा है कि उसने अकाल पीड़ित, बाढ़ग्रस्त व तूफान प्रकृति अन्य प्रकोपों से दुःखी मानव की सदैव सेवा की है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने यह संकल्प लिया है कि वह यथाशक्ति भोपाल के पीड़ित भाई बहिनों को सान्त्वनास्वरूप अर्थ व वस्त्र आदि भेजकर उनकी सेवा करे तथा यथाशक्ति अनाथ बच्चों को गोद लेकर उनका हरयाणा के गुरुकुलों तथा विद्यालयों में लालन-पालन व शिक्षा दीक्षा दिलावें।

इस आवश्यक सहयोग के लिए सभी बन्धुओं, समाजसेवी संस्थाओं आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं से पुरजोर अनुरोध है कि वह अधिक से अधिक धनराशि एवं वस्त्रादि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को नकद, मनीआर्डर, ड्राफ्ट, चैक आदि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को दयानन्द मठ, सिद्धान्ती भवन, गोहाना मार्ग रोहतक के पते पर भेजें।

इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए दानी महानुभावों व सभी नागरिकों से पुन: प्रार्थना है कि वे इस कार्य की गम्भीरता को देखते हुए शीघ्रातिशीघ्र अधिक से अधिक धनराशि एकत्र करने में अपना पूरा योगदान करें।

प्रो० शेरसिंह	कन्हैयालाल महत्ता	रणजीतसिंह
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

ओमानन्द सरस्वती प्रधान, परोपकारिणी सभा

भोपाल गैस पीड़ित सहायतार्थ दान

आर्यसमाज सोहना जिला गुड़गांव	२५१)
,, जेकमपुरा गुड़गांव छावनी	१०१)
मनीषा सुपुत्री श्री वेदपाल आर्य एकसयीन १४ हाऊसिंग बोर्ड कालोनी गुड़गांव	५१)
आर्यसमाज शिवाजी कालोनी गुड़गांव द्वारा प० चन्द्रसेन	५१)
श्रीमती सन्तोष आर्या १४ संक्टर सोनीपत १० पुराने कपड़े तथा सैनिक शहीद सहायता निधि के लिए दान	२५)
श्री मास्टर निहालसिंह आर्य दिसावर खेड़ी जिला रोहतक	१०१)

कन्हैयालाल महत्ता
सभा कोषाध्यक्ष

आर्य पर्व सूची (वर्ष १९८५)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्यसमाजों की सूचना के लिए स्वीकृत आर्य पर्वों की सूची प्रकाशित किया करती है। सन् १९८५ की इस प्रकार है—

पर्व	तिथि अंग्रेजी	दिन
मकर संक्रान्ति	१४-१-१९८५	सोमवार
बसन्त पचमी	२६-१-१९८५	शनिवार
सीताष्टमी	१२-२-१९८५	मंगलवार
दयानन्द बोधरात्रि	१७-२-१९८५	रविवार
वीर लेखराम (तृतीया)	२२-२-१९८५	शुक्रवार
नवसस्येष्टि (होली)	६-३-१९८५	बुधवार
नवसंवत्सरोत्सव एव आर्यसमाज स्थापना दिवस	२२-३-१९८५	शुक्रवार
रामनवमी	३०-३-१९८५	शनिवार
हरितृतीया	१०-७-१९८५	शनिवार
श्रावणी उपाकर्म	३०-८-१९८५	शुक्रवार
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	७-९-१९८५	शनिवार
गुरु विरजानन्द दिवस	९-१०-१९८५	बुधवार
विजय दशमी (सिद्धान्ती जयन्ती)	२२-१०-१९८५	मंगलवार
महर्षि निर्वाण दिवस (दीपावली)	१२-११-१९८५	मंगलवार
श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	२३-१२-१९८५	सोमवार

टिप्पणि : १ —इन पर्वों को वैदिक धर्म के प्रचार और वैदिक संस्कृति के प्रसार का महान् साधन बनाना चाहिए।

२—देशी तिथियों के घटबढ़ जाने से अंग्रेजी तारीख में परिवर्तन हो सकता है।

रणजीतसिंह
सभा मन्त्री

आर्यसमाजों के आगामी वार्षिक उत्सव

आचार्यकुल लडरावन जिला रोहतक	१२, १३ जनवरी
आर्यसमाज कासनी ,, ,,	१३, १४ ,,
,, घमगढ जिला करनाल	१, २, ३ फरवरी
कन्या गुरुकुल खानपुर जिला सोनीपत	२२ से २४ ,,
आर्यसमाज जीन्द रोड़ सफीदो जि० जीन्द	२२ से २४ ,,
,, सालवन जिला करनाल	२५ से २७ ,,

मॉरिशस में समारोह

महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलियां

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

(गतांक से आगे)

उनमें से सत्यार्थप्रकाश और संस्कारविधि की एक एक प्रति थाईलैंड निवासी श्री भिखारीसिंह के द्वारा श्री खेमलाल जी के हाथ पड़ी २१ सत्यार्थप्रकाश और संस्कारविधि की इन प्रतियों ने मौरिशस में एक नई जान फूंक दी। उस समय मारिशस के भारतीयों को प्रेरणा देने वाली आर्यसमाज के अतिरिक्त कोई भी संस्था नहीं थी। न सनातन धर्म सभा थी न हिन्दू सभा। सत्यार्थप्रकाश में ऋषि दयानन्द यह स्पष्ट लिख गये हैं कि–कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है (स० प्र० समुल्लास ८)। महर्षि दयानन्द की इन पंक्तियों ने भारतवर्ष में स्वाधीनता प्राप्त करने में प्रेरणा दी और मारिशस में भी। अब दोनों देश स्वतन्त्र हैं। स्वाभाविक है कि जहां जहां आर्यसमाज का व्यक्ति रहेगा उसे अपने देश के प्रति अभिमान होगा और वह देश की स्वाधीनता का उपासक होगा।

मौरिशस के इतिहास में आर्यसमाज का विशेष हाथ है। आर्य समाज ने स्वाधीनता की नींव डाली। शिक्षा प्रसार और समाज सुधार के कार्य इसने हाथ में लिये। इस सम्बन्ध में आर्यसमाज के जिन व्यक्तियों ने मौरिशस राष्ट्र में विशेष कार्य किया है उनमें श्री विष्णु दयाल, सर शिवसागर रामगुलाम और मोहनलाल मोहित जी की सेवाएं विशेष उल्लेखनीय रहेंगी। आर्यसमाज के पास मौरिशस में इस समय कार्यकर्त्ताओं का अच्छा संघटन है।

यदि आर्यसमाज तथा सत्यार्थप्रकाश न होता तो मौरिशस में वह उन्नति न होती जो इस समय दिखाई दे रही है। मौरिशस में सबसे अधिक सुसंघटित संस्था है। कोई भी आर्यसमाज की संस्था ऐसी नहीं है जिसमें हिन्दी भाषा का अध्यापन बच्चों को न कराया जाता हो। ग्रामीण बालकों के मुख से वेद के मन्त्र, आर्यसमाज के भजन और इसी प्रकार की प्रेरणादायक कविताएं जब हम सुनते थे तो बड़ी प्रसन्नता होती थी। मौरिशस में हर ४-५ मील पर छोटा बड़ा आर्यसमाज का मन्दिर है। पिछले रविवार को मुझे ३-४ मन्दिरों में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। ये मन्दिर खेतों के बीच में प्रकृति के सौन्दर्य से सुसज्जित स्थानों पर बने हुए हैं और इन्ही मन्दिरों से मौरिशस राष्ट्र को प्रेरणा मिली है। साम्प्रदायिक मन्दिरों के माध्यम से ऐसा काम कराया जाना सम्भव ही न था।

इधर कुछ वर्षों से मौरिशस में भारतीय हिन्दू संघटनों ने भी कुछ काम आरम्भ किया है। मैंने गत सप्ताह में दी हुई अपनी सभा वक्तृताओं में इस बात का उल्लेख किया था कि भारतीय संस्कृति जहां उच्च आदर्श और ज्ञान-विज्ञान के लिए प्रसिद्ध है, वहां उसमें बहुत सी कुरीतियां, अवैज्ञानिक अनैतिक तत्त्व और अन्धविश्वास भी प्रवेश कर गये हैं। भारत की अच्छी बातों को मौरिशस या अन्य देशों मे ले जाना चाहिए न कि यहां के अन्धविश्वासों और अनैतिकता को। गत वर्ष निर्वाण शताब्दी के अन्तिम दिवस पर आर्य जनता ने कई संकल्प लिए थे, उनमें से दो संकल्प मैंने मौरिशस में जनता को भी दुहरवाये। पहला सकल्प, हम संकल्प करते हैं कि–हमारी ईश्वर में, ईश्वर की सृष्टि में और ईश्वरीय ज्ञान में सदा निष्ठा या आस्था रहेगी। पांचवा संकल्प–हम संकल्प करते हैं कि–हम किसी भी स्थिति में, किसी भी परिस्थिति में, किसी भी अवस्था में, किसी लोभ या दबाव में अनैतिकता और अन्धविश्वासों के साथ समझौता नहीं करेंगे।

मैंने मौरिशसवासियों से कहा कि तुम यह नहीं चाहोगे कि भारत से मलेरिया, प्लेग, चेचक या हैजा मौरिशस में लाए। इसी तरह तुम्हें इस बात सतर्क रहना है कि भारत से किसी भी प्रकार का अन्धविश्वास या छल-छद्म भी, जैसे मूर्तिपूजावाद अस्पृश्यतावाद, नित्य नये उत्पन्न हुए भगवानों, देवियों और महर्षियों के भ्रामक चमत्कार और कुछ अन्धविश्वास जैसे फलित ज्योतिष, हस्तरेखा, ग्रह-उपग्रहवाद, भूत-प्रेतवाद आदि आपके देश में भारत से न आवे। यह कार्य मौरिशस में आर्य समाज ही कर सकती है अन्य कोई साम्प्रदायिक संस्था नही।

आज हिन्दुत्व के नाम से मौरिशस में भी गई बुराइया नये रूप में प्रचलित हो रही हैं। रामलीला में पूंछवाला हनुमान, बन्दर के मुख वाले सुग्रीव, बालि, दस सिर वाला रावण पिछले कुछ वर्षों से ही बनने लगा है। आर्यसमाजिकों की निष्ठा राम और कृष्ण के आदर्श जीवनों में रही है, न कि रामलीला या रासलीला में। गंगा तालाब ऐसे तीर्थों का निर्माण करना सामान्य हिन्दू अपनी संस्कृति समझता है मौरिशस मे एक प्राकृति तालाब को गंगा तालाब का नाम दे दिया है। जो पाखण्ड भारतवर्ष में था वही पाखण्ड यहां भी आरम्भ हो गया है। आर्यसमाज की आस्था वेद के मन्त्रों को पढने में और उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने मे है। गंगा तालाब के प्रकोष्ठ में आदरणीय स्वामी गंगेश्वरानन्द जी द्वारा प्रकाशित चतुर्वेद संहिता रखी हुई तो है किन्तु कोई भी हिन्दू संहिता के मन्त्रों को पढने के लिए तयार नहीं है। आर्यसमाज की ही विशेषता है कि उसने मौरिशस के निम्न वर्गीय भारतीयों को गायत्री मन्त्र सन्ध्या, अग्निहोत्र यज्ञोपवीत आदि के अधिकार प्राप्त करा दिये है। आर्यसमाज की ओर स्वामी दिव्यानन्द जी महाराज, तरुण सन्यासिनी सजीवनी जी, और कुछ मासों से हैदराबाद के वेदभिक्षु जी निरन्तर अच्छा कार्य कर रहे हैं। वेदभिक्षु जी के प्रयास ही मौरिशसवासियों को मन्त्रों के सुरुचि पूर्ण पाठ करने की और यज्ञ कर्म करने की प्रेरणा मिली है। मौरिशस में अपना भी एक काफी बड़ा पुरोहित वर्ग है जो सामान्य व्यक्तियों में से ही तैयार किया गया है।

मैंने और प्रो० वेदव्यास जी एवं प्रो० शेरसिंह तथा मोहनलाल मोहित ने साथ मिलकर एक नये कार्य को संगठित करने का प्रयास किया है। श्री मोहित जी ८९ वर्ष के अनुभवी आर्य-सेवी हैं। धनधान्य और परिवार ने परमात्मा ने उन्हें समृद्ध किया है और उनका परिवार आर्यसमाज के कार्यों में अत्यन्त रुचि लेता है। मोहित जी का मौरिशस में सब आदर करते हैं। सरकार को ओर से उन्हें ओ० बी० ई० की उपाधि भी मिली है। इनका सकल्प है कि—मौरिशस द्वीप मे और भारत में भी ऐसे संस्थान की स्थापना की जाये जिससे देश देशान्तर में विभिन्न भाषाओं के माध्यम से आर्यसमाज का प्रचार किया जा सके। हम लोगो ने मिलकर एक ऐसे सस्थान की नियमावली निर्धारित की है जिसका प्रारम्भ मोहित जी की ५ लाख रुपए की धन-राशि से होगा। यह सस्थान दिल्ली में केन्द्रित होगा और इस सस्थान के द्वारा मिशनरी कार्यकर्त्ता तैयार किए जाएगे और अनेक विदेशी भाषाओ में साहित्य सृजन का काम हाथ में लिया जायेगा। प्रो० वेदव्यास जी को अधिकार दिया गया है कि वे इस संस्थान की नियमावली तैयार करें और उसकी विधिवत रजिस्ट्री दिल्ली मे करावें। यह कार्य शीघ्र ही आरम्भ कर दिया जायेगा।

मौरिशस की X हमारी यात्रा बहुत सुखद रही। २१ तारीख से लेकर २८ तारीख तक अनेक स्थानों पर भारतीयों का स्वागत किया गया और भारतीयों ने भी मौरिशसवासियों के प्रति आभार प्रकट किया। इन्ही दिनो मे दो तीन विशेष कार्य भी हुए, महात्मा गान्धी इस्टीटयूट-मोका, मौरिशस मे, विशेष अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस हुई जिसमे पाण्डित्यपूर्ण निबन्ध प्रवासी भारतीयों के कार्य-कलापों के सम्बन्ध मे पढे गये। भारतीय शासन की सहायता से प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू के नाम पर एक बड़े हास्पिटल की नींव भी राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह के कर-कमलों द्वारा रखी गई।

भारत की ओर से अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने इस अवसर पर कुछ साहित्य भी तैयार किया था जो मोरिशस वासियों को भेंट किया गया आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र "आर्यजगत्" का 'मोरिशस विशेषांक' प्रकाशित किया गया था, जिसे मोरिशस की जनता को भेंट किया। दीपावली का उत्सव था जिसमें अनेक स्थानों पर राष्ट्रपति ने भी भाग लिया। मेरी अपनी धारणा है कि राष्ट्रीय अधिकारियों का राष्ट्रीय उत्सवों में भाग लेना तो अच्छा है, किन्तु अन्धविश्वास परक पूजाओं में उनका सम्मिलित होना, कबरों और समाधियों पर चादरें चढ़ाना और अन्य ऐसे ही कतिपय कार्यों में भाग लेना न राष्ट्र के लिए शोभनीय है और न उनके सार्वजनिक व्यक्तित्व के लिए। इस अवसर पर भारतवर्ष से गंगाजल की एक लाख बोतलों को मोरिशस वासियों के लिए ले जाना मेरी दृष्टि में कोई राष्ट्रीय सेवा नहीं है, उपहास का सा कार्य है। कुछ लोग समझते हैं कि इस प्रकार हिन्दुओं के बीच सद्भावनाएं जागेंगी। ये सब बातें आर्य संस्कृति के विपरीत हैं। प्रत्येक देश को अपने पर्वतों, सरोवरों, सरिताओं और प्राकृतिक स्थलों पर अभिमान होना चाहिए।

दीपावली भारतवर्ष में शरद् ऋतु का त्योहार है, किन्तु मोरिशस में बसन्त ऋतु का। वृक्षों पर आम के फल आने लग गये हैं और कोयल की कीघ्र ही आने वाली है। मोरिशस वासियों को उनके राष्ट्रीय उत्सव पर मेरा आशीर्वाद।

कितना यह देश महान् है

डा० विश्वबन्धु 'व्यथित'

अस्त हुआ अरुणोदय में ही मानो पुण्य विहान है।
धरती पर प्रात: ही लेटी मां जो लहू लुहान है॥

उसके दिल में प्यार बसा था सारे भारतवर्ष का।
सूझबूझ से सम्भाला करती हर कार्य-विभाग का।
तीस गोलियां लगीं इन्दिरा जी की पार्थिव देह में,
नहीं एक भी छेद सकी उनके दिल और दिमाग को।

कायर हत्यारा कितना भी क्रूर और अनजान हो,
उसकी हर निष्ठुर गोली को भी सो इतना ज्ञान था।
सहम गई हर गोली, उन अंगों का स्पर्श न कर पाई;
जिनके कण कण में बसता यह प्यारा हिन्दुस्तान था।

तभी चिरन्तन और अमर कहलाता हिन्दुस्तान है। प्रात: ही······
शक्ति शान्ति की देवी थी वह उसने काम महान् किए।
सतसठ वर्षों के जीवन में पग पग पर बलिदान किए।
अन्तिम बून्द लहू की भारत हित देने का वचन दिया।
राष्ट्र एकता की खातिर ही आखिर अपने प्राण दिए।
सभी शहीदों से ऊंचा उस मां का स्वर्णिम स्थान है।
दुश्मन के भी दिल को दहलाता तेरा बलिदान है।
रो रो कर धरती को गीला करता सकल जहान है।
जिसमें जन्म लिया तुमने कितना वह देश महान् है॥
पूर्ण करेंगे हम मिलकर तेरा जो गुण अभिमान है। प्रात: ही······

शोक समाचार

आर्यप्रकाश पुस्तकालय, नई सड़क दिल्ली के संचालक व आर्य पुस्तक विक्रेता श्री किशनचन्द आर्य की गत दिनों आर्यसमाज लाजपत नगर नई दिल्ली-२ के वार्षिकोत्सव से वापिस लौटते हुए दुर्घटनाग्रस्त होने से मृत्यु हो गई। ममता स्मृति ग्रन्थमाला से उन्होंने आर्य साहित्य के प्रकाशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

चन्द्रमोहन आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड जि० न० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १,९६,०८५३,०८४



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १२ अङ्क ७ १४ जनवरी १९८५ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

मकर—संक्रान्ति

पं० ओमप्रकाश सिद्धान्त शिरोमणि सभा महोपदेशक

मकर-सक्राति का पुण्य पर्व प्रतिवर्ष हमारे जीवन मे आता है। इसका महत्त्व आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत ही ऊंचा है। पृथिवी अपनी धुरी पर घूमती हुई सूर्य की परिक्रमा भी करती है। सूर्य की इस परिक्रमा के काल को सौर वर्ष कहते हैं। भूमि कुछ लम्बायमान वर्तुलाकार जिस परिधि पर इस परिभ्रमण को पूरा करती है उसे 'क्रान्ति वृत्त' कहा जाता है। ज्योतिष के अनुसार इस 'क्रान्ति वृत्त' को १२ भागों में विभाजित किया गया है। इन १२ भागों में विद्यमान आकाशीय नक्षत्र समूहों की जो आकृतियां सी बनी होती हैं, उनसे कुछ समानरूप से मिलते हुए पदार्थों के नाम पर इन बारह राशियों के नामकरण किये गये हैं। वे बारह राशिया ये हैं—

१—मीन २—मेष ३—वृष ४-मिथुन ५-कर्क ६—सिंह ७—कन्या ८—तुला ९—वृश्चिक १०—धनु ११—मकर १२—कुम्भ। जब भूमि एक राशि से दूसरी राशि में गति करती है तो उसे सक्रान्ति कहते हैं। यद्यपि यह परिभ्रमण भूमि का होता है तो भी औपचारिक रूप से इसे सूर्य संक्रमण कहा जाता है। सूर्य छह मास तक क्रान्तिवृत्त के उत्तर भाग की ओर से उदित होता है और छह मास तक इस क्रान्तिवृत्त के दक्षिण भाग से उदित होता है इसी से सूर्य के उत्तर भाग की ओर से उदयकाल को उत्तरायण और दक्षिण की ओर से उदय काल को दक्षिणायन कहा जाता है। उत्तरायण काल मे दिन बढते रहते हैं और रात्रियां घटती जाती हैं जबकि दक्षिणायन काल मे रात्रियां बढती रहती हैं और दिन छोटे होते जाते हैं। सूर्य के मकर के संक्रमण से उत्तरायण और कर्क राशि के संक्रमण से दक्षिणायन आरम्भ होता है। प्रकाश की अधिकता के कारण विद्या ज्ञान एवं अध्यात्म का प्रतीक होने से उत्तरायण को विशेष महत्त्व प्राप्त है। इसी महत्त्व एवं विशेषता को दृष्टिगत करके प्राचीन काल से मकर सक्रान्ति के दिन को पर्व के रूप में मनाया जाता है, जो कि उत्तरायण काल का आरम्भ दिन है। इसी पर्व से सौर वर्ष का आरम्भ होता है।

इस पर्व के अवसर पर सर्दी अपने चर्मोत्कर्ष पर होती है। जड-चेतन-वन पर्वत आदि सर्वत्र शीत का साम्राज्य होता है। हाथ पाँव सिकुड़ जाते हैं—सुन्न हो जाते हैं। 'रात्रौ जानु-दिवा भानु' की उक्ति चरितार्थ होती है। अर्थात् रात्रि के समय पैर सिकुड कर पेट पर आ जाते हैं और दिन के समय सूर्य का ताप बड़ा अच्छा भाता है। रात्रियां लम्बी और दिन छोटे होना यह इस काल की विशेषता है। मकर सक्रान्ति से यह क्रियाकलाप बिल्कुल उल्टा होना आरम्भ हो जाता है। उत्तरायण में सूर्य के प्रवेश करते ही इस दिन से दिन क्रमश: बड़े और रात्रियां छोटी होनी शुरु हो जाती हैं। वैदिक साहित्य में इस उत्तरायण काल को देवयान कहा गया है। अभ्यासी साधक जन विशेष रूप से अपना योगाभ्यास और जप-तप इसी काल में करते हैं। विशेष उच्च गति की कामना से उच्चकोटि के लोग इसी समय में अपना देह त्यागते हैं। कहते हैं भीष्म ने महाभारत के युद्ध में तीरो से छलनी होने पर भी इसी उत्तरायण काल की प्रतीक्षा मे शर-शय्या पर काफी लम्बे समय तक शयन किया था। इस उत्तरायण काल की इसी विशेषता के कारण इस समय के प्रारम्भ दिन को एक पर्व का रूप दे दिया गया, जो अज्ञात प्राचीन काल से बराबर इसी रूप मे चलता चला आ रहा है।

जैसे इस पर्व की प्राचीनता सर्वमान्य है वैसे ही इस पर्व की सार्वदेशिकता भी प्रसिद्ध है। यह पर्व भारत के सभी प्रान्तो और भागों के साथ साथ देश देशान्तरो और द्वीप द्वीपान्तरो में समान रूप से मनाया जाता है। यह समय क्योंकि शीत प्रधान है अतः शीत निवारण के उपायो का भी सर्वत्र समान रूप से प्रयोग किया जाता है। तिल का प्रयोग इस ऋतु मे विविध प्रकार से किया जाता है। तिल, तैल और तूल (रूई) का प्रयोग ही विहित नहीं, अपितु दान भी पुण्य कारक माना जाता है। इसी प्रकार तिलकुटी, तिल के लड्डू रेवड़ियां आदि इस ऋतु मे सर्वत्र प्रचलित हैं।

प्राचीन ग्रीक लोग भी वर वधू को सन्तान वृद्धि के निमित्त तिलों का पक्वान्न बाटते थे। इस अवसर पर रोमन लोग भी अंजीर खजूर और मधु का प्रसाद अपने इष्ट मित्रों में बाटते थे। इस अवसर पर गर्म वस्त्रादि का दान भी सर्वत्र प्रचलित है। पंजाब में इसी पर्व का एक रूप लोढी पर्व के रूप में प्रचलित है। इस अवसर पर सामूहिक रूप से अग्नि प्रज्वलन का रूप सामूहिक यज्ञो का ही बदला हुआ रूप समझना चाहिए। अत: प्राचीन शुद्ध यज्ञीय पद्धति के अनुसार सभी पर्वों के समान इस पर्व पर भी सामूहिक वृहद् यज्ञो का अनुष्ठान और दैवी भावनाओ को जगाना चाहिए। यह प्रकाश एव ज्ञान को उद्वेलित करने वाला अवसर है, जो अविद्या अन्धकार से अज्ञान से हट हटाकर विज्ञानार्थ के दिग्दर्शन के लिए सुमहान प्रयत्न करने का दिव्य सन्देश यह पर्व देता है। यह पर्व याद दिलाता है, उस दिव्य सन्देश की जिसके अनुसार एक भक्त भगवान् से नतमस्तक होकर प्रार्थना करता है—

"तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय ॥"

हे ईश ! मुझे अविद्या अन्धकार से छुड़ाकर विज्ञानार्थ के दर्शन करा। मुझे मृत्यु से छुड़ाकर अमरपद प्राप्त करा।

आर्यसमाजों के आगामी वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज धमगढ जिला करनाल	१, २, ३ फरवरी
,, ककोरकलां जिला मेरठ	८, ९ ,,
कन्या गुरुकुल खानपुर जिला सोनीपत	२२ से २४ ,,
आर्यसमाज जीन्द रोड़ सफीदो जि० जीन्द	२२ से २४ ,,
,, सालवन जिला करनाल	२५ से २७ ,,
,, नारायणगढ जिला अम्बाला	८ से १० मार्च

पुत्रेष्टि-यज्ञ एवं सफलता का हेतु

पं० वीरसेन वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य, वेदसदन, इन्दौर

सुसन्तति के लिए यज्ञ आवश्यक—

सन्तान होने के लिए, उत्तम सन्तान होने के लिए तथा इच्छित सन्तान प्राप्ति के लिए या जिनके कन्यायें ही होती हैं उनको पुत्र प्राप्ति के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ का अनुष्ठान सुयोग्य ऋत्विजों से करवाना ही चाहिये।

पुत्रेष्टि यज्ञ के ऋत्विज् कौन हों—

सुयोग्य ऋत्विजों से उन्हीं का ग्रहण करना चाहिये जो वेदज्ञ, कर्मकुशल, आयुर्वेद के भी ज्ञात, सद्धर्मी, परोपकारप्रिय, सदाचारी गृहस्थ हों। जो गृहस्थ भी हैं और सन्तान विहीन हैं, वे भी पुत्रेष्टि यज्ञ में ग्राह्य नहीं हैं। त्याज्य ही हैं। वानप्रस्थ, संन्यासी एवं ब्रह्मचारी तो इस यज्ञ में ऋत्विज होने ही नहीं चाहिये। अन्य यज्ञों में भी ये ऋत्विज होने के अधिकारी नहीं हैं।

यज्ञ से दैवी भावनामय प्रजा की उत्पत्ति—

यज्ञ के द्वारा सुसंस्कारित, सुसन्तति की प्राप्ति होती है। मानव निर्माण के लिये यह वेद का श्रेष्ठ विज्ञान है। सुसंस्कारित मन से उत्तम विचार एवं शुभ संकल्पों का उदय होता है। जिससे शुभ कर्मों की सृष्टि होती है। यज्ञ से उत्पन्न प्रजा दैवी भावना एवं कर्मों से युक्त होती है। यज्ञ से रहित उत्पन्न सन्तान या प्रजा कामज प्रजा है। उसमें केवल विषय वासना के ही संस्कारों का वपन होना स्वाभाविक है। अतः उत्तम, सुसंस्कारित सन्तान की प्राप्ति के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ अति आवश्यक है। गर्भाधान संस्कार भी पुत्रेष्टि यज्ञ का ही एक अंग है।

पुत्रेष्टि यज्ञ सर्वोपरि उपाय है—

यहाँ हम प्रधान रूप से पुत्रेष्टि यज्ञ के बारे में उन्हीं के लिये लिख रहें हैं जिनको विवाह के पश्चात् भी सन्तान प्राप्त नहीं हुई है। सन्तान न होने के अनेक कारण हैं। रजोदोष, गर्भाशय दोष, वीर्य दोष, बन्ध्यत्व एवं क्लीबत्व आदि प्रधान दोष हैं। इन दोषों के निवारणार्थ यथोचित उपचार, चिकित्सा आदि करना चाहिये। चिकित्सा के बाद भी कभी कभी सन्तान लाभ नहीं होता है। कुछ ऐसे भी चिकित्सक मिले, जिनने अपनी परीक्षा बड़े बड़े हास्पिटल्स में प्रसिद्ध, चिकित्सकों से २-३ बार कराई और उनमें कोई दोष एवं न्यूनता नहीं प्रतीत हुई थी, फिर भी सन्तान प्राप्ति नहीं हुई। ऐसे सन्तान विहीनों के लिये पुत्रेष्टि यज्ञ का अनुष्ठान ही परम आश्रय है।

पुत्रेष्टि यज्ञ में कतिपय विशेष व्यवस्थायें—

पुत्रेष्टि यज्ञ का अनुष्ठान करने से पूर्व पंचकर्म द्वारा शरीर शोधन करना चाहिये। पंचगव्य का सेवन करके धातुगत अदृष्ट दोषों का भी शमन करना चाहिए। यज्ञ की समिधायें, हव्य सामग्री, विशेष संस्कारित घृत, विशेष वर्ण के वस्त्र, विशिष्ट पर्यावरण, विशिष्ट आहार विहार, विशेष रंग की गौ का दुग्ध होता है। अलंकार यज्ञ भूमि पर विशेष पदार्थों का आच्छादन या प्रसारण होता है। सामान्य रूप से व्यवहार में प्रयुक्त घृत, सामग्री, समिधा व पात्र इसमें ग्रहण नहीं किये जाते हैं या व्यवहार में नहीं लाये जाते हैं। तभी यज्ञ से लाभ होता है।

पुत्रेष्टि यज्ञ की प्राचीनता—

पुत्रेष्टि यज्ञ हमारे भारत देश में प्राचीन काल से प्रसिद्ध है। महाराजा दशरथ द्वारा पुत्रेष्टि का किया गया अनुष्ठान अति प्रसिद्ध घटना है। महाराजा दशरथ को चिकित्सा की सम्पूर्ण सुविधा थी। एक नहीं तीन रानियां भी थी। यौवन व्यतीत हो गया कोई सन्तान नहीं हुई। अत्यन्त नैराश्य की स्थिति उत्पन्न हो गई। अन्ततोगत्वा पुत्रेष्टि यज्ञ का अनुष्ठान किया गया। तीनों रानियों को सन्तान प्राप्त हुई और आदर्श सन्तानें राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न हुई। राम को लोगों ने मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में तथा भगवान् के रूप में भी माना। यह यज्ञ का ही प्रभाव था।

जोधपुर में पुत्रेष्टि यज्ञ—

जोधपुर में एक सम्पन्न परिवार में हमें पुत्रेष्टि यज्ञ कराने का अवसर मिला। उस पुरुष ने सन्तान प्राप्ति के लिए क्रमशः तीन विवाह किये थे। कोई सन्तान नहीं हुई थी। दो पत्नियां जीवित थीं। बड़ी पत्नी की शारीरिक स्थिति रोगों के कारण ऐसी थी कि सन्तान होना असम्भव था। यज्ञ में यजमान के साथ दोनों पत्नियां भी बैठी। यज्ञ के उपरान्त यथावश्यक औषधादि सेवन भी कराया - यज्ञ शेष भक्षण भी कराया। यज्ञ की भस्म का भी प्रयोग कराया गया। २ वर्ष के भीतर ही दोनों को सन्तानें हुई तथा प्रथम संतान बड़ी पत्नी को ही हुई।

अन्य उदाहरण—

इसी प्रकार एक घटना भाण्डुप बम्बई की है। डाक्टरों ने जांच के पश्चात् यही निर्णय दिया कि इस स्त्री से सन्तान उत्पत्ति असम्भव है। उस परिवार ने यज्ञ का अनुष्ठान किया। उसके बाद उन्हें उत्तम, सुन्दर, सुशील, प्रतिबुद्धिमान सन्तानों की प्राप्ति हुई। इसी प्रकार अनेक उदाहरण आज भी यज्ञ के अनुष्ठानों से पुत्र प्राप्ति है, अर्थात् जिस स्थिति में औषध उपचार से भी सन्तान प्राप्ति नहीं होती और सन्तान के लिये अयोग्य घोषित हो जाते हैं, उन्हें भी कई स्थितियों में सन्तान प्राप्ति हो जाती है। इदंहविः प्रजननं मे अस्तु,–यजुर्वेद अध्याय १९ में, ४८ में कहा है कि यह हवि रूप में प्रयुक्त पदार्थ मेरे लिये प्रजोत्पत्ति निमित हो। अतः यज्ञ भी सन्तान प्राप्ति का साधन है।

पुत्रेष्टि यज्ञ से सन्तान सामर्थ्य कैसे होती है—

प्राचीन काल से ऋषि मुनियों ने पुत्रेष्टि यज्ञ का उपाय बताया है परन्तु वर्तमान समय में जब तक कार्य कारण हेतु पूर्वक इसकी सफलता का प्रतिपादन न हो तब तक इसको अनुष्ठान की ओर प्रवृत्ति सम्भव नहीं। पुत्रेष्टि निमित्त यज्ञ से सफलता का स्पष्ट रहस्य यह है कि जब इस प्रकार के यज्ञ में विशेष प्रकार की समिधाओं के विशेष ताप से यजमान एवं यजमान पत्नी को स्वेदन क्रिया होती है तो स्वेद द्वारा रोम कूपों से शरीर के भीतर के दोषों का बाहर निर्गमन होता है तथा यज्ञ में प्रयुक्त विशेष प्रकार के आहुति द्रव्यों से उत्पन्न तथा यज्ञ प्रभावित वायु मण्डल का निर्माण होता है। उत्तरोत्तर आहुतियों के कारण उसकी घनत्व की भी वृद्धि होती है। जब आहुति के त्याग के साथ यजमान दम्पति स्वाहा की ध्वनि उच्च स्वर से करेंगे तो तत्काल स्वाहा के पश्चात् जो वायु उनके नासिका में प्रवेश करेगा वह शरीर में विशेष रूप से वेग पूर्वक गहरा ही प्रविष्ट करेगा। स्वाहा बोलने से भीतर के मलों का बहिर्गमन और उसके पश्चात् यज्ञ के सोमतत्व का शरीर में प्रवेश होगा। इस प्रकार बारम्बार क्रिया से शरीर शुद्धि और औषध तत्व का भी प्रवेश उत्तरोत्तर बढेगा रोम कूपों द्वारा यज्ञ के धर्म का स्पर्श होगा और सम्पूर्ण शरीर पर बाहर भी प्रभाव पड़ेगा तथा श्वास प्रश्वास से भीतर के शरीरावयवों पर भी प्रभाव पड़ेगा। इससे शरीर के रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा तथा शुक्र आदि सप्त धातुओं में परिवर्तन होकर नवीन शक्ति का संचार होने लगता है तथा सन्तानोत्पत्ति सामर्थ्य उत्पन्न होती है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सम्पादकीय:-

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

हरयाणा प्रदेश के आर्यसमाजों के अधिकारियों की सेवा में सभा की ओर से परिपत्र भेजकर निवेदन किया था कि सभा का वार्षिक अधिवेशन शीघ्र होने वाला है। अत: वे अपने आर्यसमाज की ओर से प्राप्तव्य वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क सभा कार्यालय में मनीआर्डर अथवा सभा के उपदेशक महानुभावों द्वारा शीघ्र भेज देवे। सभा के उपदेशक भजनोपदेशक महानुभावो की भी गत मास सभा कार्यालय में एक बैठक आमन्त्रित की गई थी और अन्य आवश्यक विषयों पर निर्देश देने के अतिरिक्त उनसे यह भी निवेदन किया था कि जो आर्यसमाजें कई वर्षों से अपने वार्षिक उत्सव नही कर रहे और न ही सभा में उन्होने गत वर्ष अपने प्रतिनिधि भेजे हैं, वहां प्रचार का प्रबन्ध करवाकर उन आर्यसमाजों में जागृति लाने का पूरा प्रयत्न करें।

परन्तु अभी तक बहुत कम आर्यसमाजो के अधिकारियो ने इस ओर ध्यान दिया है। सभा कार्यालय की रिपोर्ट के अनुसार अभी तक ५ हजार से ऊपर स्वीकृत आर्यसमाजों मे से केवल १२५ के लगभग आर्यसमाजों की ओर से प्राप्तव्य धन प्राप्त हुआ है। सभा के उपदेशक तथा भजनोपदेशकों के प्रयत्न से उन ६-७ आर्यसमाजों के प्रतिनिधि फार्म प्राप्त हुए हैं, जिनके फार्म किसी कारणवश गत वर्ष प्राप्त नहीं हुए थे, इस शिथिलता का कारण लोकसभा के चुनाव तथा कड़ाके की सर्दी भी हो सकती है। अब लोकसभा के चुनाव भी सम्पन्न हो चुके हैं और सर्दी भी कम हो रही है। अत: आर्यसमाजों के अधिकारियों से पुन: निवेदन है कि इस महत्त्वपूर्ण कार्य की ओर ध्यान देते हुए अपने आर्यसमाजों से प्राप्तव्यधन राशि यथाशीघ्र भेज देवें। जिन स्वीकृत आर्यसमाजों ने गत वर्ष अपने प्रतिनिधि सभा को नही भेजे थे, वे भी सभा को पत्र लिखकर प्रतिनिधि फार्म मंगवाकर नियमानुसार साधारण सभा में प्रतिनिधि चुनकर प्रतिनिधि फार्म: प्राप्तव्य वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क सभा को भेजकर सभा के संगठन में सम्मिलित होकर अपना सहयोग प्रदान करें।

सार्वदेशिक सभा जो कि आर्यसमाज की शिरोमणि संस्था है, के आदेश तथा संयुक्त आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रस्तावानुसार १९७५ में हरयाणा सभा का निर्माण प्रारम्भ हुआ था। अत: ९ वर्ष की अवधि में हरयाणा सभा ने काफी प्रगति की है। सभा का अपना कार्यालय निर्माणाधीन है। इस समय सभा के पास वेद प्रचारार्थ पं० चन्द्रसेन जी वैदिक मिशनरी, पं० ओमप्रकाश जी सिद्धान्त शिरोमणि एम० ए०, पं० सुरेशकुमार जी विद्यावाचस्पति, पं० महेन्द्रसिंह विद्यावाचस्पति, पं० अर्जुनदेव आर्य सिद्धान्त शास्त्री, पं० कुलवन्त राय आर्य पं० मत्तरसिंह आर्य उपदेशक तथा पं० विद्याभूषण, पं० शेरसिंह, पं० मुन्शीलाल, पण्डित चिरञ्जीलाल, पं० ईश्वरसिंह, पं० हरिश्चन्द्र, पं० बाबूराम, पं० तेजपाल, पं० सुमेरसिंह जी भजनोपदेशक प्रचार कार्य कर रहे हैं। इतने उपदेशक किसी भी अन्य प्रान्तीय सभा के पास नहीं हैं, फिर भी मैं यह अनुभव करता हूं जितने उपदेशक होने चाहिए उतने उपदेशकों की हम अभी तक सेवाएं प्राप्त नहीं कर सके। यदि पंजाब सभा के विभाजन के प्रस्तावानुसार हमारी सभा को संयुक्त कोष से ३५ प्रतिशत भाग मिल जावे तो हमारी योजना है कि प्रत्येक जिले में एक उपदेशक तथा एक भजनमण्डली रखकर प्रचार कार्य को ओर गतिशील बनाया जाये। जिन ग्रामों में किसी कारणवश अभी तक आर्यसमाजों की स्थापना नहीं हो सकी है, उन ग्रामों में प्रचार करवाकर आर्यसमाज की स्थापना आसानी से हो सकती है।

सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान श्री रामगोपाल जी वानप्रस्थी सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा के निश्चय के अनुसार एक मास के अन्दर पंजाब सभा से ३५ प्रतिशत भाग दिलाने का प्रयत्न कर रहे है।

मैं हरयाणा के आर्यसमाजों से पुन: निवेदन करता हूं कि हरयाणा सभा को अपने परों पर खड़ा करने के लिए तन मन तथा धन से उदारता पूर्वक सहयोग प्रदान करें ताकि सभी मिलकर हरयाणा में आर्य समाज के संगठन को सुदृढ करके ऋषि दयानन्द के सन्देश को घर घर पहुंचाकर अपने कर्तव्य का पालन कर सकें।

रणजीतसिंह सभा मन्त्री

दूषित जलवायु के कारण अनेक समस्याएं

समाधान

वैदिक—यज्ञ

शतपथ ब्राह्मण में कहा है जनताय यज्ञो भवतितो—पुष्टि, वर्धन, सुगन्ध प्रसार और नैरोग्य। यह चार उपयोग होम अर्थात् हवन करने से होते हैं।

जलवायु प्रदूषण आधुनिक विश्व के लिए एक भयानक समस्या बन चुकी है। दिन प्रतिदिन जंगल कट रहे हैं। गांव नगर में परिवर्तित होते जा रहे हैं। मानव का प्रवास, मल-मूत्र, धूल, पैट्रोल डीजल तथा कल कारखानों का धुआं, गन्दे नाले, जहरीले रसायनों का प्रयोग आदि के कारण वातावरण जहर से भर चुका है। आज का मानव शुद्ध हवा के नाम पर प्रवास प्रतिशत जहरीली हवा का सेवन कर रहा है। जहरीली गैस के कारण भोपाल में जो विनाश लीला हुई है वह दिल दहला देने वाली है तथा मानव समाज के नाम पर कलंक है।

प्रदूषित जलवायु को शुद्ध करने का एकमात्र उपाय है—वैदिक यज्ञ। हमारे ऋषि मुनियों ने सतत साधना द्वारा मानवमात्र के कल्याण के लिए इस वैज्ञानिक प्रक्रिया की खोज की थी। भारतवासियो ने उसका नहीं समझा तथा कुछ स्वार्थी अज्ञानी लोगों ने यज्ञ को विकृत रूप दे दिया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के क्रान्तिकारी विचारों के कारण भारत मे पुन: नव-जागरण का सूर्योदय हुआ। मानव समाज का वेदों के वास्तविक अर्थ से परिचय हुआ। उसने यज्ञ के महत्त्व को समझा। पश्चिम के वैज्ञानिकों ने भी एक स्वर से यज्ञ के महत्त्व को स्वीकार किया है तथा इसे दूषित जलवायु के शुद्धिकरण का एक अमूल्य साधन माना है। यज्ञ न केवल प्राकृतिक शुद्धता की वैज्ञानिक प्रक्रिया है बल्कि मनुष्य के आध्यात्मिक विकास और मानसिक शांति के लिये भी परम उपयोगी है। शास्त्रोक्त विधि से यज्ञ करने से संसार को अवश्यमेव सीमातीत लाभ पहुंच सकता है।

घर घर में वैदिक यज्ञ हो। लोग यज्ञ की सही रीति को जानें। वेदों के अनमोल खजाने से जनता परिचित हो। जलवायु प्रदूषण की समस्या का समाधान सदा के लिए हो जाए। इन्हीं कारणों को ध्यान में रखते हुए, वेदो के अनन्य भक्त अथक सामाजिक कार्यकर्ता श्री पुष्कर लाल जी के संरक्षण में वैदिक प्रचार समिति का गठन किया गया है और ये सक्रिय सहयोग दे रहे हैं। आप सब मानव सेवा के इस महान् कार्य में तन, मन व धन से सहयोग प्रदान करके अक्षय पुण्य के भागी बनें।

सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रगति का पथ है वेद ही हमारे धर्म की आधारशिला है। परमात्मा हम सबको सद्बुद्धि प्रदान करें।

मन्त्री—देवराज आर्य प्रधान—मदनलाल आर्य

वैदिक प्रचार समिति ३५/१६ वालटैक्स रोड, मद्रास

भोपाल में गैस दुर्घटना से पीड़ितों को सहायतार्थ अपील

मध्यप्रदेश के भोपाल नगर में 'युनियन कारबाईड फैक्ट्री' की जहरीली गैस से कितने ही हजार व्यक्तियों का निधन हो गया है और लगभग पच्चास हजार व्यक्ति गैस के दुष्परिणामों मे अभी प्रभावित हैं। इस भयंकर दुर्घटना से अपना देश ही नही सारा विश्व स्तब्ध रह गया है। कितनी ही महिलाओं का सुहाग उठ गया तथा कितने ही बच्चे अनाथ हो गये हैं, जिन्हें पालन-पोषण और मातृत्व प्रेम देने की आवश्यकता है।

विश्व के इतिहास की इस पहली भयंकर दुर्घटना में जहरीली गैस से बचने के लिए लाखों लोगों की भगदड, चिकित्सालयों व श्मशानों में लगे मुर्दों के अम्बार एवं सैंकड़ों शवों का सामूहिक अन्तिम संस्कार होना यही बताता है कि भोपाल नगर म उन दिनों मृत्यु का साम्राज्य छाया हुआ था।

आर्यसमाज का इतिहास रहा है कि उसने अकाल पीड़ित, बाढ़ग्रस्त व तूफान प्रकृति अन्य प्रकोपों से दुःखी मानव की सदैव सेवा की है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने यह संकल्प लिया है कि वह यथाशक्ति भोपाल के पीड़ित भाई बहिनो को सान्त्वनास्वरूप अर्थ व वस्त्र आदि भेजकर उनकी सेवा करे तथा यथाशक्ति अनाथ बच्चो को गोद लेकर उनका हरयाणा के गुरुकुलों तथा विद्यालयों मे लालन-पालन व शिक्षा दीक्षा दिलावें।

इस आवश्यक सहयोग के लिए सभी बन्धुओं, समाजसेवी संस्थाओं आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं से पुरजोर अनुरोध है कि वह अधिक से अधिक धनराशि एवं वस्त्रादि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को नकद, मनीआर्डर, ड्राफ्ट, चैक आदि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को दयानन्द मठ, सिद्धान्ती भवन, गोहाना मार्ग रोहतक के पते पर भेजें।

इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए दानी महानुभावों व सभी नागरिकों से पुनः प्रार्थना है कि वे इस कार्य की गम्भीरता को देखते हुए शीघ्रातिशीघ्र अधिक से अधिक धनराशि एकत्र करने मे अपना पूरा योगदान करें।

प्रो० शेरसिंह	कन्हैयालाल महता	रणजीतसिंह
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।
ओमानन्द सरस्वती प्रधान, परोपकारिणी सभा

ऋषि सन्देश

मैंने अपने पूर्व लेख २९ नवम्बर के प्रकाशन में लिखा था मनुष्य-कृत ग्रन्थों को वेद नहीं माना जा सकता।

कुछ लोग इस प्रकार की शंका करेंगे कि अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा ऋषि भी तो सृष्टि के आदि में मनुष्य ही हुए थे और हो सकता है उन्होंने अपने ही स्वाभाविक ज्ञान से वेद रच लिये होंगे यदि वह वेद हो सकते हैं तो अन्य ऋषियों के ग्रंथ वेद क्यों नहीं हो सकते ?

उत्तर—नहीं। मनुष्य के रचे हुए ग्रन्थ कभी वेद नहीं हो सकते। क्योंकि सब ऋषियों ने वेदों को पढ़ा, ज्ञान प्राप्त किया और विद्वान् हुए और उसके पश्चात् उन्होंने ग्रन्थ रचे। इसलिए वे वेद नहीं हो सकते।

मनुष्य में जो स्वाभाविक ज्ञान है, उसमें इतना सामर्थ्य नहीं कि वह कोई भी ग्रन्थ रच सके। जैसे इस समय में किसी शास्त्र को पढ़के परस्पर व्यवहारों को दिखाके मनुष्य विद्वान् होते हैं अन्यथा कभी नहीं हो सकते। तथा जैसे बड़े वन में मनुष्यों को बिना उपदेश के यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकता। किन्तु पशुओं की नाईं उनको प्रवृति देखने में आती है। वैसे ही वेदों के उपदेश के बिना सब मनुष्यों की प्रवृति हो जाती है। फिर ग्रथ रचने की बात तो बहुत दूर की है। इसे एक और दृष्टांत से सिद्ध करते हैं। यदि एक बालक को जन्म से ही एकांत में रखें और उसको अन्न और जल युक्ति से देवें और उससे भाषण आदि व्यवहार लेशमात्र भी कोई मनुष्य न करे कि जब तक उसका मरण न हो जावे तब तक उसको उसी प्रकार रखें तो उसको मनुष्यत्व का ज्ञान भी नही हो सकता किन्तु पशुओं की नाईं उसकी प्रवृति देखने में आवेगी वैसे ही वेदों के उपदेश के बिना सब मनुष्यों की प्रवृति पशुओं की भांति हो जाती, वेदों की रचना तो दूर की बात है।

जो स्वाभाविक ज्ञान है सो साधन कोटि में है। जैसे मन के संयोग के बिना मन से भी कुछ नहीं हो सकता वैसे ही जो स्वाभाविक ज्ञान है सो वेद और विद्वानों की शिक्षा के ग्रहण में साधन मात्र ही है तथा पशुओं के समान व्यवहार का भी साधन है परन्तु वह स्वाभाविक ज्ञान धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का साधन कभी नहीं हो सकता। इससे यह सिद्ध होता है कि वेदों को ईश्वर रचित मानने से ही कल्याण है अन्यथा नहीं।

ईश्वर ने मनुष्यों को ज्ञान देने के लिए चारों ऋषियों को निमित्त मात्र किया जैसे कोई लकडी की पेटिका को बजाये और काठ की पुतली को चपटा करावें। क्योंकि उनके ज्ञान से वेदों की उत्पत्ति नहीं हुई। किन्तु इससे यह जानना कि वेदों में जितने शब्द अर्थ और सम्बन्ध हैं वे सब ईश्वर ने अपने ज्ञान से उनके द्वारा प्रकट किये।

देशराज खोरखांट
२९० इन्दिरा कालोनी रोहतक

भोपाल गैस पीड़ित सहायतार्थ दान

आर्यसमाज बेगा जिला सोनीपत	८५० रुपये
„ गन्नौर शहर जिला सोनीपत	५०० „
मन्त्री आर्यसमाज फुसगढ़ जिला करनाल	५० „
„ „ होली मोहल्ला करनाल	५० „
सरपंच ऊंचा समाना जिला करनाल	६६ „

कन्हैयालाल महत्ता
सभा कोषाध्यक्ष

समस्त आर्यसमाजों व आर्य पुरुषों से आवश्यक निवेदन

महर्षि दयानन्द ने अपने भाषणों लेखों तथा पत्र मे अनेकशः नाटकादि में महापुरुषों के रूप भरे जाने की अत्यन्त कठोर शब्दों में भर्त्सना करते हुए इसे हजार हत्याओं के समान पाप माना है। महर्षि की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य संन्यासियों के प्रतिनिधि संगठन वैदिक यति मण्डल, वैदिक धर्म के प्रचार में सर्वात्मना समर्पित आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान्, साहित्यकार व उपदेशक, युवा संगठन आर्य वीर दल व केन्द्रीय आर्य युवक-परिषद्-सभी एक स्वर से संसत्सदस्य भगवान देव द्वारा महर्षि दयानन्द पर बनाई जा रही फिल्म का विरोध कर रहे हैं -

वैदिक यति मण्डल की ओर से सार्वदेशिक आ प्र. सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शाल वाले को पत्र लिखकर इस विषय में सभा की स्थिति स्पष्ट करने का अनुरोध किया गया था। सभा प्रधान जी ने अपने उत्तर में लिखा है कि इस फिल्म के निर्माण में सभा का कोई हाथ या सहयोग नही है। सार्वदेशिक सभा ने इस प्रकार के विषयों में निर्णय देने के लिए अपनी धर्मार्य सभा को भी इस विषय में अपनी सम्मति देने के लिये लिखा। सार्वदेशिक सभा के धर्माधिकारी (धर्मार्य सभा के प्रधान) श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री ने श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती से पानीपत में भेंट होने पर बताया कि यह सार्वदेशिक सभा की ओर से भेजे गये पत्र के उत्तर में स्पष्ट लिख चुके हैं कि धर्मार्थ सभा की सम्मति में महर्षि दयानन्द पर फिल्म बनाया जाना एक जघन्य अपराध है। महर्षि के स्पष्ट आदेशों तथा संपूर्ण आर्य जगत् की भावनाओं की अवहेलना करके बनाई जा रही फिल्म को आर्यसमाज किसी भी अवस्था में सहन नहीं करेगा।

किस प्रयोजन से और किसके इशारे पर यह फिल्म बनाई जा रही है इस पर टिप्पणी करते हुए अंग्रेजी के महत्वपूर्ण पत्र India Today के अपने 31 मार्च 84 के अंक में लिखा है:—

"For good measure and commercial value Bhagwan Dev is throwing in a couple of songs and dances and will keep the party flag flying with a view to inspiring messages form the 20 point programme."

अर्थात् पैसा कमाने की दृष्टि से फिल्म को लोकप्रिय बनाने के लिए भगवान देव दो तीन नाच गाने भी डाल रहे हैं। इस फिल्म का उद्देश्य सरकार द्वारा निर्धारित बीस सूत्री कार्यक्रम का प्रचार करके अपनी पार्टी (इन्दिरा कांग्रेस) के झण्डे को ऊँचा रखना है।

फिल्म निर्माता श्री भगवानदेव के सम्बन्ध में अंग्रेजी की एक महत्वपूर्ण पत्रिका 'Sunday' (21-27 अक्तूबर 1984) में प्रकाशित निम्न पंक्तियां द्रष्टव्य हैं:—

An M.P's misdeeds

M.P. Acharya Bhagwan Dev says that Arya Samajists would not tolerate an actor who smokes and drinks poraying Swami Dayanad (A star is born, portfoleo, 8 April)

Will Acharya Bhagwan Dev then please explain why he is called Mr. New York by other members of Parliament with reference to his deeds as a members of parliamentary language Committee for Indian Embassies in 1980.

I hope he has not forgotten the entire episode in which he stripped himself after winning and drinking in New York.

—Manik Chakraborty. Midnapore.

एक संसत्सदस्य के काले कारनामे

संसत्सदस्य आचार्य भगवानदेव का कहना है कि आर्यसमाजी किसी बीड़ी सिगरेट या शराब पीने वाले अभिनेता को स्वामी दयानन्द का अभिनय करना पसन्द नही करेंगे। तब क्या आचार्य भगवानदेव यह बताने की कृपा करेंगे कि 1980 में भारतीय दूतावासों के लिए नियुक्त संसदीय भाषा समिति के सदस्य के रूप में उनके कारनामों के कारण पार्लियामेंट के दूसरे सदस्य उन्हें मिस्टर न्यूयार्क के नाम से क्यों पुकारते है?

मुझे आशा है कि श्री भगवान्देव न्यूयार्क की उस पूरी घटना को नही भूले होंगे जब शराब पीने के बाद वह पूरी तरह नंगे हो गये थे।

—माणिक चक्रवर्ती मिदनापूर

कुछ लोगों का विचार है कि महर्षि पर बनी फिल्म द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार में सहायता मिलेगी। वस्तुत प्रचार का सशक्त माध्यम होते हुए भी किसी अच्छी बात के प्रचार के साधन के रूप में फिलम की भूमिका नगण्य है। फिल्मो को देखकर लोगों के डाका डालने, अपहरण व बलात्कार आदि दुष्कर्मों में प्रवृत्त होने की बातें तो आये दिन सुनने में आती हैं। किन्तु फिल्मो से प्रभावित होकर किसी के दुष्कर्मों से निवृत्ति की बात कभी देखने सुनने में नही आई फिर यदि हजरत मुहम्मद, ईसामसीह, गुरु नानक आदि पर फिल्म बने बिना दुनिया भर में उनके मत फैल गए तो महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिये ही आर्यसमाज को फिल्मों का मोहताज क्यों होना पड़ेगा?

वैदिक यति मण्डल इस फिल्म के निर्माण और प्रदर्शन को रोकने के लिये कटिबद्ध है और आर्यजनों से आशा करता है कि आवश्यकता पड़ने पर महर्षि के सम्मान की रक्षा के लिए वे बड़े से बड़ा बलिदान करने के लिये तैयार रहेंगे। मण्डल की ओर से उठाए जाने वाले अगले कदम की घोषणा शीघ्र ही की जायेगी तब तक

1- आप अपने अपने स्तर पर सार्वजनिक सभाओं का आयोजन कर फिल्म के विरुद्ध आन्दोलन करें और जनमत तैयार करें।

2- सार्वदेशिक सभा से अनुरोध करें कि वह इस विषय में तटस्थ न रहकर आर्यों का मार्गदर्शन करें।

3- फिल्म के विरुद्ध प्रस्ताव पारित कर उसकी प्रतियां राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, गृहमन्त्री तथा सूचना व प्रसारण मन्त्री को भेजें, एक प्रति वैदिक यति मण्डल को भी भेजना न भूलें।

वैदिक यति मण्डल १०, ११ नवम्बर १९८४ मे पारित प्रस्ताव—

१- समस्त यतियों को अपने प्रवचन-व्याख्यानादि में सभ्य और प्रिय भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

२- जिन समारोहों में अश्लील गाने अथवा लडके लडकियों का नृत्य करवाया जाए उनमें यतियों को नही जाना चाहिये।

३- आर्यसमाज के मंच पर सिनेमा के अभिनेता और अभिनेत्रियों का स्वागतादि नही होना चाहिये जहा हो वहां यतियो को नही जाना चाहिए।

४- आर्यसमाज के जिन शिक्षण संस्थाओ के साथ दयानन्द का नाम जुड़ा है और शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है उनमें हिन्दी-संस्कृत को प्राथमिकता दी जाए और सहशिक्षा नही होनी चाहिए।

५- जिन आर्यसमाज के समारोहो मे राजनैतिक नेताओं का अभिनन्दन-स्वागत आदि किया जाए वहां यतियो को नही जाना चाहिए।

सर्वानन्द सरस्वती
अध्यक्ष—वैदिक यति मण्डल
दयानन्दमठ, दीनानगर

वक्त को समझने और समझाने का राज

जरा संभल के

(दीवान भीमसेन गुडगांव)

लेखिका अमृता प्रीतम की बात यों ही हसी-मजाक नही लगती है, कि पक्षी वर्ग ने आकाश को ऊंचा कर दिया है। किन्तु जरा सभल के सोचा जाए तो यह सर्वथा ठोक है कि जिन्दगी में सवाल ही है चुनाव का, चिन्तन का, कोशिश करने की आदत बनाने का, कदम उठाने का। इसलिए मिसाल को अमल में तकसीम करने से उसकी वास्तविकता से जानकारी हो जाती है। एक दिन लड़के खेल रहे थे। एक बड़े लड़के ने छोटे को उठाया और हंसी हसी में ऊपर उछाला। जैसा हम प्राय बच्चों से खेल करते हैं। इस बडे लड़के ने छोटे बच्चे को वापस ऊपर से नीचे आने की सम्भाल की गलती की। गलती के कारण बच्चा नीचे धरती पर आ गिरा। उसकी टांग की हड्डी टूट गई। परिणाम स्वरूप उसने दीर्घकाल के लिए बिस्तर पकड़ लिया। उसकी भागने दौड़ने की सभी योजनाएं धरी की धरी रह गईं। उन दिनो मैडिकल साईस इतनी उन्नति पर नहीं थी चिकित्सा तो उसकी हुई किन्तु टूटी हड्डियां आंशिक रूप से ठीक हो सकती थी, किन्तु लड़का बड़ा साहसी था। बजाय इसके कि वह बिस्तर पर पड़ा पड़ा रोता रहता और भाग्य को कोसता रहता। उसने बिस्तर पर पड़े-२ ही लिखना पढ़ना, सोचना विचारना जारी रखा और जीवन का नया अन्दाज बना लिया। इस प्रकार वह तर्ज अमल ऐसा बना कि वह एच० बी० रेज नाम जगद् विख्यात लेखक और बुद्धिमान कराद पाया जिसने "Shape of things to cmoe" नामक पुस्तक तक भी लिख दी और भविष्य में जगी उड़ानों और कार-करदगी के विषय में भी अपने विचारों का प्रतिपादन किया। बात वही हुई जो भगवान् श्री कृष्ण ने अर्जुन में पैदा कर दी थी। जा मवन्त ने हनुमान में पैदा कर दी थी। गांधी ने देश में एक आन्दोलन खड़ा कर दिया था। इन्दिरा जी ने देशभर की सुरक्षा का एक चित्र बना दिया था। ऐसी ही एक बात पढ़ने में और आई है कि सर्दी के दिनो में अंगीठी सुलगाने का सिलसिला में दो छोटे बच्चो ने अपन हाँ बजाय मिट्टी का तेल डालने के पैट्रोल डाल दिया। आग भड़की। एक तो तत्काल काल कवलित हो गया। दूसरा कई महीनों तक हस्पताल में रहने पर भी पूर्ण रूपेण स्वास्थ्य लाभ न कर सका। वह अपाग ही रह गया। उसके दोनों पैर लकड़ी की तरह सूख गए। पहियों वाली कुर्सी पर जब घर पहुंचा, तो किसी को यह आशा नहीं थी, कि वह कभी चल सकेगा। पर उस लड़के ने साहस न छोड़ा और अपने ही तरीके से प्रयत्न जारी रखा। वह लकड़ियों (बैसाखियों) के सहारे चलता दौड़ता रहा। हिम्मत और अभ्यास से उसने इस प्रकार की दौड़ में भी पुरस्कार जीते। साथ ही साथ अध्ययन भी जारी रखा। एम० ए० कर के पी० एच० डी० को डिग्री भी प्राप्त कर ली। तदुपरान्त एक विश्वविद्यालय में प्राचार्य प्रिंसिपल भी नियुक्त हो गया। द्वितीय महायुद्ध में वह युद्ध के मोर्चे पर भी गया, जहां उड़ानों में सफल रहा। बहुत अच्छा जीवन व्यतीत किया। अवकाश प्राप्त होने पर उसने अपाहिजों के लिये एक आश्रम की स्थापना करके उसे सफलता पूर्वक चलाया। इसी आश्रम में आज भी आठ हजार बच्चों की लिखने पढ़ने की व्यवस्था है। उस महानुभाव का अमेरिकन नाम गेन किघम है, जिसे हिम्मत और वीरता का दावादार कहा जाता है।

कष्टों से जूझने और उनका मुकाबला करने के हालात उसकी जिन्दगी में पढ़ने और सबक प्राप्त करने मे रोशनी देते हैं।

बात फिर वही आ गई कि जो चल पड़ा, वह आगे निकल गया। पड़ा रहा जो, वह वहीं मर गया। लीला भगवान् की व्यापकता उसको कि वह कहां कहां सम्भाल करता है तथा जरूरत मद लोगों का हाथ बटाता है और इतिहास पटल नाम दर्ज करके दूसरों के लिये रोशनी पैदा करता है। मायापति की माया। खेल वाले का खेल, कि खिलाड़ियों तथा खेल में रुचि लेने वालों के लिये एक नया उदाहरण पैदा करता है। क्रमश:

(पृष्ठ २ का शेष)

पुत्रेष्टि से गर्भस्थापन सामर्थ्य—

पुत्रेष्टि यज्ञ में एक विशेष क्रिया आहुति शेष घृत को पात्र विशेष जल में घृत बिन्दु टपकाने की होती है। उस घृत का मर्दन स्त्री सम्पूर्ण शरीर में यज्ञ की तीन चौथाई आहुति होने पर करती है अर्थात् यज्ञ द्वारा स्त्री के रोम कूपों को स्वेदन द्वारा शुद्धि के पश्चात् आहुति शेष घृत मर्दन से स्वेदन क्रिया द्वारा और भी अनुकूल पदार्थों का प्रवेश शरीर में हो जाता है और शरीर नवीन सामर्थ्य से युक्त हो जाता है। यज्ञ शेष घृत, मोहन भोग, पायस आदि के द्वारा जीवनीय सत्य, गर्भोत्पादक तथा गर्भ स्थापक शक्तियों का प्रवेश हो जाता है। इस प्रकार घृत के मर्दन से स्नेहन क्रिया भी यज्ञ में हो जाती है। स्वाहा की उच्च स्वर से ध्वनि करने से एक प्रकार से मलों को वमन क्रिया भी हो जाती है। आयुर्वेद में जो पचकर्म द्वारा शरीर की शुद्धि की जाती है वह यज्ञ में यज्ञ की विधि से स्वभावत: हो जाती है और औषध द्रव्यों का शरीर में प्रवेश हो जाता है। किसी रोग के ठीक ठीक निदान के पश्चात् समुचित औषधि सेवन से जिस प्रकार रोग निवारण संभव हो जाता है। उसी प्रकार पुत्रेष्टि यज्ञ निमित्त ठीक निदान होने से एवं समुचित यज्ञ द्वारा चिकित्सा होने से सन्तान प्राप्ति भी सुनिश्चित समझें।

सन्तान प्राप्ति के लिये यज्ञादि की मान्यता—

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा संस्कार विधि में लिखित गर्भाधान संस्कार पुत्रेष्टि का ही प्रधान अंग है। चरक संहिता में भी पुत्रेष्टि यज्ञ की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है। कल्प ग्रन्थों में अनेक जप एवं यज्ञादि के प्रयोग लिखे हैं। विवाह संस्कार के भी कतिपय मन्त्रों में यज्ञ क्रिया द्वारा सन्तति न होने का दोष निवारण, भावी प्रजा की रक्षण सामर्थ्य उत्पन्न करने का उल्लेख है। इससे स्पष्ट है कि जप, मन्त्र तपादि साधन सहित यज्ञ के द्वारा सम्पन्न पुत्रेष्टि सफल प्रयोग है। इस यज्ञ का अनुष्ठान २२ दिवस का करना श्रेष्ठ है।

तू शिव होगा

शर नाम बुरा है,
और आब नाम पानी।
दोनों मिल कर बन जाता है,
शराब, बुरा पानी।
हां, पानी वह,
जो बुरा है।
लड़वा देता है,
इन्सान को इन्सान से।
लड़वा भी देता तो कोई गम नहीं।
यह तो गिरा देता है,
इन्सान को ईमान से।
और,
हो जाता है इन्सान हल्का।
हां इतना हल्का कि,
अपनी ही सांसों के झोंके से गिर जाता है वह।
ऐ मेरे दोस्त,
मेरे हम वतन,
मेरे भाई।
तू स्वय ही गिर जाता तो कोई गम नहीं।
तेरे जैसे हजारों उठ खड़े होंगे और।
पर नहीं,
मेरे दोस्त।
मेरे हम वतन,
मेरे भाई
तू स्वयं नहीं गिरता,
तू गिरा देता है, इन्सान और धर्म की महानता को,
तू गिरा देता है आदर्शों को,
उम्मीदों को, विश्वासों को,
और प्यार के अनगिनत सपनों को
वह सपने, जो देखे थे, तुम से,
तुम्हारे परिवार ने,
तुम्हारी मां ने, तुम्हारी पत्नी ने,
कभी महसूस किया है
ऐ पीने वाले तुम ने,
अपने परिवार की जरूरतों को।
देखा है कभी तुमने,
अपनी पत्नी के मन में उठती हुई टीसों को।
अपनी मां के झुके हुए सर को देखा है तुम ने,
जब पड़ोसी उससे कहते होंगे,
आओ उठा लो, अपने बेटे को जाकर,
गिरा पड़ा है वो,
गांव की गलियों में
शराबी का बेटा या बेटी,
कहते होंगे जब तुम्हारे चिरागों को लोग।
रोशनी खुद ही उनके चेहरों से बुझ जाती होगी।
उन बुझे हुए चेहरों को,
ऐ मेरे दोस्त, देखा है तुमने।
देखा हो या ना देखा हो।
फिर भी कुछ गम नहीं।
तू बहादुर है, बहादुर बन;
कायर मत बन।
मूर्ख हैं वे लोग जो कहते हैं,
पीने से गम मिटता है।
नहीं मेरे भाई नहीं,
पीने से नहीं, टकराने से गम मिटता है
उठ, हिम्मत कर, टकरा,
हालातों से, परिस्थितियों से,
सुना है ना तुमने,
सोना तप कर ही निखरता है
अब भी वक्त है,
उठ, निखर, और देख,
उस मां को,
जिसे भारत कहते हैं
उसने भी उम्मीदें लगाई हैं,
तुम पर हजारों
सपने जगे हैं,
उस में भी आज।
उन्हें रोशन कर,
निर्माण कर।
प्यार का बीज बो,
विनाश के जहर को पी जा
तू शिव होगा,
हां सच कहता हूं,
तू शिव होगा आज का,
अगर तू कह दे,
विनाश और तोड़ फोड़ से दूर रहो,
निर्माण में लगो।
ठहरो! ऐ पीने वालो रुको,
और आओ, हम सब मिलकर,
धरती पर सुन्दर सपने सजायें
उसे स्वर्ग से भी महान् बनायें।
तू भी कुछ कम ना होगा तब,
बन जायेगा तू
मानव से महामानव तब।

योगेन्द्र ४/७१ रमेश नगर नई दिल्ली

हरयाणा के हितों की रक्षा हेतु आवश्यक बैठक

प्रधानमन्त्री श्री राजीव गान्धी ने वरिष्ठ मन्त्रियों की उच्च स्तरीय समिति बना कर पंजाब समस्या समाधान हेतु नये सिरे से विचार करने तथा सुझाव देने का कार्यभार सौंपा है।

हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह भी शीघ्र ही प्रधान मन्त्री तथा समिति के तीनों सदस्यों से मिलकर हरयाणा का पक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। सम्भव है अकालियों से भी शीघ्र समझौता वार्ता पुनः आरम्भ होगी। समझौता करते समय हरयाणा के साथ किसी प्रकार का अन्याय न हो, इसके लिए आवश्यक है कि हम संगठित होकर हरयाणा के हितों की रक्षा करने की तैयारी करें।

अतः हरयाणा रक्षा वाहिनी की सभी शाखाओं तथा अन्य धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक कार्यकर्ताओं की २० जनवरी रविवार को दोपहर १२ बजे दयानन्द मठ, रोहतक में सम्मिलित बैठक होगी।

अतः आपसे प्रार्थना है कि इस अत्यन्तावश्यक बैठक में समय पर सम्मिलित होकर अपने सुझाव तथा सहयोग प्रदान करें।

ब० बलवन्तसिंह वानप्रस्थी संयोजक

टंकारा यात्रा के लिए आवश्यक सूचना

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट की ओर से आगामी ऋषि मेला जो कि १६, १७, १८ फरवरी १९८५ को महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में मनाया जा रहा है। इस उपलक्ष्य में स्पेशल रेलगाडी टंकारा यात्रा के लिए नही जा रही है। इसलिए जो यात्री रेल द्वारा टंकारा जाना चाहते है, वे अपनी सीट राजकोट अथवा मोरवी तक बुक करवा लें। राजकोट और मोरवी से टंकारा लगभग २० मील की दूरी पर स्थित है। दोनों स्थानों से हर आधे घण्टे के बाद टंकारा के लिए बस मिलती है। जो यात्री वापसी की टिकट करवाना चाहें, उनसे प्रार्थना है कि वे टंकारा ट्रस्ट के कार्यालय को राशि भेजकर अपनी वापसी की सीट बुक करवा लें। ताकि उन्हें आने मे कोई कठिनाई न हो। आप टंकारा ट्रस्ट को उतनी राशि भेजें जितनी राशि की आपने अपने नगर से राजकोट या मोरवी के लिए सीट बुक करवाने में खर्च की हो। जो ऋषि भक्त दिल्ली से राजकोट और राजकोट से दिल्ली तक के लिए वापसी की सीट बुक करवाना चाहे वे १५-१-८५ तक टंकारा सहायक समिति आर्यसमाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली को २०० रु० भेज दे। उनके आने जाने की सीट का प्रबन्ध कर दिया जायेगा। टंकारा में टंकारा ट्रस्ट की ओर से वहां रहने तथा भोजन का प्रबन्ध निःशुल्क होगा। टंकारा का पता निम्न है–

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा
पिन–३६३६५०, जिला राजकोट (गुजरात)

रामनाथ मन्त्री ट्रस्ट

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक चुनाव शीघ्र होने वाला है। अत. जिन आर्यसमाजों ने अभी तक अपने आर्यसमाजों का वेद प्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी का प्राप्तव्य धन नहीं भेजा है; उनसे निवेदन है कि वे मनीआर्डर अथवा सभा के प्रचारकों द्वारा शीघ्र भेजने की कृपा करें ताकि स्वीकृत प्रतिनिधियों का समय पर चुनाव ऐजण्डा भेजा जा सके।

रणजीतसिंह सभा मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि सं० 23207/73 पंजि० सं० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १,९६,०८५ ३,

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १२, अङ्क ८ २१ जनवरी १९८५ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

१. वसन्त पञ्चमी २. दीनबन्धु सर छोटूराम ३. वीर हकीकत राय



दीनबन्धु सर छोटूराम वसन्त पञ्चमी दिवस

१ वसन्त पञ्चमी

वेद के अनुसार दो दो महीनों की एक एक ऋतु होती है। इस प्रकार वर्ष के बारह महीनों में छः ऋतुएं बनती हैं जिनका आधार निम्नलिखित वेदमन्त्र हैं—

१—मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू। यजु १३।२५

मधु अर्थात् चैत्र और माधव अर्थात् वैशाख, इन दो महीनों की वसन्त ऋतु होती है।

२—शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मावृतू। यजु १४।६

शुचि और शुक्र अर्थात् ज्येष्ठ आषाढ महीनो की ग्रीष्म ऋतु होती है।

३—नभश्च नभस्यश्च वार्षिका वृतू। यजु १४।१५

नभस् और नभस्य अर्थात् श्रावण भाद्रपद महीनो की वर्षा ऋतु होती है।

४—इषश्च ऊर्जश्च शारदावृतू। यजु १४।१६

इष और ऊर्ज अर्थात् आश्विन कार्तिक महीनों की शरद् ऋतु होती है।

५—सहश्च सहस्यश्च हैमन्तिकावृतू यजु १४।२७

सहस और सहस्य अर्थात् मार्गशीर्ष पौष महीनों की हेमन्त ऋतु होती है।

६—तपश्च तपस्यश्च शैशिरावृतू। यजु १५।५६

तपस् और तपस्य अर्थात् माघ फाल्गुन महीनो की शिशिर ऋतु होती है।

इस प्रकार वेदों में मूल रूप से सभी विद्याओं का वर्णन किया गया है। दिन, मास, वर्ष, राशि, पक्ष आदि का भी वेदों में परिगणन किया गया है। वेदों से ज्ञान प्राप्त कर ऋषि मुनियों ने अनेक ऋतुओं में पर्वों का मनाना निश्चित किया है। ईश्वर की रची सभी ऋतुएं, वर्ष, मास, अयनादि सभी सुखदायक, जीवनदायक, रमणीय होते हैं। यह विज्ञान हमें वेद से ही प्राप्त होता है। सामवेद में भी सृष्टि रचना का वर्णन कई स्थलों पर आया है। उसमें ऋतुओं का जीवन पर जो प्रभाव पड़ता है, उसके महत्त्व पर भी प्रकाश डाला है—देखिये सामवेद का एक मन्त्र

वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः।
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्त शिशिर इन्नु रन्त्यः।

अर्थात् हे ईश्वर! तेरी व्यवस्था से वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त और शिशिर ये छः ऋतुएं अपने अपने समय पर मनोहर होती हैं। सभी ऋतुएं सुखदायक व रमणीय हैं। इस सामवेद के मन्त्र का आशय पूर्वोक्त यजुर्वेद के ऋतुविज्ञान मन्त्र से पूर्ण रूप से मेल खाता है। इससे यह भी प्रमाणित है कि चारों वेद एक समय में चार ऋषियों के हृदय में आविर्भूत हुए। इन ऋतुओं से प्राणिमात्र के जीवन का विकास, निर्वाह तथा सुख की उपलब्धि होती है छः ऋतुएं एक दूसरे की पूरक हैं। सभी आवश्यक हैं। एक ऋतु न हो तो दूसरी कैसे हो। गर्मी न हो तो वर्षा कैसे हो। वर्षा न हो तो सर्दी कैसे हो। गर्मी की फसलें कैसे हों, वर्षा की फसलें कैसे हों, जाड़े की फसलें कैसे हो। अतः वेद के अनुसार ये सभी उपयोगी तथा सुन्दर मानी जाती हैं। किन्तु वसन्त ऋतु का सामान्य विशेष का अन्तर स्वयमेव दिखाई देता है। अतः मनुष्य वसन्त ऋतु को सुहवानी मानते हैं। संस्कृत कवियों ने वसन्त को ऋतुराज कहा है। धरती पर चारों ओर फूली हुई सरसों ऐसी दिखाई देती है, मानो प्रकृति स्वयं सुन्दर पीली साड़ी पहने सजधज के साथ सांसारिक जनों के मनों को लुभा रही हो। सरसों के पीले फूलों पर बैठे भौंरे फूलों से रसपान करते हुए सारे जंगल को गुंजित करते हैं। हरी-भरी धरती हरियाली होकर हरयाणे के नाम को साकार करती है। लाल लाल टमाटर हरयाणवी चेहरों की याद दिलाते हैं। मटर मटरा के नीले सफेद फूल मन को मोह लेते हैं। छोटे छोटे पौधों पर लगी हरी मिर्चें तोते के स्वाद को कसैला करती हैं। लाल काली गाजरें हृदय को शक्ति प्रदान करती हैं। ईखों पर आये सफेद झण्डे शान्ति का सन्देश देते हैं। सूर्य उत्तरायण में होने के कारण शरीर के

(शेष पृष्ठ ६ पर)

जीवनीय पर्यावरण का निर्माण

पं० वीरसेन वेदश्रमी, वेदसदन महारानी पथ इन्दौर

शं नो वात. पवताम्—सुख एवं जीवन देने वाली वायु सर्वत्र बहे (यजुर्वेद ३६।१०)

यदि सुखदायी, जीवनप्रद वायु का पर्यावरण में अभाव हो जायेगा अथवा जीवनघाती तत्वों की पर्यावरण में वृद्धि हो जावेगी तो जीवन क्षण भर भी नहीं रह सकता। भोपाल में ३ दिसम्बर, १९८४ को हुए प्राणघातक, विषाक्त पर्यावरण से एक विशाल क्षेत्र में प्राणियों का मनुष्य, पशु, पक्षियों का भयंकर संहार कुछ ही काल में हो गया और लाख से भी अधिक मनुष्यों को अनेक स्थानों के अस्पताल में चिकित्सा के लिए शरण लेनी पड़ी। इस भयंकर मृत्यु लीला के समाचारों ने संसार के समस्त देशों को पर्यावरण की सुरक्षा के लिये चिन्तित कर दिया। यह विषाक्त प्रदूषण मानवकृत था। जिस गुप्त प्रयोजन के लिये था वह समस्त संसार को प्रकट हो गया। अब मृत्यु की सान्त्वना राशि चन्द चाँदी के टुकड़ों से चुकाई जायेगी। संहारकर्त्ता थोड़ी धन राशि से दोष रहित, निष्कलंक, अदण्डनीय, दयावान तथा दानी मान लिये जावेंगे। संहारक प्रदूषण निर्माण अक्षम्य अपराध है।

मा हिंसी पुरुषं जगत्— प्राणिजगत् का विनाश मत करो (यजुर्वेद १६।३)

वेद का उपदेश अहिंसा का है—सब प्राणियों की रक्षा का है। परन्तु वर्तमान समय में धनवान् राष्ट्रों की दृष्टि में गरीब एवं निर्धन राष्ट्रों के मनुष्यों के जीवन का मूल्य चन्द चांदी के टुकड़ों में परिवर्तित हो जाता है। समृद्ध राष्ट्रों ने कृमि, कीट एवं मनुष्यों के विनाश के लिए अनेक विषमय संहारकारक पदार्थ निर्मित करके वायु, जल, पृथिवी अन्नादि पदार्थों को न्यूनाधिक प्रमाण में प्रदूषित किया है—क्योंकि विनाश ही जीवन का लक्ष्य बन गया है परन्तु विषाक्त प्रदूषणों के दूर करने का प्रयत्न नहीं किया। जीवन प्रदान करने की योजना का सर्वथा अभाव दृष्टिगोचर हो रहा है। मनुष्यों में मनुष्यत्व जागृत होना चाहिए।

शं न इषिरो अभिवातुवात:—चारों ओर सुखदाता वायु का प्रवाह चले (ऋग्वेद ७।३५।४)

३ दिसम्बर, १९८४ की भोपाल की मृत्यु रात्रि से यह स्पष्ट परिणाम प्रकट हो गया कि हम अपने पर्यावरण को हिंसक प्रवृत्तियों के कारण विषमय बना रहे हैं—परन्तु इसके विपरीत अपने पर्यावरण को शुद्ध एवं जीवनदायी बनाने का प्रयत्न नहीं कर रहे हैं। जिस प्रकार घातक पर्यावरण बनाने से ही बना, उसी प्रकार जीवनदायी पर्यावरण भी बनाया जा सकता है। इस दिशा में प्रयत्न प्रत्येक उद्योग प्रतिष्ठान, फैक्ट्री, मिल, कारखानों ने अनिवार्य रूप से अवश्य करना चाहिये—क्योंकि इन्हीं के द्वारा विविध प्रकार के प्रदूषणों की वृद्धि और प्रसार अहर्निश हो रहा है। धन से कहीं अधिक जीवन का मूल्य समझना चाहिये।

शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु—वृक्ष वनस्पतियों का वन्य रूप हमें सुखकारी है (ऋग्वेद ७।३५।५)

वृक्ष वनस्पतियों का पर्यावरण हमारे लिये सुखदायी है। ऐसा वेद ने कहा क्योंकि उनसे हमें जीवनदायी प्राण वायु प्राप्त होती है। ऋग्वेद मण्डल १०, सूक्त १८६ के मन्त्र प्रथम में इस रहस्य को और भी अच्छे रूप में प्रकट किया गया है। वहां कहा है—वात आ वातु भेषजं शंभु मयोभु नो हृदे—प्रण आयूंषि तारिष-अर्थात् औषध तत्वों से परिपूर्ण वायु हमारे चारों ओर बहे जो कि कल्याण करने वाली तथा सुख प्रदाता हमारे हृदय के लिये हो। वह भेषज गुण युक्त वायु, आयु का विस्तार करे अर्थात् दीर्घजीवन प्रदान करे। इस प्रकार वह न जीवन के लिये औषधि तत्वों से युक्त वायु मण्डल बनाने का उपदेश किया है। इसका निर्माण करना चाहिये।

औषधि तत्वों से युक्त वायुमण्डल बनाने का प्रकार—नमो-वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्य: (यजु० १६।१६)

हरे भरे वृक्ष प्रतिष्ठा योग्य है। अतः प्रत्येक फैक्ट्री, कारखाना, मिल औद्योगिक प्रतिष्ठान के चारों ओर औषधि तत्व प्रधान, शोधक, सुगन्धित तथा जीवन प्रदाता वृक्ष, बनस्पति, गुल्म एवं लताओं का घना पर्यावरण बनाना आवश्यक है। इस निमित्त पपील, बड़, गूलर, आम, बिल्व, सिरस, आंवला, नीम, पलाश, निगुंडी, हारश्रृंगार, चम्पा, रातरानी सदृश वृक्ष तथा तुलसी, दमनक, मरूवा, गुलाब, चमेली, मोगरा, अपामार्ग, बला, अतिबला, बावची, नागदमनी सदृश क्षुपजाति की वनस्पतियां, विष्णुकान्ता, गिलोय आदि सदृश बेल व लतायें लगानी चाहिये। इनसे भेषज वायु का प्रसारण पर्यावरण में होता रहेगा तथा जिन फैक्ट्री आदि के चारों ओर वृक्ष वनस्पतियों का पर्यावरण निर्माण सम्भव न हो वहां संख्या ६ से ९ में निर्दिष्ट प्रयोग अवश्य करें। फैक्ट्री या कारखाना चलाना है तो वृक्ष वनस्पतियों को लगाने की पर्याप्त एवं सुदृढ़ व्यवस्था करनी ही चाहिये तथा पर्यावरण शोधन की भी।

क्रमशः

पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज बड़ा बाज़ार पानीपत के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। दक्षिणा योग्यतानुसार दी जायेगी। सम्पर्क करें।

मन्त्री, आर्यसमाज बड़ा बाज़ार, पानीपत

सम्पादकीय:-

संयुक्त पंजाब का सुझाव हरयाणा के लिए हानिकारक

हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल का यह सुझाव आजकल समाचार पत्रों में एक चर्चा का विषय बना हुआ है, जिसमें उन्होंने पंजाब समस्या के स्थाई समाधान के लिए पंजाब, चण्डीगढ़, हिमाचल प्रदेश तथा हरयाणा को मिलाकर एक विशाल पंजाब के गठन की बात कही है, ताकि चण्डीगढ़ को उसकी राजधानी बनाकर इसका विवाद समाप्त हो सके। इसके साथ ही अबोहर फाजिल्का तथा नदी जल विवाद स्वयं ही समाप्त हो जायेगा।

ऐसा लगता है कि चौ० भजनलाल ने अपना राजनीतिक अस्तित्व बनाये रखने के लिए यह प्रस्ताव प्रस्तुत किया है। प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी ने राष्ट्र को स्वच्छ प्रशासन देने के लिए भ्रष्ट तथा बदनाम व्यक्तियों का सफाया करने की जो घोषणा की है, उसी को दृष्टि में रखते हुए श्री भजनलाल ने यह पैंतरा बदला है। इससे पूर्व इनके वक्तव्य कई बार आ चुके हैं कि अबोहर फाजिल्का दिये बिना हरयाणा चण्डीगढ़ पंजाब को नहीं देगा।

वास्तविकता यह है कि पंजाब, हरयाणा, हिमाचल तथा चण्डीगढ़ के विलय होने पर भी वर्तमान समस्यायें बनी रहेंगी, क्योंकि भाषा तथा विकास पर मतभेद होने पर ही १९६६ ई० में पंजाब का विभाजन हुआ था। पंजाब प्रदेश नाम होने पर पुन: पंजाबी को विशाल पंजाब प्रदेश की सरकारी भाषा बनाने की मांग उठेगी। अकाली भाई हिन्दी तथा संस्कृत भाषा को सहन नहीं करते। आजकल भी पंजाब में संस्कृत भाषा की रक्षा के लिए हिन्दू संस्थाओं की ओर से संस्कृत सम्मेलन किया जा रहा है। जो बच्चे हिन्दी माध्यम से पढ़ाई करना चाहते हैं पंजाब में उन्हें सुविधायें नहीं दी जा रही। यदि संस्कृत तथा हिन्दी का अच्छा ज्ञान आने वाली नई पीढ़ी को नहीं दिया जायेगा, तो वे अपने धार्मिक ग्रन्थों जो कि संस्कृत तथा हिन्दी में प्रकाशित हैं, को पढ़ने से वंचित रह जायेंगे।

पंजाब का विभाजन होने से पूर्व भी पंजाब के तत्कालीन मुख्य मन्त्री सरदार प्रतापसिंह कैरों ने हरयाणा के क्षेत्र में पंजाबी को बलात् थोंपने का प्रयत्न किया था। इसी के विरोध में १९५६-५७ में पंजाब में ऐतिहासिक हिन्दी रक्षा आन्दोलन चलाकर ५० हजार हिन्दी प्रेमियों ने अपनी गिरफ्तारी दी थी। अन्तत: पंजाब सरकार को झुकना पड़ा। इसी प्रकार पंजाब सरकार विकास कार्यों में भी हरयाणा की जनता के साथ अन्याय करती थी। बजट का लगभग ७५ % भाग पंजाब में ही खर्च किया जाता था। प्राय: सभी विकास कार्य पंजाब में ही होते थे। इस पक्षपात तथा अन्याय के परिणाम स्वरूप हरयाणा पंजाब से पृथक् हुआ था। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हरयाणा आर्यसमाज के सहयोग से हमने हरयाणा संघर्ष समिति का निर्माण करके हरयाणा को पुन: भारत के नक्शे में लाया था। आज जो नेता विशाल पंजाब का प्रस्ताव कर रहे हैं, वे उस समय भी हरयाणा प्रदेश बनाने का विरोध करते थे। परन्तु आज इस बात से वे भी सहमत हैं कि जब से हरयाणा पंजाब से अलग हुआ है, हरयाणा ने प्रत्येक क्षेत्र में विकास किया है। क्योंकि हरयाणा का राजस्व हरयाणा में ही व्यय किया जाने लगा है। आज हरयाणा वासी बड़े बड़े पदों पर बैठे हैं। हरयाणा में संस्कृत तथा हिन्दी भाषा फल फूल रही है। कृषि, उद्योग तथा व्यापार आदि के क्षेत्र में हरयाणा किसी अन्य प्रदेश से पीछे नहीं है। पंजाब के विभाजन से पूर्व हरयाणा के आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाएं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आधीन होने के कारण उन्नति नहीं कर रही थी। क्योंकि आर्यसमाज के प्रचार प्रबन्ध के लिए पाकिस्तान बनने से पूर्व लाहौर तथा बाद में जालन्धर के कार्यालयों में सैकड़ों मिल दूर जाना पड़ता था। पंजाब के आर्यसमाज के उपदेशक हरयाणा के ग्रामों में प्रचार भी सफलता पूर्वक नहीं कर सकते थे क्योंकि उनकी भाषा खानपान तथा रहन सहन हरयाणा की जनता से भिन्न था। पंजाब के विभाजन के बाद आज हरयाणा में अपनी आर्य प्रतिनिधि सभा बन गई है। इसका मुख्य कार्यालय भवन हरयाणा के मध्य स्थान रोहतक में बन रहा है। यद्यपि आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों ने बटवारे के नियमानुसार हरयाणा सभा को सांझे कोष से अभी तक प्राप्तव्य धन नहीं दिया है तथापि अपने सीमित साधनों से हरयाणा सभा ऋषि दयानन्द का सन्देश जन जन तक पहुंचाने का प्रयत्न कर रही है। इस समय हमारी सभा के पास अन्य प्रदेशीय सभाओं से अधिक भजनमण्डलियां प्रचार कार्य कर रही हैं।

क्या हरयाणा को पुन: पंजाब में विलीन कराने के समर्थक ऊपर लिखित तथ्यों को झुठला सकते हैं? यदि संयुक्त पंजाब बन जाये तो क्या पंजाब के नेता हरयाणा की जनता के साथ वही पुराना भेदभाव पक्षपात तथा अन्याय व्यवहार नहीं करेंगे? क्या पंजाब के अकाली हरयाणा की हिन्दी भाषी जनता पर पुन: पंजाबी भाषा की पढ़ाई को लादने की योजना नहीं बनाएंगे? क्या पंजाब के उग्रवादी तत्व हिंसा का मार्ग छोड़ देंगे? क्या पंजाब के उग्रवादी तत्व रावी व्यास नदियों का फालतू बहने वाला पानी पाकिस्तान को न देकर हरयाणा को देने के लिए तैयार हो जायेंगे? क्या पंजाब के अलगाववादी तत्वों द्वारा भाखड़ा आदि नहरों को काटकर हरयाणा की जनता को हानि पहुँचाने की नीति को त्याग देंगे और अपने आनन्दपुर साहब के राष्ट्र घातक प्रस्ताव को त्याग देंगे?

अत: मैं हरयाणा के उन नेताओं से निवेदन करता हूं कि वे पंजाब के विगत इतिहास को देखते हुए हरयाणा के अस्तित्व को पुन: समाप्त करने में अपना योगदान न देवें।

स्मरण रखें हरयाणा देवभूमि रही है। यहां ऋषि मुनियों द्वारा वेदोपदेश हुआ है। यहीं योगीराज श्रीकृष्ण जी ने गीता का ज्ञान दिया है। यदि देखा जाय तो केवल हरयाणा ही सारे संसार में एक ऐसा प्रदेश है जहां वैदिक संस्कृति जीवित रह सकती है। अत: संयुक्त पंजाब का प्रस्ताव हरयाणा की जनता के लिए हानिकारक सिद्ध होगा। हिमाचल प्रदेश वाले भी इस प्रस्ताव का विरोध कर रहे हैं। यदि विशाल पंजाब बना दिया जाये तो भी वर्तमान समस्याओं चण्डीगढ़, नदी जल विवाद, अबोहर फाजिल्का तथा भाषा आदि का समाधान नहीं हो सकेगा अपितु और भी अधिक उग्र रूप धारण कर लेंगी। आवश्यकता इस बात की है कि सरकार पंजाब के अलगाव व उग्रवादी तत्वों को समझा बुझाकर सन्मार्ग पर लाने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि वे फिर भी न मानें तो कानून के अनुसार उन्हें कठोर दण्ड दिया जाना चाहिए। यदि सिखों को हथियार रखने की छूट दी जाती है जिसके सहारे वे हिंसक गतिविधियाँ जारी रखते हैं तो हिन्दुओं को भी अपनी आत्मरक्षा करने के लिए हथियार रखने की सुविधा दी जाये। हम हिन्दू तथा सिखों को एक ही जाति मानते हैं। वे हिन्दू गुरुओं के शिष्य थे। इसका नाम बिगड़ कर शिष्य से सिख हो गया है। हमारा इतिहास, परम्पराएं तथा संस्कृति सांझा है परन्तु कुछ राजनैतिक लोग सत्ता प्राप्ति के लिए अलगाव की रट लगाकर अपना उल्लू सिद्ध करना चाहते हैं।

२० जनवरी को ऐतिहासिक स्थान रोहतक में हरयाणा रक्षा वाहिनी की बैठक में इन सभी समस्याओं पर विचार होगा। इसमें

(शेष पृष्ठ ५ पर)

भोपाल में गैस दुर्घटना से पीड़ितों की सहायतार्थ अपील

मध्यप्रदेश के भोपाल नगर में 'यूनियन कारबाईड फैक्ट्री' को जहरीली गैस से कितने ही हजार व्यक्तियों का निधन हो गया है और लगभग पचास हजार व्यक्ति गैस के दुष्परिणामों से अभी प्रभावित हैं। इस भयंकर दुर्घटना से अपना देश ही नहीं सारा विश्व स्तब्ध रह गया है। कितनी ही महिलाओं का सुहाग उठ गया तथा कितने ही बच्चे अनाथ हो गये हैं, जिन्हें पालन-पोषण और मातृत्व प्रेम देने की आवश्यकता है।

विश्व के इतिहास की इस पहली भयंकर दुर्घटना में जहरीली गैस से बचने के लिए लाखों लोगों की भगदड, चिकित्सालयों व श्मशानों में लगे मुर्दों के अम्बार एवं सैकडों शवों का सामूहिक अन्तिम संस्कार होना यही बताता है कि भोपाल नगर में उन दिनों मृत्यु का साम्राज्य छाया हुआ था।

आर्यसमाज का इतिहास रहा है कि उसने अकाल पीड़ित, बाढ़ग्रस्त व तूफान प्रकृति अन्य प्रकोपों से दुःखी मानव की सदैव सेवा की है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने यह संकल्प लिया है कि वह यथाशक्ति भोपाल के पीड़ित भाई बहिनों को सान्त्वनास्वरूप अर्थ व वस्त्र आदि भेजकर उनकी सेवा करें तथा यथाशक्ति अनाथ बच्चों को गोद लेकर उनका हरयाणा के गुरुकुलों तथा विद्यालयों में लालन-पालन व शिक्षा दीक्षा दिलावें।

इस आवश्यक सहयोग के लिए सभी बन्धुओं, समाजसेवी संस्थाओं आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं से पुरजोर अनुरोध है कि वह अधिक से अधिक धनराशि एवं वस्त्रादि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को नकद, मनीआर्डर, ड्राफ्ट, चैक आदि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को दयानन्द मठ, सिद्धान्ती भवन, गोहाना मार्ग रोहतक के पते पर भेजें।

इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए दानी महानुभावों व सभी नागरिकों से पुन. प्रार्थना है कि वे इस कार्य की गम्भीरता को देखते हुए शीघ्रातिशीघ्र अधिक से अधिक धनराशि एकत्र करने मे अपना पूरा योगदान करें।

प्रो० शेरसिंह प्रधान — कन्हैयालाल महत्ता कोषाध्यक्ष — रणजीतसिंह मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

ओमानन्द सरस्वती प्रधान, परोपकारिणी सभा

भोपाल गैस पीड़ित सहायतार्थ दान

सभा की अपील पर भोपाल गैस पीड़ित सहायता के लिए गतांक से आगे निम्न प्रकार दान प्राप्त हुआ है—

प्रिंसिपल जनता हायर सैकण्डरी स्कूल गन्नौर शहर (सोनीपत)	१००१)
मन्त्री आर्यसमाज जीन्द रोड सफीदों जिला जीन्द	२५१)
श्री रोशनलाल रमाकान्त गन्नौर मण्डी जिला सोनीपत	१०१)
सेठ जयकिशन आर्य, आर्यसमाज इक्कस जिला जीन्द	१५३)
श्रीमती सावित्री देवी शर्मा द्वारा श्री परमहंस शर्मा बी/३/१७ सफदरजंग इन्केलेव नई दिल्ली	२००)
डा० प्रेमनाथ आर्य गन्नौर शहर जिला सोनीपत	२१)
आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका जिला गुड़गांव	१०१)
आदर्श शिक्षा समिति द्वारा भजनलाल आर्य फिरोजपुर झिरका जिला गुड़गाव	१०१)
आर्यसमाज अर्जुन नगर गुड़गांव	२२१)
,, रेवाड़ी जिला महेन्द्रगढ	१००)
श्रीकिशन सुपुत्र श्री गोवर्धन नूरपुर मुगल जि० करनाल	५१)

(पं० चन्द्रसेन जी वैदिक मिशनरी सभा महोपदेशक द्वारा)

स्वामी श्रद्धानन्द आर्य अनाथालय करनाल ने भोपाल गैस से पीड़ित ५० अनाथ बालक बालिकाओं का पालन पोषण करना स्वीकार किया है। आशा है अन्य दानी महानुभाव भी इस सूची में अपना नाम लिखवा कर यश के भागी बनेंगे।

कन्हैयालाल महत्ता
सभा कोषाध्यक्ष

संक्रान्ति यज्ञ सम्पन्न

वजीराबाद गुड़गांव में ब्रह्मचारी महेन्द्रसिंह शास्त्री के ब्रह्मत्व में संक्रान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। सम्पूर्ण गांव ने बड़े श्रद्धा व चाव से घृत संग्रह किया। विशेष कर श्री प्रेम, श्री छत्तरसिंह, गुरुदयाल जी, हंसराज चान्दसिंह व महावीर ने इस यज्ञ में पूर्ण योगदान दिया और व्यसनों को छोडने की प्रतिज्ञा भी की।

मन्त्री गुरुदयालसिंह

अपने बच्चों को धार्मिक बनायें

धर्म प्रवेशिका का प्रकाशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की आर्य विद्या परिषद् की ओर से आर्य स्कूलों में ५ वीं तथा ६ वीं कक्षाओं में धार्मिक शिक्षा पढ़ाने के लिए "धर्मप्रवेशिका" पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। इसका लेखन सभा के सुयोग्य मन्त्री डा० रणजीतसिंह जी कि शिक्षा शास्त्री हैं ने किया है। एक प्रति का मूल्य २ रुपये है। अतः अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए इस पुस्तक को मगवाकर धर्म लाभ उठावें।

प्राप्ति स्थान

प्रस्तोता, आर्य विद्या परिषद् हरयाणा
सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक

वक्त को समझने और समझाने का राज

जरा संभल के

(दीवान भीमसेन गुड़गांव)

(गतांक से आगे)

मैं इन घटनाओं के वर्णन करने से किसी राजनीति को चर्चा नहीं करना चाहता। न ही इनकी कोई राजनैतिक पृष्ठभूमि है। केवल एक बात को हृदयङ्गम कराना है कि गुजरने वाले की दाद देना भी एक धर्म है, मान है, शान है, कदरदान की अपनी आन है। आप जरा अनुमान लगाएं कि जिन दो महानुभावों ने गांधी और कस्तूरबा का रोल अदा करने के लिए लन्दन के एक लार्ड ऐडन ब्रा की फिल्म मे काम किया है। उन्होंने पैसे कमाए कि नही। पर्दा पर आकर नाम कमाया कि नहीं, मगर एक साधारण से आदमी का गांधी की तरह बैठना, सैर करना, हंसना चर्खा कातना, वार्तालाप करना, बात बात में देशभर की किस्मत के बारे में विचारना। साथ ही साथ अपना दैनिक काम भी सम्पादित करना, नया जारी रखना। बिल्कुल महात्मा जी की तरह अपने जीवन के ढङ्ग का नक्शा लेना एक कमाल की इबादत (पूजा) का काम था। गांधी का पार्ट अदा करने वाला अंग्रेज भला जिसे चौकड़ी मारकर बैठ सकने की आदत थी न अभ्यास था, किन्तु सतरह वर्ष के निरन्तर अभ्यास द्वारा वह बैठ पाना सीख पाया, जैसे कि गांधी जी विराजमान हों। यह एक आश्चर्यजनक करिश्मा है अपने आपको उचित अधिकारी बनाना तथा बनाने के लिए रग ढग अख्तयार करना। एक भावा (जजबा) था एक कला थी, एक राज (रहस्य) था, जिसका वह अभ्यास करता रहा, इसी आशा पर कि उसे चुनाव में सफल होना है। व्रत रखना है। क्रोध नहीं करना है। त्यौरी न ही चढ़ानी है। मुस्कराते रहना है। तेज चलना है। भगवान् को मानना है। पेश करना है यह राजे जिन्दगी। अपने आप में यह कितना सुन्दर उदाहरण है कि जिसकी चर्चा क्या हो सकती है?

कहा जाता है कि जब कि जब उस चित्र निर्माता ऐडन ब्रा का निमन्त्रण पहुंचता है कि उसे बोर्ड के सामने चुनाव हेतु पेश होना है। इस सलेक्शन के लिए कि क्या वह गांधी की तस्वीर पेश कर सकेगा, कि नहीं। उसके लिये एक बड़ा विशेष दिन था, जिसका वह स्वय इन शब्दो में वर्णन करता है जब मिस्टर ऐडन ब्रा मेरे पास यह प्रस्ताव लेकर आए मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मुझे भगवान् के साथ चलना है। वास्तविकता कथन उस समय का यह है "It was felt Iwishing asked to walk with God" कितने महान् जीवन को कितनी जबरदस्त पेशकश थी। इस प्रकार रोहणियोनगडी एक महाराष्ट्र की एक्ट्रिस अपना वजन ५७ किलोग्राम पर ले आई। केवल रसदार खुराक पर ही निर्भर रही। चार बजे उठती। पहले नाश्ता फिर खाना। गांधी की झड़प को सुनाने वालों से क्रमशः मिलना। घण्टों चर्खा कातना। न क्रोध या आवेश में आना। न चिड़चिड़ाना। देशीय नेताओं से शिष्टता पूर्ण व्यवहार। ५०० गज की कताई साधारण हरकत नहीं थी। इन सभी बातों ने संसार भर के सबसे श्रेष्ठ आदमी और औरत को जीती जागती तस्वीर पेश कर दी। बड़े चरित्र, बड़ी हिम्मत, बड़ी शिक्षा, बड़े प्रशिक्षण, बड़े साहस का नमूना था, जिसे हमारे तो समय में पेश कर देने का सौभाग्य पैदा किया है। कठिनाई यह कि हम सब बातें करना जानते हैं। चित्र और चीज है, चरित्र और चीज है अन्तर केवल 'र' का है, मगर मापा जाए तो अन्तर आकाश-पाताल का है। हमारे देश का दुर्भाग्य रहा तो यह कि अब बातें करने वाले बहुत है, जबकि पहले कार्य क्षेत्र में क्रियात्मक रूप से काम करने वाले अधिक थे। बातो की यहां तरक्की हो रही है, वहां नित्य नई मिसालें सामने आकर हैरान कर रही हैं, चका चौंध कर रही हैं। राक्षस, हैवान (पशु) और देवता की जीती जागती मिसालें हमें लज्जित कर रही हैं कि जीने की भी हद है, एक जीती जागती तस्वीर पेश करने की भी हद है और निष्ठता से इस भाव की कीमत अदा करने में सत्य सिद्ध करने की अदायगी की भी हद है। जैसा कि कहा गया है, कि–

"खुशबू आ नहीं सकती कभी कागज के फूलों से।"

यह तो हाल रहा कलाकारों का और ऐडन ब्रा ने पहली ही बार श्री मोती महल कुठारी की लिखी गांधी जी की जीवनी पढ़ी, तो कसम उठाई, कि बनाइंगा फिल्म, तो इसी की, हालांकि बड़े बड़े जंगी कारनामों की फिल्में बनाने का वह शौकीन था। प्रभाव पड़े तो ऐसा कि 'जादू वह जो सिर चढ बोले।'

पाठकों को सूचना

२१ जनवरी को आर्य स्वतन्त्रता सेनानी विशेषांक निकालने की योजना बनाई गई थी, परन्तु अभी तक हमें आर्य स्वतन्त्रता सेनानियों का परिचय तथा उनके चित्र प्राप्त नहीं हो सके। अतः यह विशेषांक प्रकाशित नहीं हो सका। इस सम्बन्ध में सामग्री प्राप्त होने पर ही प्रकाशित किया जायेगा।

अतः आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्र के स्वतन्त्रता सेनानियों का परिचय तथा चित्र कार्यालय में भेजने का कष्ट करें।

सम्पादक

बेरी में सर्वखाप पचायत

विवाह आदि के अवसरों पर फिजूल खर्च तथा शराब आदि को सामाजिक बुराइयों पर प्रतिबन्ध लगाने पर विचारार्थ राजकीय हायर सैकण्डरी स्कूल बेरी जिला रोहतक में दिनांक १० फरवरी ८५ रविवार को प्रातः १० बजे सर्वखाप पंचायत काद्यान व सतगावा (बालन्द) को पंचायत का पुनः आयोजन किया गया है। अत. पंचायत के प्रतिनिधियों से निवेदन है कि समय पर पधारकर सहयोग प्रदान करे।

भगवान्‌सिह महासचिव पंचायत

वृहद पंजाब का सुझाव हास्यास्पद

हिसार, ११ जनवरी–हरयाणा के अस्तित्व से पूर्व पजाब सरकार में तत्कालीन मन्त्री तथा हिन्दी रीजन के अध्यक्ष तथा हरयाणा के भूतपूर्व वित्तमन्त्री श्री बलवन्तराय तायल के अनुसार पजाब समस्या के समाधान के लिए हरयाणा, हिमाचल प्रदेश को मिला कर वृहत्त पजाब बनाया जाना हास्यास्पद है।

श्री तायल ने कहा कि जब भारत सरकार पंजाब की समस्या को गम्भीरता पूर्वक सुलझाने मे लगी है और इसके लिए उच्चस्तरीय समिति गठित कर दी गई है, इसे नाजुक समय मे एक ओर नई समस्या खड़ी करना पूर्व समस्या के समाधान में बड़ी बाधा के समान होगा। हरयाणा का कोई भी व्यक्ति नये सुझाव का कड़ा विरोध करेगा।

(दैनिक वीर प्रताप से साभार)

पृष्ठ ३ का शेष)

हरयाणा की धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं के साथ हिन्दी भाषी अबोहर फाजिल्का के भाई भी सम्मिलित हो रहे हैं। हरयाणा की जनता ने लोकसभा के चुनाव में हरयाणा के हितों की रक्षा करने की भावना से ही कांग्रेस को सफल बनाया है। जो नेता अकालियों का समर्थन प्राप्त करना चाहते थे, उन्हें पराजित किया है। अत इस तथ्य को भूलना नहीं चाहिये। अन्यथा आगामी विधान सभा के चुनाव मे मतदाता अपने अधिकारों की रक्षा हेतु स्वतन्त्र हैं।

प्रो० शेरसिंह

आर्यसमाजों के आगामी वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज धर्मगढ जिला करनाल	१, २, ३ फरवरी
,, मोरधांबाद मिश्रोल जिला फरीदाबाद	८ से १० ,,
,, ककोरकलाँ जिला मेरठ	८ से १० ,,
गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक	१६, १७ ,,
कन्या गुरुकुल खानपुर कलां जिला सोनीपत	२२, २३, २४ ,,
आर्यसमाज जीन्द रोड सफीदों जि० जीन्द	२२, २३, २४ ,,
,, सालवन जिला करनाल	२५ से २७ ,,
आर्य पाठशाला मदीना जि० रोहतक	१, २, ३ मार्च
आर्यसमाज कुंवारी जि० हिसार	१, २, ३ ,,
,, नारायणगढ जि० अम्बाला	७ से १० ,,
,, शेखुपुरा जि० करनाल	२९, ३०, ३१ ,,
,, मुवाना जिला जीन्द	२९, ३०, ३१ ,,

सभा मन्त्री

(पृष्ठ १ का शेष)

शक्ति का सकेत देता है। क्योंकि वसन्त के मधुर मौसम में न गर्मी अधिक सताती है और न सर्दी इस प्रकार वसन्त के आते ही धरती की सुन्दरता बढ जाती है। वर्षा के न होने से आकाश निर्मल रहता है। बाढ न होने से नदियां तथा तालाब स्वच्छ सुथरे जल से भरे रहते हैं। शीतल मन्द सुगन्ध पवन बहता है। यही कारण है कि इस ऋतु में मनुष्यो पशु-पक्षियों के शरीर में नए खून का संचार होता है। शरीर मन मे उत्साह भर जाता है। नई उमगें उठती हैं। इस ऋतु में होली और वसन्त पञ्चमी मुख्य पर्व माने जाते हैं।

२. दीनबन्धु छोटूराम का जन्म दिवस भी।

इसी वसन्त में दीनबन्धु छोटूराम का जन्म १८८१ में हुआ। जिन्होने अपने जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किए। शिक्षा का प्रचार, गरीबो का उद्धार किया, अपने अधिकारों की प्राप्ति हेतु सघर्ष करना सिखाया। निडर रहकर जीवन जीना सिखाया। किसान मजदूर को सगठित किया। पंजाब के मन्त्री के रूप में भाखड़ा बांध की योजना बनाकर उसे कार्यान्वित कराने का महान् प्रयत्न किया। साहूकारो के कर्जों से गरीबों को मुक्ति दिलाई। गरीब छात्रों को छात्रवृत्ति देकर उन्हें आगे बढाया। स्वाभिमान पूर्वक जीवन का मार्ग प्रशस्त किया। पक्षपात कुनबा परस्ती से दूर रहकर शासन को भ्रष्टाचार से बचाया। स्वावलम्बन का उपदेश देते हुए उन्होने कहा था-

खुदी को कर बुलन्द इतना, हर तकदीर से पहले।
खुदा बन्दे से खुद पूछे, बता तेरी रजा क्या है॥

अत: आज उन्हें भी स्मरण करते हुए श्रद्धांजलि समर्पित करनी चाहिए। उनके जीवन से शिक्षा लेकर अपना जीवन उच्च बनाना चाहिए।

३. वीर हकीकत राय का बलिदान भी इसी दिन

सन् १७१९ में पंजाब के स्यालकोट नगर में भागमल खत्री के घर में हकीकतराय का जन्म हुआ। बच्चा पढ़ने में बड़ा चतुर था। सरकारी नोकरी पाने के लिए अरबी फारसी पढ़नी आवश्यक थी। मदरसे में दाखिल हुए। हकीकत के बहुत होशियार होने के कारण मुसलमान लड़के उनसे चिढते थे। मदरसे से मुल्ला जी हुक्का पीने बाहर चले गए। मदरसे मे बच्चों का झगड़ा हो गया। वे हकीकतराय को मारने तथा गालिया देने लगे। उन्होने मां भवानी को गाली दी। हकीकत ने फातमा को गाली दे दी। इससे लड़कों ने उसे बहुत पीटा। मुल्ला ने भी पीटा। झगड़ा अदालत मे हाकिम के पास पहुंचा। हकीकत के माता पिता ने तथा शहर के दूसरे प्रमुख व्यक्तियों ने हाकिम से व मुल्ला काजियो से क्षमा मांगी। किन्तु मुल्लाओं पर इसका प्रभाव न पड़ा, उलटे उन्होने इकट्ठे होकर फतवा दिया कि-"या तो हकीकत इस्लाम ग्रहण करे, यदि नही तो उसे मौत की सजा दी जाय"। अन्त में शहर के हाकिम ने मामला गम्भीर होते देखकर लाहौर को अदालत में नाजिम के पास केश पेश कर दिया।

कहा जाता है कि नाजिम ने हकीकत की युवावस्था की सहज पूर्ण सुन्दरता को देखकर इस्लाम ग्रहण करने की सलाह दी और कहा- यदि तू इस्लाम अपनाले तो मैं अपनी पुत्री का विवाह तुम्हारे साथ करके तुम्हें किसी ऊचे पद पर लगा दूंगा।

उसके माता पिता ने भी पुत्र के प्रेम के वश में होकर उसे इस्लाम ग्रहण करने की सलाह दो। परन्तु हकीकत ने मुसलमान होना स्वीकार न किया।

उसने अपनी मां तथा युवा पत्नी के रोने धोने की परवाह न करके अपने धर्म पर दृढ रहने को प्रतिज्ञा की।

उसे अन्त में कत्ल का आदेश हुआ। उसे सुनकर हकीकत ने भरी अदालत में हाकिम नाजिम-मुल्ला मौलवियों को लक्ष्य करके कहा था-

'आत्मा मरती नहीं, जिस्म को चाहो मारो।
लोहे की, आग की, पानी की यहां मार नहीं।
काट सकते हो तो बाहर का हकीकत काटो।
काटती असल हकीकत को यह तलवार नहीं।"

अन्त में १७३४ ई० में इसी वसन्त पंचमी के दिन हकीकतराय को कत्लगाह में ले जाया गया। सारे लाहौर शहर में हाहाकार मच गया। हजारों नर नारियों के जमघट के सामने जल्लाद ने एक बार फिर हकीकतराय से कहा "कि मुसलमान बनकर अपनी जान बचा लो।" हाथों में हथकड़ी की जंजीरों में जकड़े हकीकतराय ने कहा-

'डराता मौत से क्या है, अमर है आत्मा मेरी।'
नहीं कुछ कारगर होने की इस पर तेग यह तेरी।
धर्म पर मर मिटुंगा मैं, धर्म ही मुझ को प्यारा है।
यही हमदर्द है मेरा, यही मेरा सहारा है।

इतना कहने पर जल्लाद ने एक ही तलवार के वार से हकीकतराय का सिर तन से अलग कर दिया।

हकीकतराय धर्म पर बलिदान हो गया। किन्तु धर्म न छोड़ा। ऐसे धर्मवीर के लिए आज हमारी श्रद्धाजलि समर्पित है।

बिस्मिल ने शहीदों के अवसर पर कहा था-

"शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बर्ष मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।"

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

आर्यसमाज माडल टाउन करनाल में बसन्त पञ्चमी

आर्यसमाज माडल टाउन करनाल में २२ से २५ जनवरी तक सायं काल ५-३० से ८ बजे तक यज्ञ एवं भजनोपदेश तथा पं० बेगराज जी द्वारा २६ जनवरी को प्रातः ५-३० से ६-३० तक प्रभातफेरी एवं सायं काल ५-३० से ८ बजे तक प्रवचन एवं भजन दिनांक २७ जनवरी को प्रातः ८-३० से ९-३० बजे तक यज्ञ ९-३० से ११-३० तक भाषण प्रतियोगिता ११-३० से १२-३० तक वैदिक विद्वानों के वसन्त पचमी तथा गणतन्त्र के उपलक्ष में कार्यक्रम आयोजित होगा।

अमेरिकी दूरदर्शन कार्यक्रम की आलोचना

जनज्ञान मासिक की सम्पादक पंडिता राकेशरानी ने अमेरिकी दूरदर्शन पर दिखाये गये उस कार्यक्रम की कड़ी आलोचना की है जिसमें भारत को एक बड़ा हुआ हताश तथा मौत का देश बताया गया है और भारत में शान्ति, प्रेम तथा भाईचारा के सन्देश के लिए ईसाई प्रचार पर बल दिया गया है। पंडिता राकेशरानी ने भारत सरकार से मांग करते हुए अमेरिकी दूरदर्शन द्वारा भारत विरोधी प्रचार पर प्रतिबन्ध लगाने पर जोर दिया है।

वेदप्रचार मण्डल द्वारा आर्यसमाजों की स्थापना

१०-१२-८४ को वेदप्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र की एक बैठक श्री विशनसिंह एडवोकेट की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर श्री विशनसिंह एडवोकेट को आगामी वर्ष के लिए अध्यक्ष तथा श्री धर्मदेव विद्यार्थी को महामन्त्री चुना गया। जिले भर में वेदप्रचार करवाकर नवीन आर्यसमाजों को स्थापना का कार्यक्रम बनाया गया। २० मार्च से ७ अप्रैल तक गुरुकुल कुरुक्षेत्र में नवयुवकों का एक शिविर के आयोजन की तैयारी के लिए २७ जनवरी को प्रातः ११ बजे मण्डल की बैठक बुलाई गई है।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र खेलों में विजयी

गत वर्ष की भांति हरयाणा राजकीय स्कूल खेल प्रतियोगिता में प्रान्तभर में गुरुकुल की हाकी टीम दूसरे स्थान पर रही। गुरुकुल के ब्रह्मचारी ईश्वरसिंह, ब्र० विजेन्द्र, ब्र० जोरासिंह हरयाणा प्रान्त में अपने वजन में प्रथम तथा दो अन्य ब्रह्मचारी द्वितीय स्थान पर रहे। हरयाणा सरकार ने गुरुकुल को कुश्ती विंग के रूप में मान्यता प्रदान की हुई है।

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा

१६, १७, १८ फरवरी को ऋषि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में रजत जयन्ती के रूप में ऋषि बोधोत्सव धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर जो सज्जन सम्मिलित होना चाहें वे आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली स्थित टंकारा ट्रस्ट के उप कार्यालय से सम्पर्क करें। टंकारा ट्रस्ट के आधीन उपदेशक विद्यालय, विशाल गोशाला, श्री दयानन्द चित्र गृह अतिथि गृह, पुस्तकालय तथा आर्य साहित्य प्रचार कार्य ट्रस्ट की ओर से चालू हैं। जो दानी महानुभाव इन शुभ कार्यों में दान भेजना चाहें वे मन्दिर मार्ग नई दिल्ली उप कार्यालय में भेजकर यश के भागीदार बनें।

वैदिक यति मण्डल के प्रस्ताव

वैदिक यति मण्डल का सम्मेलन १०, ११ नवम्बर ८४ को वैदिक संन्यास आश्रम दयानन्द नगर गाजियाबाद में हुआ जिसमें निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये गये—

१—समस्त यतियों को अपने प्रवचन व्याख्यानादि में सभ्य और प्रिय भाषा का प्रयोग करना चाहिये।

२—जिन समारोहों में अश्लील गाने अथवा लड़के लड़कियों का नृत्य करवाया जाए उनमें यतियों को नहीं जाना चाहिये।

३—आर्यसमाज के मंच पर सिनेमा के अभिनेता और अभिनेत्रियों का स्वागतादि नहीं होना चाहिए जहां हो वहां यतियों को नहीं जाना चाहिये।

४—आर्यसमाज के जिन शिक्षण संस्थाओं के साथ दयानन्द का नाम जुड़ा है और शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है उनमें हिन्दी संस्कृत को प्राथमिकता दी जाए और सहशिक्षा नहीं होनी चाहिए।

५—जिस आर्यसमाज के समारोह में राजनैतिक नेताओं का अभिनन्दन स्वागत आदि किया जाए वहां यतियों को नहीं जाना चाहिए।

सर्वानन्द—अध्यक्ष वैदिक यति मडल
दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब)

आर्यसमाज जीन्द रोड़ सफीदों का चुनाव

संरक्षक—श्री कुलवन्तराय, प्रधान—श्री जयपालसिंह, उपप्रधान—श्री सुरेशकुमार, श्री श्रीकिशन, मन्त्री—श्री सत्यनारायण, उपमन्त्री—श्री देशराज, कोषाध्यक्ष—श्री जयभगवान्।

शोक समाचार

श्री वीरभान मन्त्री आर्यसमाज गांव झील (जीन्द) के पिता का १-१-८५ को सुबह देहान्त हो गया। वह एक सप्ताह से बिमार थे। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा पारिवारिकजनों को शोक सहन करने की शक्ति एवं धैर्य प्रदान करे।

महेन्द्रसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज झील

आर्यसमाज कालका में श्रद्धानन्द दिवस

कालका २१ सितम्बर—आज का साप्ताहिक सत्संग स्वामी श्रद्धानन्द दिवस होने के कारण विशेष महत्त्व का दिन था, जिसे उतनी ही गरिमा से आयोजित करने की तैयारी विगत दो सप्ताह से चल रही थी।

कार्यक्रम का श्रीगणेश प्रातःकाल ८ बजे आर्यसमाज मन्दिर में आर्यसमाज के नवोदित कर्मकाण्डी श्री सुरेशकुमार जी एम० ए० शास्त्री विद्या भास्कर विद्यावाचस्पति के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुए यज्ञ से हुआ। तदुपरान्त सत्सग हाल में संगीत का कार्यक्रम चला जिसे श्री इन्द्रसेन जी एव उनकी मण्डली तथा स्थानीय स्त्री आर्यसमाज की सदस्याओं ने सम्पन्न कराया।

तद्पश्चात् इस बलिदान दिवस का विशेष कार्यक्रम स्थानीय अन्तस्कूली छात्र छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न हुई जिसकी अध्यक्षता कालका क्षेत्र के उदारमना आर्य श्री हंसराज जी सूद ने की। इसमें सम्मिलित सभी प्रतियोगी छात्र छात्राओं को आर्यसमाज की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा विरचित स्वात्मकथा "कल्याण मार्ग का पथिक" तथा स्वामी दयानन्द जी की जीवनी की एक एक प्रति भेंट की गई। विजेता छात्रों को क्रमशः १००, ६०, ४० रुपये का नकद प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

तदन्तर कार्यक्रम में उपस्थित आर्य विद्वान् सर्व श्री ब्रह्मचारी रामप्रकाश, सुरेशकुमार शास्त्री तथा पं० रणवीर जी शास्त्री विद्या वाचस्पति के अमर हुतात्मा के जीवन के विभिन्न पक्षों को उजागर करने वाले भाषण हुए। दोपहर १२ बजे कार्यक्रम आरती एवं शान्ति पाठोपरान्त अमर बलिदानी श्रद्धानन्द को श्रद्धांजलि तथा उनकी जय जयकार के साथ सम्पन्न हुआ। इसी उपलक्ष्य में व्यवस्थित प्रीतिभोज हुआ इस आयोजन में सम्मिलित लगभग ४०० आर्य नर नारी एवं छात्र छात्राओं ने प्रेम पूर्वक भोजन किया।

सुरेन्द्रपाल शर्मा मन्त्री आर्यसमाज कालका

सिरसा में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस भाषण प्रतियोगिता के रूप में मनाया गया। इस प्रतियोगिता में पन्द्रह टीमों ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सिरसा जिले के एस० एस० पी० श्री वी० के० कपूर ने की थी। चलविजयोपहार एस० एम० पब्लिक स्कूल फतेहबाद ने प्राप्त की। प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहने वालों को आकर्षक पुरस्कार दिये गये। श्री कपूर साहब ने विद्यार्थियों को सम्बोधित किया। प्रबन्धक डा० आर० एस० सागवान ने सबका धन्यवाद किया। प्रिंसिपल श्री द्वारका प्रसाद जिंदल ने स्वामी जीके जीवन पर प्रकाश डाला और विद्यार्थियों को उनके पदचिन्हों पर चलने का आह्वान किया।

द्वारका प्रसाद जिन्दल

आवश्यक सूचना

हरयाणा के जो आर्यसमाजें फरवरी मास में अपने वार्षिक उत्सव अथवा प्रचार कार्यक्रम रखना चाहते हैं, वे सभा से पत्र व्यवहार करके तिथियां निश्चित करने का कष्ट करें।

सभा मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 | १,१६,०८३ ३.

ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १२, अङ्क ६   २८ जनवरी १९८५   वार्षिक शुल्क १५)   विदेश में ५ पौंड   एक प्रति ३० पैसे

राष्ट्रद्रोही अकालियों पर मुकद्दमें चलाकर उन्हें कठोर दण्ड दिया जाए

हरयाणा रक्षा वाहिनी को बैठक के महत्त्वपूर्ण निर्णय

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

हरयाणा रक्षा वाहिनी की एक आवश्यक बैठक दिनांक २० जनवरी ८५ को प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में हरयाणा के सभी जिलों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। इस बैठक में हरयाणा के हितों की रक्षा पर विस्तारपूर्वक विचार रखते हुए हरयाणा रक्षा वाहिनी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल का यह सुझाव केवलमात्र एक स्वपन्न लोक की कल्पना मात्र है जब अकालियों के साथ अब तक किये गये समझौते पर सरकार अमल नही करा सकी तो इस अव्यवहारिक समझौते पर अकालियों को सहमत करवाकर इसे कार्यान्वित कैसे करवाया जा सकता है ? आपने भारत सरकार को सावधान करते हुए कहा कि हरयाणा के अस्तित्व को समाप्त न किया जाए क्योंकि पंजाब से अलग होने पर ही हरयाणा विकास कर सका है। हरयाणा के वीर जवान जहा कृषि आदि के उत्पादन करने में किसी अन्य प्रदेश से पीछे नही वहां सेना में भर्ती होकर राष्ट्र की रक्षा के लिए पहली पंक्ति में खड़े हैं। सीमावर्ती हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का हरयाणा में सम्मिलित किये जायें ताकि पाकिस्तान से उग्रवादियों की गतिविधियां समाप्त हो सकें। पंजाब में उग्रवादियों की गतिविधियों की निन्दा करते हुए आपने कहा कि उन्होंने अनेक बार राष्ट्र-ध्वज का अपमान किया है। भारतीय संविधान को जलाया। निर्दोष हिन्दुओं को बसों से उतारकर गोलियों का निशाना बनाया तथा भाखड़ा नहर को काटकर हरयाणा की जनता को संकट में डाला। परन्तु अकाली नेताओं ने आज तक इनकी निन्दा नहीं की। स्वर्ण मन्दिर अमृतसर को राष्ट्र विरोधी प्रचार का केन्द्र तथा अपराधियों के लिए शरणस्थली बनाकर अकाली नेताओं श्री हरचरणसिंह टोहरा, श्री जगदेवसिंह तलवण्डी आदि ने खुलकर राष्ट्र द्रोह किया है। सरदार प्रकाशसिंह बादल आदि अकालियों ने भारतीय संविधान भी जलाया था। अतः इन राष्ट्र द्रोही नेताओं से भारत सरकार को किसी भी प्रकार की समझौता वार्ता नहीं करनी चाहिए और इन्हें जेलों में रखकर राष्ट्र द्रोह के मुकद्दमे चलाकर कानून के अनुसार कठोर दण्ड देना चाहिए।

प्रो० शेरसिंह ने हरयाणा के लिए बनाई जाने वाली सतलुज ब्यास लिंक नहर की धीमी खुदाई होने का उल्लेख करते हुए कहा कि हरयाणा सरकार ने पंजाब में राष्ट्रपति राज्य होते हुये भी अभी तक १० किलोमीटर नहर की खुदाई की है जबकि पंजाब के कर्मचारियों को बिना खुदाई का कार्य किये ही वेतन तथा भत्ता देकर हरयाणा का दिया हुआ सारा धन खर्च कर दिया गया है। अतः नहर की खुदाई का कार्य हरयाणा के कर्मचारियों से करवाया जाये ताकि नहर राष्ट्रपति शासनकाल में पूरा हो सके। इसके कारण हरयाणा की जनता को एक करोड़ रु० मासिक आर्थिक हानि हो रही है।

आपने हरयाणा मे बिजली के सकट का उल्लेख करते हुये कहा कि बिजली के उत्पादन केन्द्र भाखड़ा डेम आदि पर पंजाब सरकार का निमन्त्रण है, इसी कारण हरयाणा को अपने हिस्से की पूरी बिजली तथा पानी नहीं मिल रहा है। आपने उन नेताओं की आलोचना करते हुए कहा जो कि हरयाणा, हिमाचल प्रदेश तथा चण्डीगढ को मिलाकर पुन: संयुक्त पंजाब बनाने की वकालत कर रहे हैं। इस विषय से न तो राष्ट्र को लाभ होगा और न ही हरयाणा को लाभ हो सकेगा। सारे देश में भाषाई आधार पर प्रांत बन चुके हैं। हरयाणा को पजाब में मिलाने पर यहा पुनः पंजाबी भाषा को लादने की माग खड़ी हो जायेगी और हरयाणा का विकास रुक जायेगा। सयुक्त पजाब में अमृतसर जिले के जितने ग्रामों मे बिजली दे रखी थी, उतनी बिजली सारे हरयाणा के ग्रामों में दी जाती थी। यदि हरयाणा पंजाब में पुनः शामिल कर दिया जायेगा तो वही पुराना भेदभाव तथा पक्षपात होगा।

अतः भारत सरकार को चाहिए कि प्रधान मन्त्री के ऐवार्ड के अनुसार अबोहर फाजिल्का को तुरन्त हरयाणा में सम्मिलित किया जाये और संयुक्त पंजाब के सुझाव पर ध्यान न दिया जाये। हरयाणा रक्षा वाहिनी इस सुझाव का विरोध करती है।

प्रो० शेरसिंह के इस प्रस्ताव का मा० तेगराम जी पूर्व विधायक अबोहर, श्री सुखदेव शास्त्री आसन (रोहतक), नरदेव शास्त्री डा० जयचन्द मिगलानी, श्री बलदेवकृष्ण आर्य (करनाल), आचार्य सुदर्शनदेव, पं० सत्तरसिंह आर्य (हिसार), तीर्थसिंह आर्य, म० भरतसिंह मा० जिलेसिंह आर्य (रोहतक) प्रिंसिपल नित्यानन्द (सिरसा), श्री रामचन्द्र आर्य (रेवाड़ी) कुलभूषण आर्य (गुड़गांव) रिसालसिंह एडवोकेट (झज्जर), हरकिशनसिंह मलिक पूर्व सेशनजज जसराना जिला सोनीपत श्री अमीरसिंह एडवोकेट (रोहतक) चौधरी बदलूराम पूर्व विधायक, श्री रामफलदेव (सुण्डाना) आदि कार्यकर्त्ताओं ने समर्थन किया और प्रो० शेरसिंह को हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए हरयाणा का पक्ष भारत सरकार को रखने का अधिकार दिया गया।

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

हरयाणा के आर्यसमाजों तथा शिक्षण संस्थाओं से निवेदन है कि अपने साप्ताहिक सत्सगों तथा उत्सवों आदि के अवसरों पर प्रस्ताव करके भारत सरकार को भेजें कि राष्ट्रद्रोहियों से समझौता न करके उन्हें कठोर दण्ड दिया जाये। हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का को हरयाणा में सम्मिलित किये जायें।

सभा मन्त्री

पं० वीरसेन वेदश्रमी की सेवा में निवेदन

आचार्य सुदर्शनदेव सभा उपमन्त्री

दिनांक १४ जनवरी १९८५ के सर्वहितकारी अंक में "पुत्रेष्टि-यज्ञ एव सफलता का हेतु" शीर्षक से एक लेख आद्योपान्त पढ़ा। लेख के पढने पर अनुभव हुआ कि इस लेख में लेखक ने कोई बात स्पष्ट रूप में नहीं लिखी है जिसे पाठक लाभ उठा सकें। महर्षि दयानन्द ने संस्कार विधि आदि ग्रन्थों में जो भी कुछ लिखा है वह संस्कार के उपकार के लिए खोलकर लिखा है। श्री वेदश्रमी जो के लेख में मुझे बड़ी घुटन अनुभव हो रही है। यह एक लोकोपकारी विद्वान् का कर्त्तव्य नहीं कि वह किसी विद्या को अपने तक सीमित रखकर अपना महत्त्व बनाने के लिए लेखन कार्य करे। जैसे श्री वेदश्रमी जी लिखते हैं कि पुत्रेष्टि यज्ञ में विशेष संस्कारित घृत, विशेष वर्ण के वस्त्र, विशिष्ट पर्यावरण, विशिष्ट आहार विहार, विशेष रंग की गौ का दूध होता है। अलंकार यज्ञभूमि पर विशेष पदार्थों का आच्छादन या प्रसारण होता है।

मैं समझता हूँ कि श्री वेदश्रमी जी की इन पंक्तियों से पाठकों को कोई लाभ नहीं हो सका। श्री वेदश्रमी जी को अपना लेख फिर से आरम्भ करते हुए पुत्रेष्टि की पूरी विधि खोलकर लिखनी चाहिए। घृत को कैसे संस्कारित करना है। किस वर्ण के वस्त्र धारण करने हैं और वह वैज्ञानिक दृष्टि से कैसे पुत्र प्राप्ति में उपयोगी है। कैसा पर्यावरण रखना है। क्या क्या उसे खाना पीना है। किस रंग की गाय का दूध पीना है। यज्ञभूमि पर कौन से पदार्थ बिछाने हैं और उनका वैज्ञानिक दृष्टि से पुत्र प्राप्ति में कितना उपयोग है और क्या अपने आचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती आपके मन्तव्य से कहां तक सहमत हैं। जब आप गर्भाधान संस्कार को पुत्रेष्टि का प्रधान अंग मानते हैं तो क्या वह संस्कार विधि में लिखा संस्कार अधूरा है। क्या महर्षि ने यज्ञ में विशेष वस्त्र धारण से अथवा यज्ञ वेदी पर विशेष वस्त्र बिछाने से पुत्र प्राप्ति का कहीं वर्णन किया है? वेदश्रमी जी का सारा लेख इसी प्रकार की शंकाओं से भरा हुआ है। मेरा उनसे नम्र निवेदन है कि यदि उन्हें इस विद्या के सम्बन्ध में महर्षि से विशेष कोई जानकारी है तो उसे लेख के रूप में तथा पुस्तक के रूप में लोक कल्याण के लिए बिल्कुल खोल कर लिखने का कष्ट करें। व्यर्थ काले कागज करने से कोई लाभ नहीं है।

विशेष—आपने लेख में 'पुत्रेष्टि यज्ञ' शब्द का प्रयोग किया है। जब 'इष्टि' शब्द यज्ञ का वाचक है तो फिर 'यज्ञ' शब्द का प्रयोग करना पुनरुक्ति दोष है। ऐसे ही 'सामर्थ्य' शब्द का लेख में स्त्रीलिङ्ग में प्रयोग किया है जबकि यह शब्द स्त्रीलिङ्ग नहीं अपितु हिन्दी भाषा में पुलिङ्ग है। इससे विदित होता है कि आपको व्याकरण शास्त्र का ज्ञान नहीं। विद्वान् को चाहिए कि वह शुद्ध भाषा का प्रयोग करे जिससे साधारण जनता में भ्रान्तियां न फैलें।

महात्मा हंसराज दिवस २१ अप्रेल को

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, डी० ए० वी० संस्थाओं, हंसराज पब्लिक स्कूलों एवं अन्य आर्य संस्थाओं को सूचनार्थ लिख रहा हूं कि इस वर्ष का महात्मा हंसराज दिवस २१ अप्रेल १९८५ को हर वर्ष की भांति प्रातः ९ बजे से १२-३० बजे तक तालकटोरा गार्डन के इण्डोर स्टेडियम में समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। मेरी समस्त आर्य जनता से प्रार्थना है कि वे ये तिथियां अभी से अंकित कर लें और अपना कोई भी कार्यक्रम उपर्युक्त समय पर न रखें तथा अधिक से अधिक संख्या में इस समारोह में सम्मिलित होने की कृपा करें।

रामनाथ सहगल सभा मन्त्री

आर्यसमाज मन्दिर बालावास का निर्माण

आर्यजगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य बहुल स्थल ग्राम बालावास जिला हिसार में आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण कार्य आरम्भ हो चुका है। सभी सम्पन्न आर्यसमाजों तथा दानवीर बन्धुओं से निवेदन है कि इस कार्य को पूरा करने के लिए अपने सामर्थ्य के अनुसार आर्थिक सहायता निम्नलिखित पते पर अवश्य भेजकर पुण्य के भागी बनें।

अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
प्रधान आर्यसमाज मन्दिर निर्माण समिति
ग्राम बालावास पो० कंवारी जिला हिसार

आर्यसमाज गन्नौर शहर में साप्ताहिक प्रचार

गत वर्षों की भान्ति इस वर्ष भी पं० जयदेव जी बतोई वाला की प्रधानता में आर्यसमाज गन्नौर शहर द्वारा साप्ताहिक यज्ञ का कार्यक्रम बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। यह कार्यक्रम गन्नौर के विभिन्न चौकों जैसे महर्षि दयानन्द चौक, शहीद भगतसिंह चौक, वीर सुभाष चौक, शहीद लेखराम चौक में आयोजित किया जाता है। इस बार 'श्रद्धानन्द बलिदान दिवस' २३ दिसम्बर रविवार को स्वामी श्रद्धानन्द चौक मेन बाजार में मनाया गया। आध्यात्मिक प्रवचन, भक्ति संगीत एवं सामूहिक गीत आदि इस कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण रहे। स्वामी सच्चिदानन्द जी व महात्मा प्रेमभिक्षु जी के प्रवचन हुए। यह कार्यक्रम फरवरी मध्य तक रहेगा।

ओमप्रकाश वर्मा
मन्त्री आर्यसमाज गन्नौर शहर

शोक समाचार

१—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पूर्व टाइपिस्ट श्री ओमपाल आर्य का अपने ग्राम गान्धरा जिला रोहतक में १७ जनवरी ८५ को लम्बी बीमारी के पश्चात् २५ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। वे बहुत ही लगनशील तथा होनहार कार्यकर्त्ता थे। उन्होंने लगभग ५ वर्ष तक सभा की सेवा की।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

२—हम महान् दुःख के साथ सूचित कर रहे हैं कि सभा के अन्तरंग सदस्य वैद्य रामनाथ यमुनानगर की माता श्रीमती भोरांवाली का स्वर्गवास १२ जनवरी को हो गया।

१८ जनवरी १९८५ शुक्रवार सायं २-३० से ४ बजे तक इस उपलक्ष में शुद्धि यज्ञ किया गया।

३—मस्तनाथ आयुर्वेदिक महाविद्यालय तथा वैद्य चिकित्सालय अस्थल बोहर जिला रोहतक के संस्थापक तथा अस्थल बोहर नाथ सम्प्रदाय ट्रस्ट के संचालक महन्त श्रेयोनाथ जी पूर्व मन्त्री हरयाणा, का जनवरी के प्रथम सप्ताह में ८१ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आप सामाजिक कार्यों में सदा दान आदि देकर सहायता करते रहते थे।

४—कालांवाली जि० सिरसा के श्री चमनलाल गोयल का स्वर्गवास ६ जनवरी को हो गया। उनकी स्मृति में बाबूराम ओमप्रकाश जी आर्य द्वारा शान्ति यज्ञ करवाया। शोक सभा में उन्हें श्रद्धांजलि दी गई और निम्न प्रकार दान दिया गया—आर्यसमाज कालांवाली १००) २००) पंजाब में शहीद फण्ड तथा १०१) आर्य वानप्रस्थाश्रम भटिण्डा आदि को दान दिया।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति तथा पारिवारिकजनों को शोक सहन करने की शक्ति एवं धैर्य प्रदान करें।

सभा मन्त्री

सम्पादकीय:-

नयी सरकार से आशा—अपेक्षाएं

प्रो० शेरसिंह पूर्व केन्द्रीय मन्त्री

चुनाव के अवसर पर भारत की जनता ने बार बार वही किया जो उसे करना चाहिये था और जिससे लोकतन्त्र भी मजबूत हुआ और राष्ट्र भी। नेताओं की विफलता को जनता ने ढक लिया और नये सिरे से राष्ट्र को सुदृढ करने का अवसर दे दिया। भारत की जनता ने श्री राजीव गांधी को अपूर्व समर्थन दिया है।

सुधार के लिए उठे कदम—

जनता ने आशा लगाई है कि वे अब उनकी सुध लेंगे। शुरुआत तो उन्होंने अच्छी की है। उप-मन्त्रियों की नियुक्ति न करके एक व्यर्थ के व्ययभार से छुट्टी पाई है। काम करके दिखाने की शर्त पर मन्त्रिमडल में लोगों को शामिल किया है। विभागों का भी पुनर्गठन एक नये चिन्तन के तहत किया है। जिनके कारनामों की चर्चा रही उनकी छुट्टी भी की है। योजना आयोग का पुनर्गठन करके उसमें फिर से कुछ जान डालने का यत्न किया है। सार्वजनिक क्षेत्र में चल रहे बड़े बड़े कारखानों की कारगुजारी को सुधारने की ओर भी कदम बढ़ा है। पंजाब और असम जैसी समस्याओं के हल के लिए भी विचार शुरू हो गया है। ये सब अच्छे संकेत हैं। भ्रष्ट सरकारी अधिकारियों को बदलने काला धन बनाने वालों के रास्ते बन्द करने, आबादी का नियंत्रण और गरीबों का पेट भरने की योजनाओं का लोग बेसब्री से इन्तजार कर रहे हैं। किसान भी कौड़ियों के भाव उसकी जमीन हथियाने के हथकण्डों से मुक्ति की तलाश में हैं।

विदेशी चुंगल से बचें—

नई उद्योग नीति और योजना आयोग के पुनर्गठन से उत्पादन बढ़ाने की तीव्र इच्छा तो स्पष्ट हो जाती है, परन्तु इसमें गरीब देश और उसकी गरीब जनता के लिए जो खतरे छिपे हैं, उसकी ओर भी ध्यान जाना चाहिए। नई टेक्नॉलाजी का लाभ उठाकर उत्पादन बढ़ाने की सोचना तो वास्तव में स्तुत्य है, परन्तु पिछले ३७ वर्षों का इतिहास मन को हिला देता है। बीते हुए ३७ वर्षों मे यह देखने को मिला कि विकसित देश हमको समयातीत (बोसीदा) टक्नॉलाजी ही देने को तैयार होते हैं, नवीनतम नहीं और हमारे उच्च अधिकारी भी नवीनतम टेक्नॉलाजी के लिये इतना ही नही कि आग्रह नहीं करते, बल्कि मेहमाननवाजी के लोभ में उसी समयातीत टेक्नॉलाजी के लिए समय बीत जाने पर भी 'रायल्टी देते रहते हैं और अवधि बढ़ाते रहते हैं। जो टेक्नॉलाजी हमको ५ वर्ष में पूर्ण रूप से सीखनी और अपने ही बूते पर बना लेनी चाहिये थी, उसको हम २०-२५ वर्षों तक घसीटते रहते हैं और बिना कुछ किए या दिये विदेशी कम्पनियां 'रायल्टी' मांगती रहती हैं। भोपाल की गैस त्रासदी इसका जीता जागता सबूत है। एक दूसरा दुष्परिणाम तकनीकी के अन्धाधुन्ध आयात का यह भी होने वाला है कि जिन वस्तुओं के उत्पादन की प्रक्रिया में लाखो लोगों को रोजगार मिल सकता है, वह केवल हजारो तक ही सीमित रह जायेगा। भारत जैसे आबादी के विस्फोट से पीड़ित देश के लिए यह सोचना जरूरी है कि पैदावार बढ़ाने से गरीब को क्या मिलेगा? क्या उसको रोजगार मिलेगा और क्या उसकी क्रयशक्ति बढ़ पायेगी, जिससे उस बढ़ी हुई पैदावार का उपयोग वह कर सके। क्या हमारे पास इतनी बड़ी मात्रा में पूंजी है, जिससे हम आधुनिकतम तकनीकी की खर्चीली इकाइयां बड़ी संख्या में लगा पायें। भारत के पास पूंजी की कमी और जनशक्ति की बहुतायत है। नई तकनीक के आयात के समय यह बात ध्यान में रखने की है, विकसित तकनीकी की चकाचौंध में गरीब की बेहतरी ओझल नही होनी चाहिये। अपने विषयों में निष्णात योजना आयोग के सदस्य और उन जैसे चिंतक नये अर्थशास्त्र के द्वारा गरीब के साथ जो अनर्थ करते हैं, उस पर ध्यान देना आवश्यक है। अपने विषयों की महारत के साथ क्या उनके हृदय में गरीब के प्रति वह संवेदना है, जो समाज के गरीब वर्गों के अन्तिम छोर तक पहुँचकर उनको न्याय दे सके?

निर्धनो के आंसू पोंछे—

आज देश में जो हवा चल रही है उसमें राजनीति एक व्यापार और सरकारी नौकरी मौज का साधन बनकर रह गई है। आज दुखी और गरीब के आंसू पोंछने की फुरसत किसको है? गांधी जी का वह मापदंड कि कोई नीति ठीक है या गलत, इसकी परख इस बात से होनी चाहिये कि उसके द्वारा सबसे असहाय और गरीब को लाभ मिलता है, या नहीं, ताक पर रख दिया गया है।

लोगों ने राजीव और उनकी सरकार को दिल खोलकर असीम शक्ति दी है। जनता यह देखना चाहती है कि उसके इस चमत्कारी कदम का उनको क्या जवाब मिलता है। लिहाज और दबाव को फेंक कर दृढ संकल्प के साथ समाजद्रोही, शोषक और राष्ट्रद्रोही तत्वों से निबटना होगा। समस्याओं का समाधान खोजते समय ऐसी शक्तियों के साथ नरमी दिखाने के बजाय सख्ती से पेश आना पड़ेगा। इन खतरों से छुट्टी पाने का जो बल जनता ने दिया है, वह यदि बिखर गया तो घोर निराशा का दौर आ सकता है। उस भयावह दौर से राष्ट्र को नया नेतृत्व बचा पायेगा, यह आशा बनी रहे, इसके लिए कदम उठे हैं, आगे बढ़ने चाहिए, रुकने नही चाहिएं।

(युगवार्ता से साभार)

भजनलाल के सुझाव का विरोध

(हमारे विशेष संवाददाता द्वारा) नई दिल्ली, २५ जनवरी। हिमाचल प्रदेश के सभी कांग्रेस (इ) के सांसदों ने हिमाचल प्रदेश को पंजाब में मिलाने के श्री भजनलाल के सुझाव का विरोध किया है।

इन सांसदों ने आज प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से भेंट कर कहा कि हिमाचल प्रदेश की अपनी पृथक् संस्कृति, भाषा और रीति-रिवाज हैं। उनकी पृथक् पहचान बनाए रखने के लिए यह जरूरी है कि हिमाचल प्रदेश पृथक् राज्य बना रहे।

हरयाणा और हिमाचल प्रदेश को मिलाकर विशाल पंजाब का गठन करने के हरयाणा के मुख्यमन्त्री के सुझाव का विरोध करते हुए इन सासदो ने कहा कि १९५४ में भी हिमाचल प्रदेश के लोगो ने इस राज्य के पंजाब में विलय का विरोध किया था।

सांसदों ने प्रधानमन्त्री को एक ज्ञापन भी दिया है। इस पर श्री रोशनलाल, श्रीमती चन्द्रेश कुमारी, श्री आनन्द शर्मा, श्री नारायणचन्द्र पाराशर और श्री कृष्णदत्त सुलतानपुरी एवं श्रीमती उषा मल्होत्रा के हस्ताक्षर हैं। (दैनिक हिन्दुस्तान से साभार)

विलय प्रस्ताव विचाराधीन नहीं

नई दिल्ली, २४ जनवरी (प्रेट्र) आज गृहमन्त्री श्री चव्हाण ने राज्यसभा मे कहा कि पंजाब, हिमाचल, हरयाणा और चण्डीगढ के विलय का कोई प्रस्ताव उस मन्त्रिमण्डलीय समिति के सम्मुख नहीं रखा गया। जो पंजाब के सवाल पर गौर कर रही है। जब तक यह समिति ऐसे किसी प्रस्ताव पर विचार करना न माने तब तक इसके बारे में कोई प्रतिक्रिया कैसे व्यक्त की जा सकती है।

दैनिक ट्रिब्यून से साभार)

भोपाल में गैस दुर्घटना से पीड़ितों को सहायतार्थ अपील

मध्यप्रदेश के भोपाल नगर में 'युनियन कारबाईड फैक्ट्री' की जहरीली गैस से कितने ही हजार व्यक्तियों का निधन हो गया है और लगभग पच्चास हजार व्यक्ति गैस के दुष्परिणामों से अभी प्रभावित हैं। इस भयंकर दुर्घटना से अपना देश ही नहीं सारा विश्व स्तब्ध रह गया है। कितनी ही महिलाओं का सुहाग उठ गया तथा कितने ही बच्चे अनाथ हो गये हैं, जिन्हें पालन-पोषण और मातृत्व प्रेम देने की आवश्यकता है।

विश्व के इतिहास की इस पहली भयंकर दुर्घटना में जहरीली गैस से बचने के लिए लाखों लोगों की भगदड़, चिकित्सालयों व श्मशानों में लगे मुर्दों के अम्बार एवं सैंकड़ों शवों का सामूहिक अन्तिम संस्कार होना यही बताता है कि भोपाल नगर में उन दिनों मृत्यु का साम्राज्य छाया हुआ था।

आर्यसमाज का इतिहास रहा है कि उसने अकाल पीड़ित, बाढ़ग्रस्त व तूफान प्रकृति अन्य प्रकोपों से दु:खी मानव की सदैव सेवा की है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने यह संकल्प लिया है कि वह यथाशक्ति भोपाल के पीडित भाई बहिनों को सान्त्वनास्वरूप अर्थ व वस्त्र आदि भेजकर उनकी सेवा करें तथा यथाशक्ति अनाथ बच्चों को गोद लेकर उनका हरयाणा के गुरुकुलों तथा अनाथालयों में लालन-पालन व शिक्षा दीक्षा दिलावें।

इस आवश्यक सहयोग के लिए सभी बन्धुओं, समाजसेवी संस्थाओं आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं से पुरजोर अनुरोध है कि वह अधिक से अधिक धनराशि एवं वस्त्रादि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को नकद, मनीआर्डर, ड्राफ्ट, चैक आदि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को दयानन्द मठ, सिद्धान्ती भवन, गोहाना मार्ग रोहतक के पते पर भेजें।

इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए दानी महानुभावों व सभी नागरिकों से पुन: प्रार्थना है कि वे इस कार्य की गम्भीरता को देखते हुए शीघ्रातिशीघ्र अधिक से अधिक धनराशि एकत्र करने में अपना पूरा योगदान करें।

प्रो० शेरसिह	कन्हैयालाल महत्ता	रणजीतसिह
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।
ओमानन्द सरस्वती प्रधान, परोपकारिणी सभा

विशेष धन्यवाद

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अपील पर भोपाल में गैस पीडित सहायता हेतु जनता हाई स्कूल गन्नौर जिला सोनीपत तथा फरीदाबाद में दयानन्द पब्लिक स्कूलों के संचालक श्री कन्हैयालाल जी महत्ता प्रधान आर्यसमाज नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद एवं सभा कोषाध्यक्ष ने मेरी प्रार्थना पर एक एक हजार रुपया सहर्ष प्रदान किया है। श्री किशनचन्द शर्मा प्रिंसिपल जनता स्कूल गन्नौर के प्रयत्न से शीघ्र ही यह स्कूल कालेज बनने वाला है।

इसी प्रकार अन्य आर्यसमाजें भी इस सेवा कार्य में सभा को सहयोग दे रही हैं। अतः मैं सभी को विशेष धन्यवाद देता हूं।

पं० चन्द्रसेन सभा महोपदेशक

अबोहर फाजिलका के स्कूलों में पंजाबी अनिवार्य विषय

रोहतक, २१ जनवरी (निस)। पंजाब सरकार द्वारा अबोहर फाजिल्का के मान्यता प्राप्त गैर सरकारी स्कूलों में पंजाबी भाषा को अनिवार्य विषय बनाये जाने के निर्णय से इस क्षेत्र के लोगों में भारी रोष व्याप्त है।

यह जानकारी कल यहां अबोहर से यहां आये भूतपूर्व विधायक और इन क्षेत्रों को हरयाणा में शामिल कराने के समर्थक मास्टर तेगराम ने दी। उन्होंने बताया कि पंजाब के सभी सरकारी स्कूलों में पंजाबी भाषा का विषय अनिवार्य था जबकि मान्यता प्राप्त गैर सरकारी स्कूलों को इस विषय में छूट दी थी। इसलिये इन गैर सरकारी स्कूलों में पंजाबी के स्थान पर हिन्दी भाषा को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाता था।

उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार के इन नये आदेशों से हिन्दी माध्यम से पढ़ने वाले हजारों छात्रों के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लग गया है। उन्होंने बताया कि नियमों के अनुसार अगर एक श्रेणी के १० और स्कूल के ४० छात्र हिन्दी पढ़ने की इच्छा व्यक्त करें तो शिक्षा विभाग को उन्हें हिन्दी भाषा पढ़ाने के प्रबन्ध करने पड़ेंगे। लेकिन अबोहर-फाजिल्का में तो सैंकडों अभिभावकों ने लिखित आवेदन करके उनके बच्चों को हिन्दी पढाने का अनुरोध किया है। परन्तु सरकार ने सभी नियमों को ताक पर रखकर यह आदेश दिया है।

मास्टर तेगराम जो इन नये निर्देशों को रद्द कराने के लिए लोक सभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ से मिलने दिल्ली जा रहे थे, ने आज यहां भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिह से भी इन निर्देशों को रद्द करवाने में समर्थन मांगा है। उन्होंने बताया कि अकेले अबोहर के २० गैर सरकारी स्कूलों में लगभग दस हजार छात्र हिन्दी विषय से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

मुख्यमन्त्री श्री० भजनलाल के पंजाब समस्या के हल के लिये पंजाब, हरयाणा, हिमाचल तथा चण्डीगढ का विलय कर महा पंजाब बनाने सम्बन्धी प्रस्ताव का विरोध करते हुए मास्टर तेगराम ने कहा कि इससे अबोहर फाजिल्का के लोगों की समस्या हल नहीं होगी।

विलय प्रस्ताव चुनाव स्टंट-दहिया

सोनीपत, २१ जनवरी (निस)। हरयाणा विधानसभा में लोकदल पार्टी के मुख्य सचेतक डा० भीमसिंह दहिया ने राज्य के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल के उस प्रस्ताव का, जिसमें उन्होंने हरयाणा और हिमाचल प्रदेश को पंजाब में विलय का सुझाव दिया है, विरोध करके उसे एक चुनाव स्टण्ट बताया और कहा कि इस प्रस्ताव का मुख्य उद्देश्य आने वाले विधानसभा चुनाव में पंजाबी हिन्दुओं के वोट लेना है। यह प्रस्ताव पंजाब समस्या का कोई हल नहीं है।

डा० दहिया ने कहा कि विलय का प्रस्ताव अकालियों के इस आरोप को सिद्ध कर देगा कि उनके साथ भेदभाव होता रहा है।

(दैनिक ट्रिब्यून से साभार)

आर्यसमाज शान्तिनगर सोनीपत में लोहड़ी यज्ञ

१३ जनवरी को लोहड़ी के अवसर पर यज्ञ किया गया। इस अवसर पर श्री शोभराज, डा० ऋषिदेव, श्री अर्जुनदेव कालड़ा, श्री हरिश्चन्द्र स्नेही, श्री जितेन्द्रकुमार, श्री अजयकुमार, श्री प्यारेलाल व रविकान्ता ने महर्षि दयानन्द के निर्वाण तथा उनके आदर्शों पर प्रकाश डाला।

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

अम्बाला कुरुक्षेत्र वेदप्रचार समाचार

१—१३ जनवरी को कपाल मोचन जिला अम्बाला में जिला अम्बाला तथा कुरुक्षेत्र के कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक श्री रोशनलाल आर्य विधायक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। ग्रामों में नवीन आर्य समाजों की स्थापना करके शराब तथा दहेज आदि सामाजिक बुराइयां समाप्त करने का कार्यक्रम बनाया गया। इसी प्रकार की बैठक २० जनवरी को आर्यसमाज माडल टाउन यमुनानगर में भी आयोजित की गई।

२—आर्यसमाज वीरमाजरा (दिल्ली का माजरा) जिला कुरुक्षेत्र में गत सप्ताह २ दिन पंडित हरिश्चन्द जो मण्डली द्वारा वेदप्रचार किया गया। आर्यसमाज को ओर से १०१) भोपाल पीड़ित सहायता के लिए सभा को दिये गये। इसी प्रकार आर्यसमाज ईशरहेड़ी से प० हरिश्चन्द जो की भजन मण्डली द्वारा १५१) आर्यसमाज जुब्बाल से ३४) आर्य समाज कोटड़ा जिला अम्बाला से १०३) भोपाल में पीड़ितों की सहायता के लिए दान प्राप्त हुआ।

३—ग्राम हैडवाला में पंडित हरिश्चन्द जी की मण्डली द्वारा प्रचार कार्य किया गया। प्रचार के फलस्वरूप वहां आर्यसमाज की स्थापना हो गई।

४—आर्यसमाज वीरमाजरा का उत्सव ९ से १० फरवरी, आर्य समाज ईशरहेड़ी का उत्सव ११ से १४ फरवरी, आर्यसमाज मन्धार का ६ से ८ मार्च तथा आर्यसमाज नारायणगढ़ का उत्सव तथा यज्ञ का कार्यक्रम ८ से १० मार्च की तिथियों में रखा गया।

जो आर्यसमाजें अपने उत्सवादि रखना चाहते हों वे जि. अम्बाला कुरुक्षेत्र वेदप्रचार मण्डल के प्रबन्धक पं० हरिश्चन्द आर्य भजनीक से सम्पर्क करें।

सभा महोपदेशक पं० चन्द्रसैन वैदिक मिशनरी के सराहनीय कार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महोपदेशक गत मास सभा से अवकाश लेकर अपने एक मित्र को सुपुत्री के विवाह संस्कार में सम्मिलित होने के लिए अहमदाबाद गये थे। वहां उन्होंने उद्योगपति श्री मंगलसैन जो चोपड़ा सूरतवाले गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान महाशय हेमराज आर्य जबलपुर निवासी तथा श्री गुरुदास आर्य आदि आर्यसमाज के नेताओं से सम्पर्क करके सभा के पत्र सर्वहितकारी के ६, ७ ग्राहक बनाये तथा सोनीपत से अहमदाबाद का आने जाने के मार्ग व्यय का बोझ भी सभा पर नहीं डाला। आर्यसमाज के हितैषियों ने इनका मार्ग व्यय भी भेंट किया।

इसी प्रकार आपने सभा के कोषाध्यक्ष श्री कन्हैयालाल महता से फरीदाबाद में सम्पर्क करके उन द्वारा सचालित दयानन्द पब्लिक हाई स्कूल सैक्टर २२ व २३ फरीदाबाद से १७१, १०१ रुपये लेकर उन्हें सर्वहितकारी का आजीवन सदस्य बनाया। इससे पूर्व वे फरीदाबाद के अन्य स्कूलों को भी आजीवन सदस्य बना रखा है।

सर्वहितकारी के सदस्य बनाने के साथ साथ आपने हरयाणा तथा दिल्ली के आर्यसमाजों का भ्रमण करके भोपाल में गैस पीड़ितों की सहायता के लिए भी धन संग्रह करके सराहनीय कार्य किया है। आप जहां भी जाते हैं, वहीं आर्यसमाज का कार्य मिशनरी भावना भावना से करते हैं।

सभा मन्त्री

आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार–१९८५

संघड विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर की ओर से इस विश्वविद्यालय द्वारा प्रति वर्ष एक ऐसे विद्वान् को सम्मानित किया जाता है कि जिसका कि वेदप्रचार में उल्लेखनीय योगदान रहा हो।

गत वर्षों में यह पुरस्कार क्रमश: आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार श्री भवानीलाल भारतीय, श्री विश्वनाथ विद्यालंकार, आचार्य सत्यकाम विद्यालंकार को दिया जा चुका है।

संघड विद्यासभा ट्रस्ट जयपुर ने इस वर्ष उक्त पुरस्कार वैदिक विद्वान् पण्डित भगवद्दत वेदालकार को प्रदान करने की स्वीकृति दी है।

ज्ञातव्य है कि यह पुरस्कार विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर कुलाधिपति महोदय द्वारा भेंट किया जाता है। इस पुरस्कार में एक हजार रुपये की राशि एवं भगवस्त्र भेंट किया जाता है।

कुलसचिव

ऐसे होता है डाकुओं से मुकाबला

बिजनौर, २३ जनवरी (जनसत्ता) यहां से बीस किलोमीटर दूर किरतपुर थाने के गांव गाजीपुर में गांव वालों ने एक बन्दूक धारी लुटेरे को पीट पीट कर मार डाला।

पता चला है कि रघुबीरसिंह अपने भतीजे के साथ खेत में पानी दे रहे थे। तभी तीन हथियार बन्द लुटेरे वहां आ पहुंचे। जैसे ही उन्होंने टार्च की रोशनी डाली तो भतीजे ने ललकारा। डाकुओं ने जवाब में बन्दूक दागी। भतीजे ने छलांग लगाकर डकैतो को पीछे से काबू कर लिया और बन्दूक छीन ली। रघुबीरसिंह ने लाठी बरसाना शुरू कर दिया। शोरगुल में और गांववासी भी दौड़ पड़े। लुटेरे के अन्य दो साथी भाग खड़े हुए।

गांव वालों ने लुटेरे को इतना पीटा कि उसने वहीं दम तोड़ दिया इस गांव में पहले भी कई बार डकैतों का मुकाबला इसी तरह साहस के साथ किया गया।

उधर तहसील नगीना के गांव बैनीपुर में एक महिला ने दो डकैत के छक्के छुड़ा दिए। पति को गैर मौजूदगी में डकैत घर पर चढ़ आए। महिला ने एक डकैत को पकड़कर शोर मचाया तो बाकी भाग खड़े हुए। पकड़े गए डाकू ने चाकू से महिला के हाथ पर वार किया और वह भी छूटकर भाग गया लेकिन पूरा घर सुरक्षित बच गया।

(दैनिक जनसत्ता २५-१-८५)

अपने बच्चों को धार्मिक बनायें

धर्म प्रवेशिका का प्रकाशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की आर्य विद्या परिषद् की ओर से आर्य स्कूलों में ५ वीं तथा ६ वीं कक्षाओं में धार्मिक शिक्षा पढ़ाने के लिए "धर्मप्रवेशिका" पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। इसका लेखन सभा के सुयोग्य मन्त्री डा० रणजीतसिंह जो कि शिक्षा शास्त्री हैं ने किया है। एक प्रति का मूल्य २ रुपये है। अत: अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए इस पुस्तक को मगवाकर धर्म लाभ उठावें।

प्राप्ति स्थान

प्रस्तोता, आर्य विद्या परिषद् हरयाणा
सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक

भोपाल गैस पीड़ित सहायतार्थ दान

आर्यसमाज नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद	१०००)
,, अर्जुननगर गुड़गांव	२२५)
श्री सुखदेव जी बक्शी डी-१२ बालीनगर नई दिल्ली	१२१)
रामानन्द सन्तुराम गन्नौर मण्डी जिला सोनीपत	१०१)
डा० देवराज सपड़ा राज हस्पताल सोनीपत	५१)
रामलाल गन्नौर मण्डी जिला सोनीपत	५१)
के. सी. अरोड़ा बी-१४१ डी. डी. ए. कालोनी नारायणा (दिल्ली)	५१)
गंगाराम क्लाथ हाऊस गन्नौर मण्डी जि० सोनीपत	२१)
प्रकाशचन्द गन्नौर मण्डी ,, ,,	११)
मनोहर लाल ,, ,, ,, ,,	११)
वासुदेव ,, ,, ,, ,,	११)
श्रीमती धनवन्ती बत्रा माडल टाउन सोनीपत	१०)
रामबिलामल गन्नौर मण्डी जि० सोनीपत	६)
शिवदयाल ,, ,, ,, ,,	५)
उपरोक्त दान पंडित चन्द्रसेन आर्य द्वारा प्राप्त हुआ)	
आर्यसमाज बीर सुजरा जि० कुरुक्षेत्र	१०१)
,, ईसरहेड़ी ,, ,,	१०१)
ज्ञानचन्द ग्राम करेड़ा खुर्द जि० अम्बाला	५१)
द्वारकानाथ ,, ,, ,, ,, ,,	५०)
आर्यसमाज जुब्बल जिला कुरुक्षेत्र	१४)
(उपरोक्त राशि पं० हरिश्चन्द जी द्वारा प्राप्त)	
कृष्ण जी आर्यसमाज नुरपुर मुगलान जिला करनाल (द्वारा पं० सुमेरसिंह आर्य)	५१)
पारब्रह्म परमार्थी मन्त्री आर्यसमाज रेवाड़ी जि० महेन्द्रगढ़	१०१)
मंगलीराम आर्यसमाज खेड़ीबट जिला रोहतक	१००)
महेन्द्रसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज कोल जि० जीन्द (कार्यालय में प्राप्त)	५०)

सभी दान दाताओं का सभा की ओर से धन्यवाद

आर्यसमाजों के आगामी वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज धमंगढ़ जिला करनाल	१, २, ३ फरवरी
,, औरंगाबाद मित्रोल जिला फरीदाबाद	८ से १० ,,
,, ककोरकलां जिला मेरठ	८ से १० ,,
गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक	१६, १७ ,,
कन्या गुरुकुल खानपुर कलां जिला सोनीपत	२२, २३, २४ ,,
आर्यसमाज जीन्द रोड सफीदों जि० जीन्द	२२, २३, २४ ,,
,, सालवन जिला करनाल	२५ से २७ ,,
आर्य पाठशाला मदीना जि० रोहतक	१, २, ३ मार्च
आर्यसमाज कुंवारी जि० हिसार	१, २, ३ ,,
,, नारायणगढ़ जि० अम्बाला	७ से १० ,,
,, शेखुपुरा जि० करनाल	२९, ३०, ३१ ,,
,, मुवाना जिला जीन्द	२९, ३०, ३१ ,,

आवश्यक सूचना

हरयाणा के जो आर्यसमाजें फरवरी मास में अपने वार्षिक उत्सव अथवा प्रचार कार्यक्रम रखना चाहते हैं, वे सभा से पत्र व्यवहार करके तिथियां निश्चित करने का कष्ट करें।

रणवीरसिंह सभा मन्त्री

'आर्य वीर हूं मैं'

आर्य जगत् का आर्यवीर हूं मैं।
बन्धों पर सच्चाई लिए,
मुख में मधुर स्वर लिए।
घूमता फिरता हूं मैं, घूमता फिरता हूं मैं
आर्यजगत् का आर्यवीर हूं मैं॥
जिन्दगी की लड़ाई लड़नी है हमें।
न तलवार से, न ढाल से
न तोप से, न बन्दूक से।
जिन्दगी की लड़ाई लड़नी है हमें।
प्यार की तलवार से दया की ढाल से
मधुर स्वरों की तोपों से सच्चाई की बन्दूकों से।
आर्यजगत् का आर्यवीर हूं मैं॥
इस सारे जगत् में नजर न आया कोई मेरा दुश्मन।
सब प्रेम के प्यासे हैं, मैं भी हूं।
मैं प्रेम का सागर बहा ले आऊंगा
उन्हें प्रेम की लहरों में।
आर्यजगत् का आर्यवीर हूं मैं॥
जहर भी पी लेंगे हम अगर दे दोगे प्यार से हमें।
नफरत से दो हुई अमृत को भी ठुकरा देंगे हम।
प्यार के भूखे हैं हम, अमृत के प्यासे नहीं।
प्यार का जहर पीकर हम शहीद हो जायेंगे।
नफरत का अमृत पीकर युगों तक तड़पकर जीना कौन चाहेगा।
पक्षी हूं मैं खुले आसमान का पिंजरा मुझे कैसे भाएगा।
भले ही पिंजरे में अमृत मिलता हो।
मगर गुलाम बनकर जीना कौन चाहेगा।
मैं आजादी का हूं रखवाला गुलाम कैसे बन जाऊंगा।
अमृत को ठुकरा दूंगा जहर पीकर शहीद हो जाऊंगा।

अनिल कुमार मंगला 'पिंकी' बम्बई

रोहतक में चौ० छोटूराम जयन्ती

२६ जनवरी को वसन्त पञ्चमी के अवसर पर दीनबन्धु चौधरी छोटूराम की १०४ वीं जयन्ती स्थानीय छोटूराम पार्क रोहतक में मनाई गई।

भारत सरकार के इस्पात राज्यमन्त्री कुंवर नटवरसिंह ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि किसानों को चौ० छोटूराम के सिद्धान्त पर चलते हुए सादगी तथा परिश्रम करके जीवन व्यतीत करना चाहिए चौ० धर्मसिंह राठी पूर्व एम० एल० ए० ने पंजाब के अकालियों को चेतावनी देते हुए कहा कि वे हरयाणा के अधिकारियों पर छापा न मारें। भाखड़ा डेम चौ० छोटूराम ने हरयाणा के लिए ही बनाई थी। हम अपने अधिकारियों की रक्षा करना जानते हैं।

चौधरी शमशेरसिंह सुरजेवाले बिजली मन्त्री हरयाणा ने इस अवसर पर किसानों से शराब आदि की बुराइयां छोड़ने का परामर्श दिया। अपने बिजली विभाग में भ्रष्टाचार दूर करने का आश्वासन देते हुए कहा कि किसानों को अधिक से अधिक बिजली दी जायेगी।

जीवनीय पर्यावरण का निर्माण

पं० भीमसेन वेदशर्मा, वेदसदन महारानी पथ इन्दौर

(गतांक से आगे)

शमस्तु वायुः—निश्चय से, सुखकारी वायु होनी चाहिये (ऋग्वेद ७।३५।६)

भेषज वायु मण्डल निर्माण का दूसरा प्रकार भी वेद बताता है। यजुर्वेद अध्याय ३ के प्रथम मन्त्र में कहा है—समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन्हव्याजुहोतन ।। अर्थात् यज्ञिय वृक्षों को छिलका चढ़ी हुई समिधाओं से अग्नि को, घृत की आहुतियों से प्रचण्ड करके उसमें हवि पदार्थों की आहुतियां प्रदान करो–इस प्रकार अग्नि के माध्यम से हव्य पदार्थों की आहुति की गन्ध एवं धूम्र से वायुमण्डल तैयार होगा। इससे पर्यावरण शुद्ध होगा–जीवनप्रद वायु प्राप्त होगी इसका निर्माण कार्य भी प्रत्येक फैक्ट्री कारखाने में प्रतिदिन प्रातः सायं सूर्योदय एवं सूर्यास्त समय करना अनिवार्य होना चाहिये। प्रति १०० वर्गमीटर क्षेत्रफल स्थान के प्रमाण से एक किलो हव्य पदार्थों की हवि देना अनिवार्य होना चाहिये।

शमु सन्तु यज्ञाः–यज्ञ-हवन कल्याणकारी हों (ऋग्वेद ७।३५।६)

यज्ञ हवन द्वारा सुखकारी वायुमण्डल का निर्माण निम्न प्रकार करें–२ किलो आम, पीपल, गूलर, पलाश, बिल्व या शमी वृक्ष की छीलका चढ़ी हुई समिधाओं में कपूर तथा घृतादि से अच्छी प्रकार अग्नि को प्रचण्ड करके उस प्रचण्ड अग्नि में १० से २० ग्राम हव्य पदार्थों की आहुति एक एक मिनट के अन्तर से देवे। हव्य पदार्थों में २५० ग्राम तपा हुआ शुद्ध गौ घृत प्रति एक किलो हव्य के मान से मिलाना चाहिये। यदि कभी परिस्थितिवश घृत न मिले तो तिल्ली का शुद्ध तेल मिला लें। हव्य पदार्थ मोटे मोटे रूप में कूटें बहुत बारीक न करें। हव्य पदार्थों में निम्न द्रव्य अवश्य ग्रहण करने चाहिये — गूगल पांच सौ ग्राम, राल दो सौ ग्राम, गिलोय दो सौ ग्राम, नागरमोथा दो सौ ग्राम बालछड़ १०० ग्राम, भैंगड़ १०० ग्राम, तिल १०० ग्राम, जौ १०० ग्राम; गुड़ या चीनी दो सौ ग्राम, लोबान दो सौ ग्राम, बेल फल की गिरी १०० ग्राम—इस प्रमाण से हव्य द्रव्य बनावें। इससे प्रदूषण दूर होने के साथ साथ औषधियुक्त, जीवनप्रद पर्यावरण का निर्माण होगा।

वात आ वातु भेषजम्—भेषज वायु चारों ओर बहे– (ऋग्वेद १०।१८६।१)

जिन स्थानों व नगरों में धुवें पर प्रतिबन्ध होने से यज्ञ हवन कार्य सम्भव नहीं है वहां पर संख्या ७ में बताये हव्य द्रव्यों से निर्मित भेषज वायु के भरे गुब्बारों या भेषज वायु के भरे सिलेण्डरों को भरकर रखे और प्रातः सायं उस भेषज वायु की गैस का वायु मण्डल में, कमरों में प्रसारण करें। इससे पर्यावरण में शुद्धि तथा जीवनप्रद वायु के निर्माण में अपेक्षाकृत कुछ सहायता होगी। विशिष्ट रोगों में भी विशिष्ट यज्ञ धूम्र गैस के गुब्बारों का उपयोग रोगी के कमरे में करने से लाभ होगा।

शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु–अग्नि की ज्योति सुखकारी है (ऋग्वेद ७।३५।४)

जिन स्थानों में धुवां आदि प्रतिबन्धित है उन स्थानों में दूसरा प्रयोग अखण्ड दीप ज्योति का करना आवश्यक है। संख्या ७ में बताये हविद्रव्यों से सिद्ध घृत या तेल बनाकर उसका अखण्ड दीप स्थापित करें। इससे भी वायु मण्डल में किसी न किसी प्रमाण में शोधक शक्ति की वृद्धि होगी तथा जीवनीय वायु के संचार में कुछ सहायता मिलेगी।

देशान्तर प्रचार के लिए प्रचारकों की आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने देशान्तर प्रचार पर विशेष ध्यान देने का निश्चय किया है। पिछले सौ वर्षों के दौरान विश्व के अनेक देशों में आर्यसमाज का संदेश पहुंचा। मोरिशस, ब्रिटिश, गायना और त्रिनिडाड जैसे देशों में यह एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभरा। विश्व के जिन देशों में अब तक आर्यसमाज का गठन कायम हो चुका है, उसका श्रेय कुछ व्यक्तियों की स्वतः प्रेरणा और भारत से गये विद्वान् प्रचारकों की कठिन साधना को ही है। आर्यसमाज ने इन देशों में वैदिक धर्म के प्रचार के साथ ही सामाजिक क्रान्ति के आन्दोलन और राजनैतिक चेतना जगाने में भी प्रमुख भूमिका अदा की। पर अब ऐसा अनुभव हो रहा है कि सैद्धान्तिक प्रचार मन्द होता जा रहा है—क्योंकि विश्व स्तर पर संगठित प्रयास की कमी रही। अभी तक विश्व के बहुत सीमित क्षेत्र में ही आर्यसमाज का प्रचार हो पाया है, इसे विश्वव्यापी बनाने की आवश्यकता है, ताकि विश्व मानवता का कल्याण हो सके। अतएव हम ऐसे महानुभावों को जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं जो देशान्तर प्रचार के कार्य में अपना समय देने को तत्पर हों।

इच्छुक महानुभावों से निवेदन है कि वे इस विज्ञप्ति के सन्दर्भ में हमसे पत्र व्यवहार करने का कष्ट करें। अपने पत्रोत्तर में वे अपनी आयु शैक्षणिक योग्यता, भाषाओं का ज्ञान, आर्यसमाज से सम्बन्ध, प्रचार कार्य का अनुभव, प्रकाशनों की सूची एवं अन्य आवश्यक जानकारियों का विवरण देने का कष्ट करें। अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान अनिवार्य है। भारत अथवा देशान्तर के तीन ऐसे प्रमुख आर्यजनों का नाम और पता भी लिखें, जो आपके कार्यों के विषय में भली भांति जानते हों। यह भी सूचित करने का कष्ट करें कि वे कितना समय इस कार्य में दे सकते हैं। सभी महानुभावों को अपने प्रथम पत्र में ही पूर्ण विवरण दे देना योग्य होगा। आशा है कि देशान्तर प्रचार में सहयोग प्रदान करने हेतु आप अपना अमूल्य समय हमें प्रदान करेंगे।

संयोजक—विदेश प्रचार उपसमिति, दिल्ली

मातृवत परदारेषु पर द्रव्यषु लोष्टवत।
आत्मवत सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः ।।

दूसरे की आत्मा को अपने ही जैसा समझें

(चिरंजीलाल 'जीव' थम्बड़वी बराड़ा)

मत जिना कर तू किसी से काम यह खोटा समझ।
दूसरे की नार को बेटी बहिन माता समझ।।
मत तू कर चोरी किसी की चोरी करना पाप है।
दूसरे के द्रव्य को मिट्टी का इक ढेला समझ।।
मत दुखा दिल तू किसी का मत किसी पर जुल्म कर।
दूसरे की आत्मा को अपने ही जैसा समझ।
मत तू बन अन्धा ऐ मूर्ख! खोल आंखें ज्ञान की।
देख सारे विश्व को, परिवार तू अपना समझ।।
मत बुरा कर काम कोई, फल किये का पायेगा।
अपने ऊपर हुक्मरां अपने से बल वाला समझ।।

पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। दक्षिणा योग्यतानुसार दी जायेगी। सम्पर्क करें।

मन्त्री, आर्यसमाज बड़ा बाजार, पानीपत

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर सम्पन्न

४ जनवरी १९८५–राजकीय महाविद्यालय दुजाना (रोहतक) के छात्रो द्वारा प्रो० प्रकाशवीर दलाल तथा प्रो० ओ३म्‌वीरसिंह की देख रेख मे आयोजित दस दिवसीय एन० एस० एस० शिविर ४-१-१९८५ को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के डी० एस० डब्ल्यू श्री राजेन्द्र प्रदीप की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मेजर एम० आर० भाटिया तथा आस पास के गांवों से आए हुए लगभग ८० आदमी उपस्थित थे। शिविर का उद्घाटन कालेज के प्राचार्य श्री कपूरसिंह द्वारा २६-१२-८४ को किया। समय समय पर सर्वश्री यशपाल चावला, सत्यप्रकाश जैन, जगबीरसिंह, डा० सुरेशचन्द्र तथा झज्जर के उपमण्डल शिक्षा अधिकारी श्री रामकिशन शर्मा ने शिविर में भाग लेने वाले छात्रो को अपने विचारों से लाभान्वित किया।

इस अवसर पर एक कबड्डी के मैच का भी आयोजन किया गया जिसमें दुजाना गांव की टीम ने विजय श्री प्राप्त की। उल्लेखनीय है कि इस शिविर की अवधि में ४१ छात्रों ने ७० मीटर लम्बे तथा ४० मीटर चौड़े खेल के मैदान को साफ करके समतल किया। दो बड़े कमरे, एक लॉन का भी सुधार किया। अन्तिम दिन श्रीमती सविता तायल व श्रीमती कृष्णा और कालेज की छात्राओं का सहयोग भी प्रशसनीय रहा, जो वस्तुत: सामाजिक सेवा के लिए बधाई की पात्र

जगबीरसिंह
बी० ए० अन्तिम वर्ष

योग्य आर्य वर चाहिए

१८ वर्षीया, ५ फुट, मैट्रिक, सुन्दर, सुशील, गृह कार्यों में निपुण अरोड़ा (मोंगा गोत्रीय) आर्य परिवार की कन्या के लिये—नितान्त शाकाहारी, मद्यपान धूम्रपानादि व्यसन रहित सुन्दर सुशील खानदानी लड़का चाहिये। पहले पत्र में फोटो सहित पूर्ण विवरण भेजें। शादी अच्छी।

मन्त्री
आर्यसमाज कालांवाली मण्डी जि० सिरसा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन; दयानन्दमठ; रोहतक से प्रकाशित।

सार्वदेशिक इरा पोष्ट नं० 33807/73 रजि० नं० P/RTK ४१ फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १,९६,०८५ ३,



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १२, अङ्क १० ७ फरवरी १९८५ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

समस्या पंजाब की नहीं, हरयाणा की है, अन्याय पंजाब से नहीं हरयाणा से हो रहा है।

प्रो० शेरसिंह पूर्व केन्द्रीय मन्त्री

रोहतक—४ फरवरी ८५ (केदारसिंह आर्य) प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा रक्षा वाहिनी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने अपने प्रेस वक्तव्य में कहा कि समस्या पंजाब की नहीं अपितु हरयाणा की है, जिसके समाधान की तुरन्त आवश्यकता है। पता नहीं किस कारणवश वर्तमान समस्या का नाम पंजाब समस्या प्रसिद्ध हो गया है। पंजाब की कोई समस्या नहीं है। वहां आवश्यकता केवल कठोर पग उठाने की है ताकि पंजाब की जनता अन्य प्रान्तों की भान्ति सुख शांति से रह सके। पंजाब के साथ किसी प्रकार का अन्याय अथवा भेदभाव नहीं हो रहा। अन्याय तथा भेदभाव तो हरयाणा से हो रहा है, जिसका निराकरण यथाशीघ्र होना चाहिए। आपने अपनी बात को स्पष्ट करते हुए कहा कि आरम्भ से ही पंजाब की अपेक्षा हरयाणा को पानी तथा बिजली कम मिल रही है। स्वर्गीय चौधरी छोटूराम ने हरयाणा की प्यासी धरती की प्यास बुझाने के लिए भाखड़ा परियोजना तयार की थी, परन्तु संयुक्त पंजाब रहते इस पर अमल नहीं हो सका। विभाजन होने पर ही भाखड़ा नहर का पानी हरयाणा के खेतों तक आ सका। इसी प्रकार बिजली हरयाणा के गांव गांव में पहुंच सकी। परन्तु हरयाणा का बटवारा होने पर पानी तथा बिजली का अधिक भाग पंजाब को दिया गया, जबकि हरयाणा बराबर का हकदार है।

प्रो० शेरसिंह ने हरयाणा के साथ हो रहे अन्याय का उल्लेख करते हुए कहा कि शाह-कमीशन ने हिन्दी भाषी क्षेत्र होने के कारण चंडीगढ तथा खरड़ तहसील को हरयाणा को देने का निर्णय दिया था, परन्तु पंजाब के चण्डीगढ को प्राप्त करने के लिए सन्त फतेहसिंह ने जल मरने की धमकी दे दी। तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सन्त की जान बचाने के लिये चण्डीगढ पंजाब को तथा अबोहर फाजिल्का के हिन्दी भाषी क्षेत्र हरयाणा को देने का ऐवार्ड दिया। हरयाणा की जनता ने [illegible] भी राष्ट्र हित की दृष्टि से [illegible] इस ऐवार्ड को स्वीकार किया। परन्तु थोड़े दिनों के बाद अकालियों ने चण्डीगढ के साथ अबोहर फाजिल्का को पंजाब में रखने के लिये आन्दोलन छेड़ दिया, जिस कारण प्रधानमन्त्री के ऐवार्ड पर अमल नहीं किया गया। इस प्रकार अकाली दल चण्डीगढ तथा अबोहर फाजिल्का दोनों को प्राप्त करने के लिए हिंसक आन्दोलन द्वारा निरन्तर दबाव डाल रहा है। अबोहर फाजिल्का के हिन्दी भाषी क्षेत्र में बार बार मांग करने पर भी वहां हिन्दी की पढ़ाई की व्यवस्था नहीं की जा रही। इसी कारण वहां के छात्र प्रायः पढ़ने के लिए हरयाणा तथा राजस्थान के स्कूलों में जाते हैं।

सतलुज व्यास लिंक नहर की खुदाई पंजाब की सीमा में करवाने के लिए हरयाणा सरकार ने पंजाब सरकार को धन दे रखा है, परन्तु अभी तक खुदाई का काम अधर में लटका पड़ा है। अकाली नहर की खुदाई रुकवाने के लिये रुकावटें खड़ी कर रहे हैं। पंजाब में राष्ट्रपति शासन होने पर भी नहर नहीं खोदी जा रही है और हरयाणा का दिया हुआ करोड़ों रुपया बिना कार्य किये वेतन तथा भत्ता आदि देकर हजम कर लिया गया। हरयाणा को इस नहर के कारण १ करोड़ रु० की मासिक हानि उठानी पड़ रही है। क्या यह हरयाणा के साथ अन्याय और भेदभाव नहीं है? आश्चर्य तो यह है कि पंजाब के बुद्धिजीवि सिख तथा हिन्दू हरयाणा के साथ हो रहे इस अन्याय तथा भेदभाव के विरुद्ध अपनी जबान तक ही नहीं खोलते अपितु अकालियों की इन अनुचित मांगों का समर्थन कर रहे हैं।

भारत सरकार ने अकालियों की प्रायः धार्मिक मांगें स्वीकार कर ली है। प्रधानमन्त्री स्वर्गीय इन्दिरा गांधी को अकालियों की अनुचित तथा राष्ट्र विरोधी मांगें न मानने पर ही उग्रवादियों की गोली का निशाना बनना पड़ा परन्तु वे अपने श्वास तक उनके सामने झुकी नहीं। अकालियों की राजनैतिक मांगें हरयाणा तथा राष्ट्र के हितों के विरुद्ध हैं। अतः उन्हें मानने से स्पष्ट इन्कार कर देना चाहिए।

अकालियों की राष्ट्र विरोधी गतिविधियों की चर्चा करते हुए प्रो० शेरसिंह ने कहा कि पंजाब में अकालियों ने राष्ट्रध्वज तथा भारतीय संविधान को जलाया था, विदेशों से गुरिल्ला ट्रेनिंग लेकर भारत में तोड़-फोड़ की कार्यवाहियां की। धार्मिक स्थानों में हथियार जमा करके उन्हें राष्ट्र विरोधी प्रचार का केन्द्र बनाया। नहरों आदि को को काट कर हरयाणा तथा बिजली सप्लाई का संकट खड़ा किया। हवाई जाहजों को विदेशों में ले गये वे आज भी अपनी राष्ट्र विरोधी मांगें मनवाने के लिए निरन्तर ३ वर्ष से हिंसक आन्दोलन कर रहे हैं। अतः इस प्रकार के राष्ट्रद्रोह के स्पष्ट प्रमाण होने के कारण भारत सरकार को किसी प्रकार का समझौता करने की बजाय कानून के अनुसार कठोर से कठोर दण्ड देकर वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

पंजाब, हरयाणा, हिमाचल तथा चण्डीगढ के विलय सुझाव का विरोध करते हुए आपने कहा कि हरयाणा के अस्तित्व को समाप्त करने के षड्यन्त्र को हरयाणा की वीर जनता सफल नहीं होने देगी। क्योंकि लम्बे संघर्ष के बाद ही हरयाणा को पुनः भारत के नक्शे मे लाया गया है। पंजाब से अलग होने पर इसका चहूमुखी विकास सम्भव हुआ है अकालियों ने हम पर पंजाबी भाषा को बलात् ठोस दिया था। इसी कारण १९५७ में हिन्दी रक्षा आन्दोलन चलाया गया। अतः पुन. संयुक्त पंजाब बनाये जाने पर समस्यायें सुलझने की बजाय और उलझ जायेंगी। कार्य ठप्प हो जायेगा। सुप्रीम कोर्ट में नदी जल बटवारा का प्रश्न समाप्त हो जायेगा और हरयाणा के साथ पुनः भेदभाव का व्यवहार शुरु हो जायेगा।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आज हम कहां खड़े हैं ?

ले०—प० सत्यदेव जी विद्यालंकार शान्ति भवन
१४५१४ सैण्ट्रल टाऊन जालन्धर

पिछले दिनों आर्यसमाज के समाचार पत्रों में कुछ लेख आए हैं। इनसे प्रतीत होता है कि पुराने माने गए बहुत से सिद्धान्तों तथा ऐतिहासिक तथ्यों पर पुनर्विचार हो रहा है। पहले कुछ सिद्धान्तो की बात ली जाए।

११ नवम्बर १९८४ के 'आर्य मर्यादा' पत्र में श्री योगेन्द्रपाल जी सेठ, उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, का एक लेख 'महर्षि दयानन्द फिल्म निर्माण विरोध क्यों' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है।

माननीय श्री सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार के अनेक लेख आर्य मर्यादा, आर्यजगत् आदि मे प्रकाशित हुए हैं। इनमें गुरुकुल शिक्षा पद्धति के पाठ्य ग्रन्थ भाग तथा आश्रम भाग को अलग अलग कर इनके सापेक्ष महत्त्व को आंकने का प्रयत्न किया है।

मूर्धन्य आर्य सन्यासी श्री सत्यप्रकाश जी के आर्य जगत् मे प्रकाशित लेख मे वेदों को अपौरुषेयता के सम्बन्ध मे नया विचार दिया है तथा ऋषि निर्दिष्ट सृष्टि संवत् तथा मन्वन्तर आदि के विषय मे भी कुछ विचार दिए गये हैं। तथ्यों ऐतिहासिक तथ्यों पर भी पुनर्विचार हो रहा है।

ऋषि दयानन्द की मृत्यु के सम्बन्ध में डा० भवानीलाल भारतीय जी द्वारा यह स्थापना की गई है कि धौड़ मिश्र ने ही वस्तुतः ऋषिवर को दूध में विष दिया। १९२४ में मथुरा शताब्दी सम्मेलन में ऋषि भगत महाराजा नाहरसिंह जी ने इसका प्रत्याख्यान किया था। धौड़ मिश्र महाराजा के पास ऋषिवर के देहान्त के बाद भी अनेक वर्ष रहा और महाराजा ने ही उसे ऋषिवर की सेवा के लिए नियुक्त किया था।

इस तथ्य को लेकर कुछ अन्य विद्वानों ने भी अपने विचार दिए हैं।

पिछले दिनों एक सज्जन ने 'आर्य जगत्' में एक टिप्पणी प्रकाशित करवाई थी, जिसमें यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया था कि आर्य मुसाफिर पंडित लेखराम जी ने गुरु विरजानन्द के भक्त श्री नयनसुख जड़िया के साक्ष्य से ऋषि दयानन्द के प्रति जो कुछ दण्ड आदि देने की घटनाएं वर्णित की हैं, वे ठीक नहीं। एक और विवाद का विषय ऋषि दयानन्द का अपने जीवन में दूसरी बार टंकारा जाने के सम्बन्ध में भी है।

सम्भवतः विद्वानों में यह आलोड़न प्रत्यालोड़न की परम्परा तो चलती ही रहेगी। इन सब विषयों पर एक साथ तो विचार करना सम्भव नहीं। अतः पहले ऋषि दयानन्द पर फिल्म निर्माण की बात पर ही विचार किया जाए।

आर्य भाइयो की सेवा में यह सूचना भी देना ठीक होगा कि फिल्म निर्माण कार्य का कुछ प्रारम्भ भी हो गया है। 'धर्मयुग' साप्ताहिक सचित्र पत्र में दो चित्र भी आ चुके हैं। फिल्म के हीरो ऋषि के साफे-चोले से सुसज्जित खड़ी मुद्रा में तथा एक चित्र में बैठी मुद्रा में।

वस्तुतः इस आन्दोलन का प्रारम्भ तब हुआ, जब दिल्ली में एक सभा हुई। इसमें आर्यसमाज के प्रसिद्ध अनेक संन्यासी तथा विद्वान् उपस्थित थे। आन्दोलन के लिए एक समिति बनाई गई। प्रसिद्ध सन्यासी श्री विद्यानन्द जी सरस्वती उसके संयोजक नियत किये गये। इस समिति की ओर से यह कहा गया कि ऋषि दयानन्द ने कर्णवास में स्पष्ट रूप से महापुरुषों के स्वांग भरने का विरोध किया था। उनके पत्रों से भी ऐसे नाटक आदि के प्रति उनका दृढ़ विरोध प्रकट होता है।

आचार्य प्रवर श्री विश्वश्रवाः व्यास जी ने यह विचार एक लेख में प्रकट किया है कि इस विवाद को सार्वदेशिक सभा के पास भेजा जाना चाहिए था और धर्मार्य सभा इसका निर्णय करती। परोपकारिणी सभा या अन्य किसी समिति का आन्दोलन चलाना ठीक न होगा।

इधर सेठ योगेन्द्रपाल जी आचार्य सत्यप्रिय जी तथा अन्य सज्जनों ने ऋषि पर फिल्म बनाने के औचित्य को सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। मैं समझता हूँ कि श्री सेठ जी तथा अन्य सज्जन भी आर्यसमाज की हित भावना से ही प्रेरित हैं तथा उनकी युक्तियों में बल भी है। फिल्म या चलचित्र प्रचार का एक सशक्त साधन है। इसका प्रभाव बहुत व्यापक है। चलचित्रों के ही प्रभाव से हिन्दी का प्रयोग भारत भर में व्याप्त हो गया है। चित्रों द्वारा प्रशिक्षण बड़ा प्रभावी प्रशिक्षण है। कुछ लोगों का यह विचार है कि सम्भवतः ऋषि दयानन्द को इस सशक्त माध्यम के विषय में अधिक ज्ञान न था। इसलिये उन्होंने इसका विरोध किया। श्री योगेन्द्रपाल सेठ जी ने कन्धे पर बाजा उठाए, ग्राम ग्राम जाकर प्रचार करने वाले भजनोपदेशकों की खिल्ली भी उड़ाई है।

मेरा नम्र निवेदन यह है कि विरोध और विवाद का क्षेत्र संकुचित हो जाए यदि यह समझ लिया जाए कि कोई भी सज्जन फिल्म या चलचित्र के म॰त्व को ॰ौर ॰स बा॰त को कि यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण सशक्त प्रचार का माध्यम है मानने से इन्कार नही करते। यह भी कोई नहीं कहता कि आर्य विचारों पर आधारित फिल्में न बनाई जाएं। ऐसी फिल्में तो बन रही हैं, और बनेंगी भी। आक्षेप तो केवल ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व को फिल्म द्वारा प्रकट करने पर है।

क्रमशः

सीता-अष्टमी

पं० ओमप्रकाश एम० ए०, सभा महोपदेशक

हमारे पर्वों के साथ महापुरुषों के नाम जुड़े हुए हैं। कारण यह है कि उनके उच्च पवित्र जीवन से शिक्षा ग्रहण कर हम भी अपने जीवन को तदनुरूप ढाल सकें। इसी प्रकार फाल्गुन बदी अष्टमी प्रतिवर्ष सीता अष्टमी का पर्व भी इसी दृष्टि से मनाया जाता है कि नारियां सीता के उच्च आदर्शमय जीवन से शिक्षा लेकर अपने जीवन को भी ऊंचा उठा सकें। जैसे पुरुषोत्तम भगवान् का चरित्र पुरुषों में आदर्शभूत माना जाता है, उसी प्रकार सीता का जीवन भी नारियों में प्रथम स्थानीय माना जाता है।

श्री रामचन्द्र जी जब वन को जाने लगे तो सीता ने भी उनका अनुगमन किया। यद्यपि उन के लिए वन गमन का कोई भी आदेश नहीं था। वनवास केवल राम को मिला था न कि सीता अथवा लक्ष्मण को भी। किन्तु लक्ष्मण भाई की सेवार्थ एवं सीता पति की अनुव्रता बन कर वन को गई। आज की दृष्टि से विचार करें तो सामान्य बुद्धि के लोग यही कहेंगे कि सीता की यह हठवादिता और नासमजी ही थी कि वह राम की कठिनाइयों में वृद्धि करने के लिए वन में साथ गई। सीताहरण और फिर एक भयंकर युद्ध का अवसर ही उपस्थित न होता यदि सीता राम के साथ न जाती। यहां पर एक बात बड़ी विचारणीय है कि प्राचीन काल की एक परिपाटी रही है कि विवाह के पश्चात् पत्नी का आश्रय और सर्वस्व पति ही होता है और दुःख अथवा सुख में उस का साथ नहीं छोड़ती। जैसे सीता राम के साथ वन में गई। अयोध्या में अथवा अपने पिता विदेह राजजनक के यहां मिथिलापुरी में नहीं गई। इसी प्रकार द्रोपदी भी पाण्डवों के वनगमन पर युधिष्ठिर के साथ ही छाया की तरह वन की कठिनाइयों की परवाह किये बिना वनवास में रही फिर अज्ञातवास के समय भी विराट् राजा के यहां दासीवत् चाकरी करती रही। यहां भी वनवास अथवा अज्ञातवास पाण्डवों को ही दिया गया था न कि द्रोपदी को भी! वह भी यदि चाहती तो आज के व्यवहार की तरह अपने पिता के यहां आनन्द से उस समय को व्यतीत कर सकती थी। इसी प्रकार नल के साथ दमयन्ती और राजा हरिश्चन्द्र के साथ तारा रानी के भी उदाहरण दिये जा सकते हैं। इन उदाहरणों से यह बात पुष्ट होती है कि विवाह के पश्चात् पितृ गृह से नारी का सम्बन्ध न के बराबर नाममात्र का हो रह जाता है और कि हर हालत में उसे पति का ही अनुसरण समुचित है। पति से पृथक् रहने से गृहस्थ धर्म का वह ध्रुवीकरण नहीं हो पाता जो अभीष्ट है। अनेक प्रकार से लोकाचार की दृष्टि से भी यही समुचित है कि पति सान्निध्य ही नारी के लिए भूषण है। इस बात की अभिव्यक्ति जहां सीता के चरित्र में होती है वहां प्राचीन परम्परायें भी इस बात की पुष्टि करती हैं।

सीता की उत्पत्ति के बारे में भी एक प्रवाद प्रचलित है कि वह सीता अर्थात् हल के सूड़ (रेखा) से पैदा हुई थी। वस्तुतः इस विषय में यही बात बुद्धि संगत प्रतीत होती है कि जैसे राष्ट्र समृद्धि के निमित्त गोमेधादि यज्ञ गोपालन को प्रोत्साहित करने के लिए किये जाते थे, वैसे ही कृषि संवर्धन के लिए सीता यज्ञ का आयोजन राजा जनक भी किया करते थे। उन्हें स्वयं अपने हाथ से हल चलाकर एक आदर्श उपस्थित किया और ऐसे सीता यज्ञ के अवसर पर पुत्री की उत्पत्ति होने से उस का नाम सीता रख दिया गया।

राक्षसराज रावण के बन्दीगृह में अनेक यातनाओं और प्रलोभनों के द्वारा प्रताड़ित होकर भी सीता ने अपने व्रत और धर्म की दृढ़ता से रक्षा की। इसी प्रकार माता सीता देवी की पावनी जीवनी प्रत्येक कुल-ललना के लिए आदर्श भूत है।

आजकल के भोगविलासोन्मुख और अधिकार प्रियता के इस अन्ध कारमय वातावरण में सीता जी का पवित्र उदात्त जीवन प्रकाश स्तम्भ का काम देगा। उनका जीवन दिव्य गुणों से युक्त था। पति परायणता, सर्वभूतदया, कृतज्ञता, गम्भीरता, सुहृदयता, सुन्दरता, सौमनस्यता, सुमधुरता, मृदुतादि दिव्य गुणों में वे अद्वितीय थीं। उनके विमल चरित्र को सामने रखकर कोई भी नारी अपने जीवन को सार्थक एवं दिव्य बना सकती है। आज के भोग प्रधान, उच्छृङ्खलतापूर्ण, उत्तरदायित्वहीन वातावरण में उनके जीवन से शिक्षायें ग्रहण की अत्यन्त आवश्यकता है। आशा है आज का नारी संसार इस पावन पर उनकी शिक्षाओं पर आचरण कर इस पर्व के वास्तविक प्रयोजन को सफलीभूत करेगा।

शिवरात्रि पर ऋषि बोधांक

प्रतिवर्ष की भांति सर्वहितकारी की ओर से शिव रात्रि पर ऋषि बोधांक १४ फरवरी को प्रकाशित किया जायेगा। इसमें ऋषि दयानन्द की जीवनी तथा उनके सिद्धान्तों पर वैदिक विद्वानों के लेख तथा आर्य कवियों की कविताए आदि प्रकाशित की जायेंगी जो कि आर्यसमाज के प्रचार के लिये उपयोगी तथा प्रभावशाली सिद्ध होंगी। जो आर्य समाजें अथवा संस्थायें इसकी अधिक प्रतियां मगवाना चाहते हों वे आज ही अपना आदेश-पत्र भेज देवें, ताकि उन्हें प्रतियां समय पर भेजी जा सकें। विज्ञापन दाता भी अपने व्यवसाय का विज्ञापन छपवा कर लाभ उठावें।

व्यवस्थापक

भोपाल गैस पीड़ित सहायतार्थ दान

आर्यसमाज नई कालोनी गुड़गांव	२५१)
दीवान भीमसेन पूर्व सभा उपप्रधान नई कालोनी गुड़गांव	२०१)
हरयाणा स्टील एलायज लि० सोनीपत	२००)
आर्यसमाज माडल टाऊन ,,	१५१)
,, सोनीपत शहर	१५१)
स्त्री आर्यसमाज नई कालोनी गुड़गांव	१०१)
श्री अर्जुनदेव आर्य मन्त्री वैदिक सत्संग सभा हिसार	१०१)
वैदिक साधक मण्डल गुड़गांव छावनी	१०१)
आर्यसमाज सैक्टर १४ सोनीपत	१०१)
स्त्री आर्यसमाज श्रद्धानन्दपुरम गुड़गांव	५१)
आर्यसमाज श्रद्धानन्द पुरम ,,	५१)
नगर स्त्री आर्यसमाज सोनीपत	५१)
ठाकुरदास व श्रीमती वेदकुमारी माडल टाउन सोनीपत	५०)
मा० कवरभानु बत्रा देवनगर सोनीपत	३१)
माता वेदकुमारी मदान ,,	२५)
प्रिंसिपल हैपी बालिका स्कूल ,,	२१)
नीलमकुमारी आर्या सैक्टर १४ ,,	११)
सेठ जयदेव आर्य मोहना जिला हिसार	११)
श्रीमती सत्यदेवी नई कालोनी गुड़गांव	२१)
श्रीमती चन्द्रकांता गुड़गांव छावनी	११)
वीरेन्द्र कुमार नई कालोनी गुड़गांव	२१)
(उपर लिखित राशि पं० चन्द्रसेन सभा महोपदेशक द्वारा प्राप्त)	
मन्त्री आर्यसमाज प्रहलादपुर जिला कुरुक्षेत्र	४५)
(पं० हरिश्चन्द्र आर्य सभा भजनीक द्वारा प्राप्त)	
सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन रोहतक में गुप्तदान	१००)
वैद्य हरिश्चन्द्र आर्य प्रधान आर्यसमाज नारनौल जि० महेन्द्रगढ़	१२५)

सभा की ओर से सभी दान दाताओं का धन्यवाद

कन्हैयालाल महता
सभा कोषाध्यक्ष

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

बेरी तथा गुलकनी में सर्वखाप पंचायतें

विवाह आदि के अवसरों पर अनावश्यक खर्चों तथा दहेज आदि बन्द करने तथा शराब एवं झगड़े आदि की सामाजिक बुराइयों पर पाबन्दी लगाने के लिए १० फरवरी प्रातः १० बजे राजकीय हायर सैकण्ड्री स्कूल बेरी जि० रोहतक तथा १७ फरवरी को बलिदान स्मारक गुलकनी जि० जीन्द। बेरी की अध्यक्षता स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा गुलकनी पंचायत की अध्यक्षता स्वामी कर्मपाल जी करेंगे।

अत: पंचायतों के प्रतिनिधियों से निवेदन है कि अपनी सुविधा के अनुसार बेरी तथा गुलकनी की पंचायतों में पधार कर अपनी खाप के सुझाव या प्रस्ताव प्रस्तुत करें तथा पंचायत के निर्णयों पर अमल करने का कार्यक्रम बनाने में सहयोग प्रदान करें।

हिसार में वैदिक पारिवारिक सत्संग महोत्सव

वैदिक पारिवारिक सत्संग हिसार के मन्त्री श्री अर्जुनदेव आर्य के परिश्रम से बसन्त पञ्चमी के अवसर पर २६, २७ जनवरी को वीर हकीकतराय का बलिदान महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी अवधेश जी, सभा के महोपदेशक पं० चन्द्रसेन जी वैदिक मिशनरी, आचार्य सत्यप्रिय जी, प्रो० रामविचार आदि के वीर हकीकतराय की जीवनी पर व्याख्यान हुए। श्री जयदेव अतोई वाले के भी मनोहर भजन हुए।

आर्यसमाज धर्मगढ जिला करनाल का वार्षिक उत्सव

१ से ३ फरवरी तक वार्षिक उत्सव पर सभा की भजनमण्डलियां पं० चिरञ्जीलाल जी, पण्डित ईश्वरसिंह तूफान, पण्डित मुन्शीराम जी के भजन तथा उत्तरी भारत के प्रसिद्ध आर्य प्रचारक चौ० नत्थासिंह जी के उपदेश तथा भजन हुये। इस अवसर पर प्रातः यज्ञ पर काफी युवकों को यज्ञोपवीत दिये गये।

आर्यसमाज रामशरण माजरा जि० कुरुक्षेत्र का वार्षिक उत्सव

२५ से २७ जनवरी को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इसमें सभा की ओर से पण्डित हरिश्चन्द; श्री मानसिंह, श्री जगतराम तथा चौ० नत्था सिंह आर्य प्रचारक के वेदोपदेश एवं भजन हुए।

ग्राम प्रह्लादपुर जिला कुरुक्षेत्र में आर्यसमाज की स्थापना

सभा की ओर से अम्बाला वेदप्रचार मण्डल के प्रबन्धक पण्डित हरिश्चन्द जी ने २८, २९ जनवरी को ग्राम प्रह्लादपुर जिला कुरुक्षेत्र में वेदप्रचार किया। उनके प्रचार प्रभाव से वहां आर्यसमाज की स्थापना हो गई। आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव २२ से २४ फरवरी को रखा गया है।

कंवारी जिला हिसार में खेल-कूद प्रतियोगिता

ग्राम कंवारी में २५ से २७ जनवरी को युवा वर्ष के उपलक्ष्य में युवा खेल समिति की ओर से खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया इसमें जिला हिसार तथा जिला भिवानी के २२ ग्रामों के अतिरिक्त जाट कालेज हिसार एवं कृषि विश्वविद्यालय हिसार के प्रतियोगियों ने भाग लिया। युवा समिति ने प्रथम तथा द्वितीय स्थान प्राप्त करने वालों का पुरस्कार ग्राम के सरपंच श्री ज्ञानीराम जी ने वितरित किये।

ग्राम कंवारी, सातरोढ़कलां व बालावास में सामूहिक यज्ञों का आयोजन

ग्राम कंवारी में प्रति सप्ताह चोपाल में सामूहिक यज्ञ किया जा रहा है। इन अवसरों पर यज्ञ पर युवकों को सदाचार की शिक्षा तथा धूम्रपानादि दुर्व्यसनों से दूर रहने पर बल दिया जाता है। इसी ग्राम सातरोढ़ कलां में बहन करुणा शास्त्री ने गत डेढ मास से प्रति सप्ताह अपने घर पर रविवार को यज्ञ तथा सत्संग कर रही है। स्कूल के लड़के तथा लड़कियां उत्साह पूर्वक भाग ले रही हैं। बालावास में भी श्री हेतराम आर्य, निहालसिंह आर्य, श्री भागचन्द आर्य के घरों में यज्ञ हुए। श्री संजयकुमार जी तथा नारायणदेव जी ने इस कार्य में बहुत सहयोग दिया। महिलाओं तथा बच्चों पर सत्संग का अच्छा प्रभाव रहा। सभा के उपदेशक पं० अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी इस प्रकार के यज्ञों तथा सत्संगों का कार्यक्रम अन्य ग्रामों में भी बना रहे हैं।

आर्यसमाज सांजरवास जि० भिवानी में हकीकतराय दिवस

आर्य साहित्य तथा योगशिक्षा के प्रचारक श्री आर्यमुनि जी द्वारा सांजरवास जिला हिसार में बसन्त पञ्चमी पर वीर हकीकतराय तथा दीनबन्धु छोटूराम जी की जीवनी पर व्याख्यान दिया तथा यौगिक क्रियाओं का प्रदर्शन किया। स्कूल के बच्चों तथा ग्रामीण जनता पर इसका अच्छा प्रभाव रहा।

रादौर जिला कुरुक्षेत्र में आर्य वीर तथा आर्य कुमार सभा की स्थापना

स्वामी सेवकानन्द जी के पुरुषार्थ से रादौर में आर्य वीर दल तथा आर्य कुमार सभा की स्थापना पुनः हो गई है। इनका गठन निम्न प्रकार किया गया—

आर्य वीर दल के प्रधान श्री कृष्णचन्द आर्य, मन्त्री–श्री दीपक कुमार आर्य, आर्य कुमार सभा के प्रधान श्री गुलशनराय बटला आर्य, उपप्रधान–श्री बसन्तकुमार आर्य, मन्त्री–श्री संजयकुमार आर्य, उपमंत्री श्री पवनकुमार आर्य, कोषाध्यक्ष—सतीश कुमार आर्य, खेल मन्त्री—राजेशकुमार आर्य, अरविन्द कुमार आर्य।

आर्यसमाज शान्तिनगर सोनीपत में शहीदी दिवस

आर्यसमाज शान्तिनगर सोनीपत में गणतन्त्र तथा शहीदी दिवस पर श्री हरिश्चन्द स्नेही, श्री अर्जुनदेव कालड़ा तथा श्रीमती प्रकाशवती ने शहीदों के कार्यों पर प्रकाश डाला तथा बसन्त पंचमी पर्व धूमधाम से मनाया गया।

आर्यसमाज मन्दिर बालावास का निर्माण

आर्यजगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य चरण स्थल ग्राम बालावास जिला हिसार में आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण कार्य आरम्भ हो चुका है। सभी सम्पन्न आर्यसमाजों तथा दानवीर आर्यों से निवेदन है कि इस कार्य को पूरा करने के लिए अपने सामर्थ्य के अनुसार आर्थिक सहायता निम्नलिखित पते पर अवश्य भेजकर पुण्य के भागी बनें।

अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
प्रधान आर्यसमाज मन्दिर निर्माण समिति
ग्राम बालावास पो० कंवारी जिला हिसार

पलवल में शहीद सम्मेलन सम्पन्न

आर्य वीर दल पलवल के तत्वावधान में अमर शहीद लाला लाजपतराय जयन्ती तथा धर्मवीर हकीकतराय बलिदान दिवस के अवसर पर यहां के दयानन्द चिकित्सालय में एक शहीद सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता आर्यसमाज पलवल शहर के प्रधान लाला भगवानदास ने की। इस अवसर पर श्री राजू गुप्त (फरीदाबाद) मुख्य अतिथि थे।

मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर दल पलवल शहर

भजनलाल 'महापंजाब के नारे पर चुनाव लड़कर देखें

महेन्द्र शर्मा गांव माजरा (दूबलधन) जिला रोहतक

हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल नट कला में माहिर हैं। उन्होंने जब भी मौका देखा अपनी नट कला का प्रदर्शन किया और कलाबाजी खाकर दूसरी ओर जा खड़े हुए। अपनी कला मे इतने माहिर हैं कि अपने साथ साथ सारे मन्त्रिमण्डल और विधायकों को भी कलाबाजी खिलवा देते हैं। जनता पार्टी शासन के बाद जब श्रीमती इन्दिरा गांधी की सरकार बनी तो कलाबाजी का कमाल दिखाया और सारे विधायकों व मन्त्रियों समेत श्रीमती गांधी के झण्डे तले जा खड़े हुए, अब जब प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने अपने मन्त्रिमंडल में इनके दो प्रमुख विरोधी चौ० बंसीलाल और राव बीरेन्द्रसिंह को मन्त्री बनाया तो महापंजाब का शोशा छोड़कर अपने विरोधियों का ध्यान अपने ऊपर से हटा दिया।

हरयाणा में पंजाब से अलग होने के बाद सिर्फ दस सालों में गांव गांव में बिजली और सड़क बन गई जबकि वर्तमान पंजाब में अभी भी कई गांव बिजली और सड़कों से वंचित हैं। जहां ऊंचे ऊंचे टीलों पर सिंचाई के सपने भी नहीं देखे जा सकते थे अब वहां फव्वारों से सिंचाई होती है इसका सारा श्रेय चौ० बन्सीलाल को जाता है। चौ० भजनलाल के राज्य में तो उन सड़कों के टांके भी नहीं लगे और ना ही ढोलों तालों की खिंचाई हो सकी। जब पंजाब इकट्ठा था तो तरक्की वर्तमान पंजाब की ही होनी थी और उसके बाद हरयाणा एकदम उभरा और कुछ सालों में ही तरक्की की सारी सीमाएं फलांग गया। क्या करनाल, पानीपत, सोनीपत या फरीदाबाद पुराने पंजाब में औद्योगिक नगर थे? क्या मारुति कार बनाने की फैक्ट्री गुड़गांव में लग सकती थी? क्या पंजाब इकट्ठा होता तो इतनी तरक्की हरयाणा की हो सकती थी?

महापंजाब बनाने से हरयाणा की तरक्की तो रुकेगी ही साथ ही साथ चौ० भजनलाल भी तीन में रहेंगे ना तेरह में। क्या हरयाणा चौ० भजनलाल की निजी जायदाद है जब जी चाहा इधर से उधर कर देवे? क्या हरयाणा के सरकारी कर्मचारी अमृतसर या गुरदासपुर जिलों में जा सकते हैं? क्या चौ० भजनलाल स्वयं बिना सुरक्षा कर्मचारियों के अमृतसर या गुरदासपुर जाकर वापिस आ सकते हैं। सरकारी कर्मचारी जो हरयाणा के हैं नौकरी करने की बजाय नौकरी छोड़ना बेहतर समझेंगे पर अमृतसर व गुरदासपुर नहीं जायेंगे। जब सिंह साहिबान की ही सुरक्षा की कोई गारन्टी नहीं तो हमारा क्या होगा? जिन उग्रवादियों ने अपने प्रमुखों को नहीं छोड़ा उनकी क्या गारन्टी है कि महापंजाब बनने के बाद निरीह हिन्दू सिखों की हत्या करनी छोड़ देंगे। यह तो महापंजाब बनाकर हरयाणा और हिमाचल प्रदेश के निवासियों को भी उनका निशाना बनाना चाहते हैं। अब तो अकाली नेताओं को सुरक्षा की भी कोई गारन्टी नहीं कि उन्हें छोड़ने के बाद उन्हें कोई जिन्दा छोड़ देगा? पहले तो चौधरी साहब फाजिल्का और अबोहर के बिना चण्डीगढ़ नहीं छोड़ेंगे के नारे लगाते थे अब उन्हें अखण्ड भारत के सपने कैसे आने लगे। हरयाणा का हर नागरिक अब सुरक्षित है और समृद्ध है। यदि चौधरी साहब महापंजाब चाहते हैं तो इस्तीफा देकर महापंजाब के नारे पर चुनाव लड़कर देख ले। यदि अपनी जमानत ही बचा लें तो समझूं? और पता चल जाए कि चौ० साहब की आवाज हरयाणा या हिमाचल की आवाज नहीं है। सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली। हजारों नागरिकों के मारे जाने के बाद चौधरी साहब महापंजाब चाहते हैं। उग्रवादियों को दबाने की सलाह देने की बजाय नवनिर्माणों में लगे हैं। हजारों मांगें सूनी करने के बाद अब त्याग की मूर्ति बन रहे हैं। अबोहर-फाजिल्का और चण्डीगढ़ भी छोड़ रहे हैं। वाह ऐसा त्यागी देखने में नहीं आया। वाह रे चौ० भजनलाल वाह रे कलाबाज, हम डूबे सनम तुम्हें भी ले डूबेंगे। खुद तो डूबे रहे हैं। करोड़ों हरयाणावासियों को भी डुबा रहे हैं।

(पंजाब केसरी जालन्धर ३ फरवरी ८५)

विलय प्रस्ताव की निन्दा

सोनीपत, २९ जनवरी (निस) हरयाणा के आर्य नेता पं० चन्द्रसेन आर्य ने मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल के विलय प्रस्ताव की कड़े शब्दों में निन्दा की है तथा कहा है कि मुख्यमन्त्री को विलय प्रस्ताव पेश करने से पूर्व मुख्यमन्त्री पद से त्यागपत्र देना चाहिए था और विधानसभा चुनाव करा करके राज्य के लोगों का मत लेना चाहिए था। उन्होंने कहा कि श्री भजनलाल ने महापंजाब का नारा लगाकर सस्ती वाह-वाह ले ली है। यदि केन्द्र सरकार पंजाब, हरयाणा, हिमाचल प्रदेश विधान सभा के चुनाव एक साथ करा दे तो इन राज्यों के लोग महापंजाब के बारे में अपना फतवा दे सकेंगे। दैनिक ट्रिब्यून ३० जनवरी

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर

संचालक—स्वामी विजयानन्द सरस्वती, प्रधान—चौ० प्रतापसिंह, मन्त्री—शिवराम शास्त्री, कोषाध्यक्ष—चौ० हरमोहनसिंह, लेखानिरीक्षक—श्री ओमप्रकाश और शेष १६ अन्तरंग सदस्य चुने गये।

आर्यसमाज माडल टाउन करनाल

प्रधान—कृष्णलाल बत्रा, मन्त्री—अमरसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—विरेन्द्रसिंह, उपप्रधान—प्राणनाथ, प्रचारमन्त्री—वेदकुमार, पुस्तकाध्यक्ष—बिलबागसिंह रंगा

आर्य कुमार सभा रादौर जिला कुरुक्षेत्र

प्रधान—गुलशनराय, उपप्रधान—बसन्तकुमार, मन्त्री—संजयकुमार, उपमन्त्री—पवनकुमार, कोषाध्यक्ष—राजेशकुमार, पुस्तकाध्यक्ष—सुरेन्द्र कुमार, खेलमन्त्री—अरविन्दकुमार, संचालक—स्वामी सेवकानन्द सरस्वती

आर्यसमाज सहीजपुर बोघा—३८२३४५ (अहमदाबाद)

प्रधान—श्री गोविन्दराम सदोरोमल, उपप्रधान—गुरुदासमल छांगाराम, मन्त्री—हीरालाल गुरुदासमल, उपमन्त्री—नेणाराम मालहूमल, कोषाध्यक्ष—दौलतराम, निरीक्षक—लक्ष्मीचन्द मोहनलाल।

आर्यसमाज जीन्द रोड़ सफीदों

संरक्षक—कुलवन्तराय आर्य, प्रधान—चौ० जयपालसिंह आर्य, उपप्रधान—सुरेशकुमार एडवोकेट, श्रीकिशनदास आर्य, मन्त्री—सत्यनारायण आर्य, उपमन्त्री—देसराज आर्य, कोषाध्यक्ष—जयभगवान आर्य।

आर्यसमाज झज्जर रोड़ रोहतक

प्रधान—स्वामी जीवनानन्द सरस्वती, उपप्रधान—श्रीबृजमुनि, श्री महाशय हरद्वारीलाल, मन्त्री—बलराज चुग, उपमन्त्री—डा० रवीन्द्र रावल, कोषाध्यक्ष—श्री चरणसिंह, पुस्तकाध्यक्ष—श्री इन्द्रजीत

आर्यसमाज मन्दिर रामनगर, करनाल

प्रधान—सर्व श्री प्रभुदयाल, उपप्रधान—हकीक चौधुराम, मन्त्री—रामस्वरूप भाटिया, उपमन्त्री—सतपाल मचदेवा, कोषाध्यक्ष—श्री कैलाशचन्द, लेखानिरीक्षक—डा० दीनबन्धु, प्रचारमन्त्री—श्री रघुनाथ पुस्तकाध्यक्ष—श्री चेतनदास चौहान।

विशाल हरयाणा का पुनः निर्माण हो

पृथ्वीसिंह राव सी-१, रेवेन्यू कालोनी, लघु सचिवालय, नारनौल भाषाई आधार पर जब इन राज्यों को अलग कर दिया गया तो इनको मिला कर एक महाप्रदेश बनाना मूर्खतापूर्ण कार्य होगा। पंजाब की भाषा पंजाबी हरयाणा की भाषा हिन्दी हिमाचल की भाषा हिन्दी व पहाड़ी। इसलिए अगर एक महाप्रदेश बनता है तब सबसे पहली समस्या भाषा की होगी। जहां तक सीमाओं एवं नदियों के जल बिजली के बटवारे का प्रश्न है। इसके इकट्ठे बनने से कोई समाधान पैदा नहीं हो सकता। नदियों के जल बटवारे का उपयोग आज तक राजस्थान नहीं कर सका। नदियों के जल व बिजली को केन्द्र सरकार अपने हाथ में ले ताकि उनका सही बटवारा किया जा सके। पूरे संसार में जल स्रोतों से पैदा बिजली की ४० प्रतिशत क्षमता भारत में है परन्तु हम इनको मात्र १० प्रतिशत ही बिजली पैदा कर सकते हैं।

१८५७ में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने पर हरयाणा के लोगों को सजा के तौर पर राजस्थान, पेप्सु पंजाब में बांट दिया गया था। महेन्द्रगढ जिले को तीन रियासतों-नाभा, पटियाला एवं जीन्द में बांटा गया था। केन्द्र सरकार को पश्चिम उत्तरप्रदेश, दिल्ली और राजस्थान के अलवर, भरतपुर, झुंझनु, श्रीगंगानगर, सीकर, चुरू आदि जिलों को मिलाकर विशाल हरयाणा बना देना चाहिए और दिल्ली या गुड़गांव को विशाल हरयाणा की राजधानी बना देना चाहिए। जहां तक चण्डीगढ़, फाजिल्का-अबोहर हरयाणा को दे दिया जाना चाहिए। श्रीमती गांधी के ऐवार्ड को तुरन्त लागू कर देना चाहिए। प्रधानमन्त्री राजीव गांधी को भ्रष्टाचार मिटाने के अपने वायदे का पालन करते हुए हरयाणा में बेदाग चरित्र सामने लाना चाहिए। हरयाणा के मतदाताओं ने भ्रष्टाचार को मिटाने के नाम पर १० लोक सभा सीटें जिताकर अहसास करवा दिया है। यहां स्वच्छ प्रशासन देना चाहिए। श्री भजनलाल बेतुकी बातें व भ्रम फैलाकर पद पर बने रहने की ताक में हैं।

नयी अखाड़ेबाजी

मोहिन्दरसिंह रावत, १६० बी/डी, रेलवे कालोनी अम्बाला छावनी

विलय का प्रस्ताव एक राजनीतिक अखाड़ेबाजी और हास्यास्पद पैंतरेबाजी के अलावा और कुछ नहीं। प्रस्तावित महाप्रदेश से उलझनों की गुत्थी और उलझेगी। यह एक ऐसा कड़वा फल है जिसे पहले तो खाना ही मुश्किल है और अगर खा लिया तो पचाना और भी मुश्किल।

(दैनिक ट्रिब्यून ३ फरवरी)



30वें संस्करण से उपरोक्त मूल्य देय होगा।

(पृष्ठ १ का शेष)

हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का आदि के लिए छात्रों को हिन्दी की पढ़ाई की सुविधा सदा के लिए समाप्त हो जायेगी। पूर्व की भान्ति हरयाणावासियों को सरकारी नौकरियों में अवसर नहीं मिलेगा हरयाणा की वैदिक संस्कृति नष्ट हो जायेगी। अतः हरयाणा के लोक सभा तथा विधानसभा के सदस्यों से हमारा अनुरोध है कि वे हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए अपनी आवाज प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी तक पहुंचाएं। चुप्पी साधने से काम नहीं चलेगा। हिमाचल प्रदेश के विधायकों तथा सांसदों की भांति सर्वसम्मति से संयुक्त पंजाब के विलय के विरोध का प्रस्ताव पास करना चाहिए। हरयाणा के हितों में ही राष्ट्र का हित है। हरयाणा कमजोर होने पर राष्ट्र भी कमजोर होगा। पंजाब के अकाली धमकियां देकर अपनी अनुचित तथा राष्ट्र विरोधी मांगें मनवाना चाहते हैं, वे आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के अनुसार ही वार्ता करने पर जोर दे रहे हैं।

प्रेस वक्तव्य के अन्त में प्रो० शेरसिंह ने भारत सरकार को सुझाव दिया कि विलय के प्रस्ताव पर ध्यान न देकर हरयाणा के साथ हो रहे अन्याय तथा भेदभाव को समाप्त किया जाये। समस्या पंजाब की नहीं हरयाणा की है जिसका समाधान होना चाहिए। श्रीमती इन्दिरा गांधी के १९७१ के ऐवार्ड के अनुसार चण्डीगढ़ पंजाब को देने से हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का को हरयाणा में सम्मिलित किया जाए। अकाली समझौता करके मुकर जाते हैं तथा नई-नई मांगे सदा करते रहते हैं। बार बार निर्णय बदलने से हानि होगी। पंजाब में शांति स्थापित करने के लिए सभी उग्रवादियों को सख्ती से तुरन्त कुचल देना चाहिए। वहां केवल उग्रवाद की ही समस्या है।

पंजाब के हिन्दुओं को भी आत्मरक्षा के लिये हथियारों के लाईसेन्स दिये जायें।

शोक समाचार

१-आर्यसमाज मुआना जिला जीन्द के संस्थापक ठा० जयमलसिंह आर्य का १८ जनवरी को ८५ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। वे कुछ समय से बीमार थे। आपकी अन्त्येष्टि वैदिक रीति के अनुसार सम्पन्न हुई। ग्रामवासियों ने २० किलो घी का प्रयोग करके उन्हें भावभीनी विदाई दी। आप आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनीक भी रहे हैं। आर्यसमाज के कार्य में सदा सहयोग करते थे।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके वियोग से दुःखी परिवार को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

सभा मन्त्री

२-श्री वेदप्रकाश सुपुत्र चौ० हरनामसिंह भूतपूर्व एम० एल० ए० निवासी पाण्डवान का १८ जनवरी को स्वर्गवास हो गया। वे आर्य समाज के कार्यों में काफी योगदान करते थे। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

आनन्दमुनी वानप्रस्थी

३-आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल के सदस्य आदरणीय महात्मा आनन्ददेव वानप्रस्थी का ८२ वर्ष की आयु में १४-१-८५ को निधन हो गया। वह अपने पीछे एक हरा भरा परिवार छोड़ गए हैं। उनकी शोक सभा २१-१-८५ को २ बजे रघुनाथ मन्दिर में हुई जिसमें नगर के सभी संस्थाओं के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। सभी ने उनके सरल और दानी स्वभाव की भूरी-२ प्रशंसा की। इस अवसर पर उनके परिवार के सदस्यों ने जहां पर भिन्न भिन्न संस्थाओं को दान दिया वहां पर उन्होंने भोपाल गैस पीड़ित फण्ड में भी ५१ रु० का दान दिया। पं० नन्दकिशोर द्वारा परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई।

बलदेव कृष्ण आर्य

भोपाल में गैस दुर्घटना से पीड़ितों को सहायतार्थ अपील

मध्यप्रदेश के भोपाल नगर में 'यूनियन कारबाईड फैक्टरी' की जहरीली गैस से कितने ही हजार व्यक्तियों का निधन हो गया है और लगभग पचास हजार व्यक्ति गैस के दुष्परिणामों से अभी प्रभावित हैं। इस भयंकर दुर्घटना से अपना देश ही नहीं सारा विश्व स्तब्ध रह गया है। कितनी ही महिलाओं का सुहाग उठ गया तथा कितने ही बच्चे अनाथ हो गये हैं, जिन्हें पालन-पोषण और मातृत्व प्रेम देने की आवश्यकता है।

विश्व के इतिहास की इस पहली भयंकर दुर्घटना में जहरीली गैस से बचने के लिए लाखों लोगों की भगदड़, चिकित्सालयों व श्मशानों में लगे मुर्दों के अम्बार एवं सैंकड़ों शवों का सामूहिक अन्तिम संस्कार होना यही बताता है कि भोपाल नगर में उन दिनों मृत्यु का साम्राज्य छाया हुआ था।

आर्यसमाज का इतिहास रहा है कि उसने अकाल पीड़ित, बाढ़ग्रस्त व तूफान प्रकृति अन्य प्रकोपों से दुःखी मानव की सदैव सेवा की है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने यह संकल्प लिया है कि वह यथाशक्ति भोपाल के पीड़ित भाई बहिनों को सान्त्वनास्वरूप अर्थ व वस्त्र आदि भेजकर उनकी सेवा करे तथा यथाशक्ति अनाथ बच्चों को गोद लेकर उनका हरयाणा के गुरुकुलों तथा अनाथालयों में लालन-पालन व शिक्षा दीक्षा दिलावें।

इस आवश्यक सहयोग के लिए सभी बन्धुओं, समाजसेवी संस्थाओं आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं से पुरजोर अनुरोध है कि वह अधिक से अधिक धनराशि एवं वस्त्रादि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को नकद, मनीआर्डर, ड्राफ्ट, चैक आदि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को दयानन्द मठ, सिद्धान्ती भवन, गोहाना मार्ग रोहतक के पते पर भेजें।

इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए दानी महानुभावों व सभी नागरिकों से पुनः प्रार्थना है कि वे इस कार्य की गम्भीरता को देखते हुए शीघ्रातिशीघ्र अधिक से अधिक धनराशि एकत्र करने में अपना पूरा योगदान करें।

प्रो० शेरसिंह	कन्हैयालाल महत्ता	रणजीतसिंह
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।
ओमानन्द सरस्वती प्रधान, परोपकारिणी सभा

भजनलाल के महापंजाब प्रस्ताव का विरोध करेंगे–देवीलाल

चण्डीगढ़, २९ जनवरी (सागर) दलित मजदूर किसान पार्टी के उपाध्यक्ष तथा हरयाणा के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री देवीलाल ने पंजाब, हरयाणा व हिमाचल प्रदेश के विलय के सम्बन्ध में हरयाणा के मुख्य मन्त्री श्री भजनलाल द्वारा दिए गए सुझाव पर तीव्र प्रतिक्रिया प्रकट करते हुए कहा है कि इसका डटकर विरोध किया जाएगा।

श्री देवीलाल आज यहां संवाददाताओं से बातचीत कर रहे थे। हरयाणा के गठन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले श्री देवीलाल ने श्री भजनलाल के प्रस्ताव की कड़े शब्दों में निन्दा की है। उन्होंने इस सम्बन्ध में एक कड़ी शब्दावली वाला वक्तव्य भी जारी किया है।

श्री देवीलाल के अनुसार श्री भजनलाल के प्रस्ताव का मुख्य उद्देश्य हरयाणा विधानसभा के सम्भावित मध्यावधि चुनावों को टलवाना है। उन्होंने यह नया प्रस्ताव उछाल कर इस मामले को पंजाब समस्या में उलझा दिया है।

श्री भजनलाल पर राजनीतिक प्रहार करते हुए श्री देवीलाल ने कहा कि श्री भजनलाल जनता के आदमी नहीं हैं बल्कि वह दलबदल के पुराने खिलाड़ी हैं। लोकसभा में दलबदल विरोधी विधेयक व प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी की तथाकथित स्वच्छ छवि के कारण श्री भजनलाल को अपनी स्थिति डांवाडोल लग रही है।

उन्होंने कहा कि श्री भजनलाल नया स्टेंड लेकर एक पत्थर से कई चिड़ियों का शिकार करना चाहते हैं ताकि केन्द्र में नए सत्ताधीशों से अप्रत्यक्ष रूप से अपना जोड़ तोड़ बिठा सके। वे पंजाब व हरयाणा दोनों के पंजाबी भाषी हिन्दुओं की सस्ती सहानुभूति प्राप्त करना चाहते हैं। श्री देवीलाल के अनुसार वह श्री राजीव गांधी को भी उलझन में डालना चाहते हैं।

श्री देवीलाल ने कहा कि अब भाषायी प्रांतों को पुनः विलय करके बहुभाषी राज्य बनाने की बात समय की धारा को पीछे मोड़ना है।

उन्होंने कहा कि हरयाणा के लोग श्री भजनलाल के महापंजाब फार्मूले पर केन्द्रीय खाद्य मन्त्री राव वीरेन्द्रसिंह की खामोशी पर हैरान हैं। उल्लेखनीय है कि राव वीरेन्द्रसिंह विशाल हरयाणा के ध्वजवाहक रहे हैं।

उन्होंने आशा प्रकट की कि श्री राजीव गांधी श्री भजनलाल के इस कल्पित खेल को समझेंगे और १९७० के इन्दिरा ऐवार्ड को पूर्णतः लागू करने का साहस दिखाएंगे। जब श्री देवीलाल से पूछा गया कि 'दमकिपा के अध्यक्ष श्री चरणसिंह ने श्री भजनलाल के फार्मूले के समर्थन में श्री राजीव गांधी को पत्र लिखा है तो श्री देवीलाल ने उत्तर दिया उन्हें इस बारे में जानकारी नहीं है। श्री देवीलाल इस बात से सहमत नहीं थे कि श्री भजनलाल के फार्मूले को मान लेने से नदी जल विवाद हल हो जाएगा। उन्होंने कहा कि उलटे यह विवाद और उलझेगा।

श्री देवीलाल ने कहा कि पंजाब के हिन्दू हों या सिख वे हरयाणा के हितों के विरुद्ध हैं। श्री देवीलाल ने कहा कि हरयाणा के पंजाबी भाषी १५० गावों को पंजाब में स्थानान्तरित कर दिया और इसके साथ ही पंजाब के १७५ हिन्दी भाषी गांवों को हरयाणा में शामिल किया जाए। उन्होंने श्री भजनलाल के विलय प्रस्ताव को एक मूर्खतापूर्ण प्रस्ताव बताया है।

हरयाणा विधानसभा के तीन स्थानों के लिए ५ मार्च को होने वाले उपचुनावों के सम्बन्ध में पूछे गए प्रश्न के उत्तर में श्री देवीलाल ने कहा कि दमकिपा टोहाना, उचाना और नूह में अपने उम्मीदवार खड़े करेगी। उन्होंने विश्वास प्रकट किया कि तीनों ही क्षेत्रों में दमकिपा उम्मीदवार जीतेंगे।

'परवाना' के अनुसार श्री देवीलाल ने स्पष्ट रूप से कहा है कि इन उपचुनावों में उनकी पार्टी भाजपा या जनता पार्टी से किसी प्रकार का गठजोड़ नहीं करेगी। इन दोनों पार्टियों का हरयाणा में कोई प्रभाव नहीं है। कांग्रेस (ज) के साथ पहले से ही गठजोड़ चला आ रहा है।

श्री देवीलाल ने देवीलाल ने दलबदल विरोधी विधेयक का जोरदार समर्थन किया तथा कहा कि इसे तो १९८२ से लागू किया जाना चाहिए।

दैनिक पंजाब केसरी ३०-१-८५

आर्य विद्वानों की सेवा में

समय समय पर आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं आर्यसमाजों की ओर से ऐसे पत्र आते रहते हैं जिनमें सुयोग्य पुरोहित तथा धर्म शिक्षा अध्यापक की मांग की जाती है। इसके साथ ही अनेक ऐसे सेवा निवृत आर्य विद्वानों और अध्यापकों के भी इस आशय के पत्र आते रहते हैं कि सेवा निवृति के उपरान्त वे आर्यसमाज की सेवा का कोई कार्य करना चाहते हैं जिससे उनके अनुभवों का लाभ समाज को मिल सके। हम दोनों प्रकार के आर्य बन्धुओं से निवेदन करते हैं कि वे अपनी-२ आवश्यकता के सम्बन्ध में निम्न पते पर पत्र व्यवहार करने की कृपा करें।

प्रो॰ रतनसिंह, परामर्शदाता नैतिक शिक्षा,
डी॰ ए॰ वी॰ कालेज मैनेजिंग कमेटी,
चित्र गुप्ता मार्ग, नई दिल्ली—११००५५

स्वामी मुनीश्वरानन्द का स्मृति दिवस

प्रतिवर्ष की भान्ति स्वामी मुनीश्वरानन्द जी (प्रि॰ ज्ञानचन्द जी एम॰ ए॰) का स्मृति दिवस दिनांक ११-२-८५ को प्रातः ८ बजे से १२ बजे तक दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में बड़े समारोह तथा धूमधाम के साथ सम्पन्न होगा। इस अवसर पर आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

निवेदक
सत्यप्रिय शास्त्री एम॰ ए॰ साहित्याचार्य
प्राचार्य

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

हरयाणा के आर्यसमाजों तथा शिक्षण संस्थाओं से निवेदन है कि अपने साप्ताहिक सत्सगों तथा उत्सवों आदि के अवसरों पर प्रस्ताव करके भारत सरकार को भेजें कि राष्ट्रद्रोहियों से समझौता न करके उन्हें कठोर दण्ड दिया जाये। हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का को हरयाणा में सम्मिलित किया जायें।

सभा मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं॰ जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १,९६,०८५ ३,

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

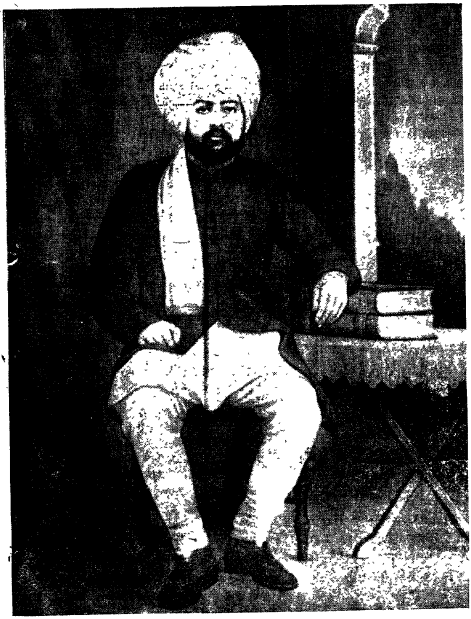
सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १२, अङ्क १४ ७ मार्च १९८५ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

६ मार्च का स्मरण



६ मार्च प्रतिवर्ष लौटता और लेखराम के महाबलिदान की वीर गाथा सुनाता है कि वह आर्य समाज के अकेले उपदेशक थे जो मैदान में उतरे। धार्मिक क्षेत्र में वह अकेला सब मतों के साथ शास्त्रार्थ समर में उतरकर सबको परास्त कर रहा था। निडर था निर्भय था। केवल भगवान् का उसे सहारा था। वह सच्चा ईश्वर भक्त था। जो किसी अपने से पराये नहीं डरता था। सब को सच्ची और खरी सुनाता था। वह परमात्मा से प्यार करता और परमात्मा उससे प्यार करता था। भक्त और भगवान् का सचमुच नाद एक ही था। एक स्वर था एक ताल और एक लय थी। जो हृदयतन्त्री में गुंजार कर रही थी।

वह प्रातः तीन बजे भगवान् की भक्ति में खो जाता था और भगवान् उससे खूब प्यार करता था।

भगवान् तो निराकार, सर्वव्यापक है। न उसका शरीर, न उसकी बोल सकने वाली जिह्वा। किन्तु संसार भरकी जिह्वा शक्ति की दात्री वह भगवती माता स्वयंभू है, जो कभी नहीं थकती। उसी का नाद गुंजायमान अनादि काल से अनन्त काल तक चलता आ रहा है। न उसमें थकावट है न विश्रान्ति। किन्तु सुनता उसे कोई विरला ही है।

वीर लेखराम को गर्व है कि उसने यह नाद सुना और ऐसी मस्ती आई कि उस पर कुर्बान हो गया। जो गति वीरों को युद्ध के मैदान में होती है। वह वीर गति शास्त्रार्थ समर में लेखराम को मिली। बड़ा भाग्यशाली था वह। अकेले ने सर्व प्रथम अमृत का प्याला पी लिया और अमर पदवी से विभूषित होगया।

चारपाई पर एड़ियां रगड़ते मरना वीरों का काम नहीं। रोग-शोक का वहां नाम नहीं। भय से त्रस्त भीरू लोगों का वहां धाम नहीं। प्रभु निर्भय है उसका भक्त कभी भीरू हो ही नहीं सकता।

महायोगी दयानन्द विष पीकर बोल उठे—ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो। तूने अच्छी लीला की। दयानन्द का सच्चा शिष्य लेखराम छुरी से पेट फड़वा कर बोल उठा कि—आर्यसमाज से तहरीर (लेख) और तकरीर (प्रचार) का कार्य बन्द न होने पाये।

शेष पृष्ठ ५ पर)

स्वामी ओमानन्द जी के विरुद्ध झूठे प्रचार का भण्डा फोड़

किसी बाबूलाल नामक व्यक्ति द्वारा बिना प्रेस लाइन दिये छपाया गया एक पर्चा मुझे डाक से मिला है जिसमें किसी प्रछन्न व्यक्ति ने जानबूझकर परोपकारिणी सभा के प्रधान तथा आर्यजगत् के मूर्धन्य सन्यासी स्वामी ओमानन्द के अमल धवल चरित्र पर कीचड़ उछालने का मिथ्या प्रयास किया है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस पर्चे को प्रकाशित कराने वाले "बाबूलाल" नामक व्यक्ति का कोई अस्तित्व नही है किन्तु इस विज्ञापन में लिखी गई बाते किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा बताई गई हैं जो सभा के विषय मे कुछ उल्टी सीधी जानकारी अवश्य रखता है। इस पर्चे की भाषा अत्यन्त अभद्र, अशालीन तथा आर्योचित मान दण्डों के नितान्त विपरीत है तथा लेखक का एकमात्र उद्देश्य स्वामी ओमानन्द जी को जनता की नजरों में से गिराने का ही है। यद्यपि इस प्रकार के झूठ के पुलिन्दों का प्रतिवाद करना तो दूर रहा, नोटिस लेना भी बुद्धिमानों के लिए आवश्यक नहीं है, तथापि कतिपय भ्रान्तियों का निराकरण करने के लिए यह वक्तव्य आवश्यक है।

स्वामी जी ने जब परोपकारिणी सभा का गठन किया था तो उसमें केवल राजा महाराजाओं को नहीं, किन्तु उच्चस्तरीय विद्वानों तथा सार्वजनिक कार्यकर्ताओं को भी रखा था। उदाहरणार्थ महादेव गोविन्द रानाडे, पं० श्याम जी कृष्ण वर्मा, पं० गोपाल राव हरिदेशमुख, कविराज श्यामलदास तथा पं० मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या जैसे प्रबुद्ध लोग इस सभा के सभासद बनाये गये। अब यदि राजा महाराजा देश के नक्शे से ही उठ गये तो इस बात का रोना क्या? तथापि इस सभा में प्रबुद्ध, विद्वान् तथा त्यागी तपस्वी लोगों की कमी नही है। पर्चे के लेखक को पता होना चाहिए कि सभा के जिन सदस्यों ने स्वामी ओमानन्द जी को प्रधान चुना है उनमें स्वामी सत्यप्रकाश जी जैसे विद्वान् संन्यासी, चौधरी प्रतापसिंह जैसे वयोवृद्ध साहित्यप्रेमी दानिशमन्द आर्य पुरुष, डा० सुधीर कुमार गुप्त, पं० उदयवीर शास्त्री, महात्मा आर्यभिक्षु जैसे आर्यसमाज के विद्वान् तथा प्रो० शेरसिंह, पं० आनन्दप्रिय आदि आर्य नेता है। इन आर्यजनों के सर्वमान्य निर्णय को चुनौती देना मूर्खतापूर्ण है। फिर परोपकारिणी सभा के प्रधान का चुनाव सभा का निजी मामला है उसमें नकली बाबूलाल को अपना प्रवक्ता बनाकर कोई व्यक्ति हस्तक्षेप करना चाहे तो यह सह्य नही होगा।

अब क्रमशः उन आक्षेपों की कलई खोलते हैं जो इस पर्चे में स्वामी जी के सम्बन्ध में किये गये हैं—

१. स्वामी दयानन्द के हस्तलेख अजमेर में सभा के ग्रन्थालय में पूर्ण सुरक्षित हैं। उनके नरेला या अन्यत्र ले जाने का प्रश्न ही नही उठता। स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने महर्षि के हस्तलेखों को फोटोस्टेट की दूकानों पर पड़ा देखा है तो इस सम्बन्ध में उक्त स्वामी जी को ही अपना बयान देना चाहिए कि उन्होंने कहाँ और क्या देखा था?

२ सभा के सामान के चोरी चले जाने की बात गोल-मोल है। यदि विश्वश्रवा जी इस बारे में कुछ जानते हैं तो वे स्वयं सामने आकर बताते क्यो नही हैं?

३. सामवेद का पदपाठ जैसा उपलब्ध था उसे यथावत् छपाया गया। यह तो एक अलभ्य ग्रंथ को विद्वानों के लिए सुलभ कराने का प्रयास मात्र है। फोटो कापी की तकनीक से तो यही सम्भव था।

४. पं० सातवलेकर द्वारा प्रकाशित वेद संहितायें सर्वाधिक शुद्ध मानी जाती हैं क्योंकि उन्होंने दाक्षिणात्य वेदज्ञ पण्डितों से इनके पाठ को परिशोधित कराया है। वैदिक यन्त्रालय से प्रकाशित होने वाली संहिताएँ प्रारम्भ में मैक्समूलर सम्पादित संस्करण के अनुसार छपती रही। ध्यातव्य है कि स्वामी दयानन्द के जीवन काल में वैदिक यन्त्रालय ने मूल संहिताओं का मुद्रण व प्रकाशन नहीं किया था। अब यदि सातवलेकर के शुद्ध संस्करण को आधार बनाकर वैदिक यन्त्रालय मन्त्र संहिताओं का प्रकाशन करता है तो इसमें अनुचित क्या है? आखिर इन ग्रन्थों का कोई न कोई शुद्ध पाठ तो लेना ही होगा?

५. परोपकारिणी सभा ने सृष्टि संवत् विषयक निर्णय अपनी विद्वत् समिति की संस्तुति के आधार पर लिया है। शास्त्रीय विषयों में विद्वानों का मत ही प्रमाण होता है किसी सभा या संस्था का नही।

६ निर्वाण शताब्दी पर यज्ञ के ब्रह्मा पद पर महात्मा दयानन्द जी को विभूषित करने में स्वामी ओमानन्द जी ने कोई स्वेच्छाचारिता नहीं बरती। यह निर्णय निर्वाण शताब्दी समिति की राय से लिया गया था और शताब्दी समिति ने ही स्वामी जी के इस सुझाव को स्वीकार किया था।

७ स्वामी ओमानन्द जी के सम्बन्ध मे सर्वाधिक निकृष्ट तथा निन्दनीय बातें लिखने में इस पर्चेबाज को थोडी भी लज्जा नही आई। उसे यह पता नहीं कि हिन्दी सत्याग्रह के सर्वाधिकारी स्वामी आत्मानन्द जी के आदेश से ही स्वामी ओमानन्द जी ने अपने आपको गिरफ्तार नही कराया बल्कि उन्हें अण्डर ग्राउण्ड रहकर सत्याग्रह के लिए सत्याग्रही जुटाने का काम सौंपा गया था। गिरफ्तारी देना तो सरल है कठिनाई तो पुलिस की नजरों से अपने आपको बचाकर कार्य करने में होती है। क्या हैदराबाद सत्याग्रह में महात्मा नारायण स्वामी के आदेश को मानकर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने अपने आपको जेल जाने से विरत नहीं रखा था। क्या ऐसा करने से स्वामी स्वतन्त्रानन्द की वीरता और प्रतिष्ठा में कोई कमी आ गई थी।

८. स्वामी ओमानन्द जी पर जातवाद होने का लांछन लगाना तो नीचता की पराकाष्ठा है जिस वीतराग महानुभाव ने भरी जवानी में नैष्ठिक ब्रह्मचर्य धारण कर अपने आपको सर्वात्मना आर्यसमाज की सेवा में होम दिया। जो खान पान रहन सहन वस्त्र भूषा में परिव्राजक की सर्वोच्च मर्यादाओं को स्वीकार कर इस वृद्धावस्था में नाना शारीरिक क्लेशों को तटस्थ भावेन सहन करता है। उस पूत व्यक्तित्व की शान में ऐसी क्षुद्र भाषा का प्रयोग करना अत्यन्त घृणास्पद है। भला स्वामी जी सभा के मन्त्री को क्यों डरायेंगे और क्यों उन्हें सभा के हरियाणे के बहुमत का डर दिखायेगे? परोपकारिणी सभा के चुनाव जात विरादरी तथा प्रान्तीय धारणाओं से ऊपर उठकर होते हैं। हरयाणे के जो महानुभाव परोपकारिणी सभा के सदस्य हैं वे उस प्रान्त के निवासी होने के कारण सदस्य बनाये गये हैं ऐसी बात नहीं है, किन्तु वे अपने व्यक्तित्व एवं गुणों के कारण ही सभा की सदस्यता के अधिकारी बने हैं। आक्षेपकर्त्ता को यह पता नही कि परोपकारिणी सभा में हरयाणा का बहुमत नहीं है स्वामी ओमानन्द जी, प्रो० शेरसिंह, चौ० हरकिशन मलिक, सेठ घनश्यामदास गोयल तथा चौ० प्रतापसिंह जी ये पांच सदस्य हरयाणा के माने जा सकते हैं। २३ सदस्यों की सभा में पांच सदस्यों का बहुमत कैसे हो सकता है।

९. पर्चेबाज के इस सुझाव पर हमें दया आती है कि वह सभा को स्वामी ओमानन्द को तत्क्षण पृथक् करने का परामर्श देता है। उसे यह पता होना चाहिए कि सभा ने बहुत सोच-समझकर आर्यसमाज के इस वीतराग त्यागी तपस्वी संन्यासी को उस समय अपना प्रधान बनाया था जब कि निर्वाण शताब्दी का एक महान् समारम्भ सम्पन्न कराने की उसकी योजना को क्रियान्वित किया जाना था। पता नहीं पर्चा लिखनेवाला आचार्य विश्वश्रवा जी को कौन सा वक्तव्य देने का सुझाव दे रहा है।

१०. यद्यपि दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर की ओर से स्पष्टीकरण देने का हमें कोई अधिकार नहीं है तथापि विगत दिनों में वहां एकाधिक बार जाने तथा आचार्य हरिदेव जी के नेतृत्व में इस गुरुकुल के सुव्यवस्थित संचालन को देखकर हमें यह लिखने में कोई संकोच

—शेष पृष्ठ ६ पर

रोहतक क्षेत्र के ग्रामों में वेदप्रचार की धूम

रोहतक जिले के रोहणा, गांधरा और अटायल तीन ग्रामों में वैदिक धर्म प्रचार के निमित्त ७ से १९ जनवरी तक कार्यक्रम बनाकर रोपड़ से श्री स्वामी वेदानन्द जी को तीनों ग्रामों को आर्यसमाजों की ओर से विशेष रूप से आमन्त्रित किया। सर्वप्रथम ग्राम रोहणा में ७ से १३ जनवरी तक कार्यक्रम चला। प्रतिदिन प्रातः सायं पारिवारिक यज्ञ और उपदेश तथा रात्रि को चौपाल में प्रवचन होते रहे। स्वामी जी के व्याख्यानों एवं सरल, सरस सैद्धान्तिक किन्तु अतीत व प्रभाव-शाली उपदेशों का श्रोताओं पर ऐसा आश्चर्यजनक प्रभाव होता था कि आबाल वृद्ध स्त्री पुरुष सैकड़ों की संख्या में मन्त्र मुग्ध होकर घंटों श्रवण करते रहते थे। दो घंटे का समय कब व्यतीत हो गया किसी को कुछ पता ही नहीं चलता था। शीत लहर और बिजली के अभाव में अंधेरी रात्रि की बाधाओं का विचार किये बिना कीचड़ भरी गलियों में से होते हुए इतनी अधिक संख्या मे पहुंचते कि चौपाल पूरी तरह भर जाती थी। महिलाएं घरों से निकल निकल कर गलियों में टोलियां बनाकर महर्षि दयानन्द के गीत गाती हुई सत्संगों में जिस उत्साह से सम्मिलित होती थी, वह दृश्य देखते ही बनता था। पूरे ग्राम में सप्ताह भर ऐसी हलचल मची रही कि जहां देखो स्वामी जी के उपदेशों की ही चर्चा चलती रहती। दिन में पारिवारिक यज्ञों में भी इतनी अधिक उपस्थिति होती कि जब घरों में बैठने का स्थान न रहता तो लोग घर से बाहर गली में ही खड़े रहकर सुनते रहते। यज्ञ के प्रति लोगों की ऐसी श्रद्धा उमड़ी कि दिन में तीन तीन यज्ञ करने पर भी यज्ञ कराने वाले श्रद्धालुओं की मांग पूरी न की जा सकी। अनेकों नवयुवकों, स्त्री पुरुषों ने यज्ञोपवीत धारण किये। अनेकों ने अपने दुर्गुण, दुर्व्यसन छोड़ने और सतगुण कर्म ग्रहण करने की प्रतिज्ञाएं कीं। श्री दरयाव सिंह जी रात्रि के प्रवचन के विषय की प्रतिदिन स्वामी जी से प्रार्थना करते थे उसी पर स्वामी जी तत्काल प्रवचन प्रारम्भ कर देते थे। मुख्य प्रवचन विषय इस प्रकार थे –

(१) सत्संग क्यों करना चाहिए सत्संग किसे कहते हैं ? (२) धर्म क्या है, इसे धारण करने से क्या लाभ तथा न करने से क्या हानि है ? (३) ईश्वर का स्वरूप क्या है ? ईश्वर के मानने व उपासने से क्या लाभ तथा न मानने, न उपासने से क्या हानि होती है ? (४) ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना कराने की सही विधि कौन सी है ? कैसे की जाये ? इत्यादि। दिन भर के शेष समय में भी लोग स्वामी जी के पास आकर देर तक शंका समाधान करके सन्तुष्ट होकर लौटते रहते। १४ जनवरी को प्रातः श्री इन्द्रसिंह जो प्रधान आर्यसमाज के घर पर यज्ञ और उपदेश करने के उपरान्त ग्राम गांधरा के लिये प्रस्थान करने के लिये बस अड्डे पर जब सब रोहणावासियों से विदाई लेने लगे तो लगभग २० व्यक्ति एवं नवयुवकों ने मिलकर बड़े सम्मान से उन्हें बस चढ़ाया।

श्री दरियावसिंह जी स्वामी वेदानन्द जी को साथ लेकर सायं ४ बजे गांधरा पहुंचे और वे इस बार के पूरे कार्यक्रम में स्वामी जी के साथ ही रहे। वहां के प्रमुख कार्यकर्ता और ठोस आर्य कप्तानसिंह जी तथा श्री जयकरण जी, श्री तसवीरसिंह जी थे। स्वामी जी को ग्राम से बाहर तसवीरसिंह के मकान के ऊपर चौबारे मे ठहराया गया। गांधरा में १४ से १९ जनवरी प्रातः तक वैदिक धर्म प्रचार का कार्य-क्रम धूमधाम से चलाया गया। यहां पर भी कार्यक्रम दिन में प्रातः सायं पारिवारिक यज्ञ एवं सत्संग तथा रात्रि को विभिन्न मोहल्लों मे सार्व-जनिक व्याख्यान इसी प्रकार चलता रहा। पहले दो दिन, दिन के सत्संगों में यज्ञ पर लोग कम संख्या में लोग पहुंचे। गांधरा में स्त्रियां पुरुषों के साथ सत्संगों में बैठने में संकोच करती थी और यज्ञों में यजमान भी अपनी पत्नियों के साथ यज्ञ में बैठने से शरमाते थे। कारण प्रचार की ही कमी थी। इन ग्रामों में इस प्रकार यज्ञ एवं प्रचार कार्य किया ही नहीं गया था। बहुत समझाने पर तीसरे और चौथे दिन स्त्रियों ने यज्ञों और सत्संगों में निसंकोच भाग लिया। स्वामी जी के प्रवचनों का गांधरा के लोगों पर भी आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा। परिणाम स्वरूप श्री कप्तानसिंह जी को आर्य संगठन का कार्य करने के लिये कई नये साथी और मिल गये, जिनमें श्री रामकिशन जी बहुत ही सुलझे हुये स्वाध्यायशील एवं सम्पन्न और कर्मठ व्यक्ति हैं। वे जहां अपने क्षेत्र में कृषि कार्य में सर्वोत्तम कुशल अग्रणीय है वहां वे कम्यूनिष्ठ पार्टी के जिला स्तर के सक्रिय मनोनीत अधिकारी के रूप में निष्काम कार्यकर्त्ता रहे हैं। उनका अपना विशाल पुस्तकालय भी है। आर्य साहित्य से भी परिचित हैं। इस बार स्वामी वेदानन्द जी के प्रवचनों, दिनभर के सहवास तथा शंका समाधानों से श्री रामकिशन जी के विचारों में आमूल चूल परिवर्तन होगया। उन्होंने सार्वजनिक रूप से अपने दोषों को छोड़ने और आर्यसमाज के कार्यों में पूरे बल व तन मन धन से कार्य में सबके साथ जुटने की प्रतिज्ञा की। सभी आर्य सज्जनों ने उनके इस महत्त्वपूर्ण निश्चय की सराहना की। गांधरा के आर्यों ने सर्वसम्मति से वर्ष में चार बार एक एक सप्ताह इसी प्रकार से अपने ग्राम में वैदिक धर्म प्रचार कराने का महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया।

क्रमशः

आर्यसमाजों के आगामी वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज जुब्बल जिला कुरुक्षेत्र	९, १० मार्च
„ कारद जिला करनाल	१०, ११, १२ „
„ जोन्धन कलां जिला करनाल	१३, १४, १५ „
गुरुकुल किकाडला „ „	१५, १६, १७ „
आर्यसमाज घरोण्डा „ „	१४ से १७ „
„ श्रद्धानन्द नगर पलवल जिला फरीदाबाद	१५ से १७ „
स्त्री आर्यसमाज कैथल जि० कुरुक्षेत्र	१९ से २२ „
वैदिक साधनाश्रम यमुनानगर जिला अम्बाला	२० से २४ „
आर्यसमाज अर्जुननगर गुड़गांव	२२ से २४ „
„ ठोल जिला कुरुक्षेत्र	२९, ३०, ३१ „
„ शेखपुरा जिला करनाल	२९, ३०, ३१ „
„ कोसली जिला रोहतक	२९, ३०, ३१ „
गुरुकुल कुरुक्षेत्र	२९, ३०, ३१ „
आर्यसमाज मुवाना जिला जीन्द	२९, ३०, ३१ „
„ पिपलीवाला जिला कुरुक्षेत्र	१, २, ३ अप्रैल
„ नरवाना जिला जीन्द	५ से ७ „
„ रेवाड़ी जि० महेन्द्रगढ	१६ से १८ „
„ जाजनपुर जि० कुरुक्षेत्र	५ से ७ „
„ सोनीपत नगर	२६ से २८ „

रोहतक में यज्ञशाला का उद्घाटन

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के छात्रावास जो कि दिल्ली रोड पर जाट कालेज के साथ स्थित है, में संस्कार विधि के निर्देशानुसार भव्य यज्ञशाला का निर्माण किया गया है। इसका उद्-घाटन ९ मार्च शनिवार को प्रातः १० बजे आर्यजगत् के त्यागी तपस्वी संन्यासी परोपकारिणी सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती करेंगे। इसके बाद महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के कार्यालय के सामने महर्षि दयानन्द के स्टैच्यू का अनावरण हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल जी करेंगे।

अतः इन कार्यक्रमों में समय पर पधारकर समारोह की शोभा बढ़ावें। सभा मन्त्री

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज नागदा जिला उज्जैन (उ० प्र०)

संरक्षक—श्री डो० एन० माखरिया, प्रधान—सेवाराम आर्य, उपप्रधान—गोर्धनलाल आर्य, गोविन्द मेहता, मन्त्री—ओमसिंह राठोड़, उपमन्त्री—भैरुलाल आर्य, परमानन्द हारोड़, कोषाध्यक्ष—नरेन्द्र देवड़ा प्रचारमन्त्री—एस० एन० कड़लवा 'निरंजन' आर्य वीर दल अधिष्ठाता—गोपाल गु जाल, प्रान्तीय प्रतिनिधि—सेवाराम आर्य, नरेन्द्र देवड़ा

आर्यसमाज कौल जिला कुरुक्षेत्र

प्रधान—डा० ताराचन्द, उपप्रधान—महाशय खेमचन्द, महासचिव कपूरचन्द वर्मा एडवोकेट, सचिव—शकरेश कृष्ण, कोषाध्यक्ष—शमसिंह

आर्यसमाज जीन्द शहर

प्रधान—चौ० देशराज एडवोकेट, उपप्रधान मास्टर रामचन्द्र गुप्त लाला जगन्नाथ, मन्त्री—कृष्णदेव शास्त्री, उपमन्त्री—मा० राजवीर, श्री सौदागरचन्द, कोषाध्यक्ष — सत्यनारायण, लेखानिरीक्षक— श्री सत्यप्रकाश आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—टिकाराम

आर्यसमाज कनीना जिला जीन्द

प्रधान—सेदुराम जी, उपप्रधान—नित्यानन्द, मन्त्री—माधवसिंह आर्य, उपमन्त्री—श्यामसुन्दर, कोषाध्यक्ष—कृष्णप्रकाश, पुस्तकाध्यक्ष-रमेश कुमार

आर्यसमाज फिल्लौर (पंजाब)

प्रधान—श्री प्रमोद कुमार वसंधरा, उपप्रधान—ज्ञानचन्द आर्य, मदनमोहन भाटा, मन्त्री—सुधीर कुमार आर्य, उपमन्त्री—श्री अश्वनी कुमार गुप्ता, श्री हंसराज, कोषाध्यक्ष—सुभाष आर्य,

अन्तरंग सदस्य—अमीरचन्द पासी, बलराज आर्य, कालूराम, राजिन्द्र पासी, सुरेन्द्र मलहोत्रा, कृष्णचन्द्र वसंधरा, वेदकुमार भाटिया, हेमन्त कुमार नैय्यर

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गावां

प्रधान—मुन्शीलाल सचदेवा, उपप्रधान-सत्यपाल आर्य, महामन्त्री कन्हैयालाल आर्य, मन्त्री—ओमप्रकाश कालड़ा, कोषाध्यक्ष—विद्याभूषण शास्त्री, भण्डारी—दौलतराम खेड़ा, लेखा निरोक्षक-हरिदत्त शास्त्री

अन्तरंग सदस्य—श्री महेश्वर दयाल लूथड़ा, किशनचन्द कोटि, ओमप्रकाश चुटानी, किशनचन्द चुटानी, रामचन्द्र आर्य, अशोक आर्य, सोमदत्त जी, नरेन्द्रदेव कालड़ा, भीमसेन दीवान, शिवदत्त आर्य, डा० ज्योति प्रशाद आर्य

आर्यसमाज छछरौली के समाचार

आर्यसमाज चबूतरों की ओर से २४-२-८५ को आर्यसमाज मन्दिर छछरौली जिला अम्बाला में एक बैठक रखी गई जिसमें छछरौली क्षेत्र की सभी आर्य सभाओं ने भाग लिया। बैठक में आर्यसमाज मन्दिर छछरौली के बारे में साप्ताहिक हवन यज्ञ करने का कार्यक्रम बनाया गया तथा वार्षिक उत्सव रखने के बारे में भी विचार किया गया। समाज में फैल रहे भ्रष्टाचार को रोकने के लिये निर्णय किया गया। शराब के ठेकों को बन्द कराने पर भी विचार किया तथा हरयाणा के हितों की रक्षा के बारे में गौर किया गया। महापंजाब की बजाय पंजाब को तीन भागों में बांटने के लिए प्रस्ताव भारत सरकार को भेजने के लिए सभी आर्यसमाजों ने स्वीकार किया। पंजाब को हरयाणा हिमाचल प्रदेश, राजस्थान में बांट देना चाहिए।

मामचन्द आर्य

आवश्यक सूचना

वैदिक यती मण्डल की ओर से वैदिक संन्यास आश्रम दयानन्द नगर गाजियाबाद में १६ मार्च से ३१ मार्च १९८५ तक स्वाध्याय, संस्कृत शिक्षण शिविर लगाया जायेगा जिसका संचालन श्री स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज करेंगे। अतः इच्छुक मान्य यतियों (संन्यासियों नैष्ठिक ब्रह्मचारियों तथा वानप्रस्थियों) से प्रार्थना है कि समय पर पहुंचकर लाभ उठावें। सत्यार्थप्रकाश, संस्कार विधि आदि पुस्तकें, कापी, लेखनी तथा ऋतु अनुसार वस्त्र अपने साथ लावें। भोजन का प्रबन्ध आश्रम की ओर से होगा।

अध्यक्ष-सर्वानन्द

विदाई समारोह

दिनांक २६-२-८५ को विद्यालय में विदाई समारोह किया गया। नवम्, दशम् व एकादशम् कक्षा के छात्रों को विदाई दी। सर्वप्रथम हवन यज्ञ किया गया। इस अवसर पर आर्य विद्वान् पं० श्रीराम आर्य, श्री व्रतपाल जी शास्त्री तथा श्री बलदेव आर्य ने बच्चों को आशीर्वाद दिया। फिर एक मधुर विदाई कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नवम् व दशम् कक्षा के विद्यार्थियों ने अपने विचार प्रकट किये। अध्यापकों ने भी बच्चों को सम्बोधित किया।

विद्यालय प्रबन्धक डा० आर० एस० सांगवान ने जाने वाले विद्यार्थियों को शुभ कामनाएं दी। उन्होंने राजेन्द्र कुमार जिन्दल जिसने आठवीं कक्षा में छात्रवृति प्राप्त की थी। उसे ५१ रु० का नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया। विद्यालय की ओर से इस होनहार छात्र को एक सुन्दर कप व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अन्त में उपप्रधानाचार्य मदनलाल जी बंसल व प्रधानाचार्य श्री द्वारका प्रसाद जी जिन्दल ने बच्चों को आशीर्वाद दिया। जनगणमण के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। इस वर्ष हमारे विद्यालय के तीन विद्यार्थियों ने छात्रवृत्तियां प्राप्त की।

द्वारका प्रसाद जिन्दल

आवश्यकता

गुरुकुल डिकाडला जिला करनाल को निम्न कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है। प्रधानाचार्य—प्राचार्य अथवा संस्कृत एम० ए०

दो अध्यापक—जे० बी० टी०, एक अध्यापक-बी० ए० बी० एड०, एक संरक्षक—गुरुकुलोय अनुभव शील, एक कार्यालयाध्यक्ष

यथायोग्य वेतन व निवास सुविधायें। २० मार्च तक आवेदन पत्र भेजें। ब्रह्मचारी ओमस्वरूप संचालक

शोक समाचार

चौ० जोगराम जी आर्य प्रधान आर्यसमाज शेखपुरा निकट घरोण्डा जिला करनाल निवासी का २० फरवरी १९८५ को स्वर्गवास हो गया। उनकी आयु लगभग ७० वर्ष की थी। पर्याप्त समय से रोगी चल रहे थे। आर्यसमाज सेवा के कार्य में रात दिन लगे रहते थे अपने पीछे धर्म पत्नी तथा चार पुत्रियां छोड़ गये हैं।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा समस्त परिवार को सान्त्वना प्रदान करें।

धर्मवीर

आर्यसमाज मन्दिर जीन्द शहर में

लेखराम तृतीया पर्व का आयोजन

दिनांक २४-२-८५ को सुबह ८-३० से ११-३० बजे तक आर्यसमाज मन्दिर जींद शहर में अमर शहीद धर्मवीर पं० लेखराम आर्य मुसाफिर का ८८ वां बलिदान दिवस सोत्साह सम्पन्न हुआ। इसका आयोजन स्थानीय आर्य वीर दल ने किया जिसमें नगर की तीनों समाजों ने सहयोग दिया और आर्य वीरों का उत्साह बढाया। सभा की अध्यक्षता नगर के युवा आर्यसमाजी श्री सुरेन्द्रसिंह एडवोकेट ने की। मुख्य वक्ता जिला जीन्द के 'विश्वहिन्दू परिषद्' के प्रधान श्री इन्द्रसिंह शास्त्री थे। दो तीन वक्ता और भी थे। पं० चन्द्रभानु जी आर्य भजनोपदेशक की भजन मण्डली और विद्यालय की बालिकाओं के भजन भी हुये।

स्थानीय तीनों समाजें आर्य वीरों के निर्माण और उनके कार्यक्रमों में बड़ी रुचि ले रही हैं और सहयोग प्रदान कर रही हैं।

प्रो० ओमकुमार आर्य बौद्धिकाध्यक्ष आर्य वीर दल हरयाणा

भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

आर्य युवक परिषद् (रजि०) दिल्ली के तत्त्वावधान में ऋषिबोध उत्सव के शुभ अवसर पर राष्ट्रोत्थान में महर्षि दयानन्द का योगदान विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन काटला फिरोजशाह नई दिल्ली में महाशय धर्मपाल जी (प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली) की अध्यक्षता में हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ। इस प्रतियोगिता में २५ आर्य संस्थाओं के छात्र छात्राओं ने भाग लिया जिसमें सर्वप्रथम पारितोषिक व सत्यप्रिय चलविजयोपहार आर्यसमाज लोधी रोड के छात्र राजू विज्ञानिक ने प्राप्त किया।

सभी वक्ता बच्चों को उत्साहवर्धनार्थ पुरस्कार स्वरूप तीन सौ रुपये का वैदिक साहित्य परिषद् द्वारा एवं एक हजार रु० की नगद राशि सभा में उपस्थित आर्य जनता द्वारा वितरित की गई।

कमल किशोर आर्य
आर्य युवक परिषद् (रजि०) दिल्ली
२०ए/११, शक्तिनगर, दिल्ली-७

लगाता डूबतों को पार यह सर्वहितकारी

चिरंजीलाल 'जीव' बराडा

सभा हरयाणे का अखबार है यह सर्वहितकारी।
मिटाता दुनियां से अन्धकार है यह सर्वहितकारी॥

यह भजनीक और उपदेशक हैं अपनी आर्य जाति का।
रहा कर वेद का प्रचार है यह सर्वहितकारी॥

लिया व्रत देश और जाति की सेवा करने का इसने।
हितैषी सबका खिदमतगार है यह सर्वहितकारी॥

ऋषि दयानन्द का सन्देश पहुँचाता है यह घर घर।
करे संसार का उपकार है यह सर्वहितकारी॥

जो होते काम हैं, आर्यजगत् में हमको आ करके।
सुनाता उनके सब समाचार है यह सर्वहितकारी॥

जगाता है उन्हें सोते पड़े जो गहरी निद्रा में।
हमारा राखी-चौकीदार है यह सर्वहितकारी॥

सब आर्यगण इसे अपनायें निकले है यह रोहतक से।
लगाता डूबतों को पार है यह सर्वहितकारी॥

रुपये पंद्रह हैं चन्दा 'जीव' केवल इसका सालाना।
निकलता हफ्ते में इक बार है यह सर्वहितकारी॥

ऋषि सन्देश

आज इस विषय पर विचार करेंगे कि ऋग्वेदादि संहिताओं का नाम वेद क्यों है? वेद नाम अर्थ पढे से है। क्योंकि एक (विद) धातु ज्ञानार्थ है दूसरा (विद) सत्तार्थ है। तीसरा (विद्लृ) का लाभ अर्थ है। चौथे (विद) का अर्थ विचार है।

इन चार धातुओं से करण और अधिकरण कारक में 'घञ्' प्रत्यय करने से वेद शब्द सिद्ध होता है तथा (श्रु) धातु श्रवण अर्थ में है इससे करण कारक में क्तिन् प्रत्यय होने से श्रुति शब्द सिद्ध होता है। जिनके पढ़ने से विद्वान् होते हैं, जिनसे सब सुखों का लाभ होता है, और जिनसे ठीक ठीक सत्यासत्य का विचार मनुष्यों को होता है। इसलिए ऋक् संहितादि का नाम वेद है। वैसे ही सृष्टि के आरम्भ से आज पर्यन्त और ब्रह्मा से हम लोग पर्यन्त जिससे सब सत्य विद्याओं को सुनते आते हैं इससे वेदों का नाम श्रुति है।

वेद ऋचाओं को मन्त्र इसलिये कहा जाता है कि उन पर मनन किया जावे, इसलिए वेदमन्त्रों को पढके उन पर विचार करके, उन के अनुसार कार्य करना चाहिए।

देसराज खोरबाट इन्दिरा कालोनी रोहतक

अन्तरंग सभा व रक्षावाहिनी की बैठकें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक १७ मार्च को प्रातः १० बजे तथा उसी दिन हरयाणा रक्षा वाहिनी की बैठक दोपहर १२ बजे दयानन्दमठ गोहाना रोड रोहतक में हो रही है। अतः अन्तरंग सभा के सदस्यों तथा हरयाणा रक्षा वाहिनी की सभी शाखाओं के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि यथासमय इन बैठकों में पधारने की कृपा करें।

सभा मन्त्री

(पृष्ठ १ का शेष)

सच्चे गुरु के सच्चे शिष्य ने भी अमर बलिदान द्वारा अमृत धाम पा लिया।

शिवरात्रि ऋषि दयानन्द को सच्चे शिव की खोज और समाधि से सच्चे शिवदर्शन का पाठ पढ़ा गई तो उसके पश्चात् बोरतीज वीर लेखराम को प्रभु की अमर पदवी प्राप्ति का वरदान दे गई। क्यों न हो, यह गुरु शिष्य की सच्ची एकता है कि दोनों वेदों की अमरवाणी पर कुर्बान हो गये।

काश! विधाता हमें भी इस मार्ग का राही बनाता शरीर से रक्त का फव्वारा छूटे और वाणी बोल रही हो कि प्रभो तेरी इच्छा पूर्ण हो तूने अच्छी लीला की।

अन्तड़ियां हाथ में संभाली हों और बोल रहे हों कि आर्यसमाज से तहरीर और तकरीर का काम बन्द न होने पावे।

विषदाता को रुपयों की पोटली दे रहे हों कि नेपाल में भाग जा कहीं तू पकड़ा न जाये और वीर लेखराम बोल रहे हों कि डा० जी! यह तो वैदिक धर्म का शैदायी है। इसे कातिल मत समझो।

६ मार्च आज के परिप्रेक्ष्य में आर्यों को शिक्षा दे रहा है कि आर्य भूमि सहशिक्षा, गन्दे फिल्मी तरानों, राजनैतिक मुठभेड़ों, सिनेमाओं की झंकारों, विलासिता की महामारियों, विदेशी भाषा की पराधीनता और नाना प्रकार के परस्पर विरोधी विचारों से आर्यभूमिग्रस्त है और अपनी रक्षा के लिये आर्यों का बलिदान मांगती है। है कोई वेद का प्यारा! ऋषि भक्त वीर!! लेखराम सा वीर!!! जो धरती माता के कष्टों का हरण कर उसे आर्य भूमि बनादे। पंजाब की वीर भूमि लेखराम नगरी (कादयान) की इस गुहार को कोई सुने।

शान्ति प्रकाश
४५३ बरकत नगर जयपुर

गीता विषयक शंका-समाधान

श्री सत्यपाल विमल आर्यसमाज खारवन (अम्बाला) का दिनांक रहित गीता विषयक शंकाओं से पूर्ण एक पत्र आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के माध्यम से प्राप्त हुआ। श्री विमल जी ने श्रीमद्भगवद् गीता के विषय में आर्य विद्वानो से जिज्ञासा रूप में कुछ शंकाएं भेजी हैं। उनका यहां सक्षेप में समाधान किया जाता है—

शंका—क्या महर्षि ने गीता को आर्ष कोटि के प्रमाण ग्रन्थों में गिना है। यदि नहीं तो आर्य विद्वानों द्वारा भाष्य क्यों किये गये।

समाधान—महर्षि ने गीता को आर्ष कोटि के प्रमाण ग्रन्थों में नाम लेकर नही गिना है किन्तु महाभारत के अच्छे प्रकरणों के अध्ययन का विधान किया है। गीता महाभारत शान्ति पर्व का भाग है। आर्य विद्वानों द्वारा इस पर किये भाष्य इसे प्रमाणिक ग्रन्थ बनाने का प्रयास है।

शका—क्या महर्षि ने गीता को विषयुक्त अन्न की भान्ति त्याज्य नहीं बतलाया।

समाधान—महर्षि ने गीता को त्रिदोष का सन्निपात कहा है। सामान्य पाठक के लिए यह विषयुक्त अन्न के समान है। विद्वान् पाठक 'विषादप्यमृतं ग्राह्यम्' इससे कुछ ग्रहण कर सकता है।

शंका—क्या गीता पौराणिक मत (हिन्दू) का मूल धर्म ग्रन्थ नहीं है।

समा०—गीता पौराणिक मत का एक विशिष्ट ग्रन्थ है। इसे उस का मूल ग्रन्थ नहीं कहा जा सकता है।

शंका—क्या आर्य विद्वानों द्वारा किए गए भाष्यों ने पौराणिक जगत् में प्रतिष्ठा पाई है, यदि नही तो क्यों?

समा०—आर्यो विद्वानों द्वारा किए गए भाष्यों ने पौराणिक जगत् में प्रतिष्ठा न प्राप्त करने का उनका अपना सम्प्रदाय और मताग्रह प्रधान कारण है।

शंका—महर्षि ने श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज को महात्माओं के सदृश बतलाया है, ऋषि नहीं।

समा०-श्रीमद्भगवद्गीता श्रीकृष्ण की रचना नहीं अपितु महाभारतकार व्यास ने श्रीकृष्ण के भावों को काव्य रूप दिया है। अतः श्रीकृष्ण के महात्मा और ऋषि होने का कोई प्रश्न नहीं उठता।

शंका—क्या गीता पुराण तुल्य श्रीकृष्ण को अवतार सिद्ध करने के लिए तत्तुल्य प्रयास नहीं है।

समा०-गीता श्रीकृष्ण को अवतार रूप में प्रस्तुत करती है।

शंका—क्या 'कुर्वन्नेव हि कर्माणि०' मन्त्र के समक्ष गीता के श्लोक कर्मण्येवाधिकारस्ते' का महत्व अधिक है।

समा०-किसी वेदमन्त्र और किसी श्लोक की तुलना करना उचित नहीं क्योंकि वेद स्वत: प्रमाण और श्लोक परत: प्रमाण है। समस्त उत्तम साहित्य वेद की ही व्याख्या करने का प्रयास करता है। शिक्षा; व्याकरण आदि सब वेद के ही व्याख्यान ग्रन्थ हैं।

शंका-वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद् दर्शन आदि आर्ष ग्रंथ कार्य करने के लिए और प्रतिष्ठा पाने के लिए पर्याप्त नहीं है?

समा०-आर्य विद्वानों को महर्षि द्वारा प्रतिपादित मन्तव्यों को हृदय में धारण करके वैदिक साहित्य पर शोधात्मक कार्य करना चाहिए। इन ग्रथो पर भी जो कार्य हुआ है तथा हो रहा है, अनेक विद्वान् अपने पौराणिक संस्कारों में लिप्त होकर तथा अपनी कल्पना के घोड़े पर चढ़कर कार्य करते हैं, इससे वह साहित्य समाज के लिये हानिकारक होकर भ्रान्तियां ही उत्पन्न करता है। इसलिए सामान्य विद्वानों को ऋषिकृत भाष्य ही पढ़ने पढ़ाने चाहिए और आर्ष सिद्धान्तों के समर्थन में ही कार्य करना चाहिए। महर्षि ने यजुर्वेद और ऋग्वेद का (छठा मण्डल ७१ सूक्त) तक भाष्य किया है। सामवेद और अथर्ववेद का भाष्य नहीं किया। यदि किसी आर्य विद्वान् में विद्यासामर्थ्य है तो वह महर्षि भाष्य के समान शेष वेद का भाष्य लिखकर समाज का महान् उपकार क्यों नही करता। प्रतिष्ठा के उद्देश्य से कार्य करना विद्वान् के लिए शोभनीय नहीं है। कर्त्तव्य एव लोकोपकार की भावना से कार्य करना चाहिए।

शंका– गीता पर भाष्य लिखना क्या पौराणिक गर्त्त में गिरने के लिये आर्यसमाज का पग नहीं उठा है।

समा०-गीता महाभारत का हो भाग है। सार्वदेशिक सभा, प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि आदि आर्य विद्वानों की सभा बनाकर महाभारत आदि ग्रन्थों का संशोधन कार्य करवावें क्योकि इनमें प्रक्षेप बहुत आ गया है। महर्षि ने यह कार्य आरम्भ भी किया था किन्तु पूरा नहीं हो सका, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली ने मनुस्मृति के संशोधन का कार्य चालू है।

मैंने श्री विमल जो की शंकाओं का यथाशक्ति समाधान करने का प्रयास किया है। श्री विमल जी से मेरा हार्दिक निवेदन है कि वह महर्षिकृत ग्रन्थों का नियमित पारायण (स्वाध्याय) करते रहें और समय समय पर विद्वानों के संग से शंका-समाधान भो लेते रहें। इससे उनके जीवन का पथ अवश्य ही प्रशस्त होगा।

गीता विषयक शंका-समाधान के विषय को आगे बढाने के लिये श्री विमल जी का मैं हार्दिक धन्यवाद करता हूं।

सुदर्शनदेव आचार्य सभा उपमन्त्री

(पृष्ठ २ का शेष)

नही है कि दशाब्दियों तक निष्क्रिय अवस्था में पड़े रहने वाले इस गुरुकुल का पुनरुद्धार कर उन्होंने आर्यसमाज की असीम सेवा की है।

अपने वक्तव्य को विराम देते हुए हम यही लिखना चाहते हैं कि स्वामी ओमानन्द जी के तुल्य कोई त्याग कर दिखाये तो सही। जिस व्यक्ति ने अपनी करोड़ों की सम्पत्ति को लात मारकर वैदिक धर्म प्रचार के लिए अलख जगाई और आर्यसमाज की छवि को प्रोज्ज्वल बनाया उसकी मिथ्या निन्दा में कागज काले करना कृतघ्नता की पराकाष्ठा है। हम चाहते हैं कि इस पर्चे के पीछे जिस व्यक्ति या समूह का हाथ है वह खुलकर सामने आये ताकि उससे रूबरू बात की जा सके। इस प्रकार पर्दे के पीछे से काठ की तलवार चलाना शोभा नही देता—

—डा० भवानीलाल भारतीय
संयुक्त मन्त्री परोपकारिणी सभा

आर्यसमाज का भावी कार्यक्रम

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानवमात्र के विचारों में क्रान्ति लाने के लिए आर्यसमाज को एक सक्षम माध्यम बनाया। यों तो महर्षि के लेख के अनुसार उनके क्रान्तिकारी विचार ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त के विचार ही हैं जिनका मूल आधार वेद ही हैं। आर्य जाति अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त करे और मानवमात्र को जीवन की दिशा मिल सके, यह ऋषि की तीव्र अभिलाषा थी। गत सौ वर्षों के इतिहास में आर्यसमाज ने मानव समाज के हित के लिए चतुर्मुखी विकास योजनाएं बनाईं, उन्हें क्रियान्वित भी किया। इससे बौद्धिक वर्ग विशेष रूप से प्रभावित हुआ। सभी को आगे बढ़ने की प्रेरणा भी प्राप्त हुई। परन्तु जीवन का चतुर्मुखी विकास कार्यक्रम शिथिल न हो जाए, आगे चलता रहे, इस दिशा में विचार करना आज फिर आवश्यक है। इसी विचार से भविष्य में आर्यसमाज के कार्यक्रमों की रूपरेखा मेरी दृष्टि में निम्नांकित प्रकार से होनी चाहिए—

१—आर्यसमाज के मन्दिर केवल बाह्य पूजा पद्धति के ही केन्द्र न बनें, अपितु उनमें आने वाला प्रत्येक व्यक्ति आत्म प्रेरणा, धार्मिक भावना और अंतर्ज्योति को प्राप्त कर सके, ऐसी व्यवस्था हो।

२—आर्य जाति की पूजा पद्धति में यज्ञ का विशेष स्थान है। वस्तुतः यज्ञ मानव जाति के सर्वकल्याण भाव का आदर्श कर्म है। इस की प्रत्येक धार्मिक क्रिया को सत्य, श्रद्धा तथा भक्ति के साथ करने ही पर लाभ की आशा की जा सकती है। यदि थोड़ा ध्यानपूर्वक इसे किया जाये तो निश्चय ही धार्मिक भावना की वृद्धि होगी। उचित यही है कि केवल बाह्य कर्म न बनाकर जीवन में इसी मूल भावना अर्थात् अनासक्ति—इदं न मम की भावना को जीवन में उतारा जाए।

३—वेदोपदेश—वेद ईश्वर की कल्याणी वाणी है जो मानव तथा समाज में जीवन को प्रत्येक अवस्था में विचार देने में समर्थ है। इसी लिए श्रद्धापूर्वक यज्ञ कर्म के अनन्तर ऋषि ने वेदोपदेश का होना आवश्यक बताया है। उचित तो है कि स्वाध्यायशील उपदेशक अपने चिन्तन के आधार पर अनुकूल भाषा में अर्थात् देश की भाषा का ध्यान रखते हुए वेदप्रवचन करें। आर्यजन वेद का स्वाध्याय कर उसके प्रवचन का भी अभ्यास करें। आर्यजनों को यदि यह सुविधा प्राप्त न हो सके, तो पुस्तक से ही वेद प्रवचन पढ़ा जाये अथवा सुयोग्य विद्वानों के कैसेटों का सदुपयोग भी किया जाना लाभकारी हो सकता है। ध्यान रहे कि वेदोपदेश से पूर्व वातावरण को सात्विक बनाने के लिये अच्छे स्तर पर धार्मिक संगीत भी आवश्यक है।

४—योग साधना—महर्षि दयानन्द ने यों तो बीज रूप में सन्ध्या के मन्त्रों में योग करने का संकेत अथवा जाप का भी संकेत दिया है। उसका परम उद्देश्य जीवन में अनासक्त होकर अंतर्मुखी होते हुए आत्मा तथा परमात्मा का दर्शन लाभ है। योग साधना के लिए प्राणायाम अर्थ सहित जप का अभ्यास और मंत्रार्थ चिंतन का अभ्यास आवश्यक है।

५—शिक्षण—प्रत्येक आर्यसमाज को धर्म, संस्कृति, सभ्यता और आत्म-चिन्तन के विचारों का प्रसार करने के लिए शिक्षा को भी उसी दिशा में ढालना चाहिए। शिक्षा ऐसी हो जिसके द्वारा नवयुवक तथा नवयुवतियों को भी भौतिक और आध्यात्मिक जीवन की शिक्षा आर्य समाज दे सके। शिक्षा एकांगी न हो अर्थात् केवलमात्र अक्षर ज्ञान ही शिक्षा का लक्ष्य न हो। आचरण उसका उद्देश्य हो। आर्यसमाज की सभी शिक्षा संस्थाओं में नैतिक धार्मिक शिक्षा अनिवार्य हो, जिससे वैदिक धर्म का अन्य धर्मों से तुलनात्मक परिचय प्राप्त हो।

६—नवयुवक तथा नवयुवतियों को आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने के लिए वैदिक धर्म के विषय में संवाद, भाषण और कविताओं आदि कार्यक्रम देकर प्रोत्साहित करना चाहिए। साथ ही शारीरिक विकास के लिए व्यायाम आदि की रुचि का कार्यक्रम भी होना चाहिए और सभी प्रकार से ये नवयुवक अनुशासनप्रिय होते हुए धर्म प्रिय हों।

७—पिछड़े वर्ग में सेवा—प्रत्येक प्रांत की प्रतिनिधि सभाएं अपना कर्त्तव्य जानें कि उनके प्रांत में कम से कम एक ऐसा 'सेवाश्रम' हो जिसमें जाति के उपेक्षित बच्चों को, युवा वर्ग को अथवा प्रौढ़ वर्ग को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और कुटीर उद्योग के माध्यम से सहायता मिले। उनका जीवन स्तर गिरने न पाये अपितु उसमें निरन्तर उन्नति हो।

८—आर्यसमाज के अधिकारियों में आज सबसे बड़ी कमी यह है कि पुराने लोगों की भांति जनसम्पर्क का कार्यक्रम लुप्त हो गया है, जिसके परिणामस्वरूप आर्य सदस्यों में सहानुभूति; स्नेह और हित की भावना नहीं रही। आवश्यक है कि इस कार्यक्रम को पुनः शुरू किया जाये। कम से कम मास में एक सप्ताह अथवा कुछ दिन, जैसी भी सुविधा हो, सभी सदस्यों के सुख दुःख का पता और सहायता की आवश्यकता को जाना जाय, जिससे सभी आर्य सम्पर्क कार्यक्रम के द्वारा बृहद् परिवार का रूप ले सकें।

यदि उपरोक्त विचारों को भावी वर्षों में सक्रिय रूप से अपनाया जाये, तो मेरे विचार में निश्चय ही आर्यसमाजों की उन्नति होगी।

ओमप्रकाश त्यागी
मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

कुरुक्षेत्र जिला में युवा वर्ष

कुरुक्षेत्र जिला की सभी आर्यसमाजो की प्रमुख संस्था वेदप्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के अनुरूप जिला भर में युवा वर्ष मना रहा है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत युवकों में ब्रह्मचर्य, आस्तिकता धर्म तथा देश भक्ति की भावना पैदा करने के लिए गांव २ शिविरों का आयोजन किया जा रहा है अब तक जाजनपुर, फतेहपुर कैथल, तिरख मयोड़क आदि गांवो में शिविर लगाएं गये हैं। शिविरों में शारीरिक प्रशिक्षण कार्य ब्र० कृष्णपाल तथा ब्र० हरिपाल जो कर रहे हैं। मण्डल के महामन्त्री श्री धर्मदेव विद्यार्थी समापन समारोह में युवकों को सम्बोधित कर आर्यसमाज के माध्यम से कार्य करने का प्रोत्साहन करते हैं, जिससे धड़धड़ आर्य वीर दल तथा आर्यसमाजों की स्थापना होती जा रही है। शीघ्र ही १५ मार्च से गुरुकुल कुरुक्षेत्र में एक प्रदेश स्तरीय आर्य कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर लगाया जा रहा है।

फार्म–४ सर्वहितकारी विषयक विवरण

१. प्रकाशन स्थान	सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक
२. प्रकाशन अवधि	साप्ताहिक
३. मुद्रक का नाम	वेदव्रत शास्त्री, आचार्य प्रिंटिंग प्रेस दयानन्द मठ, रोहतक
४. प्रकाशन का नाम	वेदव्रत शास्त्री
क्या भारत का नागरिक है	हां
६. उन व्यक्ति के नाम व पते	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

जो समाचार पत्र के स्वामी सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ, रोहतक
हों तथा जो समस्त पूंजी के
एक प्रतिशत से अधिक
सांझेदार या हिस्सेदार हों।

मैं वेदव्रत शास्त्री एतद द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एव विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
वेदव्रत शास्त्री

यह कैसेट सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ, रोहतक से भी प्राप्त हो सकते हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १,९६,०८५ ३,



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक–डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक–वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १२, अङ्क १५ १४ मार्च १९८५ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में यज्ञशाला का उद्घाटन तथा महर्षि दयानन्द की कांस्य प्रतिमा का अनावरण समारोह सम्पन्न

समस्त आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि दिनांक ९-३-८५ को प्रात: १० बजे आर्यजगत् के मूर्धन्य सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती कुलपति श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर (रोहतक) ने महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के अनेक छात्रावासों के मध्य में बनी भव्य यज्ञशाला का अत्यन्त श्रद्धामय वातावरण में उद्घाटन किया। उद्घाटन से पूर्व विश्वविद्यालय के उपकुलपति महोदय श्री हरद्वारीलाल जी ने स्वामी जी महाराज से नम्रतापूर्वक उद्घाटन के लिये प्रार्थना की। आर्य नेता श्री राममेहर एडवोकेट कार्यक्रम का बड़ी कुशलता से सचालन कर रहे थे। स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने अपने सक्षिप्त एवं सारगभित उद्घाटन भाषण में बतलाया कि यज्ञ प्राणिमात्र का उपकारक श्रेष्ठतम कर्म है। यह ईश्वर के समान व्यापक होने विष्णु कहाता है (यज्ञो वै विष्णुः) यज्ञ मानव में स्वार्थ भावना का ह्रास करके परोपकार की उदात्त भावनाओं को जागरित करता है। इस शुभ अवसर पर सर्वहितकारी के सम्पादक वेदव्रत शास्त्री, पं० सुखदेव शास्त्री, पं० सत्यवीर विद्यालंकार सभा उप मन्त्री, डा० रणजीतसिंह सभामन्त्री आर्य प्रतिनिधि हरयाणा, डाक्टर यज्ञवीर,, पं० जयदेव विद्यालंकार, डा० तुलसीराम, प० सत्यकेतु विद्यालंकार, पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के आचार्य देवव्रत शास्त्री गुरुकुल कुरुक्षेत्र, प्रो० प्रकाशवीर विद्यालकार सदस्य महासभा गुरुकुल भैसवाल, खानपुर जिला सोनीपत आदि आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वानों के अतिरिक्त गुरुकुल झज्जर के आचार्य ब्र० विजयपाल जी तथा ब्रह्मचारी वृन्द, कन्या गुरुकुल नरेला की आचार्या बहिन सुमित्रा तथा ब्रह्मचारिणियां उपस्थित थी। अनेक आय संन्यासी, उपदेशक, कार्यकर्त्ता एवं प्रचारक भी विराजमान थे। विश्वविद्यालय के अनेक विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक तथा छात्र-छात्राए यज्ञशाला की शोभा बढा रही थी। इन पंक्तियों के लेखक ने यज्ञ विधि का स्वामी ओमानन्द सरस्वती के आदेशानुसार सचालन किया। डा० तुलसीराम जी अध्यक्ष आंग्लभाषा विभाग ने 'ओ३म्' की व्याख्या करते हुए बतलाया कि ईश्वर के इस निजनाम में उसके कर्त्ता, धर्त्ता और संहर्त्ता होने का गूढ अभिप्राय निहित है। इसके सर्वोपरि भाग पर 'ओ३म्' है। इसके छः खम्भे छः ऋतुओं का और बारह खम्भे वर्ष के बारह मासों का प्रतीक हैं। यज्ञ उत्तम कर्मों का प्रतीक है। मनुष्य तभी तक है जीवित है जब तक वह शुभ कर्मों का अनुष्ठान करता है। हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल तथा विश्वविद्यालय के विद्वान् कुलपति चौ० हरद्वारी लाल यज्ञ की पूर्णाहुति में श्रद्धापूर्वक सम्मिलित हुए। इस प्रकार बहुत पवित्र एवं सात्विक वातावरण मे यज्ञशाला के उद्घाटन का कायक्रम शान्ति पाठ के साथ सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् एक विशाल पण्डाल में महर्षि दयानन्द की कांस्य प्रतिमा का अनावरण समारोह आरम्भ हुआ। विश्वविद्यालय के विद्वान् कुलपति चौ० हरद्वारी ने विश्वविद्यालय के निर्माण में मुख्यमन्त्री महोदय एवं सरकार के योगदान, रोहतक जिले की उन्नति विद्यालय-शिक्षा के गिरते स्तर पर चिन्ता, अध्यापक वर्ग के अपने कर्त्तव्य के प्रति उदासीनता, भावी शिक्षा नीति हरयाणा में शिक्षा-उन्नति के उपाय, इन्जीनियरिंग कालेज का निर्माण, भारत की राजधानी का विस्तार आदि महत्त्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डालकर शिक्षा के प्रति जनता को जागरित किया। हरयाणा कांग्रेस के अध्यक्ष चौ० सुलतान सिंह ने रोहतक में हवाई-पट्टी, खेलकूद के लिए स्टेडियम, और डिफेंस कालोनी के निर्माण की मांग की और हरयाणा पर महर्षि के उपकारों का वर्णन किया। हरयाणा के पूर्व मुख्यमन्त्री एव पूर्व राज्यपाल प० भगवद्दयाल शर्मा ने वेद, श्रुति, स्मृति, प्राचीन वैदिक संस्कृति और महर्षि दयानन्द सरस्वती के देश-निर्माण में योगदान का मनोहर चित्रण प्रस्तुत किया। आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने वैदिक साहित्य भेंट करके मुख्यमन्त्री महोदय का सम्मान किया। चौ० भजन लाल जो मुख्यमन्त्री हरयाणा ने अपने भाषण में कहा कि मैंने अपने जीवन में आज महर्षि की प्रतिभा का अनावरण करके सबसे बड़ा कार्य किया है। मैं आज अपना अहोभाग्य समझता हूं। मैं जन्म से आर्यसमाजी हूं। मेरे घर पर प्रतिदिन यज्ञ होता है। मैं यात्रा पर जाने से पूर्व घर पर यज्ञ अवश्य करता हूं। महर्षि दयानन्द की इस प्रतिभा से हमारे अध्यापक, छात्र वर्ग तथा समाज में देश-निर्माण की ऊंची भावनाओं का अवश्य उदय होगा। मेरी सरकार हरयाणा के सब जिलों का समान ध्यान रखती है। रोहतक हरयाणा का दिल है। दिल का और विशेष ध्यान रखा जाता है। बाढ आदि की रोकथाम के लिए रोहतक जिले को सरकार की ओर से सब से अधिक राशि ग्रांट में दी जाती है। इन्जीनियरिंग कालेज खोलने का प्रस्ताव सोनीपत वाले भाइयों ने रखा है। मैं उनसे सलाह करके, उन्हें मनाकर ही इस विश्वविद्यालय में इन्जीनियरिंग कालेज खोलने का अन्तिम निर्णय लेना चाहता हूं। प्रयत्न करूंगा कि यह कालेज विश्वविद्यालय में ही खोला जाए। आपने इस विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं से महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो को ग्रहण करने की अपील की।

छात्रावास में यज्ञशाला के निर्माण में पाच लाख तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती की भव्य प्रतिमा के निर्माण में दो लाख कुल मिलाकर लगभग सात लाख रुपया इस पर विश्वविद्यालय की ओर से व्यय हुआ है। इस कार्य से महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय का नाम सार्थक हो गया है। भारत के नवीन पद्धति के किसी भी विश्वविद्यालय में यज्ञशाला तथा इस युग के अग्रणी महान् सुधारक महर्षि दयानन्द की प्रतिभा नही है। विद्वान् उपकुलपति महोदय ने विश्वविद्यालय

(शेष पृष्ठ ३ पर)

महर्षि दयानन्द फिल्म विवाद

(स्वामी वेदानन्द सरस्वती, वैदिक साधु आश्रम रोपड़)

आर्यसमाज की पत्रिकाओं में महर्षि दयानन्द फिल्म विषयक विवाद अभी जोरों से छिड़ा हुआ है। सार्वदेशिक सभा की रहस्यमय चुप्पी की उपमा आचार्य विश्वश्रवा जी व्यास ने सुभद्रा हरण में भगवान् कृष्ण जी की चुप्पी से देकर सार्वदेशिक सभा द्वारा अन्दर खाने श्री भगवानदेव जी को स्वीकृति देने की सम्भावना होने का सन्देह व्यक्त किया है। एक ओर तो इस विवाद ने उग्र रूप धारण कर लिया। दूसरी ओर वैदिक यति मण्डल के अध्यक्ष श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज द्वारा इस विषय को सुलझाने के निमित्त सार्वदेशिक सभा के अधिकारियो से किये गये निरन्तर प्रबल साग्रह पत्राचार द्वारा उन्हें कुछ भी निर्णय लेने पर विवश किया गया। आखिर बिल्ली को थैले से बाहर आना ही पड़ा। सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ जी मरवाह एडवोकेट नई दिल्ली ने 'आर्य मर्यादा' के २७ जनवरी के अंक में सार्वदेशिक सभा की रहस्यमयी चुप्पी के रहस्य पर से पर्दा उठाते हुये जो लिखा उससे यह तथ्य सामने आये कि सार्वदेशिक सभा तो १९८० में ही महर्षि दयानन्द सरस्वती के ऊपर फिल्म बनाने का निर्णय लेने का जघन्य पाप कर चुकी थी। तदनुसार तीस हजार (३००००) रु० की अग्रिम राशि भी शर्तनामे के रूप में ३१-५-८० को इन्द्र नैयर को दी गई थी। इस फिल्म के मुहूर्त के रूप में श्री सोमनाथ जी मरवाह के साथ श्री सरदारीलाल वर्मा पूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली भी उपस्थित थे। मरवाह जी ने ही इस शर्तनामे का प्रारूप तैयार किया था जिस पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले के भी हस्ताक्षर थे। इस फिल्म को नैयर नही बना सके। अब यह कार्य श्री आचार्य भगवानदेव पूर्व सांसद ने प्रारम्भ किया है।

यह था वह रहस्य जिस कारण मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने ऐसी चुप्पी साध रखी थी कि वैदिक यति मण्डल के अध्यक्ष श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के द्वारा बार बार साग्रह उत्तर मांगने पर भी कुछ भी तो नहीं बोल व लिख सके। भला जो स्वयं अक्षम्य अपराध किये बैठे हो तो आत्महीनता की भावना उनमें उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक ही था। ऐसी अवस्था में सार्वदेशिक सभा के प्रधान भला स्वामी जी के पत्रों का उत्तर देने का साहस कैसे जुटा सकते थे। एक अंग्रेजी के लेखक ने लिखा है कि जिस कार्य को विद्वान् व्यक्ति कल्पना करते भी डरते हैं उसे मूर्ख सहसा कर डालते हैं। जिस विषय का निर्णय धर्मार्य सभा के विद्वानों द्वारा कराया जाना चाहिए था, उसका निर्णय सार्वदेशिक सभा के अविद्वान् तिकडमबाजी में माहिर नेताओं ने कर लिया और जल्दी बाजी में ३०००० रुपये भी बट्टे खाते में गये। आर्य जगत् के विद्वानों से परामर्श करना भी उचित नहीं समझा अब श्री भगवान्देव जी को वही फिल्म बनाने का कार्य सोपा हुआ है। स्पष्ट है ये लोग जो अनुचित पग उठा चुके हैं अब उसे पीछे हटाने का साहस भी नहीं कर सकेंगे। अब ये जिद से यह फिल्म बनाने का काम पूरा करा कर ही रहेंगे किसी की नहीं सुनेगे। जो भी विद्वान् महर्षि दयानन्द के जीवन को फिल्माने का विरोध करेंगे उन्हें ये लोग सब मर्यादाओं को त्याग कर आजकल के घटिया स्तर के राजनैतिक नेताओं की भांति हतोत्साही करने के लिये उन पर घटिया स्तर के आरोप लगाने में भी नहीं चुकेंगे। उत्तर तो इन लोगों के पास कहां है नहीं ढिटाई से अनर्गल प्रलाप करेंगे और सार्वदेशिक सभा के अनुशासन की दुहाई देकर ये लोग विद्वान् विचारकों के मुंह बन्द कराने में ऐड़ी से चोटी तक का बल लगावे में हो अपना कल्याण समझेंगे। किसी ने ठीक ही कहा है—

जाहिल पर उपदेश का उल्टा ही होता है असर,
वा बवाल होकर बह जाती है अक्ल पर उतर।

सबसे बड़ी दुःख की बात यह है कि आर्यसमाज के वर्तमान ढांचे में सर्वत्र अधिकारियों के समूह में कुछ इस प्रकार के व्यक्ति भी घुसे हुये है जिन्हें आर्य सिद्धान्तों आर्य मर्यादाओं और आर्य परम्पराओं का न तो ज्ञान ही है न उन पर विश्वास और न उनका इनसे कुछ वास्ता है। ये लोग अपनी दौलत और तिगड़मबाजी के बलबुते पर अधिकारी वर्ग में सम्मिलित हो गये हैं। इन्हें न अपने सात्विक विद्वानों की शर्म है न हजारो आर्यों के श्रद्धा के केन्द्र तपापूत सन्यासियों का लिहाज धन और पद के नशे में धुत ये लोग ऐसे ढीठ हैं कि जो संन्यासी आर्यों के समाज के ताज, सभाओं की शोभा, सर्वोच्च सम्मान के अधिकारी हैं, जिनके बिना आर्यों के उत्सव, जलूस और प्रचार के सभी कार्यक्रम एव योजनाएं सफल हो ही नहीं सकते और जन जन की प्रेरणा के स्रोत हैं, उनके सम्मान के विरुद्ध कुछ भी कहने और लिखने में किंचित भी संकोच नही करते। ऐसे ही एक महानुभाव सार्वदेशिक ढांचे में से भी प्रकट हो गये, श्री सोमनाथ जी मरवाह के लेख के शीर्षक को पढ़ें: जो उन्होंने विचार कर लिखा है— 'महर्षि दयानन्द फिल्म का विरोध करने वाले अपने जीवन को देखें।" पाठक स्वयं अनुमान कर सकेंगे कि इस लेख में उन्होने क्या लिखा होगा तथा उनका निशाना कौन रहे होंगे। लीजिये उन्हीं की पक्तियां पढ़िये—"इस कार्य (फिल्म निर्माण) का विरोध किया जा रहा है तो यह कुछ निहित स्वार्थी व्यक्तियो की ओर से है। जो आचार्य भगवानदेव के स्तर तथा प्रसिद्धि को सहन नहीं कर सके। मैं मानता हूं कि इस फिल्म के निर्माण का विरोध स्पष्टत: व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा के कारण हैं।" भाव स्पष्ट है, व्याख्या की आवश्यकता नहीं है। आगे मरवाह जी सीधा आक्रमण करते हुए लिखते हैं—'क्या यह सत्य नहीं है कि आज हमारे कुछ व्यक्ति वानप्रस्थ एवं संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् भी महर्षि द्वारा निर्दिष्ट सिद्धांत विरुद्ध अपना जीवन व्यतीत कर रहे है अर्थात् उसी प्रकार अपने कारोबार में लगे हैं और परिवारों में ही रह रहे हैं।"

वाह मरवाह जी क्या कहने आपके यह छोड़ा है वह अमोघ अस्त्र जिसकी मार से मारे बेचारे वानप्रस्थी संन्यासी आपकी करतूत का विरोध करने का भला कैसे साहस बटोर सकेंगे किसी ने ठीक ही कहा है—

पैदा हुवे वकील तो शैतान ने कहा,
लो अब तो हम भी साहिबे औलाद होगये।

भले मानस, इन पक्तियों के लिखने से पूर्व यदि और कुछ नहीं तो कम से कम अपनी आयु अथवा अपनी सार्वदेशिक सभा की प्रतिष्ठा का ही विचार कर लिया होता, कि जो कुछ लिखने लगे हो, अपनी और सभा की शान और गरिमा के तो प्रतिकूल नहीं है। ऐसे ही महानुभावों के व्यवहार के कारण अब आर्यसमाज में सर्वत्र विद्वानों और संन्यासियों की कमी अनुभव होने लगी है। ऐसे लोगों के विषय में संन्यासी इसके अतिरिक्त और क्या कह सकते हैं।

जिनके लिये हम मरे जा रहे हैं। वही हमसे नफरत किये जा रहे हैं। सभी आर्यजन मिलकर इस अनुचित व्यवहार को रोकें। मरवाह जी का सम्पूर्ण लेख व्यर्थ है। उसमें कुछ भी विचारणीय नहीं है। पुर्वपि एक दो उनके प्रश्नों का उत्तर अवश्य लिखता हूं।

प्रश्न—क्या कोई इस बात को मानने से इन्कार करेगा कि गांधी फिल्म में महात्मा गांधी को सम्पूर्ण संसार के सामने लाकर खड़ा कर दिया। एक भूला हुआ व्यक्ति आज सम्पूर्ण संसार के प्रत्येक व्यक्ति की जबान पर है?

उत्तर—फिल्म द्वारा गांधी जी सम्पूर्ण संसार के प्रत्येक व्यक्ति की जबान पर चढ गये यह बात सर्वथा झूठी है। संसार के लोगों की बात तो पृथक् है, गांधी जी को तो उनके देश के ही वे लोग भी भूल गये जो उनका नाम केवल चुनाव के दिनों में ही प्रयोग करके ३७ वर्षों से गुलछर्रे उड़ा रहे हैं। भारत में गांधी फिल्म के प्रचार का कितना प्रभाव

(शेष पृष्ठ ७ पर)

रोहतक क्षेत्र के ग्रामों में वेदप्रचार की धूम

(गतांक से आगे)

१६ जनवरी को गांवरा में अन्तिम पारिवारिक यज्ञ और प्रेरणाप्रद उपदेश करके दोपहर के भोजनान्तर स्वामी जी को एक ट्रैक्टर पर बैठाकर ग्राम अटायल में ले जाया गया। वहां सर्वप्रथम स्वामी जी को श्री रामानन्द जी के चौबारे पर विश्राम कराया गया। इसी बीच में श्री रामानन्द जी ने अपनी महत्त्वपूर्ण शंकाओं का समाधान भी किया। तत्पश्चात् श्री उदयसिंह जी के मकान की खुली छत पर यज्ञ तथा गृहस्थ जीवन पर प्रभावशाली उपदेश स्वामी जी ने किया। समाप्ति पर सभी सज्जन मुक्त कंठ से स्वामी जी की प्रशंसा कर रहे थे कि ऐसा मार्मिक मधुर भाषी साधु हमारे ग्राम में इससे पूर्व कभी नहीं आया था। अटायल में स्वामी जी ने दो दिन ठहर कर वैदिक धर्म और आर्य समाज का प्रचार किया। यहां पर भी रात्रि में दो प्रवचन और दिन में चार यज्ञ तथा उपदेश हुए। स्वामी जी श्री करणसिंह आर्य के चौबारे पर ठहरे। उनके साथ रोहणा निवासी श्री दरयावसिंह जी तथा श्री इन्द्रसिंह जी भी कार्यक्रम के अन्त तक ठहरे। वहीं रात्रि को व्याख्यान भी हुये। पूरे ही कार्यक्रम में अटायल ग्राम में श्रद्धालु सज्जन एवं स्त्रियों युवकों की उपस्थिति बहुत अधिक होती रही। यहां गांवरा के आर्यजन भी पर्याप्त संख्या में पहुँचकर सभी कार्यक्रम में भाग लेते रहे। लोगों में बड़ा ही उत्साह दिखाई दिया। अटायल में श्री करणसिंह जी सबसे उत्साही और कर्मठ नवयुवक कार्यकर्त्ता हैं, जो स्वाध्यायशील एवं सच्चे आस्तिक है। सत्यार्थप्रकाश के कई समुल्लास उन्हें कण्ठस्थ हैं। अपना पुस्तकालय भी बनाया हुआ है। वे दिल्ली क्षेत्र में बस ड्राईवर हैं। प्रचार के दिनों दो दिन की छुट्टी लेकर आ गये थे। अटायल में दो दिन के धर्म प्रचार से ही स्त्री पुरुषों और नवयुवकों में आर्यसमाज के प्रति अत्यन्त रुचि उत्पन्न हुई। स्वामी जी से सभी स्तर के ग्रामवासी बहुत ही प्रभावित हुये। दो दिन पूरे ग्राम में हलचल सी मची रही। इस प्रकार ग्राम प्रचार सर्वथा सफल रहा। स्वामी जी की प्रचार की अपनी विशेष शैली है जिससे सभी स्तर के लोगों को अत्यन्त लाभ पहुंचा। ग्रामों में आर्यसमाज के कार्यों में तेजी लाने और धर्म प्रचार की सर्वत्र बड़ी कमी है। यदि यज्ञों के और सरल शैली के माध्यम से प्रचार हो तो लोगों में सर्वत्र आर्यसमाज का विस्तार होकर बड़ा ही उपकार होवे।

मन्त्री आर्यसमाज

(पृष्ठ १ का शेष)

जगत् में एक स्वस्थ नवीन पद्धति का सूत्रपात किया है। आधुनिक शिक्षा के साथ प्राचीन अध्यात्मवाद का एक सुन्दर समन्वय करने का श्लाघनीय प्रयास किया है। हरयाणा के ही नहीं अपितु सार्वदेशिक स्तर पर आर्यजगत् में विद्वान् कुलपति महोदय के इस ऐतिहासिक कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की जा रही है। आशा है कि विश्वविद्यालय महर्षि के कार्यक्रम को और आगे बढ़ाकर समाज के उत्तम निर्माण में सदा महान् योगदान करता रहेगा।

इस समारोह को सफल करने के लिए आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक के मन्त्री श्री देसराज आर्य ने स्थानीय आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से सराहनीय परिश्रम किया। रोहतक के आर्यसमाजें तथा संस्थाएं इस अवसर पर अपने-अपने नाम पट तथा ओ३म् ध्वजों के साथ जलूस के रूप में सम्मिलित हुई। वयोवृद्ध आर्य भजनोपदेशक महाशय प्यारेलाल ने इस समारोह में "यह देश बिगड़ जाता अगर महर्षि दयानन्द न आते" गीत गाकर महर्षि दयानन्द को अपनी श्रद्धांजलि भेंट की। हरयाणा लोक-सम्पर्क विभाग के गायक श्री हरध्यानसिंह ने भी इस अवसर पर विश्वविद्यालय के साथ महर्षि दयानन्द का नाम सम्बन्धित होने पर मनोहर गीत सुनाया।

—सुदर्शनदेव आचार्य
उपमन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा

स्वर्गीया इन्दिरा गान्धी के एवार्ड पर ही समस्या का समाधान करें

श्री राजीव गान्धी प्रधानमन्त्री के नाम प्रो० शेरसिंह का पत्र

रोहतक :—११ मार्च (केदार सिंह आर्य द्वारा) आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को पत्र लिखकर मांग की है कि पंजाब, हरयाणा के वर्तमान समस्या का समाधान स्वर्गीया इन्दिरा गान्धी के एवार्ड के अनुसार हो करें। उन्होंने वीरतापूर्वक उग्रवादी अकालियों की राष्ट्र तथा हरयाणा विरोधी मांगों के सामने झुकने के स्थान पर स्वयं को बलिदान कर दिया है। समस्या का समाधान करने के लिए उन्होंने चण्डीगढ़ के बदले हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिलका हरयाणा को देने का निर्णय किया था। उस समय के अकाली नेताओं ने उनके एवार्ड पर पंजाब में दीपमाला करके अपनी सहमति प्रकट की थी, परन्तु पंजाब के कांग्रेसी नेताओं ने यह कहकर उस समय तारपीडो कर दिया कि अकालियों ने मभं (भेंस) देकर खाता (गधा) खरीद लिया है। उन्होंने कांग्रेस दल को सत्ता में लाने के स्वार्थ के लिए इन्दिरा गान्धी के एवार्ड को लागू नहीं होने दिया। वे पंजाब में स्वयं कुछ करने के लिए असमर्थ थे। इसी कारण उन्होंने प्रधानमन्त्री के सर्वोत्तम निर्णय को धज्जियां उड़ाई थी।

प्रो० शेरसिंह ने अपने पत्र में श्री राजीव गांधी को स्मरण करवाया है कि अकाली कभी भी किसी एक स्टैण्ड पर स्थिर नहीं रहे। वे प्रत्येक ५ वर्ष के पश्चात् अपनी नई-नई मांगें प्रस्तुत सुलझी हुई समस्याओं को उलझाते रहते हैं। अतः उनसे अब श्रीमती गान्धी के उन सिद्धान्तों के अनुसार ही वार्ता की जाये, जिन सिद्धान्तों की रक्षा के लिए उन्होंने अपने जीवन का बलिदान किया है।

प्रो० साहब ने इसी प्रकार के पत्र मन्त्री-मण्डल की उपसमिति के तीनों सदस्यों को भी लिखे हैं।

हरयाणा रक्षा वाहिनी की बैठक

हरयाणा की वर्तमान समस्याओं पर विचार करने तथा श्री भजनलाल मुख्यमन्त्री के महापंजाब एवं हरयाणा के क्षेत्रों को अन्य पड़ोसी राज्यों के मिलाने के सुझावों के विरुद्ध जनमत तैयार करने के लिए हरयाणा रक्षावाहिनी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की बैठकें १७ मार्च रविवार को प्रातः ११ बजे दयानन्दमठ रोहतक में हो रही है। इनमें हरयाणा प्रदेश के कोने-कोने से प्रतिनिधि सम्मिलित होने के लिए पहुंच रहे हैं।

इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, प्रो० शेरसिंह, चौ० बदलू राम पूर्व एम०एल०ए० अबोहर फाजिल्का के नेता श्री हेगराम जी पूर्व एम०एल०ए० आदि नेता भी पधार रहे हैं। १७ मार्च को ही इस बैठक से पूर्व १० बजे आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की भी बैठक होगी।

—सभामन्त्री

गुरुकुल घरौण्डा का उत्सव

श्री वेद विद्यालय गुरुकुल घरौण्डा जिला करनाल हरयाणा का ४७वां वार्षिक उत्सव २२-२३-२४ मार्च शुक्र, शनि, रविवार को होना निश्चित हुआ है। जिसमें आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान्, साधु, सन्यासी, भजनोपदेशक व राजनैतिक नेता पधारेंगे।

स्वा० रामेश्वरानन्द सरस्वती आचार्य

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का उत्सवसम्पन्न

गत १६ व १७ फरवरी को गुरुकुल झज्जर के विशाल प्रांगण में बहुत ही हर्षोल्लास के साथ ७० वां वार्षिक महोत्सव सम्पन्न हुआ, इस वर्ष अथर्ववेद पारायण यज्ञ हुआ जिसकी पूर्णाहुति का दृश्य दर्शनीय था, कदलीदल के स्थ से परिवृत यज्ञशाला जो कि बहुत ही सुन्दर बनी हुई है और उसके चारों ओर उद्यान भी बहुत ही रमणीय है। जब वहां बटुगण ऋचाओं का पाठ करते हैं तो सहसा प्राचीन समय का ऋषि मुनियों का युग प्रत्यक्ष दिखाई देता है। एक काष्ठ पीठिका पर विराजमान् आचार्य प्रवर और उनके समक्ष भूमि पर चटाई बिछाये हुए पटु-बटुओं का समूह पढ़ते हुए बहुत ही अच्छे लगते हैं। शहर के दूषित वातावरण से दूर प्रकृति के प्रांगण में बसे शान्त वातावरण में इस गुरुकुल का जनाकर्षण अद्भुत ही है। हजारों लोग इसे तीर्थ स्थल समझ का कर्त्तव्य भावना से बिना सूचना की प्रतीक्षा किये स्वयं ही पहुंच जाते हैं और सत्संग रूपी गंगा में स्नान करके अपने को धन्य समझते हैं।

गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर जहां साधु महात्माओं के उपदेश व प्रवचन हुए वहां कुछ आर्य नेताओं के विचार भी लोगों ने सुने जिनमें प्रमुख थे प्रो० शेरसिंह जी प्रधान हरयाणा रक्षा वाहिनी, आदरणीय प्रो० साहब ने सदा ही हरयाणा के हितों की रक्षा की है और हरयाणा को बनाने वालों में से वे भी एक प्रमुख स्तम्भ हैं। अब मुख्य मन्त्री हरयाणा द्वारा पंजाब हरयाणा और हिमाचल को मिलाकर एक बड़ा प्रान्त बनाने का जो प्रस्ताव है। उसके अनौचित्य को समझते हुए प्रो० शेरसिंह ने बताया कि जब हम एकत्रित थे तब भी हमारी लड़ाई रहती थी और विशेषकर इस क्षेत्र के विकास कार्य सब रुके हुए थे, हम कहते या चाहते तो भी इधर के कार्य नहीं होते थे, अब तो इसको और भी बड़ा बनाया जा रहा है। आप देख ही रहे हैं कि गत एक दशक में हरयाणा ने कितना विकास और उन्नति की है। हरयाणा ने विकास कार्यों में भारत में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में अपना नाम कमाया है। अब तीनों प्रांतों का विलय होकर जल विवाद या अबोहर फाजिल्का अथवा चण्डीगढ जैसे मुद्दों का समाधान हो जायेगा, ऐसा समझना सरासर भ्रम है। अतः अपने हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए आप सजग होकर लड़े। इसी में हम सबकी भलाई है।

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के कुलपति चौ० हरद्वारीलाल जी ने भी अपने विचारों से जनता को अवगत कराया और गत वर्ष मुख्य मन्त्री चौ० भजनलाल जी द्वारा घोषित राशि में से १५०००० (एक लाख पचास हजार रुपये) का चैक स्वामी जी महाराज को भेंट देते हुए शेष राशि भी शीघ्र ही भिजवाने का आश्वासन दिया। विश्वविद्यालय से मान्यता के विषय में भी छात्रों को एम० ए० संस्कृत करने हेतु आश्वासित किया। चौ० राममेहर जी एडवोकेट ने भी अपने विचार रखे। उत्सव के शुभावसर पर हरयाणा के मन्त्री श्री चन्द्रसिंह जी भी पधारे। वे गुरुकुल में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य देखकर बहुत प्रसन्नचित हुए और यहां कुश्तियों के प्रशिक्षण कोच खोलने की स्वीकृति दी। आपने ब्रह्मचारी रामवीर जी द्वारा लिखित सर्वश्रेष्ठ योगासन पुस्तक का भी विमोचन किया। विजयपाल

गुरुकुल गदपुरी का महोत्सव सम्पन्न

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी का ४८ वां वार्षिक महोत्सव १, २, ३ मार्च १९८५ को बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। महोत्सव में श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज प्रधान परोपकारिणी सभा, चौ० कर्तारसिंह एवं चौ० कल्याणसिंह मन्त्री हरयाणा, श्रीमती शारदा रानी व श्री ए० सी० चौधरी विधायक हरयाणा, आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री बेगराज, ओमाराम प्रेमी, लक्ष्मणसिंह बेमोल चन्द्रभान, तेजपाल, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक श्री हरिश्चन्द्र, नरदेव आर्य, म० खजानसिंह आदि पधारे। जो जनता के हृदय में अपनी अमिट छाप छोड़कर गये। जनसमूह ने महोत्सव के कार्यक्रम को बहुत सराहा। इस अवसर पर माननीय मन्त्रियों ने पुस्तकालय एवं व्यायामशाला की आधार शिला रखी तथा इसके लिये अपने कोष से अनुदान स्वीकृत किया। स्वामी विद्यानन्द

आर्यसमाज जीन्द रोड सफीदों का उत्सव

वार्षिक उत्सव २२, २३, २४ फरवरी को बड़े ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रो० शेरसिंह जी सभा प्रधान, स्वामी ओमानन्द जी सुविख्यात भजनोपदेशक पण्डित ओमाराम प्रेमी, स्वामी रुद्रवेश जी भजनोपदेशक, प्रो० ओमकुमार आर्य, ब्रह्मचारी अखिलेश तथा सभा से पण्डित ओमप्रकाश जी सिद्धान्त शिरोमणि, महाशय ईश्वरसिंह तूफान, पण्डित समेरसिंह भजनोपदेशक ने भाग लिया। यहां की जनता ने समस्त कार्यक्रम को मग्न होकर प्रेमभाव से सुना। इसके अतिरिक्त ब्रह्मचारी रामस्वरूप जी ने ब्रह्मचर्य के बल से बेल तोड़ना, सरिया मोड़ना, कांच हाथ में पीसना, मोटर रोकना, छाती पर पत्थर रख के तुड़वाना, दो कारों को रोकना आदि खेल दिखाए। यहां की जनता ने बहुत पसन्द किया।

आर्यसमाज जीन्द रोड सफीदों ने सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी को रक्षावाहिनी के लिये ५०१) तथा वेदप्रचारादि हेतु सभा को ५२५) स्वामी ओमानन्द जी को २५१) तथा इसके अतिरिक्त सभी आने वाले विद्वानों तथा भजनोपदेशकों को दक्षिणा और मार्ग व्यय दिया। कुल मिलाकर बहुत अच्छा कार्यक्रम रहा। हाजरी अच्छी रही सभी मुग्ध होकर सुनते रहे। जयभगवान आर्य

आर्यसमाज सालवन का उत्सव

आर्यसमाज सालवन जिला करनाल का ७९ वां वार्षिक उत्सव २५ से २७ फरवरी तक बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा के महोपदेशक पं० ओमप्रकाश सिद्धान्त शिरोमणि तथा गुरुकुल कालवा जिला जीन्द के सुयोग्य स्नातक ब्रह्मचारी अखिलेश जी के वेद प्रवचन एवं सभा की भजन मण्डलियां पं० चिरञ्जीलाल जी, पण्डित ईश्वरसिंह तूफान, पं० मुन्शीलाल जी, पंडित सुमेरसिंह के अतिरिक्त उत्तर भारत की सुप्रसिद्ध पं० ओमाराम जी प्रेमी के शिक्षाप्रद तथा मनोहार भजनों का जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। कुछ नवयुवकों ने यज्ञ पर यज्ञोपवीत धारण किये। ग्रामीण महिलाओं ने भी उत्सव को सफल करने में सहयोग दिया।

इससे पूर्व २३ फरवरी को आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में श्री लक्ष्मणसिंह जी प्रधान समाज की अध्यक्षता में श्री महाशय सन्तलाल जी के निधन पर शोक प्रस्ताव पास करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। वे आर्यसमाज के संस्थापकों में थे। उन्होंने निकट के ग्रामों में भी आर्यसमाज का प्रचार करवाया। प्रस्ताव में दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करने की प्रार्थना की गई। मन्त्री

शुभ सूचना

शम्भुदयाल दयानन्द वैदिक संन्यास आश्रम, दयानन्द नगर, गाजियाबाद का २८ वां वार्षिक यज्ञ महोत्सव ७ अप्रैल से १४ अप्रैल ८५ तक समारोहपूर्वक आयोजित किया गया है जिसमें उच्चकोटि के विद्वान् संन्यासी व भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आप सभी से प्रार्थना है कि यज्ञ महोत्सव को सफल बनाने में तन मन धन से सहयोग कर पुण्य के भागी बनें। प्रेमानन्द सरस्वती

वेदामृत

सुदृढ़ शासन के लिए

राष्ट्र द्रोहियों का निराकरण करें

दस्यूञ्छिम्यूंश्च पुरुहूत एवैर्हत्वा पृथिव्यां शर्वा नि बर्हीत् ।
सनत्क्षेत्रं सखिभिः श्वित्न्येभिः सनत्सूर्यं सनदपः सुवज्रः ॥
(ऋ० १-१००-१८)

ऋषिः वृषागिरो महाराजस्य पुत्रभूता वार्षागिरा
ऋज्राश्वाम्बरीषसहदेवभयमानसुराधसः ।

देवता—इन्द्रः । छन्दः-विराट् त्रिष्टुप् ।

(पुरुहूत सुवज्र)—यह सम्बोधन उन बलवान् शासकों के लिए है, जो अदम्य वीर और दृढ़ प्रतिज्ञ होते हैं। परमार्थ ही जिनके जीवन का एक मात्र उद्देश्य है, वे ही पुरु+हूत अर्थात् बारम्बार स्मरणीय, सबके द्वारा बुलाए जाने वाले, सर्वप्रिय अर्थात् सु-विख्यात, सर्वतः प्रशंसनीय होते हैं। जो सु+वज्र अर्थात् सुदृढ़ होते हैं, वे ही सुयोग्य शासक होते हैं और ऐसे सुवज्रों का ही समस्त प्रजा के द्वार आह्वान किया जाता है—किस लिए ? तो वेदादेश—

(पृथिव्यां दस्यून् च शिम्यू एवैः शर्वा हत्वा नि बर्हीत्+)—भूमि पर से दस्युओं और तीक्ष्ण द्रोहियों को विभिन्न साधनों द्वारा (आवश्यकता पड़ने पर शस्त्रों से भी वध कर), उन्मूलन कर दे, धरती से बाहर कर दें।

(श्वित्न्येभिः सखिभिः क्षेत्र सूर्यं अप. सनत्)—श्वेत (पवित्र) सहयोगियों के साथ क्षेत्र, सूर्य और जलों को सेवें।

किसी भी राष्ट्र को समुन्नत बनाने के दो ही साधन हैं—प्रथम उसे राष्ट्रघातकों से मुक्त करना। जो बाहर से राष्ट्र भक्त का सुन्दर मुखौटा लगाए हुए हैं पर भीतर से शत्रुओं से मिले हुए हैं और इस अवसर की ताकत में हैं कि अवसर मिलते ही वे तीक्ष्ण प्रहारों से राष्ट्र को क्षत विक्षत कर दें, उनके साथ कठोर व्यवहार करना है और इन कठोर व्यवहारों में देश निकाले से वध तक के कार्य्य भी प्रयुक्तीय हैं। द्वितीय साधन हैं—जो राष्ट्रभक्त हैं जिनका जीवन नितान्त शुद्ध और पवित्र है, उनके सहयोग से राष्ट्र के प्रत्येक क्षेत्र को चाहे वह धार्मिक हो, सामाजिक हो राजनैतिक हो, व्यावसायिक हो, उसे समृद्धिशाली बनाना, अविद्या के अन्धकार को मिटाकर ज्ञान सूर्य्य की ज्योति को जगमगाना और सुख शांति आनन्द की जलीय गुणों की धाराओं को सर्वत. प्रवाहित करना।

बिना इन वैदिक साधनों के किसी भी राष्ट्र का कल्याण न कभी हुआ है और न कभी होगा।

—वसन्त प्रभु अर्पित (मानव धर्म)

आर्य वीरदल जीन्द की ओर से होलिकोत्सव नवसस्येष्टि पर्व का आयोजन

आर्य वीरदल जीन्द के उत्साही आर्य वीरो ने दिनाक ७-३-८५ शुक्रवार को संध्या समय ६-०० बजे आर्यसमाज मन्दिर रामनगर जीन्द में नवसस्यष्टि पर्व (होलिकोत्सव) के उपलक्ष्य में एक समारोह का आयोजन किया। इसमें स्थानीय तीनों समाजो ने सयुक्त रूपेण भाग लिया। कार्यक्रम संन्ध्या समय ६-०० बजे यज्ञादि से आरम्भ हुआ। और तत्पश्चात् आर्यसमाज जीन्द शहर के पुरोहित श्री विद्यासागर जी सुमन ने होली पर्व का आर्ष रूप श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया। इससे जुडी पौराणिक गाथा सम्बन्धी भ्रान्ति का निवारण किया। प्रो० ओमकुमार ने भी आर्य वीरों को सम्बोधित किया और भविष्य में आगे बढते रहने की प्रेरणा दी। आर्यसमाज जीन्द शहर के कर्मठ मन्त्री श्री कृष्णदेव जी शास्त्री ने भी होली सम्बन्धी आर्ष भावना पर प्रकाश डाला। तदुपरान्त प० चन्द्रभानु जी के मनोहर भजन हुये। जीन्द जिले के मण्डल पति श्री रामलाल जी आर्य ने समस्त कार्यवाही का संचालन किया और श्री दलबीरसिंह आर्य ने ध्वजारोहण तथा ध्वजावतरण आदि औपचारिकताएं सम्पन्न करवाई।

श्री इन्द्रसिंह जी शास्त्री प्रधान आर्यसमाज रामनगर जीन्द ने अपना बहुमूल्य मार्गदर्शन दिया तथा मण्डल संरक्षक चौ० अजयसिंह जी तथा सुपरिचित आर्य दानी मा० बद्रीप्रसाद जी आर्य ने आर्यवीरों को ऐसे कार्यक्रमों के लिये उदार आर्थिक सहायता का आश्वासन दिया उपस्थित आर्य परिवारों ने भी यथाशक्ति सहायता प्रदान की।

श्री देवराज जी शास्त्री मन्त्री आर्यसमाज रायनगर जीन्द ने आभार ज्ञापन किया तथा ध्वज-गीत और शांति पाठ के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ।

शोक समाचार

१—आर्यसमाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर के पूर्व मन्त्री श्री रामलाल जी गुप्त का २८ फरवरी ८५ को स्वर्गवास हो गया। आपकी आयु लगभग ७५ वर्ष थी। आपने आर्यसमाज के अतिरिक्त स्वतन्त्रता संग्राम मे भी भाग लिया था। जालन्धर नगरपालिका के भी आप सदस्य रहे। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति तथा शोकसन्तप्त परिवार को इस दु.ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—केदारसिंह आर्य
सभा कार्यालयाध्यक्ष

२—खरक जाटान जिला रोहतक के एक कर्मठ आर्यसमाजी चौ० हरके राम सुपुत्र चौ० जोगीराम का दिनांक १-३-१९८५ को लम्बी बिमारी के बाद ८१ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया है। जीवनभर आर्यसमाज की सेवा करते रहे। गऊ रक्षा आन्दोलन में जेल गए। समाज सेवा में रुचि लेते थे। गांव के स्कूल निर्माण मे उनकी प्रमुख भूमिका रही। गुरुकुलो में दान देते रहे। स्वामी दयानन्द के सच्चे सेनानी थे, दृढ ईश्वर विश्वासी थे।

परमात्मा से प्रार्थना है कि शोक सन्तप्त परिवार को दु.ख सहन करने का धैर्य तथा दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

जिलेसिह आर्य मन्त्री आर्यसमाज खरक जाटान

देशान्तर प्रचार के लिए प्रचारकों की आवश्यकता

उपरोक्त शीर्षक से एक विज्ञप्ति गत जनवरी मास में आर्यसमाज की पत्रिकाओं में प्रकाशित की गई थी, जिसके उत्तर में कुछ पत्र हमें प्राप्त हुए हैं। देशान्तर प्रचार के कार्य में ऐसे उच्च शिक्षित सज्जनों को वरीयता दी जाएगी जो आर्यसमाज के संगठन को शक्तिशाली बना सकें। इन प्रचारकों को विदेशों की सामाजिक व राजनीतिक परिस्थितियों के अनुकूल प्रचार प्रणाली को अपनाते हुए, आर्यसमाज के संगठन को नई दिशा देना, साप्ताहिक सत्संग और आर्य-पर्व-पद्धति का ज्ञान कराना, आर्य वीर दल व महिला संगठन की नींव डालना, आर्य साहित्य के स्वाध्याय की प्रेरणा देना, आर्य शिक्षण संस्थाओं में अध्यापकों एवं छात्र-छात्राओं को वैदिक धर्म के मूल सिद्धान्तों का परिचय देना और समाचार-पत्र, रेडियो व टेलिविजन के माध्यम से जन-सामान्य को आर्यसमाज के सिद्धान्तों का ज्ञान कराना होगा। एक देश में अथवा उस क्षेत्र में कम से कम एक वर्ष का समय देना अपेक्षित है। सार्वदेशिक सभा अपने निर्देशन एवं अनुशासन में यह कार्य करायेगी। कालान्तर में विश्व के सभी भागों में आर्यसमाज के कार्य का विस्तार करना, देशान्तर की आर्यसमाजों व प्रतिनिधि सभाओं से निकट सम्बन्ध स्थापित करना तथा आर्यसमाज के अनुकूल विश्व संस्थाओं में अपने मन्तव्य को पहुंचाना, हमारी दीर्घकालीन योजना का लक्ष्य है। इसकी प्रथम कड़ी के रूप में कुछ योग्य आर्यजनों की सेवाएं इस कार्य में ली जाएगी।

इच्छुक महानुभावों को पत्र-व्यवहार के लिए हम पुनः अवसर दे रहे हैं। अपने पत्रोत्तर में वे अपनी आयु, शैक्षणिक योग्यता, भाषाओं का ज्ञान, आर्यसमाज से सम्बन्ध, प्रचार कार्य का अनुभव, प्रकाशनों की सूची एवं अन्य आवश्यक जानकारियों का विवरण देने का कष्ट करें। अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान अनिवार्य है। भारत अथवा देशान्तर के तीन प्रमुख आर्यजनों का नाम और पता भी लिखें जो आपके कार्यों के विषय में भली भांति जानता हो। यह भी सूचित करने का कष्ट करें कि कितना समय इस कार्य में दे सकते हैं। सभी महानुभावों को अपने प्रथम पत्र में ही पूर्ण विवरण दे देना योग्य होगा। आशा है देशान्तर प्रचार में सहयोग प्रदा करने हेतु इच्छुक महानुभाव अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

—डा० आनन्दप्रकाश
संयोजक-देशान्तर प्रचार समिति

कुरुक्षेत्र में नारी शिक्षा पर भाषण

६ मार्च १९८५ को दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र के प्रांगण में श्री बालकृष्ण मुस्तर जी का नारी शिक्षा के सम्बन्ध में विस्तार भाषण हुआ जिसमें उन्होंने नारी जाति से सम्बन्धित अपनी विचारधारा को इस प्रकार प्रस्तुत किया।

प्राचीन काल से ही नारी को आत्मा से रहित, पैरों की जूती, व्यक्तिगत सम्पत्ति, नरक का द्वार, ताड़न की अधिकारिणी माना गया। आज सर्वत्र स्त्री व पुरुषों की समानता की बात उठाई जाती है। लेकिन स्त्री पुरुषों के समान नहीं हो सकती वह तो पुरुष से भिन्न एवं परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ कृति है। स्त्री पुरुष तो एक दूसरे के पूरक हैं। स्त्री शिक्षा, वेश-भूषा पुरुष से भिन्न होने चाहिए जिससे उसका पृथक दृष्टिकोण विकसित हो सके। मनुष्य की संस्कृति को पूर्ण करने के लिए स्त्री प्रेम, करुणा आनन्द, दया, ममता इत्यादि गुणों से युक्त दुनियां का सृजन कर सकती है जिससे अखण्ड सभ्यता का निर्माण होगा।

भोपाल गैस पीड़ित सहायतार्थ दान

पं० चन्द्रसेन जी वैदिक मिशनरी सभा महापदेशक द्वारा

श्री दौलतराम सेतिया २४/११ मोती नगर नई दिल्ली	१००१)
श्री सत्यदेव आर्य जे ११/४५ राजौरी गार्डन नई दिल्ली	१०१)
आर्य स्त्री समाज टोहाना (हिसार)	१०१)
मिट्ठनलाल ओंकारमल नई मण्डी फतेहाबाद जि० हिसार	१०१)
हरचन्दराय वेदप्रकाश दुकान न० २७ नई मण्डी फतेहाबाद जिला हिसार	१०१)
आर्यसमाज माडल टाऊन सोनीपत	१००)
वीरेन्द्रकुमार सेतिया A-111 सुदर्शन पार्क नई दिल्ली	५१)
आर्यसमाज टोहाना जिला हिसार	५१)
प्रकाश देवी चावला, चावला भवन टोहाना जिला हिसार	५१)
परमेश्वरीदास घनश्यामदास नई मण्डी फतेहाबाद जिला हिसार	५१)
तानकचन्द सुपुत्र चौ० लछमनदास चुघ नई मण्डी फतेहाबाद जिला हिसार	५०
मुखी कृष्णा जी बजाज, फतेहाबाद जिला हिसार	३१)
किशोरीलाल लोहिया, ,, ,,	२१)
सेठ सत्यपाल बंसल, कपास दाल कारखाना नई मण्डी फतेहाबाद ,,	२१)
प्रि० सुधीर जी दयानन्द माडल स्कूल संन्यास आश्रम रोड ,, ,,	२१)
गंगाविशन गोपीराम दुकान नं० ६७ नई मण्डी फतेहाबाद ,,	२१)
घनश्यामदास सीताराम दुकान नं० ८५ नई मण्डी ,, ,,	२१)
जगदीशचन्द विनोदकुमार दुकान नं० ७७ नई मण्डी ,, ,,	११)
प्रिंसिपल सरस्वती विद्या मन्दिर भीमा बस्ती ,, ,,	२१)
आनन्द शू० फैक्ट्री धर्मशाला रोड ,, ,,	२१)
राणी, कुसुम, कौशल्या देवी, लीला, टोहाना ,, ,,	२१)
शकुन्तला, भागवन्ती और सीता, टोहाना ,, ,,	१५)
नारंग मिष्ठान भण्डार मेन बाजार फतेहाबाद जिला हिसार	१५)
ज्योति शू० जनरल मर्चेन्ट सिरसा ,, ,,	११)
चिरन्जीलाल तरसेमचन्द नई मण्डी फतेहाबाद ,, ,,	११)
डा० सुभाषचन्द्र आनन्द हस्पताल फतेहाबाद ,, ,,	११)
भगवानदास रहेजा, फतेहाबाद ,, ,,	११)
अर्जुनदास लुथरा, कृष्णपुरा फतेहाबाद ,, ,,	११)
अमरचन्द मल्होत्रा, टोहाना ,, ,,	१०)
कमल और अंगूरी टोहाना ,, ,,	१०)
दरबारीलाल, फतेहाबाद जिला हिसार (सभा कार्यालय में मनीआर्डर द्वारा प्राप्त)	१०१)
श्री रामचन्द आर्यसमाज सिरसा	१०)
श्री चन्द्रहास आर्य ग्राम शेरगढ नठोडी जि० करनाल	११)

सभी दानदाताओं का सभा की ओर से धन्यवाद।

कन्हैयालाल महता सभा कोषाध्यक्ष

स्वामी सत्यप्रकाश जी महात्मा हंसराज दिवस के अध्यक्ष होंगे

आर्यसमाज को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी २१ अप्रैल रविवार को त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जी का जन्म-दिवस समारोह ९-३० से १२-३० बजे तक तालकटोरा गार्डन के इण्डौर स्टेडियम में समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। इस समारोह के अध्यक्ष आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान् एवं संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज होंगे। इस बार का समारोह विशेष आकर्षक होगा। इस अवसर पर कुलाची हंसराज माडल स्कूल अशोक विहार एवं हंसराज माडल स्कूल पंजाबी बाग तथा अन्य डी०ए०वी० संस्थाओं के छात्र एवं छात्राओं का रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जा रहा है।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

(पृष्ठ २ का शेष)

लोगों पर पड़ा है यह भी स्पष्ट है। गांधी जी के सिद्धान्तों पर आधारित घोषणा पत्र घोषित करने वाले एकमात्र गांधीवादी नेता चौधरी चरणसिंह की पार्टी दमकिपा गत निर्वाचन में सर्वथा सफाया हो गया। गांधी फिल्म पर हुये व्यय करोड़ों रुपये भी व्यर्थ गये।

गांधी जी पर फिल्म बनाई जा सकती है। वे एक राजनीतिक नेता थे उनके कीर्तन प्रार्थनाएं सत्य और अहिंसा के सिद्धांत भी राजनीति से प्रभावित थे। उनका सम्पूर्ण कार्य क्षेत्र ही राजनीति रहा। इस विषय पर पृथक् लेख लिखा जा सकता है। किन्तु महर्षि दयानन्द सदृश नितान्त आध्यात्मिक आदर्श महापुरुषों के जीवन अथवा व्यक्तित्व पर फिल्म नहीं बनाई जानी चाहिए इससे उनका महत्व अवश्य घटेगा बढेगा नहीं। वे महापुरुष आदर्श रूप थे। उनका जीवन तीनों कालों में सदा आदर्श हा है। काल और परिस्थिति का उन पर प्रभाव नहीं है।

प्रश्न—यह कहा जाता है कि स्वामी जी रामलीला, नाटकों और स्वांग के विरुद्ध थे। मुझे विश्वास है कि यदि दयानन्द सरस्वती के सामने फिल्म उद्योग तथा दूरदर्शन का इतना विकास होता तो वे भी इसका विरोध न करके समर्थन हो करते। इसके अतिरिक्त आज वे लोग फिल्म निर्माण का विरोध कर रहे हैं जिन्होंने महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का अपने जीवन में पालन नहीं किया। कितने विरोधियों ने अपने जीवन में उनकी शिक्षाओं को शतप्रतिशत उतारा है?

उत्तर—श्रीमान् जी, महर्षि दयानन्द जी की शिक्षाएं आदर्श (Idial) है। आदर्श (Idial) Idias का विषय होते हुये भी जीवन में शतप्रतिशत आना अत्यन्त कठिन ही होता है। जनसाधारण के लिये तो आदर्श को किंचित स्पर्श कर पाना भी महा कठिन है। पुनपि आदर्श सदैव अनुकरणीय है। जन साधारण को भी उसे भुलाने और तद्विपरीत आचरण करने की खुली छूट नहीं दी जा सकती। फिर आप और आपके साथी सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों को तो आदर्श का मूल्य अथवा स्तर घटाने की स्वीकृति भी कैसे जा सकती है? मेरा निश्चित मत है कि यदि महर्षि दयानन्द के सामने रेडियो, दूरदर्शन और फिल्म उद्योग का विकास हुआ होता, तो महर्षि रेडियो और दूरदर्शन पर अपने व्याख्यान बड़ी उत्सुकता से दिया करते और इनका खूब प्रयोग करते कराते। अनेक विषयों पर विरोधियों की शंका समाधान वार्ता और उनके साथ शास्त्रार्थ करने के दृश्य प्रस्तुत किया कराया करते तथा फिल्म उद्योग को भी अपने सिद्धांतो पर फिल्म बनाने को प्रेरित किया कराया करते। परन्तु वे कपिल, कणाद, गोतम, व्यास, जैमिनि आदि महर्षियों के जीवन चरित्रों को फिल्माने की आर्यसमाजियों को बिल्कुल भी न तो स्वीकृति देते और न स्वयं में उनके स्वाग (रूप बनाकर (एक्टर बनकर) उनकी भूमिका फिल्मों निभाते हुये फिल्म बनाते बनवाते। क्या आपकी ऐसी हरकत पौराणिकों जैसी नहीं है, जो स्वयं भांग तथा नाच और व्यभिचार करने के स्वार्थ से ये दोष शिव और कृष्ण आदि महापुरुषों पर आरोपित करते हैं।

महर्षि दयानन्द फिल्म समर्थकों की समझ में यही बात नहीं आ रही कि इस फिल्म के विरोधियों का विरोध इस बात पर नहीं कि फिल्म एक सशक्त प्रचार साधन है। इस बात का भी कोई विरोध करता कि आर्य सिद्धान्तों पर फिल्में बनाई जायें। विरोध केवल महर्षि के व्यक्तित्व को फिल्म द्वारा प्रदर्शित करने पर है। यह बात मैंने अपने पूर्व लेख में स्पष्ट की थी।

हम आर्यों को यह बात स्पष्ट समझनी चाहिए कि फिल्म विशुद्ध इतिहास नहीं होता, वह एक प्रकार का दृश्य-काव्य है। फिल्म में तथ्य सर्वथा गौण और छोटा भाग होता है। जबकि काल्पनिक आकर्षण और मनोरंजन मुख्य होते हैं। पात्रों और घटनाओं को काल्पनिक रूपों और उद्भावनाओं का आश्रय लेकर काव्य-नाटक की भांति आकर्षक और मनोरंजक कर चित्रपट पर लाया जाता है। जिस महापुरुष को भी एक बार काव्य नाटक आदि के रूपों में प्रविष्ट करा दिया गया, उसका चरित्र ऐतिहासिक न रहकर काल्पनिक बन जाता है। राम और कृष्ण के चरित्र इसके सुस्पष्ट उदाहरण हैं। धार्मिक पुराणशास्त्र (मिथोलोजी=मिथ्या विद्वान्) प्रत्येक धार्मिक सम्प्रदाय का सुन्दर अंग है। रासलीला में गोपियों के साथ आलिंगन और नृत्य करते हुए भगवान् कृष्ण की मुद्रा भक्तों को सदा मुग्ध करती रहती है। यदि महर्षि दयानन्द को भी एक बार कल्पना क्षेत्र फिल्मी जगत् में उतार दिया गया तो गुर्जरललनाओं के साथ डांडिया नृत्य करते हुये महर्षि की मनमोहिनी छवि भी चित्रपट पर आयेगी ही।

फिल्म उद्योग का मुख्य लक्ष्य है मनोरंजन द्वारा अर्थ प्राप्ति। लोगों को केवल धर्मशिक्षा या आचार शिक्षा देने के लिये कोई लाखों रुपये खर्च कर फिल्म नहीं बनाता। मनोरंजन द्वारा ही अर्थ प्राप्ति होती है। अतः कलाकार महर्षि के जीवन चरित्र में से भी मनोरंजन के अनेक साधन ढूंढ ही लेंगे। यथा बहन की मृत्यु के समय बालक मूलशंकर नृत्य देखने गया हुआ था। महर्षि को पथभ्रष्ट करने के निमित्त विरोधियों द्वारा एक वेश्या महर्षि के पास एकान्त में भेजी गई थी। रमाबाई को कुछ दिन महर्षि ने धर्म और दर्शन शास्त्र के कतिपय स्थल पढ़ाकर उसे स्त्री जाति के उत्थान के लिये जीवन समर्पित करने की प्रेरणा दी थी तथा जोधपुर के राजदरबार में वेश्या नन्हीं जान के नृत्य गान आदि अनेक प्रसंगों में जहां इतिहास सहायक न होगा वहां कल्पना काम देगी। आर्यो, क्या आप ऋषि जीवन को इसी रूप में प्रचार का साधन बनाने पर तुले हो? यदि फिल्म और उपन्यास का विषय एक बार ऋषि दयानन्द को बनाने की छूट देने की भूल कर बैठे तो दयानन्द लीला भी चलेगी ही। तब उसे कौन कैसे रोकेगा? इसी प्रकार काल्पनिक रूपों द्वारा महापुरुषों के इतिहास की हत्या होती है। इस दृष्टि से ऐसी बातों का महर्षि द्वारा विरोध करना सर्वथा उचित था। तथैव महर्षि फिल्म निर्माण के अनुचित कार्य का विरोध कर हम आर्यों को इसे तत्काल रोकना चाहिए।

आवश्यकता

गुरुकुल डिकाडला जिला करनाल को निम्न कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है। प्रधानाचार्य—आचार्य अथवा संस्कृत एम० ए० दो अध्यापक—जे० बी० टी०, एक अध्यापक-बी० ए० बी० एड०, एक संरक्षक—गुरुकुलीय अनुभव शील, एक कार्यालयाध्यक्ष

यथायोग्य वेतन व निवास सुविधायें। २० मार्च तक आवेदन पत्र भेजें। ब्रह्मचारी ओमस्वरूप संचालक

चौबीसी महम सर्वखाप पंचायत के फैसले

९-२-८५ को चौबीसी की सर्वखाप पंचायत महम में और १०-२-८५ को बेरी में ८५ खापों की पचायत हुई। इन पंचायतों में हर बिरादरी के नुमाइन्दों ने बढ़कर हिस्सा लिया व कुछ ऐतिहासिक फैसले किए गए जिनको आप लोगों ने अपने गांव में लागू करना है हजारों मासूम लड़कियों को समाज के जुल्म से बचाना है। लड़कियो को शादी के बाद छोड़ना (एक या दो बच्चो के बाद) समाज के लिए कितना बड़ा कलंक है। उस आदमी का दिल कितना दुखी होता होगा जिसकी लड़की या बहन को शादी के बाद छोड़ दिया जाता। आप अन्दाजा भी नहीं लगा सकते। आपसे दरखास्त है कि जो कमेटियां गावो और हल्कों में चल रही है उनका साथ देकर इस महान् यज्ञ को कामयाब करें। चौबीसो महम का नाम सब खापों में सबसे ऊपर रहे।

फैसले

१—विवाह के सभी संस्कार सगाई से लेकर विवाह तक १) से होगे। केवल विदा और भात के १०१) दिए जा सकते हैं। कन्यादान भी १) का होगा। रिसेपशन की प्रथा गलत है यह बन्द होगी।

२—बारात ५ आदमियों की होगी। लड़की देखने जाना, भात में जाना और रिश्ता करने भी ५ से अधिक नही जायेंगे।

३—मोहकान वगैरा पर ५ से अधिक आदमी या औरत नहीं जायेंगे तथा भाईचारे में चाय बन्द होगी।

४—शादी घुड़चढी या किसी समय भी शराब पीना, अश्लील प्रदर्शन करना, नाचना सभी प्रकार के फिजुल खर्च तथा बाजा बन्द होगा।

५—बारात के वाहन का खर्च लड़के वाला देगा, लड़के के घर संस्कार का खर्चा लड़के वाला और लड़की के घर लड़को वाला देगा।

६—अगली पिछली तील केवल दादास व सास की होगी और किसी की नही। लड़की भेजने या बहु आने पर किसी भी प्रकार का दिखावा नहीं होगा। दान दहेज में स्कूटर, कार, फर्नीचर, रेडियो, टेलि-विजन या किसी भी प्रकार का समान नहीं होगा।

७—शादी के समय फिजूल खर्च, बिजली सजावट, आतिशबाजी आदि नही होगी। विवाह संस्कार सम्भव हो तो दिन में ही अच्छा है।

८—अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन दिया जाए। पर्दे की बुराई को दूर करने का प्रोत्साहन दिया जायेगा।

९—किसी भी बहु-बेटी को जलाने, मारने व अत्याचार करने पर पंचायत पुलिस में मुकद्दमा दायर करके उसकी पैरवी करेगी।

१०—लड़का लड़की को या लड़की लड़के को छोड़े तो उनका फैसला पंचायत द्वारा करने की कोशिश की जायेगी जो भी कसूरवार होगा और पचायत का फैसला नहीं मानेगा उसका सामाजिक बहिष्कार किया जायेगा और जुर्माना किया जायेगा।

११—विवाह सगाई में चौबीसी के लिये १) निकाला जायेगा।

इन नियमों को न मानने वालों का सामाजिक बहिष्कार और जुर्माना जैसा पंचायत तय करेगी किया जायेगा।

नोट—हमारे पास ३०० के करीब लड़की या लड़का छोडने के केस आ चुके हैं जिनमें से अधिकतर का फैसला कर दिया है।

सूरतसिंह

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

प्राप्त सरकार से ... 207/73 रजि० नं० ,	पृष्ठ संख्या १,६६,०८५ ३,

ओ३म्	कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री	सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

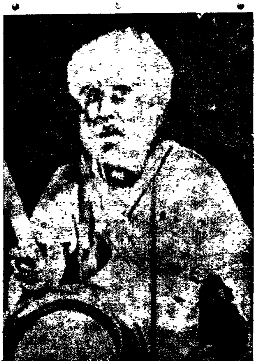
वर्ष १२, अङ्क १६	२१ मार्च १९८५	वार्षिक शुल्क १५)	विदेश में ५ पौंड	एक प्रति ३० पैसे

आर्यसमाज स्थापना दिवस अंक

हरयाणा आर्यसमाज के गायक और कवि—

लोक कवि पंडित बस्तीराम

ले०—डा० भवानीलाल भारतीय



हरयाणा प्रान्त के लोककवि और लोक गायक पं० बस्तीराम का जन्म आश्विन कृ० चतुर्थी १८९८ वि० को हरयाणा राज्यान्तर्गत झज्जर तहसील के खेड़ी सुलतान नामक ग्राम में पण्डित रामलाल के घर हुआ। १६ वर्ष की आयु में महरौली निवासी पं० हरसुख से आपने अध्ययन आरम्भ किया। कुछ काल के पश्चात् बस्तीराम अपने चाचा जीवनराम के साथ बनारस चले गये और वहां कुछ काल तक पढ़ते रहे। १९१४ वि० में सिपाही विद्रोह आरम्भ होने पर ये अपने घर चले आये। गांव के मन्दिर के पुजारी बलदेवशाह से भी कुछ समय तक पढ़ने का अवसर मिला। तीव्र वैराग्य भावना के कारण बस्तीराम ने विवाह नहीं किया।

१९२४ वि० में कुम्भ के अवसर पर पंडित बस्तीराम हरिद्वार पहुंचे। उस समय स्वामी दयानन्द भी कुम्भ में आये हुए थे। स्वामी जी की चर्चा गोसाइयों के गुरु लालगिरि से हुई। पं० बस्तीराम स्वामी जी के निर्भीक विचारों से अत्यन्त प्रभावित हुए तथा मन ही मन उनके अनुयायी बन गये। संवत् १९३३ में दिल्ली दरबार के अवसर पर स्वामी दयानन्द ने धर्मप्रचार शिविर लगाया तथा प्रतिदिन अढाई घण्टे धर्मोपदेश देने लगे। इस अवसर पर पंडित बस्तीराम ने स्पष्ट रूप से वैदिक धर्म स्वीकार कर लेने की घोषणा की। इससे पूर्व वे रुक्मिणी मंगल गाते थे और पौराणिक पंडित की भांति यजमान वृत्ति से आजीविका चलाते थे। अब इन्होंने अपने यजमानों को स्पष्ट कह दिया कि मैं आर्य हूँ। अतः मेरे यजमान भी आर्य बने जिन्हें आर्य धर्म में आस्था नहीं है, वे मेरे चाचा राधाकृष्ण के यजमान बन जायें। १९३४ वि० के माघ मास में पं० बस्तीराम शीतला के भयंकर रोग से आक्रान्त हुए। नेत्रों की ज्योति प्रायः चली गई। वि० संवत् १९३५ में जब स्वामी दयानन्द रेवाडी आए, तो पंडित बस्तीराम भी वहां गए। यहां रानी के तालाब पर जब स्वामी जी के प्रवचन होते थे, तो पंडित बस्तीराम प्रवचनों के पहले और पीछे भजन गाते थे। पंडित बस्तीराम के पौराणिक मत खण्डन के भजनों को सुनकर पौराणिक मण्डली नाराज हुई और रेवाड़ी के राव युधिष्ठिरसिंह से उनकी शिकायत की परन्तु राव साहब तो स्वामी जी की क्रान्तिकारी विचारधारा से पहले ही प्रभावित हो चुके थे। उन्हें वस्तु स्थिति का पूर्ण ज्ञान था। स्वामी जी की प्रेरणा से रेवाड़ी में प्रथम गौशाला की स्थापना हुई। इस कार्य में पंडित बस्तीराम का पूर्ण सहयोग रहा।

अपने अवशिष्ट जीवन में पं० बस्तीराम आर्यसमाज के कवि, प्रचारक और गायक के रूप में पंजाब, हरयाणा, राजस्थान एवं उत्तरप्रदेश में भ्रमण कर वैदिक धर्म प्रचार करते रहे। जब स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल की स्थापना का निश्चय किया, तो पं० बस्तीराम ने हरयाणा के ग्रामों में भ्रमण कर धन संग्रह के कार्य में योग दिया। पं० बस्तीराम यद्यपि संस्कृत के उच्चज्ञाता अथवा शास्त्रज्ञ विद्वान् नहीं थे परन्तु आर्य समाज के सिद्धान्तों से सुपरिचित होने के कारण उनके काव्य में किसी प्रकार का सैद्धान्तिक स्खलन भी नहीं आया है। वे अपनी विशिष्ट शैली में इकतारे पर लोक धुनों में आर्यसमाज के सुधारवादी विचारों को गीतों के माध्यम से प्रस्तुत करते जिसे सुनकर साधारण ग्रामीण जनता अत्यधिक प्रभावित होती थी। अपनी सहज तर्क शैली के बल पर वे सुपठित विद्वानों को शास्त्रार्थों में पराजित भी कर देते थे। इस प्रकार नेत्र ज्योति हीन किन्तु सूर की भांति काव्य प्रतिभा सम्पन्न, कबीर की भांति अलमस्त एवं फक्कड़ स्वभाव का धनी पं० बस्तीराम ११६ वर्ष १० मास २१ दिन की परिपक्व आयु भोगकर श्रावण शुक्ला १२ सं० २०१५ वि० (२६ अगस्त १९५८) दिवगत हुए। पं० बस्तीराम के भजनों और कविताओं का आर्यसमाज में सर्वत्र प्रचार है। धन धन तेरी कारीगरी करतार—जैसे गीत प्रायः पुरानी पीढ़ी के आर्यों की जबान से आज भी सुने जा सकते हैं।

पंडित बस्तीराम कृत साहित्य—

१—पाखण्ड खण्डनी, २—मानस दीपिका, ३—अग्निबाण, ४—क्षत्री भजन संग्रह; ५—भजन मनोरंजनी; ६—ऋषि दयानन्द जीवन कथा विश्वम्भर वैदिक पुस्तकालय गुरुकुल झज्जर (रोहतक) से २०१६ वि० (१९६० ई०) में प्रकाशित; ७—असली अमृतगीता (दो भाग) ८—अमृत कला (दो भाग) ९—बस्तीराम रहस्य (असली शोक भंजनी) १०—गोधन संग्रह, ११—अघमर्षण प्रार्थना, १२—पोप की नाखिर।

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर विशेष—

महर्षि दयानन्द की बुद्धिवाद को देन

प्रो० ओमकुमार आर्य, बौद्धिकाध्यक्ष आर्य वीरदल हरयाणा

गत सदी के उतरार्द्ध को आधुनिक युग के सूत्रपात का काल समझा जाता है। इस दौरान संसार ने विज्ञान, धर्म और राजनीति आदि के महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में विस्मयकारी परिवर्तन और क्रान्तियां देखी। डार्विन का विकासवाद भी इसी अवधि में पूरे प्रभाव और रौब-दाब के साथ प्रतिष्ठित हुआ। यद्यपि डार्विन के समकालीनों और उसके सहाध्यायीओं ने भी विकासवाद के सिद्धान्त की अनेक त्रुटियां अन्तर्विरोधों की ओर इंगित किया था और उसकी प्रामाणिकता पर प्रश्न-चिन्ह लगा दिया था, तथापि यह सत्य है कि आज भी विकासवाद का सिद्धांत पाठ्यक्रमों में गर्व और गौरव के साथ विराजमान है। हमारे जैसे लकीर के फकीर और अंधानुयायी देश में तो यह अब भी ऐसे पढ़ाया जाता है मानों इसकी सत्यता और प्रामाणिकता सदा से ही असंदिग्ध और निर्विवाद रही हो। इस विवेचन से मेरा तात्पर्य यह है कि गत सदी का उत्तरार्द्ध उन सिद्धांतों और मान्यताओं को लेकर आया जिसने तथाकथित बुद्धिवाद के झण्डे ऊंचे आकाश में लहराये और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की स्थापना के नगाड़े बजाये।

प्रश्न पैदा होता है कि बुद्धिवाद के इस विशाल आयोजन और शोभा-यात्रा मे क्या भारत मूक दर्शक ही बना रहा या कुछ योगदान भी दिया। उस काल में भारत की भूमि पर एक ऐसा ऋषि आ चुका था जिसके वैज्ञानिक और अत्यन्त विवेकशील चिन्तन के सामने विश्व का समस्त बुद्धिवाद आज भी बौना नजर आता है। वह आदित्य ब्रह्मचारी दयानन्द गुरुवर विरजानन्द के चरणों में बैठकर तर्क मीमांसा ज्ञान, बुद्धिवाद आदि के ऐसे सूत्र सीख चुका था कि कार्यक्षेत्र में उतरते ही उसने अपने प्रखर बुद्धिवाद और विलक्षण तर्क से विश्व को आश्चर्य चकित कर दिया। बुद्धिवाद को महर्षि दयानन्द की देन अपने आप में अनूठी और अनुपम है।

बुद्धिवाद का एक उल्लेखनीय पहलू यह है कि इसका आग्रह है कि किसी भी मान्यता को बुद्धि की कसौटी पर कसकर विवेकपूर्वक विचार करके ही मानना चाहिये। 'बाबा वाक्यं प्रमाणम्' या 'सत्य वचन महाराज' या धर्म में 'अकल की दखल नहीं' आदि कथनों से बुद्धिवाद का सीधा टकराव और संघर्ष था और अब भी है। बुद्धिवाद को विज्ञान के क्षेत्र में भी रुढ़िवादिता से संघर्ष करना पड़ा पर धर्म में तो प्रवेश पाने के लिये इसे कठोर अग्नि-परीक्षा में से गुजरना पड़ा। धर्म सरिता में बसे हुये अन्ध-विश्वास रूपी मगर मच्छों ने बुद्धिवाद रूपी साधारण सी मछली को निगल जाने की बहुत कोशिश की पर उनकी एक न चली। धर्म को बुद्धिवाद के साफ सुथरे धरातल पर प्रतिष्ठित करवाना वास्तव में ऋषि दयानन्द जैसे निर्भीक धर्माचार्यों के प्रयत्नों का ही फल था।

सन् १८७५ में ऋषि द्वारा लिखित अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' और उसी वर्ष उन द्वारा स्थापित 'आर्यसमाज' ये दोनों ही बुद्धिवाद के दीप स्तम्भ हैं। सत्यार्थप्रकाश का प्रत्येक पृष्ठ सब प्रकार के अन्धविश्वास के विरुद्ध खुली बगावत है। इसके तर्क-तीरों का जवाब अन्धविश्वासी खेमा आज तक नहीं दे पाया है। पोंगापंथियों ने अपनी खिसियाहट में अनापि प्रलाप तो बहुत किया पर तर्क संगत उत्तर कोई नहीं दिया। महर्षि ने आर्यसमाज के दस नियम बनाये। उनको ध्यान से देखने पर कोई भी निष्पक्ष बुद्धिवादी और विचारशील व्यक्ति यह कहे बिना नहीं रह सकता कि ये दस नियम बुद्धिवाद की उन्मुक्त और उच्चतम संभव उड़ान का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं। उदाहरण के लिये "अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए" इसी नियम को लीजिए। किसी भी संस्था ने कभी ज्ञान की इतनी खुली वकालत और अज्ञान की इतनी स्पष्ट निन्दा नहीं की होगी और धार्मिक संस्था के लिये तो आज से ११० साल पहले यह सोच पाना भी असम्भव था। दयानन्द उस जमाने में प्रखर बुद्धिवाद लेकर आया जबकि अन्य लोग बुद्धिवाद की सही परिभाषा भी निश्चित नहीं कर पाये थे।

उन्होंने ईश्वर के स्वरूप से लेकर पूजापाठ की रोजाना की विधि तक को बुद्धिवाद के आधार पर रखकर समझाया। हां वे श्रद्धालु, धर्मानुरागी, वेद में विश्वास रखने वाले आस्तिक महापुरुष थे अतः उन्होंने बुद्धिवाद और तर्क के सच्ची श्रद्धा के घर में घुसपैठ तो कभी नही करने दी। सात्त्विक श्रद्धा तर्क और शुष्क बुद्धिवाद से परे की चीज है, यह वे सदा मानते और जानते थे। इसके अतिरिक्त जो कुछ गला सड़ा घिसापिटा कूड़ा कचरा समाज में पड़ा था वह उन्होंने बुद्धिवाद की प्रचण्ड अग्नि में जलाकर भस्म कर दिया। इसीलिये तो प्रसिद्ध सन्त रोम्यां रोलां (फ्रांस) और योगिराज अरविन्द सरीखे विचारकों और तत्त्व-चिन्तकों ने उनके बुद्धिवाद के समक्ष मस्तक झुकाया था।

अन्त में निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन की आहुति देकर भी बुद्धिवाद की ज्योति जलाई। यह उन्हीं के वेदों पर आधारित बुद्धिवादी चिंतन का प्रभाव था कि अवतारों की बस्ती में खलबली मची, भूत-प्रेत, डायन, पिशाच आदि के डेरे उजड़ गये, अंधविश्वास के गढ ढह गये और पण्डों मस्टण्डों के पैर उखड़ गये। वर्णाश्रम की वेदसम्मत मान्यता ने जन्मगत जाति प्रथा को चुनौती दी, स्त्री शिक्षा के दरवाजे खोले, विधवा पुनर्विवाह को समय की मांग मानते हुए धर्म गुरुओं से स्वीकृति मिली, शुद्धि का शंख बजा। कभी कोई निष्पक्ष इतिहासकार बुद्धिवादी आचार्यों और क्रान्तिकारी धर्म गुरुओं का इतिहास लिखने बैठेगा तो उसे दुनियां के वैज्ञानिकों और बुद्धिवादियों में शीर्ष स्थान दयानन्द को देना पड़ेगा। दयानन्द की वाणी और बुद्धि की सिंहगर्जना थी। उसके महान् कार्य को देखते हुए ही तो कवि को लिखना पड़ा था—

फकीरी तेरी सभी में जान देगी।
दयानन्द खलकत लकार सदा नाम लेगी॥

वैदिक धर्म में प्रवेश

हिन्दू शुद्धि समिति के मन्त्री स्वामी सेवानन्द जी के प्रयत्न से ग्राम कतलूपुर जिला सोनीपत के वासी श्री मुख्तारखान सुपुत्र श्री मोगाखान ने अपने परिवार को गत सप्ताह यज्ञ करने के बाद स्वेच्छा से वैदिक धर्म में प्रवेश कर लिया है। अब उनका नाम श्री मुख्तार सिंह हो गया है।

केदारसिंह आर्य
कार्यालयाध्यक्ष

वैदिक पुत्रेष्टि पद्धति

(महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित)

आचार्य सुदर्शनदेव सभा उपमन्त्री

सभा के सर्वहितकारी साप्ताहिक पत्र में पं० वीरसेन वेदश्रमी ने यज्ञ से पुत्र प्राप्ति होती है और उसके लिए पुत्रेष्टि करना, कराना आवश्यक है, इस विषय का एक लेख प्रकाशित किया है। इसे पढ़कर डा० देशराज खोरखांट रोहतक आदि अनेक जिज्ञासुओं के पत्र सभा कार्यालय में प्राप्त हुए हैं और व्यक्तिगत रूप से कई आर्यों ने मुझ से भी जिज्ञासा प्रकट की है। श्री पं० वेदश्रमी जी ने अपने लेख में इस सम्बन्ध में स्पष्ट कुछ नहीं लिखा। केवल शब्द जाल से कागज, स्याही और अपना समय खराब किया है। इस परिस्थिति में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित वैदिक पुत्रेष्टि पद्धति का लोकोपकार के लिए यहां उल्लेख करता हूं–

पुत्रेष्टि की परिभाषा

देवपूजा—पुत्रेष्टि शब्द का अर्थ पुत्र प्राप्ति के लिए यज्ञ करना है। यज्ञ शब्द के आचार्य पाणिनि मुनि ने देवपूजा, संगतिकरण और दान यह तीन अर्थ बतलाए हैं। देवों का देव महादेव परमेश्वर है। जब यजमान को किसी अभीष्ट ऐश्वर्य की इच्छा होती है तब वह सर्वशक्तिमान् परमेश्वर से ही उसकी प्रार्थना करता है क्योंकि जगत् के सब पदार्थ परमात्मा के ही बनाए हुए हैं और उसने अपने छोटे आत्मा को उपयोग के लिए प्रदान किए हैं। इसलिए पुत्र की प्राप्ति के लिए भी यजमान उसी दयालु परमात्मा से यज्ञ के माध्यम से प्रार्थना करता है। उसकी स्तुति गाता है।

देव का अर्थ वेदादि शास्त्रों का विद्वान् भी है। यजमान उन्हें यज्ञ में निमन्त्रित करता है। उनकी अन्न और धन आदि से पूजा करता है और यजमान जिस कामना से यज्ञ करता है विद्वान् उस कामना की सिद्धि के लिए उसे वेदोक्त उपायों का उपदेश करते हैं।

यज्ञ से पृथिवी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, सूर्य आदि देव भी संस्कृत होते हैं, जिसका विस्तृत वर्णन महर्षि दयानन्द सरस्वती ने यजुर्वेद भाष्य में किया है। अधिक जानने के इच्छुक पाठक महर्षि यजुर्वेद भाष्य पर मेरी लिखी भास्कर नामक पढ़कर पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

संगतिकरण—

ईश्वर से केवल प्रार्थना करते जाना और तदनुसार पुरुषार्थ न करना यह संगतिकरण नहीं। संगतिकरण जब होता है—जैसे कहें वैसा करें। इसलिए जिस विषय में यजमान यज्ञ का अनुष्ठान करता है, उन मन्त्रों में यजमान के लिए कुछ कर्त्तव्य कर्मों का भी ईश्वर उपदेश करता है। यदि यजमान मन्त्र पाठ मात्र करता जाए और वेदोक्त आदेश का क्रियात्मक आचरण न करे तो उसका कोई लाभ नहीं।

दान—

यजमान जिस ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए यज्ञ करता है, तद्विषयक अभीष्ट दान भी आवश्यक है। पुत्रेष्टि विषयक ऋतुदान का विस्तृत वर्णन आगे किया जाएगा।

यह प्रचलित यज्ञ देवपूजा, संगतिकरण और दान की उत्कृष्ट भावना के विकास का ऋषियों ने मानव के लिए उत्तम प्रतीक बनाया है। प्रत्येक श्रेष्ठ कार्य में देवपूजा, संगतिकरण और दान यह तीनों मिश्रित होते हैं। इसलिए सब श्रेष्ठ कार्यों को यज्ञ कहा जाता है। इन तीनों के बिना पुत्र प्राप्ति तो क्या, कोई भी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता इसलिए सब उत्तम कार्य यज्ञ से ही सिद्ध होते हैं।

एक प्रश्न उत्पन्न हो सकता है कि जो यज्ञ को जानते भी नहीं पुत्र तो उनके यहां भी हो जाते हैं। पशुओं में भी सन्तान उत्पन्न होते हैं। फिर यज्ञ की क्या आवश्यकता है। इसका उत्तर महर्षि ने संस्कार विधि की भूमिका में दिया है कि यज्ञ अर्थात् वेदोक्त संस्कार से शरीर और आत्मा सुसंस्कृत (शुद्ध) होते हैं और उससे मानव को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूप इन चार प्रकार के पुरुषार्थ की प्राप्ति होती है और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं। इसलिए यज्ञ एवं संस्कार का करना कराना मानव के लिए परम आवश्यक है।

पुत्र प्राप्ति के उपाय

आयु—जैसे बीज और खेत के उत्तम होने से अन्न आदि पदार्थ भी उत्तम होते हैं वैसे उत्तम बलवान् स्त्री, पुरुषों के सन्तान भी उत्तम होते हैं। इसलिए ब्रह्मचर्य पालन और विद्याभ्यास से स्त्री और पुरुष उत्तम बनें। इसलिए विवाह के समय कन्या की आयु १६ वर्ष और पुरुष की आयु २५ वर्ष अवश्य हो। क्योंकि १५ वर्ष से पूर्व कन्या के गर्भाशय में बालक के शरीर को यथावत् बढ़ने का अवकाश और गर्भ के पोषण का सामर्थ्य नहीं होता और २५ वर्ष के बिना पुरुष का वीर्य भी उत्तम नहीं होता। सुश्रुतकार कहता है कि सोलह वर्ष से कम अवस्था की स्त्री में २५ वर्ष से कम अवस्था का पुरुष यदि गर्भाधान करता है तो वह गर्भ उदर में ही बिगड़ जाता है और जो उत्पन्न भी हो तो अधिक नहीं जीता। कभी जी भी जावे तो उसका शरीर एवं इन्द्रियां अत्यन्त दुर्बल होती हैं। इसलिए अत्यन्त बाला अर्थात् १६ वर्ष की अवस्था से कम अवस्था की स्त्री में कभी गर्भाधान नहीं करना चाहिए।

सुश्रुत शारीरस्थान अध्याय १०॥

जो अपने कुल की उत्तमता, उत्तम सन्तान, दीर्घायु, सुशील, बुद्धि और बल पराक्रमयुक्त विद्वान् श्रीमान् करना चाहे वे १६ वर्ष से पहले कन्या का और २५ वर्ष से पहले पुत्र का विवाह न करें। यही सब सुधारों का सुधार, सब सौभाग्यों का सौभाग्य और सब उन्नतियों की उन्नति करने वाला कर्म है। क्रमशः

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ७३ वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष में १५ मार्च से ३१ मार्च तक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कुरुक्षेत्र में आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर लगाया जा रहा है। शिविर में आर्य वीर दल के प्रधान उपसंचालक डा० देवव्रत व्यायामाचार्य स्वयं प्रशिक्षण देंगे। प्रधान संचालक श्री बालदिवाकर हंस जी भी मार्ग दर्शन करेंगे। इस शिविर में केवल चुने हुए युवक ही भाग लेंगे। भोजन शुल्क ४ रुपये प्रतिदिन के हिसाब से देय होगा। गुरुकुल का वार्षिकोत्सव भी २९ से ३१ मार्च को होगा।

धर्मदेव विद्यार्थी

गुरुकुल कुरुक्षेत्र विशेषांक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित गुरुकुल कुरुक्षेत्र का वार्षिक उत्सव २९ से ३१ मार्च तक हो रहा है। उत्सव के उपलक्ष में सर्वहितकारी का अगला अंक (२८ मार्च) गुरुकुल कुरुक्षेत्र विशेषांक प्रकाशित होगा। इस अंक में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली तथा गुरुकुल का सचित्र कार्य विवरण सम्बन्धी प्रचारोपयोगी लेख पठनीय होंगे।

व्यवस्थापक

हरयाणावासियों से अपील

३१ मार्च रविवार को १० बजे भिवानी स्टैण्ड रोहतक में हरयाणा रक्षा महासम्मेलन को सफल करने के लिए हरयाणावासियों से अपील करते हैं कि प्रत्येक जिले से भारी संख्या में रोहतक पहुँचकर अपने संगठन तथा शक्ति का परिचय देवें ताकि राष्ट्र विरोधी अकालियों की चुनौती का मुकाबला करने की सामूहिक तैयारी की जावे।

ओमानन्द सरस्वती	म० भरतसिंह	प्रो० शेरसिंह
संरक्षक	संयोजक	अध्यक्ष

हरयाणा रक्षा वाहिनी

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

टंकारा में ऋषिबोधोत्सव और रजत जयन्ती का अपूर्व समारोह सम्पन्न

शिवरात्रि के पर्व को सारे देश के आर्य सामाजिक जगत् में ऋषि बोधोत्सव के रूप में प्रतिवर्ष उत्साह से मनाया ही जाता है, परन्तु इस वर्ष टंकारा में १६ से १८ फरवरी तक यह समारोह अपूर्व रहा। इसके साथ ही टंकारा स्थित महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय की इस वर्ष रजत जयन्ती होने के कारण इस समारोह को चार चांद लग गये।

देश के विभिन्न भागों से आए लगभग ५ हजार नरनारी उक्त दोनों स्थानों (ऋषि दयानन्द जन्म स्थान एवं ऐतिहासिक शिवमन्दिर) को देखकर भाव विभोर हुए बिना नहीं रहे। टंकारा की गलियों में जब शोभायात्रा निकली तो अनेक वृद्ध पुरुषों और वृद्ध माताओं की आंखों से यह सोच सोच कर प्रेमाश्रु बहने लगे कि कभी इन्हीं गलियों में देव दयानन्द भी अपने बचपन में खेला करते होंगे। कुछ लोग तो उस रज को अपने माथे से भी लगाते देखे गये। इस दृश्य को देखकर कई पत्रकार भी गद्‌गद हो गए।

महात्मा आर्य भिक्षु जी व्याख्यान वाचस्पति की अध्यक्षता में १७ फरवरी की रात को जो श्रद्धांजलि सभा हुई, उसमें प्रसिद्ध उद्योगपति, हीरो साईकिल के प्रबन्ध निदेशक और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री सत्यानन्द मुंजाल ने जब ऋषि के चरणों में अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि टंकारा की भूमि का कण कण इतना पवित्र है कि मन करता है इस मिट्टी को अपने सारे शरीर पर मल लूं तो मंच पर बैठे अनेक बुद्धिजीवियों को रस की खान जन्मना पठान रसखान की यह उक्ति याद आए बिना नहीं रही—

या लकुटी अरू कामरिया पर राज तिहूं पुर को तजि डारौं।

रामनाथ सहगल, मन्त्री स्मारक ट्रस्ट टंकारा

कन्या गुरुकुल खानपुर कलां का उत्सव सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भान्ति भक्त फूलसिंह जी द्वारा स्थापित तथा चौ० माडूसिंह जी द्वारा संचालित कन्या गुरुकुल खानपुर कलां जि० सोनीपत का वार्षिक उत्सव २३, २४ फरवरी को धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

उत्सव से पूर्व आचार्य विष्णुमित्र जी द्वारा यज्ञ होता रहा। उत्सव पर ब्र० कर्मपाल जी, चौ० राजेन्द्रसिंह पंचायत मन्त्री, बहन शकुन्तला भगवाडिया मन्त्री, बहन प्रसन्नी देवी मन्त्री हरयाणा आदि नेताओं तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजन मण्डलियां पंडित चिरञ्जीलाल जी, पं० मुन्शीलाल एवं श्री खेमसिंह, जगबीरसिंह आदि के मनोहर गीत हुए। सभा को वेदप्रचारार्थ ६००) दिये गये।

धर्मचन्द शास्त्री

आर्यसमाज मन्धार का वार्षिकोत्सव संपंन

६ से ८ मार्च तक आर्यसमाज मन्धार का वार्षिकोत्सव बड़ी धूम धाम के साथ मनाया गया जिसमें आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान् आचार्य प० सत्यप्रिय शास्त्री, महाशय हरलाल, चौ० रवेलसिंह, पंडित विद्याभूषण, प० शेरसिंह जो इत्यादि के सुमधुर भजन और उपदेश हुये सभा को वेदप्रचार के लिए ४०१), दिया गया।

मन्त्री आर्यसमाज मन्धार, जिला कुरुक्षेत्र

आर्यसमाज जुबल का प्रथम वार्षिकोत्सव

९, १० मार्च को आर्यसमाज जुबल का प्रथम उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें प्रथम पूज्य स्वामी सदानन्द जी सरस्वती महाशय हरलाल जी, पं० विद्याभूषण, पं० शेरसिंह पं० जयतराम की भजन मण्डली ने भाग लिया। यह उत्सव महाशय हरलाल जी के पुरुषार्थ से हुआ। उत्सव में यज्ञ हुआ यज्ञ पर ११ युवकों ने यज्ञोपवीत लिये।

मन्त्री आर्यसमाज जुबल (कुरुक्षेत्र)

वैदिक आश्रम गूगोढ़ का वार्षिकोत्सव

६ मार्च को वैदिक आश्रम गूगोढ़ जिला रोहतक का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रातः ९ बजे बृहद् यज्ञ डा० देवव्रत आचार्य उपप्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। अनेक व्यक्तियों ने दुर्गुण त्यागकर सन्मार्ग पर चलने का संकल्प लिया।

पूर्णाहुति के पश्चात् ब्र० रामवीर शास्त्री गुरुकुल झज्जर, महाशय फतहसिंह सिद्धान्त शास्त्री गुरुकुल झज्जर, आचार्य सुरेन्द्र लूखी, पं० खुशीराम रेवाड़ी, म० विश्वमित्र लूखी, म० भगवानदास रेवाड़ी तथा अन्य उपदेशकों के भजनोपदेश और प्रवचन हुए। इस समारोह की अध्यक्षता स्वामी शरण्यनन्द जी ने की। डा० देवव्रत जी ने यजुर्वेद के ४० वें अध्याय पर सारगर्भित प्रवचन दिया।

भोजन के पश्चात् परम्परागत होली का गायन, कबड्डी प्रतियोगिता और अन्य क्रियाक्रम सोत्साह सम्पन्न हुये।

इस आश्रम का संचालन स्वामी व्रतानन्द जी कर रहे हैं। आप ब्रह्मचर्य से ही सन्यास ग्रहण करके आश्रम को केन्द्र बनाकर इस क्षेत्र में आर्यसमाज का प्रचार प्रसार कर रहे। इस बार आश्रम में यज्ञशाला बनाने का भी निश्चय किया गया। आर्यसमाज के कार्य क्षेत्र को बढ़ाने के लिए यह आश्रम इस क्षेत्र में प्रकाश स्तम्भ की भांति मार्ग दर्शन करा रहा है।

फतहसिंह भण्डारी
प्रधान आर्यसमाज गुरुकुल झज्जर

आर्यसमाज टोहाना का वार्षिक उत्सव

२९, ३०, ३१ मार्च १९८५ को होने जा रहा है जिसमें आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान् पण्डित साधु सन्यासी तथा कई भजन मण्डलियां भाग ले रही हैं। कन्या गुरुकुल खरल की छात्राएं में तथा छात्र सामवेद पारायण यज्ञ में वेदपाठ करेंगे तथा ब्रह्मचर्य शक्ति परीक्षण में भाग लेंगे।

डा० रामनारायण प्रधान

रोहतक में हरयाणा रक्षा महासम्मेलन की तैयारी

रोहतक १८ मार्च रात्रि को दुर्गाभवन रोहतक में रोहतक शहर के कार्यकर्त्ताओं की बैठक सम्पन्न हुई। इस बैठक में ३१ मार्च रविवार को प्रात. १० बजे भिवानी स्टैण्ड रोहतक में होने वाले हरयाणा रक्षा महासम्मेलन की तैयारी के लिए स्वागत समिति का गठन किया गया है। इसमें चौ० निहालचन्द गुगनानी, वैद्य भरतसिंह आर्य, परमानन्द तुली, प० श्यामसुन्दर कत्याल, श्री भगवानदास मक्कड़, श्री हंसराज, श्री मीरसिंह एडवोकेट, श्री इन्द्रसिंह हुल एडवोकेट, बा० रघुवीरसिंह, स्वामी अमरानन्द, मिस्त्री रणसिंह, महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी चौ० बदलूराम, श्री बलराज कोशिक आदि।

इस बैठक प्रो० शेरसिंह ने कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि अकाली पुनः दिल्ली तक मार्च करने की धमकी देकर अपनी अनुचित मांगें मनवाना चाहते हैं। जिन अकालियों पर राष्ट्रद्रोह के आरोप लगाकर जेलों में बन्द किया गया था, उन्हें सरकार ने बिना शर्त रिहा कर दिया है। उनका पंजाब में अकाली भव्य स्वागत कर रहे हैं।

प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने आनन्दपुर साहब प्रस्ताव को राष्ट्र विरोधी कहकर लोकसभा तथा विधानसभा के चुनाव में विजय प्राप्त की थी, परन्तु वे अब अकालियों के साथ समझौता करने के लिये आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव में कुछ बातों को उचित मानने का वक्तव्य दे रहे हैं। इस प्रकार हरयाणा को आशंका है कि कहीं समझौता करते समय हरयाणा के हितों की उपेक्षा की जायेगी। अकाली दल चण्डीगढ तथा अबोहर फाजिलका के हिन्दी भाषी क्षेत्र को भी पंजाब में रखने के लिये आन्दोलन कर रहे हैं। प्रो० शेरसिंह ने श्री भजनलाल के महा पंजाब के प्रस्ताव को राष्ट्रविरोधी बताते हुए कहा कि अकाली भी हरयाणा के क्षेत्रों को पंजाब में मिलाने का प्रयत्न कर रहे हैं। वे पंजाब से बाहर रहने वाले सिखों को पंजाब में बसाकर और वहां से हिन्दुओं को हिंसक गतिविधियां करके पंजाब से बाहर निकालने की योजना बना रहे हैं। अतः महापंजाब बनने से हरयाणा तथा राष्ट्र की हानि होगी। अकाली केवल हरयाणा को ही अपने खालिस्तान बनाने के मार्ग में रुकावट समझते हैं। आपने ३१ मार्च के हरयाणा रक्षा महासम्मेलन को सफल करने के लिये हरयाणा की जनता को सहयोग करने की अपील की।

आर्यसमाजों के आगामी वार्षिक उत्सव

वैदिक साधनाश्रम यमुनानगर जिला अम्बाला	२२ से २४	मार्च
आर्यसमाज अर्जुननगर गुड़गाव	२२ से २४	,,
,, गुरुकुल घरोण्डा जिला करनाल	२२ से २४	,,
,, मोखरा जिला रोहतक	२२ से २४	,,
,, बरहाना ,, ,,	२२ से २४	,,
,, ठोल जिला कुरुक्षेत्र	२९, ३०, ३१	,,
,, शेखपुरा जिला करनाल	२९, ३०, ३१	,,
,, कोसली जिला रोहतक	२९, ३०, ३१	,,
गुरुकुल कुरुक्षेत्र	२९, ३०, ३१	,,
,, सिंहपुरा सुन्दरपुर जिला रोहतक	२९ से ३१	,,
आर्यसमाज मुवाना जिला जीन्द	२९, ३०, ३१	,,
,, साबापुर जिला अम्बाला	२९ से ३१	,,
,, पिपलीवाला जिला अम्बाला	१, २, ३	अप्रैल
,, नरवाना जिला जीन्द	५ से ७	,,
,, रैवाड़ी जि० महेन्द्रगढ	१६ से १८	,,
,, जाजनपुर जि० कुरुक्षेत्र	५ से ७	,,

जो आर्यसमाजें उत्सव रखना चाहते हैं, वे सभा से पूर्व पत्र व्यवहार करके अपनी तिथियां सुरक्षित करवा लेवें। सभा मन्त्री

हरयाणा रक्षा वाहिनी के शिष्ट मण्डल ने रक्षा मन्त्री को ज्ञापन दिया

हरयाणा रक्षा वाहिनी का शिष्ट मण्डल प्रो० शेरसिंह के नेतृत्व में भारत के रक्षामन्त्री श्री नरसिंहराव से १९ मार्च को नई दिल्ली में मिला। शिष्टमण्डल में अबोहर के मा० तेगराम पूर्व विधायक, चौधरी हरकिशनसिंह मलिक पूर्व सेसनजज, श्री आश्चर्यलाल बक्शी प्रधान सनातन धर्म सभा यमुनानगर, चौ० निहालचन्द गुगनानी उपप्रधान आर्य प्रादेशिक सभा हरयाणा, रोहतक, वैद्य रामलाल यमुनानगर सम्मिलित थे। शिष्ट मण्डल ने आधा घण्टे तक श्री नरसिंहराव से भेंट की और हरयाणा रक्षा वाहिनी की ओर से ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए अनुरोध किया कि—

१—राष्ट्र विरोधी आनन्दपुर प्रस्ताव को स्वर्गीया प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की भांति अस्वीकार कर दिया जावे।

२—१९७० के ऐवार्ड के अनुसार अबोहर फाजिलका क्षेत्र हरयाणा में मिला दिये जायें।

३—सतलुज यमुना लिंक नहर का निर्माण एक वर्ष के भीतर पूरा करने का आश्वासन दिया जाये। यदि हरयाणा की उपरोक्त न्यायोचित मांगे स्वीकार न की गईं तो हरयाणा की जनता अपने हितों की रक्षा हेतु हिन्दी रक्षा आन्दोलन की भांति आन्दोलन आरम्भ करेगी। श्री भजनलाल के महापंजाब के प्रस्ताव को किसी भी मूल्य पर स्वीकार नहीं किया जायेगा।

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ
संयोजक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अंतरंग में १७ मार्च के महत्वपूर्ण निश्चय

१—सभा का वार्षिक चुनाव १९ मई को रोहतक में होगा।
२—आर्य वीर दल हरयाणा के अधिष्ठाता श्री धर्मदेव विद्यार्थी मनोनीत
३—यमुनानगर में आर्य भजनीक प्रशिक्षण दिया जायेगा।

१ सभा का वार्षिक अधिवेशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) १९ मई १९८५ को सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक में होना निश्चित हुआ है। सभा से सम्बधित आर्यसमाजों से निवेदन किया गया है कि वे ३० अप्रैल तक वेदप्रचार दशांश तथा सर्वहितकारी प्राप्तव्य धनराशि सभा को भेज देवें, ताकि उनके प्रतिनिधियों को समय पर चुनाव का ऐजण्डा भेजा जावे।



२—आर्य वीर दल हरयाणा का अधिष्ठाता

आर्य वीर दल हरयाणा के लिये अधिष्ठाता पद पर आर्य युवक नेता श्री धर्मदेव जी विद्यार्थी कुरुक्षेत्र को मनोनीत किया गया है। नवयुवकों को आर्यसमाज के सम्पर्क में लाने के लिए हरयाणा भर में प्रशिक्षण शिविर लगाये जायेंगे।

३—आर्य भजनीक प्रशिक्षण के लिए प्रवेश

आर्यसमाज के प्रचार कार्य में प्रसार करने के लिए दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर जिला अम्बाला में भजनीक प्रशिक्षण के लिये प्रवेश आरम्भ करने का निश्चय किया गया है। इच्छुक महानुभाव अपने प्रार्थना पत्र भेजकर अपना स्थान सुरक्षित करा लेवें।

हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए संघर्ष का बिगुल बज गया

भारत सरकार एक वर्ष ३१ मार्च १९८६ तक सतलुज व्यास लिंक नहर को पूरा करने का आश्वासन देवे-- अबोहर फाजिल्का को हरयाणा में तुरन्त मिलाने की मांग

३१ मार्च को रोहतक में हरयाणा रक्षा महासम्मेलन का आयोजन

रोहतक १७ मार्च (केदारसिंह आर्य द्वारा) हरयाणा रक्षा वाहिनी की एक आवश्यक बैठक दयानन्द मठ, रोहतक में प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में हरयाणा के कोने कोने से भारी संख्या में नेताओं तथा कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया।

सुप्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को आह्वान करते हुए कहा कि हरयाणा को देवभूमि के अस्तित्व की रक्षार्थ संघर्ष करने के लिए तैयार हो जावें। हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल महापंजाब का नारा लगाकर हरयाणा को पुन: पंजाब में सम्मिलित करने का षड्यन्त्र कर रहे हैं। उग्रवादी अकाली भी आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव की आड मे हरयाणा के सिरसा हिसार, कुरुक्षेत्र, करनाल तथा अम्बाला के क्षेत्रों को खालिस्तान में मिलाने के लिए भारत सरकार पर दबाव डाल रहे हैं। इस प्रकार कुछ नेता हरयाणा मे फूट डालने के लिए रोहतक, सोनीपत, गुड़गांव तथा फरीदाबाद को दिल्ली में सम्मिलित कराने का सुझाव दे रहे हैं। हरयाणा को तोड़ने के लिए चारों ओर से खतरा बढ़ रहा है। अत: हरयाणावासियो को अपने प्रदेश को भारत के नक्शे में रखने हेतु बड़े से बड़ा बलिदान करने का समय आ गया है। यदि हरयाणा समाप्त हो गया तो राष्ट्र की सुरक्षा भी खतरे मे पड़ जायेगी। हरयाणा के वीरो ने सदा ही भारत की रक्षा की है। अकालियों ने जब ऐशियाड खेलों में दिल्ली आकर गड़बड़ करने का यत्न किया तो हरयाणा की सीमा से उन्हें दिल्ली नही घुसने दिया था। यदि दिल्ली तक महापंजाब बन जायेगा तो उग्रवादी भारत की राजधानी दिल्ली तक आसानी से पहुंचकर पंजाब की भांति दिल्ली के गुरुद्वारों मे भी राष्ट्र विरोधी गतिविधियां करेंगे। हरयाणा क्षेत्र में भी अकाली हिंसक आन्दोलन करके वातावरण को अशान्त रखेंगे।

हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने वर्तमान परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुये कहा कि राष्ट्र विरोधी अकालियो के नेताओं को जेलों से बिना शर्त बाहर निकाल दिया है। वे पूर्व की भांति अपनी अनुचित मांगे मनवाने के लिए करो या मरो का नारा लगा रहे हैं। सतलुज व्यास नहर की खुदाई के लिये करोड़ों रुपया पंजाब को दिया जा चुका है, परन्तु नहर की खुदाई का काम ठप्प पड़ा है। पानी तथा बिजली के अभाव के कारण हरयाणा को अरबों रुपये की हानि हो रही है। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपने ऐवार्ड में अबोहर व फाजिल्का को हरयाणा को दिया था। परन्तु अकाली अब चण्डीगढ तथा अबोहर फाजिल्का दोनों को हड़पना चाहते हैं। अबोहर फाजिल्का हिन्दी भाषी क्षेत्र हैं, परन्तु वहां हिन्दी की पढ़ाई की सुविधा नहीं है। पंजाबी भाषा को बलात् पढ़ाया जा रहा है। ये क्षेत्र बहुत ही उपजाऊ है। हरयाणा में मिलने पर हरयाणा की सीमा पाकिस्तान के साथ होने पर उग्रवादियों का पाकिस्तान में आना जाना बन्द हो जायेगा। श्री भजनलाल ने महापंजाब का शोशा छोडकर अकालियों की हरयाणा विरोधी मांगों का समर्थन किया है। हरयाणा को पंजाब में मिलाने की मांग करके हरयाणा के हितों की उपेक्षा की जा रही है। जब तक हरयाणा पंजाब में रहा तब तक हरयाणा के क्षेत्रों के साथ अन्याय व भेदभाव होता रहा। अत: हरयाणा तथा राष्ट्र का हित इसी में है कि हरयाणा का अस्तित्व बना रहे।

आपने हरयाणा के कुछ जिलों को दिल्ली में मिलाने की आलोचना करते हुए कहा कि इन जिलों की भूमियां कालोनियां बनाने तथा कारखाने खोलने के लिये सरकार सस्ते भाव में खरीदकर जमींदारों को भूमिहीन बना देगी।

अत: हरयाणा के हितों की सामूहिक रक्षा के लिये आपसी मतभेद भुलाकर आन्दोलन करना जरूरी हो गया है।

चौधरी धर्मसिंह राठी पूर्व विधायक, मा० तेजराम पूर्व विधायक अबोहर, चौ० आदिलाल जाखड़ फाजिल्का, श्री नरदेव शास्त्री, श्री देवदत्त विज करनाल, श्रीमती सुलोचना देवी मलिक, राव रामचन्द्र आर्य रेवाड़ी, वैद्य हरिचन्द्र नारनौल, प्रिंसिपल गुनसिंह, चौधरी निहालचन्द गुगनानी, डा० रघबीरसिंह, वैद्य भरतसिंह आर्य रोहतक, मास्टर निहालसिंह आर्य, श्री ओमप्रकाश दिवाकर बेरी, डा० रणबीर सिंह सांगवान सिरसा, बख्शी अचरजलाल यमुनानगर, श्री प्रतापसिंह शास्त्री, मा० बद्रीप्रसाद आर्य जीन्द, पंडित फूलचन्द निडर भिवानी, महत्ता कन्हैयालाल फरीदाबाद, चौधरी हरकिशनसिंह मलिक सैसनजज श्री भद्रसेन शास्त्री, श्री परशुराम आर्य सोनीपत, ब्रह्मचारी धर्मदेव विद्यार्थी गुरुकुल कुरुक्षेत्र आदि नेताओं ने स्वामी ओमानन्द जी तथा प्रो० शेरसिंह के प्रस्ताव का समर्थन किया तथा हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए प्रो० शेरसिंह द्वारा किये जा रहे कार्यों की सराहना की और सभी ने एक स्वर से विश्वास दिलाया कि इनके नेतृत्व में तन, मन तथा धन से पूरा सहयोग देंगे।

स्वामी ओमानन्द जी के सुझाव पर काफी देर तक विचार विमर्श के पश्चात् निम्न प्रकार महत्त्वपूर्ण निर्णय किये गये।

यदि एक वर्ष के भीतर अर्थात् ३१ मार्च १९८६ तक सतलुज व्यास लिंक नहर का काम पूरा करने का सरकार ने वचन नहीं दिया और नहर के निर्माण के काम में तुरन्त तेजी न आई तथा हिन्दी भाषी क्षेत्र प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी के ऐवार्ड के अनुसार शीघ्र हरयाणा को देने की घोषणा नही की गए तो ३१ मार्च १९८५ को रोहतक में विशाल सम्मेलन करके सरकार के विरुद्ध आन्दोलन का बिगुल बजा दिया जायेगा।

सभी नेताओं ने वीर भूमि हरयाणा की जनता से अपील करते हुए कहा है कि हरयाणा के अस्तित्व और हैसियत को बरकरार रखने के लिये एक जुट होकर दलगत राजनीति से दूर रहकर संघर्ष के मैदान में उतरे तथा प्रत्येक जिले से ५ हजार कार्यकर्ता तथा ५ हजार रुपये संग्रह करके आन्दोलन की तैयारी के लिये ३१ मार्च १९८५ को प्रात: १० बजे भिवानी स्टैण्ड रोहतक के विशाल सम्मेलन में भारी संख्या में सम्मिलित होकर हरयाणा के संघटन का तथा शक्ति का परिचय देवें। इस सम्मेलन को सफल करने के लिये प्रत्येक जिले में कार्यकर्त्ताओं की बैठक करके आज ही से तैयारी आरम्भ कर देवें।

आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

हरयाणा के आर्यसमाजो तथा गुरुकुलों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपने वार्षिक उत्सवों पर प्रस्ताव पास करके प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से अनुरोध करें कि वे राष्ट्र विरोधी अकालियों से कोई ऐसा समझौता न करें जिससे हरयाणा के हितों को हानि पहुंचे।

हरयाणा की हानि राष्ट्र की हानि होगी क्योंकि हरयाणा राष्ट्र की सुरक्षा चौकी है।

-सभा मन्त्री

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज सफीदों जिला जीन्द

संरक्षक—श्री जयदेवसिंह, प्रधान—सूरजभान, उपप्रधान—भगत राम, मन्त्री—परमानन्द, उपमन्त्री–प्रेमप्रकाश, कोषाध्यक्ष—खजांची लाल।

आर्यसमाज शेरगढ़ नठोडो जिला करनाल

प्रधान-मेहलाराम, उपप्रधान-डा० सुरेन्द्रकुमार, मन्त्री—चन्द्रहास उपमन्त्री—हरिसिंह, कोषाध्यक्ष—सोहनलाल, प्रचारमन्त्री—भगतराम पुस्तकाध्यक्ष—छोटूराम

आर्यसमाज कंवारी जिला हिसार

प्रधान- मस्तसिंह आर्य क्रान्तिकारी, उपप्रधान—सेठ रामचन्द्र आर्य, मन्त्री—वजीरसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—डा० ओमप्रकाश आर्य, संगठन मन्त्री—हरिसिंह आर्य, प्रचारमन्त्री-प्रमशसिंह आर्य

स्त्री आर्यसमाज कंवारी जिला हिसार

प्रधान— श्रीमती सुनेहरी आर्या, उपप्रधान—श्रीमती नरियरी आर्या, मन्त्री—श्रीमती सन्तोष आर्या, संगठनमन्त्री—तीरमती आर्या, प्रचारमन्त्री—श्रीमती हरदेई आर्या

आर्यसमाज सैक्टर २२ फरीदाबाद

प्रधान—मेजर राजकुमार, उपप्रधान—अर्जुनदेव गांधी, मन्त्री—सोमदेव आर्य, उपमन्त्री—विनोदकुमार मनचन्दा, कोषाध्यक्ष—पवन कुमार आर्य, निरीक्षकाध्यक्ष—महेन्द्रप्रताप मरवाह, पुस्तकाध्यक्ष—श्री भारत भूषण।

भारतीय सार्वजनिक विचार मंच

अध्यक्ष-अखिलेश भारती, उपाध्यक्ष-शत्रुघ्नसिंह चोहान, महामंत्री कमलकिशोर आर्य; मन्त्री-भानुप्रकाश भारद्वाज, उपमन्त्री-राकेशकुमार भल्ला, कोषाध्यक्ष-अशोककुमार मधुर, प्रचार मन्त्री- रमेशकुमार, उप प्रचार मन्त्री—रणधीर कुमार

आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सिरसा के समाचार

१—आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय आठवीं-ए का छात्र राजीवकुमार वर्मा सुपुत्र श्रीकृष्ण वर्मा जिला सिरसा में सुलेख प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रहा। यह प्रतियोगिता कला सौरभ नामक संस्था ने आयोजित की थी।

२-दिनांक १२-३-८५ को विद्यालय में हवन यज्ञ हुआ। इसमें दसवीं व ग्यारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने भाग लिया। हवन यज्ञ के समापन पर प्रिंसिपल श्री द्वारका प्रशाद जिन्दल ने सब विद्यार्थियों के परीक्षा में सफल होने की प्रभु से कामना की।

३-गत वर्ष आठवीं कक्षा की परीक्षा में तीन छात्रवृत्तियां प्राप्त हुईं। राजेन्द्र जिन्दल ४३७ अंक लेकर प्रथम रहा।

द्वारका प्रसाद जिन्दल

योगधाम आर्यनगर ज्वालापुर में शिविर

योगधाम में पूज्यपाद स्वामी नारायण मुनिश्चतुर्वेद: की अध्यक्षता में ३ अप्रैल से ९ अप्रैल १९८५ तक ध्यानयोगशिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें आसन प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान आदि अष्टांग योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जावेगा तथा यमनियमादि योग के आवश्यक विषयों का ज्ञान भी कराया जावेगा। शिविरार्थी शारीरिक रोगों तथा मानसिक अशान्ति से छुटकारा पाने के लिये विविध यौगिक उपायों से लाभ प्राप्त करके आत्मदर्शन का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे।

संयोजक—ब्रह्मानन्द

आर्यसमाज बनाया

लेखक—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती अधिष्ठाता वेदप्रचार

गुजराती योगी टंकारा से आया।
भूले हुए वेद पथ आकर सत्य मार्ग दर्शाया।।
ऐसी उल्टी रीत, धर्म कर्म से न प्रीत,
वेद गडरियों के गीत लोग कहते मिले।
चमन जो था बरबाद, किया ऋषि ने आबाद,
बड़ी मुद्दतों के बाद पुष्प बाग में खिले।
एक सौ दस वर्षों से पौधा लहर लहर लहराया।।१।।
फाल्गुन की शिवरात, सारे देश में विख्यात,
लाई नूतन प्रभात, ज्ञान ज्योति जगी।
निकला पूर्णमा का चन्द, हुए तारागणमन्द,
आये ऋषि दयानन्द अविद्या भगी।
विष पी पी कर वेदामृत का सबको पान कराया।।२।।
जब थी वेद विद्या लोप, बढे पाखण्डी पोप,
अन्धकार घटाटोप, भटके जहां के तहां।
रोवें विधवा दीन नारी, प्रथा देश में थी जारी,
कन्या होते ही बिचारी गाढी जाती थी यहां।
बालक वृद्ध जनों के विवाह कुप्रथा को भंग कराया।।३।।
जागी ऋषि सन्तान, सभी हुए सावधान,
मिटी ठगों की दूकान, बड़ी हलचल मची।
हुआ सत्य का प्रचार, वही वेदामृतधार,
ईश लेता ना अवतार, बात सबको जची।
जन कल्याण हेतु ऋषिवर ने आर्यसमाज बनाया।।४।।

अश्लील फिल्मों पर प्रतिबन्ध लगे

इस समय अश्लील फिल्मों की बाढ़ आ गई है, जिनके प्रदर्शन ने समाज को दूषित करके रख दिया है। कुछ फिल्में केवल बालिकों के लिए होती हैं, लेकिन देखते हैं नाबालिग बच्चे भी। अधिकांश फिल्मों में नारी के नग्न अंगों का प्रदर्शन किया जाता है। बलात्कार चुम्बन आदि की घटनाएं दिखाई जाती हैं जिससे बच्चे, युवक व प्रौढ आयु के समस्त व्यक्तियों में कामुकता की वीभत्स भावना का संचार होता है। आज के युग में अपहरण, बलात्कार, छेड़खानी की शिक्षा हमारे समाज को फिल्मों से ही मिल रही है, यही कारण है कि समाज में नैतिकता, प्रेम, लज्जा, आदर जैसे मानवीय गुणों का लोप हो गया है। यही नहीं चोरी, डकैती, बैंक डकैती, चाकू बाजी आदि का प्रशिक्षण भी युवकों को फिल्मों से ही मिल रहा है। फिल्मों ने हमारे समाजके मधुर सम्बन्धों, भारतीय संस्कृति व साहित्य को प्रदुषित कर दिया है। क्या स्वच्छ प्रशासन देने के लिए कटिबद्ध होने वाली 'राजीव सरकार' इन अश्लील फिल्मों पर प्रतिबन्ध लगाएगी।

राधेश्याम आर्य एडवोकेट
मुफाफिरखाना सुलतानपुर (उ० प्र०)

तपोवन में वृहद यज्ञ २२ अप्रैल से होगा

देहरादून ८ मार्च। वैदिक साधन आश्रम, तपोवन में वार्षिक वृहद् यज्ञ तथा साधना शिविर २२ अप्रैल को प्रारम्भ होगा और दिनांक २८ अप्रैल को उसकी पूर्णाहुति होगी। स्वामी दीक्षानन्द जी, स्वामी सत्यपति जी और पं० पृथ्वीराज शास्त्री के उपदेश चलेंगे। यज्ञ के ब्रह्मा महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थ होंगे।

उल्लेखनीय है कि आश्रम के वृहद् यज्ञों में दूरस्थ नगरों से भी सैकड़ों स्त्री पुरुष आया करते हैं और इस नगर के हजारों लोग भी इस सत्संग से लाभ उठाते हैं।

एक विशेष योग शिक्षण शिविर आश्रम में १६ मई से १६ जून तक स्वामी सत्यपति के निर्देशन में चलेगा जिसमें क्रियात्मक योग, योग-दर्शन का आर्यभाषा में अध्ययन, संस्कृत भाषा का शिक्षण, मन्त्र, श्लोक आदि का उच्चारण तथा शंका-समाधान आदि कार्यक्रम रहेंगे। उच्च कक्षा वालों को वेदान्त दर्शन भी पढ़ाया जाएगा जो कि ३० जून तक चलेगा। शिविर में भाग लेने के इच्छुक लोग अपने नाम पहले से आश्रम में भेज दें।

देवदत्त बाली
मन्त्री, वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

चौ० सुलतानसिंह सांसद के घर में जन्म दिवस यज्ञ

आर्यसमाज शान्तिनगर सोनीपत के मन्त्री हरिचन्द स्नेही ने चौ० सुलतानसिंह सांसद के पौत्र अमरजीत सुपुत्र श्री वेदप्रकाश के जन्म दिवस पर यज्ञ कराया। यज्ञ के पश्चात् हरिचन्द स्नेही ने कहा कि बच्चों को महान् बनाने के लिये हमें उनके सामने आदर्श प्रस्तुत करने चाहियें। अनेक महापुरुषों का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि उनके गुणों, साहसिक कार्यों, देश की एकता एवम् अखण्डता के लिए जिन्होंने अपना सर्वस्व अर्पण किया है उन्हें श्रद्धा से याद किया जाता रहेगा।

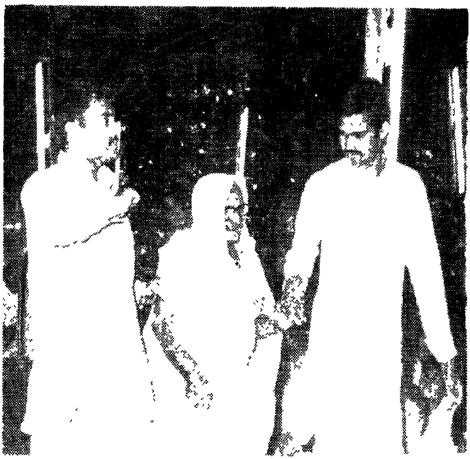
इस अवसर पर बोलते हुए चौ० सुलतानसिंह ने कहा कि हम सभी व्यक्तिगत स्वार्थ छोड़ें, देश की भावी पीढ़ी का निर्माण करें तथा देश की उन्नति के लिए हर सम्भव प्रयास करते रहें।

मन्त्री
आर्यसमाज शान्ति नगर सोनीपत

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।



गुरुकुल कुरुक्षेत्र
आश्रम का मुख्य द्वार



72वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित शहीद सम्मेलन में आते हुए अमर शहीद पं० राम-प्रसाद बिस्मिल की बहन पण्डिता शास्त्री देवी जी आचार्य देवव्रत जी तथा मुख्य संरक्षक ब्र० धर्मदेव विद्यार्थी के साथ।

सम्पादकीय—

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली

वर्तमान शिक्षा प्रणाली लार्ड मैकाले ने सन् १८३५ ई० में प्रचलित की थी तब महर्षि दयानन्द जी ११ वर्ष के थे। उनका जन्म सन् १८२४ ई० में हुआ था।

महर्षि ने प्राचीन परम्परा पद्धति से ही पढ़ना प्रारम्भ किया था। पढ़ लिखकर सारे देश का भ्रमण करने के पश्चात् ५२ वर्ष की परिपक्व आयु में सन् १८७६ में महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ-प्रकाश की चना की थी। इसके तृतीय सम्मुल्लास में महर्षि ने भारतीय प्राचीन "अध्ययन-अध्यापन विधि" का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। इससे पूर्व दूसरे समुल्लास में बाल-शिक्षा-विषय में महर्षि लिखते हैं—

"यही माता पिता का कर्त्तव्यकर्म, परमधर्म और कीर्ति का काम है जो अपनी सन्तानों को तन मन धन से विद्या धर्म सभ्यता और उत्तम शिक्षायुक्त करना।"

यद्यपि महर्षि जी ने अपने जीवनकाल में भी फर्रुखाबाद आदि अनेक स्थानों पर पाठशालायें आदि प्रारम्भ की थीं किन्तु वे न चल सकी। १८८३ में महर्षि जी का देहान्त हो गया। तत्पश्चात् आर्यनेता गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज आदि ने डी० ए० वी० स्कूल कालेजों का सञ्चालन करके शिक्षा के क्षेत्र में कुछ कार्य किया। किन्तु इन संस्थाओं से महर्षि दयानन्द की विचारधारा के अनुरूप वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसारार्थ विद्वान् तैयार नही हो सके।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सत्यार्थप्रकाश में वर्णित गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को मूर्तरूप दिया महात्मा मुन्शीराम जी ने १९०२ ई० में कांगड़ी गुरुकुल की स्थापना करके। तत्पश्चात् १९१२ ई० में महात्मा मुन्शीराम जी ने ही गुरुकुल कुरुक्षेत्र की स्थापना की थी।

बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में परतन्त्र भारत में गुरुकुलों में जो पाठविधि प्रचलित थी तदनुसार अनेक सुयोग्य विद्वान् स्नातक गुरुकुलों से निकले और देश विदेश में ख्याति प्राप्त की। स्वतन्त्रता के पश्चात् इस शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अधिकतर गुरुकुल स्कूल और कालेज बन गए और जो कुछ नाम के गुरुकुल हैं उनका पाठ्यक्रम भी धीरे-धीरे स्कूल कालेजो वाली मैकाले पद्धति के समानान्तर ही हो गया है या होने जा रहा है। दूसरी ओर प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी मैकाले शिक्षा प्रणाली में विशेष परिवर्तन की घोषणा कर रहे हैं।

मैं आर्यसमाज के विद्वानों तथा महान् संन्यासी और नेताओं से जानना चाहूंगा कि वे महर्षि दयानन्द का नाम लेकर गुरुकुल नाम की संस्था चलाकर उन मे मैकाले की शिक्षापद्धति को महत्त्व क्यों दे रहे हैं? तथा महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित पाठविधि की निरन्तर ११० वर्ष से घोर उपेक्षा क्यों की गई और अब भी क्यों की जा रही है? क्या महर्षि के अनुयायी आर्यों को महर्षि के नीचे लिखे वचनों पर विश्वास नहीं है?

"ऐसा प्रयत्न पढ़ने और पढ़ानेवाले करें कि जिससे बीस वा इक्कीस वर्ष के भीतर समग्र विद्या उत्तम शिक्षा प्राप्त होके मनुष्य लोग कृतकृत्य होकर सदा आनन्द में रहें। जितनी विद्या इस रीति से बीस वा इक्कीस वर्षों में हो सकती है उतनी अन्य प्रकार से शतवर्ष में भी नहीं हो सकती।"

(सत्यार्थप्रकाश समु० ३)

स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दर्शनानन्द, पं० शुद्धबोध तीर्थ, पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, आचार्य राजेन्द्रनाथ शास्त्री, आचार्य भगवान्देव (स्वामी ओमानन्द सरस्वती) आदि महापुरुषों के पुरुषार्थ से आज भी महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित प्राचीन पाठविधि मूर्तरूप में कुछ स्थानों पर आंशिक रूप में प्रचलित है और महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक ने "श्रीमद्दयानन्दार्षविद्यापीठम्" के माध्यम से इस पाठविधि को स्वीकार करके इसके अनुसार ही मध्यमा, शास्त्री और आचार्य परीक्षायें ली है। आज यह पाठविधि भी महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की पाठविधि बन चुकी है। इस में भी यदि कुछ न्यूनता है तो उसको पूरा करवाया जा सकता है। प्रत्येक आर्य को "सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने के लिए सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।"

अन्त में मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली तथा भारत एवं विदेश की सभी प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों और पूजार्ह आर्य विद्वान् संन्यासी महात्माओं से ऊपर लिखे प्रश्न का उत्तर जानने की आशा से विराम ले रहा हू।

—वेदव्रत शास्त्री



गुरुकुल का सांस्कृतिक दल

गुरुकुल का संक्षिप्त परिचय

नाम : विद्याविहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र

स्थापना : प्रथम वैशाख १९६९ तदनुसार १३ अप्रैल १९१२

संस्थापक . अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी

निर्माता : रईस दानवीर ला० ज्योतिप्रसाद जी, थानेसर

स्वामिनी सभा : आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

सम्बन्धित : विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

प्रधान चौ० सत्यदेवसिंह पूर्व आई० पी० एस०

मुख्याधिष्ठाता : ला० यशपाल आर्य

अधिष्ठाता : श्री हंसराज जी कपूर, भूतपूर्व पुलिस अधीक्षक

आचार्य : उपाचार्य, देवव्रत शास्त्री एम० ए०

अध्यापक एवं अन्य कर्मचारी—४५

छात्र संख्या—३००

प्रवेश आयु—६ से ११ वर्ष

भोजन शुल्क—१२० रु० प्रतिमास

प्रवेशकाल—अप्रैल, मई

अवकाश—वैशाखी पर १५ दिन और दीपावली पर १५ दिन

अभ्यास की भाषाए—सस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी

अन्य विषय—गणित, विज्ञान, सामाजिक, धर्म-शिक्षा

शारीरिक व्यायाम—दण्ड, बैठक, योगासन, जुडो, कराटे, डम्बल लेजियम आदि

सामूहिक खेले—हाकी, फुटबाल, हैण्डवाल, वालीवाल, कबड्डी, खो-खो, समतुलन, आग गोला, बेंडवादन, स्तूपनिर्माण

सैनिक शिक्षा—लाठी, भाला, तलवार, त्रिशूल, कराटे आदि

स्थिति—डाण्ड रोड, निकट कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय, कुरुक्षेत्र

पत्र व्यवहार का पता—आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

दूरभाष—४८।

—०—

वन्दे मातरम्

संकलन—सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार



कुल पवित्र जननी कृतार्था वसुन्धरा पुण्यवती च तेन।
अपारसवित् सुखसागरेऽस्मिन् लीन परे ब्रह्मणि यस्य चेतः ॥

(भूदेवी=भूमिमाता या ब्रह्मगवी-ब्राह्मण की गौ) ॥

जय जय जननी भूदेवी तुझको बार बार प्रणाम है।
यह मंजु अञ्जलि प्रेममय अर्पित तुझे अभिराम है ॥
महिमा हिमालय की शिखायें गा रही तेरी स्वयं।
भागीरथी की वीचियों में स्पष्ट तेरा नाम है ॥
हम देखते तुझ में सदा नवप्रेम का उल्लास है।
हम को मधुरतम गोद ही तेरी परम विश्राम है ॥
तेरे विशद आकाश की स्वाधीनता में हम पले।
स्वर्गीयता मिश्रित जहां उज्ज्वल उषा का धाम है।
तेरे वनों की स्तब्धता में दिव्य कोई राग है।
सब ओर से मानो बरसता पुण्य का परिणाम है ॥
तूने हृदय मोती पिरोकर प्रेम के दृढ सूत्र में।
अनुपम बनाई यह हमारी चारु मुक्तादाम है ॥
तू ही बजाती वीणा वह जिसके कि हम सब तार हैं ॥
जो तार सारे एक स्वर हो कह रहे अविराम हैं ॥
हम हैं सदा तेरे हमारी तू हृदयवर वासिनी।
सम्बन्ध है यह तेरा हमारा नित्य है निष्काम है ॥

(श्रीयागीश्वराक्षरैः प्रियैः)

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का इतिहास

धर्मदेव विद्यार्थी एम० ए० बी० एड० रिसर्चस्कालर
मुख्य संरक्षक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

मनके ज्योतिप्रसाद खल्फ लाला सालगराम महाजन अग्रवाल थानेसर का हू। हकुक मुतल्का हकीकत जरई व मुतलका जायदाद सकुस्ती बहक श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब लाहौर जिसके प्रेजीडेंट मौजुदल वक्त लाला रामकिशन साहब पलिडर व रईस जालन्धर है और जिसकी बाजाबता रजिस्ट्री हो चुकी है दान व बकप करता हू और इस दान का अजहार मुख्तसर बजरीम एक तहरीर मुअरखा २७ मार्च, १६१० बमौका सलाना जलसा गुरुकुल कागड़ी······· ·· ···· ··कर चुका है। जिसका मुद्दा यह है कि गुरुकुल कांगड़ी का तरीका तालीम मुख्तसर से बखुबी मुलाहजा करके निश्चय कर लिया है कि यह तरीके तालीम धर्म का काम है इसलिए इस गुरुकुल की एक शाखा मौजा कन्थला कुरुक्षेत्र गुरुकुल खोली जावे जिसकी इजरा के लिए बअरसा दो साल, दस हजार रुपया नकद पराहम करके इलावा जायदाद ··· ········· ··· · ···हवाला सभा मौसुफ करूगा। अगर ऐसा न करूंगा तो सभा मौसुफ को इखत्यार होगा कि जायदाद मुंदरजा बाला मौसुफा को गुरुकुल कांगड़ी के गरीब ब्रह्मचारियो की इमदाद मे खर्च करती रहे।

उपरोक्त भावपूर्ण उद्गार है थानेसर के रईस दानवीर ला० ज्योतिप्रसाद जी के जिन्होने अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती द्वारा सस्थापित एव सचालित गुरुकुल कांगड़ी को देखकर अपनी ग्राम कंथला कलां की समस्त भूमि स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा गुरुकुल खोलने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के नाम उपरोक्त पजीकरण पत्र मे पजीकृत कराते समय लिखे।

कहते हैं कि ला० ज्योतिप्रसाद थानेसर में रहने वाले पौराणिक कर्मकाण्डी व्यक्ति थे। दैवयोग से १६१० ई० मे एक बार उनके मन में हरिद्वार जाकर गगा स्नान कर पुण्य प्राप्त करने का विचार आया और अपनी कामनापूर्ति हेतु लाला जी हरिद्वार जा पहुचे। विधिवत् तिलक आदि लगा गङ्गापूजन कर मन्त्र अर्चना कर श्रद्धापूर्वक स्नान के पश्चात् लाला जी के मन में हरिद्वार के दर्शनीय स्थल देखने की उमङ्ग उठी और जिस समय लाला जी हरिद्वार मे बहने वाली पवित्र गङ्गा के किनारे स्थित मन्दिरों, अखाड़ों में घूमकर अपनी थकान मिटाने के लिए किसी स्थान पर विश्राम करते हुए अपनी यात्रा समाप्त कर वापिस अपने घर जाने का विचार कर रहे थे कि तभी समीपस्थ व्यक्ति से उन्होंने यह जानकारी करनी चाही कि हरिद्वार मे कोई अन्य दर्शनीय स्थान तो भ्रमण बिना नहीं रहा तो किसी ने इन्हें स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा उन द्वारा स्थापित गुरुकुल कागड़ी के बारे मे बताया। प्रातः उत्सुकतावश लाला जी गुरुकुल मे जा पहुंचे, वहा ब्रह्मचारियों की पाठविधि तथा सुन्दर व्यवस्था देखकर लाला जी इसके प्रेरणास्रोत सस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी से मिले बिना न रह सके और जब लाला जी का स्वामी जी से साक्षात्कार हुआ तो लाला जी को स्वामी दयानन्द जी

द्वारा निर्दिष्ट प्राचीन वेद आधारित गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का ज्ञान हुआ और स्वामी श्रद्धानन्द वह प्रकाशरूप स्रोत बने जिससे उनके नाम के ज्योतिप्रसाद के अनुरूप उनके पैतृक स्थान थानेसर में गुरुकुल स्थापित कर गुरुकुल द्वारा वेद की ज्योति का प्रसाद गत ७३ वर्षों से आज तक निरन्तर न जाने कितने व्यक्तियों को तृप्त कर आत्मज्ञान की ओर प्रवृत्त कर चुका है और करता रहेगा।

प्रथम वैशाख १९६९ तदनुसार १३ अप्रैल १९१२ के शुभ दिन महाभारत की ऐतिहासिक धरती धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र पर युगपुरुष काषाय वस्त्रधारी सन्यासी श्रद्धानन्द सरस्वती ने गुरुकुल की आधार-शिला रखते हुए भावविह्वल हो अपने उद्गारो को प्रकट करते हुए कहा था, "जिस धर्मक्षेत्र की पवित्र भूमि में एक दिन भारतभूमि के विनाश का बीज बोया गया था। उसी भूमि मे आज यह भारत की उन्नति का बीज बोया गया है। मंगलमय भगवान् करे कि इस ज्ञानतरु से ऐसे सुगन्धित फूल उत्पन्न हों जो भारतभूमि को फिर अपनी पुरानी उन्नतावस्था मे लाने मे सहायक हों।"

लाला ज्योतिप्रसाद जी ने अपनी तमाम सम्पत्ति १०४८ विघाभूमि तथा १०,००० रुपया नकद देने के साथ ही स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा उद्‌घोषित वाक्यो को पूर्ण करने के लिए मानो लाला जी ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। स्वय लाला ज्योतिप्रसाद जी उनकी धर्मपत्नी और उनके परम मित्र ला० भागीरथमल जी ने कठोर परिश्रम द्वारा रात दिन एक कर अपने जीवनकाल मे ही गुरुकुल को सुदृढ़ कर दिया। सन् १९१४ मे ला० ज्योतिप्रसाद जी गुरुकुल के हो साथ सासारिक बन्धनों को तोड़कर स्वर्ग सिधार गये तब माना उनके वियोग को न सहन करते हुए उनके परम मित्र लाला भागीरथ जी भी सदा के लिए गुरुकुल छोड़ गये परन्तु लाला ज्योतिप्रसाद जी द्वारा आरोपित गुरु-कुलरूपी कल्प वृक्ष उनके नश्वर शरीर के नष्ट होने पर भी सृष्टि-पर्यन्त उनकी पुण्य कीर्ति को आलो-कित करता रहेगा।

इन दोनो महापुरुषों के अकाल कालकवलित होने पर मुख्य अधिष्ठाता नौबतराय जी तथा आचार्य प० विष्णुमित्र जी ने अनथक परिश्रम और लग्न से गुरुकुल के शैशवकाल को सवारा।

ला० नौबतराय जी के स्वर्गस्थ हो जाने के साथ ही प० विष्णुमित्र जी के त्यागपत्र देने पर गुरुकुल का कार्यभार गुरुकुल के ही स्नातक पण्डित सोमदत्त जी विद्यालकार सदृश योग्य आचार्य ने सम्भाला और सस्था की प्रगति के लिए निरन्तर यथाशक्ति प्रयास किया।

स० १९८५ मे उनके चले जाने के बाद श्री ला० दिवानचन्द्र जी रिटायर्ड डिप्टी कलक्टर अम्बाला ने निस्वार्थभाव से सेवा कर गुरुकुल की उन्नति की।

अप्रैल १९४२ गुरुकुल से मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य के रूप मे दोनों पदो पर पं० प्रियव्रत जी विद्यालंकार ने कार्यभार सम्भाला। गुरुकुल कुरुक्षेत्र के इतिहास मे आचार्य प्रियव्रत जी का कार्यकाल सबसे लम्बा कार्यकाल रहा है। उन्ही के प्रयास से १९४२ मे गुरुकुल उच्च विद्यालय (हाई स्कूल) के रूप में उन्नत हुआ, इन्हीं के प्रयास से उच्च विद्यालय रूपी आन्तरिक उन्नति के साथ-साथ गुरुकुल भौतिक उन्नति कर सका यथा भवन निर्माण, ट्यूबवैल, पुष्पोद्यान, उपवन तथा स्नानागार आदि आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न हुआ।

इसी पथ के पथिक बनकर श्री राजेन्द्रपाल, श्री सत्यव्रत जी तथा पं० हरिदत्त जी और पं० सोनेराव जी ने आचार्यों की गौरवशाली परम्परा निभाते हुए यथाशक्ति और यथामति गुरुकुल की

उन्नति का प्रयास किया परन्तु वस्तुस्थिति यह है कि आचार्य प्रियव्रत जी के बाद में गुरुकुल में कोई आचार्य स्थिर नहीं रह सका, इस अस्थिरता के परिणामस्वरूप इस दौरान गुरुकुल का विकास मन्थर गति से ही होता रहा है। वर्तमान में गुरुकुल के आचार्य का कार्यभार आर्यजगत् के निष्ठावान् लग्नशील युवा विद्वान् पं० देवव्रत शास्त्री एम. ए. सम्भाले हुए हैं जिनके निस्वार्थ प्रयास से संस्था उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ रही है। युवा आचार्य के कुशल नियन्त्रण में अनेकों युवा कार्यकर्ताओं के सहयोग से गुरुकुल की महती उन्नति की आशा है।

गुरुकुल प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष की गौरवशाली परम्परा में अनेकों ख्यातिप्राप्त आर्य नेताओं को गुरुकुल के दिशा निर्देशन का गौरव प्राप्त है। डा० लालमण आर्य, माता मानकौर जी, पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती, लाला दलीपसिंह जी आर्य, चौ० अनन्तराम, स्वामी अग्निवेश जी पूर्व शिक्षा मन्त्री हरयाणा, चौ० शिवराम वर्मा पूर्व पशुपालन मन्त्री हरयाणा जैसे उच्चकोटि के शिक्षाविद् राजनेता अध्यक्ष पद पर कार्य करते रहे हैं।

वर्तमान में गुरुकुल के अध्यक्ष सेवानिवृत्त पुलिस अधीक्षक चौ० सत्यदेवसिंह जी हैं जो गुरुकुल में अपना पूर्ण समय कार्य करने में लगाते हैं जिससे गुरुकुल में भवन निर्माण, गोशाला तथा भण्डार में विशेष उन्नति से प्रभावित होकर प्रति वर्ष गुरुकुल में प्रवेश लेने वाले ब्रह्मचारियों की संख्या बढ़ती जा रही है। प्रसन्नता का विषय है कि उनके ईमानदार और कर्मठ सहयोगी सहायक अधिष्ठाता श्री हंसराज कपूर पूर्व पुलिस अधीक्षक भी अपना पूर्ण समय गुरुकुल की सेवा हेतु दे रहे हैं। इस समय गुरुकुल मे मुख्य अधिष्ठाता ला० यशपाल आर्य तथा उपप्रधान चौ० बिशनसिंह एडवोकेट और कोषाध्यक्ष श्री कृष्णलाल बधवा तथा लेखा निरीक्षक श्री देवदत्त विज हैं। ऐसे लग्नशील समयदानियों की कर्मठता देखकर गुरुकुल की चहुंमुखी उन्नति की आशा है। निश्चित ही शैक्षणिक और सामाजिक क्षेत्रों में गुरुकुल अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

—०—

महात्मा गांधी ने कहा था–?

ब्र० राममेहर, कक्षा चतुर्थ

- इन्सान को गिराने वाला स्वयं इन्सान है।
- प्रतिदिन अपनी जांच करते रहे और देखे कि अभी तक शाम आदर्श से कितनी दूर है?
- ईश्वर का अस्तित्व है यदि यकीन न हो तो अपनी आत्मा से पूछ लीजिए।
- धर्म भगवान् तक पहुंचने का पुल है।
- मनुष्य को सुधारने के लिए क्रांति युगों के बाद आती है।
- लाखों भूखों को आप और किसी प्रकार भी समझा नहीं सकते परन्तु आप उनके लिए ले जाये तो वे आपको अपना ईश्वर मानेगे।
- मनोविकार हमारे शत्रु हैं यह समझकर नित्य उनसे युद्ध करना चाहिए।
- आदमी की शक्ति मर्यादित है और वह, यह अभिमान करता है कि वह सब कुछ कर सकता है किन्तु परमात्मा उसके दम्भ को चूर-चूर कर देता है।

ओ३म् तत्सत् परब्रह्मणे नमः

आर्य राष्ट्रीयता

(सूर्य-ध्वज संगीत)

संकलन : पं० सत्यदेव वेदालंकार जी

आर्य राष्ट्र का प्यारा झण्डा ऊचा सदा रहेगा,
ऊचा सदा रहेगा, ऊंचा सदा रहेगा ।।
आंधी और तूफान बादलों से यह टक्कर लेगा ।
नहीं झुकेगा, नही झुकेगा, झण्डा नही झुकेगा ।।
आर्य राष्ट्र का.......

आसमान में यह फहराये, सागर में लहराये,
जहा जहां जाये यह झण्डा यह सन्देश सुनाये ।
'स्वस्ति' 'शान्ति' के परम लक्ष्य ले जग स्वाधीन करेगा ।।
आर्य जाति का..........

ऋषि मुनियों की आस्तिकता का ओ३म् नाम है प्यारा,
रक्त रंग में क्षात्र-धर्म की बहती आयी धारा,
'सूर्य चक्र' का चक्र हमारा जग आलोक करेगा,
आर्य देश का.........
आर्य धर्म का..........

सदा चाहते हम दुनियां में रामराज्य का लाना,
सदा चाहते हम दुःखियों के दुःख में हाथ बंटाना,
'सत्य' 'न्याय' के लिए हमारा आगे कदम बढेगा ।
आर्य राज्य का.........

ओ३म् उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरं । देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् । वेद (संध्यामन्त्र)

"सूर्यं चक्षुर्गच्छतु वातमात्मा" (वेद)

गुरुकुल के परम सहयोगी जिनके हम आभारी हैं......



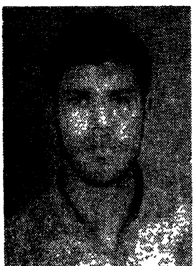
ला० धर्मचन्द जी
लाडवा जि० कुरुक्षेत्र
जिन्होंने गुरुकुल के भण्डारगृह में 12,500 रु० के पवित्र दान से फर्श लगवाया।



पं० सत्यदेव भारद्वाज वेदालकार जी (नैरोबी)
जिनके पवित्र दान द्वारा श्री गायत्री विद्यालय भवन निर्माणाधीन है। अब तक 1,80,000 रु० का पवित्र दान देने के पश्चात् भविष्य मे और दान देकर पूर्ण निर्माणकार्य हेतु दृढसकल्प।



ला० पन्नालाल जी
इस्माईलाबाद (कुरुक्षेत्र)
जिन्होने श्री गायत्री विद्यालय भवन मे एक कमरे की छत डलवाने के लिए 15,000 रु० का पवित्र दान दिया।



श्री देवव्रत शास्त्री एम ए.
आचार्य
गुरुकुल कुरुक्षेत्र



चौ० सत्यदेवसिंह
भू० पू० एस.एम पी.
प्रधान
गुरुकुल कुरुक्षेत्र



वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रो० शेरसिंह जी सभाप्रधान राष्ट्र रक्षा सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए।



हरयाणा विधानसभा के उपाध्यक्ष **चौ०** वेदपाल जी वार्षिकोत्सव पर सम्बोधित करते हुए।



वीर हकीकतराय बलिदान दिवस के अवसर पर वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण करती हुई वन्दनीया माता गायत्रीदेवी (नैरोबी) हरयाणा मे योगासन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कुलदीप को पुरस्कार प्रदान करते हुए।



हरयाणा राज्य की प्रमुख गौशाला गुरुकुल कुरुक्षेत्र की गाये चारागाह मे।



हरयाणा राज्य प्राथमिक विद्यालय क्रीडा प्रतियोगिता मे (चैम्पियनशिप) विजयी कुश्ती दल आचार्य देवव्रत जी, अधिष्ठाता श्री हसराज कपूर, कुश्ती प्रशिक्षक श्री प्रकाशसिह दहिया और मुख्य सरक्षक ब्र० धर्मदेव विद्यार्थी के साथ ।



हरयाणा राज्य माध्यमिक विद्यालय क्रीड़ा प्रतियोगिता (चैम्पियनशिप) विजयी कुश्तीदल अपने अधिकारियो के साथ ।

हमारे गौरव
हरयाणा राज्य में प्रथम



ब्र० जोरासिंह आर्य
हरयाणा राज्य माध्यमिक विद्यालय कुश्ती प्रतियोगिता, राज्यस्तरीय अन्तर्जोनल अखाडा प्रतियोगिता मे प्रथम, अ० भा० कुश्ती प्रतियोगिता मे भाग लिया।



ब्र० कुलदीप आर्य
हरयाणा राज्य योगासन प्रतियोगिता मे प्रथम अखिल भारतीय योगासन प्रतियोगिता मे भाग लिया।



ब्र० रणवीरसिंह आर्य
परिवार नियोजन विभाग द्वारा आयोजित राज्यस्तरीय भाषणप्रतियोगिता मे प्रथम, आर्य समाज पानीपत द्वारा आयोजित श्रद्धानन्द भाषण प्रतियोगिता मे सात्वना पुरस्कार।



ब्र० विजेन्द्र आर्य
हरयाणा राज्य प्राथमिक विद्यालय कुश्ती प्रतियोगिता, हरयाणा राज्य माध्यमिक विद्यालय कुश्ती प्रतियोगिता, हरयाणा राज्यस्तरीय अन्तर्जोनल अखाड़ा प्रतियोगिता मे प्रथम।



ब्र० ईश्वर आर्य
हरयाणा राज्य माध्यमिक वि० कुश्ती प्रतियोगिता मे प्रथम, राज्यस्तरीय अन्त-जोनल अखाडा प्रतियोगिता मे तृतीय, गुरुकुल कबड्डी दल का नेता।



ब्र० सत्यानन्द आर्य
हरयाणा राज्य प्राथमिक विद्यालय कुश्ती प्रतियोगिता मे प्रथम।

हमारे गौरव

हरयाणा राज्य में द्वितीय



ब्र० जोगेन्द्र आर्य
हरयाणा राज्य माध्यमिक विद्यालय कुश्ती प्रतियोगिता, राज्यस्तरीय अन्तर्जोनल अखाडा प्रतियोगिता मे तृतीय



ब्र० आनन्द आर्य
हरयाणा राज्य माध्यमिक विद्यालय कुश्ती प्रतियोगिता राज्यस्तरीय अन्तर्जोनल अखाडा प्रतियोगिता मे तृतीय।



ब्र० सत्यवान आर्य
राज्यस्तरीय अन्तर्जोनल अखाडा प्रतियोगिता

ब्र० उमेश प्रताप आर्य
राज्यस्तरीय अन्तर्जोनल अखाड़ा प्रतियोगिता



ब्र० ईश्वर आर्य
राज्यस्तरीय अन्तर्जोनल अखाड़ा प्रतियोगिता

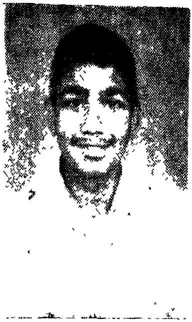


ब्र० मुकेश आर्य
हरियाणा राज्य प्राथमिक विद्यालय कुश्ती प्रतियोगिता

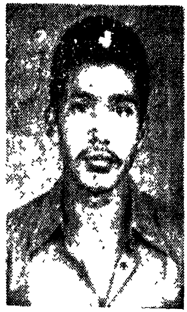
हमारे गौरव



ब्र० कुलदीप आर्य
राज्यस्तरीय अन्तर्जोनल अखाडा
प्रतियोगिता मे द्वितीय



ब्र० नवीन आर्य
श्री उदयसिंह द्वारा गुम हुए 1000 रु०
पाकर लौटाने वाला ईमानदार ब्रह्मचारी



ब्र० जगवीर आर्य
हरयाणा राज्य माध्यमिक विद्यालय
रिलेरेस प्रतियोगिता मे द्वितीय, गुरुकुल
हाकी दल का नेता।



ब्र० हरीसिह आर्य
कुरुक्षेत्र जिला में प्रथम स्थान प्राप्त विजयी वालीबाल
दल का नेता, जिला मा० विद्यालय क्रीडा प्रतियोगिता



ब्र० सुरेन्द्र आर्य
कुरुक्षेत्र जिला में प्रथम स्थान प्राप्त विजयी फुटबाल
दल का नेता, जिला मा० वि० क्रीडा प्रतियोगिता मे।



हरयाणा राज्य माध्यमिक विद्यालय क्रीडा प्रतियोगिता मे द्वितीय स्थान प्राप्त हाकी दल
(नीचे) डा० देवव्रत आचार्य के निर्देशन मे मलखम्ब प्रदर्शन ।



गुरुकुल कुरुक्षेत्र की उपलब्धियां

आचार्य देवव्रत जी गुरुकुल कुरुक्षेत्र

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा ·३ अप्रैल १६१२ ई० में स्थापित गुरुकुल कुरुक्षेत्र अपने स्थापना दिवस से अब तक उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर आगे बढ रहा है महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्देशानुसार तथा वेद के आदेश 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के अनुरूप यहां प्रविष्ट होने वाले प्रत्येक ब्रह्मचारी को शिक्षा के साथ साथ आय (श्रेष्ठ) नागरिक बनाने का प्रयास भी किया जाता है। जहां संसार में प्रातः वेला होते ही सूर्य की किरणों के आगमन की आहट पाकर संसार से अन्धेरा भागना चाहता है उसी प्रकार प्रातः वेला में वेदमन्त्रों का गुंजन और उपनिषदों का गायन कर नित्य प्रति सन्ध्या हवन आदि करने वाला सुसस्कृतज्ञ ब्रह्मचारी जब प्राचीन देववाणी सस्कृत के साथ साथ अंग्रेजी बोलता है तो उसके ब्रह्मचर्य तेज ज्ञान के प्रकाश का आगमन होता देखकर तमाम धार्मिक पाखण्ड भागना चाहता है।

बन्धुवर ! पाश्चात्य सस्कृति के स्रोत कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के साथ कदम से कदम मिलाये भारतीय वैदिक सस्कृति का स्रोत गुरुकुल कुरुक्षेत्र, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से गल-बहिया किये खड़ा है जैसे भारत मा के दो सुपुत्रों में से बडे पाश्चात्य पुत्र य छोटा पूर्वी पुत्र अपनी सस्कृति की ओर लौटने का प्रेममय आग्रह कर रहा हो। थानेसर के रईस ला० ज्योतिप्रसाद जी द्वारा आर्यजनता को समर्पित धरोहर पर नित नये वष गुरुकुल प्रगति की ओर कुछ कदम आगे बढता रहता है जैसे—

गायत्री भवन --

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के स्नातक महर्षि दयानन्द के कर्तव्यनिष्ठ सिपाही, आचार्य श्रद्धानन्द के अनुयायी विश्वविख्यात दानवीर आर्य उद्योगपति प० सत्यदेव जी भारद्वाज वेदालकार द्वारा गायत्री महामन्त्र की साधना हेतु उच्च विद्या के लिए गायत्री भवन का निर्माण एक महत्त्वपूर्ण अध्याय है जिस निर्माणाधीन भवन की आधार-शिला आर्यजगत् के सर्वत्यागी इतिहासज्ञ विद्वान् स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के कर-कमलों द्वारा आदरणीय प० सत्यदेव जी वेदालंकार तथा इनकी धर्म पत्नी वन्दनीया माता गायत्री देवी की उपस्थिति मे रखी गई जिसमे लगभग १४ कमरे पूर्ण होने को हैं। यह गुरुकुल का नया विद्यालय भवन होगा जो अत्यन्त आधुनिक ढग से सुविधाओं से सुसज्जित होगा।

विद्यालय विभाग—विद्यालय विभाग में उच्चशिक्षा प्राप्त अनुभवी शिक्षाविद् ब्रह्मचारियो को शिक्षित करने का कार्य करते हैं।

छात्रावास

गुरुकुलीय व्यवस्था के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण संवेदनशील अंग छात्रावास की व्यवस्था हेतु अत्यन्त लगनशील, कर्मठ तथा सेवाभाव वाले सात सरक्षक बालक ब्रह्मचारियो को मातृ पितृ तुल्य देखभाल करते हैं। ५ वष से १५ वर्ष तक के बालकों को राष्ट्रनिर्माण के जोवट कार्य की ओर अग्रसर करते

हुए बालक के सर्वांगीण विकास का प्रयास किया जाता है। छात्रावास में बालक को धर्म तथा राष्ट्र भक्ति के साथ साथ चरित्र उत्थान, आत्मबल, ईमानदारी, कर्मशक्ति आदि आर्ष गुणों के समावेश का प्रशिक्षण भी सास्कृतिक कार्यक्रमाधीन दिया जाता है। प्रति ४० बालकों पर एक सरक्षक की व्यवस्था हमारे अत्यन्त कर्मठ समाजसेवी श्री धर्मदेव विद्यार्थी एम० ए० बी० एड० रिसर्चस्कालर के नियन्त्रण में है।

खेल विभाग—

गुरुकुल में खेलों की उच्च महत्ता को स्वीकार कर प्रत्येक ब्रह्मचारी के लिए खेल अनिवार्य है जिसके परिणामस्वरूप गत वर्ष खेल विभाग हरयाणा सरकार ने गुरुकुल में खेल विभाग की राजकीय कुश्ती शाखा स्वीकृत की है। स्वयं खेल मन्त्री चौ० चन्दासिंह जी ने खेल विभाग का निरीक्षण कर कुश्ती शाखा का उद्घाटन किया। इस कार्य हेतु एक गुरुकुल के सुयोग्य व्यायाम शिक्षक श्री कृष्णपाल आर्य के अतिरिक्त जिला खेल विभाग के समस्त कोच सक्रिय योगदान देते हैं।

योगासन—

जिला स्तरीय योगासन प्रतियोगिता में निम्नलिखित ब्रह्मचारी छात्र विजेता रहे। ५ से १४ वर्ष के ब्र० कुलदीप आर्य, ब्र० सतीश कुमार तथा ब्र० सहसपाल ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया।

१४ से १८ वर्ष के ब्र० गजेन्द्रसिंह, ब्र० दिलबागसिंह, ब्र० धर्मसिंह ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किया। राज्यस्तरीय योगासन प्रतियोगिता में ब्र० कुलदीप आर्य ने राज्यभर में प्रथम स्थान प्राप्त किया और राष्ट्रीय योगासन प्रतियोगिता मे भाग लिया।

कुश्ती—

गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने हरयाणा राज्य प्राथमिक विद्यालय खेल कुद प्रतियोगिता में कुश्ती में राज्य चैम्पियनशिप जीती तथा हरयाणा राज्य माध्यमिक विद्यालय खेल कूद प्रतियोगिता मे कुश्ती दल ने राज्य चैम्पियनशिप जीतकर ब्र० जोरासिंह ने राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता मे भाग लिया। गुरुकुल ने राज्यस्तरीय अन्तर्जोनल अखाडा प्रतियोगिता भी जीती। ज्ञातव्य है कि गुरुकुल मे हरयाणा सरकार की ओर से १० छात्रों की राजकीय कुश्ती शाखा बनाई गई है जिसका सचालन खेल विभाग के कोच श्री प्रकाशसिंह दहिया करते हैं।

हाकी—

गुरुकुल का हाकी दल हरयाणा राज्य माध्यमिक विद्यालय खेल कूद प्रतियोगिता में राज्य भर में द्वितीय रहा।

फुटबाल—

गुरुकुल का फुटबाल दल जिला माध्यमिक विद्यालय खेलकूद प्रतियोगिता में प्रथम रहा।

वालीवाल—

गुरुकुल का वालीवाल दल भी जिला माध्यमिक विद्यालय खेल कूद प्रतियोगिता में प्रथम रहा।

कबड्डी—

जिला माध्यमिक विद्यालय खेल कूद प्रतियोगिता में गुरुकुल का कबड्डी दल द्वितीय रहा।

जूडो—

जूडो में गुरुकुल के व्यायाम शिक्षक ब्र० कृष्णपाल जो हरयाणा राज्य खेल कूद प्रतियोगिता में दूसरा स्थान प्राप्त कर विजयी रहे।

सांस्कृतिक विकास—

ब्रह्मचारियों में विभिन्न रुचियां पैदा कर व्यावहारिक ज्ञान का प्रोत्साहन देने के लिए भजन एकांकी तथा कविता भाषण व लेखन कार्य की भी प्रशिक्षण व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त शैक्षणिक यात्रा व मनोरंजन सैर आदि की भी व्यवस्था की जाती है। इस वर्ष हमने निम्नलिखित राज्यस्तरीय प्रतियोगिता में स्थान प्राप्त किया। इस विभाग का सचालन श्री धर्मदेव विद्यार्थी रिसर्चस्कालर व पं० जयप्रकाश जी के अधीन है। इस वर्ष निम्नलिखित भाषण प्रतियोगिताओं में गुरुकुल के छात्र विजयी रहे।

आर्यसमाज पानीपत द्वारा आयोजित राज्यस्तरीय भाषण प्रतियोगिता मे ब्र० रणवीरसिंह ने सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

परिवार नियोजन विभाग द्वारा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में राज्यस्तरीय भाषण प्रतियोगिता मे ब्र० रणवीरसिंह ने प्रथम तथा ब्रह्मचारी जयकुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

पुस्तकालय—

बालकों, ब्रह्मचारियों के बौद्धिक विकास हेतु गुरुकुल का अपना पुस्तकालय है जिसमें लगभग ५०,००० रुपये की पुस्तकें हैं। पुस्तकालय के दो विभाग हैं एक विभाग बालकों द्वारा सचालित जिसमें ज्ञानवर्धक बाल साहित्य होता है तथा दूसरा महत्त्वशाली विभाग जिसमे गम्भीर वैदिक साहित्य की व्यवस्था है। पुस्तकालय का सचालन डा० तुलसीराम शास्त्री करते हैं।

भोजनालय—

बाल ब्रह्मचारियो के लिए सन्तुलित भोजन की व्यवस्था की गई है जिसमें दुग्ध, देसी घी, हरी-सब्जियां, दाल तथा फल आदि की सुन्दर व पौष्टिक व्यवस्था है। आजकल भोजन भण्डार श्री दुर्गादत्त जी पूर्व ए० एस० आई० तथा भोजनालय श्री धर्मदेव जी विद्यार्थी के अधीन है। भोजनालय में ६ पारंगत कर्मचारी कार्य करते हैं जो मुख्य पाचक राजकुमार की देखरेख मे कार्य करते है।

गोशाला—

महर्षि दयानन्द के आदेशानुसार हमारे प्रधान चौ० सत्यदेव जी और श्री हंसराज जी कपूर अधिष्ठाता की प्रेरणा से एक सुन्दर तथा उन्नत गोशाला का निर्माण किया गया है। गोशाला में शंकर नस्ल की २५ गाय ७ बछड़िया ३ बछड़े तथा ४ बैल हैं। इनमें से अनेकों गाय प्रतिवर्ष हरयाणा राज्य दुग्ध प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करती हैं। इस समय गोशाला में लगभग १२० किलोग्राम दूध होता है जो ब्रह्मचारियों को ही दिया जाता है। हमे आशा है कि अगर आपका सहयोग इसी प्रकार मिलता रहा तो यह गोशाला राज्य भर में एक उच्चकोटि की गोशाला बनी रहेगी। गोशाला का संचालन श्री धर्मसिंह गोशाला प्रमुख करते हैं, गोहत्या रोकने के लिऐ तथा गौ नस्ल सुधार करने के लिये हमारे मुख्य संरक्षक श्री धर्मदेव विद्यार्थी द्वारा लिखित 'उन्नत गोपालन' पुस्तक अवश्य पढ़ें।

श्रद्धानन्द चिकित्सालय

बालकों के स्वास्थ्य का समुचित ध्यान रखने के लिए वैद्य किशनलाल जी तथा उपवैद्य सोहनपाल जो की देखरेख में एक श्रद्धानन्द चिकित्सालय भी है जहां बालकों का नियमित स्वास्थ्य निरीक्षण किया जाता है यद्यपि धनाभाव के कारण चिकित्सालय आधुनिक सुविधाओं से पूर्ण नही है परन्तु जिला हस्पताल निकट होने से कोई असुविधा अखरनी नहीं है।

आर्यसमाज–

वैदिक प्रचार प्रसार की दृष्टि से सभी कुलवासी आर्यसमाज के विधिवत् सदस्य हैं जिसके प्रधान श्री धर्मवीर शास्त्री तथा मन्त्री श्री कृष्णपाल जी हैं जो बड़ी लग्न से साप्ताहिक सत्संग तथा उत्सवों आदि का आयोजन करते रहते हैं। गुरुकुल में आर्य वीर दल की भी शाखा प्रतिदिन चलती है जिसके नायक ब्र० आनन्द शिक्षक ब्र० हरीपाल जी हैं।

ब्रह्मचार्य प्रशिक्षण शिविर–

गुरुकुल के अधिकारियों तथा वेद प्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र के कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से गुरुकुल में १५ मार्च से ८ अप्रैल तक प्रान्तीय शिविर लगाया गया तथा जून माह मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर लगाया गया जिसमें देश भर से आये १०० युवको ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस वर्ष भी कुरुक्षेत्र जिला मे लगभग ३० शिविर लगाये गये हैं जिनका प्रशिक्षण कार्य ब्र० हरपाल आर्य तथा कृष्णपाल आर्य ने किया है जिसके परिणामस्वरूप आर्यसमाज तथा आर्य वीर दल की अनेकों शाखाय खोली जा रही हैं इन शिविरो का निर्देशन सुप्रसिद्ध व्यायाम पारंगत डा० देवव्रत आचार्य तथा संयोजन श्री धर्मदेव विद्यार्थी अधिष्ठाता आर्य वीर दल हरयाणा बड़ी कुशलता से करते हैं।

अपील—

आप सबका उपरोक्त विवरण पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता अनुभव हो रही होगी कि बिना सरकारी सहायता के यह आर्य गुरुकुल निरन्तर प्रगति पथ पर बढ रहा है परन्तु हमारी कई योजनाये धनाभाव के कारण अधूरी हैं क्योकि गुरुकुल की मासिक आय ३० हजार रुपये है तथा व्यय लगभग ५० हजार है अतः २० हजार का मासिक घाटा रहता है जो दानी सज्जनों के सहयोग से ही पूर्ण होता है।

आधुनिक शिक्षा पद्धतियो के विस्तार के लिए अतिरिक्त भवन तथा अन्य सामग्री आवश्यक है। अतः याद रखिये कि सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदान विशिष्यते' अर्थात् सब दानों में विद्या के लिए दान ही सर्वोत्तम होता है। अतः स्वामी जी के अभीष्ट लक्ष्य पूर्ति हेतु आप भी इस यज्ञ में पुष्कल द्रव्य राशि प्रदान कर पुण्य के भागी बने।

प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति

आचार्य देवव्रत शास्त्री एम० ए०

मानव की अनेक समस्याओं मे शिक्षा भी एक बड़ी भारी समस्या है, क्योंकि शिक्षा ही मनुष्य को मनुष्य बनाती है, नही तो वह निरा पशु रह जाता है। मानव की इस समस्या के समाधान में वैदिक शिक्षा शास्त्रियों ने 'बालक' को शिक्षा का केन्द्र माना है। शिक्षा की वैदिक विचारधारा में बालक को इतना महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है कि उसी के जन्म सुधार के लिए सोलह संस्कारो की कल्पना की गई है। वैदिक ऋषियो का कहना है कि बालक पर निम्न तीन प्रकार के संस्कार प्रभाव डालते हैं जिन पर नियन्त्रण रखना शिक्षा का काम है—

१—उसके अपने पिछले जन्म के सस्कार।

२—माता पिता के सस्कार।

३—पर्यावरण द्वारा पड़ने वाले इस जन्म के दबाओ सस्कार।

बालक की शिक्षा क्या है मानो सस्कारो का ही एक खेल है। शिक्षा का प्रश्न सस्कारो का ही प्रश्न है। वैदिक शिक्षा शास्त्री कर्म तथा पुनर्जन्म सिद्धान्त को भी मानते थे। मानव के निर्माण मे पर्यावरण ही एक घटक तत्त्व नही है, अपितु उसके साथ साथ माता पिता के संस्कार, बालक के अपने पूर्व जन्म के संस्कार सभी हिस्सा लेते है, इसलिए अच्छे से अच्छे वातावरण में व्यक्ति नीचे से नीचे भी गिर जाता है, बुरे से बुरे पर्यावरण मे वह ऊँचे से ऊँचा भी उठ जाता है। यही कारण है कि जन्मभर बालक को ऐसे सस्कारो से घेर दिया जाता था जिसकी चोट से उसके व्यक्तित्व को बनाया जा सके।

सस्कारो से मानव का निर्माण कैसे होता है? इसका प्रत्यक्ष उदाहरण भारत की अंग्रेजो के समय से चल रही शिक्षा प्रणाली है। उन्होने शिक्षा के जिस उद्देश्य के साथ १८३५ में जिस प्रकार के युवको को उत्पन्न करने का नींव डाला था। वह ईंट गारे की नीव नहीं थी। लोहे और सीमेंट की नीव थी, जो अंग्रेज के चले जाने के बाद भी वसी की वैसी खड़ी है। अंग्रेज चले गये परन्तु घर-घर अंग्रेज मौजूद हैं। इसलिए मौजूद है क्योकि सवा सौ साल तक हमारे युवको के मस्तिष्क पर जिन संस्कारो की चोट लगातार पड़ती रही उससे भारतीय मस्तिष्क का अंग्रेज मस्तिष्क बन जाना स्वाभाविक था। अंग्रेजी शिक्षा के सस्कारो ने जिस प्रकार के युवक का निर्माण करना था वह अंग्रेजो के चले जाने के बरसो बाद भी वैसे का वैसा यहा मौजूद है।

वैदिक ऋषियो की खोज थी कि बालक के निर्माण में १—भौतिक पर्यावरण २—मानसिक पर्यावरण एवं सामाजिक पर्यावरण का विशेष महत्त्व है।

१—भौतिक पर्यावरण

ऋग्वेद में एक मन्त्र आया है—"उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनां धियो विप्रो अजायत" अर्थात् पर्वत की उपत्यका और नदी के संगम में विप्र बनता है। वैदिक ऋषियों के शिक्षा केन्द्र प्रकृति के उन वैभवपूर्ण स्थलो पर होते थे जहां एक तरफ पहाड़ की ऊंची ऊंची चोटिया, दूसरी तरफ कल-कल रव करती नदी की अजस्रधारा बहती थी। आज शहर के विषैले वातावरण में शिक्षा संस्थाओं का निर्माण होता है। जहां उच्चकोटि के मानव के निर्माण के स्थान पर उच्चकोटि की इमारतों का निर्माण होता है। इसमें सन्देह नही कि आज के युग में शिक्षण संस्थाओं के लिए पहाडों और नदियों को ढुंढना कठिन है। परन्तु शहरों के गली कूचों में शिक्षा संस्थाओ को चलाने से कोमल मस्तिष्क बालकों के मस्तिष्क को शहरों के गन्दे वातावरण से नहीं बचाया जा सकता। वैदिक दृष्टि यही है कि शिक्षा संस्थाओं को प्रकृति के शुद्ध वातावरण में रखने से ही बाल मस्तिष्क को शुद्ध संस्कारो में विकसित किया जा सकता है।

२—मानसिक पर्यावरण (कुल भावना)–

घर में माता पिता बालक को शिक्षा पर उचित ध्यान नहीं दे सकते अत: उसे घर से बाहर किसी दूसरे के पास भेजना आवश्यक है जिसका काम ही बालक के चरित्र का निर्माण करना तथा उसे शिक्षित करना हो, परन्तु घर से बाहर भेज देने पर उसे घर का सा, माता पिता का सा प्रेम न मिलने मे उसका समुचित विकास न हो सकेगा इसलिए उसका घर मे रहना भी आवश्यक है। इस विरोध का हल करने के लिए वैदिक शिक्षा शास्त्रियों ने 'गुरुकुल पद्धति' का निर्माण किया था। गुरुकुल का अर्थ है 'गुरु' का 'कुल'। गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर वर्तमान युग के कुछ शिक्षा शास्त्रियों की तरफ से सबसे बडा आक्षेप यह किया जाता है कि इस पद्धति मे बच्चे को परिवार से तोड़ दिया जाता है, वह अपनी जडो को खो देता है। बच्चे को परिवार से तोड़ देने की बात पहले पलेटो ने उठाई थी। उसका कहना था कि समाज में एकता की भावना को लाने के लिये बच्चो मे अदला बदला कर लेना चाहिए। लेकिन बात अव्यावहारिक थी चल न सकी। यही आक्षेप गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर है, परन्तु यह आक्षेप वही लोग करते है जो इसके मूल सिद्धान्तों को नही समझते। गुरुकुल शब्द में 'कुल' शब्द का प्रयोग ही इसलिये किया जाता है क्योंकि शिक्षा का काम बच्चे को एक छोटे कुल, छोटे परिवार में से निकालकर एक बडे परिवार में डाल देना है। आज इस बात की बड़ी दुहाई दी जाती है कि शिक्षा समाज से कट नही होनी चाहिये ताकि बच्चा समाज से न कट सके। ऐसा समझा जाता है कि शिक्षा जगत् में यह नया आविष्कार है, नई सूझ है, शिक्षा को यह नई देन है। होगी नई देन, क्योंकि चालू शिक्षा मे बालक के छोटे, सोमित क्षेत्र से विस्तृत क्षेत्र में आगे बढते जाने का कोई विचार नहीं था, परन्तु वेदो मे प्रतिपादित 'गुरुकुल पद्धति' का तो यह मुख्य स्तम्भ था कि बालक ने छोटे कुल से बड़े कुल में, छोटे समाज से बडे समाज में प्रवेश करना है। कहां माता पिता सन्तान का छोटा सा कुल, छोटा सा समाज, कहां गुरु का अनेक शिष्यों से घिरा बड़ा सा कुल, बड़ा सा समाज। गुरुकुल शिक्षा पद्धति मे बच्चे को समाज से तोडा नही जाता, परिवार में ही पाला जाता है, परन्तु वैयक्तिक परिवार में पालने के स्थान पर सामाजिक परिवार में पाला जाता है। आधुनिक शिक्षाविज्ञ कहते हैं बच्चे को माता पिता से नही तोडा जाना चाहिए। प्राचीन ऋषियों

को कहना है कि बच्चे को न परिवार से तोड़ा जाना चाहिए न समाज से तोड़ना चाहिए; बच्चे का विकास 'कुल' में होना चाहिए। पहले माता पिता के कुल में फिर गुरु के कुल में फिर समाज के कुल में। मूल सिद्धान्त कुल का है, परिवार का है। कुल का विचार इतना क्रान्तिकारी विचार है कि यदि यह शिक्षा के क्षेत्र में चरितार्थ हो जाए तो यह शिक्षा को आमूलचूल बदल सकता है। अगर समाज में चरितार्थ हो जाए तो समाज को बदल सकता है जिन्होंने 'सहनाववतु सहनौ भुनक्तु' का राग गाया था, उन्होंने कुल के विचार को ही शिक्षा तथा समाज में घटाने का प्रयत्न किया था।

सामाजिक पर्यावरण (समानता की भावना)

जिन शिक्षा विज्ञों ने शिक्षणालय को 'कुल' या 'परिवार' का नाम दिया था, उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में एक अत्यन्त क्रान्तिकारी विचार को जन्म दिया था, ऐसा क्रान्तिकारी विचार जिसके आधार पर बिना रक्तपात किये समाजवाद का भवन अपने आप उठ खड़ा हो। इस विचार की गहराई में जाते हुऐ अथर्ववेद में कहा है—

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः।
त रात्रीस्तिस्र उदरे बिभर्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः॥

अर्थात् बालक को शिक्षा देने के लिये स्वीकार करते हुए आचार्य उसे इस प्रकार सुरक्षित सम्भाल कर रखता है, जैसे माता पुत्र को अपने गर्भ में सुरक्षित सम्भाल कर रखती है। गर्भ माता के पेट में रहता है। माता श्वास लेती है, गर्भ श्वास नहीं लेता, माता भोजन करती है, गर्भ भोजन नहीं करता, माता जल पीती है गर्भ जल नहीं पीता, परन्तु माता के श्वास मे उसका श्वास है, माता के भोजन में उसका भोजन है, माता के जलपान में उसका जलपान है। गुरु तथा शिष्य के निकटतम सम्बन्ध समझाने के लिये माता तथा गर्भ के सम्बन्ध से अधिक सुन्दर दूसरी उपमा क्या दी जा सकती है? भारत का आचार्य आचार्य ही नहीं बालक का पिता भी था। बालक अपने जन्म के माता पिता को छोड़ आता था परन्तु उसका स्थान आचार्य ले लेता था। आचार्य उसका शिक्षक ही नहीं, पिता भी था, विद्या उसकी माता थी, गुरु के अन्य शिष्य उसके भाई थे। कहा समाप्त हुआ उसका परिवार? वह तो एक ऐसे परिवार की प्रक्रिया में पड गया है जिसमें चलते चलते वह अन्त में जाकर समाज के परिवार का अंग हो जाएगा, जहां जन्म का कोई भेदभाव नहीं रहेगा, जहां जैसे माता पिता के परिवार में सब भाई भाई और भाई-बहन हैं, थे जैसे आचार्य के आश्रम में जन्म के भाई भाई और भाई बहन थे, वैसे समाज के क्षेत्र में पहुँचने पर वह उसी ज्योति को लेकर जाएगा जो उसे गुरु के आश्रम में पाया था। जिस नाम को वह समाज मे छिटककर जन जन को भाई भाई और भाई-बहन बना देगा—तब वहां समाजवाद के लिए न नारों की जरूरत होगी, न जलूसों की, क्योंकि तब समाज का बच्चा बच्चा 'कुल' या 'परिवार' की भावना को लेकर ही सामाजिक जीवन में प्रवेश करेगा। कच्चामाल जब गुरुकुल शिक्षा पद्धति की कुल भावना भावित मशीन में से पक्का माल बनकर बाहर निकलेगा तब उस पर छाप ही समाजवाद को—समानता की-भावना की होगी, वह और किसी तरह सोच ही नहीं सकेगा।

क्या आज तक किसी ने सोचा कि 'कुल' शब्द का प्रयोग उस कुल शब्द का जिसका सम्बन्ध सिर्फ माता पिता के साथ था, शिक्षणालय केसाथ गुरुकुल रूप मे क्यो किया गया? हो सकता है 'स्कूल' शब्द भी किसी समय संस्कृत के कुल शब्द से ही उपजा हो। 'कुल' शब्द गुरु शिष्य के निकटतम सम्बन्धों

का सूचक है। आज शिक्षा के क्षेत्र में कुल की भावना नहीं पनप पा रही क्योंकि स्कूल, यूनिवर्सिटियां वैदिक दृष्टि के शिक्षणालय न रहकर फैक्टरियां हो गई हैं जिनमें कुछ फैक्टरियों के मालिक हैं, कुछ मजदूर हैं। हम कुल में हैं या फैक्टरी में हैं—यही शिक्षा शास्त्रियों की सबसे बड़ी परेशानी है जिसका हल न सरकार कर पा रही है, न सब विश्वविद्यालयों के वाइस-चान्सलर कर पा रहे हैं।

वैदिक शिक्षा शास्त्रियों द्वारा प्रतिपादित गुरुकुल शिक्षा पद्धति में 'गुरु' 'कुल' 'आचार्य' 'ब्रह्मचारी' 'उपनयन' 'आश्रम' गुरुकुल'—ये सब अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शब्द हैं जिनमें से एक एक में मनोवैज्ञानिक तथा दार्शनिक विचार भरे पड़े है। इन विचारों से ही जीवन का निर्माण होता है। उस शिक्षा पद्धति का महान् लक्ष्य जैसे गुरुकुल में भर्ती करते समय आचार्य ब्रह्मचारी को उपदेश करता था 'कर्म कुरु' 'दिवा मा स्वाप्सीः' 'क्रोधानृते वर्जय' 'उपरिशय्यां वर्जय' आदि। वैसे ही शिक्षा समाप्त कर चुकने के बाद युवक से जो आशा की जाती थी उसका उल्लेख करते हुए तैत्तिरीयोपनिषद् में लिखा है—

सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। एष आदेशः। एष उपदेशः। एषा वेदोपनिषद्। एतदनुशासनम्।

शिक्षा समाप्ति पर जब ब्रह्मचारी घर को लौटता था, तब आचार्य उसे उपदेश देते हुए जिसे आजकल 'दीक्षान्त भाषण' कहा जाता है, कहता है—कि गुरु के पास तुमने जो कुछ सीखा है—उससे तुमसे यह आशा है की जाती है कि तुम जीवन में सत्य का आचरण करोगे, धार्मिक जीवन बीताओगे माता पिता की सेवा करोगे, अपने बड़ों का सम्मान करोगे, आजकल हमारे विश्वविद्यालयों ने भी दीक्षान्त भाषण पर इन्हीं तैत्तिरीयोपनिषद् के वाक्यों का उच्चारण शुरु कर दिया है। परन्तु क्या हमारी शिक्षा सचमुच ऐसे युवक तैयार कर रही है? बार बार सिर्फ यही रटा जा रहा है कि शिक्षा का उद्देश्य युवक युवतियों को रोटी कमाने लायक बनाना है। रोटी कमाने लायक बनाना है—यह तो ठीक है, परन्तु शिक्षा का उद्देश्य इन्सान को इन्सान बनाना पहले है। चौदह सोलह साल जब तक विद्यार्थी शिक्षणालय में रहता है, हम उसे नहीं बतलाते कि जीवन क्या है, सत्य क्या है, धर्म क्या है, जीवन का लक्ष्य क्या है? इम्तिहान पास कर लेने के बाद दीक्षान्त भाषण के समय यह उपनिषद् का वाक्य उसे सुना देते हैं। यह शिक्षा नहीं, शिक्षा की विडम्बना है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति में शिक्षा समाप्ति पर आचार्य का कहना था कि रोटी तो तुम कमाओगे ही, पेट तो भरोगे ही परन्तु याद रखना जो कुछ करना इन्सान बने रहना, इस संस्था में इन्सानीयत के जो गुण सीखे हैं उन्हें मत भूलना।

वर्तमान भारत में जो शिक्षा दी जा रही है पूर्णतया असफल हो चुकी है। असफल क्यों हो चुकी है? क्योंकि शिक्षा संस्थाएं एक फैक्ट्री का रूप धारण कर गई हैं। शिक्षक लोग अपने को फैक्ट्री के वेतनभोगी उच्चकोटि के मजदूर समझते है। मजदूर की मनोवृत्ति कम से कम काम करके ज्यादा से ज्यादा पैसा खींचने की होती है। सब फैक्ट्रियों में यही हो रहा है। शिक्षा की फैक्ट्री में भी यही होने लगा। छात्र भी शिक्षा संस्थाओं को फैक्ट्रियां समझने लगे हैं वे भी यूनियन बनाते हैं, घेराव करते हैं, हड़तालें करते हैं। पढने लिखने के लिये श्रम करने का गुरु शिष्य में पिता पुत्र के सम्बन्ध का, गुरु के शिष्य या शिष्य के गुरु के निकट आने का, तपस्या का, ब्रह्मचर्य का, सदाचार का, चरित्र निर्माण का शिक्षा में कहीं स्थान नहीं रहा। इस अवस्था मे लड़खड़ा रही हमारी शिक्षा

पद्धति को अगर कोई बचा सकती है तो वह गुरुकुल शिक्षा पद्धति ही है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति से अभिप्राय किसी शिक्षा संस्था विशेष से नहीं है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति के कुछ आधारभूत सिद्धान्त हैं। उन सिद्धान्तों को क्रियान्वित किये बिना कोई संस्था गुरुकुल नहीं कही जा सकती। जब तक देश की शिक्षा पद्धति में गुरु शिष्य का सम्बन्ध 'कुल' भावना पर नहीं खड़ा होता। गुरु शिष्य में पिता की सी भावना नहीं जागती, वे एक दूसरे के निकट नहीं आते, जब तक विद्यार्थी श्रम, तपस्या के लिये तैयार नहीं होते, जब तक ब्रह्मचर्य शिक्षा का आधार नहीं बनता, चरित्रनिर्माण और सदाचार शिक्षा के अभिन्न अंग नहीं बनते, जब तक शिक्षक वर्ग 'आचारं ग्राहतीति आचार्यः' की जिम्मेदारी अपने कन्धों पर नहीं लेते, दूसरे शब्दों में जब तक गुरुकुल शिक्षा पद्धति के मूल सिद्धान्त देश की शिक्षा पद्धति में ओतप्रोत नहीं हो जाते, उस पर छा नहीं जाते: तब तक हम १८३५ में मैकाले ने जहां खड़ा किया था वहीं खड़े रहेंगे।

● ● ●

अनमोल वचन

ब्र० श्यामकुमार कक्षा चतुर्थ

- अत्याचार करना पाप है अत्याचार सहना भी पाप है। (गांधी)
- कभी न गिरने से इतना गौरव नहीं जितना गिरकर हर बार उठने और हिम्मत न हारने में है। (विवेकानन्द)
- ज्ञानी मूक रहता है और प्रतिभाशाली निर्देश करता है अर्थात् मूर्ख वाद-विवाद करता है। (रवीन्द्रनाथ)
- शरीर जल से, मन सत्य से, आत्मा धर्म से, बुद्धि ज्ञान से, भावना भक्ति से पवित्र होते हैं। (मनु)
- आशा सुलाने वाली थपकी है और निराशा जगाने वाला चाबुक (प्रेमचन्द)
- सत्य एक विशाल वृक्ष है ज्यों ज्यों सेवा करोगे त्यों त्यों इसमें अनेक फल दिखाई देंगे। ((गांधी)
- भाग्य के भरोसे बैठे रहने पर भाग्य सोया रहता है पर परिश्रम से वह जाग उठता है। (विवेकानन्द)
- सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में सदा उद्यत रहना चाहिए। (दयानन्द सरस्वती)
- माता-पिता, आचार्य व अतिथि की सेवा करना देवपूजा कहाती है। (दयानन्द सरस्वती)
- उठो जागो और अपने लक्ष्य तक पहुँचने से पहले मत रुको। (विवेकानन्द)

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का धार्मिक, सामाजिक क्षेत्र में योगदान

(महाशय भरतसिह वानप्रस्थ पूर्व सभामन्त्री)



वर्तमान भारत (आर्यावर्त) के निर्माण में जितना योगदान गुरुकुलों का रहा है शायद ही अन्य किसी सस्था का रहा हो। गुरुकुलों से निकलने वाले अनेक साहित्यकार, पत्रकार, सस्कृतज्ञ, विद्वान्, प्रवक्ता तथा राजनेता व समाज सुधारको का भारत के सामाजिक, धार्मिक क्षेत्रो मे योगदान किसी से छिपा नही। अभिप्राय यह है कि गुरुकुलो से निकलने वाले छात्र ब्रह्मचारियो ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे उत्तरोत्तर उन्नति की है।

गुरुकुलवासी केवल ब्रह्मचारी के उच्च जीवन निर्माण कार्य से ही सन्तुष्ट न रहकर गुरुकुल द्वारा समाज कल्याण का कार्य करना भी अपना कर्त्तव्य समझते हैं। समाज में फैली कुरीतियों के विरुद्ध सङ्घर्ष करना भी गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने अपना एक लक्ष्य बनाया है जिसका विवरण यहा प्रस्तुत है—

आर्य युवक निर्माण योजना–

नवयुवकों के चरित्र को ऊचा उठाकर राष्ट्रोन्मुख कर नये खून को आर्यसमाज मे लाने का कार्य भी गुरुकुल ने अपने हाथ में लेकर निराशा मे आशा की झलक प्रस्तुत की है। गुरुकुल प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष भू० पू० पुलिस अधीक्षक चौ० सत्यदेवसिह जी की प्रेरणा से ही गुरुकुल के युवा मुख्य सरक्षक श्री धर्मदेव विद्यार्थी ने ४ जून १९८३ से १२ जून १९८३ तक देहात मे फैले अपने ५० युवा कार्य-कर्त्ताओं सहित समाज मे फैली कुरीतियों यथा दहेज, शराब, फैशन एव चरित्रहीनता और बढ़ती हुई हरामखोरी के विरोध में कुरुक्षेत्र जिला के २५ गावो मे जनसभाओ तथा साहित्य की सहायता से जनजागरण साइकिल यात्रा की। इस यात्रा मे जहां अनेकों वक्ताओ ने भारी जनसमूह को सम्बोधित किया वही आर्यजगत् के क्रातिकारी भजनोपदेशक स्वामी रुद्रवेश जी के क्रातिकारी भजनो ने जन-साधारण मे आर्यसमाज के प्रति रुचि पैदा की। इस यात्रा का उद्घाटन गुरुकुल के प्रधान चौ० सत्य-देवसिह जी ने श्री कृष्णलाल वधवा की अध्यक्षता मे फतेहपुर अनाज मण्डी मे किया। यह यात्रा फतेहपुर, टमोठा, रसीना, आहू, साकरा, कौल, थेरडू, खेड़ी मटूवा, चुहड़माजरा, डाण्ड, जडोला, इस्माइलाबाद, ठोल, शाहबाद, बबेन, लाडवा तथा मथाना होती हुई एक सप्ताह में कुरुक्षेत्र पहुंची। इस यात्रा में ५०० यज्ञोपवीत बांटकर २००० व्यक्तियो की शराब छुड़वाने की प्रतिज्ञाये कराई गई।

वेद प्रचारमण्डल की स्थापना–

जनजागरण यात्रा द्वारा देहात में आर्यसमाज के प्रति पैदा हुई रुचि को स्थाई बनाने के लिए

और स्वामी दयानन्द सरस्वती के वैदिक सन्देश को जन-जन तक पहुंचाने के लिए गुरुकुल के अधिकारियों ने ३१ जून १९८३ का जिला भर से आये १५० प्रतिनिधियों की उपस्थिति में जिला के सभी आर्यसमाजों की जिला प्रमुख संस्था के रूप मे वेदप्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र की स्थापना की गई। जिसके सभापति का कार्यभार सर्वसम्मति से मुझे सौंपा गया। इसी सभा मे श्री कृष्णलाल वधवा को अध्यक्ष, चौ० बिशनसिह जी को मन्त्री तथा ब्र० धर्मदेव विद्यार्थी को सगठन मन्त्री चुनकर शेष कार्यकारिणी के बनाने का अधिकार तीनो अधिकारियो को सर्वसम्मति से दिया गया। जिन्होंने जिला के सभी आर्यसमाजों के प्रधान महानुभावो को कार्यकारिणी का सदस्य बनाया तथा वेदप्रचार का महत्त्वपूर्ण कार्य शुरु किया गया।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर —

परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्त्वावधान मे मनाई जाने वाली महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर भी गुरुकुल किसी से पीछे नही रहा। गुरुकुल के मुख्य संरक्षक श्री धर्मदेव विद्यार्थी तथा आचार्य देवव्रत जो जो मण्डल के कोषाध्यक्ष भी है, ने गांवो मे आर्यसमाज के जलसे कर के लोगो को स्वामी दयानन्द के उपकार बता-बताकर श्रद्धाञ्जलि देने के लिए तैयार किया। स्वामी रुद्रवेश जी की प्रेरणा व आर्यजगत् के सर्वत्यागी सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी महाराज के आशीर्वाद से कुरुक्षेत्र जिला से आर्यजनो की दस बसे भरकर पहुची तथा भण्डार हेतु ५५ बोरी आटा, दाल आदि व लगभग ३० हजार रुपये का आर्थिक सहयोग कुरुक्षेत्र जिला की आर्यजनता की ओर से शताब्दी मे दिया जाना गुरुकुल की जनसाधारण मे उत्तम छवि का प्रतीक है।

वेदप्रचार कार्य—

महर्षि दयानन्द की आज्ञानुसार वेद सन्देश को जन जन तक पहुंचाने का कार्य भी वेदप्रचार मण्डल सुगमता से कर रहा है। इस प्रयोजन हेतु जहा गुरुकुल के विद्वान् आचार्य देवव्रत, चौ० बिशनसिह एडवोकेट, प्रो० भागसिह आर्य और गुरुकुल के प्रधान चौ० सत्यदेवसिह जी आदि आर्यनेता गाव-गाव मे पहुचकर वेद के पावन सन्देश को अपने व्याख्यानों द्वारा जन-जन तक पहुचाते है वही आर्यजगत् के क्रातिकारी भजनोपदेशक स्वामी रुद्रवेश जी तथा ब्र० रामनिवास की भजन-मण्डलिया गावों मे जाकर सर्दी गर्मी बारह महीने कष्ट सहकर भी प्रचारकार्य को रुकने नही देती। वेद प्रचार के साथ-साथ कुरुक्षत्र जिला मे सामाजिक धार्मिक बुराइयों के विरोध मे जनजागरण का भारी कार्य स्वामी जी की भजनमण्डली निरन्तर कर रही है।

आर्यसमाजों की स्थापना—

कुरुक्षेत्र जिला मे आर्यसमाजो की स्थापना करने में गुरुकुल का मुख्य योगदान रहा है। मण्डल महामन्त्री धर्मदेव विद्यार्थी के सतत प्रयत्नों से शताब्दी वर्ष मे जिला भर मे २१ नये आर्यसमाजों की स्थापना की गई है। नवयुवको को आर्यसमाज मे दीक्षित करने के लिए आर्यवीर दल की अनेकों शाखाओ का गठन भी महत्त्वपूर्ण रहा है। जलसो, उत्सवों, प्रचार यात्राओं तथा शिविरों के माध्यम से अनेकों गावों मे पुराने बन्द पड़े आर्यसमाज भी सक्रिय हो उठे है तथा अनेकों गांवों मे आर्यसमाज बनने की सम्भावनाये प्रबल हुई है। इन्ही आर्यसमाजों के प्रचार कार्य का ही परिणाम है

कि जिला भर में सामाजिक बुराइयां दहेज शराब आदि काफी कम हुई हैं। इस कार्य में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजनमण्डलियों का सहयोग भी समय-समय पर मिलता रहता है। मण्डल के कार्यकर्त्ता आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सव रखवाकर आर्यसमाजों को सक्रिय कर रहे है। इस समय तक मण्डल द्वारा दो वर्ष में लगभग २०० जलसे किये गये हैं और सैकड़ो यज्ञ कार्य सम्पन्न हुए हैं। वेदप्रचार मण्डल केवल आर्यसमाज के प्रचार को मुख्य लक्ष्य मानकर कालेज तथा गुरुकुल विभाग दोनों ही आर्यसमाजों को महत्त्वपूर्ण मानकर दोनो मे प्रचारव्यवस्था करता है।

शराब तथा दहेज विरोधी हस्ताक्षर अभियान—

वेदप्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र ने शराब के कलङ्क को समाज के माथे से मिटाने के लिए तथा तथा दहेज रूपी राक्षस से बहनों को बचाने के लिए शराब व दहेज विरोधी अभियान चलाया है जिसके अन्तर्गत लोगो को शराब की बुराइया समझाकर यज्ञ मे शराब, बीडी, सिगरेट, अण्डे, मांस का सेवन त्यागने की प्रतिज्ञा कराकर आहुति दिलाई जाती है। इसी प्रकार युवको को दहेज न लेने के लिए तैयार किया जाता है। लोगो को दहेज न लेने तथा न दहेज देने की प्रतिज्ञायें कराई जाती हैं। फिर एक निर्धारित फार्म भरकर ऐसे लोगो के हस्ताक्षर कराये जाते है जो दहेज न लेंगे न दहेज देंगे और स्वय शराब नही पियेंगे न औरो को ही पीने देंगे। शराब छुडाने के लिए शराब पीने वाले के घर पर कार्यकर्ता धरना लगाकर शराब छुड़ाते है।

कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर—

नवयुवकों को आर्यसमाज में दीक्षित कर समाज मे फैली अधार्मिकता, सामाजिक अन्याय और साम्प्रदायिकता के विरोध मे वैदिक धर्म का प्रचार-कार्य करने के लिए अनेको कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर लगाये जाते है। गुरुकुल स्वय प्रति छ: मास पश्चात् लगाता है। इस शृङ्खला मे गुरुकुल कुरुक्षेत्र मे सार्वदेशिक आर्यवीर दल का जून १९८४ का शिविर महत्त्वपूर्ण है जिसमे भारत भर से आये १०० आर्यवीरो ने भाग लिया। जनवरी से मार्च १९८५ तक ब्र० हरिपाल तथा ब्र० कृष्णपाल व्ययामशिक्षक द्वारा लगभग २० शिविरो को मिलाके २० बड़े गावो मे आयोजन अपने आप मे एक नया उत्साहपूर्ण कार्य रहा है। इन सभी शिविरो का प्रशिक्षण कार्य सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान उपसचालक व्यायाम पारगत डा० देवव्रत आचार्य करते हैं तथा सफल सयोजक मण्डल के महामन्त्री श्री धर्मदेव विद्यार्थी करते है।

जनजागरण महा अभियान—

इस महाभियान के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी करनाल के अवसर पर मण्डल के महामन्त्री श्री धर्मदेव विद्यार्थी रिसर्चस्कालर के नेतृत्व मे १०० आर्य युवको का विशाल जत्था ४० गांवों में प्रचार करता हुआ साइकिलो द्वारा करनाल पहुचा। इस महाभियान का उद्घाटन ऐतिहासिक नगर कैथल के आर्यसमाज मन्दिर मे योजना बोर्ड के उपाध्यक्ष चौ० ईश्वरसिह एम० एल० ए० ने यात्रा के सयोजक श्री धर्मदेव विद्यार्थी को जलती मशाल सौपकर किया। कैथल से आरम्भ होकर ४० गांवो मे विभिन्न जनसभाओं यज्ञो द्वारा लगभग १००० लोगो को शराब तथा

दहेज के विरोध में प्रतिज्ञायें कराई गई। साम्प्रदायिकता से बचने के लिए वैदिक धर्म का प्रचार और राष्ट्र को एकता व अखण्डता का सन्देश जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया गया। इस यात्रा में योजना बोर्ड हरयाणा के अध्यक्ष चौ० ईश्वरसिंह जी, जनता पार्टी हरयाणा के अध्यक्ष चौ० बिशनसिंह जी, प्रो० भागसिंह आर्य, गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रधान चौ० सत्यदेवसिंह जी, आर्यवीर दल हरयाणा के बौद्धिकाध्यक्ष पं० उमेद शर्मा, आचार्य देवव्रत जी, प्रो० वेदसुमन जी वेदालङ्कार वेदप्रचार अधिष्ठाता करनाल के अतिरिक्त स्वामी रुद्रवेश जी ने भजनमण्डली सहित कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पूरा समय दिया। इस यात्रा में ग्यारह नये आर्यसमाज बनाये गये और युवकों को आर्यसमाज की शिक्षा दी गई।

युवा वर्ष समारोह—

अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के अन्तर्गत वेदप्रचार मण्डल भी यह अनुभव करता है कि युवको को आर्यसमाज मे प्रशिक्षित कर धार्मिक पाखण्ड सामाजिक अन्याय और साम्प्रदायिकता से उभारकर सत्य सनातन वैदिक धर्म के रास्ते पर लाया जाये। हमारे युवक सस्ती फैशनपरस्ती, चरित्रहीनता, अधार्मिकता त्यागकर राष्ट्र और धर्म की सेवा करने को कृतसकल्प हो सके। इसलिए कुरुक्षेत्र में युवा वर्ष समारोह मनाया जाये। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत गावों में नवयुवको के आर्य प्रशिक्षण शिविर लगाए जाये। अधिक से अधिक आर्य साहित्य लोगों तक पहुंचाया जाये। इसके लिए स्वय मण्डल के महामन्त्री श्री धर्मदेव द्वारा गोरक्षा हेतु 'उन्नत गोपालन' पुस्तक तथा ट्रैक्टों के रूप में दयानन्द बोध, देहेज—?, आर्यसमाज ही क्यों ? पुस्तके लिखकर लागत मूल्य पर बांटी जा रही हैं। इन सब का प्रकाशन गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा किया गया है। इसके अतिरिक्त भी काफी मात्रा में आर्य-साहित्य सस्ते मूल्य पर बांटा जा रहा है।

उपरोक्त आधार पर कहा जा सकता है कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र मे प्रस्थापित वेदप्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र धार्मिक पाखण्ड, सामाजिक अन्याय तथा बढ़ रही साम्प्रदायिकता के विरुद्ध युग प्रवर्तक स्वामी दयानन्द के क्रांतिसन्देश को जन-जन तक पहुंचाने का महत्त्वपूर्ण प्रयास कर रहा है।

इस समय वेदप्रचार मण्डल के अधिकारी निम्नलिखित हैं—

अध्यक्ष—चौ० बिशनसिंह एडवोकेट

उपाध्यक्ष—१- ला० यशपाल आर्य २- प० उमेद शर्मा ३- चौ० युधिष्ठिरपाल

महमन्त्री—श्री धर्मदेव विद्यार्थी रिसर्चस्कालर

उपमन्त्री – १- श्री खजानसिंह २- श्री गणेशदास

कोषाध्यक्ष—देवव्रत

—०—

महापुरुषों की दृष्टि में-महर्षि दयानन्द सरस्वती

संकलनकर्ता ब्र० आनन्द आर्य
कक्षा अष्टम

1. - महर्षि दयानन्द हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों में सुधारकों में और आर्य पुरुषो में एक थे। उनका चरित्र मेरे लिए ईर्ष्या का विषय है। उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत अधिक पड़ा है। —मोहनदास कर्मचन्द गांधी

2 —मेरा सादर प्रणाम उस गुरु दयानन्द को है, जिसका उद्देश्य भारत वर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन, ऐतिहासिक तत्त्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति में लाना था। उसे मेरा बारम्बार प्रणाम है। आधुनिक भारत के मार्गदर्शक महर्षि दयानन्द सरस्वती को मैं सादर श्रद्धांजलि समर्पित करता हूं। —रवीन्द्रनाथ टैगोर

3. —इस बात का श्रेय दयानन्द को ही प्राप्त होगा कि उन्होंने सर्वप्रथम वेदों की व्याख्या के लिए निर्दोष मार्ग का अवलम्बन किया था। ऋषि दयानन्द ने उन द्वारों की कुंजी प्राप्त की है जो युगों से बन्द थे और उससे पटे हुए झरनों का मुख खोल दिया। —अरविन्द घोष

4. —स्वामी दयानन्द एक विद्वान् थे। उनके धर्म नियमों की नींव ईश्वरकृत वेदो पर थी। उन्हे वेद कण्ठस्थ थे। उनके मन और मस्तिष्क में वेदों ने घर किया हुआ था। वर्तमान समय मे संस्कृत का ही एक बड़ा विद्वान्, साहित्य का पुतला वेदों के महत्त्व को समझने वाला, अत्यन्त प्रबल नैयायिक और विचारक यदि भारत वष में हुआ है तो वह महर्षि दयानन्द सरस्वती ही था। —मैक्स मूलर

5. —हमें वेदों के अध्ययन को प्रबल प्रोत्साहन देने और यह सिद्ध करने के लिए मूर्तिपूजा वेद-सम्मत नही है, स्वामी दयानन्द के उपकार को अवश्य स्वीकार करना चाहिए। —विण्टरनिटज

6. —स्वामी दयानन्द नि:सन्देह एक ऋषि थे। उनका प्रादुर्भाव लोगों को कारागार से मुक्त करने और जातिबन्धन तोडने के लिए हुआ था। —पाल रिचार्ड

7. —वह इतने अच्छे और विद्वान् आदमी थे कि प्रत्येक धर्म के अनुयायियों के लिए सम्मान के पात्र थे। —सैयद अहमद खां

जो न हटा मुख फेर, बढ़ा जीवन भर आगे,
जिसका साहस हेर, विघ्न, भय, संकट भागे,
सबल सत्य की हार, अनन्त की जीत न होगी,
ऐसे प्रबल विचार, सहित विचरा जो योगी।
उस दयानन्द ऋषि-राज का प्रकृत पाठ जनता पढे।
प्रभु 'शंकर' आर्यसमाज का, वैदिक बल गौरव बढे॥

—नाथूराम 'शंकर' शर्मा

आर्यसमाज—महापुरुषों की दृष्टि में

संकलनकर्त्ता—ब्र० नवीनकुमार आर्य कक्षा अष्टम

जो उन्नति करनी चाहो तो 'आर्यसमाज' के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण स्वीकार कीजिये, नही तो कुछ हाथ नहीं लगेगा, क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन; मन, धन से सब मिलकर प्रीति से करे।

स्वामी दयानन्द।

आर्यसमाज मेरी माता है।

लाजपतराय।

जहा-जहा आर्यसमाज है वहा-वहां जीवन ज्योति है।

महात्मा गांधी।

संगठित कार्य, दृढता, उत्साह और समन्वयात्मकता की दृष्टि से आर्यसमाज की समता कोई समाज नही कर सकता।

यदुनाथ सरकार।

आर्यसमाज ने लड़कों और लडकियों की शिक्षा, स्त्रियों की दशा के सुधार और दलितों को ऊँचा उठाने की दिशा में वडा अच्छा कार्य किया है।

जवाहरलाल नेहरु।

आर्यसमाज ने हिन्दू समाज को भले आदमी के रहने योग्य बनाया।

राजगोपालाचार्य।

आर्यसमाज धार्मिक शक्ति के रूप मे समाज-सुधार के लिए कार्य कर रहा है। भारत के राष्ट्रीय जीवन में यह बात अत्यन्त महत्त्व की है जिसे भविष्य में भुलाया नही जा सकता।

रामानन्द चटर्जी।

मैं एक ऐसी अग्नि को देखता हूं जो सर्वव्यापक है। वह अप्रमेय प्रेम की अग्नि है जो सब विदेश को भस्मसात् करने के लिए प्रज्वलित हो रही है.—

सनातन आर्य धर्म को उसकी आद्य पवित्र अवस्था प्राप्त कराने के लिए आर्यसमाज नामक अग्निकुण्ड मे इस अग्नि का आधान हुआ था और वह भारत में ईश्वर के प्रकाश प्राप्त पुत्र दयानन्द सरस्वती के हृदय में प्रादुर्भूत और प्रज्वलित हुई थी।

ऐसी प्रचण्डता से प्रज्वलित थी कि जिसका ध्यान उसके प्रथम प्रकाशक दयानन्द को भी न आया था। वह स्वर्गीय अग्नि बढ़ती और फैलती ही गई।

डा० एण्ड्यू जैक्सन डेविस।

आर्यसमाज १९ वी शती का महानतम धार्मिक आन्दोलन है।

ब्लन्ट, १९११ की जनगणना की रिपोर्ट।

प्राचीन भारत के विद्यापीठ बनाम गुरुकुल

भीमसिंह वेदालंकार प्रवक्ता, संस्कृत विभाग

संस्कृत विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला

भारतवर्ष प्राचीनकाल से ही शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र रहा है। यहीं से सर्वाङ्गीण शिक्षा को प्राप्त करके स्नातक बने हुए नवयुवक यत्र तत्र सर्वत्र देश में अथवा विदेश मे अपने अनुपम ज्ञान पुञ्ज के आलोक से अपनी सच्चरित्र पवित्र अमृतमयी जन्मभूमि भारत माता के अजस्र पुण्य यश को आलोकित करते हैं। इस *पावन मनभावन अमर यश की अविरल पुण्यधारा के निरन्तर प्रवाहित होने में इन प्राचीन विद्यापीठों या गुरुकुलों का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। यद्यपि ये विद्यापीठ आधुनिक काल के विशालकाय तथा नानाविध बाह्य सज्जाओं से सुसज्जित कालेजो या विश्वविद्यालयो के समान सुसंगठित और व्यवस्थित न थे तथा न ही एक निश्चित दिशा की शिक्षा को देने के दुराग्रहों से युक्त थे, अपितु विशुद्ध ज्ञानोपार्जन करना ही इनका लक्ष्य रहा। इसके लिये यहां मानवमात्र की एकता के आधार पर शिक्षा दी जाती थी जो मानवीय गुणो के साथ-साथ प्रत्येक छात्र-छात्रा में कर्मठता तथा जीविकोपार्जन की क्षमता को पैदा करती थी। शिक्षा के विषय में इन विद्यापीठों का यह मन्तव्य था कि जो शिक्षा हमें निर्बलों को सताने के लिए तैयार करे, जो हमें धरती और धन का गुलाम बनाये, जो हमे भोगविलास मे डुबोये, जो हमे दूसरों का रक्त पीकर मोटा होने का इच्छुक बनाये, वह शिक्षा नही, भ्रष्टता है। इन विद्यापीठो मे जगत्प्रसिद्ध (दिसा पामुख=दिशा प्रामुख्य) विद्वान् रहते थे। ये आचार्य किसी केन्द्रीय नियन्त्रण से नियन्त्रित नही थे। इसी प्रकार ये शिक्षक किसी कालेज से सम्बद्ध अथवा वेतनभोगी शिक्षक भी नही थे। अपितु ये मनीषी विद्वान् सर्वतन्त्र स्वतन्त्रमना थे। न यहां का पाठ्यक्रम तथा शिक्षा का काल ही निश्चित था। इसी प्रकार न यहा परीक्षाओं की परिपाटी थी तथा न ही इनके बदले कोई उपाधि आदि दी जाती थी, इसके अतिरिक्त इन तात्कालिक विद्यापीठों मे विनेय शिष्यो के लिये विलक्षण विचक्षण गुरुओं के कुल मे रहते हुए इनके चरणारविन्दों मे बैठकर ही शिक्षाग्रहण करना अनिवार्य था। आजकल की तरह पत्राचार-पाठ्यक्रम (Correspondece Course) आदि प्रवृत्तियां नहीं थीं।

तक्षशिला

इस परम्परा में सर्वप्रथम तक्षशिला का नाम आता है जो कि पुरातन भारत का प्राचीनतम तथा सर्वाधिक बहुचर्चित ज्ञानकेन्द्र था। रामायण मे भरत के द्वारा इसकी स्थापना का निर्देश

*एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन।
स्व स्व चरित्र शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा ॥ मनुस्मृति, २ २०

किया गया है। महाभारत में जनमेजय के नागयज्ञ के इसी स्थान पर होने का वर्णन है (१.३२०) यद्यपि रामायण और महाभारत मे तक्षशिला के प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र होने का कोई संकेत नही मिलता तथापि ७वी शती ईसवी पूर्व तक इसने गरिमापूर्ण ज्ञानपीठ होने की इतनी ख्याति अवश्य प्राप्त कर ली थी कि राजगृह और मिथिला आदि स्थानो से विद्यार्थी यहां विद्याध्ययन के लिये आते थे। वैसे यह प्रदेश शत्रुओं द्वारा अनेकशः आक्रान्त किया गया, इसलिये तक्षशिला को काफी अपूरणीय क्षति उठानी पड़ी। तक्षशिला शिक्षा केन्द्र में सभी तरह के गरीब अमीर विद्यार्थी विद्याध्ययन करते थे। इनमें निर्धन छात्र दिन भर गुरु का काम करके एक प्रकार से अपनी फीस की क्षतिपूर्ति करते हुए रात्रि को पढ़ते थे। यहा विद्यार्थी की रुचि तथा इच्छा के अनुसार ही इनको विषय पढ़ाये जाते थे। किसी पर जोर जबरदस्ती कोई विषय नही लादा जाता था। इसी प्रकार यहा शिक्षा का कोई काल भी निश्चित नही था। इसीलिये तथागत भगवान् बुद्ध के चिकित्सक जीवक को विद्याध्ययन करते हुए जब यहां सात वर्ष व्यतीत हो गये तो वह राजगृह लौट आया था। यद्यपि गुरुजी ने तब तक उसकी द्रव्य गुण की परीक्षा नही ली थी। साहित्यिक शिक्षा के साथ-साथ तक्षशिला मे अन्य जीवनोपयोगी कलाओं की शिक्षा का यहां समुचित प्रबन्ध था। शिल्पो में वैद्यक तथा धनुर्विद्या प्रधान थे। तथागत बुद्ध के शिष्य जीवक ने यही से शिक्षा प्राप्त करने के बाद पेट और सिर के जो आप्रेशन किये हैं उन्हें आजकल के बहुत कम डाक्टर कर सकते है। इसी प्रकार धनुर्विद्या के प्रसङ्ग में भी इसका बहुत नाम था। कोसलराज प्रसेनजित् यहां के शिष्य थे। शब्दशास्त्र विशारद महामुनि पाणिनि भी अटक के पास शलातुर के निवासी थे*। वे भी सम्भवत यहीं के विद्यार्थी तथा बाद मे गुरु रहे होगे। सुना जाता है कि राजनीति शुक्राचार्य चाणक्य भी यही के आचार्य थे।

नालन्दा

प्राचीनकाल का द्वितीय बड़ा प्रसिद्ध विश्वविद्यालय नालन्दा था जोकि पटना के दक्षिण पश्चिम में ४० मील की दूरी पर आधुनिक बडगांव है। गुप्त राजाओ के वरद उदार कर-कमलों से पाचवीं शती ईसवी के मध्य इसका अभ्युदय हुआ। हिन्दू होते हुए भी इन राजाओं ने इसके विकास को पूरा-पूरा सरक्षण दिया। शक्रादित्य (सभवत कुमार गुप्त प्रथम, ४१४—४५४ ई०) ने एक विहार की स्थापना के रूप मे इसकी आधार शिला रखी थी। कई शतियो तक यह बौद्ध विहार नालन्दा का केन्द्रीय देवालय रहा। उसके बाद तथागत गुप्त, नरसिह बालदित्य (४६८—४७२ ई०) ने एक तथा वज्र नामक शासक ने यहां दो और बौद्ध विहारों का निर्माण कराया। किन्तु किसी भी वस्तु के उत्कर्षापकर्ष सदा साथ चला करते है, शायद इसीलिये छठी शतो मे बौद्ध धर्म के घोर विरोधी हूण राजा मिहिरकुल तथा बगाल के राजा शशाङ्क के हाथों से इसे काफी क्षति उठानी पड़ी। ह्वेनसांग की जीवनीलेखक के अनुसार सातवी शती मे यहां के भिक्षुओं को संख्या दस हजार थी किन्तु ७५६ में आने वाले इत्सिग के अनुसार उन दिनों यहा ३ हजार से अधिक भिक्षुक निवास करते थे। इससे लगता है कि यहा भिक्षुओ की साधारण संख्या ५ हजार के लगभग थी। नालन्दा की खुदाई मे भिक्षुओं की कमरे तथा बड़ी-बडी भट्टियां भी मिली है। सबमें सोने के लिए एक या दो पत्थर की

*प्रस्तुत प्रसग पाणिनीय अष्टाध्यायी का निम्न सूत्र द्रष्टव्य है—

तुदीशलातुरवर्मतीकूचवाराड्ढक्छण्ढञ्यक.—पा.४ ३, ९४

शय्याएं, दीपक तथा पुस्तकों को रखने के लिये ताक भी हैं। सातवीं शती के पूर्वार्द्ध में नालन्दा विद्यापीठ में धर्मपाल, चन्द्रपाल, गुणमति, स्थिरमति, प्रभाकरमित्र, जिनमित्र, जिनचन्द्र तथा शीलभद्र जैसे प्रसिद्ध विद्वान् बौद्ध आचार्य थे। इसलिये इन दिनो नालन्दा की इतनी गरिमा प्रथित थी कि कोरिया, चीन, तिब्बत तथा मध्य एशिया जैसे सुदूरवर्ती स्थानों से भी सकड़ो छात्र यहा पढ़ने आते थे। किन्तु यहां हरेक के लिये प्रवेश पाना सरल न था। पहले उस अपना परीक्षा देनी होती थी। नालन्दा में ही धर्मगंज नामक एक विशालकाय पुस्तकालय भी था। चीनी यात्री यहा पुस्तकों की प्रतिलिपि करने भी आते थे। यही कारण है कि आज भारत मे कुछ ऐसे दुष्प्राप्य ग्रन्थ रत्न भी हैं जो केवल उद्धरण रूप में ही विभिन्न ग्रन्थो म उद्धृत किये गये है। अपने पुस्तकाकार में वे आज हमारे समक्ष नही है। अतः इन विभिन्न भाषाओ मे हुए अनुवादो की सहायता से ही अब उन दुष्प्राप्य ग्रन्थों का सम्पादन संभव है जो विद्वानो द्वारा किया जा रहा है तथा किया गया है। सुना जाता है कि चीनी यात्री इत्सिग पाच लाख श्लोको के चार सौ सस्कृत ग्रन्थो की नकल यहा से अपने साथ चीन ले गया था। महायान बौद्ध धर्म का केन्द्र होने से नालन्दा में वैसे तो प्राधान्येन बौद्ध धर्म तथा दर्शन ही विशेष रूप से पढ़ाया जाता था किन्तु इसके साथ-साथ वहा वेद, न्यायविद्या शब्दविद्या आयुर्वेद आदि भी पढ़ाये जाते थे।

आठवी शती मे नालन्दा विश्वविद्यालय ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित कर ली था। यहा के आचार्यों ने विदेशो मे भी बौद्धधर्म का प्रचार करते हुए नालन्दा के महान् शिक्षा केन्द्र होने की धूम मचा दी थी।

वलभी

सातवी शती में वलभी भी नालन्दा के समान एक विश्वविख्यात विद्यापीठ रहा है। आजकल यह कठियावाड़ में कला के नाम से जाना जाता है। इत्सिग के कथनानुसार मनुष्य उच्चशिक्षा प्राप्त करने के लिए वलभी या नालन्दा मे कुछ वर्ष अवश्य रहा करते थे। जिस प्रकार आजकल 'फारेनरिटर्न' का विशेष महत्त्व माना जाता है। यही ठीक स्थिति कभी वलभी की भी थी। किसी की विद्वत्ता की प्रामाणिकता के लिये उसका वलभी मे रहना ही पर्याप्त समझा जाता था। यह एक ऐसा विश्वविख्यात ज्ञानपीठ था जहा समस्त भारतवर्ष के अखिल मनीषी विद्वान् एकत्र बैठकर विभिन्न वादविवादग्रस्त विषयो पर ऊहापोह किया करते थे। वलभी के पडित जिस पर मान्यता की मोहर लगा देते थे वह प्रखर बुद्धिमत्ता के लिए सर्वत्र प्रसिद्ध हो जाता था। सरलता से सस्कृत व्याकरण सिखाने के लिये रचित भट्टिकाव्य या रावणवध महाकाव्य के यशस्वी लेखक महाकवि भट्टि ने भी इसी वलभी शिक्षा केन्द्र से विद्या प्राप्त करके इसे सर्वदिक् प्रसिद्ध कर दिया।*

विक्रम-शिला

विक्रमशिला भी चार शती तक भारत का एक महान् शिक्षा केन्द्र होने के कारण प्रकाण्ड विद्वान् पैदा करता रहा है। इसकी आधारशिला पालवंशी राजा धर्मपाल ने ८वी शती में रखी थी।

---

*महाकवि भट्टि का निम्न श्लोक प्रकृत प्रसग मे ध्यातव्य है—

काव्यमिद विहित मया वलभ्या श्रीधरसेननरेन्द्रपालितायाम्।
कीर्तिरतो भवेन्नृपस्य तस्य क्षेमकरः क्षितिपो यत प्रजानाम्॥

अद्यत्वे यह भागलपुर से पूर्व में २४ मील दूर पथरघाट कहलाता है। तिब्बती विद्यार्थियों के साथ इसका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। इसीलिये यहा इन तिब्बती विद्यार्थियों के लिए एक खास धर्मशाला बनाई गई है। इसके अतिरिक्त यहा के आचार्य तिब्बत में जाकर सस्कृत के अच्छे-अच्छे ग्रन्थों का तिब्बती मे अनुवाद करते रहे हैं। यही कारण है कि कुछ ग्रन्थ जो हमारे भारतवर्ष में दुर्भाग्यवश केवल उद्धरणरूपेण उद्धृत किये गये है, पूरे प्रकाशित नही मिलते, वे इस तिब्बत भाषा में इन आचार्यों द्वारा अनुदित होने के कारण अपने अविकल रूप मे मिलते है। यह विद्यापीठ अन्य सब शिक्षाकेन्द्रों को अपेक्षा अधिक सुसगठित तथा सुव्यवस्थित था। शिक्षा के पर्यवसान में यहा बगाल के शासकों द्वारा छात्रों को उपाधिया भो वितरित का जाती थी। १२०३ ई० मे मोहम्मद बिन बख्तियार खिलजी की सेना ने इसे कोई दुर्ग या किला समझकर इसका समूलोन्मूलन कर दिया था। इस प्रकार ऊपर विवेचित चन्देक प्रसिद्धतम शिक्षाकेन्द्रो के वर्णन से स्पष्ट है कि शिक्षा की दौड़ में भारत सदा से ही आगे रहता आया है। तथा इस दौड़ मे इन विद्यापीठों या गुरुकुलो ने अनुपेक्षणीय भूमिका निभायी है।

आजकल भारतवर्ष मे जो गुरुकुल मिलते हैं वे उपरोक्त गुरुकुलों या विद्यापीठो के ही रूप हैं। जिनमे आज प्राचीन आदर्शो की सुरक्षा की जा रही है। हमे विश्वास है कि इस आणविक युग की विभीषिका से सन्त्रस्त मानव और मानवता का गुरुकुल एक नई दिशा, दृष्टि एवं सन्देश देने मे समर्थ होगे।

"कोई रचना केवल लेखक से ही महान् नहीं बनती बल्कि वह समीक्षकों एवं पाठकों से भी परिश्रम की मांग करती है।" —सम्पादक

विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरयाणा)

प्रवेशारम्भ

ऐतिहासिक तथा धार्मिक धरती कुरुक्षेत्र पर अमर हुतात्मा स्वामो श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित वेदिक सस्कृति के प्रतोक, खेल जगत् में उभरते सस्थान विद्या बिहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र हरयाणा मे ६ वर्ष से ११ वर्ष तक के बालको का प्रवेश १ अप्रैल १९८५ से आरम्भ हो रहा है।

विशेषताएँ —

क पूर्णतया वैदिक सस्कारो से ओत प्रोत वातावरण मे नि शुल्क शिक्षा तथा आवासीय सुविधा।

ख. सस्कृत तथा धार्मिक शिक्षा सहित पूर्वी तथा पाश्चात्य शिक्षा का सुन्दर समन्वय।

ग. भारतोय पब्लिक स्कूल स्तरीय प्रारम्भिक शिक्षा, नवम तथा दशम श्रेणी गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय द्वारा सचालित।

घ. प्रत्येक प्रकार के खेलों की अति उत्तम व्यवस्था। बालक के बौद्धिक, शारीरिक तथा सर्वांगीण विकास के लिए लगभग प्रति १३ बालको पर एक कुल अध्यापक।

ङ. भोजन व अन्य शुल्क केवल १२० रुपये प्रतिमास परन्तु मेधावी गरीब छात्रो का भोजन शुल्क भी मुफ्त।

च. धार्मिक तथा सास्कृतिक वातावरण में बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु अधिक जानकारी के लिए कार्यालय आचार्य, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, दूरभाष ४८ पर सम्पर्क करें।

प्रधान
सत्यदेवसिंह पूर्व आई. पी एस.
विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र हरयाणा

दयानन्द वचनामृत

संकलनकर्ता ब्र० गजेन्द्र आर्य
कक्षा अष्टम

1. "यज्ञ" उसको कहते हैं कि जिसमे विद्वानो का सत्कार यथायोग्य शिल्प अर्थात् रसायन जो कि पदार्थ विद्या उससे उपभोग और विद्यादि शुभ गणो का दान अग्निहोत्र जिससे वायु जल, ओषधि को पवित्र करके सब जीवों को सुख पहुंचाना है, उसको उत्तम समझता है।

2. "ईश्वर" कि जिसके ब्रह्म, परमात्मादि नाम है, जो सच्चिदानन्दादि लक्षण युक्त है। जिसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं। जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान्, दयालु, न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्ता, सब जीवों को कर्मानुसार सत्य न्याय से फलदाता आदि लक्षण युक्त है। उसी को परमेश्वर मानता हूं।

3 अध्यापक लोग ऐसा प्रयत्न करें, जिससे विद्यार्थी लोग, सत्यवादी, सत्यमानी, सत्यकामी, सम्भव, जितेन्द्रियता, सुशीलता आदि शुभ गुणयुक्त, शरीर और आत्मा का पूर्ण बल बढा के समग्र वेदादि शस्त्रों के विद्वान् हों। सदा उनकी कुचेष्टा छुडाने मे और विद्या पढने में चेष्टा किया करें।

4 "जो श्रेष्ठ स्वभाव" धर्मात्मा, परोपकारी, सत्य विद्या आदि गुणयुक्त और आर्यावर्त देश में सब दिन में रहने वाले हैं उसको आर्य कहते हैं।

5 जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नही हो सकता यदि इस समाज को यथावत् सहायता देवे तो बहुत अच्छी बात है। क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है एक का नहीं"।

6. मैंने इस संसार में परीक्षा करके निश्चय किया है कि जो मनुष्य धर्मयुक्त व्यवहार ठीक-ठीक वर्त्तता है, उसको सर्वत्र सुख लाभ और जो विपरीत वर्त्तता वह सदा दुखी होकर अपनी हानि कर लेता है। देखिये जब कोई सभ्य मनुष्य विद्वानों की सेवा में या किसी के पास जाकर अपनी योग्यता के अनुसार 'नमस्ते' आदि नम्रता पूर्वक करके बैठ के दूसरे की बात ध्यान दे सुन, उसका सिद्धान्त जान, निरभिमानी होकर उत्तर प्रत्युत्तर करना है तब सज्जन लोग प्रसन्न होकर उसका सत्कार करते हैं और जो अण्डबण्ड बकता है उसका तिरस्कार करते हैं।

गुरुकुल में शारीरिक शिक्षा

"शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्" के महत्त्व को स्वीकार करके युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने 'संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना, आर्यसमाज के इस छठे नियम में सर्वप्रथम शारीरिक उन्नति को स्थान दिया है। अन्यत्र भी 'एक बलवान् सौ विद्वानों को मार सकता है' कह कर इस पक्ष की पुष्टि की है। स्वयं वे सुन्दर सुडौल शरीर युक्त एवं अदम्य उत्साही, नियमित दिनचर्यारत, बहमचर्य बल की साक्षात् मूर्ति देदीप्यमान मुखमण्डल और आकर्षक तेज के पुञ्ज थे। प्रतिदिन व्यस्तकार्यक्रमों में भी व्यायाम उनकी दिनचर्या का अनिवार्य अंग था। उनका जीवन स्वयं साक्षी है कि उनके अनेक प्रतिद्वन्द्वी सामने आते ही उसी भाँति हतोत्साह, निष्प्रभ और किंकर्तव्य विमूढ़ हो जाते थे जिस प्रकार बाली के सामने जो भी योद्धा खडा होता उसका आधा बल समाप्त हो जाता ऐसी जनश्रुति प्रचलित है। अनेक प्राणघातक निष्फल प्रयासों को उन्होंने शारीरिक शक्ति से विफल कर दिया। इसी कारण आर्यसमाज के मुख्य उद्देश्य में सर्वप्रथम शारीरिक उन्नति को समाविष्ट किया है।

उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करके पहले प्रत्येक आर्यसमाज का सदस्य नियमित दिनचर्या में व्यायाम भी करने का प्रयत्न करता था। आर्यसमाज द्वारा सञ्चालित गुरुकुलों एवं विद्यालयों में भी शारीरिक शिक्षा को विशिष्ट स्थान था। वेद, ज्ञान विज्ञान एवं अन्य शिक्षा के साथ आसन प्राणायाम, अस्त्र-शस्त्र सञ्चालन एवं अन्य सभी देशी विदेशी क्रीड़ाओं में ब्रह्मचारी दक्ष होकर प्रतियोगिताओं में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त करते रहे हैं। बहुत से आर्यसमाजों में व्यायामशालायें तथा अखाडे भी चलते रहे। गुरुकुल कांगड़ी के ब्रह्मचारी, कन्या गुरुकुल बड़ौदा की छात्राओं ने चिरकाल तक देश विदेशों में शारीरिक कार्यक्रमो का प्रदर्शन करके नवयुवकों में व्यायाम के प्रति रुचि जागृत की है। गुरुकुल कुरुक्षेत्र की हाकी टीम की गणना उस समय की अच्छी टीमों मे की जाती थी। ऐसे दूसरे गुरुकुलों ने भी अनेक वीर ब्रह्मचारी, मल्ल, खिलाड़ी तथा सेना में भर्ती होकर देश की रक्षा के लिये प्राणों की बाजी लगा देने वाले योद्धा दिये। भारत स्वतन्त्र होने से पूर्व आर्य समाज की शोभा यात्रा को कुछ साम्प्रदायिक लोगो ने रोका तो दयानन्द वेद विद्यालय दिल्ली के वीर ब्रह्मचारियों ने उनके धर्म स्थलों में घुसकर भी उनकी मरम्मत की और आगे निर्विघ्न जुलूस निकलते रहे। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के स्वप्न को साकार करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी देहली में मल्लों को प्रोत्साहित करते रहते थे।

किन्तु दुर्भाग्य से आज इस परम्परा का उच्छेद होता जा रहा है। यद्यपि कुछ गुरुकुल इस दिशा में अब भी प्रयत्नशील है। उत्सवों पर तो प्राय. प्रत्येक गुरुकुल व्यायाम प्रदर्शन का आयोजन करता है परन्तु अधिकतर यह कार्यक्रम केवल उत्सव तक ही सीमित रह जाता है। नियमित व्यायाम जिन गुरुकुलों मे होता है उनकी संख्या अंगुलियों पर ही गिनी जा सकती है। अनेक गुरुकुलों मे लंगोट के दर्शन भी दुर्लभ हैं। मेखला बांधना तो बहुत दूर की बात है।

उचित शारीरिक शिक्षा के अभाव में व्यक्तित्व भी अधूरा रह जाता है जिसके दुष्परिणाम स्वरूप भविष्य में यहाँ के स्नातक हीन भावना से ग्रसित होकर दब्बू प्रकृति के बन जाते हैं। यद्यपि शिष्टाचार संयम एवं गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का एक प्रभाव यह होता है कि व्यक्ति शान्तिप्रिय और अनुशासित रह कर चलता है। इसे किसी भी प्रकार हीन भावना या दब्बूपना नही कहा जा सकता। पुनरपि व्यायाम और खेल से जिन सामाजिक गुणों का विकास शूरवीरतादि की वृद्धि होती है उनसे तो वञ्चित रहना ही पड़ता है।

इस त्रुटि को दूर करने के लिये यह आवश्यक है कि सभी गुरुकुलों में अनिवार्य शारीरिक शिक्षा प्रचलित की जाये। सभी गुरुकुल शारीरिक शिक्षण का एक पाठ्यक्रम निर्धारित करे जिसमें उत्तीर्ण होना अनिवार्य हो। जहां पर विश्वविद्यालयों की परीक्षायें होती हैं वहां पर निचली श्रेणियों में अनिवार्य तथा अन्यत्र प्रोत्साहन तथा खेल प्रमाण-पत्र देकर विद्यार्थियों को आकर्षित किया जा सकता है। गुरुकुल कांगडी से सम्बन्धित गुरुकुलों के लिये शारीरिक पाठ्यक्रम वह विश्वविद्यालय बनवाये और आर्ष पाठविधि से सम्बन्धित विद्यालयों के लिये गुरुकुल झज्जर मार्ग दर्शन कर सकता है। सभी आर्यसमाज के महाविद्यालयों और गुरुकुलों में अध्यापकों का चयन करते समय बौद्धिक योग्यता के साथ शारीरिक शिक्षा का प्रमाण-पत्र भी देखा जाये तो इस प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिलेगा।

आज सर्वत्र योग के नाम पर कुछ आसन प्राणायाम क्रियाओं का प्रचार प्रसार हो रहा है। जिसे देखें वही योगी, योगिराज आदि की अपाधि-धारण करके अपनी दुकान चला रहा है। यद्यपि शरीर तथा मानसिक शक्ति के लिये इन सब की उपयोगिता है। परन्तु केवल इन्हीं का नाम योग नहीं है। ये आसन प्राणायामदि योग के अङ्ग हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने महर्षि पतञ्जलि के योग दर्शन को ही मान्यता दी है। अतः योग के शुद्ध स्वरूप को गुरुकुलों में अभ्यास का विषय बनाया जाये तथा इसमें अनुसन्धान प्रशिक्षण और वर्तमान समय की समस्यायें, व्याधियाँ इत्यादि योग के माध्यम से कैसे दूर की जा सकती हैं, परीक्षण किये जाने चाहियें। गुरुकुल कागडी ने योग का पाठ्यक्रम बनाकर प्रशिक्षण एव प्रमाण पत्र देना प्रारम्भ किया है परन्तु जैसे अन्यत्र आसन प्राणायाम क्रियादि को ही प्रमुखता है वैसा हो वहां पर भी होता है। वस्तुत वर्तमान युग में योग में श्री संक्रमण किया जा रहा है। गुरुकुल इस दिशा में रचनात्मक पग उठाकर योग का शुद्ध स्वरूप जनसाधारण तक रख सकते हैं जिसमें आसन प्राणायाम क्रिया द्वारा रोग निवारण के साथ ही योग की अगली भूमि प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि का भी अभ्यास साधक को करवाया जाये।

इसके साथ ही प्रत्येक गुरुकुल और आर्यसमाज द्वारा सञ्चालित विद्यालय में आर्य वीर दल की स्थापना की जानी चाहिये। शाखा में लेने के लिये छात्रों को प्रोत्साहन छात्रवृत्ति, पुरस्कारादि से पुरस्कृत किया जाना चाहिये। इससे यह लाभ भी होगा कि विद्यार्थी जितेन्द्रिय स्वस्थ अनुशासित और निर्भीक बनकर भविष्य में राष्ट्र रक्षा में भी अग्रेसर होंगे। और वेद का यह कथन सत्य हो सकेगा।

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना॥ (यजु० २०/२५)

डॉ० देवव्रत आचार्य
उपप्रधान सञ्चालक, सार्वदेशिक आर्य वीर दल

स्वामी श्रद्धानन्द का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान

ब्र० रणवीरसिंह पंचम श्रेणी

एक बार महान् देश भारत के एक राजनेता ने कहा था कि स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने वाले व्यक्तियों में से ९०% व्यक्ति आर्यसमाजी ही थे। आर्यसमाज हैदराबाद के सत्याग्रह को देखकर उस समय के गृहमन्त्री सरदार पटेल ने कहा था कि अगर आर्यसमाज न होता तो हैदराबाद को जीतना इतना आसान कार्य न होता। इस से पता चलता है कि देश को गुलामी की बेड़ियों से छुडवाने वाला आर्यसमाज ही तो था। क्योंकि आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश मे घोषणा की कि स्वराज्य चाहे कितना भी बुरा क्यों न हो परन्तु फिर भी एक विदेशी अच्छे राज्य से भी अच्छा होता है। इस पर तिलक ने ललकार कर कहा कि स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। आर्यसमाज की वेदी से प्रेरणा प्राप्त कर पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे हिन्दुओं ने ही नही बल्कि अशफाक उल्ला खा जैसे मुसलमानों ने भी भारत मां की स्वतन्त्रता के लिए हंसते हसते फांसी के फन्दे को चूमा था उन्हीं मे से हैं हमारे आदर्शनायक श्रद्धानन्द जी।

जिस समय भारत गुलामी की बेड़ियो में जकडा हुआ अज्ञानरूपी अन्धकार मे तडफ रहा था, भारत में फैली हुई मानवता अंग्रेजो के क्रूर अत्याचारो से त्राहि-त्राहि कर रही थी तब सूर्य की प्रथम किरणो के रूप में स्वामी श्रद्धानन्द जैसी महान् आत्मा ने जालन्धर जिले के तलवन नामक गांव में जन्म लिया और वे ससार की सभी विषय-वासनाओं को त्यागकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पडे जब सन् १९१९ में देहली मे लाखों व्यक्तियों के जलूस को अंग्रेजों ने बन्दूकों की नोंक पर रोक दिया तब अकेले श्रद्धानन्द ही नङ्गा सीना तानकर अंग्रेजी पुलिस के सामने खडे हो गये और उन्होंने कहा कि उस निहत्थी जनता पर गोली चलाने से पहले मेरे सीने में गोली मारो, मैं खड़ा हूं। इतना सुनते ही अंग्रेजी सिपाही दंग रह गये और स्वामी जी जलूस का नेतृत्व करते हुए आगे बढते गए। इस समय जलियावाला बाग के काण्ड से सारा भारत सुन्न था। अमृतसर में कांग्रेस के बडे-बडे राजनेताओं की वार्षिक अधिवेशन करने की हिम्मत नहीं थी तब १९२० में स्वामी जी ने वार्षिक अधिवेशन किया। इसे देखकर कांग्रेस के बडे-बडे नेता चकित रह गये। स्वामी जी न केवल हिन्दुओं को ही इस आन्दोलन से जोडना चाहते थे बल्कि सभी वर्गों को तमाम मत-मतान्तर से ऊपर उठाकर देश को आजाद करवाना चाहते थे। कही अछूत कहलाने वाले लोग पीछे ही ना रह जाये। कही एक वर्ग ही आजादी का दावा न करे। परन्तु स्वामी जी सब की स्वतन्त्रता चाहते थे। जब २३ दिसम्बर को स्वामी जी को गोली लगी तो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जिन्हे गुरुकुल कांगड़ी में मोहनदास कर्मचन्द गांधी से महात्मा गांधी की उपाधि दी गई थी वे गांधी अपने अनन्य आचार्य के लिए रो उठे और उन्होंने कहा कि श्रद्धानन्द एक वीर सैनिक थे। वीर सैनिक राजशैय्या पर नहीं रण आंगन में मरना पसन्द करते है।

अनुमानित आय-व्यय विवरण वर्ष 1984-85 गुरुकुल कुरुक्षेत्र

विवरण	आय अनुमानित 1983-84	वास्तविक फरवरी, 1984	अनुमानित मार्च, 1984	अनुमानित 1984-85
शिक्षा	14310.00	8310 00	14310 00	14310.00
गोशाला	50000.00	65336.00	67000.00	67500.00
कार्यालय	1050.00	1767.00	1814.18	2100.00
पुस्तकालय	150.00	———	150 00	200 00
चिकित्सालय	8000.00	6360.00	6360 00	8000.00
दान व वार्षिकोत्सव	11000.00	101994 15	102994 00	120000 00
कृषि	125000.00	118451.27	118451.27	166500.00
भण्डार	395000.00	377024.00	401824 00	420000.00
आश्रम	775000.00	53630.00	56000.00	64000.00
भवन-निर्माण	———	———	———	30000.00
योग	781010.00	732873.19	768903.45	892610 00
घाटा			21827.47	36498.00
कुल जोड़	781010.00	732873.19	790730.92	929108.00

विवरण	व्यय अनुमानित 1983-84	वास्तविक फरवरी, 1984	अनुमानित मार्च, 1984	अनुमानित 1984-85
शिक्षा	132558.15	119050.28	131167.62	178904.00
गोशाला	71500.00	74885.65	82737.00	92000.00
कार्यालय	32200.00	25375.34	27400.00	34004.00
पुस्तकालय	2850.00	2768 45	2984 00	4800.00
चिकित्सालय	10000.00	6682 69	6925 86	10000 00
दान व वार्षिकोत्सव	14600.00	11206 77	11220.00	114800.00
कृषि	19600.00	25408.55	28354.19	28400.00
भण्डार	332100 00	302442.90	330213.55	354100.00
आश्रम	90600.00	85389.29	95627.00	112000.00
भवन-निर्माण	———	58981 84	73700.00	100000.00
योग	706008 15	712190·06	790730.00	929108.00
आय		20682 43		
कुल जोड़	706008.15	732873 19	790730.92	895104 00

सत्यदेवसिंह, प्रधान   ला० यशपाल आर्य, मुख्याधिष्ठाता   देवव्रत, आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र

जो खाना हो सो खाओ

(ब्र० जगदीश आर्य)

कौन कहता है कि खाने को कुछ नहीं मिलता ? कुछ समझ नहीं में नहीं आता कि लोग कैसे कह देते हैं अजी आजकल क्या खाना है, खाने का जमाना तो गया, अब तो केवल पेट भरने वाली बात रह गई अर्थात् सभी लोग खाने की तंगी के बारे में शिकायत करते हैं परन्तु मुझे तो कोई ऐसी कमी दिखाई नही देती। जिधर देखो लोग दबादब खाये जा रहे हैं। कुछ लोग तो खाने में इतने तल्लीन हैं कि उन्हें कुछ पता ही नहीं कि दुनियां में क्या हो रहा है ? और तो और उन्हें अपने सुख का भी ध्यान नही। अच्छा तो अब मैं आपको कुछ खानों के नाम बताता हूं जरा ध्यान से पढ़िये—

१- कई लोग रोटी, दाल, चावल इत्यादि खाते है।

२- मील मालिक मजदूरों के गाढ़े पसीने की कमाई खाते हैं।

३- मजदूर अपने मालिकों द्वारा गालियां व झिड़किया खाते हैं।

४- सूदखोर सूद खाते हैं।

५- मूर्ख लोग जगह-जगह ठोकरे खाते हैं।

६- सरकारी कर्मचारी रिश्वत खाते हैं।

७- आजकल पढ़े लिखे जवान दर-दर की ठोकरें खाते हैं।

८- अमीर लोग गरीबों का हक खाते हैं।

९- कठिन प्रश्नों के न आने पर हम गुरु जी का दिमाग खाते हैं।

१०- बेईमान दुकानदार ग्राहकों के पैसे खाता है।

११- कई बार हम धोखा खाते हैं।

१२- नालायक विद्यार्थी झिड़कियां खाते हैं।

ये कुछ खानों के नाम हैं जिन्हें लोग खा रहे हैं। इतने खाने होने के बावजूद भी हमें खाने की तंगी के बारे में कठिनाई महसूस नहीं होनी चाहिए। आवश्यकता इस बात की है कि आप कौनसा खाना पसन्द करते है। आप भी इन खानों में से एक खाना चुन सकते हैं। अच्छा दोस्तो ! आप भी इन खानों के बारे में सोचिए और जो आप को पसन्द हो उसे खाईए।

———

गुरुकुल—सर्वांगीण क्रान्ति के मूलस्रोत !

धर्मदेव विद्यार्थी एम० ए० बी० एड० रिसर्चस्कालर
अधिष्ठाता आर्य वीर दल हरयाणा



२०वी शदी के वैज्ञानिक युग मे जीने वाले जब २१वी शदी के कैम्प्युटर युग में प्रवेश की तैयारी कर रहे हों तब मात्र क्षुद्र स्वार्थों से प्रेरित होने वाले, जातिवाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद और प्रदेश वाद तथा रग भेद के नये-नये बखेडे विश्व को किस मार्ग की ओर ले जायेगे इस विषय पर चिन्तन अनिवार्य हो जाता है। यह अधिक अनिवार्य इस लिए भी हो जाता है क्योकि आजादी के ३८ वर्ष बाद भी हम समाज के बनाने वाले शिक्षा तन्त्र को कोई स्पष्ट रूप नही दे पाये है। आये दिन शिक्षा के प्रति बदलते दृष्टिकोण मे हमारी संस्कृति और सामयिकता कही खोती जा रही है। माडल स्कूलों, पब्लिक स्कूलो तथा कान्वेन्ट स्कूलों की मृगमरीचिका मे भटकते क्या हम सामाजिक असमानता, आर्थिक विषमता तथा धर्म निरपेक्षता के नाम पर साम्प्रदायिकता नही पनपा रहे हैं। वर्तमान वैज्ञानिक युग मे भी नित्य प्रति बढता धार्मिक पाखण्ड, अन्धविश्वास के आधार पर पनपने वाली व्यक्तिपूजा के आह्वान पर बढती मानव और मानव के बीच खाई क्या कभी विश्व में बसने वाले लोगो को आपसी प्यार और भाईचारे का जीवन जीने देगी। धार्मिक पाखण्ड अन्धविश्वास और सामाजिक अन्याय के साथ-साथ बढती बेरोजगारी, सम्प्रदाय व प्रदेश वाद की बिमारी, प्रदूषण तथा हथियारों की बढती दौड का कोई समाधान हमारे पास है। पाठकवृन्द ! हम कहना चाहते है उपरोक्त सभी बिमारियों का इलाज हमारे पास है। इसका एक ही इलाज है कि हम समाज निर्माण की प्रथम इकाई शिक्षा सस्थान का मूल्यांकन करें क्योंकि प्रत्येक नागरिक को यही तैयार होकर समाज बनाना है। इसके लिए हमें कुछ पीछे लौटना होगा।

प्राचीन वैदिक व्यवस्था—

कभी समय था जब हम विश्व को सदाचार सम्बन्धी सन्देश देते हुए कहते थे—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन. ।
स्वं स्व चरित्रं शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्वमानवा ॥

क्या आज ऐसा कह सकते हैं शायद नहीं। यहा के राजा निःसकोच विश्व को ललकार कर कहा करते थे—"न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपो नानाहिताग्निर्नायज्वा न स्वैरी स्वैरिणी कुतः" अर्थात्—मेरे राज्य में कोई चौर नही, न कोई कंजूस है, न शराबी है, न अधर्मी है और न कोई दुश्चरित्र पुरुष है और न दुश्चरित्र स्त्री है। स्वामी दयानन्द सरस्वती अपने देश, समाज एवं राष्ट्र उन्नति हेतु अपने देशवासियों में वैसा ही अभिमान पैदा करना चाहते थे कि देशवासी अपने गौरवशाली इतिहास पर गर्व कर अपने महत्त्व को समझ सके परन्तु क्या आज भी दिल्ली के लाल किले की प्राचीर पर खड़ा होकर कोई जननायक निर्भयतापूर्वक अपनी प्रजा के बारे में ऐसा कहना तो दूर स्वप्न भी ले सकता है। हम कहना चाहते हैं कि कहना चाहे कठिन हो इसका स्वप्न लिया जा सकता है और इस स्वप्न को व्यावहारिकता में बदल कर ऐसा वर्गविहीन समाज बनाया जा सकता है जहा सम्प्रदायवाद से ऊपर उठकर कोई छोटा, बडा नही होगा। धर्म के नाम पर किसी को भरमाया न जा सकेगा! कोई छूत अछूत या अमीर गरीब या रगभेद जातिभेद का शिकार न होगा अर्थात् आज की हमारी सभी समस्याओं का हल होगा। वर्तमान सड़ी गली परम्परावादी सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध व्यवस्था परिवर्तन की सर्वांगीण क्रान्ति! इस क्रान्ति का अन्तस्तल हमारे वेदों में अर्थात् वैदिक व्यवस्था में निहित है इसको व्यावहारिक रूप देने के लिए हमें अपनी प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करना होगा तभी यह सर्वांगीण क्रान्ति सम्भव है। गुरुकुल शिक्षाप्रणाली के अन्तर्गत शिक्षित जो व्यक्ति समाज बनायेंगे वह वर्तमान समस्याओं से मुक्त वैदिक समाज होगा। जहां कोई भूखा नंगा, शोषित, सवर्ण, नीच, अशिक्षित, मानवद्रोही न होगा। इसका निर्माण प्राचीन गुरुकुल आश्रम द्वारा ही हो सकता है।

गुरुकुल आश्रमः—

प्राचीन काल में वैदिक भारत मे गुरुकुल आश्रम व्यवस्था प्रचलित थी अर्थात् जैसे ही किसी का बालक पढने योग्य होता था माता पिता उसे किसी योग्य गुरु के अधीन शिक्षा प्राप्त करने भेज देते थे। ऐसे गुरु लोग गाव से बाहर कोलाहल से दूर शान्त आश्रमों मे तप त्याग से रहते थे। उसी स्थान को गुरुकुल कहते थे जिसमें गुरु और शिष्य कुल अर्थात् परिवार के रूप मे अध्ययन अध्यापन करते थे। प्राचीन धर्म ग्रन्थों महाभारत तथा रामायण में ऐसे गुरुकुल आश्रमों का वर्णन है जहां बिना किसी भेद भाव के शिक्षा दी जाती थी परन्तु समय के थपेडो ने इस गुरुकुलीय व्यवस्था को अपनी लहरों में छिपा लिया और जब युगप्रवर्तक संन्यासी स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने महान् ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में मनुस्मृति के आधार पर घोषणा की कि यह राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पाचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे अपने लडको और लडकियों को घर मे न रख सके। पाठशाला में अवश्य भेज देवें, जो न भेजे वह दण्डनीय हो। प्राचीन दासता से परिपूर्ण भारत में यह वैचारिक क्रान्ति का मूल मन्त्र था जिसे वर्तमान भारत मे चरितार्थ किया अमर हुतात्मा आचार्य श्रद्धानन्द जी ने। जिनके विषय में इंगलैंड के प्रधान मन्त्री ने कहा था कि "यदि ईसामसीह को एक बार फिर देखना है तो मैं कहूंगा कि स्वामी श्रद्धनन्द जी के दर्शन करे।"

पारिवारिक-क्रान्तिः—

आज भारतीय परिवारों की दुर्दशा है। माता पिता अपनी सन्तान से निराश हताश अपने भाग्य को कोसते हैं। सन्तान बूढे माता पिता को अपने दुर्भाग्य के दाता मानकर कोसते हैं। पारिवारिक

मर्यादायें नष्ट हुई जा रही हैं। भाई-भाई के बीच आपसी प्रेम और भाईचारे की भावना नष्ट होकर भाई और भाई के बीच गहरी नफरत की खाई, तप त्याग से दूर स्वार्थपूर्ति की साधना में ग्रस्त बढ़ती जन-सख्या से बचते परिवार कल्याण और परिवार नियोजन के कार्यक्रम बनाते दृश्य परिवार कहे जाते हैं परन्तु अगर ये वैदिक समाज व्यवस्था अपना लें तो बहुत से झगड़े समाप्त हो सकते हैं। मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव की शिक्षा गुरुकुल से ही मिल सकती है। आज का माता-पिता समझता है वही घर चला रहा है, उसके बाद घर कौन चलायेगा ? यही अविश्वास परिवार नही बनने देता। परन्तु अगर आश्रम व्यवस्था अपना कर ब्रह्मचर्य, गृहस्थ वानप्रस्थ तथा संन्यास के नियमों की दीक्षा व्यक्ति लेने लगे तो पारिवारिक समस्याओं का अन्त हो जाये। गुरुकुल मे ब्रह्मचार्य अवस्था में रहते निस्वार्थ सेवा से बिना किसी भेद भाव मानव से मानव को प्यार करने का प्रशिक्षण मिल सकता है। २५ वर्ष तक पारिवारिक वातावरण से जब गृहस्थ आश्रम भोगकर वानप्रस्थ और संन्यास की दीक्षा लेगा तो परिवार का स्वार्थ हट कर विश्वप्रेम की भावना बढ सकेगी और वसुधैव कुटुम्बकम् का सपना साकार हो सकेगा।

सामाजिक क्रान्ति.—

गुरुकुल संस्कृति का स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा उद्घोषित मन्त्र है कि गुरुकुल में "सबको तुल्य, खान पान, आसन दिये जाये, चाहे वह राजकुमार वा राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र की सन्तान हो, सबको तपस्वी होना चाहिए।" इस कथन के अनुरूप जब बालक गुरुकुल में रहता है तो उसमें जाति भेद, रंग भेद तथा अमीर गरीब, छोटे बड़े सभी सस्कार समाप्त हो जाते है। क्योंकि गुरुकुल में पढते समय बालक को भेद भाव से ऊपर उठकर समान शिक्षा दी जाती है जिससे समाज मे प्रचलित जाति वाद, सम्प्रदायवाद अछूत वाद सभी समस्याएँ समाप्त हो सकती हैं और 25 वर्ष उपरान्त तप पूर्वक विद्याध्ययन समाप्त कर जो नागरिक समाज बनायेंगे वह एक वर्गविहीन कल्याण-कारी समाज होगा।

धार्मिक क्रान्तिः—

गुरुकुल धार्मिक क्रान्ति के प्रतीक हैं। आज धर्म के नाम पर नाना प्रकार के विवाद और मतमतान्तर प्रचलित होकर नित नये भगवानों की रचना कर एक सच्चिदानन्द परमेश्वर की सत्ता को चुनौती देकर सृष्टि को पतन के गर्त में धकेलने का कार्य कर रहे हैं। स्वामी दयानन्द जी ने आर्यसमाज के नियमों में वेद का पढना-पढाना तथा सुनना-सुनाना परम धर्म इसलिए घोषित किया कि लोग धर्म का सही अर्थ जान लें और धर्मान्धता में न भटके उन्होंने अपने जीवन में ऐसा प्रयास भी किया कि सब धर्म वाले मिल बैठ कर कुछ सत्य सिद्धान्त निर्धारित कर लें जो मानवता के कल्याण के लिए हों। उनकी इसी विचारधारा का प्रसारण आज गुरुकुलों में होता है। धर्म की मनु द्वारा रचित परिभाषा अनुसार जीवन बिताने का प्रशिक्षण गुरुकुलों में ही मिलता है, अगर हम गुरुकुल शिक्षा प्रणाली अपनाले तो धर्म के नाम पर बहाया जाने वाला खून बन्द हो सकता है। मन्दिर में रहने वाला परमात्मा, मस्जिद में रहने वाला अल्ला, चर्च मे रहने वाला गॉड और गुरुद्वारे में रहने वाला वाहे गुरु जी एक होकर मानव कल्याण का कार्य सुगमता से कर सकते हैं। वास्तव में एक ही परमात्मा की उपासना प्रार्थना जब तक नही होगी तब तक यूही मानवता लाशो मे बदलती रहेगी। धार्मिक पाखण्ड के नाम पर न जाने क्या-क्या होता आया है और होता रहेगा। वेद के ईश्वरीय ज्ञान का प्रकाश गुरुकुलों द्वारा कर धार्मिक क्रान्ति की महती अवश्यकता है।

सांस्कृतिक व शैक्षणिक क्रान्तिः—

हजारों वर्षों की दासता में हमारी सस्कृति का दोहना किस प्रकार किया गया उसका लार्ड मकाले की शिक्षा नीति एक उदाहरण हमारे सामने है। हमारा इतिहास, हमारी संस्कृति को नष्ट करने का हर सम्भव असम्भव प्रयास विदेशियों ने किया। हमारे धार्मिक ग्रन्थों का शोधन परिवर्तन कर हमारी धार्मिक भावनाओं का खिलवाड़ किया गया। जिसके परिणामस्वरूप आज हम खोखली सस्कृति को जिन्दा लाश की भान्ति ढो रहे है। युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने इस कटु सत्य को समझ कर नारा दिया Back to vedas (वेदो की ओर लोटो) यही क्रान्ति मन्त्र हमारी सस्कृति को बचा सकता है। यह पब्लिक स्कूल तथा कान्वेंटों की माडर्न शिक्षा द्वारा कदापि सम्भव नहीं यह गुरुकुलों द्वारा ही सम्भव है। परन्तु खेद का विषय है कि गुरुकुलो के बारे में कुछ शरारती तत्त्व इन्हे केवल सुधार घर या बाबा जी साधु बनाने के महन्ती अखाड़ों के रूप में प्रचारित करते हैं। जब कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने चहुंमुखी शिक्षा का निश्चित पाठ्यक्रम दिया है। जिसमें भाषाएं, इतिहास, धर्म ग्रन्थ, वेदादि विद्या अर्थात् गणित, साईंस, शिल्पविद्या, चिकित्सा, भूगोल ज्योतिष, सैनिक शिक्षा जैसे विषयो को सम्मिलित किया है और यह निश्चित है कि जब तक गुरुकुल शिक्षा प्रणाली द्वारा यह सास्कृतिक तथा शैक्षणिक क्रान्ति नहीं होती तब तक हमारा स्वर्ण युग (Golden age) सतयुग लौटाया नही जा सकता। गुरुकुलों की क्रान्तिकारी शिक्षा प्रणाली का गुणगान करते हुए राष्ट्रकवि मैथिलीशरण के शब्द उल्लेखनीय हैं।

पढते हजारो शिष्य हैं पर फीस ली जाती नहीं।
वह उच्च शिक्षा तुच्छ धन पर बेच दी जाती नही।

सर्वांगीण क्रान्तिः—

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही एक ऐसी प्रणाली है जिसके माध्यम से सर्वागीण कल्याणकारी शासकीय समाज की रचना की जा सकती है। महर्षि दयानन्द ने समाज की इकाई अन्नदाता किसान को 'राजा' बताया है और राजा तथा प्रजा सम्बन्धों पर विशेष महत्त्व दिया है। वास्तव में गुरुकुल मे योग्य आचार्यो की देखरेख मे जैसा भी नागरिक हम तैयार करना चाहे बालक को वैसा ही बनाया जा सकता है। नित नये साम्प्रदायिक बखेड़ों का भी एक ही हल है कि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' सारा विश्व ही मेरा परिवार है, का निस्वार्थ भाव बालक में भरा जाये। गुरुकुल मे ही क्षत्रियता, साम्प्रदायिकता, जातियता आदि बुराइयों का समाधान वेद के अनुसार 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या' की भावना भर कर किया जा सकता है। जिस दिन गुरुकुलों के स्नातक नागरिक धरती को अपनी मां तथा परमात्मा को पिता मान लेगे तो अपने आप ही आपसी प्रेम और भाईचारा आपस की नफरत को समाप्त कर विश्व नागरिकता की भावना पनपायेगा। जिसमें सभी धरती मां के पुत्र होकर एक परिवार के सदस्य होंगे न कोई छोटा न बड़ा होगा और न वर्ग सर्घष होगा तथा न प्रदूषण व अणु परमाणु के भय से रहित सामाजिक अन्याय और धार्मिक पाखण्ड तथा आर्थिक विषमता से परे समानता पर आधारित सांगोपाग वैदिक समाज होगा जिसमें सबकी उन्नति करना उद्देश्य होगा। यही सर्वागीण क्रान्ति (Total revalution) होगी जो केवल गुरुकुल शिक्षा प्रणाली अपना कर ही सम्भव है। जिस दिन समस्त विश्व में वेदाधारित गुरुकुल शिक्षा प्रणाली अपनाली जायेगी उसी दिन विश्व मे समस्त क्रान्ति होगी और वेद नीतिकारों का यह सन्देश पुनः व्यावहारिक होगा।

अय निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

हरयाणा रक्षा महासम्मेलन

स्थान :—भिवानी स्टैण्ड, रोहतक

31 मार्च, 1985 रविवार को प्रातः 10 बजे

हरयाणा की जनता ने अन्याय के विरुद्ध बिगुल बजा दिया !

भारत सरकार ने अकालियों की धमकियों से भयभीत होकर फिर से सौदा करने की ठान ली है। स्वर्गीया प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी के 1970 के फैसले को धज्जिया उड़ाने के मनसूबे बन रहे हैं। हिन्दी भाषी **फाजिल्का अबोहर** हरयाणा को देने की बात तो दूर रही अब तो हरयाणा को ही तोड़ने का षड्यन्त्र चल रहा है।

रावी ब्यास का पानी हरयाणा में लाने के लिए बनाई जाने वाली लिंक नहर पर काम ठप्प है। हरयाणा के अनेक इलाके सूखे की चपेट में आते रहते है। जब कि पानी पाकिस्तान मे जा रहा है। हरयाणा के लाखों लोग एक-एक बूंद पानी के लिए तरस रहे है और पाकिस्तान मजे ले रहा है।

यदि एक वर्ष के भीतर अर्थात् (31 मार्च 1986) तक नहर का काम पूरा करने का वचन सरकार ने नहीं दिया और नहर के निर्माण के काम में तुरन्त तेजी न आई तथा फाजिल्का अबोहर का इलाका हरयाणा को देने का तुरन्त ऐलान नही किया तो 31 मार्च, 1985 को होने वाले महासम्मेलन में आन्दोलन आरम्भ करने का बिगुल बजा दिया जायेगा। अतः रोहतक पधार कर नेताओं की घोषणा सुने।

सुप्रसिद्ध आर्य सन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती, हरयाणा के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री चौ० देवीलाल जी, ला० बनारसीदास जी गुप्त, सुशील मोहन्ता सदस्य राज्यसभा, प० चिरञ्जीलाल शर्मा सदस्य लोकसभा, डा० मंगलसैन एम० एल० ए०, चौ० हुकमसिंह एम० एल० ए०, चौ० वीरेन्द्र सिंह एम० एल० ए०, प्रो० सम्पतसिंह एम० एल० ए०, श्रीमती सुषमा स्वराज पूर्व मन्त्री हरयाणा, ला० मूलचन्द जैन पूर्व मन्त्री हरयाणा, पं० रामधारी गौड पूर्व मन्त्री हरयाणा, चौ० धर्मसिंह राठी पूर्व एम० एल० ए०, चौ० बदलूराम पूर्व एम० एल० ए०, चौ० गणपतसिंह पूर्व एम० एल० ए०, प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, प्रो० मनीषी, मा० तोराम पूर्व एम० एल० ए० अबोहर, चौ० मेहरसिंह राठी पूर्व मन्त्री, श्री बलवन्तराय तायल पूर्व मन्त्री, श्री गजराज बहादुरसिंह नागर पूर्व मन्त्री तथा हरयाणा के प्रथम जनरल श्री के० के० सिंह पद्म विभूषण आदि के पधारने की पूरी सम्भावना है।

निवेदक :

प्रो० शेरसिंह	म० भरतसिंह	परमानन्द तुल्ली	निहालचन्द गुगनानी
अध्यक्ष	संयोजक	स्वागताध्यक्ष	स्वागत मन्त्री
हरयाणा रक्षावाहिनी		हरयाणा रक्षा महासम्मेलन	

हरयाणा रक्षा वाहिनी की ओर से ज्ञापन

जो १६-३-८५ को कैबीनेट कमेटी के वरिष्ठ सदस्य रक्षा मन्त्री श्री वी० पी० नरसिंहराव को भेंट किया गया

आदरणीय महोदय,

पंजाब समस्या का हल करने के लिए गठित भारत सरकार की कैबीनेट कमेटी की गतिविधियों को हरयाणा रक्षा वाहिनी बहुत गौर से देखती रही है। तीन जिलों को छोड़कर पंजाब के सभी जिलों से सेना की वापसी, अकाली नेताओं की रिहाई, आनन्दपुर साहब प्रस्ताव पर प्रधानमन्त्री के खेदसूचक वक्तव्य आदि अनेक कदम अकालियों के तुष्टिकरण के लिए इन दिनों सरकार ने उठाये हैं। स्वर्गीया प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या से पहले और बाद की घटनाओं की विस्तृत जांच की घोषणा कभी भी हो सकती है क्योंकि अकाली भी अब इस पर रजामन्द हो गये हैं। अकालियों की इलाकादि मांगों तथा रावी व्यास के पानी वितरण सम्बन्धी उनके फार्मूले को जैसे का तैसा मानने के लिए भी भूमिका तैयार की जा रही है। अकाली चाहें तो आनन्दपुर साहब प्रस्ताव को सरकारिया आयोग के सामने रख सकते है, सरकार उस पर विचार नहीं करेगी यह कहकर उस प्रस्ताव की चर्चा में शामिल नहीं किया, इसलिये द्विपक्षीय या त्रिपक्षीय वार्ताओं में पिछले दो वर्ष के दौरान उसकी चर्चा तक नहीं हुई। जो पहले नहीं हुआ वह अब हो रहा है अब तो देश को तोड़ने की ओर इंगित करने वाले उस प्रस्ताव के भागों पर विचार चल पड़ा है। अकालियों की गलत और तकहीन बातों को मानकर उनको सन्तुष्ट करने का प्रयास जो आजकल चल रहा है, वह पहले कभी नहीं हुआ था।

सरकार को अपने इस लक्ष्य को पूरा करने में अगर कोई बाधा नजर आती है तो वह इसके विरुद्ध हरयाणा में होने वाली प्रतिक्रिया ही है उससे निपटने के लिये भजनलाल को सक्रिय कर दिया गया है कि वह महापंजाब या कुछ क्षेत्रों को दिल्ली में मिलाने के शोशे छोड़कर हरयाणा के लोगों को इस बेकार की बहस में उलझाए रखे। असल मुद्दों की ओर से उनका ध्यान हट जाये।

(सबको भली भांति मालूम है कि न तो महापंजाब बनना है और न ही कोई इलाका दिल्ली में मिलाया जाना है, ये शगुफे तो हरयाणा के लोगों को भरमाने के लिये उठाये गये हैं)

जब प्रधानमन्त्री हिमाचल प्रदेश के बारे में कह सकते हैं कि प्रदेश सदा के लिये ज्यों का त्यों रहेगा, तो यही बात हरयाणा के बारे में कहने में संकोच क्यों होना चाहिए? भजनलाल को हरयाणा

विधानसभा में यह कहने को इजाजत क्यों दो जा रही है कि हरयाणा और हिमाचल प्रदेश को पंजाब में मिला दिया जाए उससे पहले प्रधानमन्त्री हिमाचल प्रदेश की जनसभा में खुलेआम वचन दे चुके हैं कि हिमाचल अपने इसी रूप में बना रहेगा ?

सारे मामले को आर-पार देखना कठिन नहीं है। यह साफ हो गया है कि यह एक सोची समझी योजना और चाल है कि हरयाणा की जनता को फाजिल्का अबोहर और रावी व्यास के पानी के असल मुद्दों से भटकाकर बेकार की बहस मे उलझा कर रखा जाए। यह अत्यन्त क्षोभ का विषय है कि जनता के प्रतिनिधि होकर हरयाणा के जनमानस की उपेक्षा करते हुये बिना लाज-लिहाज के भजनलाल जी अब यहां तक भी कहने लगे हैं कि हरयाणा के मसले तो अपने आप जादू की छड़ी से हल हो जायेंगे।

हरयाणा के लोगों को विश्वास हो गया है कि भजनलाल प्रधानमन्त्री की रजामन्दी से यह सब कुछ कर रहे हैं। हरयाणा के लोगों को इस बात पर विश्वास होने लगा है कि फैसला तो सरकार गुप्त रूप से अकालियों से कर चुकी है, दोनों ओर से बयानबाजी तो महज नाटक है। मौका पाकर कभी भी घोषणा की जा सकती है।

इन तथ्यों के रहते, जो अब प्रकाश में आ रहे हैं, हरयाणा रक्षा वाहिनी ने फैसला किया है कि यदि भारत सरकार ने निम्नलिखित मुद्दो पर अपेक्षित घोषणा इस मास के अन्त तक नहीं की तो हरयाणा के लोग आन्दोलन का बिगुल बजाने के लिये मजबूर होगे—

(१) भारत सरकार घोषणा करे कि वह २९ जनवरी १९७० के श्रीमती इन्दिरा गांधी के फैसले पर अमल करते हुए फाजिल्का अबोहर के इलाके को हरयाणा मे मिलायेगी और उसके लिये वह दिन निश्चित करके घोषणा करे।

(२) रावी-व्यास का पानी हरयाणा का हिस्सा लाने वाली सतलुज यमुना-लिंक नहर का काम ३१ मार्च १९८६ से पहले पूरा करके ३५ लाख एकड़ फुट पानी तुरन्त बाद हरयाणा को मिलने लगेगा।

(३) हरयाणा राज्य या उसका कोई भाग किसी दूसरे राज्य के साथ नहीं मिलाया जायेगा।

धन्यवाद सहित
प्रो० शेरसिंह, अध्यक्ष हरयाणा रक्षा वाहिनी,
हरिकिशनसिंह मलिक
पूर्व सैशनजज,
मा० तेगराम भू० पू० एम० एल० ए० अबोहर,
चौ० धर्मसिंह राठी भू० पू० एम० एल० ए० पानीपत,

आपके
अचर्जलाल बख्शी अध्यक्ष केन्द्रीय सनातन धर्म सभा
उत्तर भारत,
चौ० निहालचन्द गुगनानी रोहतक
राव रामचन्द भू० पू० बी० डी० ओ० रेवाड़ी
चौ० आदिलाल जाखड़ पंचकोशी त० फाजिल्का

आतंकवादियों को उकसाने वाले नेताओं को गिरफ्तार करें

—प्रो० शेरसिंह

रोहतक : 25 मार्च —हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने चण्डीगढ में श्री कृष्णलाल मनचन्दा की आतंकवादियों द्वारा कायरतापूर्ण हत्या की कड़ी निन्दा करते हुए भारत सरकार से मांग की है कि उन अकाली नेताओं को तुरन्त गिरफ्तार करे जो भड़काने वाले वक्तव्य देकर आतंकवादियो को प्रोत्साहित कर रहे है।

प्रो० शेरसिह ने सरदार अमरेन्द्रसिंह 'महाराजा पटियाला' के वक्तव्य की आलोचना करते हुए कहा कि उन्हें हरयाणा के सिखों की तो चिन्ता है, परन्तु पंजाब मे हिन्दू नेताओं को चुन-चुन कर आतकवादियो द्वारा समाप्त किया जा रहा है, उन पर आज तक निन्दा करने का साहस नही किया।

प्रो० शेरसिह ने हरयाणा की जनता से अपील करते हुए कहा कि 31 मार्च को रोहतक में होने वाले हरयाणा रक्षा महासम्मेलन में अधिक से अधिक संख्या मे पहुंचकर अपनी शक्ति तथा संगठन का परिचय देवे। अकाली नेता पजाब में आतकवाद फैला कर अपनी अनुचित मागे मनवाना चाहते है। अकालियों की प्राय: मांगे हरयाणा को हानि पहुंचाने वाली है। अत रोहतक महासम्मेलन में हरयाणा के हितों की रक्षा हेतु आन्दोलन करने की तैयारी की जायेगी।

स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती का सन्देश

गुरुकुल कुरुक्षेत्र मे जब से सत्यदेवसिंह जी ने प्रधान के रूप में कार्य सम्भाला है तब से गुरुकुल चहुमुखी उन्नति कर रहा है, ब्रह्मचारियों के स्वास्थ्य से स्पष्ट है। वहां पुस्तकालय, विद्या भवन, क्रीडा की उन्नति सर्वविदित है। गोशाला को उन्नत बनाकर सभी ब्रह्मचारियो को गाय का घी दुग्ध देना प्रसन्नता की बात है। मेरी कामना है कि गुरुकुल दिन दोगुनी रात चौगुनी उन्नति करे।

ओमानन्द सरस्वती
प्रधान परोपकारिणी सभा

सन्देश

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल कुरुक्षेत्र में विद्यार्थियों को दी जा रही शिक्षा को मैं बहुत महत्त्वपूर्ण समझता हूं। पिछले कुछ वर्षों से गुरुकुल के वातावरण में विशेष परिवर्तन हुआ है जो विद्यार्थियों के चेहरों और वेशभूषा से प्रकट होता है। गुरुकुल की विविध गतिविधियां विशेष प्रशंसनीय हैं। बच्चों में आध्यात्मिक विकास के पवित्र उद्देश्य के लिए योगियों, ऋषियों, मुनियों ने इन गुरुकुलों की स्थापना की थी। गुरुकुल कुरुक्षेत्र में यह देखकर प्रसन्नता हुई कि गुरुकुल में जाति विश्वास वर्ण और धर्म का भेद-भाव नहीं किया जाता जो कि आजकल हमारे देश की महाव्याधि है। जिसके उन्मूलन के लिए प्रत्येक क्षेत्र मे संघर्ष किया जाना चाहिए। यहां चरित्र निर्माण की आधारशिला रखी जाती है जो कि आने वाली सन्तति के लिए अत्यन्त उपयोगी उपयोगी होगी। इस विषय में और भी बहुत कुछ लिखा जा सकता है। मैं इस गुरुकुल की सब क्षेत्रों में उन्नति के लिए कामना और प्रार्थना करता हूं।

वेदपाल
उपाध्यक्ष, हरियाणा विधानसभा,
चण्डीगढ़।

सन्देश

यहां गुरुकुल की शिक्षा पद्धति हमारी प्राचीन संस्कृति के अनुसार है और इस गुरुकुल में विद्यार्थियों को शारीरिक, मानसिक, नैतिक व आध्यात्मिक शिक्षा एक अच्छे, सुन्दर, स्वच्छ वातावरण में दी जाती है जिससे उनका चहुमुखी विकास हो सके। मै इस गुरुकुल का प्रबन्ध करने वाले सभी कार्यकर्ताओं को हार्दिक बधाई देता हूं और गुरुकुल के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं और मुझे आशा है कि सभी कार्यकर्ता गुरुकुल का दर्जा बढाकर इसे महाविद्यालय का रूप देंगे।

—ईश्वरसिह
उपाध्यक्ष, राज्य योजना बोर्ड,
हरियाणा, चण्डीगढ़।

उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार

की औषधियों का सेवन कीजिए



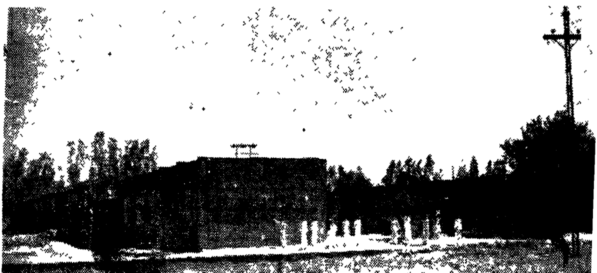
शाखा कार्यालय:—

६३ गली राजा केदारनाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६

(स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाज़ार से खरीदें) फोन नं० २६६८३८



गुरुकुल कुरुक्षत्र के स्नातक विश्वविख्यात आर्य उद्योगपति पं० सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार
वीर हकीकतराय बलिदान दिवस पर सम्बोधित करते हुए



विश्वविख्यात आर्य उद्योगपति पं० सत्यदेव वेदालंकार (नैरोबी) के
पवित्र दान द्वारा निर्माणाधीन श्री गायत्री विद्यालय भवन

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १२, अङ्क १९ १४ अप्रैल १९८५ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

डेरा बस्सी व लालडू क्षेत्र हरयाणा में शामिल किए जाएं

प्रो० शेरसिंह के नेतृत्व में गए क्षेत्रीय प्रतिनिधि मण्डल का ज्ञापन

पटियाला, १० अप्रैल। पंजाब समस्या के संदर्भ में पंजाब का दौरा कर रही सरकार द्वारा गठित उपसमिति को गत ७ अप्रैल को पटियाला में डेरा-बस्सी एवं लालडू क्षेत्रों की आर्यसमाज एवं नगर समिति के प्रतिनिधि मण्डल ने, जिसका नेतृत्व प्रो० शेरसिंह कर रहे थे वहां उपसमिति से भेंट की और अपने पक्ष के समर्थन में एक ज्ञापन दिया। ज्ञापन का सारांश इस प्रकार है—

डेरा बस्सी और लालडू क्षेत्र जो अम्बाला के समीप हैं, अम्बाला से शिमला जाने वाले राष्ट्रीय राज मार्ग के दूसरी ओर पड़ते हैं। मुबारिकपुर जेल भी इसका एक भाग है। यह पूरा क्षेत्र घग्घर नदी तक है जो कि एक तरह से प्राकृतिक सीमा रेखा बनाती है। अब यह क्षेत्र जिला पटियाला की डेरा बस्सी उप तहसील में पड़ता है। घग्घर नदी की प्राकृतिक सीमा रेखा इस क्षेत्र को पटियाला जिला के शेष भाग से अलग करती है यह क्षेत्र हिन्दी भाषी क्षेत्र है तथा दर हकीकत यह अम्बाला जिला का भाग है। संचार साधनों यातायात, आर्थिक सम्बन्ध सामाजिक रीति-रिवाज तथा रिश्ते-नाते एवं अन्य दैनिक कार्यों के रूप यह क्षेत्र अम्बाला के साथ पूरी तरह जुड़ा हुआ है। इस तथ्य का एक और पहलू यह है कि यह क्षेत्र अम्बाला एवं जिला मुख्यालय अम्बाला से इस कदर जुड़ा हुआ है कि यहां से केवल आधे घण्टे में पहुँचा जा सकता है जबकि पटियाला यहां से बहुत दूर है एवं कोई सीधा संचार साधन इस बीच में नहीं है।

ज्ञापन में आगे कहा गया कि सन् १९६५ में पंजाब का पुनर्गठन किए जाते समय भी इस क्षेत्र के निवासियों, और कई संस्थाओं ने हरयाणा में मिलाने के लिए शाह कमीशन को ज्ञापन दिया था जो अनुचित रूप में शाह कमीशन द्वारा अस्वीकार कर दिया गया था। इसके अलावा स्व० प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कुछ साल पहले घोषणा की थी कि पंजाब और हरयाणा के विवादग्रस्त क्षेत्रों के मामले पर पुनः विचार किया जाएगा और इसके लिए एक आयोग बिठाया जाएगा। इस क्षेत्र के निवासी अपने पक्ष को प्रस्तुत करने के लिए काफी समय से प्रतीक्षा कर रहे हैं किन्तु अभी तक कोई आयोग नहीं बिठाया गया। सन् १९८३ के शुरु में पंजाब के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री दरबारा सिंह ने भी कहा था कि पंजाब के हिन्दी भाषी डेरा बस्सी व लालडू हरयाणा में शामिल किए जा सकते हैं बशर्ते कि हरयाणा के पंजाबी भाषी क्षेत्र पंजाब में शामिल कर दिये जावें। यह सुझाव तब अकालियों ने भी स्वीकार कर लिया था। इस प्रकार इस क्षेत्र के लोगों का यह दावा कि यह हिन्दी भाषी क्षेत्र हैं सबको मान्य रहा है।

इस क्षेत्र के निवासी अपने इस दावे के पक्ष में अपना मत प्रस्तुत करने के लिए एक लम्बे समय से प्रतीक्षा में हैं कि कब उन्हें फिर से अपना मत प्रस्तुत करने का मौका मिले।

वे महसूस करते हैं कि इस सन्दर्भ में प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी द्वारा गठित उपसमिति गौर करेगी तथा पुनः इस बारे में ज्ञापन दिया जा रहा है। यह ज्ञापन शाह आयोग को १९६६ में दिए गए ज्ञापन की शृंखला में ही समझा जाना चाहिए।

डेरा बस्सी क्षेत्र के अलावा लालडू पुलिस, स्टेशन पटियाला राज्य के भाग थे। डेरा बस्सी का क्षेत्र छछरौली के साथ कल्सिया स्टेट का भाग था। कल्सिया का शिक्षा विभाग अम्बाला के अधिकारियों द्वारा शासित होता था। छछरौली राज्यों के 'पार्ट बी' के निर्माण के समय अम्बाला जिले की जगाधरी तहसील का भाग बन गया। किन्तु डेरा बस्सी १९५३-५४ तक कोहिस्तान जिले का भाग बना रहा जब कोहिस्तान को खत्म करके पेप्सु के पटियाला जिले का भाग बना दिया गया। लालडू और डेरा बस्सी के क्षेत्र अम्बाला के जंगलात एवं सार्वजनिक निर्माण विभाग के साथ जोड़ दिए गए। माजरा, बराना, जस्थाना और साधपुर आदि की ग्राम पंचायतें शामिल हैं, अम्बाला शहर की मार्केट कमेटी के प्रशासन के अन्दर थी तब लोगों की तर्क को शाह कमीशन ने उस आधार पर अस्वीकार कर दिया था कि वे लोग राजपुरा तहसील को जैसा का तैसा रखना चाहते हैं। ऐसा ही एतराज १९५६ में तत्कालीन पेप्सू के मुख्यमन्त्री श्री बृषभान ने भी किया था। शाह कमीशन ने भी तब इस तर्क को दोहराया था। अब जबकि डेरा बस्सी सब-तहसील बन गया है, उस आधारहीन एतराज पर विचार नहीं किया जाना चाहिए।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर इस क्षेत्र को हरयाणा के अम्बाला जिले में मिलाए जाने का दावा तर्क पूर्ण एवं न्याय संगत है। इससे इस क्षेत्र के निवासियों को भी यह सन्तोष होगा कि लोकतान्त्रिक सरकार ने उनको उचित मांगों एवं हक को स्वीकार कर लिया। इस क्षेत्र के निवासियों की हर मामले में अम्बाला निवासियों के साथ संलग्नता एवं आत्मीयता के आधार पर डेरा बस्सी व लालडू क्षेत्र को हरयाणा के अम्बाला जिले में मिलाया जाना सर्वथा न्यायपूर्ण है।

इस ज्ञापन के अन्त में कहा गया कि क्षेत्रीय विवाद को सुलझाने के बारे में सबसे उत्तम प्रजातान्त्रिक तरीका यह होगा कि इस मुद्दे पर उक्त क्षेत्र के निवासियों का मत संग्रह कराया जाये।

ज्ञापन जो कि हरयाणा रक्षा वाहिनी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह जी के प्रतिनिधित्व में गए प्रतिनिधि मण्डल ने दिया था। इस पर म्युनिस्पिल कमेटी सनातन धर्म सभा, नगर समिति, आर्यसमाज कांग्रेस कमेटी डेरा बस्सी आदि संस्थाओं के पदाधिकारियों के हस्ताक्षर हैं।

भारत जननी से साभार

प्रसुव यज्ञम्-यज्ञ का प्रसार करो (यजुर्वेद ६।१

पं० वीरसेन वेदश्रमी, वेद विज्ञानाचार्य, वेद सदन,
महारानी पथ, इन्दौर

१—वसोः पवित्रमसि (यजुर्वेद १।२) यज्ञ पवित्र है

यज्ञों का प्रचार आवश्यक है तथा आज की परिस्थिति में तो परम आवश्यक तथा अनिवार्य है। आज को सर्वोपयोगी आवश्यकता यज्ञ ही है, क्योंकि यह-पवित्रमसि-अर्थात् पवित्र है, परम पवित्रकर्त्ता भी है, एक ही प्रकार से नहीं अपितु सैकड़ो एवं सहस्रों प्रकार से पवित्रकर्त्ता है तथा पवित्रता का हेतु है-ऐसा यजुर्वेद के प्रथम अध्याय के दूसरे मन्त्र में बताया है। पुनः वेद तीसरे मन्त्र में कहता है—

२—वसोः पवित्रमसि शतधारम् (यजुर्वेद १।३)

यज्ञ सकडों प्रकार से पवित्र करता है। यह यज्ञ असंख्यात संसार का धारण करने और शुद्धि करने वाला कर्म है तथा वही यज्ञ अनेक प्रकार के ब्रह्माण्डों को धारण करने और शुद्धि का निमित्त, सुख देने वाला है, जैसा कि-वसो. पवित्रमसि सहस्रधारम् यजुर्वेद के अध्याय प्रथम के तीसरे मन्त्र में बताया है। वेद ने यज्ञ को महान् सामर्थ्य का यहां प्रतिपादन किया है। यज्ञ जहां पवित्रता समस्त ससार की ही नहीं अपितु अनेक प्रकार ब्रह्माण्डो की भी करता है वहीं वह साथ साथ अनेक प्रकार के ज्ञात एवं अज्ञात प्रकार से ससार को धारण भी करता है। अतः वेद ने कहा—

३—आयुर्दा असि आयु में देहि (यजुर्वेद ३।१७)

यज्ञ आयु प्रदाता है, अर्थात् यज्ञाग्नि आयु देने वाली है हमको वह आयु प्रदान करे। यह रहस्यमय जीवन मन्त्र, जीवन तन्त्र, समस्त विश्व में प्रसारित कर देना चाहिये। वर्तमान समय में जीवन मृत्यु के संघर्षमय प्रदूषित पर्यावरण में, वायुमण्डल मे प्राण एवं जीवनीय अमृत प्रदाता शक्ति का विनाश एव क्षय निरन्तर हो रहा और प्राणघातक असुरतत्व-विषयुक्त अनेक प्रकार की गैसों की वृद्धि तीव्रता से फैलती जा रही है। इनसे बचने के लिये-

४—माहूवा (यजुर्वेद अ. १ मन्त्र २)

यज्ञ को कभी मत छोड़ो। इस पवित्रकर्त्ता वायु के साथ देश देशान्तरों में फैलने वाले वायु को शुद्ध करने वाले, ससार को धारण करने वाले, उत्तम स्थानो से सुखों को बढ़ाने वाले यज्ञ को मत छोड़ो—अर्थात् यज्ञ का अनुष्ठान प्रतिदिन अवश्य करो। ऐसा वेद का स्पष्ट इस सम्पूर्ण मन्त्र में आदेश है तथा इसी मन्त्र में वेद को घोरसि भी कहकर विज्ञान के प्रकाश का हेतु भी है और सूर्य की किरणो में स्थिर होने वाला भी है, यह भी बताया है-यज्ञ करोगे तो यज्ञ के विज्ञान का प्रकाश होगा। यह यज्ञ नष्ट नहीं होगा। सूर्य की किरणों में स्थिर होने वाला है। यह भी ज्ञात हो जावेगा और वायु के साथ देश देशान्तरों में भी फैलता है, यह भी सिद्ध होगा। वायु को शुद्ध करने वाला है यह विज्ञान भी सिद्ध होगा। वायु की शुद्धि के कारण विश्व को जीवन देकर धारण करने वाला है, यह भी अनुभूत हो जायेगा।

५—प्रदूषण के घातक परिणाम—

भोपाल के वायु प्रदूषण ने सिद्ध कर दिया है कि उसके अनेक प्रकार के दुष्परिणाम हुए और उत्तरोत्तर प्रकट हो रहे हैं। मनुष्य मरे भी, बीमार भी पड़े। पशु पक्षी, जलीय प्राणी मरे, जो बचे उनमें भी न्यूनाधिक विकार हुए और हो रहे हैं। वृक्ष, वनस्पति, अन्न, फल, शाक सब्जी नष्ट हुई-विषयुक्त हो गई और जिनने सेवन किया उनको रोग न्यूनाधिक हो रहे हैं। गर्भस्थ शिशुओं पर भी अनेक प्रकार के दुष्परिणाम प्रकट होने लगे हैं। ये सब कुप्रभाव पर्यावरण के दूषित होने से हुए। अतः दूषित पर्यावरण के शोधन के लिए विशाल रूप से यज्ञ अवश्य करना चाहिए। कारखाने बन्द नहीं हो सकते। मोटर, कार, ट्रक, रेल, हवाई जहाज चलना बन्द नहीं हो सकते हैं। पर्यावरण को शुद्ध पवित्र, निर्विष करने के लिये उसमें जीवनीय, रोग निवारण एवं पुष्टि प्रदाता तत्वों का प्रसारण यज्ञ के द्वारा सरलता से सम्भव है। अतः वर्तमान समय में यज्ञ ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है।

६—इमं यज्ञं नयत अग्रे (यजुः १।१२)

आज की परिस्थिति में यज्ञ को प्रधानता दो-आज के समय में यज्ञ के सुगम एवं विज्ञानयुक्त कर्म को वर्तमान समय के भारतीय वैज्ञानिक हृदय से अंगीकार करते हुए भी सार्वजनिक रूप से व्यवहार में लाने में अपनी प्रतिष्ठा का हानि अनुभव करते हैं और वैदेशिक वैज्ञानिकों की ओर मार्गदर्शन की प्रतीक्षा में रहते हैं। वे जो उपाय करें, वैसा ही हम भी अनुसरण करें तो अपनी प्रतिष्ठा है। परन्तु विदेश के वैज्ञानिकों को यज्ञ का ज्ञान ही नहीं है। भारतवासी तो जानते हैं। भारत के वैज्ञानिकों का मार्गदर्शन करने में अग्रसर होना चाहिये। इस यज्ञ कार्य को प्राथमिकता प्रदान करें।

७—महान् वैज्ञानिक महर्षि दयानन्द

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने संसार के महान् उपकार के लिये प्राणिमात्र के जीवन के लिये यज्ञ करना अति आवश्यक बताया। पर्यावरण को को शुद्ध करने के लिए और जीवनीय बनाने के लिये वायुमण्डल को शुद्ध करने, वृष्टि, जल आदि की शुद्धि तथा उसे सुसंस्कृत कर समस्त देश देशान्तरों एव पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्युलोक में फैलाने के लिये लक्षाहुति के यज्ञों का विधान किया। ऐसे लक्षाहुति कुण्ड चार चार हाथ लम्बे, चौड़े, गहरे तथा २ लाख आहुतियों के लिये छः हाथ के कुण्डों के निर्माण का विधान किया। २ मीटर चौड़े ३ मीटर लम्बे कुण्डों में विशाल परिणाम में बड़े-२ यज्ञ होने चाहिएं, तभी पर्यावरण के प्रदूषण शान्त रहेंगे।

लक्षाहुति यज्ञों से शांति एवं सुख प्राप्ति

ये लक्षाहुति कुण्ड दैनिक अग्नि क्षेत्र के लिए नहीं है। किसी अति योग व इष्टि के लिए नहीं है और षोडश संस्कारों के लिये भी नहीं है अपितु सार्वभौम प्रदूषित पर्यावरण के नाश तथा अनुकूल पर्यावरण बनाने के लिए ही है। ऋग्वेद दशम् मण्डल के सूक्त ९८ के मन्त्र दसवें एवं ग्यारहवें में ९९ हजार आहुति का उल्लेख वृष्टि यज्ञ के लिए है। अतः पर्यावरण शोधन, ऋतु सुधार अवर्षण रोककर वृष्टि करने, उत्तम कृषि, मेघों की वृद्धि आदि के लिए बड़े बड़े यज्ञों का करना परम आवश्यक है। इससे अतिवृष्टि, अनावृष्टि, तूफान आदि भी शान्त होंगे। ऐसे लक्षाधिकाहुति यज्ञ अनेक स्थानो पर होने चाहिये। एक कुण्ड निर्माण के द्वारा अथवा अनेक बड़े-२ कुण्डों में यज्ञ हो सकते हैं। परिस्थिति विशेष में ही इनका आयोजन होता है। आज के समय में जब पृथिवी, अन्तरिक्ष, सर्वत्र प्रदूषण ही प्रदूषण फैल रहे हैं, तो इनका अनुष्ठान करना परम आवश्यक व हितकारी है। अन्य कोई उपाय है ही नहीं।

८— घृतेन वर्धयामसि (यजुः ३।३)

यज्ञाग्नि को घृत से प्रचण्ड रखो। उस यज्ञ की अग्नि को घृतादि की आहुतियों से बढाते हैं। (यजुः ३-३) यज्ञ का प्रधान द्रव्य घृत है। आवश्यकता अनुसार उसमें चार प्रकार के होम द्रव्य सुगन्धित, रोग नाशक, मिष्ठ पदार्थ और पुष्टिकर्त्ता पदार्थों की भी आहुति होती है। ये ही पदार्थ पर्यावरण को निर्विष करते हैं, शुद्ध, पुष्ठ और रोगनाशक बनाते हैं। प्रकृति के रोग या उपद्रव अतिवृष्टि, अनावृष्टि आंधी, तूफान आदि का भी निवारण करते हैं। घृत को आयुर्वेद में विष शामक बताया है। अनेक विष, उपविषयों का शोधन घृत, दूध, तक्रादि में होता है। सांप काटने पर या संख्यादि विष खा लेने पर घृत पिलाकर ही

(शेष पृष्ठ ८ पर)

कुछ तड़प कुछ झड़प

प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु, वेदसदन अबोहर

राष्ट्रीय जन जागरण अभियान—

वैदिक यति मण्डल का निर्माण महर्षि बलिदान शताब्दी से कुछ समय पूर्व हुआ। यति मण्डल ने स्वल्प समय मे ही आर्य जाति के हित के लिये कई ठोस करके आर्य जनता को प्रभावित किया है। आज मैं यति मण्डल के प्रधान पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अथवा यति मण्डल के दूसरे सदस्यों से एक प्रार्थना करने लगा हूं।

अजमेर शताब्दी से पूर्व यति मण्डल ने कुछ पद यात्राए निकाली। उनका अच्छा प्रभाव पड़ा। गुजरात सभा ने टंकारा से एक पदयात्रा आरम्भ की उससे गुजरात व राजस्थान के अनेक ग्रामों में ऋषि का सन्देश पहुँचा। अब आवश्यकता इस बात की है कि यति मण्डल देश के विभिन्न भागों में नई पदयात्राए निकाली। हरयाणा, पश्चिम उत्तर प्रदेश, हिमाचल, गढवाल, राजस्थान को बारी बारी लिया जावे। देश भर में अराष्ट्रीय हिंसक तत्त्व बल पकड रहे हैं। हिन्दू समाज निस्तेज, धन लोलुप, विलासी बनता जा रहा है। आर्यसमाज को देश के प्रति यह बड़ी सेवा होगी। यदि देश मे क्षात्र भावना को जगाकर आत्म रक्षा अथवा आत्म विश्वास पैदा कर दिखावे। देश के जो क्षत्रिय वर्ग हैं उनमे आर्यसमाज का अधिक से अधिक प्रचार होना चाहिए। आयसमाज जन्म की जात-पात को नही मानता। मेरा भाव केवल यह है कि जाट राजपूत, अहीर, गुजर, महार, गढवाली, संनी, त्यागी, मलयाली, नायर मराठे वीर जो सेना मे अधिक भरती होते है, उनमे आर्य सामाजिक भरने से देश में नवचेतना आएगी। यति मण्डल हरयाणा व पश्चिम उत्तर प्रदेश से अपनी पद यात्रायें आरम्भ करे। हिंसा के विरुद्ध जन-जन को जगाया जाय। क्षात्र धर्म का पाठ पढ़ाया जावे। ऋषि के मुख्य मुख्य सिद्धांत लोगो को पदयात्री समझाए।

एक भूल का सुधार

करनाल में बलिदान शताब्दी पर एक स्मारिका छपी है। उसमें मेरा भी लेख है। मैंने स्मारिका अभी नहीं देखी। पता चला है कि मेरे लेख में देहरादून के महाशय अलखधारी जी (पूर्व मुहमद उमर) का नाम अशुद्ध छप गया है। मेरे लेख में श्री कन्हैयालाल अलखधारी जी की भी चर्चा थी। प्रतीत होता है कि कोई पंक्ति छूट गई है और नाम कन्हैयालाल छप गया। Composing में ऐसा हो ही जाता है। कारण कुछ भी हो, भूल तो भूल ही है। इसका सुधार ही होना चाहिए। प्रसंगवश यह लिख दे कि इन अलखधारी जी से प० लेखराम बड़ा प्रेम करते थे। वह जब जब देहरादून जाते इनके अतिथि बनते थे।

सत्यार्थप्रकाश अंग्रेजी—

मान्य डा० भवानीलाल जी ने पूछा है कि डा० चिरंजीलाल जी का अंग्रेजी सत्यार्थप्रकाश १९०६ में छपा था और पूज्य मास्टर दुर्गा प्रसाद जी का अनुवाद १९०८ में छपा था। मैंने लिखा था कि सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम अंग्रेजी अनुवाद पूज्य मास्टर दुर्गाप्रसाद जी ने किया। श्री भारतीय जी का यह कथन विचारणीय है। इस पर मेरा निवेदन यह है कि डा० चिरंजीलाल जी के अंग्रेजी अनुवाद से बहुत समय पूर्व मास्टर दुर्गाप्रसाद जी ने सत्यार्थप्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद कर दिया सन् १९०० ई० में उनके सत्यार्थप्रकाश के अनुवाद एकादश समुल्लास का छप गया था। ऐसे ही उनके अनुवाद के शेष भाग भी छपे थे। इसलिये यह ऐतिहासिक तथ्य है कि मास्टर दुर्गाप्रसाद जी ने सत्यार्थ प्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद सबसे पहले किया था।

स्वाध्याय का अभियान—

आर्यसमाज के संगठन में पुस्तकाध्यक्ष का विशेष स्थान रहा है। आर्यसमाज के छोटे बड़े सब स्वाध्याय किया करते थे। स्वाध्याय तो आर्यसमाजी की पहचान रहा है। आर्यसमाज के संगठन को विराट् बनाने के लिए यह आवश्यक है कि पुनः एक एक आर्य प्रतिदिन स्वाध्याय का व्रत ले। पांच मिनट स्वाध्याय करें या दस मिनट करें परन्तु करें अवश्य। यह परम तप है। षड्यन्त्र रचकर आर्यजाति के शत्रु और हिन्दू कहाने वाले भी आर्यसमाज पर नित्य पत्र पत्रिकाओं में वार प्रहार कर रहे हैं। हमें आर्य लोग आए दिन लिखते हैं इसका उत्तर दें उसका उत्तर दें—हम उत्तर लिखें और लिखते हैं परन्तु साहित्य सृजन करें तो खपता नहीं। करें तो क्या?

दमकिपा हरयाणा के विधायकों इस्तीफे चौ० देवीलाल को दे दिए

रोहतक, १० अप्रेल (शि) दलित मजदूर किसान पार्टी (दमकिपा) हरयाणा के सभी २१ विधायकों और एक राज्यसभा सदस्य ने अपने त्यागपत्र हरयाणा के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री चौ० देवीलाल को सौंप दिये हैं कि वे हरयाणा से अन्याय होने की अवस्था में इन्हें सम्बद्ध अधिकारियों को दे दे। पार्टी के कार्यालय मन्त्री श्री रामचन्द्र दहिया ने आज यहां पत्रकारों को यह जानकारी दी। आज यहां पत्रकारों से बातचीत करते हुए उन्होंने का कि पंजाब समस्या के हल के दृष्टिगत उन्हें राज्य के हितों को कांग्रेस (इ) के हाथों नुकसान पहुँचाने की आशंका है, ऐसी अवस्था मे श्री देवीलाल ये सभी त्यागपत्र आगे भेज देंगे। तब राज्य में आंदोलन चलाया जाएगा। पार्टी की राज्य स्तरीय कार्यकर्त्ता बैठक २० अप्रैल को रोहतक में बुलाई गई है जिसमें हरयाणा को बचाने के लिए आगामी कार्यनीति पर विचार किया जाएगा।

(पंजाब केसरी से साभार)

मंत्रियों के अंग्रेजी-प्रेम की आलोचना

नई दिल्ली, १० अप्रेल (वार्ता): सत्तारूढ दल के सांसद राम नगीना मिश्र ने आलोचना मे 'अंग्रेजी प्रेम' के लिए मन्त्रियों को आड़े हाथ लिया। श्री मिश्र ने विदेश मन्त्रालय को अनुदान मांगों पर जारी बहस में भाग लेते हुये कहा कि अंग्रेज तो देश से चले गये लेकिन उनकी भाषा के प्रभाव से हम अभी तक मुक्त नहीं हो पाए हैं।

उन्होंने कहा कि अपनी भाषा के बिना देश की अलग पहचान कायम नहीं हो सकती। मन्त्रियों को चाहिये कि विदेश यात्राओं मे भी राष्ट्र भाषा का प्रयोग करें। मन्त्रियों को यह याद दिलाने की आवश्यकता नही कि हमारे यहा आने वाले अधिकतर अतिथि अंग्रेजी जानने पर भी अपनी अपनी अपनी भाषा में बोलते हैं।

ग्राम कंवारी में दहेज विरोधी पंचायत

९-४-१९८५ को ग्राम कंवारी (हिसार) में सालवास की दहेज विरोधी पंचायत महाशय रामसिंह माण्पड़ निवासी की अध्यक्षता में हुई जिसमें श्री देवराज आर्य व था० बारूराम उमरा, कप्तान फूलसिंह तथा अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने अपने विचार रखे। प० गुसाईराम ने पचायत के दहेज सम्बन्धी नियमों के पालन की प्रतिज्ञा की। पंचायत आगे के लिये एक 'दहेज विरोधी समिति' बनाई और उसमें निम्नलिखित नियमो पर पुनः विचार प्रकट किया गया—

१—१०० रु० से अधिक दान नही देना, २—२५ से अधिक बाराती नहीं ले जाना, ३—१ रु० से टीका करना, ४ शादी में बाजा नहीं बजाना व शराब नहीं पीना, ५—ज्यादा फर्नीचर न देना तथा कई प्रकार की मिठाई नहीं बनाना।

मन्त्री आर्यसमाज

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

सम्पादक के नाम पत्र

सभा का एक प्रशंसनीय कदम

श्रीमान् नमस्ते।

एक दैनिक समाचार पत्र मे पढ़कर प्रसन्नता हुई कि सभा ने श्री धमदेव जो विद्यार्थी को आर्य वीर दल हरयाणा का अधिष्ठाता नियुक्त किया है। श्री विद्यार्थी जो युवक हैं और उनकी रुचि युवकों के निर्माण में अत्यधिक है। आज यदि आर्यसमाज के लिए कोई सुदृढ आधार प्रदान कर सकता है तो वह युवाशक्ति हो कर सकता है। बहुत हो अच्छा हो यदि सभी प्रांतीय सभाए न केवल आर्य वीर दल सम्बन्धी अधिकारो का नियुक्त करें बल्कि उन्हे पूरा पैसा और स्वतन्त्रता भी दें ताकि वे इस क्षेत्र मे कुछ कर सकें। देश की आशा आर्यसमाज है और आर्यसमाज की आशा हैं उसके युवक।

मैं सभा के इस निर्णय का स्वागत करता हूँ और श्री विद्यार्थी जो को बधाई देते हुये सुझाव देना चाहता हू कि वे जी-जान से इस कार्य में जुट जाए। आर्य वीर दल जोन्द के अधिकारियो और सैनिको की ओर से मैं विनम्र आश्वासन दिलाना चाहता हूं कि हम इस सम्बन्ध मे जो भी सेवा हमें सौंपी जाएगी उसे सहर्ष स्वीकार करेंगे।

युवकों को बना दीजिए, राष्ट्र अपने आप बन जाएगा।

प्रो० ओमकुमार आर्य
बौद्धिकाध्यक्ष आर्य वीर दल हरयाणा

वेदप्रचार की धूम

श्री मुन्शीराम बिश्नोल वेदप्रचार ट्रस्ट पानीपत के सहयोग मे स्वामी प्रेमानन्द आचार्य वैदिक सन्यासाश्रम गाजियाबाद की अध्यक्षता मे एक सप्ताह का वेदप्रचार तीन ग्रामों में किया। १८, १९, २० मार्च को साहिबाबाद दौलतपुर दिल्ली ८२ तथा २१, २२ मार्च को ग्राम डाबोदा मेंहदीपुर और २३, २४ को खाण्डा शेरो मे। ब्र० हंसराजार्य, प० आशानन्द भजनीक, महाशय आशाराम एव श्यामवीर, श्री रामचन्द्र तथा रामनारायण ढोलकवादक के अतिरिक्त आचार्य सत्यप्रिय मुनि जी भी इस वेदप्रचार में सम्मिलित रहे। विद्यार्थियों, माताओं, बहनो ने बड़ी सख्या में यज्ञोपवीत लिये, उन्हें पुस्तकें, योगासन चार्ट और महर्षि के चित्र बांटे। डाबोदा में कई भाइयों ने शराब, धूम्रपान आदि छोड़ा। रात्रि को मेजिक लालटेन और भजनोपदेशो का कार्यक्रम होता रहा और दिन में तीन तीन बार घरों में यज्ञ किये गये। डाबोदा और खांडा में बहुत भारी भीड़ रही और लोगों की श्रद्धा को देखकर मन गद्गद् हो उठा। कोई भी ऐसी माता बहन नहीं थी जो यज्ञ पर घी और मीठा न लाई हो। आश्चर्य हुआ जानकर कि दादा बस्तीराम के बाद इन ग्रामों में आर्यसमाज का प्रचार ही नहीं हुआ। डाबोदा में तो दस प्रतिशत घर हो ऐसे हैं जो शराब न पीते हो। आगे भी निरन्तर वेद प्रचार की मांग की गई। ये कार्यक्रम श्री महावीर हवलदार सुपुत्र श्री हरकेराम नम्बदार ने आयोजित किया।

ब्र० ओमस्वरूप
संचालक गुरुकुल डिकाडला (करनाल)

सर्वहितकारी के ग्राहकों से निवेदन

सर्वहितकारी का वार्षिक आर्थिक वर्ष १२ अप्रैल को समाप्त हो रहा है। जिन ग्राहक महानुभावों ने अपना शुल्क अभी तक नहीं भेजा है, वे १५) मनीआर्डर द्वारा भेजने की कृपा करें। व्यवस्थापक
सर्वहितकारी सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

आर्यसमाज चित्रगुप्त गंज लश्कर ग्वालियर का उत्सव

ग्वालियर। आर्यसमाज चित्रगुप्त गंज लश्कर का ५९ वां वार्षिक उत्सव दिनांक २२ से २४ मार्च बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। प्रथम दिन आर्यसमाज के स्थापना दिवस पर 'राष्ट्रीय एकता अखण्डता' में आर्यसमाज का योगदान विषय पर दूसरे दिन देश की स्वतन्त्रता में क्रान्तिकारियों का बलिदान तथा तीसरे दिन महर्षि दयानन्द और विश्व कल्याण विषय पर स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती दिल्ली, डा० श्री भवानीलाल भारतीय, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ तथा स्थानीय विद्वान् प्रो० श्री दिवाकर जी विद्यालंकार के ओजस्वी व प्रेरणादायक व्याख्यान हुए। भजनोपदेशक श्री विजयसिंह जी के विजय आकर्षक भजन हुए।

अन्तिम दिन २४ मार्च को श्रीमंत राजमाता विजयाराजेसिंधिया संसद सदस्या, ग्वालियर के मुख्य आतिथ्य में आर्यसमाज के दो प्रमुख नेता श्री बाबूलाल जी गुप्त (भू० पू० शिक्षा संचालक मध्य भारत) तथा समाज सेविका श्रीमती उमा बरनारिया प्रधाना आर्यसमाज चित्रगुप्त गंज लश्कर का आर्यसमाज की उल्लेखनीय सेवाओं को दृष्टिगत रखते हुए अभिनन्दन किया गया। साथ ही समाज के वयोवृद्ध व सेवा भावी श्री शीतलप्रसाद जी का भी सम्मान किया गया। स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती ने शाल देकर सम्मानित किया।

आर्यसमाज की प्रगति व कार्यक्रम का संचालन संस्था के मन्त्री श्री किशोरीलाल गौतम ने किया।

आर्यसमाज साबापुर का वार्षिकोत्सव

२९ से ३१ मार्च को बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ जिसमे निम्न लिखित विद्वानों ने भाग लिया जिसमें सर्वप्रथम स्वामी सदानन्द जी आचार्य वागेश जी वैदिक साधन आश्रम शादीपुर श्री गुरुदत्त मुनि जी पं० शेरसिंह जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा महाशय बृजलाल जी श्री घनश्याम प्रेमी। सभा को ३०१) वेदप्रचारार्थ प्राप्त हुए।

मन्त्री आर्यसमाज साबापुर जि० अम्बाला

दुर्भाग्य पूर्ण व्यक्तव्य

राधेश्याम आर्य एडवोकेट मुसाफिर खाना सुलतानपुर

पंजाब समस्या के समाधान करने की दिशा मे उचित कदम उठाते हुए केन्द्रीय सरकार ने अकाली नेताओं की रिहाई का शुभारम्भ कर दिया है और सर्वप्रथम अकाली दल के अध्यक्ष श्री हरचन्दसिंह लोंगोवाल को कारागार से मुक्त किया गया। श्री लोंगोवाल रिहा होने के उपरांत स्वर्णमन्दिर तथा पंजाब के दौरे पर निकले। भारत को जनता को विश्वास था कि श्री लोंगोवाल रिहा होने के बाद भारत की एकता, अखण्डता तथा परस्पर सौहार्द को सुदृढ बनाने का महान् कार्य करेंगे और सिखों को सही मार्ग दिखाकर उन्हें राष्ट्रीय धारा में समाहित करने का पुण्य प्राप्त करेंगे। लेकिन श्री लोंगोवाल के वक्तव्यों से सारी आशाओं पर पानी फिर गया है। उनकी भाषा में भिण्डरावाले की बाबा की गन्ध आ रही है, जो पंजाब समस्या के समाधान करने के सद् प्रयत्नों पर पानी फेर देगी। लोंगोवाल को चाहिए था कि जो कुछ हुआ उसे भूल जाने की सलाह दे सिख भाईयों को देते और स्वार्थ पूरक राजनीति से ऊपर उठकर महान् पुरुषों के आदर्शों के प्रति प्रतिबद्ध होने का आह्वान कर सही मार्गदर्शन करते।

अबोहर फाजिलका के क्षेत्र हरयाणा के अभिन्न अंग हैं

सरकारी उप-समिति को शिष्ट मण्डल का ज्ञापन

भटिण्डा, ११ अप्रैल। सरकार द्वारा गठित उपसमिति जो गत ८ अप्रैल को भटिण्डा में विभिन्न राजनैतिक दलों एवं अन्य सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों के विचार जानने के लिए आई थी, के समक्ष अबोहर व फाजिलका क्षेत्र के निवासियों के प्रतिनिधि मण्डल ने भी लिखित रूप में अपना पक्ष प्रस्तुत किया।

इस प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने किया। ज्ञापन का सारांश इस प्रकार है—

फाजिलका तहसील सन् १८८४ तक तत्कालीन जिला सिरसा का भाग थी बाद में जिला फिरोजपुर में मिला दी गई थी। उस समय सभी सरकारी रिकार्ड देवनागरी लिपि हिन्दी में रखा जाता था। राजस्थान से जुड़ा यह क्षेत्र रेतीला और गुनसान था। सरहिंद नगर से आने पर इस क्षेत्र में हरयाणा और राजस्थान के हिन्दी भाषी लोग आकर आबाद हो गए। इस प्रकार फाजिल्का तहसील का हिन्दी भाषी क्षेत्र भावनात्मक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं भाषाई रूप से हरयाणा का अभिन्न अंग हैं और हरयाणा के साथ मिलने के लिये उत्सुक हैं।

उनकी यह भावना किसी भी रूप में अराष्ट्रीय अथवा साम्प्रदायिक कदम नहीं है। उनके पूर्वजों के घर, रिश्तेदारियां आदि सब कुछ हरयाणा में हैं। यहां तक कि उनके रीति-रिवाज और त्योहार आदि भी हरयाणा जैसे हैं।

अबोहर फाजिलका क्षेत्र के विद्यार्थी ब्रिटिश काल से ही हिन्दी को प्रथम भाषा पढ़ते चले आ रहे थे तथा वह उनका माध्यम रही है किन्तु सन् १९६६ में पंजाब के अस्तित्व में आने पर उन्हें दसवीं कक्षा तक गुरुमुखी लिपि में लिखी पंजाबी भाषा पढ़ने के लिये मजबूर किया गया।

'सच्चर फार्मूला' के अनुसार तत्कालीन गृहमन्त्री स्वर्गीय पंत द्वारा एक कमेटी हिन्दी भाषी जोन के सीमांकन के लिए गठित की गई थी और जिसके हैड पंजाब के तत्कालीन मुख्यमन्त्री सरदार प्रतापसिंह कैरों थे। इस कमेटी में ज्ञानी करतारसिंह अकालियों के प्रतिनिधि थे। इस कमेटी की २४-१०-५६ को रेस्ट हाऊस दिल्ली में हुई बैठक में सर्व सम्मति से यह बात तय हो गई थी कि अबोहर फाजिलका का हिन्दी भाषी क्षेत्र तथा ११५ गांव हिंदी जोन में शामिल कर दिये जायेंगे। अकालियों ने भी अमृतसर में हरयाणा पंजाब के अलग अलग होने के बारे में सलाह मशविरा के लिए इकट्ठे हुये तो उन्होंने भी एक स्वर से इस बात को माना था कि फाजिलका तहसील के हिंदी भाषी क्षेत्र हरयाणा में शामिल कर दिये जाएंगे।

जब भारत सरकार ने पंजाब हरयाणा की सीमा निर्धारण के लिये शाह कमीशन बिठाया तो उसने पूरी खरड़ तहसील और चण्डीगढ़ को हरयाणा में शामिल कर दिया किन्तु केन्द्र सरकार ने चण्डीगढ़ को केन्द्र शासित प्रदेश बना दिया।

चण्डीगढ़ को पंजाब की राजधानी बनाने की जिद्द पर जब अमृतसर गुरुद्वारे में सन्त फतेहसिंह ने जल कर मरने की धमकी दी तो उनकी जान बचाने के लिए दो विश्वास पात्र व्यक्तियों ने हरयाणा के नेताओं से अपील की कि वे चण्डीगढ़ पंजाब को दे दें तथा उसके बदले में फाजिलका तहसील का हिन्दी भाषी क्षेत्र हरयाणा में मिला लें जैसा कि कमेटी २४-१०-५६ की मान गई थी।

इस प्रस्ताव पर चूंकि पंजाब तथा हरयाणा दोनों ही लीडर सहमत थे अतः स्व० प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने संसद के विपक्षी नेताओं से सलाह के बाद एक ऐवार्ड पैकेजडील के रूप में २९-१-७० को जारी कर दिया कि चण्डीगढ़ पंजाब में शामिल होगा तथा हिंदी भाषी अबोहर फाजिलका नगरों एवं ११५ गांवों समेत हरयाणा में शामिल कर दिए जायेंगे। तत्कालीन अकाली चीफ मिनिस्टर ने तब इस ऐवार्ड को स्वीकार कर लिया था तथा चण्डीगढ़ मिलने की खुशी में उन्होंने दिवाली मनाई थी।

पन्द्रह साल बीत जाने के बाद भी इस ऐवार्ड पर अमल नहीं किया गया। अनिश्चितता की इस लम्बी अवधि में दर्जनों बड़े प्रतिनिधि मण्डल तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से मिला तथा प्रार्थना की कि उक्त ऐवार्ड को लागू करते हुए अबोहर फाजिलका क्षेत्रों को हरयाणा में मिलाया जाय। वह इस विषय पर अस्पष्ट शब्दों में प्रतिनिधि मण्डलों को आश्वासन देती रही कि ये क्षेत्र हरयाणा में मिलाए जाएंगे।

हमारे युवा प्रधानमन्त्री एवं उनके सभी मन्त्रिमण्डलीय सहयोगी दिवंगत प्रधानमन्त्री को बहुत आदर तथा श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। सही अर्थों में यह उनके लिए एक शानदार श्रद्धांजलि होगी यदि उनके द्वारा २९ जनवरी १९७० को घोषित ऐवार्ड को तुरन्त लागू कर दिया जाए।

इन क्षेत्रों का हरयाणा में विलय इस क्षेत्र के निवासियों की निर्विवाद भावना एवं आकांक्षा का परिचायक है। अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक रिश्तों के प्रति गहरे लगाव का प्रतीक है। इस क्षेत्र के निवासी पंजाब सरकार के शोषण के शिकार रहे हैं। सरकार अब इस तरसील के चार लाख लोगों की भावनाओं का अनसुनी करती आ रही है और हम आशा करते हैं कि वह न्याय जो अब तक हमें मिला, उससे हमें हमेशा हमेशा के लिये वंचित नहीं कर दिया जायेगा।

यद्यपि भारतीय संविधान में अभिभावकों को अपने बच्चों को मातृभाषा में शिक्षा देने की गारंटी दी गई है किन्तु हमसे हमारा यह मौलिक अधिकार छीना गया है। इसलिये मजबूर होकर इस क्षेत्र के लोगों को अपने बच्चों को हिन्दी माध्यम से शिक्षा दिलाने के लिये हरयाणा तथा राजस्थान भेजना पड़ता है। इसके लिये क्षेत्र के सैकड़ों बच्चों को प्रतिदिन राजस्थान हरयाणा के हिंदी माध्यम स्कूलों में पैदल ही लम्बा रास्ता तय करके जाना पड़ता है।

इस क्षेत्र के शांति प्रिय एवं कानून व्यवस्था पालक लोग अपनी मांगे संवैधानिक तथा लोकतान्त्रिक ढंग से पेश कर रहे हैं यदि उनकी इन जायज और दीर्घ कालिन मांगों को २९ जनवरी १९७० के ऐवार्ड के अनुसार न माना गया, जो कि हरयाणा में विलय से सम्बद्ध है, तो उस दशा में इस क्षेत्र तथा हरयाणा वासियों पर इसकी तीव्र प्रतिक्रिया होगी।

पंजाब समस्या को हल करने के लिये अकालियों की अनुचित मांगों को मान लेने से हरयाणा में और अधिक समस्यायें तथा अशांति पैदा होगी। पंजाब समस्या का न्यायोचित एवं एकमात्र हल है कि पैकेज डील के तहत स्वर्गीय प्रधानमन्त्री का २९ जनवरी १९७० का एवार्ड लागू करते हुये अबोहर फाजिलका हरयाणा को तथा चण्डीगढ़ पंजाब को दिया जाये। यदि पंजाब समस्या के निदान के लिये कोई नया फार्मूला ग्रहण किया गया तो उससे नई उलझनें और कठिनाईयां पैदा होंगी।

इस ज्ञापन के अन्त में कहा गया कि अनिश्चितता और उपेक्षा की स्थिति जिसमें इस क्षेत्र के निवासी अकारण ही गत १५ वर्षों से जी रहे हैं, को खत्म करने के लिए हम प्रार्थना करते हैं कि यथासम्भव शीघ्र स्व० प्रधानमन्त्री का २९ जनवरी १९७० का ऐवार्ड लागू करने की तिथि की घोषणा की जाए।

(दैनिक भारत जननी से साभार)

वैदिक धर्म में आने का खुला निमंत्रण

रोहतक ८ अप्रैल ८५। आज यहां एक प्रेस कान्फ्रेन्स में महाशय भरतसिंह ने बताया कि आए दिन समाचार पत्रों में केन्द्रीय मन्त्री श्री बूटासिंह के विरुद्ध अकालियों के वक्तव्य पढ़कर देश प्रेमी जनता को दुःख हो रहा है। दलित वर्ग में जन्में एक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय नेता के विरुद्ध विष वमन करके अकाली अपनी धूमिल छवी को और अधिक बिगाड़ रहे हैं। हुक्मनामे जारी करने वाले ग्रन्थी उग्रवादियों के दबाव में आकर नित्य नये हुक्मनामे जारी करके एक धर्म स्थान को अपवित्र बना रहे हैं। गुरुद्वारा कमेटी के वेतन भोगी इन मुख्य ग्रंथियों ने आज तक निहत्थे निर्दोष हिन्दुओं की हत्या की निन्दा के लिए हुक्मनामा नहीं निकाला। स्वर्ण मन्दिर में भिण्डरवाला ने हत्यायें करवाई तब अपनी नाक के नीचे होने वाले इन कुकर्मों की मुख्यग्रंथियों ने निन्दा नहीं की। स्त्रियों से बलात्कार के विरुद्ध हुक्नामा नहीं निकाला। तब हुक्मनामे के लिए कागज पेन इन्हें न मिला।

इन्होंने आज तक किसी व्याभिचारी किसी चोर बाजारी करने वाले, किसी तस्कर, किसी रिश्वतखोर के विरुद्ध किसी देश द्रोही, किसी शराबी के विरोध में कभी हुक्मनामा जारी नहीं किया। अब श्री बूटासिंह के विरुद्ध हुक्मनामा जारी करके दलित वर्ग व देश प्रेमी जनता की भावना को गहरी ठेस पहुचाने वाले मुख्य ग्रन्थियों ने बहुत निन्दनीय कर्म किया है।

जहां तक श्री बूटासिंह को सिख पन्थ से खारिज करने की बात है–हम इसके विषय में और क्या कहे? आयसमाज के एक सेवक के नाते मैं तो यही कहूंगा कि हम हर घड़ी श्री बूटासिंह जैसे व्यक्ति के स्वागत के लिये तैयार हैं। हम आर्यसमाजी एक ओ३म्कार को ही मानते हैं। परमात्मा की वाणी वेद को मानने वाला, सत्य कर्म करने वाला, पाप रहित जीवन बिताने वाला, दीन दुःखी की सेवा करने वाला प्रत्येक व्यक्ति प्रभु को प्यारा है। बूटासिंह जी का हम सम्मान करते हैं। अकालियों की नित्य नई झाड़ खाने वाले ज्ञानी जैलसिंह जैसे सब सज्जनों को हम वैदिकधर्मी स्वीकार करते हैं। वे आएं हम उनका स्वागत करते हैं। वे हमारे हैं, हम उनके हैं।

म० भरतसिंह वानप्रस्थ
संयोजक हरयाणा रक्षा वाहिनी

सर्वश्रेष्ठ व्यायाम योग के आसन

लेखक—ब्र० रामवीर शास्त्री 'योग शिक्षक'
प्रकाशक—हरयाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल झज्जर
आकार—२३×३६/१६ पृष्ठ संख्या २२६
आर्ट पेपर पर छपी सचित्र सजिल्द पुस्तक का मूल्य ४० रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक में ६६ चित्रों के साथ विभिन्न आसनों के करने की विधि और लाभ बतलाये गये हैं। प्रारम्भ में स्वामी ओमानन्द जी महाराज की विस्तृत भूमिका के अतिरिक्त योगासनों का महत्त्व, योगासनों का रहस्य, व्यायाम और योगासन का तुलनात्मक अध्ययन, योगासन सम्बन्धी कुछ महत्त्वपूर्ण नियम और जानकारी के सम्बन्ध में अच्छा प्रकाश डाला गया है।

पुस्तक के अन्त में योगासनों द्वारा विविध रोगों की चिकित्सा के सम्बन्ध में बतलाया गया है कि किस रोग में कौनसा आसन विशेष लाभदायक है तथा शरीर शुद्धि के लिये हठयोग के षट्कर्म (१ नेति, २ धौति, ३ बस्ति, ४ नौलि, ५ त्राटक और ६ कपालभाति) का भी उल्लेख किया गया है।

—वेदव्रत शास्त्री

प्रतिभावान छात्रों के लिये सुअवसर

२०० रु० मासिक छात्रवृत्ति प्राप्त करें

गुरुकुल सिंहपुरा–रोहतक में महर्षि दयानन्द के मन्तव्यानुसार आर्ष–पाठ–विधि से अध्ययन करने के इच्छुक छात्रों के लिये विशेष व्यवस्था की गई है। अध्ययनरत १० छात्रों को २०० रुपये प्रतिमास छात्रवृत्ति दी जावेगी। प्रवेश के लिये न्यूनतम १०वीं कक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है। छात्रों के लिये महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की शास्त्री विभाग की विशारद, शास्त्री एवं आचार्य परीक्षाएं देने की भी व्यवस्था रहेगी। छात्रों को वैदिक कर्मकाण्ड तथा आर्य सिद्धान्तों का मर्मज्ञ बनाया जायेगा तथा वक्तृत्व कला एवं लेखन की विशेष शिक्षा दी जावेगी। गुरुकुल के अनुशासन एवं आचार संहिता का पालन करना छात्रों के लिये अनिवार्य होगा। वैदिक सिद्धान्तों पर निष्ठावान् एवं वैराग्यवान् छात्रों को प्राथमिकता दी जावेगी। छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है। छात्रवृत्ति के इच्छुक छात्रों का आवेदन–पत्र १० जून तक आना अनिवार्य है :

आचार्य द्विजराज
संस्कृत महाविद्यालय
गुरुकुल सिंहपुरा–सुन्दरपुर जिला रोहतक

आर्य कन्या विद्यालय शिक्षा मार्ग भिवानी

प्रवेश सूचना

रत्न एवं प्रभाकर का (केवल कन्याओं के लिए) प्रथम जुलाई १९८५ से प्रवेश प्रारम्भ है। योग्य व अनुभवी अध्यापिकाओं की व्यवस्था है। इच्छुक छात्राएं सम्पर्क करें।

फूलचन्द्र शर्मा निडर
आर्य कन्या विद्यालय भिवानी

आर्यसमाजों के आगामी वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज नगर सोनीपत	२६ से २८ अप्रैल
„ तावडू जिला गुड़गांव	२६ से २८ „
„ खेल बाजार पानीपत जि० करनाल	३ से ५ मई
„ मालकोश जि० भिवानी	३ से ५ „
„ झज्जर रोड रोहतक	६ से १२ „
„ लोहारू जिला भिवानी	११ १२ „
„ चबूतरों „ अम्बाला	१० से १२ „
„ मन्दोला „ भिवानी	१८ से २० „
„ किशनपुरा माजरा जिला अम्बाला	१७ से १९ „
आर्य कुमार सभा रादौर जिला कुरुक्षेत्र	२५, २६ „
आर्यवीर दल रोहतक	२४ से २६ „
आर्यसमाज खारवन जिला अम्बाला	२४ से २६ „
„ सेवासदन बल्लबगढ़ जि० फरीदाबाद	२७ मई से ३ जून
„ बेगा जि० सोनीपत	२८ से ३० जून

जो आर्यसमाजें अपने उत्सव रखना चाहते हैं, वे शीघ्र तिथियां नियत करके सभा को सूचित करें, ताकि समय पर सभा की ओर से उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों का प्रबन्ध किया जाये।

सभा मन्त्री

भोपाल गैस पीड़ित सहायता के लिए दान

आर्यसमाज काकड़ा जिला अम्बाला	२०१)
(गतांक में भूलवश १०१) प्रकाशित हो गया)	
आर्यसमाज सिरसा	१००)
(१४ मार्च के अंक में भूलवश १०) प्रकाशित हो गया)	
श्री सत्यनारायण गुप्त तोशाम जि० भिवानी	२१)

सभा कोषाध्यक्ष

सारा राष्ट्र रक्षक वीर हरयाणा का सम्मान करे

मास्टर निहालसिंह आर्य

(गतांक से आगे)

४—धर्मराज हरयाणा सम्राट् हर्षवर्धन ने ६६८ वि० में उत्तरी भारत के ६० राजाओं को हरयाणा के ही पंचायती मल्लों द्वारा जोत कर नर्मदा तक एक छत्र संघ राज्य करके सारे भूगोल में भारत की कीर्ति प्रसारित की थी और सर्वखाप पंचायत बनाई था।

५-स० १२४८ वि० में दिल्ली सम्राट् पृथ्वीराज चौहाण की सहायता से हरयाणा के २० हजार पंचायती मल्लों ने मोहम्मद गौरी को पानीपत के नावडी मैदान में हराया था परन्तु १२४९ में कई चौहाण सरदारों के देशद्रोह और पृथ्वीराज की विलासिता, फूट से भारत दास हुआ।

६-सन् १२९८ ई० में अलाऊद्दीन खिलजी की प्रार्थना पर सर्वखाप पंचायत हरयाणा के ७५ हजार मल्लों ने पानीपत और सरहिन्द के स्थान पर सेनापति बोहरणराय के नतृत्व में एक लाख चगेजी मुगल सेना को स्वदेश से मार भगाया था।

७-संवत् १४५५ वि० (सन् १३९८ ई०) में हत्यारे आक्रान्ता समरकन्द के शासक तेमूर लंग की ढाई लाख सेना से हरयाणा के ८० हजार मल्लों ने दिल्ली, मेरठ, तुगलकपुर और पथरीगढ (हरद्वार) के युद्धों में शत्रु को एक लाख साठ हजार सेना मारकर अम्बाला से परे दूर तक भगा दिया था। पंचायती मल्ल ३५ हजार बलिदान हुये थे।

८-१७३९ ई० में नादिरशाह के विरोध में हरयाणा के २५ हजार मल्ल लड़े और ८ हजार बलिदान हुए।

९-सन् १७६१ में पानीपत में अब्दाली के विरुद्ध सदा शिवराव भाऊ को सहायता में सौरम के चौधरी श्योलाल की सेना में हरयाणा के बीस हजार मल्ल और दो हजार घुडसवार लडे और चार हजार बलिदान हुए।

१०-१८५७ के स्वाधीनता संग्राम में दिल्ली के चारों ओर सारे हरयाणा में अंग्रेजी सेना से घोर युद्ध किया और बादशाह बहादुरशाह की प्रार्थना पर ९ जुलाई १८५७ को हरयाणा पंचायत ने १५६५१ मल्ल सैनिकों को दिल्ली में उत्तम दावत देकर पूरे चार मास तक हर सहायता दी थी। हरयाणा में बहुत अंग्रेज मारे थे और जून मास में उनसे गहटे हंकवाए थे पश्चात् फूट के कारण हार हुई। अंग्रेजों ने सारे भारत में बहुत अत्याचार किए और हरयाणा का खण्डन करके पांच वर्ष तक जमना पार जाना आना, रिश्ते बन्द करके हरयाणा को शिक्षा, सिंचाई तथा नौकरी में पिछड़ा रखा।

हरयाणा भारत का आन्तरिक रक्षक—

राष्ट्रीय प्रदेश गणतन्त्रीय पंचायती हरयाणा ने बाह्य आक्रांताओं से तो सारे भारत की रक्षा की ही है परन्तु भारत के आन्तरिक कलह, झगड़ों, विवादों में भी विशेष राष्ट्रीय भूमिका निभाई है।

१—सन् १४१९ में हिन्दू राज्य विजयनगर के राजा देवराय द्वितीय की प्रार्थना पर हरयाणा पचायत ने ६ महाबली मल्ल वहां भेजे जिन्होंने झपट्टा मार लड़ाई सिखाकर पांच बहमनी राज्यों से विजय नगर की रक्षा की थी यह १०० मंडलों का राज्य सन् १३३५ से १५६५ ई० तक रहा। यह विजयनगर में ईरानी राजदूत अब्दुलरजाक के मुन्शी हसन अब्बास का लेख बताता है।

२—सं० १५८० वि० के पास रीवां के राजा वारसिंह बघेले की प्रार्थना पर हरयाणा पंचायत ने शिष्येनी के योद्धाढमलचन्द ढलेते के साथ १९ मल्ल भेजे जिन्होंने अपने सैन्य प्रशिक्षण से उस राज्य को निष्कटक बनाया और भक्त कवि कबीर का मृतक शवाधिकार में खिरनी का नवाब भगाया।

३—सन् १५१०-१५२९ ई० में विजयनगर के राजा कृष्णदेव की सहायता में हरयाणा का मल्ल योद्धा धवरपाल ने विजयनगर की सैन्य शक्ति को प्रबल बना दिया तत्कालीन अभिलेख में 'उत्तरी भारत का दिल दादा हरयाणा' लिखा है।

सन् १६५७ में शामगढ (निकट आगरा) में शाहजहां और औरंगजेब के मध्य हुए युद्ध में हरयाणा पंचायत के मल्लों ने शाहजहां को सहायता की थी। सत्ता प्राप्ति पर औरंगजेब ने दावत के बहाने म हरयाणा के २१ नेताओं को १६७० में दिल्ली में कत्ल कराया था।

५—सर्वविदित है रोहतक की नं० ६ जाट रेजिमेंट ने १९१८ ई० में जर्मनी के विरुद्ध युद्ध में नहर स्वेज का मोरचा जीतकर अंग्रेजों को जीताया था।

६—दूसरे विश्वयुद्ध में ब्रह्मा में नेता सुभाष की आजाद हिन्द सेना में हरयाणा के ४० हजार सैनिक अगवा लड़े थे और देश स्वतन्त्र हुआ।

७—स्वतन्त्रता प्राप्ति पश्चात् सन् १९६५ में डोगराई मोर्चे पर हरयाणा की जाट रेजिमेंट ने और १९७१ ई० में पाकिस्तान से युद्ध में हरयाणा वीरों के जोत सम्मान में स्थल सेनापति कुमार मगलम ने रोहतक आकर धन्यवाद बधाई दो थी और १९६२ में चीन से युद्ध में भी ग्राम मांखोल (रोहतक) के वीर ब्रिगेडियर होशयारसिंह देश पर लड़ते लड़ते बलिदान हुए थे।

हरयाणा को पुनः पंजाब में मिलाना महाअन्याय

अंग्रेजों ने इस प्रान्त को विशेषकर इसे हर प्रकार से पिछड़ा निर्बल बनाया था। स्वतन्त्रता के पश्चात् भी १९६६ ई० तक पंजाब के नेताओं ने हरयाणा को बिजली, सिचाई, सड़को, उद्योग, विकास की दृष्टि से वंचित ही रखा। नौकरी में भी ऊंचे पदों पर पंजाब के अधिक अधिकारी थे। सारा धन जालन्धर डिवीजन में ही लगाया गया। १९५६ में हरयाणा मे पजाबी भाषा लादी गई अतः हिन्दी आन्दोलन चलाना पडा। पंजाब से अलग होकर ही हरयाणा में चहुमुख उन्नति हो सकी है। अतः हरयाणा को अलग रहने देना ही राष्ट्रीय रक्षा है। क्योंकि हरयाणा ने तिरंगे झण्डे, विधान जलाने का कभी भी राष्ट्रीय अपमान नहीं किया।

अखण्ड सबल भारत के लिए विशाल हरयाणा बनाओ—

उपरोक्त सत्य विवरण को देखते हुए स्वर्गधाम वीर सैनिक हरयाणा का सारे भारत को मिलकर सम्मान करके पुनः दिल्ली के चारो ओर विशाल हरयाणा बनाना चाहिए।

जो जोव है रहता पास तेरे—
चक्कर से निकल वह जाता है

चिरंजीलाल 'जीव' बराडा जि० अम्बाला

आश्चर्यजनक इस सृष्टि का भगवान् तू हो निर्माता है।
चोला जीवों को तरह तरह का देकर खेल खिलाता है॥
यह आवागमन का चक्कर है यहां आता जाता रहता है।
जो आता है वह जाता है जो जाता है वह आता है॥
कर्मों के मुताबिक ही चोला जीवों का बदलता रहता है।
पशु पक्षी का दे जन्म किसी को तू इन्सान बनाता है॥
तू ने रखा है बांध प्रभु! इस चक्कर मे सब जीवों को।
नहीं आदि इसका नहीं अन्त इसका चक्कर मे इसे चलाता है॥
इस चक्कर मे हो जाव सदा चक्कर खाते रहते हैं पड़े।
जो 'जोव' है रहता पास तेरे चक्कर से निकल वह जाता है॥

शोक समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक प० कुलवन्तराय आर्य के छोटे भ्राता श्री जसराम ग्राम निमड़ी जिला भिवानी का लगभग ६८ वर्ष की आयु में २८ मार्च को स्वर्गवास होगया। आप सभा के प्रतिनिधि भी थे और आर्यसमाज के प्रचार कार्यों में सदा योगदान करते थे।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें। सभा मन्त्री

आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

सभा की अन्तरग सभा के निश्चयानुसार सभा का वार्षिक अधिवेशन (चुनाव) १९ मई १९८५ को होगा। सभा से सम्बन्धित आर्य समाजो के अधिकारियों से निवेदन है कि जिन आर्यसमाजों ने अभी तक प्राप्तव्य वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क सभा को नहीं भेजा है, वे राशि ३० अप्रैल तक सभा को भेजने की कृपा करें, ताकि उन्हें यथासमय अधिवेशन का ऐजण्डा आदि भेजा जा सके। जो आर्यसमाजें सभा के साथ २ वर्ष से अधिक समय से सम्बन्धित हैं और उन्होने गत वर्ष सभा को प्रतिनिधि फार्म किसी कारणवश नहीं भेजे थे, वे भी तुरन्त सभा को पत्र लिखकर प्रतिनिधि फार्म मगवाकर प्राप्तव्य वेदप्रचारादि की राशि ३० अप्रैल तक सभा को फार्म भेजकर अपने प्रतिनिधि भेजकर सभा के संगठन को सुदृढ करने में योगदान करें।

रणजीतसिंह सभा मन्त्री

(पृष्ठ २ का शेष)

चिकित्सा हमारे देश में प्रचलित थी और है भी। अर्थात् जिस प्रकार घृत को पिलाने से शरीर निर्विष हो जाता है उसी प्रकार पर्यावरण के प्रदूषणों के शमनार्थ वायुमण्डल को घृताहुति के धूम्र से पूर्ण कर देने से आश्चर्यजनक लाभ अवश्य होगा। पर्यावरण जीवनप्रद बनेगा। अतः यज्ञ परम आवश्यक है। यज्ञान्त के मन्त्र में-सर्वान्नि: कामान्त्समर्धय शब्द है। अर्थात् यज्ञों से सब कामनाओं की पूर्ति होती है। यही कामना पूर्ति का भाव यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु मन्त्र में है। उससे भी आहुति यज्ञान्त में होती है। अतः यज्ञ सब कार्यों को सफलता का प्रबल साधन है। ऐसा सुनिश्चित विचार सबने ग्रहण कर यज्ञानुष्ठान करने मे अग्रसर होना चाहिए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १९,७२९४०८६



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

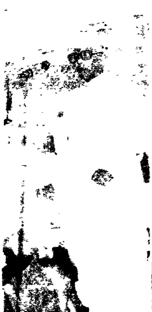
प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १२ अङ्क २० २१ अप्रैल १९८५ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

अकाली आन्दोलन का राजनीतिक हल सम्भव नहीं

प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं हरयाणा रक्षा वाहिनी

पंजाब—बैसाखी—जलियावाला बाग, इन तीन शब्दों के साथ हर स्वतन्त्रता सेनानी के मन में हजारों स्मृतियां कौंध जाती हैं। यह वह जमाना था कि जब हमारे अकाली भाई समूचे राष्ट्र के साथ एक रूप होकर अंग्रेज से लोहा लेने के लिए कन्धे से कन्धा मिलाकर लड़ते थे। सन् १९१९ में बैसाखी के पुनीत पर्व पर रोलट एक्ट का विरोध करते हुए जलियावाला बाग में सब देशवासियों का खून एक साथ बहा था। तब महात्मा गांधी ने कहा था कि इस खून में से कोई पहचान करके नहीं बता सकता कि कौन सा खून हिन्दू का है, कौन सा मुसलमान का, कौन सा सिख ईसाई का है। शायद गांधी जी की इस गर्वोक्ति को झूठा साबित करने का साजिश मन्सूबा अंग्रेज ने उस समय बना लिया था। समय की विडम्बना



प्रो० शेरसिंह

देखिये कि जलियावाला बाग का वही अमृतसर भारत के विभाजन के बाद भारत का सीमान्त नगर बना, जिस पर बदनसीबी यह कि आज भारत को पुनः खण्डित करने के लिये उग्रवादी गतिविधियों का केन्द्र भी अमृतसर ही बना हुआ है। अकालियों की यह देशभक्ति केवल अतीत का इतिहास बनकर रह गई है। आज तो अकाली सिखों को "अलग कौम" बताकर जिन्हा की भाषा बोल रहा है तथा भारत के संविधान को जला रहा है। आज अकाली दल पर कब्जा हो चुका है आतंकवादी खालिस्तानियों का। इसलिए तथाकथित उग्रवादी लोंगोवाल भी आज इन्दिरा के हत्यारे बेअन्तसिंह को ऊधमसिंह की पंक्ति में खड़ा करना चाहता है और खुलकर वही भाषा बोल रहा है जो उग्रवादी बोल रहे हैं तथा भिंडरवाले के नारे लगवा रहा है।

पंजाब की भावुक सिख जनता को डराने के लिये अकाली अपने हर आन्दोलन में दुहाई देते हैं सिख और पंजाब के साथ भेदभाव की। यह सच्चाई आज किसी से छिपी हुई नहीं कि पंजाब भारत का सबसे अधिक समृद्ध प्रदेश है और सिख सबसे अधिक समृद्ध समुदाय। अपनी संख्या के मुकाबले दस गुना तक प्राप्त करके तथा अपने पड़ोसी प्रदेशों का पानी बिजली और इलाका दबाकर भी जो "हाय लुट गया" का शोर मचाये उसको तसल्ली कौन कर सकता है? हिमाचल के निर्मल जल से छलछलाती नदियां स्वच्छ नीले आकाश के नीचे सैकड़ों मीलों तक लहलाते हरियाले खेत, उपजाऊ धरती के सजीले छबीले बेटे कुशल कृषक और उद्यमी कारीगर हर घर के ऊपर खड़े टी० वी० एन्टीनाओं के जंगल सब मिलाकर पंजाब और उसमें बसने वाले सिख और हिन्दू की समृद्धि का उद्घोष कर रहे हैं। यहां के लाखों हिन्दू और सिख देश के विभिन्न भागों में खेती करते हैं, व्यापार और कारखाने चला रहे हैं तथा संसार के कोने कोने में बसकर अरबों रुपया कमा रहे हैं। इस प्रदेश में भूख न बेरोजगारी। इस प्रदेश में तो गरीब प्रदेशों के लाखों लोग अपना पेट भरने के लिए मजदूरी करने आते हैं और किसान का कोटा तथा सरकार के गोदाम भर जाते हैं, कुछ यहां के खाते पीते लोगों की सेवा के लिये बस भी गये हैं।

एक समस्या विहीन प्रदेश को राजनीतिक अखाड़ेबाजी किस तरह विनाश के कगार पर खड़ा कर देती है, पंजाब इसका जीवित उदाहरण है। अपने स्वर्णिम वैभव के बावजूद आज पंजाब प्यासा है, बेहद प्यासा। सुखमय शान्तिमय जीवन के लिए यह प्रदेश आज तरस रहा है। अकाली तो अपने अपने बोलबाले को सिखों के बोलबाले की संज्ञा देकर आन्दोलन चलाते ही रहे और सौदा करने में सफल होते रहे हैं, परन्तु इस बार का आन्दोलन तो राजनीतिक दलों के गलत रवैये के कारण ऐसा भूत बनकर खड़ा हो गया है कि वह देश को ही कहीं पाश-पाश कर डाले। यह सब करतूत हैं सिद्धांतहीन राजनीति की।

राजनीतिक दलों की भूमिका

पंजाब के कांग्रेसी नेताओं ने जनता से सीधा सम्पर्क साधकर तथा उनकी सेवा के द्वारा उनका समर्थन प्राप्त करने का रास्ता नहीं अपनाया। विवादों का समाधान होने पर भी वे उलझाकर उसके द्वारा राजनीतिक लाभ लेने की नीति ही अपनाते रहे। अकालियों को मात देने के लिये उन्होंने उनसे भी बढ़कर नारे लगाये तथा प्रतिवादियों को सहारा देकर अकालियों से भिड़ाने के लिए उकसाया। कांग्रेस जनों के इस रवैये से अकाली अपना बोलबाला कायम रखने के लिए नई से नई मांगें उठाने के लिए उत्प्रेरित होते रहे। जनवरी १९७० का इन्दिरा जी का फैसला इसकी ताजा मिसाल है। जब जब अकाली कमजोर पड़े जनता का पूरा समर्थन नहीं ले पाये तब तब शान्ति खरीदने के नाम पर उनसे सौदे किये गये उनको सरकार में साझीदार बनाया गया। उनका दोबार कांग्रेस में विलय भी। परन्तु सिखों के 'बोलबाले' के नाम पर उनके आंदोलन चलाते रहे। इस आन्दोलन में भी बिचौलिये अपनी भूमिका निभाते रहे। सरकार की तरफ से स्वर्णमन्दिर में दाखिल न होने के विश्वास दिलाये जाते रहे उन्हीं बिचौलियों के कहने पर।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

नारी संसार

गृहस्थ आश्रम के लक्षण

सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम् ॥

जिस कुल में भार्या से भर्त्ता और पति से पत्नी अच्छे प्रकार प्रसन्न रहती है उसी कुल में सब सौभाग्य और ऐश्वर्य निवास करते हैं। जहां कलह होता है वहां दौर्भाग्य और दारिद्रय स्थिर होता है। जो स्त्री पति से प्रीति और पति को प्रसन्न नहीं करती तो पति के अप्रसन्न होने से काम उत्पन्न नहीं होता। जिस स्त्री की प्रसन्नता में सब कुल प्रसन्न होता उसकी अप्रसन्नता में सब अप्रसन्न अर्थात् दुःखदायक हो जाता है।

धर्म कुछ भी न करे परन्तु धर्म के नाम से लोगों को ठगे सर्वदा लोभ से युक्त, कपटी, अहंकारी मनुष्यों के सामने अपनी बड़ाई के गपोड़े मारा करे प्राणियों घातक, अन्य से वैर बुद्धि रखने वाला, सब अच्छे और बुरों से भी मेल रखे उसको वैडाल-व्रतिक अर्थात् बिडाल के समान धूर्त और नीच समझो। कीर्ति के लिये नीचे दृष्टि रखे, ईर्ष्यक किसी ने उसका पैसा भर अपराध किया हो तो उसका बदला प्राण तक लेने को तत्पर रहे, चाहे कपट अधर्म विश्वासघात क्यों न हो अपना प्रयोजन साधने में चतुर, चाहे अपनी बात झूठा क्यों न हो परन्तु हठ कभी न छोड़े बगुले के समान नीच समझो। ऐसे ऐसे लक्षणों वाले पाखण्डी होते हैं, उनका विश्वास वा सेवा कभी न करे।

सदा उपकारी, कोमल स्वभाव, जितेन्द्रिय, हिंसक क्रूर दुष्टाचारी पुरुषों से पृथक् रहनहारा, धर्मात्मा, मन का जीत और विद्यादि दान से सुख को प्राप्त होवे। परन्तु यह भी ध्यान में रखे जिस वाणी में सब अर्थ अर्थात् व्यवहार निश्चित होते हैं वह वाणी ही उनका मूल और वाणी ही से सब व्यवहार सिद्ध होते हैं उस वाणी को जो चोरता अर्थात् मिथ्याभाषण करता है वह सब चोरी आदि पापों का करने वाला है। इसलिये मिथ्याभाषणादि रूप अधर्म को छोड़ जो धर्माचार अर्थात् ब्रह्मचर्य जितेन्द्रियता से पूर्ण आयु और धर्माचार से उत्तम प्रजा तथा अक्षय धन को प्राप्त होता है तथा जो धर्माचार में वर्त्तकर दुष्ट लक्षणों का नाश करता है उसके आचरण को सदा किया करे।

जैसे नदी और बडे बड़े नद तब तक भ्रमते ही रहते हैं जब तक समुद्र को प्राप्त नहीं होते, वैसे गृहस्थ ही के आश्रय से सब आश्रम स्थिर रहते हैं। (जैसे वायु के आश्रय सब प्राणी हैं वैसे गृहस्थाश्रम सब आश्रमों का आश्रय है) बिना इस आश्रम के किसी आश्रम का कोई व्यवहार सिद्ध नहीं होता। जिससे ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और और सन्यासी तीन आश्रमों को दान और अन्नादि देके प्रतिदिन गृहस्थ ही धारण करता है इससे गृहस्थ ज्येष्ठाश्रम है, अर्थात् सब व्यवहारों में धुरन्धर कहाता है। इसलिये जो मोक्ष और संसार के सुख की इच्छा करता हो वह प्रयत्न से गृहाश्रम का धारण करे, जो गृहाश्रम दुर्बलेन्द्रिय अर्थात् भीरु और निर्बल पुरुषों से धारण करने अयोग्य है उसको अच्छे प्रकार धारण करे। इसलिये जितना कुछ व्यवहार संसार में है उसका आधार गृहाश्रम है। जो यह गृहाश्रम न होता तो सन्तानोत्पत्ति के न होने से ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यासाश्रम कहां से हो सकते। जो कोई गृहाश्रम की निन्दा करता है वही निन्दनीय है और जो प्रशंसा करता है वही प्रशंसनीय है। परन्तु सभी तभी गृहाश्रम में सुखी होता है जब स्त्री और पुरुष दोनों परस्पर प्रसन्न विद्वान्, पुरुषार्थी और सब प्रकार के व्यवहारों के ज्ञाता हों। इसलिये गृहाश्रम के सुख का मुख्य कारण ब्रह्मचर्य और पूर्वोक्त स्वयंवर विवाह है।

(सत्यार्थप्रकाश से)
संग्रहकर्त्ता पुष्करलाल आर्य
संरक्षक वैदिक प्रचार समिति १८२, लोयड्स रोड, मद्रास-८६

कैथल में वेदप्रचार

स्त्री आर्यसमाज क्योडक गेट कैथल का वार्षिक यजुर्वेद पारायण यज्ञ १२ से २२ मार्च तक बडे उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से आचार्य ओमप्रकाश सिद्धान्त शिरोमणि ने यज्ञ को सम्पन्न कराया। श्रीमती राजबाला आर्या के सुमधुर गीतों की भी धूम रही। अनेक सम्भ्रान्त परिवारों ने यजमान बनकर इस पुण्य अवसर से लाभ उठाया।

नगर की तीनों समाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने परस्पर बड़े सहयोग का परिचय दिया। पं० विद्याभूषण जी भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भी उत्सव सम्पन्न कराने में सुन्दर सहयोग रहा। इस प्रकार के आयोजकों को और अधिक विस्तार देने की आवश्यकता पर बल दिया गया। इस समायोजन का नगर के वातावरण में सुन्दर प्रभाव रहा। हम आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सहयोग के लिए उसके आभारी हैं। मन्त्राणी

स्त्री आर्यसमाज क्योडक गेट कैथल जिला कुरुक्षेत्र

फ्रांसीसी युवति की शुद्धि एवं विवाह

आर्यसमाज अजमेर द्वारा ३० वर्षीया फ्रांसीसी तथा हाल में पुष्कर प्रवास पर आई हुई मिस ब्रिजीत क्नाजी द्वारा स्वेच्छा से प्रार्थना करने पर शुद्धि कर उसे वैदिक(हिन्दू) धर्म में दीक्षित किया गया। उसने स्वयं बताया कि वह भारतीय वैदिक धर्म के आदर्शों से अत्यन्त प्रभावित हुई है। शुद्धि के पश्चात् उसका नाम कु० बीना रखा गया।

शुद्धि के पश्चात् उसकी प्रार्थना तथा पारस्परिक सहमति के आधार पर पुष्कर के लोटस होटल में सेवारत श्री भगवान्दास बाथम के साथ वैदिक रीति से पाणिग्रहण (विवाह) संस्कार भी आर्यसमाज मन्दिर में सम्पन्न हुआ हुआ। शुद्धि एवं विवाह संस्कार श्री आचार्य गोविन्दसिंह जी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्यसमाज के मन्त्री श्री रासासिंह ने आशीर्वाद देते हुये फ्रांसीसी युवति का वैदिक धर्म में दीक्षित होने पर स्वागत करते हुए महर्षि दयानन्द एवं वैदिक धर्म पर अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित साहित्य भेंट किया गया। रासासिंह

मन्त्री आर्यसमाज अजमेर

अकाली अब तनाव बढ़ाने वाले भाषण न दें—आर्य

सोनीपत २४ अप्रैल (स.) आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक पं० चन्द्रसेन आर्य ने पंजाब के रिहा अकाली नेताओं पर आरोप लगाया है कि वह एक बार फिर उग्रवादियों का साथ देकर पंजाब में अशांति फैला रहे हैं तथा एक बार फिर वहां के हिन्दुओं में असुरक्षा की भावना पैदा कर रहे हैं। उन्होंने प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से अपील की है कि वह पंजाब की समस्या को जल्दी से जल्दी हल करें तथा १९७० का इन्दिरा गांधी ऐवार्ड लागू करें और उग्रवादियों को सख्ती से दबा दें ताकि वह खालिस्तान का नारा लगाना भूल जाएं। (पंजाब केसरी से साभार)

आर्य कन्या विद्यालय शिक्षा मार्ग भिवानी

प्रवेश सूचना

रत्न एवं प्रभाकर का (केवल कन्याओं के लिए) प्रथम जुलाई १९८५ से प्रवेश आरम्भ है। योग्य व अनुभवी अध्यापिकाओं की व्यवस्था है। इच्छुक छात्राएं सम्पर्क करें।

फूलचन्द्र शर्मा निडर
प्रबन्धक आर्य कन्या विद्यालय भिवानी

सम्पादकीयः-

हरयाणा में शराबबन्दी आन्दोलन के बढते कदम

बालावास के बाद अब नाहरी में धरना

पिछले वर्ष ५ महीने से अधिक ग्राम बालावास जिला हिसार में धरना और सत्याग्रह चला और शराब का ठेका सरकार और ठेकेदार को एक बून्द शराब बेचे बिना ही उठाना पडा। जो आन्दोलन ८ अप्रैल १९८४ को कुरुक्षेत्र मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग ने चलाने का निश्चय किया था। वह बालावास मे सफल हुआ। सभा ने सभी पंचायतों को आह्वान किया था कि व अक्तूबर तक शराब के ठेके न खोलने और जहां चल रहे हैं वहा बन्द करने के लिए अपने प्रस्ताव सरकार के पास भेजें। बहुत से ग्रामो की ओर से ऐसे पिछले वर्ष सरकार और आबकारी विभाग के पास गये। नाहरी जिला सोनीपत को पंचायत ने समय से पहले ही अपना प्रस्ताव भेज दिया था। श्री होशयारसिह जी तथा श्री कंवलसिह जी आदि के प्रयास से यह काम सम्पन्न हुआ। प्रस्ताव के समय पर पहुँचने के बाद भी हरयाणा सरकार ने नाहरी ग्राम में इस बार भी ठेका निलाम कर दिया। इसके विरोध में गांवों के लोगो मे बड़ा रोष फैला। चुनाचे १ अप्रैल से नाहरी और पडोस में ३ ग्रामों के लोगों ने ठेके के सामने धरना शुरू कर दिया और अदालत मे केस दायर कर दिया।

धरना और सत्याग्रह जो १ अप्रैल से प्रारम्भ हुआ उसको यह विशेषता है कि प्रातः ८ बजे से सायंकाल ६ बजे तक महिलायें धरना देती हैं। इस चेतना का कारण है; अध्यापिकाओं तथा अन्य ग्राम की बहू बेटियों का अपनी नौकरी के लिये बसों मे रोज सफर करना। आते जाते समय शराबियों द्वारा अपना अपमान और छेडछाड़ के विरुद्ध एक रूप से महिलाओं की बगावत है। गाव के बडे बूढे और नवयुवक भी जो-जान से इस आन्दोलन में शामिल हैं। विद्रोह की ताब न ला सकने के कारण और जिला अधिकारियो की सलाह से शराब को दुकान बन्द पड़ी है। २ अप्रैल को सोनीपत के एस० डी० एम० आये तो नर-नारियों ने एक स्वर से ठेका तुरन्त उठाने का प्रस्ताव रखा तथा सत्याग्रह और धरना जारी रखने का निश्चय दोहराया। ११ अप्रैल को कमीश्नर भी गांव मे आये, उनके सामने भी लोगों ने एक स्वर में अपना निश्चय दोहराया। उनके यह कहने पर कि सरकार को साढे सात लाख का घाटा होगा, एक महिला ने कहा कि साढे सात लाख रुपये का मूल्य हमारी इज्जत से ज्यादा है? महिला के अपमान के कारण महाभारत हुआ और सोने को लंका जली। धरना जारी है और जब तक अन्तिम रूप से ठेका समाप्त नहीं होगा, वह जारी रहेगा।

इस सिलसिले में १७-४-८५ को नाहरी में चार ग्रामों नाहरी, नाहरा, हलालपुर और कतलूपुर का पचायत हुई। गाँव की पंचायत से मेरे पास सब सूचनायें पहुँचती रही और पचायत ने मुझे विशेष रूप से जनता को सम्बोधित करने के लिए बुलाया। मैं पचायत मे गया और उससे पहले ठेके के सामने लगे धरने और सत्याग्रह स्थल पर गया। धरने पर बैठी महिलाओं मे काफी बातचीत हुई। नवयुवक तथा कार्यकर्त्ताओं से बातचीत हुई। उनको इच्छा थी कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का निरन्तर सम्पर्क ही नही बना रहे बल्कि मार्ग दर्शन भी मिलता रहे। हरयाणा रक्षा वाहिनी की शाखा गांव मे खोलने और आर्य वीर दल का एक शिविर नाहरी ग्राम मे लगाने का सुझाव भी आया और मैंने दोनों सुझाव स्वीकार कर लिये। भजनमण्डली और उपदेशक मांग आने पर भेजने का वचन भी मैंने दिया।

नाहरी के सत्याग्रह की सफलता मे कोई सन्देह नही है। नाहरी में दो क्रान्तिकारी कदम उठे हैं। सत्याग्रह मे बड़ी संख्या मे ग्राम की शिक्षित और अशिक्षित महिलाओं का पुरुषों से भी बढकर योगदान और उत्साह है। सत्याग्रह मे सम्मिलित होने वाली महिलाओं द्वारा घूंघट निकालना बन्द और गांव की चौपाल में महिलाओं की आने की छूट ही नहीं बल्कि पचायत में उनकी शमूलियत।

दहिया खाप की पचायत के अध्यक्ष चौ० मीरसिंह नाहरा निवासी ने पचायत की अध्यक्षता की। लोगो की मांग पर शराबबन्दी, शादियो मे फिजूल खर्ची बन्द करने तथा हरयाणा के अधिकारो के लिए संघर्ष की बात एक घण्टे तक मैंने खुलकर कही। लोगो ने पूरा रूप से अमल ही नहो, शराब और हरयाणे के अधिकारो के लिये सत्याग्रही जेल जाने के लिए भी सत्याग्रहियो की काफी संख्या में भेजने का आश्वासन दिया।

हरयाणा के आर्यसमाजों तथा अन्य धार्मिक एव सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से मेरा अनुरोध है कि वे अपने क्षेत्र मे जहां पचायत द्वारा प्रस्ताव समय पर भेजने पर भी सरकार ने शराब के ठेके खोल दिये हैं वहां बालावास तथा नाहरी की भांति धरने तथा सत्याग्रह आरम्भ करके शराब की बिक्री बन्द करवाने का यत्न करें ताकि सरकार धन के लालच मे महिलाओं की आबरू के साथ खिलवाड न करने पर विवश हो जावे।

सभा की ओर से जनमत तैयार करने के लिए भजनमण्डलियों द्वारा प्रचार कार्यक्रम मे पूरा सहयोग दिया जायेगा।

प्रो० शेरसिंह सभा प्रधान

हरयाणा के हितों की रक्षा हेतु सत्याग्रह की तैयारी

३१ मार्च को रोहतक मे हरयाणा रक्षा महासम्मेलन आयोजित हुआ था, उसमें सर्वसम्मति से हरयाणा के हितों की रक्षा के लिये सत्याग्रह को तयारी करने का निश्चय किया गया था।

सभा कार्यालय में प्राप्त पत्रों के अनुसार सत्यग्रह की तैयारी आरम्भ हो गई है। आर्यसमाज कोसमी जिला रोहतक के नवयुवक प्रधान श्री अशोक आर्य ने अपने क्षेत्र से सत्याग्रह मे सम्मिलित होने के लिए निम्नलिखित स्वयसेवकों के नाम भेजे है—

१—श्री अशोक आर्य, २—श्री अमोलाल आर्य, ३—राव हरिसिंह ४—ना० सू० भगवानसिंह लठेडा, ५—श्री रामपाल आर्य भांकली, ६—श्री सुरेन्द्रसिंह सरपच भुरथला, ७—म० दयाराम भुरथला, ८—महाशय सुरजीत, ९—म० गुरदयाल आर्य, १०—म० खुबराम आर्य, ११—श्री धर्मदेव आर्य भुरथला।

इसी प्रकार आर्यसमाज कासनी जि० रोहतक के प्रधान श्री मा० दोपचन्द आर्य ने अपने ग्राम से ११ सत्याग्रहियों का जत्था तैयार करने की सूचना भेजी है। चौ० शिवकुमार विश्नोई गाँव भंगा बाजोदपुर तथा भाई काखेडा जिला फिरोजपुर ने भी अबोहर फाजिल्का के क्षेत्र हरयाणा मे मिलाने हेतु सत्याग्रह मे भाग लेने के लिए अपना नाम भेजा है।

हरयाणा के वयोवृद्ध नेता चौ० धर्मसिंह राठी पूर्व विधायक ने भी अपने पत्र द्वारा सूचना दी है कि २१ अप्रैल को पानीपत में कार्यकर्त्ताओं की बैठक बुलाई है जिसमें सत्याग्रह के लिए कार्यक्रम बनाया जायेगा।

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ
सयोजक हरयाणा रक्षा वाहिनी

(पृष्ठ १ का शेष)

पंजाब की समृद्ध धरती पर कांटे क्यों बिछा रहे हैं? राजनैतिक दल विफल– फैसला जनता पर छोड़ें

मई १९८४ के अन्तिम सप्ताह तक अकालियों को सरकार में शामिल करने और बादल या तोहड़ा को मुख्यमन्त्री बनाने के लिये सलाह मशवरे चलाते रहे। यह जाहिर है कि साम्प्रदायिक तत्वों को बढ़ावा देने में जो हिचक राष्ट्र से सबसे बड़ी पार्टी और शासक पार्टी होने के नाते होनी चाहिए थी वह नहीं हुई। गरज के हाथ लगकर साम्प्रदायिक तत्व देश के लिए कितना बड़ा खतरा बन सकते हैं यह स्पष्ट हो चुका है फिर भी उनके साथ सख्ती से निपटने की बजाय खुशामद का रास्ता अपनाया जा रहा है।

विरोधी दलों की भूमिका भी इस मामले में कम खेदजनक और हास्यास्पद नहीं है। वे पंजाब में कांग्रेस को चुनौती देने वाले एकमात्र राजनीतिक दल के रूप में अकाली दल को मानते हैं। उस दल को जीवित रखने में ही वे अपनी खैर समझते हैं। अपने अपने दलों में प्रभावशाली कई नेता पंजाब में ऐसे हैं जो अकालियों की सहायता से राजनीति में अपना वर्चस्व बना पाये हैं उसे बनाये रखने के लिए वे अकालियों का समर्थन नहीं खोना चाहते। अकालियों की क्या मांगें हैं और उनका क्या प्रभाव दूसरे प्रदेशों के हित पर या देश के हित पर पड़ेगा, इस बात से उनको सरोकार नहीं है। वे तो सदा अपने उच्च कमानों के द्वारा सरकार पर यही दबाव डलवाते रहे हैं कि अकाली चाहे कुछ करें सरकार को न केवल उनसे बात ही करनी चाहिये बल्कि उनकी मांग मानकर उनको सन्तुष्ट करना चाहिए। उनको अकालियों से एक ही गिला है कि वे उनको अपने साथ मिलाकर अकाली मांगों को पंजाब की मांग क्यों नहीं कहते। दुर्भाग्य की बात यह कि जिन प्रदेशों का हक पंजाब दबाये बैठा है तथा नई नई मांगों को मनवाकर दबा लेना चाहते हैं उन प्रदेशों में अपने उच्च कमानों को दबाने वाले प्रभावशाली नेता नहीं हैं यदि एक आध हैं तो वे शास्त्री जी की माह में ढील पड़ जाते हैं। नतीजा यह होता है कि हरयाणा और प्रदेशों के साथ हो रहे अन्याय को अन्याय ही नहीं मानते, उस पर सोचने समझने की तकलीफ ही गवारा नहीं है। जनवरी १९७० में अपना पंचनिर्णय देने से पांच दिन पहले मेरे मिलने पर इन्दिरा जी ने कहा मैं मानती हूं तुम्हारा पक्ष न्याय सगत है, लेकिन मैं अकेली क्या करूं, मेरे पास तो आज लोकसभा में बहुमत भी नहीं है और सब विरोधी दल तो पंजाब के साथ है, केवल तीन शास्त्री तुम्हारे साथ हैं (प्रकाशवीर शास्त्री, रघुवीरसिंह शास्त्री और शिवकुमार शास्त्री) स्थिति आज भी वही खड़ी है, अन्तर केवल इतना है कि आज राजीव को लोकसभा में प्रबल बहुमत प्राप्त है, परन्तु आजकल सहमति की बात उनके मन लग गई है, परन्तु उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि इस मामले में उनको सहमति अन्याय के लिए मिल सकती है, न्याय के साथ नहीं। सभी दल भी सहमति से फैसला करने को कहते हैं किसी मसले पर कमीशन बिठाने की। क्या १९७० का इन्दिरा जी का फैसला अकालियों समेत सबको सहमति से नहीं हुआ था? क्या शाह कमीशन कमीशन नहीं था? क्या आज कोई विरोधी दल भी इन फैसलों को लागू करने के लिये मुंह खोलता है? फैसले का जितना हिस्सा पंजाब के हक में है उसके लिए सब दल बोल रहे हैं।

आज न्याय की बात कहने का साहस किसी दल में नहीं रहा। चौ० चरणसिंह जी ने साहस किया परन्तु अकालियों के समर्थन की आवश्यकता पड़ने पर वे भी ढीले हो गये। दुःख की बात यह है कि राजनीतिक दलों का तापमान कभी सामान्य नहीं होता। कभी सामान्य से ऊपर तथा कभी नीचे। किसी मामले को लेकर यदि किसी क्षेत्र में चुनाव की दृष्टि से पंजाब की सम्भावना हो तो पारा ऊपर चढ़ जाता है और घटने की सम्भावना हो तो पारा नीचे आता है। आनन्दपुर प्रस्ताव को लेकर दिसम्बर १९८४ में राजीव जी का पारा ऊपर चढ़ा हुआ था आजकल नीचे उतर गया है। अब उसी प्रस्ताव पर अटल जी का पारा चढ़ा हुआ है दिसम्बर में नीचे गिरा हुआ था।

९ फरवरी १९८४ को प्रधानमन्त्री ने सब विरोधी दलों की सहमति से निर्णय किया कि अकालियों को वार्ता के लिये निमन्त्रण दिया जाये। २७ फरवरी १९८४ को संविधान जलाने की लोंगोवाल की धमकी खड़ी थी, उसके रहते हुए फैसला किया। मैंने प्रधानमन्त्री और विरोधी दलों के नेताओं को १० फरवरी को पत्र लिखा कि लोंगोवाल की धमकी के रहते उनसे बात करना राष्ट्र तथा संविधान का अपमान है। मेरी किसी ने नहीं सुनी। १४ फरवरी को फिर मैंने सबको पत्र लिखा कि यदि लोंगोवाल ने अपनी धमकी वापिस नहीं ली और वार्ता जारी रही तो १९ फरवरी से सब नेताओं के घरों पर धरना दिया जायेगा वार्ता तो और कारण से टूट गई, परन्तु धरना देने की बात को लेकर एक नेता मेरे साथ उलझ पड़े। जब मैंने उनसे कहा कि मेरी धमकी का जवाब देने के लिए तो सामने हो रहे हो लोंगोवाल की धमकी का जवाब क्यों नहीं देते, तो थोड़े खिसियाये और उसी खिसियाहट में मुझे चुनौती भी देकर चले गये। आज फिर वही खेल हो रहा है। लोंगोवाल ७ शर्तें रखकर आन्दोलन की धमकी दे रहा है और सभी दल उसकी कुछ शर्तें मानकर अकाली दल से वार्ता के लिए गिड़गिड़ाने को कह रहे हैं। लोंगोवाल जोश में आकर कहता है कि उसकी बात नहीं मानी तो न हिन्दुस्तान रहेगा न हिन्दुस्तानी। राजनीतिक दलों की सिद्धान्तहीन राजनीति ने कहां पहुंचा दिया है देश को।

अब प्रश्न यह है कि इस अन्धी गली से कैसे निकला जाये। ऊपर लिखे तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में यही निष्कर्ष निकलता है कि इस समस्या का राजनीतिक हल खोजना मृगमरीचिका ही साबित होगा। लेकिन खतरे खतरे इतने बड़े हैं कि हल खोजना है भी अनिवार्य। एक ही उपाय नजर आता है कि इस सारे मसले को जनता को आत्मनिर्णय के लिये सौंप दिया जाये। गम्भीर मसले और खतरे जब राष्ट्र के सामने आयें तब यह उचित ही है कि जनता का सहयोग निःसंकोच भाव से लिया जाये। ऐसे हर अवसर पर राष्ट्र को जनता ने दिल खोलकर सहयोग दिया और देश को सदा मजबूती दी है।

तथाकथित पंजाब समस्या के दो पहलू हैं। पहले पक्ष के अनुसार– उग्रवादियों और अलगाववादियों द्वारा 'सिखों के बोलबोले' का नाम लेकर सिखों को अलग कौम मानते हुए खालिस्तान या सिख होमलैण्ड की स्थापना करना है। इस इरादे की साफ झलक आनन्दपुर साहब प्रस्ताव में है। दिसम्बर १९८४ में राजीव जी ने आनन्दपुर साहब प्रस्ताव के इन मुद्दों को लेकर देश की एकता और अखण्डता को बचाने के लिये जनता से समर्थन मांगा। जनता ने दिल खोलकर केवल समर्थन ही नहीं दिया, बल्कि एक प्रकार से यह निर्णय भी दे दिया कि देश का विघटन करने वाले तत्त्वों के साथ कोई समझौता नहीं करना चाहिए और उनके साथ सख्ती से पेश आकर उनको सदा सदा के लिये कुचल देना चाहिये। लोंगोवाल की सात शर्तें उग्रवादियों और अलगाववादियों द्वारा आनन्दपुर साहब में घोषित की गई थी। उन शर्तों को मानने के संकेत और वार्ता के लिए गिड़गिड़ाहट जनता के निर्णय की अवहेलना ही नहीं एक मायने में विश्वासघात होगा। इस मामले में जनता के निर्णय के अनुसार ही सब कदम उठने चाहिए।

अकालियों की मांगों का दूसरा भाग है उनकी तथाकथित संयुक्त मांगें, रावी, व्यास के पानी का बटवारा तथा क्षेत्रीय विवाद। मैं ७ और ८ अप्रैल को पंजाब में घूमकर आया। सैकड़ों लोगों से बात हुई और सबने माना कि भारत का पानी पाकिस्तान में जाना और सतलुज-यमुना लिंक नहर न बनना राष्ट्र के प्रति अपराध है। पानी की कितनी मात्रा पंजाब को मिले, कितनी हरयाणा को, इसका फैसला 'वाटर ट्रिब्यूनल' को सौंपा जा सकता है। युद्धस्तर पर लिंक नहर का काम चले और नहर के बनने तक ट्रिब्यूनल का फैसला न हो सके तब भारत

सरकार के फैसले के अनुसार हरयाणा को पानी मिले। मैंने कहीं भी इस बात का विरोध नहीं पाया। इस फैसले को भी जनता का फैसला मानकर तुरन्त अमल कर देना चाहिए।

अब बात रह गई क्षेत्रीय विवाद की। अकाली भाई हर बार चारों तरफ दूर तक के इलाके मांगना शुरू कर देते हैं, १९५६, १९६५ और १९७० में जिन इलाकों को वे लिखित रूप में और और अकाल तख्त पर बैठकर हिन्दी भाषी मान चुके, एक बार फिर पंजाबी भाषी क्षेत्र कहकर मांग कर बैठते हैं। पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी वाले उनसे पीछे क्यों रहे? वे भी उन्हीं मांगों को दोहरा रहे हैं। उनकी अपनी कोई राय न रही है और न आज है। अकालियों की केवल सहमति से ही नहीं बल्कि उनके कहने पर जनवरी १९७० में श्रीमती गांधी ने पंच निर्णय दिया कि चण्डीगढ पंजाब को फाजिल्का अबोहर और ११५ गांव हरयाणा को मिलें और बाकी जिन गांव के बारे में पंजाब हरयाणा और हिमाचल प्रदेश के बीच विवाद है उनके लिये एक आयोग बनाया जाय। १५ वर्ष बीतने पर भी इस पर अमल नहीं हुआ।

अकाली भाई भाषा को आधार बनाने की बात करते हैं और पश्चिमी पंजाब से आये हुए लोगों की भाषा पंजाबी बताते हैं। परन्तु भाषाओं के जाने माने माहिर ग्रियर्सन पश्चिमी पंजाब की भाषा लहंडा या जटकी मानते हैं और १९११-१२ तथा १९३१ की जनगणनाओं में उनकी भाषा लहंडा और जटकी ही लिखी गई। पंजाबी को उन्होंने केवल पूर्वी पंजाब के कुछ जिलों की भाषा माना है। उनके अनुसार लहंडा या जटकी पंजाबी की बजाय सिन्धी के ज्यादा निकट है। वैसे भी इतने सालों से जो लोग जिस इलाके में बस गये हैं और उनकी नई पीढ़ी उस इलाके में पली है उनके व्यवहार की भाषा उस इलाके की भाषा ही बन गई है। सीमा के इधर उधर के गांव की मिश्रित बोली तो होती ही है। इसलिये भाषा का फैसला न कोई विशेषज्ञ कर सकता है न आयोग और शाह-आयोग ने अपनी रिपोर्ट में इसी बात को साफ साफ शब्दों में कहा है, इसलिये कौन सा गांव जो सीमा के साथ लगा हुआ है वह कौन सा प्रदेश में रहे या जाये, इसका फैसला उस गांव के लोग खुद करें। गांव के लोग जो [illegible] और यदि उनमें मतभेद हो तो उनके मतों से ही उसका निर्णय हो। राजनीतिक दलों को उसमें उसमें स्वयं भी नहीं पड़ना चाहिये, ताकि उनको हार-जीत का झमेला ही न रहे। यदि इन्दिरा जी का १९७० का फैसला कुछ लोगों के गले नहीं उतरता तो चण्डीगढ और फाजिल्का अबोहर के मामले में भी वहां की जनता की राय से फैसला कर देना चाहिये। मैं हरयाणा के अधिकारों के लिये आवाज उठाता रहा हूं। मेरे इस सुझाव से जहां हरयाणा में कुछ गांव आयेंगे, हो सकता है कुछ गांव पंजाब में भी चले जायें। परन्तु मैं लोगों की इच्छा के विरुद्ध एक गांव भी हरयाणा में मिलाये जाने की बात कहने का अपना अधिकार नहीं मानता, न किसी दूसरे व्यक्ति का मानता हूं।

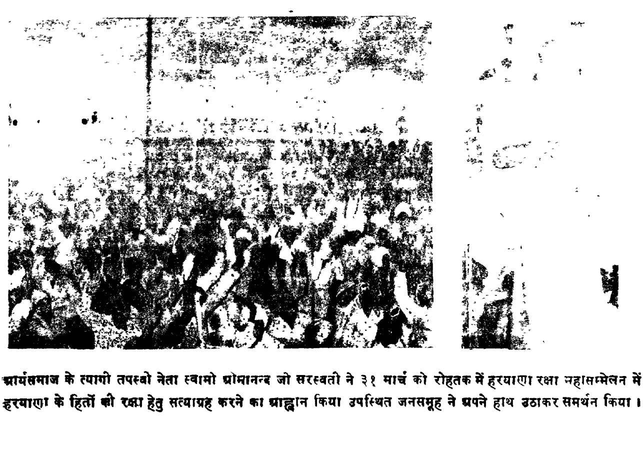
मानव जीवन में आत्मस्वीकरण (कन्फेशन) और प्रायश्चित की भावना को बिगड़ी को बनाने के लिये बहुत ऊंचा स्थान प्राप्त है। भारत के सभी राजनीतिक नेता अन्तर्मुख होकर सोचें और समझें कि इस समस्या का हल स्वार्थ बुद्धि से नहीं करुणामय हृदय से मिलेगा। जिन भारतवासियों में मिलीजुली सरकार के बीच यह निर्णय लेने की चमत्कारिक शक्ति है कि देश हित में प्रबल बहुमत की सरकार बना दें, उनकी सूझ-बूझ पर भरोसा करते हुए राजनीतिक नेताओं को जनता का हल स्वीकार कर लेना चाहिये। (युगवार्ता से साभार)

हरयाणा के हितों की बलि पर संघर्ष होगा

पुण्डरी, ७ अप्रैल (निस)। युवा जनता पार्टी के अध्यक्ष बलजीतसिंह ने चेतावनी दी है कि यदि हरयाणा के हितों की कीमत पर पंजाब में अकालियों की कोई मांगें मानी गईं तो हरयाणावासी आन्दोलन करने पर विवश हो जायेंगे।

उन्होंने प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से यह इस बात स्पष्ट रूप से घोषणा करने की मांग की कि हरयाणा का कोई भी भाग पंजाब में शामिल नहीं किया जायेगा।

युवा नेता ने हरयाणा के मुख्यमन्त्री भजनलाल के महापंजाब के प्रस्ताव की कटु आलोचना की [illegible] मुख्यमन्त्री पद से इस्तीफा दें। (दैनिक ट्रिब्यून से)



आर्यसमाज के त्यागी तपस्वी नेता स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने ३१ मार्च को रोहतक में हरयाणा रक्षा महासम्मेलन में हरयाणा के हितों की रक्षा हेतु सत्याग्रह करने का आह्वान किया उपस्थित जनसमूह ने अपने हाथ उठाकर समर्थन किया।

आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालयसिरसा में यज्ञ



आर्य उच्चतर मा० विद्यालय में १२-३-१९८५ को हवन यज्ञ किया गया। इस यज्ञ में दसवीं और ग्यारहवीं कक्षा के विद्यार्थी सम्मिलित हुए इस अवसर पर व्रतपाल शास्त्री ने ईश्वर से इन विद्यार्थियों के सफल होने की मंगल कामना की। विद्यालय अध्यापक श्री गुरकरमसिंह ने व उप प्राचार्य श्री मदन लाल बंसल ने विद्यार्थियों को आशीर्वाद दिया। अन्त में प्राचार्य श्री द्वारका प्रसाद जिन्दल ने सम्बोधित करते हुए कहा कि वे खूब परिश्रम करें और अच्छे अंक लेकर परीक्षा में सफल हों।

रणधीरसिंह सागवान

गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथधाम (देवघर)

स्थापना दिवस एवं रामनवमी महोत्सव

गुरुकुल का उत्सव ३०, ३१ मार्च को कुलभूमि में बृहद यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। इसके पश्चात् गुरुकुल के ब्रह्मचारियो का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। सन्ध्या मे स्थापना दिवस प० हरिदास मन्त्री बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे मनाया गया, जिसमें गुरुकुल के स्नातकों, आचार्यों और विशिष्ट अतिथियों का स्थापना दिवस और मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र के जीवन चरित्र पर प्रवचन हुआ। गुरुकुल शिक्षा पद्धति के गुणों और आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया और पुरुषोत्तम रामचन्द्र के गुणों का बखान किया गया।

दूसरे दिन गुरुकुल के छात्रो का खेल-कूद प्रदर्शन का आयोजन हुआ। इस अवसर पर देवघर के उपायुक्त एवं श्री कृष्णानन्द जी एम० एल० ए० मुख्य अतिथि के रूप मे विराजमान थे। हिन्दी विद्यापीठ देवघर के संचालक सेठ जी ने ५०१) रु० का दान गुरुकुल को दिया। गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने आसन, व्यायाम, प्राणायाम, डुाल, भारोत्तोलन का कार्यक्रम स्तूपनिर्माण आदि के अद्भुत कार्यो को प्रदर्शित किया।

आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

सभा की अन्तरग सभा के निश्चयानुसार सभा का वार्षिक अधिवेशन (चुनाव) १९ मई १९८५ को होगा। सभा से सम्बन्धित आर्य समाजो के अधिकारियों से निवेदन है कि जिन आर्यसमाजों ने अभी तक प्राप्तव्य वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क सभा को नहीं भेजा है, वे राशि ३० अप्रल तक सभा को भेजने की कृपा करें, ताकि उन्हे यथासमय अधिवेशन का ऐजण्डा आदि भेजा जा सके। जो आर्यसमाजें सभा के साथ २ वर्ष से अधिक समय से सम्बन्धित हैं और उन्होंने गत वर्ष सभा को प्रतिनिधि फार्म किसी कारणवश नहीं भेजे थे, वे भी तुरन्त सभा को पत्र लिखकर प्रतिनिधि फार्म मंगवाकर प्राप्तव्य वेदप्रचारादि की राशि ३० अप्रैल तक सभा को फार्म भरकर अपने प्रतिनिधि भेजकर सभा के संगठन को सुदृढ करने मे योगदान करें।

रणजोतसिंह सभा मन्त्री

निवेदिका-निष्ठा बहिन हरयाणा जहां दूध दही का खाणा

अनोखा हरयाणा

देशों में है देश अनोखा, वीर देश हरयाणा।
स्वर्ण अक्षरों मे लिखा (जाय) जिसका इतिहास पुराणा।
ब्रह्मावर्त (है) देवताओं का, यह ऋषियों की धरती।
जहां वेद मन्त्रो की वाणी, अब तक गूंजा करती।।
सरस्वती के तट पर (भाई), वेद की वंशी बजती।
(उपनिषदों की गंध बिखरती) विजय पताका
आर्य सभ्यता की सवत्र फहराती।
लुप्त हो गया सरस्वती सा, अब वह समय सुहाणा।
देशों में है देश अनोखा……।

इस मिट्टी ने श्रम को बोकर, सदा स्वर्ण उपजाया।
शस्य-श्यामला वसुन्धरा ने, (पावन) स्नेहांचल लहराया।
गोधन की चिर-परम्परा से, मिटी दैन्य की छाया।
कृषिप्रधान यह क्षेत्र एक दिन बहुधान्यक कहलाया।
हुआ प्रसिद्ध समस्त जगत् दूध दही का खाणा।
देशों में है……।

शस्त्र दोनो के इसमें हुए धुरन्धर नेता।
यौधेयों का बलशाली, गणराज्य गवाही देता।
'वीर बानिया' शक्ति रूपिणी, शक्ति रूपिणी।
मानस 'मानस' विश्व विजेता।
यहां लोक जीवन गीता से, अमर प्रेरणा लेता।
देश भक्त वीरों ने धारण, किया केसरी बाणा।
देशों मे है देश अनोखा……।

आओ मिलकर आज करें प्रण, निज कर्त्तव्य निभायें।
वीरभूमि का खोया गौरव, पुनः उसे दिलवाएं।
गृह रक्षा निर्माण कार्य में, तन-मन से जुट जाएं।
नये राज्य हरयाणा को, पृथ्वी का स्वर्ग बनायें।
जय जवान जय किसान (का) गूंजे अमर तराणा।
देशों में है देश अनोखा, वीर देश हरयाणा।
देशों में है देश हरयाणा, जहां दूध दही का खाणा।।

(मासिक पत्रिका सुधारक से)

गुरुकुल शिक्षा पद्धति

आर्ष शिक्षा प्रणाली

स्वामी वेदानन्द वेदवागीश गुरुकुल महाविद्यालय झज्जर

"यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् (यजु० १८-२९) इस यजुर्वेद मन्त्र के अंश से विभिन्न वर्ग विश्व में वृक्षों के बीजों के विकास प्रचार प्रसार में संरत है। ऐसे ही शिक्षण क्षेत्र में मनीषियों में प्राचीन सरणी के आधार पर एवं वेद मन्त्रों से पुष्ट आर्ष शिक्षा प्रणाली को पुनरुज्जीवन प्रदान किया है। इस पद्धति को स्वीकारने वाले भारत में बहुत हैं। वे अपने इस विद्या क्षेत्र का नाम गुरुकुल रखते हैं। गुरु का कुल-गुरुकुल। इसे हम आचार्य कुल के नाम से भी व्यवहृत कर सकते हैं। गृणाति--त्रयो-विद्यामुपदिशति, आचार मुपदिशति आध्यात्मिक ज्ञान योपदिशति यः स गुरु। जो ज्ञान कर्म उपासना इस विद्यात्रयी को आचार को और आध्यात्मिक बोध को सिखा दे वह गुरु है। आचार्य का भी यही तात्पर्य है। यास्काचार्य निरुक्त ग्रन्थ मे लिखते हैं—आचार ग्राह्यति, आचिनोत्यर्थान् आचिनोति बुद्धिमितिवा, जो सदाचार, तीन विद्याओं का अर्थ और बुद्धि आत्म विषयक बोध करावे, वह आचार्य है। गुरुकुल या आचार्य कुल में गुरु कि वा आचार्य को प्रमुखता है, क्योंकि वह ही बालक को पुरुष बना सकता है। उसे किसी को पुरुष बनाने के लिये कहीं कोई निर्माण शाला चाहिये। यदि एक बालक हो, तो उसे अपने घर पर भी विद्या से दीक्षित कर सकता है, किन्तु जब अत्यधिक हों तो ग्राम व नगर से दूर एकान्त स्थान में आचार्य कुल की स्थापना अभीष्ट है। इसी से आज गुरुकुल भारतवर्ष में शान्त वातावरण में स्थित हैं।

इन गुरुकुलों में वही शिक्षा देना अनिवार्य है, जिसका प्रतिपादन महर्षि दयानन्द ने स्वप्रणीत ग्रन्थों में किया है। वे ही इसके पुनरुज्जीवक हैं। जहां ऋषि प्रणीत ग्रन्थों का पाठन नहीं है, वे गुरुकुल नहीं कहे जा सकते।

विद्या प्राप्त कराके पुरुष बनाने के लिए पिता बालक को पितरों ज्ञानियों, आचार्यों के समीप ले जाता है और यजुर्वेद के द्वितीय अध्याय में निर्दिष्ट आधार पर कहता है—

आधत्त पितरो गर्भं कुमारं पुष्करस्रजम्।
यथेह पुरुषोऽसत्। अध्याय २ मन्त्र ३३॥

पिता पुष्प माला पहनाकर अपने गर्भ रूप कुमार को आचार्य के शरण में लाता है और पुरुष बना देने का विनय प्रकट करता है।

आचार्य भी मन्त्र के आधार पर ही उसे अङ्गीकार करता है, वचन है—

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः।
तं रात्रीस्तिस्र उदरे बिभर्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवा.॥
अथर्व० ११-५-३

बालक को विद्यात्रयी में निपुण करने के लिये आचार्य ब्रह्मचर्यव्रत की दीक्षा देता है। क्योंकि शुक्र नीति का भी वचन है–विद्यार्थ ब्रह्मचारी स्यात इस ब्रह्मचर्य (ब्रह्म ज्ञान, वेद ज्ञान, वीर्य-निग्रह) का पालन के लिये ही गुरुकुल रूप गर्भ अपेक्षित है। किसी जाति वर्ग, धनि, दरिद्र का बालक सभी को एक-सा समझ उपनयन संस्कार किया जाता है। इससे बच्चों में पारस्परिक समानता उपजती है। भेदभाव समाप्त होता है। इसी हेतु खान-पान, रहन-सहन, तपस्या का निर्वहण एक जैसा अपनाया जाता है।

विदुषी माता अपने १० मास के गर्भकाल में जो शिक्षा बच्चे को देती है। (जैसे अभिमन्यु को चक्रवेध) आचार्य न्यूनातिन्यून १७ वर्ष तक बालक को गर्भरूप गुरुकुल में रखकर एक वेद ब्रह्मचर्य पूर्वक अध्यापन कराता है। इसके पश्चात् स्नातक बनने पर समावर्तन संस्कार घर में लौटने पर किया जाता है, जहां विद्वान् उसे देखने की दृष्टि से एकत्रित होते हैं।

यदि कोई दीर्घकालीन ब्रह्मचर्य व्रती रहकर १, २, ३ व ४ वेद पढ़ना चाहता है, तो उसके लिए वैसा कर देने का विधान है। तब उस के एक वेदी, द्विवेदी, त्रिवेदी और चतुर्वेदी यथायोग्य उपाधि होती हैं।

वेद हमारी संस्कृति के द्योतक हैं। यह ही भारत की थाती हैं। अतः गुरुकुलों में वेद वेदाङ्गों शास्त्रों का ही अध्ययन अध्यापन चलता है।

ब्रह्मचर्य आश्रम जो गृहस्थ-वानप्रस्थ-संन्यास की रीढ है, उसका परिपालन होता है। आज ब्रह्मचर्य आश्रम के महत्त्व को भुला दिया गया है, अतः अगले तीन आश्रम भी डगमगा गए हैं।

विद्यावसान पर ब्राह्मण-क्षत्रीय और वैश्य वर्णों में से योग्यता-नुसार वर्ण में ब्रह्मचारी को अलंकृत करना भी आचार्य का ही काम है। वही उसका सत्य और अमर वर्ण है जो जीर्णता को प्राप्त नहीं होता।

यह थोडा सा गुरुकुल प्रणाली पर लिखा, जिसमें आचार्य, माता-पिता और ब्रह्मचारी, आश्रम तथा वर्ण पर दृष्टिपात किया गया है। गुरुकुलो में क्या २ अध्ययन अभीष्ट है, यह भी बताया गया है।

अपनाते गये

गुजरते रिश्तों में डूबते रहे।
हर गैर को अपनाते गये॥

वो नफरत उगलते रहे।
हम प्यार का रस भरते गये।

वो पत्थर बरसाते रहे।
हम फूलों का हार पहनाते गये।

वो कांटे बिछाते रहे।
हम कांटों को सहलाते गये।

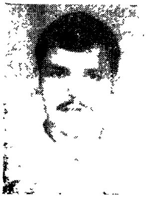
वो चिराग बुझाते रहे।
हम एक चिंगारी देते गये।

वो फूल तोडते रहे।
हम पौधों को सिंचते गये।

वो जुल्म करते रहे।
हम जुल्मों को पीते गये।

अनिल कुमार मंगला 'पिंकी' (बम्बई)

होनहार युवक श्री रामफल आर्य



आपने अपने ग्राम जोन्धन कलां जिला करनाल में आर्यसमाज की स्थापना करके गत मास प्रथम उत्सव करवाया। आप अपने समाज में अन्य युवकों के साथ प्रतिदिन यज्ञ, सन्ध्या तथा सत्सग करते हैं।

ईश्वर स्तुति प्रार्थना

चिरंजीलाल 'जीव' बराडा जि० अम्बाला

नाम तेरा है 'ओ३म्' प्रभु ! तुझ को मेरा प्रणाम है।
सबसे बडा है श्रेष्ठ तू तुझको मेरा प्रणाम है॥
व्यापक है तू जहान में जादार में बेजान में।
इन्सान में हैवान मे तुझको मेरा प्रणाम है॥
सृष्टि का तू ही कर्त्ता है धर्ता है और हर्ता है।
जन्मता न तू मरता है तुझको मेरा प्रणाम है॥
प्रभु ! सर्वशक्तिमान् है दुनिया का तू हुक्मरान है।
महान् से भी महान् है तुझको मेरा प्रणाम है॥
कर्मों का फल चखा रहा जीवों का न्याय चुका रहा।
रूला किसी को हंसा रहा तुझको मेरा प्रणाम है॥
सुखों का तू भण्डार है जग का तू पालन हार है।
जीवों का तू आधार है तुझको मेरा प्रणाम है॥
हमको प्रभु ! सुख दीजिये दुःख दूर हमारे कीजिये।
अपनी शरण में लीजिये तुझको मेरा प्रणाम है॥
है 'जीव' की यह प्रार्थना शुद्ध हो उसकी भावना।
पूरी कर उसकी कामना तुझको मेरा प्रणाम है॥

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत पंजि सं० 23207/73 रजि०सं० P/RTK 49 त् १६,७२१४०८६



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री | सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १२ अङ्क २१ २८ अप्रैल १९८५ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की साधारण सभा के स्वीकृत सदस्यों की सेवा में

वार्षिक साधारण सभा की बैठक का एजेण्डा (कार्य सूची)

माननीय महोदय, सादर नमस्ते

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक १९ मई १९८५ रविवार को प्रातः ११ बजे सभा कार्यालय दयानन्द मठ रोहतक में होना निश्चित हुआ है। अतः सभा के सभी स्वीकृत प्रतिनिधि महानुभाव यथासमय पधारकर कृतार्थ करें।

विचारणीय विषय

१—गत वर्ष दिवंगत हुए आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के प्रस्ताव

२—गत अधिवेशन ११ दिसम्बर १९८३ की कार्यवाही की सम्पुष्टि।

३—सभा कार्यालय, वेदप्रचार विभाग, साहित्य विभाग, सर्वहितकारी, आर्य विद्या परिषद्, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, दयानन्द उपदेशक एवं भजनीक महाविद्यालय यमुनानगर, दयानन्द धर्मार्थ औषधालय अम्बाला, महर्षि दयानन्द वैदिक धाम कुरुक्षेत्र आदि के गत वर्ष के आय-व्यय की सम्पुष्टि तथा वर्ष स० २०४२-४३ के प्रस्तावित आनुमानिक आय-व्यय की स्वीकृति।

४—सम्वत् २०४२-४३ (सन् १९८५-८६) के लिये सभा के अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों, विद्या सभा हरयाणा, विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी, सार्वदेशिक सभा व न्याय सभा के प्रतिनिधियों का निर्वाचन।

५—वेदप्रचार तथा आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ करने तथा नशाबन्दी आन्दोलन पर विचार।

६—श्री प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती स्मारक भवन निर्माण को पूरा करने पर विचार।

७—अन्य आवश्यक विषय सभापति की अनुमति से

विशेष ज्ञातव्य

१—सभापति को विचारणीय विषयों के क्रम में अन्य आवश्यक परिवर्तन करने का पूर्ण अधिकार होगा।

२—आवास तथा भोजन की व्यवस्था सभा की ओर से दयानन्द मठ, रोहतक में होगी।

भवदीय
रणजीतसिंह सभा मन्त्री

आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

सर्वहितकारी में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वार्षिक साधारण अधिवेशन का एजेण्डा प्रकाशित किया जा रहा है। सभा से सम्बन्धित जिन आर्यसमाजों ने अभी तक वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क सभा को नहीं भेजा है, वे गत वर्ष की राशि के अनुसार प्राप्तव्य धनराशि यथाशीघ्र मनीआर्डर अथवा सभा उपदेशकों द्वारा तुरन्त भेज देवें, ताकि उनके गत वर्ष के प्रतिनिधियों को सभा के चुनाव का एजेण्डा नियमानुसार समय पर भेज दिया जाये। यदि सभा से सम्बन्धित कम से कम एक वर्ष हुए किसी आर्यसमाज ने गत वर्ष अपने प्रतिनिधि फार्म भरकर किसी कारणवश नहीं भेजे थे, वे भी इस वर्ष अपने प्रतिनिधि सभा को भेज सकते हैं। सभा कार्यालय से फार्म मंगवाकर उसे नियमानुसार भरने के पश्चात् प्राप्तव्य वेदप्रचार आदि की धनराशि के साथ शीघ्र से शीघ्र सभा कार्यालय में भेज देवें, ताकि सभा आवश्यक जांच पड़ताल करने के पश्चात् उनके प्रतिनिधि स्वीकार करके उन प्रतिनिधियों को भी ऐजण्डा आदि भेज सकें। कुछ आर्यसमाजें अधिवेशन के दिन ही फार्म के साथ अपने प्रतिनिधियों को भेजते हैं, परन्तु उसी समय उनकी आवश्यक जांच करना कठिन हो जाता है। इस बार इस प्रकार भेजे गये किसी आर्यसमाज के प्रतिनिधियों को स्वीकार नहीं कर सकेंगे। अतः सम्बन्धित जो आर्यसमाजें अपने प्रतिनिधि इस बार भेजना चाहते हैं, वे सभा कार्यालय में पूर्व ही सम्पर्क करके अपने प्रतिनिधि नियमानुसार स्वीकार करवा लेवें।

जिन आर्यसमाजों के प्रतिनिधि सभा द्वारा पूर्व स्वीकृत हैं, परन्तु उन आर्यसमाजों की ओर से इस वर्ष की वेदप्रचार, दशांश आदि की प्राप्तव्य राशि अभी तक नहीं भेजी है, वे भी अपना गत वर्ष का हिसाब देखकर धनराशि तुरन्त सभा को भेज देवें, ताकि उनके प्रतिनिधियों को भी ऐजण्डा भेज दिया जाये।

जिन आर्यसमाजों के स्वीकृत प्रतिनिधियों से सम्बन्धित आर्यसमाजों की ओर से प्राप्तव्य राशि प्राप्त हो चुकी है उनके पास एजेण्डा डाक द्वारा भेजा जा रहा है। सभा के अधिवेशन में प्रवेश करने के लिए प्रवेश-पत्र १९ मई को अधिवेशन स्थल पर दे दिया जायेगा। अतः प्रतिनिधि गण अधिवेशन के समय से कम से कम एक घण्टा पूर्व कार्यालय में पहुँचकर अपने प्रवेश पत्र प्राप्त करने का कष्ट करें।

आशा है आर्यसमाजें हरयाणा में आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ करने के लिए अपने प्रतिनिधियों को भेजेंगे उनके सुझाव तथा सहयोग से सभा का भविष्य उज्ज्वल होगा।

निवेदक
रणजीतसिंह सभा मन्त्री

सनातन धर्मी कहते हैं ऋषि दयानन्द के वचन सत्य हैं।

प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु, वेदसदन अबोहर

ऋषि दयानन्द जी महाराज प्रथम भारतीय महापुरुष व सुधारक विचारक थे जिन्होंने देश पूर्व, पश्चिम, उत्तर दक्षिण में घूम घूम कर देश सुधार, वेदप्रचार व दलितोद्धार का विराट जन आन्दोलन आरम्भ किया। महर्षि दयानन्द से पूर्व किसी देशभक्त, किसी साधु सन्यासी विद्वान् महात्मा ने देश के सब भागों में भ्रमण करके धर्म प्रचार और राष्ट्र रक्षा का कोई आन्दोलन चलाया हो ऐसा दूसरा उदाहरण मिलना कठिन है। बहुत प्राचीनकाल की बात नही करते। वैसे तो देशाटन व तीर्थयात्रा की भारतीयों को कई शताब्दियों से सुरुचि रही है। सन्त महात्मा भी देश में भ्रमण करके उपदेश देते रहे हैं, परन्तु महर्षि दयानन्द हमारे इतिहास की प्रथम की विभूति हैं जिन्होंने देश की चारों दिशाओं में जाकर ईश्वर की पवित्र कल्याणी वाणी वेद का सन्देश देते हुए जन जागरण का शंख फूंका।

दुर्भाग्य से वे लोग भी उनका घोर विरोध करने लगे, जिनके कल्याण के लिये ऋषि ने सब सुख साज वारा था। ऐसे लोगों ने ऋषि की जान लेकर भी चैन न लिया और आज पर्यन्त ऋषि को गालियां देकर, ऋषि का विरोध करके वे प्रसन्न होते हैं। उत्तर प्रदेश के फुरुखाबाद नगर में ऋषि के विरोध में 'धर्म सभा' नाम से एक संस्था खड़ी की गई। इस संस्था की स्थापना का एक कारण यह था कि महर्षि ने रण्डी-बाजी और अगलाम बाजी करने वालों की भर्त्सना की थी। अदूरदर्शी विरोधियों ने ऋषि के मिशन का विरोध करने के लिए सनातन धर्म सभाएं व धर्म महामण्डल स्थापित किए। इन मण्डलों व इन सनातन धर्म सभाओं ने आज तक इस्लाम, ईसायत व रामकृष्ण की निन्दा करने वाले अन्य मतों के खण्डन में आज तक एक भी नही लिखी। आर्यसमाज व ऋषि के विरोध में सैकड़ों पुस्तक छापी गई हैं। इस प्रवृत्ति को हम आत्मघात ही कहेंगे।

सौभाग्य की बात है कि समझदार सनातन धर्मी अपनी भूल को सुधार कर सत्य को स्वीकार करते जा रहे हैं। सनातन धर्म के बड़े बड़े विद्वान्, उपदेशक, आचार्य व नेतागण जानने मानने व पहचानने लगे हैं कि आर्यसमाज व ऋषि मुनियों और रामकृष्ण की लुटती लाज का रक्षक है। आर्यसमाज ही हिन्दु जाति को बचाता रहा है, बचा सकता है और बचायेगा। आर्यसमाज व ऋषि की विचारधारा को अपनाये बिना विश्व का विशेष रूप से हिन्दू का कल्याण नही। ऋषि की एक एक बात को सनातन धर्म जगत् निःसंकोच सत्य मानने लगा है। प्रो० शरद जी ने सत्य ही लिखा—

तीरा भो तार गुजरगाहों पे नूर आएगा।
इनक्लाब आएगा आएगा जरूर आएगा॥

अंधकार छटकर रहेगा और वेद विद्या का सूर्य अपने प्रचण्ड तेज से संसार को आलोकित करेगा। आइए सुनिए सनातन धर्मी क्या कहते हैं—सनातन धर्म महामण्डल के एक संस्थापक नेता स्व० पण्डित दीनदयाल जी व्याख्यान वाचस्पति से जब रक्तसाक्षी पं० लेखराम जी ने करनाल में यह कहा कि इसी प्रकार हिन्दू विधर्मी होते गये तो राम कृष्ण सन्तान का क्या बनेगा तो पं० दीनदयाल जी ने तत्काल कहा, पं० लेखराम सरीखा प्राणवीर जिस जाति का रक्षक हो, उसका कोई कुछ नही बिगाड़ सकता इसलिए हम चिन्ता क्यों करें।

काशी की विद्वन्मण्डली के प्रधान व मन्त्री रह चुके देश के मूर्धन्य सनातनी विद्वान् दर्शन केसरी गोपाल शास्त्री जी ने व्यवहारभानु ऋषि कृत पुस्तिका का संस्कृत अनुवाद किया है और दयानन्द दर्शन पर सुन्दर श्लोक रचना की है। आपने ऋषि जी के वेदभाष्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

आर्यसमाज कहता रहा है कि स्त्रियों को भी वेद पढ़ने व यज्ञोपवीत का अधिकार है। डा० राधाकृष्णन जी ने Religion and Society पुस्तक में आर्यसमाज की इस मान्यता की पुष्टि करते हुए श्रुति का वही प्रमाण दिया है जो ऋषि ने दिया है।

पं० शिवदत्त शास्त्री महामहोपाध्याय ने प्रबल शब्दों में कन्याओं के यज्ञोपवीत की पुष्टि की। प० मदन मोहन मालवीय जी ने कहा था—स्त्री शिक्षा के बिना भारत की उन्नति सम्भव नहीं।

शुद्धि का सनातनी डटकर विरोध करते थे परन्तु आर्यसमाज का विरोध करने वाले यदुकुल भूषण जी मलकाना शुद्धि से ऐसे प्रभावित हुए कि गद्गद् हो गये और हर्ष से उनके नयनों से अश्रु बहने लगे।

२७ मार्च १९२३ को सनातन धर्म मन्दिर लाहौर में प्रो० नरसिंह देव ने कहा था- "मैं आर्यसमाजियों के कार्य की सार्वजनिक रूप से प्रशंसा करना चाहता हूं जो वे हिन्दू स्त्रियों को ईसाई मुसलमान से बचाते हैं" आपने इसी भाषण में शुद्धि आन्दोलन का डटकर समर्थन किया।

सनातनी पहले कहते थे कि मृतक श्राद्ध में ब्राह्मणों को खिलाया हुआ भोजन मरे हुये पितरों को पहुँचता है परन्तु दिसम्बर १९१६ में खरड़ में कौल के पं० लक्ष्मीचन्द्र ने कहा कि मृतक श्राद्ध खिलाने से पुण्य मिलता है। अब पितरों को खीर पहुँचती है—ऐसा कोई नही मानता।

गुजरात के न्यायधीश दवे ने The Art of life in Bhagwad Gita में लिखा है कि वेद उपनिषद् काल में भारत में मूर्ति पूजा न थी।

सनातनी नेता प० गोपीनाथ के अखबार 'आम' में उर्दू का निम्न पद्य छपा था—

गुनाह भो आलियत क्या है खुदा से सरकशी करना।
बुतों को सर झुकाना गिड़गिड़ाना आजजी करना॥

अर्थात् पाप क्या है? ईश्वर की आज्ञा को न मानना, मूर्ति पूजा करना और पत्थर की मूर्ति कुछ मांगना। ईश्वर का धन्यवाद जो सनातनी हिन्दुओं ने बुद्धि से काम लेना आरम्भ कर दिया है। सनातनियों के एक स्वामी दयानन्द बी० ए० हुए हैं। आपने तो कानपुर में कहा था मूर्ति पूजा कुछ नहीं, लड़ाई झगड़े की बातें हैं और महाराष्ट्र के देश सेवक विद्वान् साने गुरु जी मूर्तियों को भोग लगाना व्यर्थ घोषित करते हैं। अक्तूबर १९१९ में लाहौर सनातन धर्म के उत्सव पर मालवी जी ने कहा 'क्या इस विद्वन्मण्डली में कोई है जो मुझे वेदशास्त्रों में मूर्ति पूजा दिखा सके?'

वेद ही स्वतः प्रमाण—जो वेद विरुद्ध है सो धर्म नहीं, अमान्य है। १९२८ ई० के नवम्बर के अन्त में शंकराचार्य जी ने रावलपिण्डी में चौथा प्रस्ताव पेश करते हुए कहा था। सब बातें वेद अनुकूल हों। यदि ईश्वर भी किसी और रूप में आकर हमें वेद विरुद्ध उपदेश करे तो हम न मानेंगे। यही तो ऋषि दयानन्द का सन्देश उपदेश व आदेश है।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

सम्पादकीय:-

हरयाणा सरकार पंचायत एक्ट पर अमल करे

किसानों एवं मजदूरों को उनकी इच्छा के विरुद्ध शराब के ठेके खोलकर दिन दहाड़े लूट को बन्द करें

हरयाणा की ग्रामीण जनता में पिछले एक वर्ष में नई चेतना आई है। एक वर्ष तक सभा द्वारा किये गये प्रचार की उपलब्धि यह हुई है कि आज यहा का किसान, मजदूर आदि कमाऊ वर्ग यह समझ गया है कि अपनी गाढे पसीने की कमाई से गन्दा पानी खरीदकर वह दिन दहाड़े लुट रहा है। केवल वही तो हैं जो अपने पैसे से शराब पीते हैं, बाकी तो चाहे सरकारी कर्मचारी हों, राजनेता वा पून्जीपति हों, सब दूसरों के पैसे की शराब पीते हैं। हरयाणा प्रदेश में ३०० करोड़ रुपये की शराब एक साल में पी जाती है, औसत निकालें तो एक गाव मे ५ लाख रुपये की शराब पी जाती है। यही ५ लाख रुपये यदि गाव की दशा सुधारने मे लगाये जाये तो हर गांव स्वर्ग बन सकता है।

हरयाणा प्रदेश मे देसी शराब के ठेकों की संख्या लगभग ३५० है, जिसमें से लगभग २०० ठेके देहात के गांव मे हैं। गांव के लोगों ने पचायतों के द्वारा प्रस्ताव पास करके भिजवाये कि उनके गाव से शराब का ठेका उठा लिया जाये। परन्तु कुछ वर्ष पूर्व कुछ ग्रामो के ठेके बन्द हुए, अब तो हरयाणा सरकार ने पचायत के प्रस्तावो पर ध्यान देना ही बन्द कर दिया है और नये ठेके भी देहात में खोले जा रहे है। पिछले वर्ष बालावास जि० हिसार में यही हुआ – आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की प्रेरणा और देखरेख में वहां धरना दिया गया। ६ महीने तक जब एक बोतल भी शराब के ठेकेदार की नही बिकी तब ठेका बन्द कर दिया गया। पिछले वर्ष अनेक पंचायतों ने सरकार के पास ठेका बन्द करने के प्रस्ताव भेजे, परन्तु सरकार ने वे ठेके फिर से नीलाम कर दिये। हरयाणा के पंचायत एक्ट मे यह प्रावधान है कि यदि ग्राम पंचायत सितम्बर के महीने तक प्रस्ताव पास करके अक्तूबर से पहले सरकार को प्रस्ताव भेज दे तो आने वाले वर्ष में वहा ठेका नही चलेगा। अपने इस कानून की धज्जियां सरकार स्वयं उड़ा रही है। सरकार को चाहिए तो यह कि यदि निश्चित तिथि के बाद भी यदि ठेका नीलाम होने से एक दो महिने से पहले भी प्रस्ताव पहुंच जाये तो भी वहां ठेका नीलाम नहीं होना चाहिए।

सरकार को जनता में आई इस चेतना को प्रोत्साहित करना चाहिए। इस देश में कांग्रेस की सरकारें और विरोधी दल की सरकारे भी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का नाम तो लेती रहती हैं। उनके कार्यक्रमों पर अमल का आश्वासन भी देती रहती हैं परन्तु उत्साहित करना तो दूर, अब तो गांधी जी की जन्मभूमि गुजरात को छोडकर सब प्रदेशों में शराब के ठेकों से अधिक से अधिक राजस्व कमाने की होड़ सी लग गई है। तमिलनाडु में कांग्रेस और द्रमुक की सरकारों में दो चार वर्ष पूर्व तक प्रदेशों में पूरी तरह शराबबन्दी रही, परन्तु अब वहा भी खुल गई। जनता की मांग के बावजूद राजस्व के लालच मे वहां भी सरकार कह कह कर भी फिर से मद्यनिषेध कानून लागू नहीं कर रही।

हरयाणा की सरकार तो पजाब को पीछे छोड़ देना चाहती है। बड़े दुःख की बात है कि हरयाणा सरकार जनता की इस चेतना मे यही नहीं कि मददगार नहीं हो रही बल्कि जिद्द लगाकर लोगों की इच्छा के विरुद्ध ठेके चलाना चाह रही है। पिछले वर्ष मजबूर होकर ही बालावास से ठेका उठाया गया। नाहरी जि० सोनीपत के लोगो के पास प्रस्ताव समय से पहले भेजने के सब सबूत भी हैं और विवश होकर उनको अदालत में जाना पड़ा, परन्तु सरकार और उसके आबकारी कमिश्नर तथा कुछ अन्य अधिकारी अपनी इज्जत का सवाल बनाये बैठे हैं। ठेका तो वहां बन्द पड़ा है और बन्द ही रहेगा, क्योकि महिलायें मैदान में उतर आई हैं। वे अपने घर और इज्जत को बचाने का सङ्कल्प कर चुकी हैं। पूरी जनता उनके साथ है।

हरयाणा मे कांग्रेस की सरकार है और चाहे कांग्रेस के अन्दर सब तरह का माल आगया है, तो भी अभी गांधी जी का नाम श्रद्धापूर्वक सबको लेना पड़ता है। हमारे मुख्यमन्त्री तो बिशनोई होने के नाते जम्भेश्वर महाराज का नाम भी श्रद्धा से लेते हैं। फिर अधिकारियों द्वारा पंचायत एक्ट की खिलाफवर्जी क्यों? मैं उन से अनुरोध करूगा कि वे अधिकारियों को आदेश दे कि वे किसी गरीब लिपिक से गलत बयान दिलवाकर मामले को उलझाने से बाज आये और ग्रामीण जनता को अपनी बहू-बेटियों की इज्जत बचाने नवयुवकों के स्वास्थ्य की रक्षा करने और गांव के गिरते चलन को सुधारने के लिए किये गये प्रयास मे सहायक बने, रोड़ा नही।

नाहरी में जो धरना चल रहा है, उसने एक नई दिशा दी है, शराबबन्दी आन्दोलन को। शराब में जो पैसा बर्बाद होता है और पुरुष जब हिंसक पशु बन जाता है, उसका सारा अभिशाप महिलाओं को ही भोगना पड़ता है। उनको शराबी पति से मार खाकर या अपने बच्चों को भूखा नङ्गा देखकर बेबसी में आंसू बहाने पडते हैं। उन्होंने अपनी इज्जत और अपने मासूम बच्चों के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए कदम उठाने शुरु किये हैं, राष्ट्र के लिए ये बहुत अच्छे संकेत हैं। मैं नाहरी ग्राम की महिलाओं को बधाई देते हुए हरयाणा प्रदेश की महिलाओं और जनता से शराब जैसी लानत को हरयाणा की पवित्र धरती से मिटाने की अपील करता हूं।

प्रो० शेरसिंह, सभा प्रधान

आर्यसमाजें तथा दानी महानुभाव हरयाणा में शराबन्दी आन्दोलन के लिए आर्थिक सहायता भेजकर सहयोग प्रदान करें।

सभामन्त्री

समस्या समाधान हेतु

१९७० का ऐवार्ड लागू किया जाये अथवा फैसला जनता पर छोड़ें

'सर्वहितकारी' तथा 'पंजाब केसरी' दिल्ली १९ अप्रैल १९८५ के आपने लेख की प्रतिलिपि भेजते हुए प्रो० शेरसिह ने प्रधानमन्त्री, रक्षा मन्त्री, गृहमन्त्री, शिक्षामन्त्री तथा सभी राजनीतिक दलों के नेताओ चौ० चरणसिह, श्री मोरार जी देसाई, श्री लालकृष्ण अडवाणी, श्री मधु दण्डवते, श्री शरद पंवार, श्री एन० टी० रामाराव, श्री इन्द्रजीत गुप्त आदि को पत्र लिखे हैं। सभी नेताओ से अपील की है कि हरयाणा के साथ हो रहे अन्याय को अन्याय माने और अकालियो की नाजायज खुशामद छोडकर देश की एकता को बचाने के लिए उग्रवादियो और राष्ट्रद्रोहियों से सख्ती से निपटें। साथ ही उन्होने यह भी कहा है कि राजनीतिक दलों ने पंजाब के मामलों को अकालियों से सौदेबाजी करके उसे भूत बनाकर खड़ा कर दिया है।

यदि १९७० का फैसला लागू करने का दम राजनैतिक दलो में नहीं है तो बीच से निकल जायें और सभी इलाको और गांवो पर छोड़ दे वही फैसला करें कि उनको पजाब मे जाना है या हरयाणा मे। चण्डीगढ़ और फाजिल्का अबोहर का फैसला भी वहा की जनता स्वय करे।

हरयाणा में लोकदल धरना देगा

रोहतक, २५ अप्रैल (निस)। हरयाणा लोकदल ने मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल के प्रस्तावित महापंजाब फार्मूले का विरोध करने के लिये एक मई से राज्यव्यापी जनसम्पर्क अभियान आरम्भ करने का निर्णय किया है। पिछले दिनों दो दिवसीय बैठक यहां सम्पन्न हुई।

हरयाणा लोकदल के अध्यक्ष एवं भूतपूर्व सांसद चौ० मनोहर लाल सैनी ने बताया कि उनकी पार्टी हरयाणा के वर्तमान अस्तित्व को बचाये रखने के लिये संघर्ष करेगी। इसीलिये एक मई को राज्यभर में जिला मुख्यालयों पर धरने दिये जायेंगे।

उन्होंने कहा कि पंजाब समस्या हल करने के लिये १९७१ का प्रधानमन्त्री एवार्ड तुरन्त लागू किया जाये।

(दैनिक ट्रिब्यून २६-४-८५)

सर्वपाल (खाप) गौरक्षा पंचायत

५ मई, तदनुसार दिन रविवार को प्रातः ११ बजे हमारे मेवात क्षेत्र के ग्राम बादस तहसील नूह जिला गुड़गांवा (निकट बड़कली, दिल्ली-अलवर रोड) में सभी पालों (खापों) के सरदारान एवं अन्य मौजिज साहिबान की महत्त्वपूर्ण पंचायत गौरक्षा के मुद्दे को लेकर होने जा रही है जिसमें खुले दिल और सच्चाई के साथ विचार विमर्श करके फैसला लिया जाना है। अतः इस पंचायत को अहमीयत (महत्त्व) को समझते हुए आप साहिबान ठीक समय पर पहुंचने की कृपा करें। आप सभी सादर आमन्त्रित हैं। निवेदक

संयोजक	पाल चौबीसी, पाल रावत,
बाल दिवाकर हंस	पाल मोतरौल, पाल डागर,
प्रधान संचालक, आर्यवीर दल	पाल तेबतिया

आर्य भाईयों को सूचना

आप भी अपनी आर्यसमाज में एक बार चित्रपट पर फिल्म की भांति रंगीन स्लाइड्स द्वारा शानदार प्रचार करवाकर अनुभव करें। इसमें दहेज, मांस मदिरा के विरुद्ध तथा शहीदों के बलिदान पर्दे पर देखने को मिलेंगे। साथ साथ जोशीले गीत भी आप सुनकर फड़क उठेंगे। बिजली का प्रबन्ध अवश्य हो।

आशानन्द भजनीक १/६३५१, आर्य भवन
प्रतापपुरा गली नं० २, वेस्ट रोहतास नगर शाहदरा दिल्ली-३२

वैद्य की आवश्यकता

प्यारेलाल द्राक्षादेवी धर्मार्थ औषधालय ग्राम जसराना जिला सोनीपत के लिए एक मिशनरी भावना से कार्य करने वाले वैद्य की आवश्यकता है।

इच्छुक वैद्य अपने अनुभव योग्यता आदि के प्रमाण-पत्र निम्न, लिखित पते पर आवेदन करें। हरकिशन मलिक
सी० ४-सी० सी० कालोनी दिल्ली

शराब के ठेके पर वेदप्रचार

ग्राम नाहरी जिला सोनीपत में शराब के ठेके को बन्द करवाने के लिये धरना जारी है। गत सप्ताह सभा की ओर से सभा के उपदेशक ब्र० महेन्द्र शास्त्री तथा पं० सुमेरसिंह की भजनमण्डली का शराब के ठेके के सामने वेदप्रचार का आयोजन किया। ग्रामीण जनता पर इसका अच्छा प्रभाव रहा।

मन्त्री आर्यसमाज नाहरी

आचार्य की आवश्यकता

कन्या गुरुकुल गणियार जिला महेन्द्रगढ के लिए प्राज्ञ, विशारद शास्त्री परीक्षाओं के योग्यता पूर्वक शिक्षण के लिए एक सुयोग्य आचार्या की आवश्यकता है। अपनी शैक्षिक योग्यता एवं अनुभव आदि के उल्लेख पूर्वक निम्नलिखित पत्ते पर आवेदन भेजें अथवा व्यक्तिगत सम्पर्क करें। ५०० रु० मासिक दक्षिणा के अतिरिक्त भोजन, आवास आदि की सब सुविधाएं प्रदान की जाती हैं।

कन्या गुरुकुल गणियार में प्रवेश आरम्भ

यह सूचित किया जाता है कि कन्या गुरुकुल गणियार तहसील नारनौल जिला महेन्द्रगढ में प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री (कुरुक्षेत्र विश्व-विद्यालय) की परक्षाओं में प्रवेश आरम्भ है। विद्यालय में मिडिल व मेट्रिक पास छात्राओं को प्रवेश दिया जाता है। विशेष जानकारी के लिए गुरुकुल की नियमावली मंगवाएं अथवा व्यक्तिगत सम्पर्क करें।

नोट—कन्या गुरुकुल गणियार नारनौल—रेवाड़ी रोड पर चम्पपुरा बसस्टाप के निकट अवस्थित है। कलावती आचार्या
कन्या गुरुकुल गणियार तहसील नारनौल
जिला महेन्द्रगढ

गुरुकुल में यज्ञ प्रवचन

महाशय हीरालाल गुरुकुल किशनगढ घासेड़ा, जिला महहेन्द्रगढ के ७ वें वार्षिकोत्सव पर ४-५ मई शनिवार, रविवार को विशेष यज्ञ, प्रवचन व सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है।

चन्द्रमोहन आर्य
संवाददाता, युवा उद्घोष (पाक्षिक)

सम्पादक के नाम पत्र

सभा के मुखपत्र 'सर्वहितकारी' का "गुरुकुल कुरुक्षेत्र विशेषांक" मिला। विशेषांक वास्तव में आकर्षक एवं प्रभावशाली था। इसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वानों के लेख पढ़ने को मिले। साथ-२ गुरुकुल कुरुक्षेत्र के सम्बन्ध मे काफी जानकारी मिली। गुरुकुलों की महत्ता के बारे में काफी प्रकाश डाला गया है। रामकुमार आर्य
आर्यसमाज दुल्हागढ गोहना (सोनीपत)

(पृष्ठ २ का शेष)

ऋषिकुल हरिद्वार के मासिक पत्र में छपा 'पुराणों के जितने अंश वेदानुकूल हैं वही हिन्दू मात्र को मान्य हैं और जो वेद के प्रतिकूल हैं वे सर्वथा अग्राह्य हैं।' 'भारत मित्र' कलकत्ता ने वेद को सर्वोच्च घोषित किया और धर्म विषय में पुराणों के सबसे निम्न कोटि में रखा। पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र ने अष्टादश पुराण दर्पण पुस्तक में पुराणों में बहुत सी अशुद्धियां मानकर कहा था उन्हें दूर करने पर बल दिया। मालवी जी ने बड़े मार्मिक शब्दों में कहा कि यदि जीवित रहना चाहते हो तो पुराणों का संशोधन करना होगा। इसी कार्य के लिये तब एक सनातनी सेठ ने २५००० रु० की बड़ी राशि दान में दी थी।

१-२-३ दिसम्बर १९१६ को आर्य कुमार सभा रोपड़ ने सनातन धर्म कुमार सभा को 'वेद स्वतः प्रमाण हैं अथवा पुराण' विषय पर शास्त्रार्थ को चुनौती दी। उत्तर में सनातनियों ने कहा 'हम केवल वेद को ही स्वतः प्रमाण मानते हैं और किसी को नहीं।'

सनातनी हिन्दू अब ऋषि दयानन्द की सब बातों को मानते हैं ईश्वर इन्हें बल बुद्धि दे ताकि हमारे ये सनातनी भाई अब केवल मानने तक ही सन्तोष न करें। अपितु पवित्र वैदिक सच्चाइयों को फैलाने के लिये प० लेखराम स्वामी श्रद्धानन्द व श्याम भाई की भांति सिर धड़ की बाजी लगाकर जाति का बेड़ा पार करे। कल्याण उत्थान का केवल यही एक मार्ग है और कोई दूसरा कारण नहीं।

वैदिक पुत्रेष्टि पद्धती

(महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित)

आचार्य सुदर्शनदेव सभा उपमन्त्री

(गतांकों से आगे)

ऋतुदान—

१—मनु आदि महर्षियों ने ऋतुदान का समय का निश्चय इस प्रकार से किया है। सदा पुरुष ऋतुकाल में स्त्री का समागम करे और अपनी स्त्री के बिना दूसरी स्त्री का सर्वदा त्याग रखे। वैसे स्त्री भी अपने विवाहित पुरुष को छोड़ के अन्य पुरुषों से सदा पृथक् रहे। ऋतुदान के १६ दिनों में पौर्णमासी, अमावस्या, चतुर्दशी वा अष्टमी आवे उसको छोड़ देवे। इनमें स्त्री पुरुष रतिक्रिया कभी न करे।

२—स्त्रियों का ऋतुकाल १६ दिन का है अर्थात् रजोदर्शन दिन से लेके १६ दिन तक ऋतु समय है। उनमें से प्रथम की चार रात्रि अर्थात् जिस दिन स्त्री रजस्वला हो उस दिन से लेके चार दिन निन्दित हैं। इन चार रात्रियों में पुरुष स्त्री का स्पर्श और स्त्री पुरुष का सम्बन्ध कभी न करे। इन चार रात्रियों में समागम करना व्यर्थ और महारोग कारक है। जैसे प्रथम की चार रात्रियां निन्दित हैं वैसे ११ वीं और १३ वीं रात्रि भी निन्दित है और शेष दस रात्रियां ऋतुदान में श्रेष्ठ हैं।

३—जिनको पुत्र की इच्छा हो वे छठी, आठवीं, दसवीं, बारहवीं, चौदहवीं और सोलहवीं ये छः रात्रि ऋतुदान में उत्तम जानें। किन्तु इनमें भी उत्तरोत्तर श्रेष्ठ हैं।

४—जिनको कन्या की इच्छा हो वे पांचवीं, सातवीं, नवीं और पन्द्रहवीं ये चार रात्रि उत्तम समझें।

५—पुरुष के अधिक वीर्य होने से पुत्र और स्त्री के आर्त्तव अधिक होने से कन्या तुल्य होने से नपुंसक पुरुष वा वन्ध्या स्त्री, क्षीण और अल्पवीर्य होने से गर्भ नहीं रहता अथवा गिर जाता है।

जो पूर्व ८ निन्दित रात्रि कही हैं, उनमें जो स्त्री का संग छोड़ देता है वह गृहाश्रम में रहता हुआ भी ब्रह्मचारी ही कहाता है।

६—ऋतुदान के पश्चात् थोड़ा ठहर के स्त्री और पुरुष दोनों स्नान करें।

७—यदि शीतकाल हो तो प्रथम केशर, कस्तूरी, जायफल, जावित्री, छोटी इलायची डालकर गर्म करके रखे हुए शीतल दूध का यथेष्ठ पान करके स्त्री, पुरुष पृथक् २ शयन करें।

भोजन—

१—उत्तम सन्तान बनाने का मुख्य हेतु स्त्री और पुरुष के आहार पर निर्भर है। इसलिए पति, पत्नी अपने शरीर और आत्मा की पुष्टि के लिए बल और बुद्धि आदि वर्धक सर्वोषधि का सेवन करे। सर्वोषधि यह है—दो खण्ड आम्बा हल्दी, दूसरी खाने को हल्दी, चन्दन, मुरा, कुष्ठ, जटामासी, मोरबेल, शिलाजीत, कपूर, मुस्ता, भद्रमोथ। इन सब औषधियों को बराबर लेकर चूर्ण बना लेवें। उसे गूलर के काष्ठ पात्र मे गाय के दूध के साथ जमाकर दही को गूलर की रई से बिलोकर मक्खन निकालें। उसको ताय कर घी बनाकर, उसमें केसर, कस्तूरी, जायफल इलायची और जावित्री मिलाकर नित्य प्रात: काल उसमें से संस्कार विधि के अनुसार यज्ञ करे। (एक सेर दूध म एक छटांक सर्वोषधि और एक सेर घी में एक रत्ती कस्तूरी आदि मिलाना है)।

इसी संस्कारित घी को दोनों पति पत्नी खीर अथवा भात के साथ मिलाकर यथारुचि भोजन करें। तत्पश्चात् रात्रि में गर्भ स्थापन करें। ऐसा करने से सुशील, विद्वान्, दीर्घायु, तेजस्वी, सुदृढ और निरोग पुत्र उत्पन्न होता है।

२—यदि कन्या की इच्छा हो तो जल में चावल पकाकर पूर्वोक्त संस्कारित घृत और गूलर के पात्र में जमाए हुए दही के साथ भोजन करने से उत्तम गुणयुक्त कन्या उत्पन्न होती है। क्योंकि—'आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्त्व शुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः' (छान्दोग्य ७।२६।२)। शुद्ध आहार अर्थात् शराब, मांस आदि से रहित, घी, दूध, चावल, गेहूं आदि के आहार से अन्त:करण की शुद्धि, बल, पुरुषार्थ, आरोग्य और बुद्धि की प्राप्ति होती है।

३—रजस्वला होने में जब १२, १३ दिन शेष रहें तब शुक्ल पक्ष में १२ दिन तक पूर्वोक्त संस्कारित घृत मिलाकर इस खीर का भोजन करके १२ दिन का व्रत कर अर्थात् मिताहारी होकर ऋतु समय में गर्भ ग्रहण करे तो अत्युत्तम सन्तान होवे।

४—जैसे सब पदार्थों को उत्कृष्ट करने की विद्या है वैसे सन्तान को उत्कृष्ट करने की यही विद्या है। इस पर सब मनुष्य बहुत ध्यान देवें, क्योंकि इसके न होने से कुल की हानि, नीचता और होने से कुल की वृद्धि और उत्तमता अवश्य होती है।

५—यदि दो ऋतुकाल व्यर्थ चले जाएं अर्थात गर्भस्थिति न होवे तो तीसरे महीने में जब ऋतुकाल आए तब पुष्य नक्षत्र से युक्त ऋतुकाल दिवस के प्रथम प्रातःकाल में पहली बार ब्याई गाय का दही दो माशा और जौ के दाणों को सेक कर, उन्हें पीसकर दो माशा लेकर पत्नी के हाथ में देवे और उससे पति तीन बार पूछे—किं पिबसि ! और स्त्री अपने पति को तीन बार उत्तर देवे-पुंसवनम्। तत्पश्चात् उसका प्राशन करे अर्थात् खावे। इस रीति से तीन बार विधि करना। तत्पश्चात् सङ्खाहूली व भट कटाई औषधि को जल में बारीक पीसकर, उसका रस कपड़े से छानकर पति पत्नी के दाहिने नाक के छिद्र में डाले और पति—

> ओ३म् इयमोषधि त्रायमाणा सहमाना सरस्वती।
> अस्या अहं बृहत्या: पुत्रः पितुरिव नाम जग्रभम्॥
> पार० १।१३।१॥

इस मन्त्र से जगत् नियन्ता परमात्मा की प्रार्थना करके, ऋतुदान विधि करे।

६—गर्भ ग्रहण के पश्चात् स्त्री भोजन, छादन का सुनियम करे। कोई मादक शराब आदि, रेचक हरड़ आदि, क्षार अति लवण आदि, अति अम्ल अर्थात् अधिक खटाई, रूक्ष चणे आदि, तीक्ष्ण अधिक लाल मिर्च आदि स्त्री कभी न खावे, किन्तु घी, दूध, मीठा, सोमलता अर्थात् गिलोय आदि औषधि, चावल, दही, गेहूं, उड़द, मूंग, तूअर आदि अन्न और पुष्टिकारक शाक खावे। ऋतु- ऋतु के मसाले गर्मी के ठण्डे सफेद इलायची और सर्दी में केसर, कस्तूरी आदि डालकर खाया करें। युक्त आहार-विहार सदा किया करे। दूध में सूंठी और ब्राह्मी औषधि का सेवन स्त्री विशेष किया करे जिससे सन्तान अति बुद्धिमान्, रोगरहित, शुभ गुण कर्म स्वभाव वाला होवे।

७—गर्भ के दूसरे वा तीसरे महीने में बड़ के वृक्ष की जटा वा उस की पत्ती लेकर स्त्री को दक्षिण नासिका से सुंघावे और पुष्टिकारक गिलोय वा ब्राह्मी औषधि खिलावे।

८—स्त्री सुनियम से युक्त आहार-विहार करे। विशेष कर गिलोय ब्राह्मी औषधि और सूंठी को दूध के साथ थोड़ी थोड़ी खाया करे और अधिक सोना, अधिक भाषण, अधिक खारा, खट्टा, तीखा, कड़वा, रेचक हरड़े आदि न खावे। हलका आहार करे। क्रोध, द्वेष, लोभ आदि दोषों में न फंसे। चित्त को सदा प्रसन्न रखे।

९—गर्भ मास से चौथे महीने में शुक्लपक्ष में जिस दिन मूल आदि पुरुष नक्षत्रों से युक्त चन्द्रमा हो उस दिन यज्ञ से बची हुई खिचड़ी में घृत डालकर स्त्री अपनी परछाई घी में देखे। उस समय पति स्त्री से पूछे—किं पश्यसि ? स्त्री उत्तर देवे-प्रजां पश्यामि। तत्पश्चात् स्त्री उस खिचड़ी का भोजन करे।

क्रमशः

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

पूर्ण मद्यनिषेध पर पुनर्विचार हो

राधेश्याम आर्य एडवोकेट मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ० प्र०)

केन्द्र में कांग्रेस की सुदृढ़ सरकार बनने और युवा प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी द्वारा सार्वजनिक जीवन से भ्रष्टाचार समाप्त करने का आह्वान करने से निःसंदेह नैतिक मूल्यों में अभी भी प्रगाढ़ आस्था रखने वालों को कुछ राहत मिली है। वास्तव में जब तक हमारी सरकारें शराब बेचकर धनार्जन करती रहेंगी, तब तक सार्वजनिक क्षेत्र से भ्रष्टाचार दूर करने का प्रश्न ही नहीं पैदा होता यही कारण था, आजादी के पूर्व वह व्यक्ति कांग्रेस का सदस्य नहीं बन सकता था, जो शराब पीता हो। महात्मा गांधी ने स्वयं कहा था कि स्वतन्त्र भारत की सरकार का पहला कार्य शराब की सारी दुकानों को बन्द करने का होगा। शराब पीने से मन व मस्तिष्क पूर्णतः दूषित हो जाता है; सोचने समझने की शक्ति समाप्त हो जाती है। शराब पीने से राष्ट्र की वर्तमान व भावी पीढ़ी बर्बाद हो रही है। एक जन कल्याणकारी सरकार, जिसने भारतीय संविधान में उल्लिखित नीति निर्देशक सिद्धांतों पर अमल करने की शपथ ली हो, यदि शराब को प्रोत्साहित करती है, तो इससे बड़ा देश का दुर्भाग्य और क्या होगा? आशा है भारत २१ वीं सदी के स्वर्णिम प्रभात की ओर ले जाने की घोषणा करने वाली श्री राजीव गांधी की सरकार इस दिशा में संकल्प-बद्ध होकर पुनर्विचार करेगी और गांधी जी स्वप्नों का रामराज्य लाने के लिए समस्त देश में एक साथ पूर्ण मद्य-निषेध की नीति लागू करेगी।

जीन्द शहर में आर्य वीर दल का प्रसार एवं प्रचार

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आर्यसमाज की युवा शक्ति अब धीरे धीरे जाग्रत और संगठित होने लगी है। इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है कि जीन्द में तीन आर्यसमाज हैं जिनके अपने अपने तीन सुन्दर मन्दिर हैं। आर्यसमाज रामनगर तो अत्यन्त रमणीक स्थान पर बना हुआ है। तीनों समाज मन्दिरों में आर्य वीर दल की प्रातःकालीन शाखायें लगती हैं। आर्यसमाज रामनगर रोहतक रोड में लगने वाली शाखा तो अत्यन्त प्रेरणास्पद और दर्शनीय होती है जिसमें लगभग ३५-४० आर्य वीर आसन, खेलकूद आदि करते हैं।

आर्यसमाज जीन्द शहर की शाखा कुछ शिथिल चल रही है। परीक्षाओं के बाद इसमें गति में आने की पूरी संभावना है। विशेष प्रसन्नता तो यह है कि आर्यसमाज जीन्द जक्शन पर भी शाखा लगने लग गई है। इससे हमारा यह सपना तो एक बार साकार हो ही गया है कि तीनों मन्दिरों में आर्य वीरों की चहल पहल लगी है। उनकी शाखायें खड़ी हों। इसके लिए जीन्द जिले के उत्साही मण्डलपति श्री रामलाल जी आर्य बधाई के पात्र हैं। यह सारा प्रचार प्रसार उन्हीं की कर्मठता से हुआ है।

ज्ञातव्य है कि सीमित साधन होते हुए भी आर्य वीर दल जीन्द ने अपने खर्च पर दो आर्य वीर श्री वीरसेन जी (रामनगर) और सहदेव आर्य (पटियाला चौक) गुरुकुल कुरुक्षेत्र में प्रशिक्षणार्थ भेजे थे। उन्होंने वहां प्रशिक्षण लिया और अब दल कार्य स्वयं संचालने में समर्थ हो गये हैं। हमारे उत्साही आर्य वीर सर्वश्री सुभाष आर्य, रामवीर आर्य, दलबीर आर्य, करणसिंह आर्य तथा अन्य सभी सैनिक पूरे जोरों से जुटे हुवे हैं ताकि युवाशक्ति को जगाकर रचनात्मक कार्य में लगाया जा सके। आर्यसमाज और वेदप्रचार का भविष्य इन युवाओं के हाथों में सुरक्षित रहे, यही हमारी मंगल कामना है।

प्रो० ओमकुमार आर्य
बौद्धिकाध्यक्ष आर्यवीर दल हरयाणा

आर्यसमाज शान्ति नगर सोनीपत में शहीदी दिवस

आर्यसमाज शान्ति नगर सोनीपत में साप्ताहिक सत्संग 'शहीदी दिवस' के रूप में मनाया गया। यज्ञ आदि के पश्चात् सर्वश्री सोमराज मनीष कुमार, अनीष कुमार, सतीश कुमार ने प्रभु भक्ति के गीत गाकर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए जलियांवाला बाग में तथा अन्य शहीद होने वाले महापुरुषों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हरिचन्द स्नेही मन्त्री आर्यसमाज ने कहा कि हम सबको देश की एकता एवं अखण्डता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिये सदैव तत्पर रहना चाहिये।

प्रचार मन्त्री आर्यसमाज शान्ति नगर सोनीपत

आर्यसमाज सैक्टर ३ फरीदाबाद में यज्ञशाला का उद्घाटन

आर्यसमाज नं० ३ न्यू टाउन की नवनिर्मित यज्ञशाला एवं रसवन्त सरोवर (प्याऊ) का उद्घाटन समारोह पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यजगत् के प्रकाण्ड विद्वान्, तपोनिष्ठ आचार्य प्रवर प्रेमभिक्षु जी ने जहां अपने कर-कमलों से यज्ञशाला का शखध्वनि के साथ उद्घाटन किया। वहां १२-४-८५ से १४-४-८५ तक अपने वेदामृत का जनता को पान कराते रहे। श्रीयुत गुलाबसिंह जी राघव ने अपनी संगीत कला से जनता को विभोर कर दिया। हरयाणा के विधायक, कर्मठ समाज सेवी, युवक हृदय सम्राट् श्री ए० एस० चौधरी ने वेदमन्त्रों के मध्य दीपक जलाकर प्याऊ का उद्घाटन किया तथा जनता को वचन दिया कि उक्त प्याऊ में पानी का अभाव नहीं होने दिया जायेगा। इसकी अध्यक्षता श्री एफ० एस० ध्वन जिला समाज कल्याण अधिकारी ने की। विधायक महोदय ने सार्वजनिक धर्मशाला के लिये जमीन दिलाने का भी वचन दिया। आर्यसमाज के प्रधान श्री बलदेवचन्द्र आर्य ने सभी का धन्यवाद किया तथा हजारों लोगों ने अन्त में एक साथ बैठकर प्रीतिभोज किया। सायंकाल आर्य कार्यकर्त्ताओं की संगोष्ठी श्री लक्ष्मणदास जी ब्रह्मचढ की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई और वेदप्रचार, निःशुल्क औषधालय तथा पुस्तकालय के निर्माण की योजना बनाई गई।

सत्यदेव आर्य मन्त्री आर्यसमाज

आर्यसमाजों के आगामी वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज नारंग (हिमाचल)	२ से ४	मई
,, खेल बाजार पानीपत जि० करनाल	३ से ५	,,
,, मालकाश जि० भिवानी	३ से ५	,,
,, झज्जर रोड रोहतक	६ से १२	,,
,, जगाधरी वर्कशाप जि० अम्बाला	६ से १२	,,
,, लोहारू जिला भिवानी	११, १२	,,
,, चबूतरों ,, अम्बाला	१० से १२	,,
,, मन्दोला ,, भिवानी	१८ से २०	,,
,, किशनपुरा माजरा जिला अम्बाला	१७ से १९	,,
आर्यवीर दल रोहतक	२४ से २६	,,
आर्यसमाज बारवन जिला अम्बाला	२४ से २६	,,
,, सेवासदन बल्लबगढ जि० फरीदाबाद	२७ मई से ३ जून	

जो आर्यसमाजें अपने उत्सव रखना चाहते हैं, वे शीघ्र तिथियां नियत करके सभा को सूचित करें, ताकि समय पर सभा की ओर से उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों का प्रबन्ध किया जाये।

सभा मन्त्री

सम्पादक के नाम पत्र

आदरणीय सम्पादक महोदय,

आपकी सर्वप्रिय पत्रिका 'सर्वहितकारी' का २८-३-८५ का गुरुकुल कुरुक्षेत्र विशेषांक एक मित्र के यहां पढ़ने को मिला। इसमें प्रकाशित लेखों एवं चित्रों को देखकर मन-मयूर नाच उठा।

मैं इस सदी के तीसरे दशक में गुरुकुल कुरुक्षेत्र का विद्यार्थी था। इस विशेषांक को देखते हो चित्र पटल पर बरसों से सुप्त स्मृतियां एका एक हरी भरी सजीव हो उठी। उन दिनों पहले पं० विष्णुमित्र जी और उनके बाद पं० सोमदत्त जी आचार्य पद को सुशोभित करते थे। एक कोई शास्त्री जी हमें संस्कृत व्याकरण पढ़ाते थे और विद्यार्थी जी अंग्रेजी। मैं अमृतसर का ठेठ पंजाबी भाषी गुरुकुल की संस्कृतनिष्ठ हिन्दी को भला क्या समझता।

एक दिन कोई शरारत कर बैठा। विद्यार्थी जी के हाथ में कीकर की पतली सी डण्डी थी। विद्यार्थी जी ने मेरे हाथ पर प्रहार करते हुए गर्जना की 'बाज आयेगा कि नहीं' मैं पंजाबी भाषी। पंजाब मे बाज चील नुमा उस पक्षी को कहते हैं जो आकाश से धरती पर पड़े किसी खाद्य पर झपटा करता है। जब विद्यार्थी जी ने एक और छड़ी जमाई और पूछा—बाज आयेगा कि नहीं। मैंने बालोचित सरलता से उत्तर दिया—नहीं। बस फिर क्या था विद्यार्थी जी आग बबूला होते गये। मुझ पर तड़ातड़ छड़ी बरसती गई और उनके बार बार पूछने पर कि बाज आयेगा कि नहीं। मैं हर बार नहीं नहीं रटता रहा। आखिर पीटते पीटते जब मैं धोबी का पटड़ा बन गया तो भीतर अन्तर्मन से आवाज आई—अरे मूर्ख ! विद्यार्थी जी को बार बार नहीं नहीं में उत्तर देकर बार बार पीट रहा है। एक बार हां भी कर देख शायद जान बच जाय।

इस बार जब विद्यार्थी जी ने हवा में छड़ी फटकारते हुए पूछा—बाज आयेगा कि नहीं, मैंने तुरन्त उत्तर दिया जी हां। बस विद्यार्थी जी की छड़ी थम गई। बोले पहले ही हां कही होती तो काहे को मार खाता। मेरी घिग्गी बन्ध गई थी। मैंने कहा—मुझे बाज का मतलब नहीं आता था। यह सुनते ही विद्यार्थी जी ने मुझे छाती से लगा लिया। उनकी आंखों से आंसू टपक पड़े। बोले—हाय ! मैंने यह क्या किया। मेरा सारा अवसाद उनके पश्चाताप से धुल गया। ऐसे होते थे पुराने अध्यापक। आजकल अध्यापक अपने विद्यार्थियो से भय खाते हैं। पढे पढ़ायेंगे खाक। परिणाम स्वरूप शिक्षा का स्तर निरतर गिर रहा है। विद्यार्थी उच्छृंखल हो रहे हैं। अनुशासन नाममात्र को नहीं रहा।

आपके गुरुकुल कुरुक्षेत्र विशेषांक को पढ़कर अपने बचपन की गुरुकुलीय स्मृतियों के पटल एक एक करके खुल रहे हैं।

कभी कभी गुरुकुल के विद्यार्थियों को अपने वात्सल्य का अमृत पिलाने गुरुकुल कांगडी से स्वामी श्रद्धानन्द जी यहा आते थे। उन दिनों मोटर गाडियों व बसो का प्रबन्ध न था। स्वामी जी कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से सजे धजे श्वेतवर्ण के बैलों से जुते रथ पर गुरुकुल पधारते थे। भव्य उन्नत ललाट तेजोमय नेत्र विशालवक्ष आजानू बाहु, गेरुवे वस्त्रों में अपने प्रिय शरीर पीली धोतियों में हम सब विद्यार्थी बारी बारी उनके चरणों का स्पर्श करते। स्वामी जी स्नेह-सने हाथों से सबको आशीर्वाद के मोती लुटाते। प्रत्येक से 'सुखी तो हो' न प्रश्न पूछते।

गुरुकुल के भव्य किन्तु अत्यन्त सादे विशाल भवन के बीचों बीच नीम के वृक्षों से घिरी यज्ञशाला थी। यज्ञशाला से प्रातः सायं हवन की सुगन्धित धूम से सारा भवन महक उठता था। यज्ञशाला के प्रहरी नीम के वृक्ष विद्यार्थियों को मुक्त हस्त से मीठी रसभरी निमोलियां लुटाते थे। भवन के बाहर दायीं तरफ कुए पर रहट प्रातः सायं टिकटिक की जल तरंग बजाता था। समीप ही स्नानागार था। हौज के दोनों तरफ विद्यार्थी अपने अपने पीतल के लोटों से सुख स्नान करके पुलकित हो उठते। गुरुकुल के समीप ही एक कच्ची सड़क कैथल आदि को जाती थी जिस पर कभी कभी कोई बैलगाड़ी अपने बैलों के गले में बन्धी छोटी छोटी घण्टियों की मधुर मधुर ताल के साथ पहियों के स्वर की बांसुरी बजाती; मनहर्षाती निकल जाती। सड़क के साथ ही रेल लाइन के उस पार एक नदी बहती थी। हम लोग उसे सरस्वती कहते थे। इस नदी में ही एक दिन एक विद्यार्थी तैरने को उतरा तो फिर सदा-२ के लिये वहीं समा गया।

गुरुकुल के आस पास सांपों की भरमार थी तिस पर भी हम लोग नंगे पांव ही बाहर निकलते और कभी कभी सांप का शिकार भी कर लाते। एक दिन प्रातः मैं जगल में शौच से निवृत्त होकर जसे ही उठकर खड़ा हुआ। सर्रर्र सी आवाज हुई और दो मीटर लम्बा कालानाग आंख झपकते ही वहीं बिल में घुस गया। आज सोचता हूं यदि अंधेरे में कहीं मेरा पांव नाग पर पड़ गया होता तो आज आप के पास मेरी यह दास्तां न पहुंच पाती। मैं तो साहब बच गया पर मेरे ही छात्रावास के एक होनहार विद्यार्थी कृष्णचन्द्र को कुछ ही दिन बाद रात को सोते समय एक काले नाग ने काटा और सदा सदा के लिए उसे हमसे छीन लिया। बाद में उस दुष्ट नाग को मारकर चिकित्सालय में एक बड़ी बोतल में बन्द करके स्मृति के रूप में रख दिया गया। अब इस बात को बीते साठ साल होने को हैं पता नही वह मृत नाग आज वहां है या नही।

कहां तक गिनाऊं वो भूली बिसरी कड़वी मीठी स्मृतियां अब तो इस पत्र का कलेवर ही समाप्त हो गया। अच्छा साहब इजाजत दीजिये अलविदा गुरुकुल के नये पुराने वासियो। अलविदा नीम के झुरमुट में बसी यज्ञशाला। अलविदा गुरुकुल की गोशाला खेतादि सबको।

धर्मदेव चक्रवर्ती १९ माडल बस्ती दिल्ली–५

आर्यसमाज छछरौली का वार्षिक उत्सव

६, ७, ८ अप्रैल को बड़ी धूमधाम से मनाया गया है, जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक पं० शेरसिह आर्य व विद्या भूषण जी के ओजस्वी भजनों द्वारा शहर में भारी प्रभाव पड़ा तथा यज्ञ में बैठकर कुछ लोगों ने यज्ञोपवीत भी लिए और आर्यसमाज के सदस्य बने। दुर्व्यसन छोड़ने की प्रतिज्ञा की। इनके अतिरिक्त पं० ज्योति सरुप आर्य व पण्डित रूवेलसिह आर्य तथा बहिन राजबाला आर्या के भी भजन हुए जिससे लोगों अथवा स्त्रियों में परिवर्तन लाया गया तथा संन्यासी अरण्य मुनि जी तथा आचार्य वागेश्वर जी व अजोतसिह शास्त्री द्वारा वेदप्रचार हुआ। सभी के प्रवचन ध्यानपूर्वक सुने। शोभायात्रा भी ६ अप्रैल को निकाली गई। आर्यसमाज छछरौली के आस पास की सभी आर्यसमाजों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया तथा अपना संगठन भी दिखाया। हरयाणा के हितों की रक्षा के बारे में भी प्रस्ताव पास किया गया है। अगर भारत सरकार ने हरयाणा के विरुद्ध कोई फैसला दे दिया तो हम सभी आर्यसमाजें अपनी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के आदेश के अनुसार जेल भरो आन्दोलन छेड़ देंगी और सरकार से मांग करती है कि महापंजाब बनाने की बजाय पंजाब को तीन भागों में बांट देना चाहिए ताकि आपस के झगड़े न पैदा हों इसी विषय पर उपमन्त्री श्री बीरसिह आर्य, आर्यसमाज चबूतरो ने भी अपना ओजस्वी भाषण दिया और प्रतिज्ञा की कि अगर हरयाणा के विरुद्ध कोई भी फैसला सरकार करती है तो हम बड़ी से बड़ी कुर्बानी तक भी दे देंगे और हरयाणा के इतिहासों में अपना नाम अमर कर देंगे।

मन्त्री मामचन्द आर्य
आर्यसमाज चबूतरो जि० अम्बाला

शराब बनाम तबाही

मदिरा के लिये मरते हैं बशर।
हालत खस्ता, मरने का कसर॥
किसने ये दिखाई ऐसी डगर।
तोड़ो प्याले, जीना है अगर॥

पीकर के नहीं अपने की खबर।
अच्छा बुरा कुछ, आये न नजर॥
सुअर की तरह, कीचड़ में पड़ा।
बर्बाद किए, हस्ती को खड़ा॥

क्या सोचा रे, नादान बशर।
अपनी तुलना, दुनियां से तू कर॥
पा ले तू अपनी खोई डगर।
आदत छूटे, कर ले तू सबर॥

तू सोया जग, जाग उठा।
तेरा लक्ष्य है, तुझसे जुदा॥
बेहोश तेरी, किस्मत है पड़ी।
हाँ मौत तेरे, बस दर पे खड़ी॥

मिटने को है, तेरा साया।
किस कदर रे पगले, भरमाया॥
तू छोड़ नशे की होड़,
अगर कुछ करना है।

जीने से नाता जोड़,
नहीं बस मरना है॥

अनिलकुमार पवार
अकौढ़ा कला जिला सहारनपुर



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

हरियाणा सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि०नं० १ सृष्टि संवत् १६,७२९४०८६



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १२, अङ्क २३ १४ मई १९८५ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रतिनिधियों से आवश्यक निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) दिनांक १९ मई रविवार को प्रातः ११ बजे सभा कार्यालय रोहतक में होगा।

गत वर्ष सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों द्वारा भेजे गये प्रतिनिधियों को आगामी ३ वर्ष की अवधि के लिये स्वीकार किया गया था, और जिन आर्यसमाजों की ओर से इस वर्ष का प्राप्तव्य [illegible], दशांश तथा सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क [illegible] हो चुका है, उनके प्रतिनिधियों को नियमानुसार इस [illegible] एजेण्डा तथा आनुमानिक बजट [illegible]

सभा से सम्बन्धित जिन आर्यसमाजों ने गत वर्ष अपने प्रतिनिधि नहीं भेजे थे, उन्होंने इस वर्ष प्रतिनिधि [illegible] कार्यालय में अपनी प्राप्तव्य धनराशि के साथ भेज दिये हैं, उनकी [illegible] पड़ताल करने के पश्चात् प्रतिनिधि स्वीकार [illegible] उनके पास भी अधिवेशन का एजेण्डा भेज दिया गया है।

परन्तु गत वर्ष के स्वीकृत प्रतिनिधियों के कुछ आर्यसमाजों ने अभी तक इस वर्ष की प्राप्तव्य धनराशि सभा को नहीं भेजी है, यद्यपि सभा कार्यालय की ओर से उनके पास पत्र लिखकर शुल्क भेजने के लिए स्मरण करवाया गया है, सभा के मुख पत्र सर्वहितकारी में भी इस सम्बन्ध में सूचनाएं प्रकाशित की गई हैं। इन आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों को भी इस निवेदन के साथ एजेण्डा भेजा गया है कि वे अपने आर्यसमाज की ओर से प्राप्तव्य शुल्क सभा कार्यालय में अधिवेशन की तिथि से पूर्व भिजवा देवें ताकि सभा के रजिस्टरों में शुल्क जमा करके उनके भी प्रवेश पत्र तैयार किये जा सकें।

कुछ आर्यसमाजों के अधिकारियों ने पत्र आदि लिखकर सूचना भेजी है कि वे सभा अधिवेशन में आने पर अपना शुल्क जमा करवा देंगे, परन्तु इस प्रकार सभा कार्यालय को प्रवेश पत्र तुरन्त तैयार करने में कठिनता रहेगी। अतः आर्यसमाजों के अधिकारियों से पुनः निवेदन है कि वे अपने किसी एक प्रतिनिधि को १८ मई को सभा कार्यालय रोहतक भेजने का कष्ट करें ताकि वे धनराशि जमा करवाकर अन्य प्रतिनिधियों के भी प्रवेश पत्र आदि तैयार करवाकर प्राप्त कर लेवें। सभा का कार्यालय आजकल प्रातः ८ बजे से सायंकाल ६ बजे तक कार्य कर रहा है।

प्रतिनिधि महानुभावों की सेवा में एजेण्डा (कार्य सूची) के साथ गत वर्ष का आय-व्यय तथा आगामी वर्ष का बजट (आनुमानिक आय व्यय) भी भेजा गया है। अतः बजट का ध्यान पूर्वक अध्ययन करें। सभा के प्रत्येक विभाग का लेखा जोखा इसमें अंकित है। आगामी वर्ष सभा के कार्यों का किस प्रकार विस्तार हो सकता है। इस विषय पर आप अपने सुझाव अधिवेशन से पूर्व लिखित रूप में सभा को भेज देवें, ताकि उन पर विचार हो सके।

अधिवेशन की कार्य सूची में एक महत्त्वपूर्ण [illegible] विषय शराबबन्दी आन्दोलन को सफलता पूर्वक चलाने का कार्यक्रम भी है। आपने सर्वहितकारी के गतांक में पढ़ा होगा कि बालावास के पश्चात् अब नाहरी जिला सोनीपत में भी शराब का ठेका रद्द करवाने के लिए धरना चालू है। महिलाएं भी इस धरने में मूल्यवान योगदान कर रही हैं। अतः उनकी जागरूकता का लाभ उठाते हुए हरयाणा के अन्य स्थानों में भी इसी प्रकार के धरने आरम्भ करने की आवश्यकता है। इस आन्दोलन में [illegible] को भी कार्य करने का [illegible] निवेदन है। [illegible] प्रतिनिधि अपने सुझाव देकर इस आन्दोलन को [illegible]। [illegible] रहा है। [illegible] सर्वखाप पंचायतें बुलाकर उसके नियम लागू करने का कार्य भी आवश्यक हो [illegible]। अतः सभा के अधिवेशन में इस विषय में भी अपना सहयोग तथा सुझाव देकर रचनात्मक कार्य [illegible] हेतु यह सभी योजनाएं पूरी होनी चाहिएं।

राष्ट्र द्रोही तथा उग्रवादी तत्व पंजाब में अपनी हिंसक गतिविधियां तेज करके भारत सरकार पर अपनी अनुचित मांगें मनवाने के लिए निरन्तर दबाव डाल रहे हैं। इनकी रोकथाम हरयाणा का आर्य समाज संघटित होकर ही कर सकता है। अकाली भी हरयाणा की शक्ति से घबराते हैं। अतः वे हरयाणा राज्य को ही भारत के नक्शे से समाप्त करने का षड्यन्त्र रच रहे हैं।

आशा है १९ मई को प्रतिनिधिगण भारी संख्या में रोहतक पधारेंगे तथा सभा के संगठन को और अधिक सुदृढ़ तथा प्रभावशाली बनाने में अपना योगदान देंगे।

निवेदक
रणजीतसिंह सभामन्त्री

आर्यसमाजों के आगामी वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज मन्दोला जिला भिवानी	१८ से २० मई
,, किशनपुरा माजरा जिला अम्बाला	१७ से १९ ,,
,, जीन्द शहर	२३ से २६ ,,
आर्यवीर दल रोहतक	२४ से २६ ,,
आर्यसमाज खारवन जिला अम्बाला	२४ से २६ ,,
,, गन्नौर शहर जिला सोनीपत	३१ मई से १, २ जून
,, फूंसगढ जिला करनाल	३१ ,, १, २ ,,
,, भाण्डवा जिला भिवानी	१, २ जून
,, अकालगढ जि० जीन्द	१ से ३ जून

जो आर्यसमाज अपने उत्सव रखना चाहते हैं, वे शीघ्र तिथियां नियत करके सभा को सूचित करें, ताकि समय पर सभा की ओर से उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों का प्रबन्ध किया जाये।

सभा मन्त्री

हरयाणा में शराबबन्दी आन्दोलन को सफल करने हेतु आर्यसमाजें व दानी महानुभाव उदारतापूर्वक धन भेजें

हरयाणा प्रदेश में शराबबन्दी आन्दोलन ने अब नया रूप धारण कर लिया है। गत वर्ष बालावास जिला हिसार में शराब का ठेका बन्द कराने के लिए आर्यसमाज तथा अन्य संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं ने निरन्तर ६ मास तक शान्तिपूर्वक धरना दिया था और ठेकेदार तथा सरकार को विवश होकर शराब का ठेका रद्द करना पड़ा था।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने इस कार्य को प्रगति देने के लिये श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी को प्रचारक नियुक्त किया और ग्राम पंचायतों को प्रेरणा दी गई कि वे अपने अपने ग्रामों से शराब के ठेके बन्द करवाने हेतु समय पर प्रस्ताव पास करके सरकार को भेज देवें। इस प्रकार काफी पंचायतों ने अपने प्रस्ताव समय पर भेज दिये। परन्तु सरकार ने पंचायत एक्ट की अवहेलना करके शराब की बिक्री से अपनी आय (राजस्व) बढ़ाने के लिए कई ऐसे ग्रामों में शराब के ठेके खोल दिये हैं, जहां की पंचायतों ने समय पर प्रस्ताव भेजकर ठेके बन्द करने का अनुरोध किया था। जिन ग्रामों में शराब के ठेके सरकार ने नीलाम कर दिये हैं, वहां बालावास तथा [illegible] की भांति धरनों का कार्यक्रम [illegible] रहा है। [illegible] के लिए [illegible] अधिकारियों द्वारा प्रचार [illegible] किया जा रहा है और [illegible] आदि छपवाकर वितरित किये जायेंगे। [illegible] सम्मेलनों का भी आयोजन किया जायेगा। [illegible] रोहतक में सभा के वार्षिक अधिवेशन पर नई [illegible] आन्दोलन के सम्बन्धी [illegible] पर विचार किया जायेगा।

इस महत्त्वपूर्ण कार्य संचालन के लिए सभा को धन की [illegible] आवश्यकता है। अतः आपसे अनुरोध है कि अपनी अपनी आर्यसमाजों की ओर से आन्दोलन संचालन हेतु अधिक से अधिक धन भेजकर इस रचनात्मक कार्य में सहयोग प्रदान करें।

आपके सहयोग के इच्छुक

ओमानन्द सरस्वती,	प्रो० शेरसिंह,	सूबेसिंह,	कन्हैयालाल महता
संरक्षक	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक

ऋषि सन्देश

हम सब प्रातः व सायं प्रार्थना करते हैं कि प्रभु हम सब पर चारों ओर सुख की धीमी धीमी वर्षा करे। अस्तु! परन्तु सुख की वर्षा तो क्या होनी है, दुःख ही बढ़ता जा रहा है। आखिर क्यों? आज चारों ओर दानवता दहाड़ रही है, गुण्डागर्दी बढ़ रही है, डाके, चोरी बलात्कारी बढ़ती जा रही है।

सब स्थानों पर यही रोना है। कोई दहेज के लिए चिल्लाता है, तो कोई बलात्कारी के लिए आर्य महिला सम्मेलन में भी यही बात दोहराई गई कि स्त्रियों को अपनी रक्षा के लिये तैयार होना चाहिए, परन्तु मैं पूछना चाहता हूं कि यह गुण्डे, बदमाश और धन के लालची पैदा किसने किए हैं, तो उत्तर मिलेगा कि नारी ने। जब नारी ही अपनी बर्बादी का कार्य कर रही है तो रक्षा भगवान् भी नहीं करेगा। हम यदि पाप करेंगे तो फल भी हमें ही भोगना पड़ेगा। प्यारे ऋषिवर ने स्त्री जाति को विद्या पढ़ने का अधिकार इसलिए दिलवाया था कि स्त्री जाति वेद पढ़ेगी और उसकी रीति के अनुसार सन्तान को धार्मिक बनावेगी और मनुष्यमात्र का जीवन सुखमय होगा, अस्तुः!

परन्तु हुआ क्या, स्त्री पढ़ने के नाम पर तितली बनकर बाजार में आ गई और अपने बनाओ संवार में लग गई। नाम तो हम सब लेते हैं वेद का परन्तु [illegible] हमारे परिवारों में घुस गई है, हर परिवार आकाश में उड़ना चाहता और उसके लिए चाहिए धन, माता पिता लड़कियों को इसी भावना को लेकर पढ़ाते हैं कि नौकरी लग जावे और [illegible] पति [illegible] अपने पांव पर खड़ी हो जावे और [illegible] लड़कियों को [illegible] सिखाते हैं। कोई यह नहीं सोचता कि [illegible] और [illegible] होने चाहियें। (यजुर्वेद [illegible] अध्याय [illegible] मन्त्र)

[illegible] को चाहिये कि [illegible], [illegible] और [illegible] को देखकर [illegible] होवें। परन्तु [illegible] पुरुषों को [illegible] है। [illegible] धन कमाने वाली चाहिये, जिसके लिए सभा पर पुरुषों का संग, नाच गाना; परस्पर मिलकर [illegible], तो ऐसी नारियां और पुत्र कहां से पैदा करेंगी। बच्चों को पैदा किया और छोड़ दिया गलियों में घूमने के लिए, और वह बच्चे [illegible] और बदमाश गुण्डे नहीं बनेंगे तो क्या होगा?

आजकल आर्यसमाज के स्कूलों और कालेजों में सह-शिक्षा जारी है इससे ब्रह्मचर्य का पालन हो सकेगा क्या? और बच्चे चरित्रवान् बन सकेंगे क्या?

आर्यो जागो, और वेदरीति को अपनाओ सत्यार्थप्रकाश को पढ़कें उसके अनुसार अपने जीवन को बनाओ, और तप करो। नारियां यदि अपने दुःख को हरना चाहती हैं तो वीर पुत्र पैदा करें, जिससे उनका कल्याण होगा।

यदि हम चाहते हैं कि ऋषि कार्य पूरा हो तो जो गृहस्थी हैं, संस्कार विधि के आधार पर सत्यार्थप्रकाश के उद्देश्य को सामने रखकर एक पुत्र पैदा करें और उसको गुरुकुल में पढ़ने के लिए भेजें। साठ साल के ऊपर के लोग घर बार छोड़कर प्रचार क्षेत्र में उतरें। आर्यसमाज की गद्दीयों को छोड़ें। ऋषि का कार्य करना है तो उनके पदचिन्हों पर चलना होगा। यम नियम का पालन करना होगा। त्याग की भावना को सामने रख निष्काम भावना से कार्य करना होगा। यह समझना होगा कि मैं आर्यसमाज रूपी यज्ञ की समिधा हूं और उसमें मैंने अपनी आहूति देनी है। इस भावना को लेकर कार्य करना होगा कि जो मुझे सहयोग देंगे उनका स्वागत करूंगा। इसको छोड़ दूंगा, कि अमुक व्यक्ति कार्य करेगा या धन देगा तो कार्य करूंगा। अपने आपको दीया और पत की अग्नि में डालना होगा, तभी वेद प्रचार होगा और हम ऋषिवर दयानन्द जी के सपनों को साकार कर सकेंगे। अस्तु!

देसराज चौधरी २१० इन्दिरा कालोनी रोहतक

सम्पादकीय

आर्य और आर्यसमाजी

हमारे देश का सबसे प्राचीन नाम आर्यावर्त था जिसकी सीमाओं का वर्णन महर्षि मनु, महर्षि पतञ्जलि और महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में किया है। उसी आर्यावर्त के खण्डित बड़े भूभाग को आज भारत, हिन्दुस्तान या इण्डिया कहा जा रहा है।

वैदिक परम्परानुसार आर्यावर्त में रहने वाले सदाचारी धार्मिक विद्वान् स्त्री पुरुष आर्य कहलाते थे और शेष दस्यु। आर्य और दस्यु का अथवा देवों और असुरों का संग्राम सृष्टि के प्रारम्भ से ही पढ़ने सुनने में आ रहा है। जबसे इस देश का नाम आर्यावर्त के स्थान पर हिन्दुस्तान पड़ा तब से यहां के निवासी आर्य हिन्दु कहे जाने लगे। विद्या के लोप और अविद्या के प्रसार से हिन्दुओं में नाना प्रकार के दोष और कुरीतियों ने डेरा जमा लिया। मनु आदि स्मृतियों को गुणकर्मानुसारी वर्ण व्यवस्था और आश्रम प्रणाली दूषित होकर जन्म के आधार पर ऊंची नीची कही जाने वाली सैकड़ों जाति उपजातियों ने मानव समाज को छिन्न भिन्न कर दिया। छुआछूत के भूत ने मानव समाज को इतना विकृत कर दिया कि उच्चवर्ण वा जाति ब्राह्मण आदि के घर में पैदा होने वाला अनपढ़ शराबी मांसाहारी व्यभिचारी व्यक्ति भी समाज में उच्च आसन का अधिकारी बना रहता और नीच कही जाने वाली जाति में उत्पन्न विद्वान् सदाचारी व्यक्ति भी नीच ही समझा जाता और तिरस्कृत होता था।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने व्याख्यानों लेखों और शास्त्रार्थों के द्वारा इस दूषित परम्परा पर वज्र प्रहार किया तथा प्राचीन वैदिक संस्कृति तथा सभ्यता की पुन: स्थापना की। महर्षि ने जहा वेदभाष्य ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, सत्यार्थप्रकाश और संस्कारविधि जैसे बड़े ग्रंथों की रचना की वहां व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि, आर्योद्देश्यरत्नमाला आदि छोटी छोटी किन्तु अतिमहत्त्वपूर्ण पुस्तकें भी लिखी हैं।

ऋषि के लघुतम ग्रन्थ "आर्योद्देश्यरत्नमाला" को ही लीजिये। इसमें सिद्धान्तसारभूत ईश्वर, धर्म, अधर्म, पुण्य, पाप, सत्यभाषण, विश्वास, परलोक, जन्म-मरण, स्वर्ग-नरक, विद्या, अविद्या, सत्पुरुष, तीर्थ, स्तुति, निन्दा, प्रार्थना, उपासना, मुक्ति, मुक्ति के साधन, जाति, आर्य, दस्यु (अनार्य), आर्यावर्त, वर्ण, आश्रम, यज्ञ, कर्म, प्रारब्ध, पुरुषार्थ, परोपकार, शिष्टाचार, सदाचार, आचार्य, गुरु, अतिथि, जड़, चेतन, पण्डित, मूर्ख, वेद, शास्त्र, पुराण आदि १०० शब्दों की परिभाषा लिखी गई है जो कि छोटे आकार की २३८ पंक्तियों में पूरी हो जाती है। इसी प्रकार आर्यसमाज के १० नियम तथा उद्देश्य भी २० पंक्तियों में समा जाते हैं। प्रत्येक विवेकशील व्यक्ति को महर्षि दयानन्द सरस्वती के छोटे बड़े ग्रन्थों का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिये।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने विद्या की वृद्धि और अविद्या के नाश के लिए सन् १८७५ ई० में आर्यसमाज की स्थापना की। संसार के सभी श्रेष्ठ व्यक्ति (स्त्री पुरुष) आर्यसमाज के सदस्य बन सकते हैं जो आर्य समाज के नियम उपनियमों में आस्था एवं श्रद्धा रखते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण १८८३ ई० के पश्चात् तत्कालीन आर्य महापुरुषों ने स्थानीय आर्यसमाज स्थापित किये। उन आर्यसमाजों को सगठित रखने के लिए प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं की स्थापना की गई और भारत तथा विदेशों की सभी प्रान्तीय सभाओं का एक सर्वोच्च संगठन 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम से भारत की राजधानी दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने किया।

ग्राम, कस्बा, नगर के न्यूनतम ११ आर्य पुरुषों वा महिलाओं के संगठन का नाम आर्यसमाज है। इस आर्यसमाज का नियमित सदस्य आर्यसमाजी कहा जाता है। इन समाजों से नियमानुसार चुने गये प्रतिनिधि प्रान्तीय सभाओं के साधारण सदस्य बनते हैं। इन साधारण सदस्यों में से ही नियमानुसार प्रान्तीय सभाओं के अधिकारी और अन्तरंग सदस्य चुने जाते हैं और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिये भी सदस्य चुनकर भेजे जाते हैं।

आर्यसमाज, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संगठनों को भलीभांति चलाने के लिये समाज और सभाओं के अधिकारी तथा अन्तरंग सदस्य अपने कार्यालयों में सवेतन कर्मचारियों, उपदेशकों, प्रचारकों आदि की नियुक्ति करते हैं। इस प्रकार की नियुक्ति करते समय यह विशेष ध्यान रखना चाहिये कि कर्मचारी आर्यसमाज के नियम उपनियमों में विश्वास रखने वाला, सदाचारी, धार्मिक और शिष्ट हो। नियुक्ति किसी प्रकार के दयाभाव, दबाव, लोभ वा भाई भतीजावाद में आकर नहीं करनी चाहिये। यदि भूल अथवा अज्ञान से कोई ऐसी नियुक्ति हो भी जावे तो सच्चाई का पता लगने पर तुरन्त सुधार कर देना चाहिये।

इसी प्रकार आर्यसमाज का सदस्य बनाते समय भी विशेष ध्यान रखना चाहिये। आर्यसमाजों के जो प्रतिनिधि चुनकर प्रान्तीय सभाओं और सार्वदेशिक सभा में भेजे जाते हैं वे तो और भी अधिक योग्य शिष्ट एवं सदाचारी होने जरूरी हैं।

आर्यों का खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा, आचार-विचार सामान्यजनों से विशिष्ट होना ही चाहिये। यदि आर्य और आर्यसमाजी बनकर भी कोई स्त्री-पुरुष मांस अंडा मच्छी खाता है, शराब हुक्का बीड़ी पीता है, सदाचार के नियमों का पालन नहीं करता तो उसके आर्य वा आर्यसमाजी बनने से उस व्यक्ति का तो भला होगा ही नहीं अपितु आर्यसमाज का बहुत बड़ा अहित (बदनामी) होगा। साधारण जनता समझेगी कि आर्यसमाजी ऐसे ही मक्कार, चोर, डाकू, दुर्व्यसनी दुराचारी और झूठे होते हैं। इससे आर्यसमाज के सिद्धान्तों की हानि होगी और आर्यसमाज में जो श्रेष्ठ व्यक्ति हैं उन्हें भी बदमाश पार्टी बाजी लोग सुख से नहीं रहने देंगे और आगे भी नहीं आने देंगे। अन्त में भले आदमी उदासीन वा तटस्थ होकर ही समाज मे निर्वाह कर सकेंगे और दुर्जन दनदनाते रहेंगे।

यदि आर्यसमाज वा सभाओं के अधिकारी और कर्मचारी शराबी कबाबी और दुराचारी हैं तो उनसे समाज सुधार, वेदप्रचार और संसार को आर्य बनाने की आशा रखना वन्ध्यापुत्र और शशश्रृंगवत् निष्फल होगी। जिसके जीवन में जो वस्तु नहीं है वह व्यक्ति कितना ही अच्छा वक्ता वा प्रचारक हो वह जनता को प्रभावित नहीं कर सकता। स्वयं धूम्रपान और मद्यपान करने वाला दूसरों को उपदेश देकर हुक्का बीड़ी शराब नहीं छुड़वा सकता। व्यभिचारी उपदेशक, सदाचार और ब्रह्मचर्य का क्या उपदेश करेगा? जिसने वेद पढ़े वा सुने ही नहीं वह क्या वेदप्रचार करेगा? स्वयं गड्ढे में गिरा हुआ दूसरों को गड्ढे से नहीं निकाल सकता, गिरा तो सकता है।

विगत ३० वर्षों से मैं देख रहा हूं पंजाब और हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभाओं में वेदप्रचार के नाम पर हजारों रुपये वेतन और मार्ग व्यय देकर उपदेशक प्रचारक रखे हुए हैं। वे समाजों के उत्सवों पर जाकर ढोलक चिमटा बजाकर, एक दो भजन गाकर, उपदेश सुनाकर वेदप्रचार का कार्य पूर्ण करके समाज से वेदप्रचार की राशि लेकर लौट आते हैं। कुछ व्यक्ति उनमें प्रभावशाली होते हैं उनका थोड़ा प्रभाव जनता पर पड़ता है किन्तु उनका क्या प्रभाव पड़ेगा जो आचरण में शून्य हैं और वेदप्रचार में भी वेद विरुद्ध बोल जाते हैं।

मैंने अपने अनुभव की और देखी सुनी कुछ कमियों की ओर इङ्गित किया है। आर्यजन इस पर विचार करके कुछ सुधार करेंगे तो सबका भला होगा।

—वेदव्रत शास्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा

चौ० बलबीरसिंह तथा निर्दोष व्यक्तियों की हत्याओं की निन्दा

रोहतक ११ मई (केदारसिंह आर्य) हरयाणा रक्षा वाहिनी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने होशियारपुर में आर्य नेता चौ० बलबीरसिंह जी की जघन्य हत्या पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए डी० ए० वी० कालेज की प्रबन्ध समिति को तार द्वारा शोक संवेदना प्रकट की है।

प्रो० शेरसिंह ने बम विस्फोटों द्वारा दिल्ली एवं हरयाणा में सिरसा, हिसार, अम्बाला तथा कुरुक्षेत्र में हुई निर्दोष व्यक्तियों की हत्या पर भी गहरा दुःख प्रकट करते हुए भारत सरकार से पुनः मांग की है कि अकाली उग्रवादियों को यथाशीघ्र सख्ती से कुचलकर जनता का विश्वास प्राप्त करें। आपने २२ अप्रैल को प्रधानमन्त्री तथा गृहमन्त्री आदि को लिखे गये पत्रों का उल्लेख करते हुए कहा है कि मैंने परामर्श दिया था कि आतंकवादियों के साथ कड़ी से कड़ी कार्यवाही करें। अब यह स्पष्ट हो गया है कि उग्रवादियों को विदेशों से सहायता मिल रही है और यह अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र है। ट्रांजिस्टरों में टाइमबम छिपाकर उग्रवादी तत्त्व बसों में घूम रहे हैं। इन्होंने तोड़-फोड़ की ट्रेनिंग विदेशों में ली है। वे हत्यायें करके पंजाब की सीमा से पाकिस्तान चले जाते हैं अथवा पंजाब के गुरुद्वारों में छिप जाते हैं। परन्तु पंजाब पुलिस उन्हें पकड़ने में विफल रहती है। इस प्रकार आतंकवादियों की गतिविधियां निरन्तर बढ़ रही हैं। वे प्रतिदिन किसी न किसी निरपराध की हत्या करके भारत सरकार को चुनौती दे रहे हैं।

प्रो० शेरसिंह ने अपने वक्तव्य में भारत सरकार पर जोर देते हुए कहा है कि जिन अकाली नेताओं को जेलों से रिहा किया गया है, उन्हें तोड़ फोड़ कार्यों में लगे सभी अकालियों को तुरन्त जेलों में बन्द किया जावे और कानून के अनुसार उन्हें कठोर दण्ड देकर आतंकवाद को समाप्त किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त अन्य कोई समाधान नहीं है।

अपील

हमारा समूचा शरीर एक राष्ट्र है। जैसे किसी भी अंग पर चोट आते ही सारा शरीर तड़प उठता है, वैसे ही गुजरात से आसाम, कश्मीर से कन्याकुमारी तक हमारा एक राष्ट्र है। इसमें हमारे गरीब भाई जो बिखरे, बिछुड़े और पिछड़े हुए हैं, उनको साथ मिलाने के लिए गत वर्ष मैंने बरनाला, संगरूर, बठिण्डा अहमदगढ़, लुधियाना, मण्डी गोबिन्दगढ़ और धूरी से ३४०० कपड़ा एकत्रित करके मध्य प्रदेश, उड़ीसा और केरल भेजा था, जिससे ४६३ व्यक्ति (बरडोल जिला सम्बलपुर उड़ीसा) में १० फरवरी १९८५ को पुनः वैदिक धर्म में प्रवेश कर गये। अब ५१७ व्यक्तियों ने और प्रार्थना पत्र दिये हैं। उन्हें पुनः वैदिक धर्म में मिलाने के लिए कपड़ा दीजिए।

कृपया आपसे नया या नये जैसे कपड़ों की मांग करता हूं। कपड़ा धोकर प्रेस करके पलास्टक के लफाफों में प्रेम पूर्वक डालकर अपने भाई बहिनों को भेंट करने के लिए दीजिएगा तथा हर वर्ष अपने भाई बहिनों को स्मरण रखियेगा।

पत्र व्यवहार का पता
महात्मा प्रेमप्रकाश वानप्रस्थी
आर्य कुटिया, धूरी (पंजाब)

रोहतक में भाषण प्रतियोगिता

प्रत्येक राष्ट्र एवं जाति का उत्थान उसके बच्चों एवं युवक युवतियों के बौद्धिक, नैतिक तथा चारित्रिक निर्माण पर निर्भर करता है। इसी भावना के दृष्टिगत एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन रविवार दिनांक १९ मई, १९८५ को सायं ३-३० बजे से महत्ता भवन (स्व० देवराज सेठी के मकान के सामने) किला रोड रोहतक में किया जा रहा है जिसमें आप अपने विद्यालय/महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं व परिवार सहित सादर आमन्त्रित हैं।

भाषण प्रतियोगिता के नियम निम्नलिखित होंगे—

१—विद्यालय स्तर पर दसवीं कक्षा तक के छात्र-छात्राओं की प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार अलग अलग दिए जावेंगे जबकि महाविद्यालय स्तर पर संयुक्त रूप से केवल तीन पुरस्कार ही देय होंगे जिसमें दसवीं कक्षा पास या अधिक योग्यता के छात्र एवं छात्रायें भाग ले सकेंगे।

२—प्रत्येक छात्र-छात्रा को केवल एक रु० प्रवेश शुल्क देना होगा जो आर्य वीर दल के अधिकारियों के पास दिनांक १८-५-८५ तक अवश्य पहुँच जाना चाहिये।

३—प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय/संस्था की ओर से प्रत्येक वर्ग के लिए दो दो प्रतियोगी भेजे जा सकेंगे जिसके आधार पर विजेता टीम को चल-विजयोपहार दी जायेगी जो लगातार तीन वर्ष जीतने पर उसी विद्यालय/महाविद्यालय के पास स्थाई रूप से रहेगी। (याद रहे कि यह शील्ड पिछले वर्ष नरवा माडल स्कूल ने जीती थी)

४—निर्णायक मण्डल का निर्णय सभी को मान्य होगा।

५—प्रत्येक प्रतियोगी निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर अधिकतम ५ मिनट तक विचार रख सकेगा।

विद्यालय स्तर के विषय—

१—ईश्वर का सच्चा स्वरूप, २—धर्म और राजनीति, ३—महर्षि दयानन्द एक राष्ट्रवादी, ४—पंजाब समस्या का समाधान, ५—दहेज एक मानवीय समस्या, ६—आर्यसमाज के मन्तव्य।

महाविद्यालय स्तर के विषय—

१—नास्तिकवाद अशान्ति का मुख्य कारण, २—धर्म का वास्तविक स्वरूप, ३—महर्षि दयानन्द और राष्ट्रीय एकता, ४—देश की अखण्डता कैसे चिरस्थाई हो, ५—महाविद्यालयों में नैतिक शिक्षा की आवश्यकता, ६—आर्यसमाज तब, अब और आगे।

संयोजक—आर्य वीर दल, रोहतक

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के नये उप-कुलपति



महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के नये उपकुलपति डा० रामगोपाल

आपका जन्म १९२५ ई० में गांव आदमपुर जिला हिसार, हरयाणा में एक किसान परिवार में हुआ। बचपन की शिक्षा गांव के स्कूल में हुई तथा बी० ए० आपने हिसार से किया। संस्कृत एम० ए० के लिए आप दिल्ली विश्वविद्यालय पहुंचे जहां आपने ७९ प्रतिशत अङ्क प्राप्त करके नया कीर्तिमान स्थापित किया।

वेद और व्याकरण के आप प्रकाण्ड पण्डित हैं। "इण्डिया आफ वैदिक कल्पसूत्राज" आपकी पुस्तक ने अनेक वर्षों से वैदिक साहित्य के क्षेत्र में हलचल मचा रखी है तथा वैदिक व्याकरण (दो भागों में) जब से प्रकाश में आया है उसी दिन से आपकी ख्याति समस्त भूमण्डल पर सुगन्धित वायु के समान पहुंच चुकी है। इसी पुस्तक के विषय में पेरिस से प्रो० एल० रेनु लिखते हैं—

"It is the first time, I think, that in India snch a work is produced and it is a good achievement indeed."

वैदिक भाषा एवं साहित्य के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् जे० गोण्डा होलैण्ड से लिखते हैं—

"It is again a very useful work which will render good services to all those who are interseted in the study of the Vedas."

व्याकरण के मूर्धाभिषिक्त विद्वान् टी० बरो ओक्सफोर्ड से लिखते हैं—

"I found it to be a clear and helpul exposition of Panini on the subject."

इसके अतिरिक्त अनेक पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों ने आपकी कृतियों की भूरि भूरि प्रशंसा की है। अभी हाल ही में आपकी एक नवीन कृति "Kalidasa-His Art and culture" प्रकाशित हुई है। आज तक कालिदास पर जितने कार्य उपलब्ध हैं उनमें यह कार्य सबसे अधिक उपादेय है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक पुस्तकें भी प्रकाशित हैं तथा १०० के लगभग आपके रिसर्च पेपर प्रकाशित हो चुके हैं। अतः कहना होगा कि आप लेखनी के महारथी बनी हैं। संस्कृत संसार की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है आजकल इसे पर्याप्त उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है परन्तु जिस भी संस्कृत के विषय को आपकी लेखनी ने छुआ, वही विषय महक उठा, तथा नवीन आविष्कारों से संसार को आलोकित किया।

आपके घर में कोई भी शुभ कार्य यज्ञ से आरम्भ होता है तथा आप स्वभाव से आर्य हैं। आपके यहां आगमन से संस्कृत भाषा की और भी अधिक उन्नति होगी—ऐसी हमें आपसे आशा है।

हरयाणा सरकार एवं राज्यपाल महोदय बधाई के पात्र हैं—जिन्होंने विश्वविद्यालय के नामानुसार उपयुक्त व्यक्ति को कुलपति नियुक्त किया है। समाज के प्रत्येक वर्ग को इसका स्वागत करना चाहिये। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से हरयाणा सरकार को पत्र लिखकर मांग की गई थी, कि इस विश्वविद्यालय में उपकुलपति वैदिक सिद्धान्तों का विद्वान् होना चाहिए।

यज्ञवीर दहिया

२७०-हाऊसिंग बोर्ड कालोनी रोहतक

स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज — ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री





आपने करनाल, गन्नौर तथा सोनीपत में सर्वहितकारी के नवीन ग्राहक बनवाने में सभा के उपदेशक पं० चन्द्रसेन वैदिक मिशनरी को पूरा सहयोग दिया है। आजकल आप करनाल में विशेष यज्ञों का प्रबन्ध करके आर्यसमाज के प्रचार कार्य का विस्तार कर रहे हैं।

आपने जिला गुड़गांव में इस वर्ष ५, ६ नवीन आर्यसमाजों की स्थापना करके उनका सभा के साथ सम्बन्ध करवाया है। आप जहां लगनशील तथा प्रभावशाली वक्ता हैं; वहां नवयुवकों को शिविरों के माध्यम से आर्य समाज के सम्पर्क में लाकर सराहनीय कार्य किया है।

सभा अधिवेशन की आवश्यक सूचना

जिला उपायुक्त रोहतक कार्यालय से प्राप्त सूचना के अनुसार जिला रोहतक में धारा १४४ लागू कर दी गई है।

सभा के अधिवेशन पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। सभा एक धार्मिक संस्था है। धार्मिक स्थानों के अन्दर सभाएं आदि करने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। अतः प्रतिनिधि महानुभावों से निवेदन है कि १९ मई को प्रातः ९ बजे तक अथवा १८ मई की रात्रि तक रोहतक पधारें। दयानन्दमठ में भोजन तथा निवास की व्यवस्था की गई है।

सभा मन्त्री

वैदिक सत्संग सभा हिसार

वैदिक पारिवारिक सत्संग सभा हिसार का अधिवेशन २ से ५ मई तक बड़ी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस उत्सव में दस विभिन्न सम्मेलन हुए।

उत्सव में श्री रणजीतसिंह हुड्डा प्रो० रामविचार श्री सत्यकाम आचार्य, पं० रविदत्त शास्त्री एम० ए०, प्रो० प्रेमकुमार सक्सेना आदि विद्वानों के अतिरिक्त बाहर से स्वामी अवधेश जी, वेदान्त भूषण, चौ० नत्थासिंह, श्री लक्ष्मणसिंह बेमोल तथा श्री बेलाराम जी दीवान आदि आर्यजगत् के विद्वानों ने उत्सव की शोभा बढाई।

अर्जुनदेव आर्य

महामन्त्री वैदिक पारिवारिक सत्संग सभा, हिसार

आर्यसमाज अंगड़ाई ले

उन्नीसवी शताब्दी में, जब भारत गहन अन्धकार में डूबा हुआ था, युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द तथा उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने सम्पूर्ण राष्ट्र मे नव जागृति का मन्त्र फूंक कर देश की सोती तरुणाई को अगड़ाई लेने के लिए बाध्यकर किया था। फलस्वरूप भारत मे स्वाधीनता के महान् सग्राम का सूत्रपात हुआ। आयसमाज से जीवन ज्योति प्राप्त कर, नवजवानो का मन, स्वाधीनता की बलिवेदी पर अपनी हाथ चढ़ाने के लिए आतुर हो उठा। आजादी की लड़ाई में अपने प्राणो की आहुति देने वाले शत प्रतिशत क्रान्ति वीरो ने आर्य समाज से ही प्रेरणा प्राप्त की थी। महर्षि दयानन्द की सिंह गर्जना से भयभीत होकर विभिन्न प्रकार की सामाजिक, धार्मिक बुराइयां समाप्त होवे लगी। सारे विश्व का आर्य बनाने की दिशा मे हम बढ़ने लगे। स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी, हसराज, लाला लाजपत-राय, प्रभृति मनीषियो के सक्षम नेतृत्व मे आर्यसमाज के कदम अपने लक्ष्यो की ओर बढ़न लगे। आर्यसमाज समस्त राष्ट्र की आशाओ का पर्याय बन गया।

भारत स्वाधीन हुआ। लेकिन स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् आर्य समाज की गति मे शिथिलता आई। आर्यसमाज मे भी पदलोलुप तथा स्वार्थी तत्वो का प्रवेश हो गया। त्याग परोपकार की भावनाए लुप्त होने लगी। आयसमाज देश तथा समाज को वह दिशा निर्देश न दे सका, जो उसे देना अभीष्ट था। परिणाम स्वरूप आज चारो ओर दानवी प्रवृत्तियो का ताण्डव नतन हो रहा है और मानवता चीत्कार कर रही है। समाज मे विभिन्न प्रकार की भयंकर बुराइयो की जड़े गहरी होती जा रही है। धार्मिक उन्माद बढ़ रहा है। अनैतिकता, अराजकता अनीति का बोलबाला है। मानवता के सक्षम प्रश्न-चिन्ह लगा हुआ है।

इन विषम परिस्थितियों में, आर्यसमाज जैसी क्रान्तिकारी आन्दोलन को पुन. गतिशील ही नहीं होना है, बल्कि तूफानी गति से आगे बढ कर मानवता के अस्तित्व की रक्षा करनी है। वर्तमान में आर्यसमाज को अपनी सारी शक्ति सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करने में लगाना चाहिए। आर्यसमाज को बड़े पैमाने पर आन्दोलन चलाने चाहिए। आइए ! हम इस दिशा में कोई निर्णय ले।

राधेश्याम आर्य एडवोकेट

मन्त्री जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा सुलतानपुर(उ०प्र०)

आर्यसमाज नारग का उत्सव

आर्यसमाज नारग तहसील पच्छाद जिला सिरमौर हिमाचल का ६४ वां वार्षिकोत्सव भारी सूखे और पीने के पानी की कमी के होते हुए भी परम्परा के अनुसार २, ३, ४ मई १९८५ को सम्पन्न हो गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल के अनेक विद्वान् श्री शास्त्री रणवीरसिंह विद्यावाचस्पति तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक प० मुन्शीलाल और पं० शेरसिंह के रोचक कार्यक्रम का स्थानीय जनसमूह पर गहरा प्रभाव पड़ा।

आर्यसमाज नारग के अधिकारियों द्वारा सन्तोष व्यक्त करते हुए प्रतिनिधि सभा हरयाणा को ३७५) वेदप्रचारार्थ दिये गये।

मन्त्री आर्यसमाज नारग

सम्पादक के नाम पत्र

यह अन्याय कब तक चलेगा

श्रीमान् जी,

इतिहास गवाह है कि मोपले मुसलमानों ने अग्रेज शासन के दौरान बगावत की थी। उस बगावत में मोपले मुसलमानों ने हिन्दुओं के साथ जबरदस्ती की, उनको मुसलमान बनाया। जबरदस्ती उनको अपने धर्म तबदील करने पर मजबूर किया गया। बच्चों को गुलाम बनाया गया और पत्नियो का अपमान किया गया फिर भारत सरकार उन मुपला मुसलमानों को पेंशन दे रही है। जिन लोगों ने देशद्रोह पूर्ण कार्य किया और देश की आत्मा को ठेस पहुँचाई उन लोगो को सरकार पेंशन दे रही है। जबकि आर्यसमाजी सत्याग्रहों के विरुद्ध सौतेला सा सलूक किया जा रहा है। हजारो लोग अपने मान सम्मान के लिये जेलों में गए और निजाम हैदराबाद सरकार जो कि गलत रास्ते पर चल रही थी, को राय रास्ते पर लाए और उनको कोई पेंशन नहीं मिल रही। हालांकि वे लोग देश और धर्म के लिए लड़े थे। परन्तु फिर भी उनको कोई पेंशन नहीं दी जा रही। यह अन्याय नहीं तो और क्या है और यह अन्याय कब तक चलता रहेगा।

जयदेव गोयल पत्रकार, जीन्द

सत्य मधुर बोले जो उसका सत्कार हो

चिरंजीलाल 'जीव' बराडा जि० अम्बाला

आदमी को चाहिये पहिले वचन तोला करे।
बोलने के वास्ते फिर अपना मुंह खोला करो॥

सत्य बोले, मीठा बोले वाणी का गहना है यह।
झूठ और कड़वा न बोले शास्त्र का कहना है यह

सत न बोले कड़वा हो जो दिल किसी का दे जला।
मीठा भी ऐसा न बोले झूठा हो जो सर्वथा॥

सत्य मधुर बोले जो उसका हर जगह सत्कार हो।
कोई शत्रु हो न उसका मित्र सब संसार हो॥

मीठा और सत बोलना ही इक सनातन धर्म है।
'जीव' सब अपनायें इसको सर्व श्रेष्ठ यह कर्म है॥

थोड़े बच्चे

थोड़े बच्चे पैदा करके ऐसी मौज उड़ाई।
दशा बुरी हो गई दौनों की रोवे लोग लुगाई॥

हिजड़ा पुरुष हुआ तभी से हिजड़ी बनी लुगाई।
मांस पोटकर दोनो राते जबसे नस कटवाई॥

काया का कंकाल हो गया हड्डी बाहर आई।
उठते बैठते सांस फूलता आए रोज जम्भाई॥

दुर्घटना में लड़का मर जा लड़की हुई पराई।
बूढा-बुढ़िया बैठे देखें खावे माल जमाई॥

यौवन में ही आया बुढ़ापा पानी कोन पिलाये।
खाना पीना हो गया दूभर जीवन कौन जिलाये॥

सोचो समझो और विचारो शासन कौन करेगा।
चार शादियां करने वाला शासक यहां बनेगा॥

लोकतन्त्र और प्रजातन्त्र का नाम न लेवा होगा।
"जीया" जैसा फौजी ही भारत का शासक होगा॥

'हरि' ने अपना फर्ज निभाया आगे जाने भाई।
भूत-भविष्यत-वर्तमान का समय बड़ा दुखदाई॥

हरिदत्त वि० प्र०

बीयू १६० विशाखा एन्कलेव दिल्ली—३४

आचार्य सुदर्शनदेव जी पुनर्विचार करें

लेखक—विरजानन्द दैवकरणि

आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली द्वारा संवत् २०२६ में प्रकाशित यजुर्वेदभाष्यभास्कर प्रथम भाग की भूमिका के ३१ वें पृष्ठ पर १६ वीं पंक्ति में आचार्य सुदर्शनदेव जी लिखते हैं—

"ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का प्राक्कथन भाद्रपद १९३३ वि० में लिखा गया। महर्षि इसी ग्रंथ से वेदोत्पत्ति विषय में लिख रहे हैं कि विक्रम संवत् १९३३ फाल्गुन कृष्ण षष्ठी रविवार के दिन चतुर्थप्रहर के आरम्भ में यह बात हमने लिखी। इस ग्रंथ को यह प्रबल अन्तःसाक्षी से ही सिद्ध है कि ६ मास तक तो इस ग्रंथ के प्रारम्भ का वेदोत्पत्ति विषय ही लिखा गया था। इसके अतिरिक्त ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका अंकों में प्रकाशित हुई। उसके अंकों में १५-१६ मास पीछे का कथन विद्यमान है।"

उक्त सन्दर्भ के विषय में कुछ विवेचना करनी है। महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के आरम्भ में ग्रन्थ लेखन सम्बन्धी श्लोक इस प्रकार दिया है—

कालरामाङ्कचन्द्रेऽब्दे भाद्रमासे सिते दले ।
प्रतिपद्यादित्यवारे भाष्यारम्भः कृतो मया ॥

विक्रम के संवत् १९१३ भाद्रमास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा रविवार के दिन इस वेदभाष्य का आरम्भ मैंने किया है। यहां वेदभाष्य का अर्थ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका नामक ग्रंथविशेष से सम्बन्धित है।

इसके आगे वेदोत्पत्ति विषय के अवसर अन्त में महर्षि दयानन्द जी स्वयं ही लिखते हैं—

"जैसे विक्रम के संवत् १९३३ फाल्गुन मास, कृष्णपक्ष षष्ठी रविवार के दिन चतुर्थप्रहर के आरम्भ में यह बात हमने लिखी।"

उपर्युक्त श्लोक के अर्थ तथा ऊपर दिये इस वाक्य में सामञ्जस्य स्थापित करने के लिए पण्डित सुदर्शनदेव जी का विचार है कि महर्षि दयानन्द को ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका लिखनी आरम्भ करने से वेदोत्पत्ति विषय तक केवल २६ पृष्ठ लिखने में ६ मास लग गये। आचार्य जी के इस लेख पर उनसे मेरा नम्र निवेदन है कि वे इस विषय में एक बार पुनर्विचार करें। मेरे विचार से दोनों तिथियों की संगति इस प्रकार लगेगी। महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पूरे ग्रन्थ का संस्कृत भाग पहले पूरा लिख (लिखवा) दिया। उसके पश्चात् तुरन्त अथवा कुछ समय पश्चात् आर्यभाषानुवाद लिखाना आरम्भ किया। इस प्रकार वेदोत्पत्ति विषय तक अनुवाद करते समय ६ मास का समय लगा होगा। इतना समय इसलिये लगा क्योंकि प्रचार, शास्त्रार्थ आदि भी उनको करने पड़ते थे। यह शब्दशः भाषानुवाद नहीं है, अपितु विस्तृत भावानुवाद है। कहीं कहीं संस्कृत भाग का अर्थ नहीं भी किया है। इस प्रकार पूरा ग्रन्थ अनूदित होने पर इसे लगभग चैत्र १९३४ वि० में प्रकाशित करना आरम्भ किया और चैत्र १९३५ वि० तक १६ अंकों में पूरा ग्रंथ छपाया गया।

पहले केवल संस्कृत भाग लिखा गया, इसमें ग्रन्थ के भीतर से ही कुछ प्रमाण दिये जा सकते हैं। जैसे—

महर्षि जी मुक्ति विषय के अन्त में संस्कृत भाग में लिखते हैं—एषामर्थः प्राकृतभाषायां प्रकाश्यते। लगता है यह वाक्य आर्यभाषानुवाद करते समय बढ़ाया गया है। इसके आगे जो आर्यभाषानुवाद है वह मुक्ति प्रकरण के आरम्भ से ही होना चाहिये था, जो कि नहीं है। अतः सिद्ध है कि संस्कृत भाग लिखने के अनन्तर अनुवाद किया गया और उसे सन्दर्भानुसार यथास्थान जोड़ते चले गये। इसी से यह वाक्य अब अस्थान पर लिखा हुआ प्रतीत हो रहा है।

इसी भांति उपासना विषय में—मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणाम्० इत्यादि सन्दर्भ के आगे "एतो विवरणं प्राकृतभाषायां वक्ष्यते" यह लिखा है तथा "नाविरतो दुश्चरिता०" इत्यादि संस्कृत की समाप्ति पर "अस्य सर्वस्य भाषायामभिप्रायः प्रकाशयिष्यते" लिखा है। यदि आर्य भाषानुवाद संस्कृत के साथ साथ लिखते तो यहां भविष्यत्काल की क्रिया के वाचक 'वक्ष्यते' और 'प्रकाशयिष्यते' न लिखकर वर्तमान काल की क्रिया का प्रयोग करते।

"एषां विवरण०", "अस्य सर्वस्य०", एषामर्थः प्राकृत०"

इन तीनों वाक्यों का आर्यभाषानुवाद ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में नहीं मिलता, यदि इनका अर्थ करते हैं तो आर्यभाषानुवाद की भाषा रचना में असमञ्जसता आती है, अतः इनका अनुवाद जान-बूझ कर नहीं किया होगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती सदृश कर्मठ और एक एक क्षण का सदुपयोग करने वाला तथा शीघ्र कर्म करने वाला यदि बिना किसी अतिविशेष कारण छः मास में वेदोत्पत्ति प्रकरण तक का अत्यल्प भाग लिखे, यह असम्भव लगता है। अतः आचार्य सुदर्शनदेव जी को पुनः विचार कर लेना चाहिये। आपकी लिखी भूमिका के ३७ वें पृष्ठ को ध्यान में रखकर ही यह लिखा है।

एक प्रश्न—

यजुर्वेद भाष्य के आरम्भ में तिथि/संवत् विषयक दूसरे श्लोक में "धविश्वोन्मितातिथौ" का शाब्दिक अर्थ क्या है। इससे त्रयोदशी तिथि अर्थ किस प्रकार निकलता है, कृपया यह भी बतला दीजिये।

गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जिला जालन्धर (पंजाब) गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से स्थाई मान्यता प्राप्त है नये छात्रों का प्रवेश १५ जून १९८५ से प्रारम्भ हो रहा है। सरकारी स्कूलों में पढ़ाये जाने वाले संस्कृत, अंग्रेजी, विज्ञान आदि सभी विषयों के साथ संस्कृत तथा धर्म शिक्षा भी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है।

निःशुल्क शिक्षा, हिन्दी माध्यम, योग्य एवं परिश्रमी अध्यापक स्वच्छ वातावरण, भोजन, दूध, आवास की मात्र ३० रु० (तीस रुपये) मासिक पर समुचित व्यवस्था इस गुरुकुल की अपनी विशेषतायें हैं। प्रवेश के लिए छात्र का हिन्दी माध्यम से कक्षा पांच पास होना जरूरी है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आस्था रखने वाले सज्जन मिलें अथवा पत्राचार करें।

विशेष—पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ की शास्त्री कक्षा के अध्यापन का भी पूर्ण प्रबन्ध है। इच्छुक छात्र सम्पर्क करें।

आचार्य नरेशकुमार शास्त्री
गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय
करतारपुर जिला जालन्धर (पंजाब)

शोक समाचार

ब्र० चेतनदेव जी के पूज्य पिता का दिनांक २८-४-८५ को स्वर्गवास हो गया है। इनकी आयु लगभग ७० वर्ष थी। वे बड़े ही धार्मिक, परोपकारी और साधुजनों से प्रेम रखने वाले थे।

परमात्मा दिवंगत आत्मा को कर्म व्यवस्था के अनुसार सद्गति प्रदान करे और शोक संतप्त परिवार को इस वियोगजन्य दुःख को सहन करने की शक्ति दे।

ब्र० संजयदेव 'सत्यान्वेषी'
भारतीय नवयुवक सभा दयानन्द आश्रम नलवा

विशाल आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर

दिल्ली २६ अप्रल अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के उपलक्ष्य में आर्यसमाज की प्रगतिशील नवयुवक संस्था केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश ने महर्षि कण्व की तपोभूमि तथा हिमालय की सुरम्य घाटियों के बीच स्थित गुरुकुल कण्वाश्रम, कलालघाटी, कोटद्वार जिला पौढ़ी गढ़वाल में १४ से २३ जून तक एक विशाल आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन ब्रह्मचारी आर्य नरेश की अध्यक्षता मे किया है।

परिषद् के अध्यक्ष व शिविर संयोजक श्री अनिल कुमार आर्य ने बताया कि युवकों को महर्षि दयानन्द की विचारधारा से ओतप्रोत करने, अनुशासित जीवन, उत्तम स्वास्थ्य, चरित्र निर्माण, राष्ट्र के नवनिर्माण, युवाशक्ति के रचनात्मक कार्यों मे दीक्षित करने के उद्देश्य से वर्तमान परिस्थितियों में ऐसे शिविरों की नितान्त आवश्यकता है। शिविर मे आसन, प्राणायाम, दण्ड बैठक, लाठी जूडो कराटे और फ्री स्टाइल कुश्तियों के प्रशिक्षण के अतिरिक्त जड़ी बूटियों का ज्ञान, प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर ऐतिहासिक धार्मिक पर्यटन स्थलों का भ्रमण तथा युवकों को मचान पर बैठाकर शेर, हाथी, भालू, हिरण, नील गाय आदि हिंसक, अहिंसक वन्य जीव जन्तुओं के अवलोकन के अवसर मिलेंगे।

आर्यसमाज के ओजस्वी संन्यासी स्वामी जगदीश्वरानन्द जी महाराज की देख रेख में इन्ही दिनों योग साधना शिविर का भी आयोजन किया जा रहा है, जिसमे प्याज, अण्डे, शराब, बीड़ी, सिगरेट व तामसिक पदार्थों के सेवन से मुक्त व्यक्ति ही भाग ले सकेंगे।

पौढ़ी गढ़वाल में आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन १४ जून को होगा। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के राजस्व मन्त्री श्री बलदेवसिंह आर्य तथा संसद सदस्य श्री संघमित्र व आर्य नेताओं को भी सम्मिलित होने की आशा है।

चन्द्रमोहन आर्य

आर्य वर की आवश्यकता

आर्य जाट कुलोत्पन्न बी० ए० छात्रा सुशील, स्वस्थ तथा सुन्दर कन्या के लिए सुयोग्य, बारोजगार आर्य वर की आवश्यकता है। सिन्धु कुण्डू तथा गठवाला गोत्र हैं।

पत्र व्यवहार का पता
व्यवस्थापक सर्वहितकारी सिद्धांती भवन
दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक

गुरुकुल बुराड़ी दिल्ली का उत्सव

राधेश्याम वैदिक योगाश्रम गुरुकुल बुराड़ी दिल्ली ९ का प्रथम वार्षिक महोत्सव २४, २५, २६ मई १९८५ को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जायेगा। महोत्सव में अनेक विद्वानों, साधु महात्माओं, भजनोपदेशकों तथा केन्द्रीय प्रान्तीय नेताओं एवं गणमान्य अधिकारियों को आमन्त्रित किया गया है।

नोट— बस अड्डा (मोरीगेट) तथा किंग्जवे कैम्प से १०५, ११९ नं० बसें बुराड़ी को जाती हैं।

प्रधान
राधेश्याम त्यागी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 रजि०सं० P/RTK 49 फोन ४८१२ दयानन्दाब्द १६१ सृष्टि संवत् १६,७२६४०८६

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

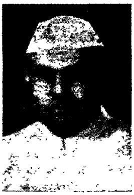
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १२, अङ्क २४ २१ मई १६८५ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन

प्रो० शेरसिह प्रधान, प्रो० सत्यवीर शास्त्री मन्त्री तथा लाला रामकृष्ण कोषाध्यक्ष सर्वसम्मति से निर्वाचित सभा का आगामी वर्ष के लिए वेदप्रचारादि विभागों के लिए २०,३३,३५० रुपये का बजट स्वीकार





प्रो० शेरसिह प्रधान, प्रो० सत्यवीर शास्त्री मन्त्री

रोहतक १६ मई १६८५ (केदारसिंह आर्य) आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक अधिवेशन प्रातः ११ बजे दयानन्दमठ रोहतक की यज्ञशाला में बड़े उत्साह तथा शान्ति के वातावरण में सम्पन्न हुआ। हरयाणा के कोने कोने से भारी संख्या में प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

गत वर्ष दिवंगत हुए आर्य कार्यकर्ताओं को भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए अकाली उग्रवादियों की हरयाणा में भी बम विस्फोट करने के लिए घोर निन्दा की गई। सरकार से अनुरोध किया गया कि वे उग्रवाद को सख्ती से कुचल दवे।

हरयाणा में शराब तथा दहेज विरोधी आन्दोलन चलाने का कार्यक्रम बनाया गया। एक अन्य प्रस्ताव द्वारा इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायधीश श्री बनवारीलाल यादव द्वारा इतिहास में पहली बार संस्कृत भाषा अपना निर्णय लिखने पर बधाई दी गई।

आगामी वर्ष १६८५-८६ के लिए सभा के विभिन्न वेदप्रचार आदि विभागों का २०, ३३, ३५०) का बजट स्वीकार किया गया।

आगामी वर्ष के लिए प्रो० शेरसिह जो को सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया और उन्हें ही शेष पदाधिकारियों, अन्तरग सदस्यों आदि को मनोनीत करने का पूर्ण अधिकार दिया गया। उन्होंने प्रदत्त अधिकार के अनुसार शेष अधिकारियों को निम्न प्रकार मनोनीत किया—

१—प्रधान—प्रो० शेरसिह पूर्व रक्षा राज्य मन्त्री

२—उपप्रधान—महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी दयानन्दमठ रोहतक

३— ,, बहन सुभाषिणी देवी आचार्या कन्या गुरुकुल खानपुर कला जिला सोनीपत

४— ,, श्री कन्हैयालाल महत्ता प्रधान दयानन्द पब्लिक शिक्षण संस्थाएं फरीदाबाद

५—मन्त्री—प्रो० सत्यवीर शास्त्री ग्राम डालावास जिला भिवानी (अध्यक्ष संस्कृत विभाग राजकीय महिला महाविद्यालय रोहतक)

६—उपमन्त्री—आचार्य सुदर्शनदेव हरिसिंह कालोनी रोहतक (अध्यक्ष संस्कृत विभाग राजकीय महाविद्यालय नलवा जि० हिसार)

७—उपमन्त्री—प्रो० सत्यवीर विद्यालंकार, तिहाड जिला सोनीपत (छाजूराम किसान महाविद्यालय हिसार)

८—कोषाध्यक्ष—ला० रामकृष्ण प्रधान आर्यसमाज बहादुरगढ मण्डी

६—पुस्तकाध्यक्ष—आचार्य ऋषिपाल आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखी-दादरी जिला भिवानी

(अन्तरंग सदस्यों की सूची पृष्ठ २ पर देखें)

प्रो० शेरसिह ने तीसरी बार सर्वसम्मति से चुने जाने पर सभी प्रतिनिधि महानुभावों के प्रति आभार प्रकट करते हुए विश्वास दिलाया कि वे सभी के सहयोग से हरयाणा में आर्यसमाज के संगठन को और अधिक सुदृढ करने का पूरा यत्न करेंगे। आपने आर्यसमाजों से अपील करते हुए प्रदेश में वैदिक धर्म प्रचार के प्रसार कार्य में सहयोग करने का अनुरोध किया।

सर्वहितकारी के पाठकों से

पाठकों से निवेदन है कि सभा के वार्षिक अधिवेशन की तैयारी में व्यस्त रहने के कारण प्रस्तुत अंक केवल ४ पृष्ठ का ही प्रकाशित हो सका है। आगामी अंक पूर्ववत ८ पृष्ठ का ही होगा।

व्यवस्थापक

आर्यसमाजों से निवेदन

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन है कि जो आर्यसमाजें जून मास में अपने यहां वेदप्रचारार्थ उत्सवादि रखना चाहते हैं, वे शीघ्र ही सभा को पत्र लिखकर अपनी तिथियां सुरक्षित करवा लेवें, ताकि प्रबन्ध करने में सुविधा रहे।

सभा मन्त्री

सम्पादकीय

धन्यवाद एवं आभार प्रदर्शन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का "अष्टम" वार्षिक चुनाव दिनांक १९-५-८५ को जिस सहृदयता के वातावरण में सर्वसम्मत ढंग से सम्पन्न हुआ उसके लिए पूज्य स्वामी ओमानन्द जी एवं समस्त प्रतिनिधिगण धन्यवाद एवं बधाई के पात्र हैं।

इस अवसर पर गत वर्ष के सभी पदाधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों विभिन्न उपसमितियों के सदस्यों, सभा उपदेशकों, कार्यालय कर्मचारियों तथा समस्त सम्बन्धित आर्यसमाजों का धन्यवाद करता हूं कि जिन्होंने तन-मन-धन से सहयोग देकर सभा के कार्यक्रमों को पूरा किया।

विशेष रूप से सभा प्रधान के रूप माननीय प्रो० शेरसिंह जी ने सभा में नवजीवन का संचार किया। स्वयं अस्वस्थ रहते हुए भी सभा मन्त्री डा० रणजीतसिंह जी ने सभा को स्वस्थ बनाए रखा। पूर्व सभा मन्त्री महाशय भरतसिंह जी वानप्रस्थी ने तो अपना सम्पूर्ण समय ही सभा के लिए दान कर रखा है।

विशाल वट-वृक्ष के तुल्य पूज्यपाद स्वामी ओमानन्द जी की छत्र-छाया में तो यह सभारूपी नन्हा पौधा अंकुरित होकर प्रस्फुटित एवं पल्लवित होता हुआ विशाल अश्वत्थवृक्ष बनने जा रहा है।

चुनाव प्रजातन्त्र प्रणाली का एक आवश्यक अंग है। चुनाव के अवसर पर मानव स्वभाव के अनुरूप कुछ एक दूसरे के प्रति सन्देह, कटुता, मनोमालिन्य एवं अहं आदि की भावनाएं प्रत्येक मानव में जागृत होती हैं। पर सच्चा आर्य वही होता है जो इनके वशीभूत न होकर सन्मार्ग का एवं अपने पूज्यों के आदेश का पालन करता रहे।

इसका प्रत्यक्ष प्रमाण दिनांक १९-५-८५ को सभी आर्य प्रतिनिधियों ने दयानन्दमठ की यज्ञशाला में प्रदर्शित किया। उस दिन हमने यह सिद्ध कर दिया कि हम वेद के 'संगठन सूक्त' का केवल पाठमात्र ही नहीं करते अपितु उसे अपने जीवन में क्रियान्वित भी करते हैं। वैसे तो आर्यसमाज का कार्य क्षेत्र अत्यन्त विशाल है किन्तु उसमें भी कुछ प्राथमिकताएं हैं जिनको हमने आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्धारित आर्यसमाज के नियमों तथा उपनियमों के रूप में स्वीकार कर रखा है। इस लक्ष्य को प्राप्त करना ही हमारा ध्येय है।

इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए आपने हमें एक वर्ष के लिये जो उत्तरदायित्व सौंपा है उसके लिये सभी पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों की ओर से मैं आप सभी का आभार प्रकट करते हुए यह विश्वास दिलाता हूं कि हम आपकी आशाओं के अनुरूप अपने उत्तरदायित्व के निर्वहण में कोई कमी नहीं आने देंगे।

इसके लिये मैं आप सभी बन्धुओं से भी तन-मन तथा धन से सहयोग देने की अपील करता हूं। साथ ही सभा की उन्नति के लिये आपके रचनात्मक सुझावों एवं निर्देशों का भी स्वागत है।

सभा प्रधान जी ने अन्तरंग सदस्य एवं विद्यासभा आदि में सभी को स्थान सीमित उचित प्रतिनिधित्व देने का प्रयत्न किया है। शेष बचे सक्रिय कार्यकर्त्ताओं का सहयोग भी आवश्यकतानुसार लेते रहेंगे। सभा केवल किसी भवन का नाम नहीं होता, अपितु सभा, सभासद एवं सभ्य सभी एक दूसरे के पूरक हैं। धन्यवाद

सहयोगाभिलाषी
सत्यवीर शास्त्री
सभामन्त्री

अन्तरंग सभा सूची

१०- स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती आचार्य गुरुकुल झज्जर
११- श्री रामानन्द जी सिंगला, पानीपत जिला करनाल
१२- श्री लाला लछमनदास बल्लभगढ़ जिला फरीदाबाद
१३- श्री वेदव्रत शास्त्री, दयानन्दमठ रोहतक
१४- डा० हरिप्रकाश जी अम्बाला छावनी
१५- वैद्य रामलाल जी यमुनानगर जिला अम्बाला
१६- श्री राजेन्द्रसिंह एडवोकेट, फरीदाबाद
१७- श्री बलदेवकृष्ण आर्य, करनाल
१८- श्री पारब्रह्म परमार्थी, रेवाड़ी जिला महेन्द्रगढ़
१९- श्री राजकुमार आर्य नरवाना, जिला जीन्द
२०- श्री सत्यदेव शास्त्री, सोनीपत शहर
२१- श्री रूलियाराम सर्राफ थानेसर, जिला कुरुक्षेत्र
२२- श्री फतेहसिंह भण्डारी गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक
२३- श्री भूपेन्द्रसिंह मलिक एडवोकेट, रोहतक
२४- श्री सत्यवीर आर्य मदाना जिला रोहतक
२५- श्री महेश्वरसिंह शास्त्री सींक जिला करनाल
२६- पं० फूलचन्द शर्मा निडर, जिला भिवानी
२७- चौ० सत्यदेवसिंह, कुरुक्षेत्र
२८- श्री श्यामलाल आर्य गुड़गांव
२९- श्री बाबू रघुवीरसिंह भाऊ-अकबरपुर जिला रोहतक
३०- मा० बद्रीप्रसाद आर्य जीन्द शहर
३१- वैद्य हरिश्चन्द्र नारनौल जिला महेन्द्रगढ़
३२- डा० बलवीर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
३३- डा० रणजीतसिंह नारनौंद जिला हिसार
३४- चौ० हरिकिशनसिंह मलिक पूर्व संसदसदस्य, ग्राम जसराना (सोनीपत)
३५- डा० मनोहरलाल आर्य कैथल जिला कुरुक्षेत्र

सदस्य आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी

१- आचार्य विष्णुमित्र, कन्या गुरुकुल खानपुर, जिला सोनीपत २- श्री चन्द्रपाल राणा, पाकस्मा जिला रोहतक, ३- प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास जि० भिवानी, ४- स्वामी ओमानन्द जी गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक, ५- प्रो० शेरसिंह १४ एम० साकेत नई दिल्ली ६- प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार, मैनाक भवन, वाराणसपुरी; शोभा सिनेमा के पीछे, रोहतक, ७- श्रीमती प्रभातशोभा विद्यालंकृता, १४ एम. साकेत नई दिल्ली, ८- डा० रणजीतसिंह २३६ पार्ट होम्री भवन माडल टाउन रोहतक, ९- ब्र० रामवीर शास्त्री गुरुकुल झज्जर; जि० रोहतक

ये योरोपीय गोपालक-किसान से कसाई तक

क्षितीश कुमार वेदालंकार

हमारे पूर्वजों ने कहा था—

गावो अस्माकं वयम् तासां, यतो गावस्ततो वयम् ।

"गायें हमारी हैं, हम गायों के हैं, जहां गाय हों, वहां हम हों।" यह कहकर हमारे पूर्वजों ने गायों के साथ अपने अस्तित्व को इस प्रकार जोड़ दिया था कि गायों से अलग उसकी कल्पना नहीं की जा सकती थी। गायों के अन्दर समस्त देवताओं के निवास की कल्पना भी व्यर्थ नहीं है। जन जीवन के गायों के महत्व को समझकर ही वेद ने यहां तक कहा था कि "जो तुम्हारी गाय की हत्या करे, उसे गोली से उड़ा दो।" महात्मा गांधी और आचार्य विनोबा भावे देश में गो हत्या बन्दी का स्वप्न देखते देखते चले गये, परन्तु उनका स्वप्न आज तक पूरा नहीं हुआ। भले ही भारत के संविधान में धारा ४८ में कहा गया है—"गाय बछड़े और अन्य दूध देने वाले पशुओं के वध पर प्रतिबन्ध लगे" परन्तु जिस तरह संविधान की अन्य धाराओं का उल्लंघन स्वयं सरकार की ओर से होता है, उसी प्रकार इस धारा के पालन की भी किसी को चिन्ता नहीं है। विज्ञान ने बहुत उन्नति की है पर आज तक विज्ञान ऐसी मशीन नहीं बना पाया, जिसमें दाल रोटी डालने पर रक्त तैयार हो सके और घास फूस तथा पत्ते डालने पर दूध तैयार होकर बाहर निकल सके।

धार्मिक दृष्टि के अलावा आर्थिक दृष्टि भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। भारत में प्रतिवर्ष दुधारू गायों से साढ़े तीन करोड़ टन दूध मिलता है जिसकी कुल कीमत लगभग ६० अरब रुपये होती है। सात करोड़ बैलों के माध्यम से लगभग तीन करोड़ किलोवॉट ऊर्जा मिलती है जिसकी कुल कीमत ५० अरब रुपये के आसपास बैठती है। १९ करोड़ गायें और उनके वंशज तथा ६ करोड़ भैंसें और उनके वंशज लगभग ८४ करोड़ टन गोबर देते हैं। अगर उसका समुचित उपयोग गोबर व गैस संयंत्रों में किया जाये तो उससे भी ५० अरब रुपये की भोजन बनाने की गैस मिल सकती है। उस गोबर से जो खाद तैयार होगी, उसकी कीमत भी ३० अरब रुपये के आसपास बैठेगी। इस प्रकार इन पशुओं से उपलब्ध सारी सामग्री का उपयोग किया जाय तो देश को लगभग दो खरब रुपयों की प्राप्ति होगी जो हमारे देश की सम्पूर्ण आय के १२ प्रतिशत के बराबर है। ये कितने चौंकाने वाले आंकड़े हैं।

विनाशकारी नीति—

यदि इन पशुओं को कत्ल करके उनके स्थान पर ट्रक, ट्राली और ट्रैक्टरों की व्यवस्था करनी हो तो उनको चलाने के लिए पेट्रोल और डीज़ल की भारी मात्रा में आवश्यकता पड़ेगी। गोबर के स्थान पर रासायनिक खाद पर जितनी राशि खर्च करनी पड़ेगी वह भारत की छठी पंचवर्षीय योजना से भी कहीं अधिक होगी। देश को पहले ही विदेशी व्यापार में अरबों रुपये के घाटे का सामना करना पड़ रहा है। ट्रकों ट्रालियों और ट्रैक्टरों आदि के निर्माण के लिए जो अतिरिक्त लोहा चाहिए, उसके लिए देश की सीमित लघु उत्पादन क्षमता को देखते हुए कितना खर्च करना पड़ेगा, यह कुछ नहीं कहा जा सकता। सारे देश को दूध से जो हाथ धोना पड़ेगा, सो अलग। अगर इस समस्या पर रचनात्मक दृष्टि से विचार नहीं किया गया तो स्वर्गीय राष्ट्रकवि श्री मैथलीशरण गुप्त की यह चेतावनी पूरी होते देर नहीं लगेगी—

जारी रहा क्रम यदि यहां यों ही हमारे नाश का।
तो अस्त समझो सूर्य भारत-भाग्य के आकाश का।
जो तनिक हरियाली रही वह भी न रहने पायेगी।
यह स्वर्ण भारत-भूमि बस ! मरघट मही बन जायेगी।

भारत में गोवंश का नाश जिस तेजी से हो रहा है, वह भी कम आश्चर्यजनक नहीं है। प्रतिवर्ष ४ करोड़ ३० लाख पशु [illegible]। अहिंसा को परम धर्म मानने वाले इस देश में २८०० कसाई घर चल रहे हैं, जहां दिन-रात इन पशुओं की गर्दन पर कुठाराघात होता है। भारत का शासक वर्ग इतना धन लोलुप है कि गोवंश की हत्या करके धन अर्जन करने पर भी उसे कोई आपत्ति नहीं। गोमांस का उत्पादन बढ़ रहा है। जब खाड़ी देशों में २५० रुपये प्रति किलो गोमांस बिकता हो तो गोमांस का निर्यात करके धन कमाने में किसी को लज्जा क्या आये? जहां सरकार इतनी कठोर हृदय बन गई, वहां स्वयं भारतीय जनता इस विषय में इतनी उदासीन है कि उसको अपने भविष्य की चिन्ता ही नहीं। गोहत्या बन्दी का आन्दोलन कभी कभी सत्याग्रहों और मोर्चों के रूप में सुनाई देता है, पर उसकी आवाज इतनी नगण्य होती है कि किसी के कान पर जूं नहीं रेंगती। दूध और घी देश में दुर्लभ होता जा रहा है और वनस्पति घी के कारखाने आये दिन बढ़ते चले जा रहे हैं।

क्रमशः

आर्य वर की आवश्यकता

आर्य जाट कुलोत्पन्न बी० ए० छात्रा स्वस्थ तथा सुन्दर, सुशील कन्या के लिए सुयोग्य बारोजगार आर्य वर की आवश्यकता है। सिन्धु कुण्डू तथा गठवाला गोत्र हैं।

पत्र व्यवहार का पता
व्यवस्थापक सर्वहितकारी सिद्धान्ती भवन
दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक

अलगाववादी हिंसक तत्वों को कुचला जाये

आर्यसमाज केसरगंज अजमेर में दिनांक १२-५-८५ की यह सभा अपने साप्ताहिक सत्संग के उपरान्त एक सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर उग्रवादी, आतंकवादियों द्वारा किए गए देश के विभिन्न भागों में बम विस्फोटों तथा निर्दोष लोगों की हत्याओं की कड़ी भर्त्सना करते हुए भारत सरकार से इन अलगाववादी हिंसक तत्वों को सख्ती से कुचलने हेतु कठोर कार्यवाही की मांग करती है। साथ ही देश के समस्त नागरिकों विशेषतः हिन्दु सिखों से भाईचारे एवं साम्प्रदायिक सौहार्दता रखने की अपील करती है।

मन्त्री आर्यसमाज अजमेर

ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर

हर वर्ष की भांति आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में १४ जून से ३० जून तक योगिक क्रियाओं सहित ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर का आयोजन अत्यन्त उत्साह के साथ किया जा रहा है।

इस शुभ अवसर पर अनेकों उच्चकोटि के साधु, संन्यासी, ब्रह्मचारी, योगिक क्रियाओं, आसन, प्राणायाम, नेती, धोती, कुञ्जर, बस्ती क्रिया आदि के कुशल ज्ञाता शिक्षक पधार रहे हैं। इच्छुक बन्धुओं के लिए यह सुअवसर है। स्वयं पधारें और अन्यों को प्रेरित करें।

ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर में पूर्ण रूप से भाग लेने वाले १४ वर्ष की आयु से ऊपर के विद्यार्थी थाली, कटोरी, चम्मच, कापी, पेन्सिल, कदानुसार लाठा, दो लंगोट, तौलिया, खाकी नेकर, बनियान, कपड़ के जूते (पीटी शूज) ऋतु अनुसार बिस्तर अवश्य साथ लेकर आयें। भोजन तथा निवास स्थान का प्रबन्ध आश्रम की ओर से होगा। अतः शिविर में भाग लेने के लिए शिविर शुल्क २१) और अपना पूरा पता आश्रम के पते पर १५ जून तक भेज देना चाहिए, अन्यथा आप इस शुभावसर से वंचित रह जायेंगे।

धर्ममुनि संचालक

नया प्रवेश

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में नया प्रवेश आरम्भ है। भोजन, निवास, पुस्तक, वस्त्रादि का सारा प्रबन्ध सर्वथा निःशुल्क है। मैट्रिक पास छात्रों का प्रवेश होता है, अतः धर्म प्रचार में रुचि रखने वाले जो कि २२-२३ वर्ष से अधिक न हों, अविवाहित हो, जल्दी ही पत्र व्यवहार करें। प्रवेश २५ जुलाई तक रहेगा, स्थान सीमित हैं। अतः प्रवेशार्थी जल्दी ही पत्र व्यवहार कर अपना स्थान सुरक्षित करा लेवें।

सत्यप्रिय शास्त्री एम० ए० साहित्याचार्य
आचार्य दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार (हरयाणा)

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज सैक्टर ७ ए फरीदाबाद

प्रधान—श्री बलपराय, उपप्रधान—पण्डित हरबंसलाल, श्री एच. एस. भल्ला, मन्त्री—पण्डित विनय, उपमन्त्री—बलबीरसिंह आर्य, प्रचारमन्त्री—ए० सी० कश्यप, कोषाध्यक्ष—जगन्नाथ सोई, पुस्तकाध्यक्ष जगदीश बधवा

आर्यसमाज सालवन, जिला करनाल

प्रधान—श्री लक्ष्मणसिंह, उपप्रधान—राजवीर, मन्त्री—वेदव्रत उपमन्त्री-ओमप्रकाश, कोषाध्यक्ष-हुकमचन्द, पुस्तकाध्यक्ष-मंगतराम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 83207/73 रजि०सं० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १६,७२६४०८६



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १२, अङ्क २५ २८ मई १९८५ वार्षिक शुल्क १२) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

अस्मान् राष्ट्रीय अभिवर्धय

अथर्ववेद की इस पवित्र सूक्ति में यह कहा गया है कि भगवान् हमें सब ओर से राष्ट्र के लिए अभिवृद्ध करें। हम शारीरिक शक्ति के स्वामी हों तो हमारी वह शारीरिक शक्ति राष्ट्र की अभिवृद्धि के काम आए। इस प्रकार मानसिक, बौद्धिक, नैतिक किसी प्रकार की जो शक्ति हमें प्राप्त हो उसका उपयोग हम राष्ट्र के सुदृढ़ संघटन और अखण्डता के लिए करने वाले हों। वेद का यह आदेश अथवा सन्देश प्रत्येक सच्चे राष्ट्र भक्त के लिए है। आर्यावर्त में रहने तथा इसे अपनी मातृभूमि और जन्म भूमि मानने वाले आर्य बन्धुओं को तो इस आदेश का अक्षिरशः से पालन करना ही शोभनीय है। आर्यसमाज के महान् प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने द्वारा संगठित इस समाज के सम्बन्ध में अपने महान् ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में स्पष्टतः लिखा है कि जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर इसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिये जैसा आर्यसमाज आर्य्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। महर्षि के इन शब्दों की व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं बिल्कुल साफ और सीधे शब्दों में महाराज ने देश भारत के प्रति सच्चे देशभक्त आर्य का कर्त्तव्य स्पष्ट कर दिया है। आज जिस प्रकार की परिस्थितियां अपने इस पवित्र देश में उत्पन्न हो गई हैं और दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है उन्हें मूक दर्शक बनकर देखते रहने से काम न बनेगा। हमें अपने पूर्व पुरुषों सच्चे देश भक्तों की श्याम जी कृष्ण वर्मा, ला० लाजपतराय, प० सोहनलाल पाठक श्री पं० रामप्रसाद बिस्मिल, श्री गेंदालाल जी दीक्षित आदि बलिदानी वीरों के समान अपने को संगठित रूप से राष्ट्र रक्षा के लिए आगे बढ़ाना होगा। अन्यथा पंजाब, आसाम तथा जम्मू कश्मीर, नागालैण्ड अन्य अनेक प्रान्तों में जो पृथकतावाद की प्रवृत्तियां बढ़ाई जा रही हैं और एक देश में रहने वाले ही कहीं प्रान्तीयता का, कहीं जातिवाद का, कहीं भाषावाद का, कहीं मत और सम्प्रदाय की संकीर्ण भावनाओं को उभाड़ उभाड़ कर देशवासियों को आपस में लड़ने झगड़ने में लगा रहे हैं यह विनाशकारी सिद्ध होगी।

आर्य पुरुषों को देश के प्रति अपना कर्त्तव्य समझ और तदनुसार अपने आचरण से अत्यन्त भय और विघटन के वातावरण को दूर करके ऋषि के आदेश का पालन कर ऋषि के ऋण से उऋण होने का सौभाग्य प्राप्त करना चाहिए।

ओमप्रकाश आर्य

N. C. २३६ ओमभवन कोट किशनचन्द जालन्धर

स्वामी देवानन्द जी दिवंगत

आर्यजगत् के परम त्यागी तपस्वी संन्यासी श्री स्वामी देवानन्द जी महाराज संस्थापक गुरुकुल आर्य नगर (हिसार) तथा कन्या गुरुकुल वेद मन्दिर (फतेहाबाद) का दिनांक २०-५-८५ को एक दुर्घटना में देहावसान हो गया है। उनके आकस्मिक निधन से आर्यजगत् को बड़ी हानि पहुँची है। वे उच्चकोटि के अनथक सदाचारी संन्यासी थे। ११०८ में उनका जन्म हुआ। युवा अवस्था में आपने जहां आर्यसमाज की सेवा की वहां स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी दिल खोलकर भाग लिया। १९४२ के मुक्ति आन्दोलन में भाग लेने के कारण आपको ६ मास के कठोर कारावास की सजा भी हुई थी। आप सच्चे सामाजिक कार्यकर्त्ता भी थे। दलित वर्ग को ऊपर उठाने में आप अग्रणी रहते थे। वैदिक धर्म तथा देववाणी संस्कृत का अधिकाधिक प्रचार करने के लिए आपने ५० वर्ष की आयु में अपने सम्पन्न परिवार को त्यागकर आर्यजगत् के सौम्य संन्यासी स्वामी योगानन्द जी सरस्वती से संन्यास की दीक्षा ली। ११ अप्रैल १९६४ को आपने हिसार में गुरुकुल आर्य नगर की स्थापना की। यह गुरुकुल आज अपने ही प्रकार का एक आदर्श गुरुकुल है। श्री स्वामी जी महाराज की कन्या गुरुकुल खोलने की भी बड़ी प्रबल इच्छा थी। इसके लिए इन्होंने फतेहाबाद के समीप गुरुकुल वेदमन्दिर की स्थापना की। इस गुरुकुल को हर प्रकार से उन्नत बनाने में उन्होंने दिन-रात एक कर दिया था। वे प्रायः कहा करते थे कि मेरी मृत्यु इसी प्रकार शुभ कार्य करते करते होगी। हुआ भी ऐसा ही।

२० मई को रात्रि को गुरुकुल वेद मन्दिर फतेहाबाद के ठीक आगे अपने गेहूं से भरे ट्रक के पीछे खड़े होकर अपने अधिकारियों से विचार विमर्श कर रहे थे कि एक शराबी व्यक्ति के मोटर-साईकल से दुर्घटना ग्रस्त हो गये। सिविल हस्पताल फतेहाबाद में डाक्टरों ने स्वामी जी को बचाने का बड़ा प्रयत्न किया, परन्तु ईश्वर की यही इच्छा थी। वे हम सबको अनाथ बनाकर चले गये।

आचार्य रामस्वरूप शास्त्री
गुरुकुल आर्य नगर हिसार

२—आर्यसमाज नाढावास जिला हिसार के उत्साही मन्त्री चौ० भागचन्द जी के पूज्य पिता चौ० सहीराम जी का ११-५-१९८५ को ७० वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। वे बड़े परोपकारी, धार्मिक तथा साधुजनों से प्रेम करने वाले थे।

ब्र० सञ्जयदेव
भारतीय नवयुवक सभा नलवा

परमात्मा दिवंगत आत्माओं को कर्म व्यवस्था के अनुसार सद्गति और शोक संतप्त परिवारों को इस वियोग जन्य दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

ये योरोपीय गोपालक-किसान से कसाई तक

क्षितीश कुमार वेदालंकार

(गतांक से आगे)

हम कितने ईमानदार

कभी कभी ऐसा लगता है कि गो रक्षा के प्रति स्वयं भारत की भी ईमानदार नहीं है। जो लोग इस समस्या को केवल धार्मिक दृष्टि से देखते हैं, उनके लिए तो जैसे यह जीवन और इस लोक से बाहर का विषय हो गया और जो केवल आर्थिक दृष्टिकोण से देखते हैं, उनके सामने केवल पश्चिम का अर्थशास्त्र है। इन अर्थशास्त्रियों को पाश्चात्य लोगों की लहर हो गोमांस का निर्यात करके धन कमाने के लिए गोवध करने में कोई बुराई प्रतीत नहीं होती है। कितनी बड़ी विडम्बना है कि गाय की पूजा करने वाले देश में केवल गाय की पूजा होती है, उस की रक्षा नहीं होती और अब स्थिति यहां तक पहुंच गई कि जिन्दा गाय की अपेक्षा मरी हुई गाय की ज्यादा कीमत उठती है।

हमारे धर्मध्वजी लोग बूढ़ी गायों के लिए गोशाला और पिंजरा-पोल के नाम पर दान तो दे सकते हैं, परन्तु स्वयं अच्छे नस्ल की गायें तैयार करने को तपस्या नहीं कर सकते। जब जवानी, जमा खर्च से धर्म की रक्षा हो जाती हो तो यह श्रम साधना करने की क्या जरूरत है? किसी जराजीर्ण गाय को अपने पितरो के पिण्ड दान के समय हरिद्वार के पंडे को दान करके जब वैतरणी पार को जा सकती हो तो गाय की नस्ल सुधारने की जहमत कोई क्यों उठाये।

योरोप में दूध की नदियां

एक तरफ भारत जैसे धर्म परायण देश में यह हालत है, और दूसरी ओर पश्चिमी यूरोप में इस साल के आखिर तक ५ लाख गायों को केवल इसलिए हत्या कर दी जायेगी क्योंकि वहां दूध और मक्खन इतना अधिक हो गया है कि उनके पास उसके रख-रखाव की पूरी व्यवस्था नहीं है। जिन किसानों को पहले अधिक दूध उत्पादन करने के लिये प्रोत्साहन दिया जाता था, अब उन पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाता था, अब उन पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया गया है कि एक सीमा से अधिक दूध या दूध से बनी चीजों के उत्पादन पर उन्हें जुर्माना देना पड़ेगा। ग्रीस और इटली को छोड़कर सारे पश्चिमी यूरोप मे दूध और दूध से बनी चीजों की इतनी भरमार हो गई है कि वे बड़ी संख्या में गायों को मारने की बात सोच रहे हैं। कभी अमेरिका मे गेहूं अत्यधिक मात्रा में पैदा हो जाने पर लाखों टन गेहूं केवल इसलिये समुद्र में फेंक कर नष्ट कर दिया गया था कि संसार में गेहूं का भाव गिरने न पाये। पश्चिम की दुनियां दूध की बहुतायत से परेशान है और गो-भक्तों का यह देश दूध के अभाव अपने बच्चों को कुपोषण का शिकार होते देखने को विवश है।

सबसे पहले शायद ऋषि दयानन्द ऐसे व्यक्ति थे जिन्होने गो करुणा निधि नामक पुस्तक लिखकर गायों के सम्बन्ध मे एक व्यावहारिक दृष्टिकोण उपस्थित किया था। जब जब गोरक्षा आन्दोलन की आंधी चली, तब तब आर्यसमाज ने भी पूरे मन से उसमें सहयोग दिया पर हम समझते हैं कि यह समस्या मोर्चों से या केवल आन्दोलन से हल होने वाली नहीं है। इसके लिये रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाना होगा और यह पहल भी आर्यसमाज को ही करनी होगी।

हिन्दू संस्थाओं का दायित्व

अब पता लगा है कि भारत सरकार यूरोप से बीस हजार गायें मंगा रही है। क्यों न आर्यसमाज से आग्रह करके सौ से लेकर एक हजार तक गाये प्राप्त करे और व्यवस्थित ढंग से डेरी उद्योग को चलाये। यदि राधा स्वामी लोग दयालबाग जैसे औद्योगिक नगर स्थापित कर सकते हैं तो आर्यसमाज क्यों न आर्य डेरी उद्योग नगर स्थापित करे? अन्य हिन्दू संस्थाओं को भी यही व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। इससे जहाँ अनेक युवकों को रोजगार मिलेगा वहां देश की बहुत बड़ी कमी को भी पूरा करने का अवसर मिलेगा। यदि पूरी निष्ठा के साथ आर्य नेता गो रक्षा के इस रचनात्मक दृष्टि को अपना लें तो उन्हें जनता के सहयोग की कमी नहीं होगी और इस उद्योग में घाटे का तो प्रश्न ही नहीं है। आर्यसमाज की स्थापना की दूसरी शताब्दी के प्रारम्भ में इसी प्रकार के रचनात्मक कार्यों को अपनाना होगा। (युगवार्ता)

आर्यसमाज द्रामखा का वार्षिक चुनाव

प्रधान—चौ० किशोरीलाल, उपप्रधान—लाला रामस्वरूप, मन्त्री—चौ० शांतिप्रकाश, उपमन्त्री—चौ० जोगिन्द्रसिंह, कोषाध्यक्ष—चौधरी रतनलाल, पुस्तकाध्यक्ष—चौ० राकेशकुमार, प्रचार मन्त्री—चौधरी सोमनाथ।

अन्तरंग सदस्य—

१—चौ० होशियारसिंह, २—चौ० रमेशकुमार, ३—चौ० सोमप्रकाश

प्रधान आर्यसमाज द्रामखा

कैथल में सराहनीय कार्य

बड़े हर्ष का विषय है कि आर्यसमाज की पुरानी पीढ़ी अब धीरे-२ आर्य युवकों का मूल्य और महत्त्व पहचानने लगी है और उनका सम्मान करने के उदार आयोजन करने लगी है। कैथल के सभी आर्य नर-नारी बधाई के पात्र है कि उन्होंने कैथल नगर में लग्न पूर्वक कार्यरत उत्साही युवक श्री उमेद शर्मा को सम्मानित किया है। युवकों का सम्मान स्वयं आर्यसमाज का ही सम्मान है। श्री उमेद शर्मा हरयाणा प्रांतीय आर्य वीर दल के उपसंचालक हैं और अपने सहयोगियों के साथ कार्य करते हुए उन्होंने कैथल में ही नहीं बल्कि आस-पास के देहात में भी एक नई लहर पैदा कर दी है। शाखाएं लगवाना, वेद प्रचार का कार्य करना, युवकों को आर्यसमाज में खींचकर लाना, ये वे कार्य हैं जिनकी धुन शर्मा जी पर सदा सवार रहती है, भाई उमेद शर्मा से निवेदन है कि वे विनम्र भाव से अपने कार्य में लगे रहें। कैथल नगर के आर्य सभासद ऋषि मिशन के दीवाने हैं और वे शर्मा जी को पूरा सहयोग देकर भविष्य में और भी उपलब्धियां प्राप्त करेंगे।

प्रो० ओमकुमार आर्य

बौद्धिकाध्यक्ष आर्य वीर दल हरयाणा

विशाल प्रशिक्षण शिविर पलवल में

अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के उपलक्ष्य में युवकों में देशभक्ति की भावना भरने, अनुशासित जीवन, उत्तम स्वास्थ्य चरित्र निर्माण, युवा शक्ति को रचनात्मक कार्यों में दीक्षित करने के उद्देश्य से आर्य वीर दल हरयाणा पलवल नगर के दयानन्द बाल विद्यालय में २० जून से ३० जून तक एक विशाल प्रशिक्षण शिविर लगा रहा है। शिविर में युवकों को आसन, प्राणायाम, आत्मरक्षा हेतु लाठी, जूडो कराटे तथा आधुनिक शास्त्रों का प्रशिक्षण भी योग्य प्रशिक्षकों द्वारा दिया जाएगा। इसी अवसर पर आर्यवीर दल पलवल का वार्षिकोत्सव भी होगा।

संजीव आर्य 'मीनू'

मन्त्री आर्य वीर दल पलवल

सम्पादकीय

हरयाणा में संस्कृत की स्थिति एवं भविष्य

मेरी दृष्टि में हरयाणा, संस्कृत तथा वैदिक संस्कृति तीनों ही पर्यायवाची शब्द हैं। संस्कृत का नाम आते ही हरयाणा का तथा हरयाणा का नाम आते ही संस्कृत एवं वैदिक संस्कृति का स्मरण हो आता है। वेदों का प्रकाशनस्थल, गीता का पवित्र उपदेश देने वाला यह यज्ञीय प्रदेश सृष्टि के आरम्भ से ही संस्कृतमय प्रदेश रहा है। यहां के प्राचीन ऋषियों, मुनियों, कवियों, अध्यापकों, नाटककारों, एवं संस्कृत के विद्वान नरेशों ने अपनी श्रेष्ठ रचनाओं, पठन-पाठन एवं व्यावहारिक प्रयोग से इस भाषा को श्रीसम्पन्न बनाया है, किन्तु आज हरयाणा में संस्कृत की स्थिति क्या है? एवं उसका भविष्य कैसा है? इस विषय पर मैं "सर्वहितकारी" के पाठकों के समक्ष कुछ संक्षिप्त जानकारी रखने का प्रयत्न कर रहा हूं।

वेदों की तथा समस्त आर्ष ग्रन्थों की भाषा होने के कारण संस्कृत का प्रचार तथा प्रसार आर्यसमाज का प्रमुख लक्ष्य रहा है। इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए उसने अपने ढंग से पर्याप्त कार्य भी किया है। यह ठीक है कि आर्यसमाज के कुछ कार्यक्रमों को जैसे स्त्री शूद्र-शिक्षा, अस्पृश्यता-उन्मूलन, राष्ट्र-प्रेम, बाल-विवाह विरोध आदि को सरकार एवं कुछ राजनीतिक दलों ने अपनाया है, किन्तु संस्कृत भाषा के प्रचार एवं प्रसार के लिये जितना कार्य उचित रूप से होना चाहिए था उतना नहीं हुआ। केन्द्रीय सरकार ने दो तीन संस्कृत विश्वविद्यालयों तथा तीन चार संस्कृत विद्या पीठों की स्थापना अवश्य की है। इन से भी अभी उन लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं हो रही जो होनी चाहिये थी।

हरयाणा सरकार को तो संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए अभी बहुत कुछ करना है। हरयाणा में संस्कृत की स्थिति का विश्लेषण करते समय मैं यहां अध्ययनाध्यापन प्रणालियों, उनके केन्द्रों, संस्कृताध्यापकों एवं हरयाणा सरकार को ही अपनी इस चर्चा का विषय बनाऊंगा।

संस्कृत अध्ययनाध्यापन की चार प्रणालियां

हरयाणा में संस्कृत भाषा के अध्ययनाध्यापन के क्षेत्र में निम्नलिखित चार प्रणालियां प्रचलित है।

१—अंग्रेजों द्वारा चालित स्कूल, कालिज तथा विश्वविद्यालय—प्रणाली।

२—संस्कृत पाठशाला, संस्कृत कालिज, संस्कृत ब्रह्मचर्याश्रम आदि सनातन धर्म प्रणाली।

३—प्राचीन वैदिक संस्कृति के आधार पर प्रचलित गुरुकुल आर्ष पाठविधि प्रणाली।

४—गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की समन्वयात्मक प्रणाली।

प्रथम प्रणाली

इन चारों प्रणालियों में प्रथम प्रणाली का सर्वाधिक प्रचलन है। इसमें सर्वप्रथम विद्यालय (स्कूल) का स्थान आता है।

माध्यमिक विद्यालय (मिडल स्कूल) स्तर

इस स्तर पर अन्य आधुनिक विषयों के साथ विद्यार्थी को सर्व प्रथम सातवीं कक्षा से संस्कृत पढ़ने की सुविधा उपलब्ध है। यहां संस्कृत विषय अनिवार्य नहीं है। इसके विकल्प में छात्र ड्राइंग, पशु-पालन, गृहविज्ञान, कृषि आदि विषय भी ले सकता है।

संयुक्त पंजाब एवं हरयाणा बनने के कुछ वर्ष बाद तक छठी कक्षा से स्कूलों में संस्कृत पढ़ने की सुविधा प्राप्त थी; किन्तु धीरे धीरे छठी कक्षा से संस्कृत की पढ़ाई समाप्त कर सातवीं से आरम्भ कर दी गई। साथ ही मिडल स्कूलों से शास्त्री का पद भी समाप्त कर दिया गया। पहले प्रत्येक मिडल स्कूल में शास्त्री की पोस्ट होती थी। वह हिन्दी तथा संस्कृत दोनों विषय आठवीं तक पढ़ाता था। बाद में यह कार्य प्रभाकर ओ० टी० (हिन्दी अध्यापक) को सौंप दिया गया। इससे संस्कृत की बहुत हानि हुई। इन कक्षाओं में शास्त्री दोनों विषयों को सुविधा पूर्वक पढ़ा सकता था। हिन्दी अध्यापक की संस्कृत में मैट्रिक तक की ही योग्यता होती है। अतः वह संस्कृत के छात्रों के साथ न्याय नहीं कर पाता। फलस्वरूप छात्र इस विषय को लेते ही नहीं या अपने समकक्ष हाई स्कूल के उन छात्रों की तुलना में पिछड़ जाते हैं जिनको संस्कृत के प्रशिक्षित अध्यापक से पढ़ने की सुविधा उपलब्ध है।

इन स्कूलों में संस्कृत में अप्रशिक्षित अध्यापक इस विषय के अध्यापन को उदासीनता से लेते हैं।

उच्च विद्यालय (हाई स्कूल) स्तर

इस स्तर पर शास्त्री ओ० टी० प्रशिक्षित अध्यापक संस्कृताध्यापन का कार्य करते हैं। अनेक अध्यापक इस विषय में आचार्य एवं एम० ए० भी उत्तीर्ण हैं। समय विभाग बनाते समय भी संस्कृत को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है। पीरियडों की संख्या भी कम है। रचना (कम्पोजिशन) के पृथक् पीरियड न होने के कारण बच्चे संस्कृत व्याकरण तथा अनुवाद में शिथिल रह जाते हैं।

शिक्षा विभाग में संस्कृत एवं हिन्दी अध्यापकों के लिए पदोन्नति के अवसर शून्य हैं। एम० ए० करने के बाद तथा ५० प्रतिशत अंकों की शर्त पूरी करने के बाद भी उन्हें संस्कृत प्राध्यापक या मुख्याध्यापक के पद पर पदोन्नत नहीं किया जाता।

यह सौभाग्य की बात है कि हरयाणा में संस्कृताध्यापकों को बी० एड० के वेतनमान (ग्रेड) दिया जाता है, किन्तु उन्हें बी० एड० अध्यापकों को मिलने वाली अन्य सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं। फलस्वरूप इनमें कुण्ठा, निराशा तथा आक्रोश की भावनाएं पनपती हैं, जो शिक्षा जगत् के लिये कल्याणप्रद नहीं हैं। एक कुण्ठित एवं निराश अध्यापक अपने जैसे विद्यार्थी ही समाज को देगा।

उन्हीं विद्यार्थियों के हाथ में ही देश का, प्रान्त का, तथा समाज का भविष्य सुरक्षित है।

सीनियर सैकेण्डरी स्कूल स्तर

इस शैक्षणिक सत्र से सम्पूर्ण हरयाणा में १५० के लगभग हायर सैकेण्डरी व हाई स्कूलों का स्तर बढ़ाकर १०+२ शिक्षा प्रणाली के लिये तैयार किया गया है। साथ ही सम्पूर्ण हरयाणा के लगभग १०० कालिजों में भी यह प्रणाली चालू की जा रही है। यह स्वागत योग्य कदम है। इसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम केन्द्रीय सरकार के शिक्षण संस्थान के अनुसार रखा गया है। इससे सम्पूर्ण भारत में शिक्षा में एकरूपता आएगी तथा हरयाणा के विद्यार्थी भी दूसरे प्रान्तों के छात्रों से पिछड़े नहीं रहेंगे।

इस प्रणाली में भी प्रान्त की आवश्यकताओं तथा परिस्थितियों के अनुरूप उन्नीस-बीस का परिवर्तन किया जा सकता है। यह ठीक है कि इसमें संस्कृत को एक ऐच्छिक विषय के रूप में अवश्य रखा है किंतु अनिवार्य विषयों मे हिन्दी (कोर) के विकल्प में संस्कृत (कोर) विषय लेने की छूट होनी चाहिये थी। अब तक महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की प्री-यूनिवर्सिटी (आर्टस, साईंस एवं कामर्स) तथा बी० ए० I, प्री-मैडिकल एवं प्री-इन्जिनियरिंग आदि कक्षाओं में यह सुविधा उपलब्ध थी। अतः मेरा सुझाव है कि १०+२ प्रणाली में भी रोहतक विश्वविद्यालय की भाषा प्रणाली को लागू किया जावे।

क्रमशः

सत्यवीर शास्त्री
सभा मन्त्री

सरदार स्वर्णसिंह, खुशवन्तसिंह के वक्तव्य राष्ट्र विरोधी

—प्रो० शेरसिंह सभा प्रधान

सरदार स्वर्णसिंह जैसे पुराने और अनुभवी तथा राष्ट्रवादी कहे जाने वाले लोग भी आतंकवादियों द्वारा की गई हत्याओं के बारे में कहें कि ५ प्रतिशत आतंकवादियों द्वारा और ९५ प्रतिशत पुलिस द्वारा की गई तो आश्चर्य भी होता है और दु:ख भी। उन्होंने भिंडरवाला की प्रशंसा और स० दरबारासिंह की निन्दा की है। खालिस्तान के बारे में यह कहकर कि मतसग्रह पर सिखों का बहुमत साबित कर सकता है कि वह उसके विरुद्ध हैं, मत सग्रह का शोशा छोड़ने का प्रयास किया है। क्या देश का विभाजन केवल एक सम्प्रदाय द्वारा अपने बहुमत से किया जा सकता है? परोक्ष रूप से स० स्वर्णसिंह "सिख एक अलग कौम है" जैसे खतरनाक नारे से समर्थन दे रहे हैं। सम्प्रदाय निर्पेक्ष राज्य में ऐसी कल्पना करना भी संविधान की मान्यताओं और राष्ट्रहित के विरुद्ध है।

सरदार खुशवन्तसिंह भी दोनों तरह की बोलियां बोलते रहते हैं। उग्रवाद तथा राष्ट्रद्रोह की निन्दा भी और दूसरे ही क्षण उसका प्रोत्साहन भी।

अमृतसर में आप्रेशन ब्लूस्टार के पश्चात् सेना से हथियार और वाहन लेकर भागने वाले सैनिकों को आजाद हिन्द फौज के सैनिकों के समकक्ष बनाकर क्या वे साम्प्रदायिक विद्रोहियों को स्वतन्त्रता सेनानी घोषित नहीं कर रहे? साम्प्रदायिकता और विद्रोह को राष्ट्रभक्ति मानने लगे फिर तो साम्प्रदायिक भावनाओं में बहकर तथा देश को तोड़ने वाले तत्त्वों द्वारा भड़काये जाने पर जो लोग सेना से विद्रोह कर जायें, वे आजादी के परवाने कहे जायेंगे। क्या स० खुशवन्तसिंह जी चाहते हैं कि ऐसे विद्रोहियों को आजाद हिन्द फौज के सनानियों की तरह सम्मानित किया जाये? साम्प्रदायिकता अच्छे भले बुद्धिजीवी लोगों को भी कितना अन्धा बना देती है यह इसका जीता-जागता उदाहरण है।

अकाली नेतृत्व के लिये जो संघर्ष चल रहा है, उसमें किसी धड़े से भी तर्क संगत और रवैये की अपेक्षा करना गलत होगा। उनके वक्तव्यों की भाषा में अन्तर हो सकता है परन्तु उनकी साम्प्रदायिकता और पृथकतावादिता तो एक जैसी ही है। उनके बीच की लकीर तग ही नहीं होती जा रही, बल्कि समाप्त होती जा रही है। पंजाब के बाहर बसे हुए सिखों को पंजाब में आने की दावत देकर सन्त लोंगोवाल ने खालिस्तानी विचार की पुष्टि की है। स० जोगिन्द्रसिंह और लोंगोवाल सभी हत्याओं का दोष सरकार पर डाल रहे हैं। उनमें से किसी से भी बात करना आतंकवाद को बढ़ावा देना है। उनसे बात तभी करनी चाहिये जब वे एक होकर आयें और संविधान की परिधि में तर्कसगत और न्यायपूर्ण हल के लिये कहें और निर्णय होने पर उसको तुरन्त अमल में लाने के लिये खुले सहयोग का वचन दें।

सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने हेतु

शराब तथा दहेज विरोधी आन्दोलन के लिए सहयोग की अपील

शराब के बढ़ते हुए प्रचार तथा उसके सेवन करने से सामाजिक बुराइयां बढ रही हैं। जहां शराब खरीदने पर मेहनत से कमाया गया धन खर्च होता है, वहां शराब के सेवन करने पर स्वास्थ्य तथा चरित्र नष्ट होता है। अत: गत वर्ष से सभा की ओर से शराबबन्दी आन्दोलन चलाया जा रहा है। ग्राम बालावास जिला हिसार, ग्राम नाहरी जिला सोनीपत ग्राम सिहोटी जिला रोहतक में ग्रामवासियों ने संघर्ष करके शराब के ठेके बन्द करवा दिये हैं। कई अन्य ग्रामों में भी संघर्ष जारी है।

आर्यसमाज सदा ही सामाजिक बुराइयों को समाप्त कराने में अग्रणी रहा है। अत: हरयाणा के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि जिन ग्राम पंचायतों की ओर से शराब के ठेके बन्द करने के लिये प्रस्ताव सरकार को भेजे गये थे, परन्तु फिर भी वहां ग्रामीण जनता की इच्छा के विरुद्ध ठेके खोल दिये हैं, वहां धरना देकर शराब की बिक्री बन्द करावें तथा अपने निकट के ग्रामों की सर्वखाप की पंचायतें बुलाकर शराब पीने तथा दहेज लेन देन पर पाबन्दी लगवाने का कार्यक्रम बनवाने का यत्न करें।

आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ता ग्राम पंचायतों को प्रेरणा करें कि वे शराब के ठेके बन्द करवाने के प्रस्ताव करवाकर सितम्बर मास से पूर्व हरयाणा के मुख्यमन्त्री को रजिस्टर्ड पत्र द्वारा भेज देवें।

अब ग्रामीण जनता में दोनों बुराइयों को समाप्त करने के लिये चेतना आ रही है। किसान, मजदूर तथा महिलाएं भी शराब के ठेकों को बन्द करवाने के लिये यत्नशील हैं।

अत: इस वातावरण के अनुसार आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को शराब तथा दहेज बन्दी आन्दोलन को गतिशील करने में पूरी शक्ति के साथ जुट जाना चाहिये। सभा की ओर से प्रचार के लिये मांग आने पर भजनमण्डलियों का कार्यक्रम बनाया जायेगा। आर्यसमाज शराब बन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए उदारता पूर्वक धनराशि भी भेजने की कृपा करें।

आपके सहयोग के इच्छुक

ओमानन्द सरस्वती,	प्रो० शेरसिंह,	सत्यवीर शास्त्री,	रामकिशन गुप्ता
संरक्षक	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक

तन उजला है, मन उजला हो

'नाज' सोनीपती

आग लगी है, आंगन आंगन झुलस रहा है सारा उपवन।
चहुँदिश करने बन्द उल्लंघन सत्याग्रह, हड़तालें, अनशन।
पथ में रोड़े, बाधा, अड़चन नई समस्या, नूतन उलझन।
मौज उड़ाते हैं अब दुर्जन बिन आई मरते हैं सज्जन।
बन आई है गद्दारों की बिगड़ गया शासन अनुशासन।
घर घर में आतंकवाद ने आन जमाया अपना आसन।
उग्रवादियों ने हत्याओं को बना लिया जीवन का साधन।
बम विस्फोट, धमाके, गड़बड़, हत्याएं, विद्रोह क्रन्दन।
लूटो और मजे से लूटो फिर कर देना आत्म समर्पन।
दु:ख के बादल सिर पर छाए क्या ! इसको कहते हैं सावन
तुमने जाना हमने माना चन्दन अब नहीं है चन्दन।
घूम रहे हैं सांप विषैले होता है जिनका अभिनन्दन।
नहीं प्यार का ठौर ठिकाना जगह जगह आपस में अनबन।
ना समझी में बचपन बीता यों ही चला गया है यौवन।
मर्यादा के बन्धन तोड़ो कट जाएंगे सारे बन्धन।
मानव ! कर कुछ नेक कमाई ताकि प्रेम प्राप्त हो नरतन।
तन उजला है, मन उजला हो।
होंगे फिर ईश्वर के दर्शन ॥

सर्वपाल गोरक्षा पंचायत मादस एक ऐतिहासिक आयोजन

मादस ५ मई ८५। मादस जिला गुड़गांव में एक विशाल गोरक्षा पंचायत का आयोजन किया गया जिसमें गुड़गांव, फरीदाबाद, अलवर, मथुरा, भरतपुर आदि जिलों के सभी प्रमुख पालों के सरदारों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। सभा का संयोजन पं० बाल दिवाकर जी हंस प्रधान संचालक सार्वदेशक आर्यवीर दल ने किया। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में गोरक्षा से सम्बन्धित सभी पहलुओं को पंचायत के सम्मुख रखा और पंचायत के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए उन्होंने घोषित किया किया कि गोरक्षा का प्रश्न बिना किसी साम्प्रदायिक और भौगोलिक भेद को भुलाया जाना चाहिए। जो भी व्यक्ति गाय के प्रति आर्थिक अथवा धार्मिक दृष्टिकोण से आस्था बनाए हुए है, उनकी भावनाओं का आदर किया जाना चाहिए। उन्होंने जन-जागरण के निमित एक स्थाई कमेटी भी गठित करने की बात कही और यह भी कहा कि जनमत निर्माण करने के लिए पंचायत अपने उद्देश्यों और प्रचार के साधनों को सुरक्षित करने के लिए सक्रिय हो जावे। सभी सरदारों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया।

मीतरोलपाल के सरदार चौ० किशोरसिंह ने पंचायत के विषय में स्पष्ट करते हुए कहा कि गोहत्या के लिए जिम्मेदार मेवों को दण्डित करना उद्देश्य में सहायक पुलिस कर्मियों को प्रोत्साहन देना, अल्पसंख्यक हिन्दुओं की भावनाओं को मेवात क्षत्र में संरक्षण देना, ध्यान देने योग्य बातें हैं। फिरोजपुर झिरका में नए लगने वाले बूचड़खाने के विषय को उन्होंने हिन्दू मेव एकता में खतरे की घण्टी की संज्ञा दी और पंचायत से अनुरोध किया कि वह इसके औचित्य और अनौचित्य पर विचार विमर्श करने के लिए तैयार रहे।

तंवरपाल की ओर से महाशय किशनराम जी ने गोरक्षा के लिए मेवों की सहायता को अनिवार्य बताते हुए अपने मेव भाइयों पर इस जिम्मेदारी को डाला और बड़े खुले शब्दों में उद्गार व्यक्त किए कि हमारे मेव भाई जो भी कार्य इस कलंक को दूर कराने मे हमसे सहयोग लेना चाहें, ले सकते हैं।

ओमप्रकाश जी तेवतिया-चेयरमेन ब्लाक समिति पलवल ने इस बात को सहर्ष स्वीकार किया कि सभी मेव हत्यारे नहीं हैं लेकिन जो भी एक दो असमाजिक तत्व अथवा साम्प्रदायिकता मे भीगे हुए लोग इस दिशा में सक्रिय हैं। उन्हें ललकारना होगा और हमें वह प्रयास करने होंगे जिससे गोहत्या बन्द हो, इसके लिए हमें चाहे जो भी कामत चुकानी पड़े, उसके लिये हम तैयार हैं।

झाडसापाल के चौ० सुखपाल पहलवान ने सारे हिन्दू और मेवों को गोपालन के लिये आह्वान किया। उन्होंने गाय के ऐतिहासिक महत्व को दर्शाते हुए बार बार गोपालन को ही गोरक्षा का सबसे सक्षम बताया।

सारौतपाल के प्रतिनिधि चौ० राजेन्द्रसिंह होडल ने खेद व्यक्त किया और कहा-सारे मेवों को गोरक्षा में रुचि लेनी चाहिए जो नहीं ले रहे हैं। आपने अपेक्षाकृत मेवों की न्यून उपस्थिति पर भी क्षोभ व्यक्त किया और कहा कि गोहत्या के वास्तविक अपराधियों को जानने और पहचानने तथा उन्हें दण्डित करने के सुझावों पर विचार करना चाहिये। उन्होंने बड़े ओजस्वी शब्दों में कहा कि गोहत्या के लिए हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही बराबर जिम्मेवार हैं। अमीर हिन्दू और गरीब मेव को मैं सीधेतौर पर इसके लिए दोषी मानता हूं। उपस्थित मेव सरदारों की गोरक्षा के लिए सहानुभूति को देखते हुए उन्होंने इस पंचायत का अधिवेशन दुबारा बुलाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

खिड़कलौतपाल के पंच और नूह क्षेत्र के वर्तमान विधायक चौ० अजमतखां ने गोरक्षा के विषय को बहुमत की भावनाओं से सम्बन्धित बताया और अपने पड़ोसी होने के नाते मेवों को हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं का सम्मान करने की प्रेरणा की। उन्होंने गोहत्या के लिए जिम्मेदार मेवात क्षेत्र की गरीबी और पिछड़ेपन को ठहराया और इसे दूर करने में जन साधारण से मदद मांगी। आपने मेवों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमें पालों के हिन्दू सरदारों ने बुलाया है अब हमारा फर्ज हो जाता है कि हम मेवो की ओर से पंचायत बुलावें और उसमें सब साहिबवान सम्मिलित हों और गोहत्या बन्दी का फैसला करें। साथ हो उन्होंने पचायत में पधारे हुए सरदारों से अनुरोध किया कि वह नूह के अन्दर पचायत बुलाने की आखरी तारीख का निर्णय दे। फलत: सभी ने १७ जुलाई १९८५ को स्वीकार किया। फिरोजपुर झिरके के बूचड़खाने के सम्बन्ध में उन्होंने आश्वासन दिया कि हरयाणा सरकार जनभावनाओं का ध्यान रखते हुए यह कलक कदापि अपने माथे पर लगाने को तैयार नही होगी। मैं आपको ऐसा आश्वासन देता हूं।

तावडू के भगत मंगतूराम ने गोहत्या के लिए मेवात के मेव राजनीतिज्ञो को स्पष्ट रूप से उत्तरदायी ठहराया। इस बात को उन्होंने सप्रमाण पुष्टि की और कहा कि तावडू क्षेत्र के बडार का गाव मे लगने वाले दो सौ एकड़ क्षेत्र मे बनने वाले बूचड़खाने का सूचना उन्हे प्राप्त हुई है। टाटा जसे समृद्धवान व्यक्ति उसे लगा रहे हैं। उन्होने कहा कि गोहत्या का मामला मामूली नही है इसमे कानून हमारी उतनी मदद नहीं करता जितनी करनी चाहिए इसलिए भाईचारे के आधार पर ही इस का हल किया जाना चाहिए। अगर यह समस्या हल नही हुई तो इसके भयकर से भयकर परिणाम हो सकते हैं।

अलीका घतीर मु डेरपाल के पंच चौ० गगावाल ने गोरक्षा के प्रश्न को जंगल की आग को उपमा देते हुए इसकी गम्भीरता को दर्शाया। अनेक पालो के पचों के बाद—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शाल वाले ने स्पष्ट किया कि कुरान शरीफ गोहत्या के लिए प्रेरणा नही देती। उन्होंने हजरत मुहम्मदसाहब के सन्दभ को उपस्थित करते हुए कहा कि वे गाय के ग श्त को वाई की बीमारी और दूध को रसायन मानते हैं। आपने सभी सरदारों को आह्वान किया और कहा कि मैं आपसे प्रभावित हूं और आप अगली पचायत जब और जहां भी करेंगे, मैं स्वयं उसमें उपस्थित होऊ गा और हर प्रकार की उचित सहायता के लिए अपने आपको वचनबद्ध समझू गा। श्री राधाकृष्ण बजाज ने गो और गोवश की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए सन्त विनोबाभावे के त्यागपूर्ण निर्वाण की ओर लोगो का ध्यान आकृष्ट किया और कहा कि जो काम सरकार नही करती उसे जनबल कर सकता है।

मुझे यह देखकर आनन्द हो रहा है कि यह पचायत पुराने जमाने की याद दिलाते हुए गुत्थियो को सुलझाने में जो उत्साह दिखा रही है, वह भारत भविष्य के निर्माण मे सहायक होगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि मेवात में मेव गोहत्या करते हैं, परन्तु वे भूल गये हैं कि वे पूर्व हिन्दू थे और उनके पूर्वज गोरक्षा करते थे। अब वे इस्लाम ग्रहण करने पर मुसलमान बन गये और गोहत्या करने लग गये। उनके धार्मिक ग्रन्थ में गोहत्या करने के लिए कहीं नही लिखा। अतः मेव भाइयों को अपने पूर्वजों के पदचिन्हों पर चलते हुए गोहत्या नही करनी चाहिए। हरयाणा की जनता गोहत्या को पाप मानती है।

चौ० राजेन्द्र बीसला (भू० पू० विधायक), सुतीक्षण मुनि, स्वामी अमरानन्द आदि अनेक वक्ताओं ने भी गोरक्षा के हित में हिन्दू मेवों को एक होकर निर्णय लेने का आह्वान किया। अन्त में पचायत की अध्यक्षता करने वाले सरदार चौ० सोहनलाल का भाषण हुआ और उन्होंने कहा कि मैं इस पचायत के सयोजक के प्रति आभार प्रकट

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

आरक्षण आर्थिक आधार पर हो

राधेश्याम आर्य एडवोकेट मुसाफिरखाना, सुलतानपुर

सरकारी सेवाओं तथा सार्वजनिक प्रतिष्ठानों में जातीय आधार पर आरक्षण की व्यवस्था से जातिवाद, वर्गवाद कोकुत्सित प्रोत्साहन मिल रहा है, साथ ही अयोग्य व अक्षम व्यक्ति के कारण प्रशासन तन्त्र पंगु बनता जा रहा है। आरक्षण–व्यवस्था के कारण सुयोग्य उम्मीदवारों का चयन नहीं हो पाता है, और अयोग्य उम्मीदवार सरकारी पदों पर आसीन हो जाते हैं। आरक्षण के अन्तर्गत नियुक्त या प्रोन्नत व्यक्ति के मन में एक हीन भावना व्याप्त रहती है, जिसका कुप्रभाव उसकी कार्य क्षमता पर भी अवश्य भावी रूप से पड़ता है। आरक्षण का आधार जातीय होने के कारण वैमनस्य, विद्वेष, मनोमालिन्य बढ़ता है और वर्ग संघर्ष का रूप ग्रहण कर लेता है, जैसा कि इस समय गुजरात में हो रहा है। इस व्यवस्था के कारण वे युवक जो सुयोग्य तथा मेधावी हैं, सेवा का अवसर नहीं पाते और देश तथा समाज को भी उनकी प्रतिभा से वंचित रहना पड़ता है। यदि आरक्षण की व्यवस्था जातिगत के स्थान पर अर्थगत आधार पर की जाये तो समाज का अधिक हित इसमें निहित है।

आर्यसमाजों के आगामी वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज गन्नौर शहर जिला सोनीपत	३१ मई से १, २ जून
,, फतेहपुर जिला अम्बाला	,, ,, ,,
,, फूंसगढ जिला करनाल	३१ ,, १, २ ,,
,, माण्डवा जिला भिवानी	१, २ जून
,, अकालगढ जि० जीन्द	१ से ३ जून
,, आर्यनगर जिला भिवानी	४, ५
,, ईशरहेड़ी जिला कुरुक्षेत्र	४ से ६
,, कालका जिला अम्बाला	१० से १६
,, गुरुकुल भैंसवाल जिला सोनीपत	१५, १६ ,,
,, बेगा जिला सोनीपत	२८ से ३०

जो आर्यसमाज अपने उत्सव रखना चाहते हैं, वे शीघ्र तिथियां नियत करके सभा को सूचित करें, ताकि समय पर सभा की ओर से उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों का प्रबन्ध किया जाये।

वेदप्रचार विभाग में पं० चन्द्रसेन वैदिक मिशनरी, पं० सुरेशकुमार शास्त्री एम० ए०, ब्रह्मचारी महेन्द्रसिंह शास्त्री आदि उपदेशक तथा ६ भजनमण्डलियां प्रचार कार्य कर रही हैं।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री
सभा मन्त्री

(पृष्ठ ५ का शेष)

करता हूं और आशा करता हूं कि आगामी १७ जुलाई को जब हम नूह में एकत्र होंगे तो बिना किसी भेदभाव के हम गोहत्या के कलक को मिटाने में समर्थ हो सकेंगे। इस पंचायत में हजारों गो भक्तों ने भी भाग लिया। स्थान स्थान पर स्वागत द्वार बनाए गए थे। पचायत में भाग लेने वाले सभी लोगों के लिए लगर लगाया गया था जिसमें सभी लोगों ने भोजन के पैकिट ग्रहण किये।

संक्षेप में यह पचायत अभूतपूर्व एवं ऐतिहासिक महत्त्व की पंचायत थी। गोरक्षा के गगनभेदी नाद के साथ पंचायत समाप्त हुई।

धर्मचन्द्र विद्यालंकार एम० ए०

गुड़गांव गांव में विशाल शिविर आयोजन

दिनांक १०-६-८५ से १६-६-८५ तक गुड़गांव गांव के उच्च विद्यालय में एक विशाल ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर लगाया जा रहा है जिसमें गुड़गांव जिले के १५–२० ग्रामों के स्कूल व कालिजों के १०० विद्यार्थी भाग ले रहे हैं।

इस सम्पूर्ण शिविर का आयोजन ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री महोपदेशक (आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा) लोगों के सहयोग से कर रहे हैं। शिविर को सफलतार्थ पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, प्रो० शेरसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, आचार्य सत्यप्रिय मुनि तिजारा, पं० ईश्वरचन्द शास्त्री, पं० सुरेशकुमार शास्त्री व ब्र० विजयपाल प्रवचनार्थ पधार रहे हैं।

भविष्य
सजानसिंह अध्यापक

आठवीं कक्षा का शानदार परीक्षा परिणाम

इस वर्ष हमारे विद्यालय आर्य सी० सै० सिरसा कक्षा आठवीं का परीक्षा परिणाम ७० % रहा और चार छात्रों ने स्कूल में सबसे अधिक अंक प्राप्त किये। इन छात्रों को छात्रवृत्ति प्राप्त होने की सम्भावना है–

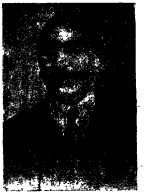
१—संजीवकुमार वर्मा सुपुत्र श्री श्रीकृष्ण वर्मा
२—राजीवकुमार वर्मा सुपुत्र श्री श्रीकृष्ण वर्मा
३—देवकीनन्दन शर्मा सुपुत्र श्री तुलसीराम शर्मा
४—श्यामलाल शर्मा सुपुत्र श्री बाबूराम शर्मा

प्रधानाचार्य

हरयाणा के यशस्वी लोक साहित्यकार

यशवन्तसिंह वर्मा टोहानवी

लेखक—डा० भवानीलाल भारतीय



यशवन्तसिंह वर्मा टोहानवी

सरल भाषा में नाटकों के माध्यम से वैदिक तथा प्राचीन इतिहास के गौरवपूर्ण अध्यायों को जनसमाज के समक्ष प्रस्तुत करने वाले यशवन्तसिंह टोहानवी सच्चे अर्थों में लोक साहित्य कार थे। इनका जन्म टोहाना जिला हिसार में १८८१ ई० में हुआ। यद्यपि इनकी शिक्षा सामान्य उर्दू हिन्दी तक ही सीमित थी किन्तु सहज प्रतिभा के कारण आगे चलकर नाटक रचना करते और दृश्य काव्य के इसी माध्यम से आर्यसमाज के विचारों का प्रचार करने में इन्हें प्रशंसनीय सफलता मिली। संगीत और सितारवादन में इनकी रुचि विशेष रूप से थी। टोहाना निवासी श्री देवीदयाल गुप्त तथा अपने बड़े भाई जयसिंह वर्मा के सहयोग से इन्होंने टोहाना कस्बे में आर्यसमाज की स्थापना की। समय समय पर आर्यसमाज के उत्सवों में गीत प्रस्तुत करने तथा संगीत के द्वारा प्रचार करने का अवसर मिलने के कारण वर्मा जी को संगीत प्रधान नाटक लिखने की प्रेरणा मिली। इनके द्वारा लिखे गए भजन संग्रहों तथा नाटकों का विवरण इस प्रकार है—

आर्य भजन दीपिका तथा आर्य भजन सागर इनकी आरम्भिक कृतियां हैं। इनके ईश्वर भक्ति समाज सुधार, देश प्रेम, कुरीति निवारण जैसे विषयों से सम्बन्धित भजनों का संग्रह है। कालान्तर में आपने जो संगीत प्रधान नाटक लिखे वे अत्यन्त लोकप्रिय हुए। ये नाटक पाठ्य के साथ साथ अभिनय भी हैं। इन नाटकों की लोकप्रियता का पता इसी बात से चलता है कि प्रत्येक के हजारों की संख्या के अनेक संस्करण अब तक निकल चुके हैं। सामान्य कोटि के पाठकों में इन नाटकों का बड़ा प्रचलन है।

वर्मा जी द्वारा लिखित संगीत नाटक— १- आर्य संगीत रामायण ४६ संस्करण, २- आर्य संगीत महाभारत २० संस्करण, ३- संगीत हकीकतराय २९ संस्करण, ४- संगीत हरिश्चन्द्र १९ संस्करण, ५- संगीत बाल शहीद ६ संस्करण, ६- संगीत पृथ्वीराज ८ संस्करण प्रथम संस्करण देवीदयाल गुप्त द्वारा उनमें प्रकाशित, ७- संगीत ऋषि दयानन्द ५ संस्करण।

नाटकों की विषय वस्तु के चयन की दृष्टि से विचार करें, तो ज्ञात होता है कि लेखक ने प्रायः प्राचीन इतिहास तथा मध्यकालीन इतिहास के उन कथानकों को चुना है, जो देशवासियों में पुरातन गौरव को पुनः स्थापित करने तथा वीर भावों को उत्तेजित करने में समर्थ हैं। रामायण और महाभारत की कथावस्तु युग युगान्तरों से भारतवासियों के लिए प्रेरणा स्रोत रही हैं। आर्यसमाज ने इन ऐतिहासिक काव्यों के प्रति देशवासियों को एक सही दृष्टि दी तथा राम एवं कृष्ण जैसे मर्यादा पालक महापुरुषों के आदर्श का अनुकरण करने की बात कही थी। इसी प्रकार राजा हरिश्चन्द्र की सत्यवादिता, सम्राट् पृथ्वीराज का पौरुष और पराक्रम, गुरु गोविन्दसिंह के पुत्रों का आत्मत्याग तथा ऋषि दयानन्द के पावन चरित्र को नाटकों के द्वारा प्रस्तुत करने में लेखक को अद्भुत सफलता मिली है।

यह सत्य है कि इन नाटकों में उच्चकोटि के साहित्यिक गुणों का चाहे अभाव ही क्यों न हो किन्तु लेखक का प्रयोजन तो बोलचाल की भाषा और संगीत की लोक धुनों के द्वारा पुराकालीन इतिवृत्तों को प्रस्तुत करना ही था। इस प्रकार उपर्युक्त नाटकों में वीर (हरिश्चन्द्र नाटक में सत्यवीर, पृथ्वीराज में युद्धवीर तथा ऋषि दयानन्द में धर्मवीर) करुण, शांत आदि विभिन्न रसों की पूर्ण रूप से निष्पत्ति हुई है।

डा० सुशीला आर्या के अनुसार ये नाटक उर्दू में लिखे गए थे। पुनः इनका हिन्दी रूपान्तरण भी किया गया। कई नाटकों के पंजाबी रूपान्तर भी हुए।

यशवन्तसिंह टोहाना का देहान्त १९५७ में हुआ।

ब्रह्मचारी विरजानन्द की शंका का समाधान

आचार्य सुदर्शनदेव सभा उपमन्त्री

ब्रह्मचारी विरजानन्द की ओर से "आचार्य सुदर्शनदेव जी पुनः विचार करें" शीर्षक से एक लेख सर्वहितकारी (१४ मई १९८५) में प्रकाशित हुआ है। उन्होंने मेरे द्वारा लिखित यजुर्वेद भाष्यभास्कर की भूमिका मे आर्यसमाज के प्रतिष्ठित विद्वान् आचार्य विश्वश्रवा जी के एक लेख की समीक्षा में लिखे तथ्य पर आपत्ति उठाने का प्रयास किया है। आचार्य विश्वश्रवा जी का मन्तव्य है कि महर्षि ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका नामक ग्रन्थ तीन मास से भी कम समय में लिख दिया था। जबकि श्री आचार्य जी का यह कथन महर्षि की रचना ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका की अन्तःसाक्षी के विरुद्ध है। महर्षि स्वयं इस ग्रन्थ के आरम्भ में लिखते हैं—विक्रम के संवत् १९३३ भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष को प्रतिपदा रविवार के दिन इस वेदभाष्य (ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका) का आरम्भ मैंने किया है।

महर्षि वेदोत्पत्ति विषय में पुनः लिखते हैं—विक्रम के संवत् १९३३ फाल्गुण मास कृष्णपक्ष षष्ठी शनिवार के दिन चतुर्थ प्रहरण के आरम्भ में यह बात हमने लिखी है।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका की इस अन्तःसाक्षी के आधार पर मैंने लिखा है कि ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के वेदोत्पत्ति विषय लिखने तक लगभग ६ मास का समय लग गया। जबकि आचार्य विश्वश्रवा जी लिखते हैं कि ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तीन मास से भी कम समय में लिखी गई। इस उल्लिखित आन्तरिक प्रमाण के आधार पर श्री आचार्य जी की मान्यता मिथ्या है।

ब्रह्मचारी विरजानन्द जी का कहना है कि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के प्राक्कथन से लेकर वेदोत्पत्ति विषय तक की ग्रन्थसामग्री बहुत थोड़ी है। इसमें लगभग ६ मास का समय कैसे लग सकता है। ब्रह्मचारी जी ने इस ६ मास के समय लगने का अपने लेख मे समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। ब्रह्मचारी जी का कहना है कि महर्षि ने पहले सारा संस्कृत भाग लिखा और तत्पश्चात् उसका प्राकृत भाग लिखा गया। इसलिए ६ मास का समय लगा होगा।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं में लिखी गई है। इन दोनों अङ्गों का नाम ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका है। जिस समय वेदोत्पत्ति विषय का उक्त प्राकृत भाग लिखा जा रहा था उस समय इस ग्रन्थ को आरम्भ करते हुए लगभग ६ मास (५ मास २१ दिन) हो चुके थे। यह इतना समय कैसे लग गया यह प्रकरण नहीं है, प्रकरण तो यह है कि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के लिखने में कितना समय लगा। माननीय आचार्य जी की मान्यता है कि इस ग्रन्थ के लिखने में तीन मास से कम समय लगा है। श्री आचार्य जी का यह कथन ग्रन्थ की आन्तरिक साक्षी के आधार पर अप्रामाणिक है और इस विषय में मुझे पुनर्विचार करने की कतई आवश्यकता नहीं है। ब्रह्मचारी जी ने मेरे पक्ष का समर्थन और श्री आचार्य विश्वश्रवा जी के मत का प्रतिकार ही अपने लेख में प्रस्तुत किया है।

वेदोपदेशक विद्यालय का उद्घाटन

ब्रह्मकुटी वेद मन्दिर ब्रजघाट में १० मार्च रामनवमी १९८५ को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज द्वारा वेदोपदेशक विद्यालय का उद्घाटन किया गया। इस पावन अवसर पर स्थानीय सन्तों के अतिरिक्त डा० सत्यप्रिय जी शास्त्री संस्कृत विभागाध्यक्ष जगदीश शरण हिन्दू डिगरी कालेज अमरोहा तथा वैदिक गुरुकुल पद्धति के प्रबल समर्थक स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज उपस्थित थे।

सभी विद्वानों ने वर्तमान की विषम परिस्थितियों में वेद प्रचार व वेदोपदेशक विद्यालय की आवश्यकता पर बल दिया तथा यह निश्चय किया गया है कि १ जुलाई १९८५ से वेदोपदेशक विद्यालय प्रारम्भ किया जाये।

प्रवेश सूचना

ब्रह्मकुटी वेदमन्दिर वेदोपदेशक विद्यालय ब्रजघाट में जुलाई १९८५ से आरम्भ किया जा रहा है। कम से कम १० वीं उत्तीर्ण हिन्दी भाषा के ज्ञानी सौम्यशिष्ट अनुशासनप्रिय तथा आजीवन वैदिक धर्म प्रचार के इच्छुक निम्न पते पर शीघ्र पत्र व्यवहार करें।

आचार्य ब्रह्मकुटी वेद मन्दिर ब्रजघाट
जिला गाजियाबाद (उ० प्र०)

हैं मित्र उसके दुनियां में सब प्राणधारी

चिरंजीलाल 'जीव' बराड़ा जि० अम्बाला

अहिंसा का दुनियां में जो है पुजारी।
यह दुनियां उसी की है सारी को सारी ॥

कोई उसका दुनियां में दुश्मन नहीं है।
सभी प्रेम उससे करें नर और नारी ॥

न डर है किसी का कहीं भी फिरे वह।
हैं मित्र उसके दुनियां में सब प्राणधारी ॥

वह सब का हितैषी सब उसके हितैषी।
हो सब ही जगह उसका सम्मान भारी ॥

प्रभु भक्त है वह प्रभु उससे खुश है।
यह 'जीव' उस पे जाये सदा वारी वारी ॥

यह कैसेट सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ, रोहतक से भी प्राप्त हो सकते हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 ... पंजीकृत १६/७२१४०८६


ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी रोहतक
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १२, अङ्क २६   ७ जून १९८५   वार्षिक शुल्क १५)   विदेश में ५ पौंड   एक प्रति ३० पैसे

ईश्वर की प्राप्ति कैसे हो ?

यशपाल आर्य बन्धु, आर्यनिवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद

प्रायः लोग यह प्रश्न किया करते हैं कि ईश्वर की प्राप्ति कैसे हो ? विशेषकर आर्यसमाज के उत्सवों पर शंका समाधान के अवसरों पर तो ऐसे प्रश्न प्रायः ही पूछे जाते हैं। ऐसा ही एक प्रश्न श्रीमद्दयानन्द विद्यालय विजयसम्पुर के उत्सव पर विद्यालय के प्रबन्धक महोदय द्वारा पूछा गया जो कि स्वयं एक डाक्टर हैं। शंका लिखित रूप में थी और श्री महावीरसिंह जी 'मुमुक्षु' आर्योपदेशक को दी गई थी। श्री 'मुमुक्षु' जी ने आगामी बैठक में इस पर व्याख्यान देने एवं समाधान करने की बात कही। श्री मुमुक्षु जी का इस विषय पर बहुत ही सुन्दर विद्वतापूर्ण सारगर्भित भाषण हुआ। किन्तु कभी कभी लोग प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर उससे अपनी असहमति प्रकट करने में ही अपनी कृतकार्यता समझते हैं। यहां भी कुछ ऐसा ही हुआ। श्री 'मुमुक्षु' जी के भाषण के उपरान्त डाक्टर महोदय ने कुछ और शंकायें रख दी। इस पर अध्यक्ष महोदय ने घोषणा की कि 'आर्यबन्धु' जी (इन पंक्तियों के लेखक) इसी विषय को आगे बढ़ाते हुये अपना व्याख्यान देंगे।

डाक्टर साहब का प्रश्न है कि 'ईश्वर की प्राप्ति कैसे हो ?' सत्य तो यह है कि यह केवल इन डा० महोदय का ही प्रश्न नहीं प्रायः सभी का प्रश्न है कि ईश्वर की प्राप्ति कैसे हो ? किन्तु यदि गम्भीरतापूर्वक देखा जाये तो यह शंका ही सर्वथा निराधार एवं निर्मूल है क्योंकि प्राप्ति तो उसी वस्तु अथवा पदार्थ की हुआ करती है कि जो अप्राप्त हो। पर जो पहले से ही प्राप्त हो तो फिर उसकी प्राप्ति कैसी ? ईश्वर सदा सर्वदा सबको प्राप्त है। चाहे वह महात्मा हो या दुरात्मा, ईश्वर कभी किसी से पृथक् नहीं हो सकता। व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध होने से वह सर्वव्यापक ईश्वर हमारे आत्मा में भी विद्यमान है। इस पर यह शंका की जा सकती है कि एक स्थान पर दो पदार्थ कैसे समा सकते हैं ? तो इसका समाधान यह है कि सूक्ष्म पदार्थ स्थूल के भीतर समा जाता है, जैसे लोहे में अग्नि। गीता में भी सुस्पष्ट उद्घोष है कि ईश्वर सभी प्राणियों के हृदय में निवास करता है। किन्तु दिक्कत यह है कि हृदय में निवास करते हुए भी उसके हमें दर्शन नहीं हो पाते। किसी कवि ने क्या खूब कहा है कि—

हम और हमारा यार एक ही बस्ती में रहते हैं।
किस्मत की बदनसीबी दर्शन को तरसते हैं॥

प्रश्न उठ सकता है कि हम और हमारा प्रभु एक ही स्थान पर रहते हुये भी हम उसे पहचान नहीं पाते। क्या बात है कि उसकी हमें अनुभूति नहीं होती ? सत्य है—

"रोज जाते हैं उनकी महफिल में, लेकिन सामना नहीं होता।"

क्यों नहीं होता सामना ? इस पर दूसरा बोल उठता है कि—

कौन कहता है मुलाकात नहीं होती,
रोज मिलते हैं पर बात नहीं होती।

मुलाकात हो या बात आखिर होती क्यों नहीं ? इसका उत्तर महर्षि दयानन्द के शब्दों में इस प्रकार है—"ईश्वर सदा सर्वदा सबको प्राप्त है किन्तु सदोष अन्तःकरण से उसकी प्रतीति नहीं होती।" स्पष्ट है कि ईश्वर तो सदा सर्वदा प्राप्त है किन्तु अन्तःकरण की मलिनता ही एक ऐसी है जो हमें अपने प्यार से मिलने नहीं देती। पंजाबी के एक कवि ने क्या सुन्दर कहा है कि—

सानूं यार मिलन नहीं देंदे कि वेहड़े विच वैरी वसदे।

अर्थात् मेरे अन्तःकरण रूपी आंगन में बस रहे काम, क्रोधादि मेरे वैरी हैं जो मुझे मेरे प्रियतम से मिलने नहीं देते।

अतः प्रभु के दर्शन के लिये हमें अन्तःकरण के दोषों एवं मन की चंचलता को दूर करना होगा। बिना ऐसा किये हम प्रभु के दर्शन कर ही नहीं सकते। जब हमारा मन निर्मल हो जायेगा और अन्तःकरण निर्दोष हो जायेगा तो हमें हमारे प्रभु की प्रतीति अवश्य होने लगेगी। सन्त कवि कबीरदास ने ठीक ही कहा है कि—

कबिरा मन निर्मल भया जैसे गंगा नीर;
पीछे पीछे हरि फिरें कहत कबीर कबीर।

बिना शुद्ध अन्तःकरण के तो हम आत्मा के भी दर्शन नहीं कर सकते फिर परमात्मा की बात ही क्या कहनी ? वस्तुतः—

जो खुद को न पहचान सके, नादान खुदा को क्या जाने ?

और सत्य तो यह है कि—

'औरों से सहल है मिलना साकी,
अपनी हस्ती से मुलाकात बड़ी मुश्किल है।

कवि कहता है कि—

पहले अपने को तो हम करलें तल्लाश।
उसका मिलना तो कोई मुश्किल नहीं॥

अतः ईश्वर दर्शन के लिए जहां अन्तःकरण को निर्मल बनाने की आवश्यकता है वहां अपने आत्मा के दर्शन करने आवश्यक हैं। हम अपने आत्मा में ही ईश्वर के दर्शन कर सकते हैं जो कि इन चर्म चक्षुओं से कदापि सम्भव नहीं। हम भूल जाते हैं कि दर्शन का अर्थ यथार्थ ज्ञान है और यह ज्ञान हमें केवल चक्षुओं से ही प्राप्त नहीं होता। हम केवल रूप को ही इन चक्षुओं से देख पाते हैं, जबकि शब्द के दर्शन हम कान के द्वारा करते हैं। इसी प्रकार रस के दर्शन जिह्वा द्वारा, गन्ध के दर्शन नासिका द्वारा एवं स्पर्श के दर्शन त्वचा द्वारा होते हैं। पर ईश्वर तो इन इन्द्रियों से भी परे का विषय है फिर वह हमें इन चर्म चक्षुओं द्वारा कैसे दीख सकता है। उसके दर्शन के लिये हमें भी अपनी इन इन्द्रियों से परे जाना होगा। इसीलिये कवि कहता है कि—

आंख कान मुख मूंद के नाम निरंजन ले।
भीतर के पट खोल के बाहर के पट दे॥

जब हम ऐसा कर सकें तो हमें पहले से ही प्राप्त ईश्वर के अपने अन्तरात्मा में दर्शन भी सम्भव हो सकेंगे। सत्य है—

(शेष पृष्ठ ८ पर)

समालोचना—

आर्यसमाज का इतिहास—चौथा भाग

आर्यसमाज और राजनीति सन् १८७५ से सन् १९२६ तक लेखक डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, प्रो० हरिदत्त वेदालंकार, डा० भवानीलाल भारतीय, प्रकाशक आर्य स्वाध्याय केन्द्र ए/१२ सफदरजंग इन्क्लेव, नई दिल्ली-२९ पृष्ठ संख्या ७३५, मूल्य १०० रुपये।

आलोच्य ग्रन्थ बड़े आकार के सात सात सौ पृष्ठों के सात भागों में प्रकाशित किये जाने वाले आयसमाज के बृहद् इतिहास का चौथा भाग है, इससे पहले इसके तीन भाग प्रकाशित हो चुके हैं। इस भाग में आर्यसमाज द्वारा भारत के स्वतन्त्रता संग्राम तथा क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लेने की घटनाओं का विस्तृत विवेचन प्रामाणिक सामग्री के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

प्रायः आर्यसमाज को एक धार्मिक और साम्प्रदायिक संस्था समझा जाता है और सामान्य रूप से उसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं माना जाता है, अतः आर्यसमाज के काय के सम्बन्ध में अनेक भ्रान्ति पूर्ण धारणायें उत्पन्न की गई है। इनके कारण आर्यसमाज के राजनीतिक कार्यों का अभी तक यथार्थ मूल्यांकन नही हो सका है। इस प्रसंग में प्रायः यह भुला दिया जाता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती धर्म का प्रतिपादन बड़े व्यापक और सर्वांगीण रूप में करते थे। राजधर्म उनके धर्म का बड़ा महत्त्वपूर्ण अग है। सत्यार्थप्रकाश में पूरा एक समुल्लास राजधर्म पर है। महर्षि राष्ट्रीय स्वाधीनता के प्रबल पक्षपाती थे। उन्होने स्वराज्य, स्वदेशी और राष्ट्रीय संस्कृति के प्रति गौरव की भावना का सन्देश सर्वप्रथम भारतीयों को दिया था। उनकी शिक्षाओं से प्रेरणा प्राप्त कर हजारों नरनारी भारत की स्वाधीनता के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिये कटिबद्ध हो गये। यद्यपि आर्य समाज ने समष्टि रूप से स्वतन्त्रता संग्राम में कोई भाग नहीं लिया, किन्तु इसमें कोई सन्देह नही है कि महात्मा गांधी के नेतृत्व में प्रारम्भ किये गये असहयोग और सत्याग्रह आन्दोलनों में तथा क्रान्तिकारी आन्दोलनों में आर्यसमाजियों ने वैयक्तिक रूप से बहुत बड़ी संख्या में भाग लिया।

दुर्भाग्यवश अभी तक आर्यसमाज के राजनीतिक कार्यकलापों पर समुचित रूप से कोई प्रामाणिक प्रकाश नहीं डाला गया है। इसके दो बड़े कारण हैं। पहला तो यह कि आर्यसमाज को प्राप्त एक संकीर्ण साम्प्रदायिक संस्था समझा जाता है और दूसरा कारण यह है कि आर्य समाज के राजनीतिक कार्यों तथा गतिविधियो के बारे में अधिकाश सामग्री उन सरकारी गोपनीय रिपोर्टों, पुस्तकों, पुस्तिकाओं तथा पत्रावलियों मे ही सुरक्षित है जो स्वतन्त्रता प्राप्ति से पहले आयसमाज पर शोध करने वाले विद्वानो के लिये अलभ्य थी। किन्तु स्वतन्त्र भारत की सरकार ने इस सामग्री को शोध कार्यकर्त्ता के लिये सुलभ कर दिया है और अब यह सम्भव हो गया है कि आर्यसमाज के राजनीतिक पक्ष को भी प्रामाणिक रूप से प्रस्तुत किया जा सके। यह इतिहास इसी सामग्री के आधार पर लिखा गया है।

बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण तक पंजाब और संयुक्त प्रान्त (उत्तर प्रदेश) आर्यसमाज के प्रधान केन्द्र थे। इन प्रान्तों के राजनैतिक क्षेत्र में भी आर्यसमाज ने विशेष रूप से कार्य किया। महर्षि की शिक्षाओं से प्रेरणा प्राप्त कर पंजाब के अनेक आर्यसमाजियों ने विदेशी शासन के विरुद्ध क्रान्तिकारी उपायों का आश्रय लिया या अन्य प्रकार से स्वाधीनता संघर्ष में भाग लिया, कतिपय विद्वानों द्वारा उनके कर्त्तव्य पर कुछ प्रकाश डाला भी जा चुका है। किन्तु सयुक्त प्रांत के आर्य समाजियों की राजनैतिक गतिविधियो पर अब तक कोई उल्लेखनीय विवरण उपलब्ध नहीं था। इस पुस्तक में पहली बार सी० आई० डी० की रिपोर्टों और गोपनीय सामग्री के आधार पर उत्तर प्रदेश में आर्य समाज की गतिविधियों पर काफी विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

सरकारी गोपनीय पत्रावलियों में आर्यसमाज और राजनीति विषयक इतनी अधिक सामग्री अब सुलभ हो चुकी है कि आयसमाज की राजनीतिक कार्यकलापों का विवरण एक भाग में प्रस्तुत करना सम्भव नहीं था। अतः इतिहास के इस भाग को स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान के साथ १९२६ तक सीमित रखा है। इसके बाद की आर्य समाज की राजनीतिक गतिविधियों की विवेचना एक अन्य भाग में की जायेगी।

इस पुस्तक में २९ अध्याय हैं। पहला अध्याय विषय प्रवेश के रूप में। इसमें राज्य और धार्मिक समुदायों के स्वरूप तथा धार्मिक समुदायों द्वारा राजनीति में हस्तक्षेप करने और धम तथा राज्य के पारस्परिक संघर्षों का संक्षिप्त ऐतिहासिक पृष्ठभूमि देते हुए राजनीति के प्रति आर्यसमाज के दृष्टिकोण का विवेचन किया गया है। दूसरे तथा तीसरे अध्याय में वर्तमान भारत में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए किये गये प्राथमिक संघर्षों का वर्णन करते हुए यह बताया गया है कि भारत की राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिये महर्षि दयानन्द सरस्वती ने किस प्रकार देश का पथ प्रदर्शन किया और राष्ट्रीय स्वाधीनता की भावना का बीजारोपण किस प्रकार हुआ। चौथे अध्याय में आर्यसमाज की राजनीति के मौलिक मन्तव्यों राष्ट्रीयता, स्वदेशी, स्वराज्य, हिन्दी, राष्ट्रीय एकता, लोकतन्त्र और सामाजिक न्याय, धर्मानुप्राणित राजनीति और मानसिक पराधीनता के निवारण आदि विभिन्न तत्त्वों का विवेचन करते हुए भारत की राष्ट्रीयता के विकास में आर्यसमाज की भूमिका का निरूपण किया गया है।

पांचवे अध्याय में आर्यसमाज द्वार भारत की स्वाधीनता के लिये किये गये प्रारम्भिक प्रयत्नों स्वदेशी आन्दोलनों बंगभंग राष्ट्रीय शिक्षा आदि का वर्णन किया गया है। छठे अध्याय में आर्यसमाज की आरम्भिक राजनीति पर प्रकाश डालते हुए १९१८ तक आर्यसमाज के राजनीति के प्रति दृष्टिकोण का विवेचन है।

सातवें अध्याय में यह बताया गया है कि आर्यसमाज ने पजाब में कांग्रेस आन्दोलन के विकास में किस प्रकार महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया। उस समय पंजाब के राजनीतिक आन्दोलन के अधिकांश प्रमुख नेता आर्यसमाजी थे। इस कारण सरकार आर्यसमाज को राजद्रोही संस्था समझने लगी और गुप्तचर विभाग की रिपोर्टों में आर्यसमाज को बगावत फैलाने वाला प्रधान केन्द्र कहा जाना लगा। आठवें अध्याय में उन सब कारणों और तत्त्वों पर प्रकाश डाला गया है, जिनके कारण आर्यसमाज को राजद्रोही संस्था समझा जाने लगा था।

क्रमशः

सम्पादकीय

हरयाणा में संस्कृत की स्थिति एवं भविष्य

(गतांक से आगे)

संस्कृत का अध्ययन हिन्दी भाषा को पुष्ट ही करता है कमजोर नहीं। जो भाषा कोर विषय के रूप में ली जावे उसे ऐच्छिक विषय के रूप में लेने की छूट न हो। इस प्रकार विद्यार्थी दोनों भाषाओं का अपनी इच्छा के अनुसार अध्ययन कर सकेंगे।

इस स्तर पर शास्त्री ओ० टी० प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी में एम० ए० या आचार्य पदवीधारी संस्कृताध्यापकों को ही प्राध्यापक पद पर पदोन्नत किया जावे।

महाविद्यालय (कालिज) स्तर

इस स्तर पर सभी कक्षाओं में अनिवार्य एवं ऐच्छिक विषय के रूप में अन्य आधुनिक विषयों के साथ बी० ए० तक संस्कृत के पठन पाठन की सुविधाएं उपलब्ध हैं। विश्वविद्यालय के नियमानुसार संस्कृत भाषा के लिए निर्धारित रचना (कम्पोजिशन) के पीरियड कुछ प्राईवेट कालिजों में नहीं लगाये जाते। राजकीय महाविद्यालयों में भी ग्रुप में छात्रों की संख्या अधिक होने के कारण वाञ्छित लाभ नहीं हो पाता। नींव कमजोर होने के कारण छात्र अनुवाद एवं व्याकरण कार्य से जी चुराते हैं। इसमें सुधार की आवश्यकता है। कुछ कालिजों में विषय की आनर्ज कक्षाएं भी चालू हैं।

विश्वविद्यालय स्तर

हरयाणा के कुरुक्षेत्र एवं रोहतक विश्वविद्यालयों में अपने अपने स्वतन्त्र संस्कृत विभाग हैं। जहां एम० ए०, एम० फिल् तथा पी० एच० डी० आदि कक्षाओं के अध्यापन की एवं शोधकार्य की सुविधाएं उपलब्ध हैं। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में इस विभाग के छात्रों से कोई अध्ययन शुल्क नहीं लिया जाता। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में भी संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों को यह सुविधा उपलब्ध होनी चाहिये। गत वर्ष इस विषय में मैंने विश्वविद्यालय की "विद्वत् परिषद्" में एक प्रस्ताव भी रखा था, किन्तु सफलता नहीं मिली। अब आशा है कि विश्वविद्यालय के नए कुलपति के रूप में संस्कृत के योग्य विद्वान् डा० रामगोपाल जी की नियुक्ति से यह योजना सफल हो सकेगी।

प्रतिवर्ष अनेक छात्र छात्राओं को एम० ए०, एम० फिल् एवं पी० एच० डी० की डिग्री देने के बाद भी मैं ऐसा अनुभव करता हूं कि ये विभाग संस्कृत की सेवा नहीं कर रहे जितनी इनसे अपेक्षा की जाती है। मैं यहां किसी की निन्दा की दृष्टि से यह बात नहीं लिख रहा हूं, अपितु सभी के सम्मुख इस समस्या के कारणों की खोज के लिये इसे प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरी दृष्टि में इन विभागों द्वारा समुचित सेवा न करने का कारण है, प्रतिभाशाली छात्रों का अभाव। जैसे समाज में एक कहावत प्रचलित है कि 'जिसे कहीं नौकरी नहीं मिलती वह अध्यापक बनता है।' यद्यपि मैं इससे सहमत नहीं हूं। वैसे ही "जो विद्यार्थी किसी अन्य विषय से एम० ए० नहीं कर सकता या प्रवेश नहीं मिलता (कुछ अपवादों को छोड़कर) वह संस्कृत या हिन्दी से एम० ए० करता है।"

आज भी विद्यार्थी समुदाय में इन विषयों के छात्रों को दूसरी श्रेणी के छात्र माना जाता है। इसमें छात्रों का दोष नहीं इसमें हमारी गुलामी की मनोवृत्ति ही प्रमुख कारण है।

अंग्रेजी या अन्य आधुनिक विषयों से एम० ए० करने वाले को उच्चदृष्टि से देखा जाता है तथा प्रतिभाशाली विद्यार्थी भी उधर ही जाते हैं, क्योंकि उन्हें नौकरी शीघ्र मिलती है। स्वतन्त्र भारत का यह दुर्भाग्य ही कहूंगा कि यहां हिन्दी एवं संस्कृत से एम० ए० करने वालों को हेय दृष्टि से देखा जाता है। छात्र परस्पर वार्तालाप के समय कहते हैं कि हिन्दी संस्कृत की भी कोई एम० ए० है आदि।

अस्तु ! अधिकारियों से मेरा निवेदन है कि वे नौकरी के रूप में तथा छात्रवृत्ति आदि के रूप में इस प्रकार का आकर्षण उत्पन्न करें जिससे प्रतिभाशाली छात्र इधर आकर्षित हो सकें।

अध्ययनाध्यापन का माध्यम

यह इस भाषा का दुर्भाग्य ही रहा है कि अंग्रेजों के शासन काल में इस प्रणाली में संस्कृत शिक्षण का माध्यम अंग्रेजी भाषा थी तथा अब अंग्रेजी का स्थान हिन्दी ने ले लिया है। इससे संस्कृत की बहुत अधिक हानि हुई है। मेरा विचार यह है कि स्कूल स्तर से लेकर विश्व विद्यालय स्तर तक संस्कृत की उच्च योग्यता प्राप्त करने वाले छात्रों को संस्कृत माध्यम से ही पढ़ाया जावे। संस्कृत का स्वल्पज्ञान चाहने वाले छात्रों के लिए हिन्दी माध्यम भी चलता रहे। इसमें प्रारम्भ में भी कुछ कठिनाइयां भी आएगी छात्रों की संख्या भी कम हो सकती है। इस प्रकार के अध्यापक भी तत्काल उपलब्ध नहीं होंगे आदि। पुनरपि इस विषय में शिक्षा विभाग के अधिकारियों विश्वविद्यालयों के संस्कृतविभागाध्यक्षों, प्राध्यापकों व संस्कृत के सभी अध्यापकों एवं विद्वानों से मेरा नम्र निवेदन है कि वे शान्तमना होकर इस बात पर विचार करें कि "संस्कृत को संस्कृत के माध्यम से ही अध्ययनाध्यापन करके जीवित रखा जा सकता है।"

संस्कृताध्यापकों का प्रशिक्षण

स्कूल स्तर के संस्कृताध्यापकों के प्रशिक्षण के लिये शिक्षा विभाग द्वारा सचालित ओ० टी०/एल० टी० सी० ट्रेनिंग लेना अनिवार्य है। इस ट्रेनिंग में वर्षों से वही घिसा-पिटा पाठ्यक्रम चल रहा है। संस्कृत विषय से सम्बन्धित केवल एक प्रश्नपत्र है। संयुक्त पंजाब के समय से चला आ रहा यह नियम शास्त्री अध्यापकों पर अब भी लागू है कि उन्हें ५० अंक का पंजाबी भाषा का एक पेपर अवश्य उत्तीर्ण करना होगा। इस पंजाबी के पेपर के कारण अनेक छात्राध्यापक अनुत्तीर्ण होते हैं, या नकल का सहारा लेकर अपनी वैतरणी पार करते हैं।

दूसरी ओर बी० एड० में पंजाबी भाषा के पेपर की कोई अनिवार्यता नहीं है। अतः इसमें सुधार की आवश्यकता है। ओ० टी० की कक्षाएं भी ऐसी संस्थाओं को दी जावें जिनमें अध्यापन एवं भवन आदि की समुचित सुविधाएं उपलब्ध हों।

द्वितीय प्रणाली

इस प्रणाली के अन्तर्गत संस्कृत पाठशाला, संस्कृत कालिज तथा संस्कृत ब्रह्मचर्याश्रम आदि सनातन धर्म प्रणाली से संस्कृत की शिक्षा देने वाली संस्थाएं आती हैं। इस प्रणाली में छात्रों को प्राज्ञ तक हिन्दी तथा उसके बाद संस्कृत माध्यम से शिक्षा दी जाती है। छात्र प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री एवं आचार्य आदि परीक्षाएं उत्तीर्ण करता है। इस प्रणाली ने भी संस्कृत के अनेक अच्छे विद्वान् तैयार किये हैं, किन्तु इसमें परिश्रम अधिक एवं उपलब्धि कम होती है। पाठ्य ग्रन्थों में आर्ष एवं अनार्ष दोनों प्रकार के ग्रन्थ पढ़ाये जाते हैं। इन संस्थाओं में संस्कार का कोई संस्थान नहीं है। सभी दान से चलने वाली हैं। प्रबन्ध समितियों के आपसी झगड़े, आर्थिक अवस्था ठीक न होने के कारण तथा सरकार की ओर से पर्याप्त वित्तीय सहायता न मिलने के कारण इन संस्थाओं की अवस्था भी (एक दो को छोड़कर) अच्छी नहीं है। अच्छा वेतन न मिलने के कारण योग्य अध्यापक एवं पढ़ने वाले प्रतिभाशाली छात्र भी इन संस्थाओं को उपलब्ध नहीं होते। इन संस्थाओं में पढ़ने वाले छात्रों को भी अपना कोई उज्ज्वल भविष्य दिखलाई नहीं देता। पढ़ाई ठीक न होने के कारण परीक्षा में नकल की महामारी भी इन संस्थाओं में घर कर रही है। रोहतक विश्वविद्यालय ने अब शास्त्री को बी० ए० के समान डिग्री मान लिया है।

सत्यवीर शास्त्री

क्रमशः

नशा व शराबखोरी पूरी दुनिया की समस्या

प्रो० शेरसिह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

बहुत से पश्चिमी और पूर्वी देशों मे जो सर्वेक्षण किया गया उससे पता चला कि शराब, अफीम, चरस, हशीश हीरोईन तथा नशे का अन्य गोलियों को खप्त जिस रफ्तार से बढ रही है, वह सभी देशों के लिए गहरी चिन्ता का विषय बन गया है। अमरीका, योरूप, भारत, रूस तथा अन्य कई देशो मे कितने लोग नशो और शराब के आदि बनते जा रहे हैं। इस जानकारी से विचारशील लोगो को अन्दर से हिला दिया है। अमरीका मे करीब १० फीसदी लोग नशो के आदी बन चुके हैं और ५० फीसदी के करीब लोग दिमाग को बीमारियों के शिकार बन चुके हैं और आधे के करीब यार-दोस्तों के साथ मिलकर कभी न कभी नशा कर लेते हैं या शराब पी लेते है। यह बात अब १० साल पुरानी हो गई। आज उनकी सख्या अधिक नही तो पहले से सवाई तो हो ही गई होगी। आज जो लड़के लड़किया कालिजो मे पढ़ रहे हैं उनमे से लगभग २ लाख नशो के आदी हैं और जो हर साल पढ़ कर चले जाते हैं उनको जोड़ ले तो पढे लिखे नवयुवक और युवतियां जो नशो के शिकार हो चुके हैं उनकी सख्या २० लाख के करीब होगी। अभी महिलाओं मे ये रोग अपेक्षातर कम घर पाये हैं, परन्तु उनमें भी प्रवेश होने लगा है। भारत के समाज मे तो महिलाओं को ही दुःख भोगना पड़ता है। शिक्षित और अनपढ़ सबको मिलकर नशों की आदत के शिकारों की सख्या भारत मे करोड़ो में पहुँच चुकी है। कभी पीने वालो और नशा करने वालों की सख्या १५ करोड़ से कम इस देश मे नही है। दुनियां भर का हिसाब लगाये तो १० करोड़ से अधिक लोग नशों और शराबखोरी के आदी बन चुके हैं और १०० करोड़ के लगभग कभी कभी नशा कर लेते हैं। इसके कारण सारे ससार में अपराधों, दुघटनाओ और बीमारियों की बढोतरी हो रही है। नागरिकों का स्वास्थ्य, संयम चरित्र गिरते जा रहे हैं और काम करने की शक्ति कम होती जा रही है। पश्चिम के देशो में पैसा अधिक होने से शराब और अन्य नशे बहुत बढ गये हैं। इटली का नागरिक शराब की खपत में नम्बर एक पर है तो बीयर की खपत मे पश्चिमी जर्मनी। भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल आदि देशो में अफीम और दूसरी नशे की चीजो की तस्करी में होड लगी है।

जनसाधारण में बुराइयां फैलाकर उनका शोषण

तन्त्र चाहे कैसा ही हो, शासक का निहित स्वार्थ उसे जनसाधारण को कमजोर करने और गिराने की प्रेरणा देता है। जनसाधारण की आदतें जितनी बिगड़ेंगी, सयम जितना टूटेगा, जरूरतें बढेगी और मंहगाई बढेगी, उतना ही वे आर्थिक दृष्टि से मोहताज और नैतिक दृष्टि से पतित होगे और उनको बहलाना फुसलाना उतना ही सरल हो जायेगा। ऐसे मे मनमानी करने से शासक को कौन रोक पाएगा? ससार के बहुत सारे देशो मे आज यही हो रहा है और दु.ख की बात है कि गांधी के देश में भी। गांधी का नाम लेकर शराबबन्दी की बात करने वाले मोरार जी देसाई का स्वमूत्र चिकित्सा का नाम लेकर आधुनिकता के अलमबरदारों ने मखौल उडाया। आज सरकारी हल्को मे इस विषय की चर्चा करने वाला ही नही रहा। जनता की ओर से ग्राम पचायतो के प्रस्ताव आने पर भी उनके गांव में शराब का ठेका न खुले, धड़ाधड़ ठेके खुल रहे हैं। सरकार स्वय शराब के कारखाने खोल रही है और पूंजीपतियों को खोलने के लिए बढ़चढ़कर सहायता देती है।

वापिस मुड़ने के सकेत

तात्कालिक राजनीतिक लाभ और मनमानी करने की इच्छा के कारण नशेबाजी और शराबखोरी को खूब श्रय मिला। ऐसा लगता है कि यह खेल अब अपनी चर्म-सीमा पर पहुँचने वाला है। इसलिए संसार के हर कोने से अब वापिस मुड़ने के संकेत मिलने लगे हैं। एक सीमा से आगे गुजर जाने के बाद हर कदम के उल्टे नतीजे लगते हैं। जन-साधारण को भ्रष्ट करके तथा बुरी आदतों में फंसाकर आर्थिक दृष्टि से मोहताज और नैतिक दृष्टि से पतित करके क्रान्ति की सम्भावना को समाप्त करने में चाहे सत्ताधिकारियों ने विजय प्राप्त कर ली हो, परन्तु उनकी यह चाल अब उल्टे नतीजे देने लगी है। चुनावों में भ्रष्ट तरीके, नौकरशाही का मनमाना इस्तेमाल और लोगों की बेबसी सिद्धान्तहीन सत्ताधिकारियों को जमें रहने में अपना भरपूर योगदान दे रही है। जो सत्ता से बाहर रह गये और सत्ता का मनमाना दुरुपयोग करने के इच्छुक हैं, वे वोट के रास्ते से सत्ता बदलने में निष्फल होने, आतंकवाद का सहारा लेने लगते हैं। इसलिए आज विश्वभर में आतंकवाद पनप रहा है और विभिन्न राष्ट्रों के राष्ट्रपतियों तथा प्रधान मन्त्रियों का जीवन खतरे में है। सुरक्षा बलों और पूरी नौकरशाही का सबसे पहिला काम आज राष्ट्र अध्यक्षों का जीवन बचाना ही रह गया है। आतंकवाद को दूसरे देशों से प्रश्रय मिलने के कारण समस्या और जटिल हो गई है।

सर्वसाधारण को बुराइयों में फंसाने से समाज में अपराध, बीमारियां कुपोषण, बलात्कार, पागलपन, दुर्घटनायें और गरीबी इतनी बढ गई है कि उसके कारण जो अस्वस्थ तनावपूर्ण और भयानक रूप से घृणित वातावरण बन गया है, उसमें योग्य प्रशिक्षित, सन्तुलित और अनुशासित नागरिक बनाने में अनेक बाधायें खड़ी हो गई हैं।

(क्रमशः)

अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की एक आवश्यक बैठक दिनांक ११ जून ८५ मंगलवार को प्रातः १० बजे सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक में होनी निश्चित हुई है।

अन्तरंग सभा के माननीय सदस्यों से निवेदन है कि वे यथासमय पधारने की कृपा करें। प्रो० सत्यवीर शास्त्री
सभा मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

अन्तरंग सभा में विशेष आमन्त्रित सदस्य

१—स्वामी रामेश्वरानन्द जी सरस्वती गुरुकुल घरोण्डा जिला करनाल २—स्वामी जोवनानन्द सरस्वती, वैदिक भक्ति साधनाश्रम आर्यनगर रोहतक। ३—लाला दलीपसिंह आर्य, आर्यनिवास श्रद्धानन्द मार्ग पानीपत जिला करनाल। ४—डाक्टर रणधीरसिंह सांगवान, सांगवान नर्सिंग होम, सांगवान चौक सिरसा। ५—लाला मन्जूराम आर्य, आर्य भवन दिल्ली रोड सोनीपत। ६—श्री दीवान भीमसेन जी, शान्ताकुंज नई कालोनी गुड़गांव। ७—श्री नेकीराम, ग्राम बिसोहा जिला रोहतक ८—श्री भरतसिंह शास्त्री, आर्यसमाज मार्ग लुहारू जिला भिवानी। ९—श्री बलदेवसिंह आर्य, गोतमभवन नोहरिया गेट सिरसा। १०—श्री रामचन्द्र आर्य, आर्यसमाज अर्जुननगर गुड़गांव। ११—श्री भरतसिंह पोहरू, ग्राम दूबलधन जिला रोहतक। १२—श्री दयावसिंह आर्य, ग्राम रोहणा जिला रोहतक। १३—श्री रिसालसिंह वकील, आर्यनगर झज्जर जिला रोहतक। १४—गेन्दाराम आर्य, आर्यसमाज छोटा माडल टाऊन यमुनानगर जिला अम्बाला। १५—श्री देवराज विद्यालंकार गुरुकुल भैंसवाल जिला सोनीपत। १६—श्री ताराचन्द आर्य, ग्राम कारौली जिला रोहतक, १७—श्री चन्द्रभान जी, आर्यसमाज जहाजगढ जिला रोहतक। १८—श्री श्रीभगवान जी आर्य, ग्राम नयाबास वाया सांपला जिला रोहतक। १९—चौ० बदलूराम पूर्व एम० एल० ए० माडल टाऊन रोहतक। २०—चौधरी वेदमित्र जी, कोठी नंबर २२९६ सैक्टर २१ सी चण्डीगढ। २१—लाला छबीलदास आर्य, मातूराम छबीलदास अनाजमण्डी जीन्द। २२—वैद्य भरतसिंह जी, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी रेलवे रोड रोहतक। २३—चौधरी राममेहर एडवोकेट सोनीपत रोड रोहतक। २४— प्रिंसिपल बालसिंह आर्य, आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पानीपत जिला करनाल। २५—श्री धर्मसिंह राठी पूर्व विधायक माडल टाऊन पानीपत जिला करनाल। २६—वैद्य ताराचन्द आर्य, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी सांपला रोड खरखौदा जिला सोनीपत। २७—ठाकुर प्रतापसिंह आर्य, ग्राम बराणी जिला रोहतक। २८—ठाकुर बिशनसिंह एडवोकेट, कचहरी कैथल जिला कुरुक्षेत्र। २९—चौधरी प्रियव्रत ठेकेदार, जे १/१६० राजोरी गार्डन नई दिल्ली। ३०—मास्टर निहालसिंह आर्य, ३१ कविता कालोनी नांगलोई दिल्ली४१ ३१—लाला रामकिशन गुप्त, आर्यसमाज डबवाली मण्डी जि० सिरसा। ३२—श्री सुखवीरसिंह आर्य, ग्राम ताजुपुर जिला फरीदाबाद। ३३—चौधरी प्रीतमपालसिंह एडवोकेट कचहरी कुरुक्षेत्र। ३४—डाक्टर परमानन्द जी अम्बा, आर्यसमाज नीलोखेड़ी जिला करनाल। ३५—प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार, मंगल भवन शीला सिनेमा के पीछे चाणक्यपुरी रोहतक। ३६—श्री मामचन्द आर्य, ग्राम चबूतरों जिला अम्बाला।

आर्य विद्या सभा हरयाणा सदस्य सूची

१- स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक
२- प्रो० शेरसिंह सभा प्रधान (पदेन) १४ एम. साकेत नई दिल्ली
३- प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री (पदेन) राजकीय महिला महाविद्यालय रोहतक
४- श्री बलवानसिंह टिटोली जिला रोहतक
५- मास्टर छाजूराम आर्य, आर्य भवन रोहतक रोड सोनीपत
६- श्री धर्मचन्द शास्त्री ग्राम सींक जिला करनाल
७- श्री भद्रसेन शास्त्री निकट जाट कालेज सोनीपत
८- मा० जसवन्तसिंह डी० ए० वी० कालेज करनाल
९- श्री दयानन्द जी ब्रह्म महाविद्यालय हिसार
१०- श्रीमती सत्यवती आर्या, ग्राम जूवां जिला सोनीपत
११- „ सुवीरा देवी धर्मपत्नी वेदव्रत शास्त्री दयानन्दमठ रोहतक
१२- श्री बलराज चुग-मन्त्री आर्यसमाज झज्जर रोहतक
१३- मा० दीपचन्द ग्राम कासनी जिला रोहतक
१४- मा० दीपचन्द गोपाल शास्त्री स्कूल गोहाना मार्ग रोहतक
१५- स्वामी सेवानन्द शुद्धि सभा समालका जिला करनाल
१६- मा० बीरूराम मन्त्री दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र
१७- श्री सत्यवीर शास्त्री ग्राम गढी बोहर जिला रोहतक
१८- श्री मनुदेव शास्त्री रोहतक रोड चरखी-दादरी जिला भिवानी
१९- श्री वेदमित्र जी हापुड़ वाले संयोजक वैदिक प्रचार मण्डल ७२ बी गोबिन्दनगर अम्बाला छावनी
२०- श्रीमती प्रियम्वदा मुख्याध्यापिका कन्या गुरुकुल खानपुर (सोनीपत)
२१- आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र (पदेन)
२२- „ गुरुकुल भैंसवाल जिला सोनीपत (पदेन)
२३- „ „ झज्जर जिला रोहतक (पदेन)
२४- „ „ इन्द्रप्रस्थ जिला फरीदाबाद (पदेन)
२५- „ गुरुकुल आर्यनगर वाया कुरड़ी जिला हिसार (पदेन)
२६- „ गुरुकुल गदपुरी जिला फरीदाबाद (पदेन)
२७- „ , डिकाडला जिला करनाल (पदेन)
२८- „ कन्या गुरुकुल खरल जिला जीन्द (पदेन)
२९- „ „ „ हसनपुर जिला फरीदाबाद (पदेन)
३०- „ „ „ पचगांवां जिला भिवानी (पदेन)
३१- „ दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर जि० अम्बाला (पदेन)

प्रो० शेरसिंह
सभा प्रधान

स्वर्गीय पं० तालेराम स्मृति दिवस

आर्यसमाज कंवारी जिला हिसार में २७-२८-२९ मई स्वर्गीय पं० तालेराम स्मृति दिवस के रूप में मनाया गया। सुबह यज्ञ किया गया। सभा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पंडित ईश्वरसिंह के शिक्षाप्रद भजन हुए। इसके अतिरिक्त स्वामी प्रेमानन्द, महाशय मुन्शाराम व रिसालसिंह के भजन हुए। आर्यसमाज कंवारी के प्रधान श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी के प्रभावशाली व्याख्यान हुए। फलस्वरूप कई एक लोगों ने शराब आदि दुर्व्यसनों का परित्याग किया। प्रधान जी ने भूतपूर्व प्रधान स्वर्गीय पंडित तालेराम के जीवन को एक सादगी एवम् सन्तोष की मूर्ति बताते हुए कहा कि वे एक संस्कारी जीव कर्मठ कार्यकर्त्ता सत्यवादी सदाचारी विद्वानों के सेवक थे। उन्होंने ही आर्यसमाज कंवारी में दीपक में तेल की तरह काम किया और भविष्य के लिए भी ज्योति प्रज्वलित करके हमसे सदा सदा के लिए विदा हो गए। ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति दे। आर्य प्रतिनिधि सभा को २०१ रुपए दान दिया गया।

मन्त्री आर्यसमाज

आर्यसमाजों के आगामी वार्षिक उत्सव

गुरुकुल भैंसवाल जिला सोनीपत	१५, १६ जून
आर्यसमाज बूबका जिला कुरुक्षेत्र	२२ से २४ „
„ बेगा जिला सोनीपत	२८ से ३० „

जो आर्यसमाज अपने उत्सव रखना चाहते हैं, वे शीघ्र तिथियां नियत करके सभा को सूचित करें, ताकि समय पर सभा की ओर से उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों का प्रबन्ध किया जाये। सभा मन्त्री

डी० ए० वी० शताब्दी का प्रथम समारोह लाहौर में करने का सुझाव

नई दिल्ली, ५ जून। देश भर से आए तीन सौ प्रतिनिधियों की उपस्थिति में आर्यसमाज अनारकली, मन्दिर मार्ग में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन अत्यन्त उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

प्रो० वेदव्यास सर्वसम्मति से प्रधान चुने गए और कार्यकारिणी के निर्माण का अधिकार उन्हें दिया गया।

सभा का वार्षिक विवरण और बजट प्रस्तुत किया गया, जो स्वीकृत हुआ। उससे पहले दिन डी ए वी कालेज कमेटी की बैठक में सब प्रिंसिपलों की उपस्थिति में कमेटी का साढे बारह करोड़ रुपए का बजट पारित हुआ। कालेज कमेटी के प्रधान प्रो० वेदव्यास जी ने डी. ए. वी शताब्दी के उपलक्ष्य में किए जाने वाले कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। हरयाणा में दयानन्द अकादमी, होशियारपुर में शोध संस्थान और ग्राम विकास तथा पिछड़े वर्गों की उन्नति के लिये अपनाई गई बहुत परियोजनाओं से डी. ए. वी. आन्दोलन की व्यापकता का पता लगता था।

डी. ए. वी. शताब्दी के सम्बन्ध में आर्यजगत् के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार ने जब यह सुझाव दिया कि शताब्दी सम्बन्धी प्रथम समारोह लाहौर में उसी स्थान पर होना चाहिए जहां अब से सौ वर्ष पूर्व डी. ए वी. स्कूल की स्थापना हुई थी, तब सब प्रतिनिधि हर्ष विभोर हो उठे। (पंजाब केसरी से)

आर. डी. आर्य कन्या विद्यालय करनाल का शानदार परीक्षा परिणाम

आर्य विद्या परिषद् हरयाणा द्वारा संचालित रामेश्वरदास आर्य कन्या उच्च विद्यालय करनाल का इस वर्ष मिडिल का परीक्षा परिणाम ९९% रहा और कई छात्रों के नाम सूची में हैं।

इस शानदार परीक्षा परिणाम का श्रेय श्रीमती राज मुख्याध्यापिका तथा उसके सहयोगी स्टाफ को है। प्रबन्धक

महाराज कृष्ण चोपड़ा

वैदिक यति मण्डल की आवश्यक सूचना

वैदिक यति मण्डल के सब सदस्य महानुभावों से निवेदन है कि मान्यवर महात्मा दयानन्द जी तपोवन आश्रम देहरादून को वैदिक यति मण्डल का कार्यकर्त्ता अध्यक्ष प्रतिष्ठित सदस्यों के परामर्श से मैंने बना दिया है अतः वैदिक यति मण्डल सम्बन्धी पत्र-व्यवहार उन्हीं से करें।

सर्वानन्द

आर्यसमाज खारवन का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज खारवन का ३८ वां वार्षिकोत्सव २४, २५ व २६ मई तक अति उत्साह एवं हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया, जिसमें आस पास की सभी आर्यसमाजों व देहात के आर्य नर नारियों ने धर्म लाभ उठाया।

आमन्त्रित विद्वानों में स्वामी वेदानन्द सरस्वती, आर्य भजनोपदेशिका राजबाला आर्या, प० मामचन्द पथिक, सभा के भजनोपदेशक पंडित विद्याभूषण एवम् पं० शेरसिंह, प० ज्योति स्वरूप सभी ने अपने वेदोपदेश तथा प्रभावात्मक एवम् मधुर भजनों द्वारा आर्यजनों को लाभान्वित किया।

अभूतपूर्व आयोजन

आर्यजगत् के दार्शनिक विद्वान् एवं महान् योगी स्वामी सत्यपति महाराज द्वारा चैत्र शुक्ला प्रतिपदा वि० सं० २०४३ तदनुसार मार्च १९८६ से निरन्तर दो वर्ष तक चुने हुए प्रतिभा सम्पन्न, मेधावी दस ब्रह्मचारियों को ऋषि-शैली में छहों दर्शनों के अध्यापन के साथ साथ क्रियात्मक वैदिक योग का गहन शिक्षण प्रशिक्षण दिया जावेगा। इस अवधि में सभी ब्रह्मचारियों के लिए आवश्यक सुविधाओं से युक्त आवास, पुष्कल मात्रा में दूध, घृत, भोजन, वस्त्र तथा पाठ्य-सामग्री आदि का पूर्ण प्रबन्ध निःशुल्क होगा।

युग-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के दिव्य स्वप्नों को साकार करने में अत्यन्त सहायक इस रचनात्मक आयोजन का उन ब्रह्मचारियों को अवश्य ही लाभ उठाना चाहिये, जो एकमात्र पवित्र वैदिक धर्म प्रचार प्रसार में अपने सम्पूर्ण जीवन को लगाने के लिये कृत-संकल्प हों। दर्शन पाठ्यक्रम से पूर्व कुछ निर्देशित शास्त्रों का प्रार्थी ब्रह्मचारियों द्वारा पूर्वाध्ययन सुविधापूर्ण होगा अतः अभिलाषी ब्रह्मचारी निम्न पते पर आश्विन पूर्णिमा विक्रमी संवत् २०४२ तदनुसार २८ अक्तूबर १९८५ तक पत्र व्यवहार करें।

स्वामी सत्यपति परिव्राजक

२ एफ, कमला नगर, दिल्ली-७

शोक समाचार

आर्यसमाज जीन्द शहर के उत्साही युवा कार्यकर्त्ता डा० रमेश के पूज्य पिता डा० हरिचन्द वर्मा का दिनांक १३-५-८५ को आकस्मिक निधन का समाचार सुनते ही जीन्द शहर के आर्य परिवारों में शोक छा गया। डा० साहब निष्काम भावना से आर्यसमाज की सेवा करते रहे हैं। भगवान् दिवंगत आत्मा एवं उनके शोक संतप्त परिवार को सद्गति प्रदान करें।

देशराज

प्रधान आर्यसमाज जीन्द शहर

प्रतापसिंह दौलता चल बसे

हमारे कार्यालय द्वारा चण्डीगढ ३० मई। पंजाब एवं हरयाणा के एक वरिष्ठ वकील तथा हरयाणा के भूतपूर्व मन्त्री प्रतापसिंह दौलता का दिल के दौरे के बाद बृहस्पतिवार को यहां निधन हो गया।

वह ६७ वर्ष के थे। अपने पीछे वह विधवा पत्नी दो बेटे तथा एक बेटी छोड़ गये हैं।

उनकी अन्त्येष्टि कल होगी, शव यात्रा सायं ४ बजे मकान नम्बर ९० सेक्टर २ से शुरू होगी।

(दैनिक ट्रिब्यून से)

महाशय शिवलाल का निधन

महाशय शिवलाल जी गांव मोहोदीपुर जिला महेन्द्रगढ का १०० वर्ष की पूर्ण आयु होने पर २७-५-८५ को सायं ४ बजे स्वर्गवास हो गया उनके सुपुत्र स्वामी व्रतानन्द जी द्वारा बड़ी धूमधाम से वैदिक दाह संस्कार किया गया। हम सब गुरुकुलवासी दिवगत आत्मा की सद्गति के लिये भगवान् से प्रार्थना करते हैं।

फतेहसिंह भण्डारी,

गुरुकुल झज्जर

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

आर्यसमाज जीन्द शहर में वेदप्रचार

दिनांक २४, २५, २६ मई को आर्यसमाज जीन्द शहर में वेदप्रचार का आयोजन बड़े उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पंडित हरिश्चन्द्र की भजनमण्डली के मनोहर एवं शिक्षाप्रद भजन हुये। पं० आशानन्द जी ने मैजिक लालटेन के माध्यम से प्राचीन इतिहास तथा देश की वर्तमान स्थिति और आर्यसमाज के दायित्व विषयक मनोहर चित्र प्रस्तुत किये। डा० सुदर्शनदेव आचार्य सभा उपमन्त्री ईश्वर की सत्ता तथा वास्तविक वैदिक धर्म के विषय में प्रभावशाली दो व्याख्यान हुये। २६-५-८५ को रात्रि साढ़े ९ बजे आचार्य जी की अध्यक्षता में आर्यसमाज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं की आवश्यक बैठक हुई जिसमें पारस्परिक सब मतभेदों को भुलाकर आर्यसमाज के कार्य को एक टीम के रूप में आगे बढ़ाने का सभी ने पवित्र संकल्प लिया। आर्यसमाज के नवनिर्माण के लिये एक समिति गठित की गई। यह कार्य ला० धर्मवीर तथा ला० छबीलदास की देख-रेख में सम्पन्न होगा।

आर्यसमाज के उत्साही युवा कार्यकर्त्ता डा० रमेश के पूज्य पिता डा० हरिश्चन्द्र वर्मा को श्रद्धांजलि दिनांक २५-५-८५ को वैदिक रीति से सम्पन्न हुई। आर्यसमाज के पुरोहित पं० विद्यासागर जी ने एक सप्ताह तक यजुर्वेद की कथा की। डा० सुदर्शनदेव आचार्य श्री धर्मवीर मोहनलाल ला० छबीलदास, मा० बद्रीप्रसाद, डा० सुदर्शनदेव आचार्य आदि ने भावपूर्ण श्रद्धांजलि भेंट की तथा आत्म-विवेचन विषयक प्रवचन हुये।

यह आर्यसमाज, पारिवारिक सत्संग, आर्य कन्या पाठशाला का संचालन, वेदप्रचार आदि के माध्यम से आर्यसमाज के कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिये कटिबद्ध होकर कार्य कर रहा है।

कृष्णदेव शास्त्री
मन्त्री आर्यसमाज जीन्द शहर

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज खरककलां जिला रोहतक

प्रधान—श्री गणपतसिंह, मन्त्री—सुबेदार रघवीरसिंह, कोषाध्यक्ष मनोराम।

आर्यसमाज राजपुर जिला सोनीपत

प्रधान—श्रीमती शान्तिदेवी राठी, उपप्रधान—श्री लक्ष्मीचन्द, श्री बालकिशन, मन्त्री—सुखलाल, उपमन्त्री—सत्यनारायण, प्रचार मन्त्री—श्री मूलचन्द, पुस्तकाध्यक्ष—सुरेश, निरीक्षक—श्री चान्दराम, कोषाध्यक्ष—श्री धर्मसिंह

आर्यसमाज बल्लबगढ़ जिला फरीदाबाद

प्रधान—श्री बाबूराम, उपप्रधान—महेन्द्रकुमार बोहरा, मास्टर राजकिशोर; मन्त्री—सुरेशकुमार एडवोकेट; उपमन्त्री—श्री जयचन्द, पुस्तकाध्यक्ष—श्री सुरेशचन्द, कोषाध्यक्ष—सुभाषचन्द, प्रबन्धक—डा० राजेन्द्रप्रसाद, लेखानिरीक्षक—हरीराम

आर्यसमाज आदर्शनगर दिल्ली

प्रधान—श्री अर्जुनदेव सोनी, उपप्रधान—श्री शिवदयाल, मन्त्राणि—श्रीमती इन्दुमती गोयल, उपमन्त्री—श्रीमती सुशीला देवी, कोषाध्यक्ष—अर्जुनदेव ग्रोवर

सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने हेतु

शराब तथा दहेज विरोधी आन्दोलन के लिए सहयोग की अपील

शराब के बढ़ते हुए प्रचार तथा उसके सेवन करने से सामाजिक बुराइयां बढ़ रही हैं। जहां शराब खरीदने पर मेहनत से कमाया गया धन खर्च होता है, वहां शराब के सेवन करने पर स्वास्थ्य तथा चरित्र नष्ट होता है। अतः गत वर्ष से सभा की ओर से शराबबन्दी आन्दोलन चलाया जा रहा है। ग्राम बालावास जिला हिसार, ग्राम नाहरी जिला सोनीपत ग्राम सिहोटी जिला रोहतक में ग्रामवासियों ने संघर्ष करके शराब के ठेके बन्द करवा दिये हैं। कई अन्य ग्रामों में भी संघर्ष जारी है।

आर्यसमाज सदा ही सामाजिक बुराइयों को समाप्त कराने में अग्रणी रहा है। अतः हरयाणा के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि जिन ग्राम पचायतों की ओर से शराब के ठेके बन्द करने के लिये प्रस्ताव सरकार को भेजे गये थे, परन्तु फिर भी वहां ग्रामीण जनता की इच्छा के विरुद्ध ठेके खोल दिये हैं, वहां धरना देकर शराब की बिक्री बन्द करावें तथा अपने निकट के ग्रामों की सर्वखाप की पंचायतें बुलाकर शराब पीने तथा दहेज लेन देन पर पाबन्दी लगवाने का कार्यक्रम बनवाने का यत्न करें।

आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ता ग्राम पंचायतों को प्रेरणा करें कि वे शराब के ठेके बन्द करवाने के प्रस्ताव करवाकर सितम्बर मास से पूर्व हरयाणा के मुख्यमन्त्री को रजिस्टर्ड पत्र द्वारा भेज देवें।

अब ग्रामीण जनता में दोनों बुराइयों को समाप्त करने के लिये चेतना आ रही है। किसान, मजदूर तथा महिलाएं भी शराब के ठेकों को बन्द करवाने के लिये यत्नशील हैं।

अतः इस वातावरण के अनुसार आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को शराब तथा दहेज बन्दी आन्दोलन को गतिशील करने में पूरी शक्ति के साथ जुट जाना चाहिये। सभा की ओर से प्रचार के लिये मांग आने पर भजनमण्डलियों का कार्यक्रम बनाया जायेगा। आर्यसमाज शराब बन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए उदारता पूर्वक धनराशि भी भेजने की कृपा करें।

आपके सहयोग के इच्छुक

ओमानन्द सरस्वती,	प्रो० शेरसिंह,	सत्यवीर शास्त्री	रामकिशन गुप्ता
संरक्षक	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक

रोहतक का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य वीर दल एवं आर्यकुमार सभा रोहतक नगर का ३२ वां वार्षिक उत्सव १९-५-८५ से २६-५-८५ तक बड़े समारोह के साथ किला रोड पर मनाया गया, जिसमें निम्नलिखित विद्वानों ने भाग लिया—डा० अर्जुनदेव, पं० ओमप्रकाश आर्य, प्रो० रामविचार, चौ० राममेहर एडवोकेट आदि के प्रभावशाली उपदेश हुये तथा प० जयदेव जी जतोई वाले मा० प्रेमप्रकाश, पं० वेदव्यास (दिल्ली) तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनीक पं० तेजपाल ने सुन्दर गीत सुनाए।

१९-५-८५ दोपहर बाद भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

मूलकराज आर्य

रोहतक के पत्रकार सम्मानित

रोहतक में कार्यरत चार पत्रकारों को हाल ही में रोहतक में हुये एक सरकारी पुरस्कार समारोह में हरयाणा सरकार के डिवीजनल कमिश्नर श्री महेन्द्रसिंह राठी, ने सम्मानित किया।

श्री जितेन्द्र वर्मा (दी ट्रिब्यून), श्री राजन जैड (इण्डियन एक्सप्रैस), श्री सत्यपाल सैनी (दैनिक ट्रिब्यून), श्री नरेन्द्र विद्यालंकार (हिन्दुस्तान) को इस अवसर पर १९८४-८५ में पत्रकारिता के सामाजिक परिवर्तन के उपकरण के रूप में सफल प्रयोग पर पुरस्कृत किया गया।

(पृष्ठ १ का शेष)

कूचा-ए—जाना की मिलती ही थी न राह।
बन्द की आंखें तो रास्ता मिल गया॥

कविवर नीरज का यथार्थ कथन है कि—

न मन्दिरों में न मस्जिदों में जब मिला वो मुझे।
उधर मिला जिधर दिल का आशियाना था।

उस प्रभु को पाने के लिये न मन्दिरों में भटकने की आवश्यकता है न मस्जिदों में, न काबे में न काशी में। उसके दर्शन करने हैं तो हृदय मन्दिर में हो जाना पर्याप्त है। इसीलिये कहा है कि—

मिटा ले मैल अरे नादान, मिलें मन मन्दिर में भगवान्।

मुसलमान पंजाबी कवि बुलेशाह का यथार्थ कथन है कि—

बुलया! रब दा की पावना? इधरो पुटना ते उधर लावना।

अर्थात् चित्त की वृत्तियों को बाहर से उखाड़कर अन्तर्मुखी करने से ही हमें अपने प्यारे प्रभु के दर्शन होंगे। ध्यान रहे कि प्रभु से हमारी न स्थान की दूरी है, न काल की। यदि दूरी है तो केवल ज्ञान की दूरी है। यही अज्ञान का पर्दा ही हमारे प्रियतम को हमसे ओझल किये हुये है। इसीलिये यथार्थ ज्ञान जिसे दर्शन कहा जाता है, की परम आवश्यकता है। प्रभु हमारे हृदयों में ज्ञान की वह ज्योति जगा दे कि जिसे पाकर अज्ञान का आवरण दूर हो सके और हम अपने ही हृदय में छुपे अपने प्रियतम के दर्शन कर सकें।



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि न० 23207/73 रजि०.न० P/RTK 49 फोन ४६१२ सृष्टि संवत् १६,७२६४०८६



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १२ अङ्क १७ १४ जून १६८५ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

नशा व शराबखोरी पूरी दुनिया की समस्या

प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

(गतांक से आगे)

नशों और बुरी आदतों के मारे हुए लोग बहुत से कामों के लिए बेकार हो जाते हैं। विज्ञान और शिल्प के इस युग में पूरी सिखलाई के बिना मनुष्य काम के लायक नहीं बन पाता। केवल बोझा ढोने के लिए तो पश्चिम के देशों मे आदमी की जरूरत ही नहीं। वह काम तो सब मशीनों से हो जाता है। इसलिये बुरी आदतों के शिकार मसनूई और दूषित वातावरण में रहकर बहुत बड़ी सख्या में जिस प्रकार के रोजगार उपलब्ध हैं, उनके लिए अयोग्य होने के कारण, बेरोजगार होते जा रहे हैं। जिन राष्ट्रों में बेरोजगारों को बिना कुछ किए भत्ता दिया जाता है, वहां काम के योग्य लोगों को ही भत्ता नही देना पड़ता है। अयोग्य लोगों को भी उतना ही भत्ता देना पड़ता है। हर प्रकार के अयोग्य लोगों को दिये जाने वाले भत्ते की रकम बढ़ते बढ़ते अब अनेक राष्ट्रों की अर्थ व्यवस्था पर बहुत बड़ा बोझ बन गई है। श्रमिक तथा अन्य कर्मचारियों की उत्पाद शक्ति मानसिक और शारीरिक अस्वस्थता के कारण कम हो रही है। दुर्घटनाओं और अपराधों के कारण जो नुकसान होता है और खर्च बढ रहा है उसकी मात्रा भी बढती जा रही है। सरकारी कर्मचारियों और अधिकारियों में भी अपराध की प्रवृत्ति और भ्रष्टाचार की बढोतरी ने कोढ मे खाज का काम किया है। राष्ट्रों को अपनी सुरक्षा की चिन्ता भी सताने लगी है। क्योंकि आज का युद्ध नशे में हुए पागल लोग नही लड़ सकते लाठी, भाले, तलवार की लड़ाई तो शराब में पागल होकर लड़ी जा सकती थी। कम्प्यूटरों के [illegible] पर लड़ी जाने वाली लड़ाई तो सही सलामत दिमाग से ही लड़ी जा सकती है।

गरीब देशो में तो बुरी आदतों के कारण प्रशासन तो अत्यन्त निरंकुश और भ्रष्ट हो ही गया है, करोड़ों महिलायें और बच्चे नरक का जीवन जी रहे हैं। कच्चे पक्के और मौसमी रोजगार से जो थोड़ा बहुत कमाते हैं, वह तो नशों और बुरी आदतों की नजर चढ़ जाता है, फिर खाने पीने, ओढने पहनने, पढ़ने लिखने, दवादारू के लिए कहा से आयेगा। इसी कारण विश्व की दो तिहाई जनता आज नारकीय यातनाओं का शिकार बनी हुई है। क्रान्ति सदा मध्यम वर्ग के जागरूक प्रबुद्ध और स्वावलम्बी लोगों ने ही की है। दाने दाने के मोहताज, अनपढ़ और परमुखापेक्षी, गरीब लोग क्रान्ति कैसे कर सकते हैं? क्रांति के बिना गरीब राष्ट्रों का उत्थान असम्भव है।

बड़े समृद्ध राष्ट्र तो अपनी समस्याओं के लिए समाधान की खोज में लगे रहते हैं और कुछ न कुछ हल निकाल लेते हैं। गरीब अविकसित देशों में न तो हालात बदलने की वास्तविक इच्छा ही किसी के मन में है और किसी-२ के मन में उपजती है तो समस्या का विस्तार, आकार और गहराई देखकर या तो दिल तोड़ बैठता है या अपनी शक्ति के अनुसार थोड़े से क्षेत्र में थोड़ा बहुत करके सन्तोष कर लेता है। कुछ करना सम्भव तो तभी हो सकेगा कि गरीब लोग भी इकट्ठे बैठ कर अपनी हालत पर सोचने लगें और जलालत के अन्तिम छोर पर पहुंचकर अब अपना रूख पलटें, अपना और अपने बच्चों का जीवन सुधारने के लिए बुरी आदतों को तिलांजलि दें और अपना शोषण करने की खुली छूट चालाक लोगों को न दें। एक बार रूख पलटेगा, होश में आयेंगे तो अपनी शक्ति का आभास भी उन्हें होगा और क्रान्ति का स्वप्न देखने लगेंगे।

उन्नत राष्ट्रों का स्वार्थ तो इसी में है कि वे गरीब देशों का कच्चा माल सस्ते दामों पर लेते रहे और अपनी नश्वर संस्कृति तथा सड़े और गन्दे साहित्य के प्रचार के द्वारा पिछड़े हुए लोगों की वासनायें जगाकर अपना बेकार का माल यहां बेचते रहे और उन राष्ट्रों को हर दृष्टि से अवनति की ओर धकेल कर उनका शोषण करते रहे। माओत्से तुंग ने अपने देश चीन में पश्चिमी राष्ट्रों की दाल नही गलने दी। इन देशों के लोगों का आना जाना न के बराबर कर दिया और उनका साहित्य तथा मनोरंजन की सामग्री पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया। हिप्पियों के रूप में नशेबाज, गन्दे, पागल और पतित लोगों को भारत में आने और रहने की खुली छूट देकर हिप्पी संस्कृति को यहां के भावुकों युवकों पर हावी होने का स्वर्ण अवसर दे दिया गया। हशीश, हीरोईन अफीम शराब और अनेक नशे की चीजें भारत के शिक्षित नवयुवकों को मिलने लगी। अमरीका से अपराध और मारधाड़ तथा जासूसी और अश्लील साहित्य बड़ी मात्रा मे देश के कोने कोने में पहुँच गया।

चीन की तरह भारत भी यदि पश्चिम के गन्दे लोगों और गन्दे साहित्य पर रोक लगा देता तो हमारे नवयुवकों का व्यवहार, आदतें, पहनावा और चिन्तन स्वस्थ रहता। अफीमची कहलाने वाला देश चीन माओत्से तुंग के सही और मजबूत फैसले के कारण आज कितनी उन्नति कर गया, यह अब किसी से छिपा नही है। एशियाड के खेलों में चीन ने भारत के ही नहीं बल्कि संसार भर के लोगों की आँखें खोल दी। दोनों महाशक्तियों के विरोध के बावजूद चीन एक महान् शक्ति के रूप मे उभर गया। स्वस्थ और अच्छी आदतो, अनुशासन, परिश्रम और ईमानदारी के कारण।

क्रमशः

ग्रामों पंचायतों से आवश्यक निवेदन

हरयाणा की ग्राम पचायतो से निवेदन है कि वे अपने गांव से शराब के ठेके समाप्त कराने के लिए प्रस्ताव पास करके ३० सितम्बर १६८५ से पूर्व आयुक्त महोदय, आबकारी एव कराधान विभाग हरयाणा चण्डीगढ के नाम भेज देवें। पंचायत एक्ट के अनुसार जिन पंचायतों के प्रस्ताव शराबबन्दी के लिए ३० सितम्बर तक पहुँच जायेंगे, उन गावों मे शराब के ठेकों की नीलामी नही होगी। प्रस्ताव के प्रारूप की प्रति सभा को पत्र लिखकर मंगवा लेवें।

प्रो० शेरसिंह

आर्य साहित्यकार परिचय

पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी अथर्ववेद भाष्यकार

लेखक—डा० भवानीलाल भारतीय

प्रसिद्ध अथर्ववेद भाष्यकार पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी का जन्म कार्तिक शुक्ला सप्तमी १९०५ वि०, ३ नवम्बर १८४८ को ग्राम शाहपुर मण्डराक जिला अलीगढ मे सक्सेना कायस्थ परिवार में हुआ। आपके पिता का नाम लाला कुन्दनलाल था। त्रिवेदी जी अपने पिता के द्वितीय पुत्र थे। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा अलीगढ़ के मकतब में हुई। जहां आपने उर्दू एवं फारसो का अध्ययन किया। १८६४ ई० मे पन्द्रह वर्ष की आयु में त्रिवेदी जी ने अंग्रेजी पढ़ना आरम्भ किया। कलकत्ता विश्वविद्यालय से १८७१ में एन्ट्रेंस को परीक्षा पास की तथा आगरे रह कर एफ० ए० की पढ़ाई करने लगे। उस युग के चलन के अनुसार १६ वर्ष की आयु में इनका विवाह हो गया। अब परिवार के भरण-पोषण का दायित्व आ जाने के कारण प० क्षेमकरणदास ने पढ़ाई छोड़ दी तथा अलीगढ हाई स्कूल में दस रुपया मासिक वेतन पर मई १८७२ में अध्यापक नियुक्त हो गये। अलीगढ़ से ७ मई १८७३ को स्थानान्तरित होकर मुरादाबाद आ गये। अब इनका वेतन २५ रुपये था।

स्वामी दयानन्द १८७६ ई० के नवम्बर मास में मुरादाबाद पधारे। यहां उन्होंने ५-६ दिन विभिन्न विषयो पर व्याख्यान दिये। युवक क्षेमकरणदास ने भी स्वामी जी के व्याख्यान सुने। उन्होंने स्वय इस सम्बन्ध में लिखा है-"मैं भी नगे पैरों श्रद्धा और भक्ति से दोनों समय व्याख्यान और सत्संग में जाता और प्रातःकाल जब वे हवा लेकर नगर के बाहर भ्रमण करने जाते थे मैं भी जाकर मार्ग में उनके दर्शन करता और वे आनन्दित रहो यह आशीर्वाद देते थे।" स्वामी जी की प्रेरणा से क्षेमकरणदास ने यज्ञोपवीत ग्रहण किया तथा गायत्री मन्त्र सिखा। एक दिन आपने स्वामी जी से पूछा यदि लोग आपसे यज्ञोपवीत लेवें मैं दोष लगावे और हमारा धर्म पूछें तो क्या उत्तर दिया जाये ? इस पर स्वामी जी ने कहा-संन्यासी से यज्ञोपवीत लेना शास्त्रोक्त है और अपना धर्म वैदिकधर्म बताया करो। पश्चात् अत्यन्त प्रेम के साथ स्वामी जी ने क्षेमकरण की पीठ ठोकी और कहा ईश्वर करे तू वेदों को पढ़कर वेदो का प्रचार करे। स्वामी जी का आशीर्वाद सत्य निकला। क्षेमकरणदास वेदों के विद्वान् तथा भाष्यकार के रूप में वेदार्थ प्रचारक बने।

२० जुलाई १८७९ को मुरादाबाद में आर्यसमाज की स्थापना स्वामी जी की उपस्थिति में ही हुई। मुन्शी इन्द्रमणि प्रधान तथा पं० क्षेमकरणदास मन्त्री निर्वाचित हुए। अब क्षेमकरण जी ने रेलवे एकाउण्टेट की परीक्षा उत्तीर्ण की और बांदा मे नौकर हुए। शीघ्र ही नौकरी से त्यागपत्र देकर घर आ गये तथा कृषि एवं गुड़ के व्यापार में लग गये। व्यापार में असफल होने पर जोधपुर चले आये और रेलवे कार्यालय मे नोकरी कर ली। १६ सितम्बर १८९१ से १५ मई १९०१ तक जोधपुर बाकानेर रेलवे के महाप्रन्धक के कार्यालय में कार्य किया तथा १६ मई १९०१ से २१ जुलाई १९०७ तक रेलवे लेखाकर कार्यालय में उच्च पद पर रहे। ५९ वर्ष की आयु हो जाने पर नौकरी से अवकाश लिया और अपने पुत्र के पास इलाहाबाद आ गये।

इलाहाबाद में त्रिवेदी जी की भेट महात्मा मुन्शीराम से हुई। इनको प्रेरणा से वेदाध्ययन मे विशेष रुचि जागृत हुई। प० रामजीलाल शर्मा से यजुर्वेद और सामवेद पढा। पुनः बड़ोदा जाकर १९६५ वि० (१९०८) मे 'श्रावण मास दक्षिणा परीक्षा' सम्मिलित हुए तथा सामवेद भाष्य में उत्तीर्ण होकर राज्य से दक्षिणा और प्रमाणपत्र प्राप्त किया। इस प्रकार से क्षेमकरणदास गुरुकुल कांगड़ी आ गये और गंगा तटवर्ती एक पर्णकुटी में रहकर वेदाध्ययन करने लगे। गुरुवर प० काशीनाथ जी तथा पं० शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ से वेदों का विधिवत् अध्ययन किया। पुनः बड़ोदा गये तथा आषाढ १९६८ वि० में ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद की श्रावण दक्षिणा परीक्षा में बैठने हेतु प्रार्थना पत्र दिया। यहां उन्हें बताया गया कि एक वर्ष में दो से अधिक वेदों की परीक्षा नहीं दी जा सकती। तब इन्होंने ऋग्वेद और अथर्ववेद की परीक्षा दी। सामवेद में पहले ही उत्तीर्ण हो चुके थे। इस प्रकार तीनों वेदों को परीक्षा देकर प्रमाणपत्र एव दक्षिणा प्राप्त की तथा भाद्रपद १९६८ वि० में प्रयाग लौट आये। अब वे त्रिवेदी नाम से विख्यात हुए। इस प्रकार वेदाध्यापन समाप्त कर प० क्षेमकरणदास त्रिवेदी अथर्ववेद भाष्य के लेखन में प्रवृत्त हुए और वर्षों की साधना के पश्चात् इस कार्य को पूरा किया। उन्होंने अन्य अनेक ग्रन्थ भी इसी बीच में लिखे। त्रिवेदी जी का निधन १३ फरवरी १९३९ को ९० वर्ष की आयु में हुआ। पं० क्षेमकरणदास की रचनाओं का विवरण इस प्रकार है-

श्री रुद्राध्याय—यजुर्वेद के १६ वें अध्याय की व्याख्या १९६३ वि० (१९०६) में प्रकाशित हुई। इसमे सम्पूर्ण अध्याय का मन्त्रार्थ संस्कृत हिन्दी तथा अंग्रेजी में दिया गया है।

हवन मन्त्राः—स्वामी दयानन्द द्वारा निर्धारित ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना स्वस्तिवाचक तथा शान्तिकरण के मन्त्रों की व्याख्या १९६८ वि० (१९१२) में प्रकाशित।

अथर्ववेद भाष्य—यह त्रिवेदी जी का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण साहित्यक यज्ञ था। भाष्य लेखन १९६९ वि० (१९१२) में प्रारम्भ होकर १९७८ वि० (१९२१) में समाप्त हुआ।

अथर्ववेद भाष्य—का द्वितीय संस्करण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने २०३० वि० में तथा तृतीय संस्करण डा० प्रज्ञादेवी ने प्रकाशित किया।

गोपथ ब्राह्मण भाष्य—सामवेद के गोपथ ब्राह्मण का भाष्य १९८१ वि० (१९२४) में प्रकाशित हुआ।

अथर्ववेद भाष्ये सहितायाः पदानां वर्णानुक्रम सूचीपत्रम्—नारायण मंत्रालय प्रयाग से १९२१ ई० १९७८ वि० में प्रकाशित।

वेद विद्याएं—गुरुकुल विश्वविद्यालय कागड़ी में पठित निबंध १९७४ वि० (१९१७ई०)

गौवों को पुकार सुनो उनकी विपता हरो

चिरंजीलाल 'जीव' बराड़ा जि० अम्बाला

विपता हरो प्रभु ! तुम गोवों को आज सारी।
रोती हैं रात दिन वह करती हैं आहो जारी॥
गर्दन पे रोज उनकी है चल रही कटारी।
लाखों ही रात दिन वह जाती यहां पै मारी॥
हिंसक बने हुए हैं सारे नर और नारी।
रहम और दया धर्म की बिल्कुल हुई है हारी॥
तुझ को पुकारती हैं भगवान् ! गौवें सारी।
सब पर पड़ी मुसीबत जाती नहीं सहारी॥
तू है इक उनका रक्षक वह हैं शरण तुम्हारी।
दुःख दूर उनके कर दे विनती यही हमारी॥

शानदार परीक्षा परिणाम

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल कालका जिला अम्बाला का परीक्षा परिणाम ९७.५ % सर्वश्रेष्ठ रहा है। इसी विद्यालय की छात्रा कु० अनुराधा गुप्ता ने सभी नगर के सभी विद्यालयों से अधिक अंक प्राप्त किये हैं।

उषा खन्ना

सम्पादकीय

हरयाणा में संस्कृत की स्थिति एवं भविष्य

(गतांक से आगे)

तृतीय प्रणाली

इस प्रणाली के अन्तर्गत प्राचीन वैदिक संस्कृति के आधार पर प्रचलित महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित गुरुकुल (आर्ष पाठ विधि) प्रणाली से संस्कृत शिक्षण देने वाली संस्थाएं परिगणित होती हैं। इन संस्थाओं में आर्ष ग्रंथों का ही पठन पाठन होता है। अनार्ष ग्रन्थों का नहीं। सम्पूर्ण भारत में हरयाणा प्रान्त में इस प्रणाली के सर्वाधिक गुरुकुल हैं। यदि इसे "गुरुकुलों वाला प्रांत" कहा जावे तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

स्वामी श्रद्धानन्द एवं स्वामी दर्शनानन्द जी के बाद इस प्रणाली को जीवित रखने का श्रेय पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती आचार्य गुरुकुल झज्जर को जाता है।

इस प्रणाली से विद्यार्थी स्वल्प समय में ही संस्कृत का अच्छा विद्वान् बन सकता है। सरकारी सहायता का अभाव एवं प्रतिभाशाली छात्रों की कमी भी इन संस्थाओं में खटकती है। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण अच्छे वेतन देकर ये संस्थाएं योग्य विद्वानों को अपने यहां अध्यापन कार्य के लिए आकर्षित करने में असमर्थ रहती हैं। निःस्पृह विद्वानों की पुरानी पीढ़ी लगभग समाप्त हो चुकी है।

संस्थाओं के अधिकारियों का पर्याप्त समय दान संग्रह एवं अन्न संग्रह में व्यतीत हो जाता है। वे अपना पूरा ध्यान अध्ययनाध्यापन की ओर नहीं दे पाते। इस प्रणाली में प्रथमा कक्षा तक हिन्दी माध्यम से तथा उसके बाद मध्यमा, शास्त्री एवं आचार्य आदि में संस्कृत माध्यम से शिक्षा दी जाती है।

यह प्रसन्नता का विषय है कि अब हरयाणा सरकार एवं रोहतक विश्वविद्यालय ने आर्षपाठविधि की परीक्षाओं को मान्यता प्रदान कर दी है। परीक्षाओं का आयोजन भी रोहतक विश्वविद्यालय करता है। संस्कृत शिक्षण के लिए यह सर्वश्रेष्ठ प्रणाली है।

इस प्रणाली से पढ़े हुए अनेक संस्कृत विद्वान् देश के भिन्न भिन्न प्रान्तों में अच्छा कार्य कर रहे हैं।

चतुर्थ प्रणाली

इस प्रणाली के अन्तर्गत हरयाणा के दो तीन गुरुकुलों के नाम आते हैं। इसमें आधुनिक विषयों के साथ संस्कृत का विशेष अध्ययन कराया जाता है। गुरुकुल कांगड़ी के अधिकारियों के परस्पर कलह ने स्थिति को बहुत विकृत कर दिया है। पाठ्यक्रम भी पहले वाले नहीं रहे। प्रारम्भ में इस प्रणाली ने अच्छे विद्वान् उत्पन्न किए। अब कुछ गुरुकुलों ने स्कूल कालिज वाली तथा प्राज्ञ, विशारद एवं शास्त्री वाली प्रणाली को अपना लिया है। इसमें विद्यालंकार एवं वेदालंकार आदि की डिग्री दी जाती है।

विद्वानों से निवेदन

हरयाणा में संस्कृत का भविष्य सुरक्षित रखने के लिए हरयाणा के संस्कृत विद्वानों, प्राध्यापकों एवं अध्यापकों से मेरा विनम्र निवेदन है कि वे जहां भी हैं जिस स्थिति में भी हैं संस्कृत के प्रचार एवं प्रसार के लिए सतत प्रयत्नशील रहें।

हरयाणा सरकार से निवेदन

साथ ही मेरा हरयाणा सरकार से भी नम्र निवेदन है कि वह मेरे निम्नलिखित सुझावों को कार्यरूप देकर पुण्य अर्जित करे।

१—पूर्व की भान्ति छठी कक्षा से ही संस्कृत विषय का अध्ययनाध्यापन चालू किया जावे।

२—मिडल स्कूलों में भी शास्त्री के पद स्वीकृत किये जावें।

३—संस्कृताध्यापकों को पदोन्नति के अच्छे अवसर उपलब्ध कराए जावें।

४—संस्कृत विद्वानों एवं अध्यापकों का राजकीय सम्मान किया जावे।

५—गुरुकुलों, संस्कृत पाठशालाओं एवं विद्यालयों को अत्यधिक आर्थिक सहायता दी जावे तथा संस्कृत पढने वाले छात्रों को पर्याप्त छात्रवृत्तियाँ एवं सरकारी सेवा के अच्छे अवसर प्रदान किये जावें।

६—पूर्व भाषा विभाग की भान्ति "हरयाणा साहित्य एकादमी" भी जिला एवं प्रान्तीय स्तर पर स्कूल एवं कालिज स्तर के विद्यार्थी की पृथक् पृथक् संस्कृत भाषण तथा श्लोकोच्चारण प्रतियोगिताएं आयोजित करावे।

७—रक्षा बन्धन के पर्व पर सारे प्रान्त में बड़ी धूमधाम से "संस्कृत दिवस" समारोहों के आयोजन किए जावें।

८—स्कूल से डिग्री स्तर तक अंग्रेजी के समान संस्कृत भी अनिवार्य विषय घोषित किया जावे।

९—सम्पूर्ण प्राचीन वाङ्‌मय का प्रकाशन सरकार स्वयं करावे। या उसमें आर्थिक सहायता देवे।

इस प्रकार मेरे इन कुछ सुझावों को स्वीकृत कर एवं संस्कृत के अध्ययनाध्यापन को प्रमुखता देकर सरकार स्कूल से लेकर कालिज तक प्रत्येक को नैतिक शिक्षा का नारा भी सार्थक सिद्ध कर सकती है। संस्कृत विषय पढाने के बाद पृथक् से नैतिक शिक्षा की आवश्यकता नहीं रह जाती।

इन्हीं उपायों को क्रियान्वित कर हम हरयाणा में संस्कृत की स्थिति एवं भविष्य को सुरक्षित एवं सुदृढ़ कर सकते हैं, अन्यथा नहीं।

विशेष—इस विषय में पाठकों के सुझाव एवं प्रतिक्रियाएं आमन्त्रित हैं।

सत्यवीर शास्त्री
सभा मन्त्री

ब्राह्मण सम्मेलन का दहेज प्रथा के विरुद्ध फैसला

घुमंतू संवाददाता हरौला (गाजियाबाद) ११ जून। अखिल भारतीय ब्राह्मण सभा मेरठ मण्डल के तत्वावधान में रविवार को यहां आयोजित ब्राह्मण सम्मेलन मे दिल्ली उ० प्र० व हरयाणा के लगभग ढाई हजार प्रतिनिधियो ने शादियों में दहेज का लेन देन व दिखावा बन्द करने का निर्णय लिया। सभा का सयोजन श्री शिवरत्न शर्मा, अध्यक्षता श्री मंगलदेव भारद्वाज और संचालन श्री वेदप्रकाश शर्मा ने किया।

दहेज के अतिरिक्त पंचायत में यह भी निर्णय लिया गया कि विवाह शादी या अन्य कार्यक्रमों में शराब पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाए। इस आशय का एक प्रस्ताव पारित कर सरकार से यह भी आग्रह किया गया कि वह देश में पूर्ण नशाबन्दी लागू करे।

एक अन्य प्रस्ताव मे फैसला लिया गया कि ब्राह्मण समाज की समस्त जातियों–उपजातियो को एकीकृत कर उनमें विवाह सम्बन्ध पर लगे प्रतिबन्ध को समाप्त किया जाए। सभा के अन्त में एक सर्वसम्मत प्रस्ताव द्वारा सरकार से जातिगत आरक्षण समाप्त करने की माग की गई। वक्ताओं ने विचार व्यक्त किया कि जातिवाद आरक्षण से समाज में विद्वेष की भावना बल पकड़ रही है।

(नवभारत टाइम्स से साभार)

अन्तरंग सभा के महत्त्वपूर्ण निश्चय

शहीद भक्त फूलसिंह की जन्म शताब्दी समारोह बनाने की योजना

आर्यसमाज के प्रचार प्रसार के लिए और अधिक उपदेशक नियुक्त होंगे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक सिद्धान्ती भवन, रोहतक में ११ जून १९८५ को सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण निश्चय किये गये–

१—शहीद भक्त फूलसिंह की जन्म शताब्दी समारोह

सभा की उपप्रधाना बहन सुभाषिणी देवी जी के सुझाव पर सभा ने गुरुकुल भैंसवाल कलां तथा कन्या गुरुकुल खानपुर जिला सोनीपत के संस्थापक महात्मा भक्त फूलसिंह की जन्म शताब्दी समारोह को फरवरी १९८६ में सभा की ओर से पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

स्मरण रहे भक्त फूलसिंह जी ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह का हरयाणा प्रदेश में सफलतापूर्वक संचालन किया था और वे शुद्धि आन्दोलन में जनूनी मुसलमानों द्वारा शहीद हो गये थे।

२—आर्यसमाज के प्रचार प्रसार की योजना

अन्तरंग सभा ने निश्चय किया है कि हरयाणा के प्रत्येक जिले में एक उपदेशक तथा एक भजनमण्डली नियुक्त करके आर्यसमाज के प्रचार का विस्तार किया जाये। इस उद्देश्य के लिए योग्य उपदेशक तथा भजनमण्डलियों की सेवाएं प्राप्त करने के लिए सभा के पत्र सर्वहितकारी में विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा। सभा के उपप्रधान महाशय भरतसिंह जी वानप्रस्थी को वेदप्रचार विभाग का आनरेरी अधिष्ठाता मनोनीत किया गया है। सभा के उपमन्त्री आचार्य सुदर्शनदेव जी को कार्यभार सौंपा गया है कि वे वेदप्रचार कार्य को उन्नत करने के लिये रिपोर्ट तैयार करें ताकि २५ अगस्त को सभा की अन्तरंग बैठक में उस पर विस्तार पूर्वक विचार हो सके। इसके अतिरिक्त अन्य आर्य महानुभावों के सुझाव भी आमन्त्रित किये गये हैं।

यह भी निश्चय किया गया है कि सभा के उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों का वर्षा ऋतु में एक सप्ताह का शिक्षण शिविर दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर जिला अम्बाला में लगाया जायेगा।

सभा के वैदिक पुस्तकालय के लिए ५ हजार रु० की नवीन पुस्तकें को क्रय करने की स्वीकृति दी गई है। सभा के पुस्तकालय में एक हजार से अधिक संख्या में पुरानी पुस्तकें विद्यमान हैं। स्वाध्यायशील व्यक्ति तथा विश्वविद्यालयों के एम० फिल् तथा पी० एच० डी० के विद्यार्थी इस पुस्तकालय से लाभ उठा रहे हैं।

३—आर्यवीर दल के शिक्षण शिविरों में सहयोग

हरयाणा में आर्यवीर दल की ओर से युवकों को वैदिक धर्म की ओर आकर्षित करने के लिए जो शिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाता है, उन्हें सफल करने के लिए सभा की ओर से शिक्षण शिविरों की व्यवस्था हेतु एक आर्यवीर दल के शिक्षक की नियुक्ति की जायेगी।

४—आर्य विद्या परिषद् की साधारण सभा का निर्माण

सभा के विधान के अनुसार सभा की अन्तरंग सभा द्वारा आर्य विद्या परिषद् हरयाणा की साधारण सभा का निर्माण ३ वर्ष के लिए किया जाता है। ११ जून को अन्तरंग सभा की बैठक में विद्या परिषद् की साधारण सभा के लिए निम्न प्रकार निर्माण किया गया–

१- प्रो० शेरसिंह सभा प्रधान, २- महाशय भरतसिंह सभा उप-प्रधान, ३- बहन सुभाषिणी देवी उपप्रधाना ४- श्री कन्हैयालाल महता सभा उपप्रधान, ५- प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री, ६- आचार्य सुदर्शनदेव जी शास्त्री उपमन्त्री, ७- प्रो० सत्यवीर जी विद्यालंकार सभा उपमन्त्री, ८- लाला रामकृष्ण जी सभा कोषाध्यक्ष, ९- आचार्य ऋषिपाल सभा पुस्तकाध्यक्ष (अधिकारी पदेन) १०- श्री वेदमित्र जी चण्डीगढ़ ११- पं० सत्यदेव शर्मा शास्त्री सोनीपत १२- डा० रणजीतसिंह, प्रिंसिपल जनता कालेज कौल (कुरुक्षेत्र), १३- डा० यज्ञवीर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, १४- बाबू रघुवीर सिंह पूर्व सहायक कराधान अधिकारी (अन्तरंग सभा द्वारा विद्यादि गुणों के कारण निर्वाचित)

१५- प्रिंसिपल वर्मा, आर्य कालेज पानीपत जिला करनाल, १६ श्रीमती उषा खन्ना मुख्याध्यापिका, आर्य कन्या हाई स्कूल कालका (अम्बाला) १७- श्री लालसिंह, प्रिंसिपल आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पानीपत जि० करनाल, १८- श्री मनोहरलाल आर्य, प्रबन्धक आर्य कन्या पाठशाला कैथल जि० कुरुक्षेत्र

अन्तरंग सभा ने आर्य विद्या परिषद् के प्रस्तोता श्री वेदमित्र जी तथा सहायक प्रस्तोता पद पर प्रिंसिपल लालसिंह जी को निर्वाचित किया है।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री
सभा मन्त्री

नाहरी जिला सोनीपत में पंचायत

शराब का ठेका बन्द कराने के बाद, नशों की अवैध बिक्री बन्द कराने और उसकी बुराइयों को खत्म कराने के लिए ग्राम नाहरी में चार गांव की एक सामाजिक पंचायत दिनांक १८-५-८५ को हुई और प्रत्येक गांव में सतर्कता कमेटियों का गठन स्वीकार किया गया। इसमें निम्नलिखित निर्णय लिये गये—

१—गांव में अवैध शराब या अन्य कोई नशीले पदार्थ की बिक्री करेगा तो उस पर कम से कम २००) जुर्माना किया जायेगा।

२—शराब पीकर जो सार्वजनिक स्थान पर बकवास करेगा या किसी से गलत तरीके से बोलकर झगड़ा करेगा उस पर कम से कम ५०) जुर्माना होगा।

३—गांव में शराब पीकर या वैसे बारात के आगे नाचेगा या गांव नाहरी की बारात का दूसरे गांव में जाकर नाचेगा तो उस बारात के मालिक पर कम से कम २००) जुर्माना किया जाएगा।

इन नियमों का सख्ती से पालन किया व कराया जा रहा है। अन्य ग्रामवासी भी ऐसा ही करके नशों से छुटकारा पा सकते हैं।

होश्यारसिंह 'सत्यप्रिय'

आदर्श विवाह संस्कार

आर्यसमाज कंवारी के प्रधान श्री अत्तरसिंह जी आर्य क्रान्तिकारी की बहिन आयुष्मती कमलेश का पाणिग्रहण संस्कार मीथाथल निवासी श्री दयानन्द के साथ दिनांक ५-६-८५ को श्री भरतलाल शर्मा एम० ए० पुरोहित आर्यसमाज हांसी के पुरोहित्य में सम्पन्न हुआ। इलाके के प्रतिष्ठित व्यक्ति वर-वधू को आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित हुए। वधु के भाई श्री अत्तरसिंह आर्य ने वर्तमान सामाजिक कुरीतियों एवं वैदिक विवाह की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। श्री शेरसिंह जी महामन्त्री अध्यापक संघ हरयाणा ने प्राचीन आश्रम व्यवस्था को समझाया।

अन्त में मा० जयपालसिंह जी ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया। विवाह दहेज रहित व ११ बराती बारात में आये।

मन्त्री आर्यसमाज कंवारी

आर्य समाज की गतिविधियाँ

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर में

आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर आरम्भ

१३ जून से २३ जून तक गुरुकुल झज्जर में एक विशाल ब्रह्मचर्य शिक्षण शिविर लग रहा है जिसमें अनेक उच्चकोटि के साधु, महात्मा गिक क्रियाओं के विशेषज्ञ समस्त भारतीय व्यायामों के विशेषज्ञ, कुशल ज्ञाता शिक्षक पधार रहे हैं। इच्छुक नवयुवक बन्धुओं के लिए यह स्वर्ण सुअवसर है स्वयं तथा अन्यों को प्रेरित करें।

इस विशाल शिविर में भाग लेने वालों से निवेदन है कि वे ऋतु अनुकूल वस्त्र, कापी, पैन, लंगोट, भोजन के पात्रादि साथ लाने की कृपा करें। शेष प्रबन्ध गुरुकुल की ओर से होगा, इस शिविर का प्रवेश शुल्क २०) होगा तथा समापन्न समारोह अत्यन्त उत्साहपूर्ण वातावरण में २३ जून को दोपहर सम्पन्न होगा, जिसमें उच्चकोटि के महात्मा व राजनेता नवयुवकों को आशीर्वाद व प्रमाण-पत्र प्रदान करेंगे। सभी से प्रार्थना पूर्वक इस शुभ अवसर से लाभ उठावें।

ब्र० रामवीर शास्त्री

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज हनुमान मन्दिर मार्ग नई दिल्ली

प्रधान—श्री रामभूर्ति कैला, उपप्रधान—सरदारीलाल वर्मा, श्री मनलाल सहदेव, श्री हंसराज चोपड़ा, मन्त्री—खैरायतीलाल भाटिया, उपमन्त्री—त्रिलोकी नारायण मिश्र, श्री रघुवरदयाल, श्री जातिबन्धु भाटिया, श्री वीरेश बुग्या, कोषाध्यक्ष—श्री बुद्धराम गुप्त, पुस्तकाध्यक्ष—श्री हृदयराम नवानी, अधिष्ठाता आर्यवीर दल—श्री राजीव भाटिया

आर्यसमाज नाहरी जिला सोनीपत

संरक्षक—श्री पृथ्वीसिंह आर्य, प्रधान—श्री उमरावसिंह आर्य, उपप्रधान—भीजीराम आर्य, नीतिदेव आर्य, मन्त्री—रामस्वरूप दहिया, उपमन्त्री—श्री जगदीशचन्द्र, कोषाध्यक्ष—होशियारसिंह सत्यप्रिय, पुस्तकाध्यक्ष—श्री उमेदसिंह, लेखानिरीक्षक—श्री जोगीराम

आर्यसमाज नारनौल जिला महेन्द्रगढ़

प्रधान—श्री कालूराम आर्य, उपप्रधान—डा० मूलचन्द आर्य, मन्त्री—मा० प्रह्लाद आर्य, उपमन्त्री—रामनरेश आर्य, कोषाध्यक्ष—मास्टर अयोध्या प्रसाद आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—वैद्य हरिश्चन्द्र आर्य, प्रचार मन्त्री—म० जगमाल बेधड़क

आर्यसमाज चिड़िया की स्थापना

गत दिनों ग्राम चिड़िया जिला भिवानी आर्यजगत् के उत्साही एवं नवयुवक ब्रह्मचारी श्री संजयदेव की प्रेरणा व सहयोग से आर्यसमाज की ८-६-८५ को स्थापना हो गई। ब्रह्मचारी जी की सम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए—

संरक्षक एवं निर्देशक—मा० सन्तराम, प्रधान—श्री बनीसिंह, उपप्रधान—श्री बलजीतसिंह, मन्त्री—श्री कर्मवीर शास्त्री, कोषाध्यक्ष—श्री धूपसिंह

अम्बाला छावनी में वैदिक प्रचार मण्डल

वैदिक प्रचार मण्डल अम्बाला छावनी द्वारा मा० कृष्णलाल जी के गृह पर आयोजित १ सप्ताह तक यजुर्वेद यज्ञ सम्पन्न कराया। इस अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी के प्रो० वाईस चांसलर पं० रामप्रसाद जी के ओजस्वी विचारों का उपस्थित श्रोताओं पर अच्छा प्रभाव पड़ा। पंडित जी द्वारा साहित्य वितरण भी किया गया। इससे पूर्व भी लगातार ४ माह से १ सप्ताह का यज्ञ भी सम्पन्न हो चुका है।

१—वैदिक प्रचार मण्डल प्रत्येक रविवार को पारिवारिक सत्संग का आयोजन करता है।

२—वैदिक प्रचार मण्डल को लगभग २०० गज भूमि का स्थान भी दान में मिलने वाला है।

३—मण्डल द्वारा अम्बाला छावनी में वैदिक धर्म प्रचार की गतिविधियां तेज कर दी हैं।

इस सभा को सुयोग्य प्रधान पं० देवदत्त जी (लघु भ्राता सोम भाई) का मार्ग-दर्शन प्राप्त है। वेदमित्र हापुड़ वाला

उपदेशक तथा भजनोपदेशकों की आवश्यकता

विज्ञापन संख्या १।८५

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए निम्नलिखित कर्मचारियों की आवश्यकता है। दिनांक ३० जून १९८५ तक निम्नलिखित हस्ताक्षरो के नाम निर्धारित प्रपत्र पर आवेदन पत्र भेजना आवश्यक है। प्रपत्र सभा को पत्र लिखकर मंगवा लेवें।

१—उपदेशक

शास्त्री, आचार्य, सिद्धान्तशिरोमणि, विद्यालंकार आदि शैक्षणिक योग्यता के साथ भाषण कला तथा वैदिक कर्मकाण्ड में निपुणता, उपदेशक कार्य का दो वर्ष का अनुभव, आयु २५ वर्ष से अधिक।

२—भजनोपदेशक

संगीतकला में मान्यता प्राप्त उपाधि, आर्य सिद्धान्तों के ज्ञान में किसी आर्य संस्था की परीक्षा उत्तीर्ण, आर्य सिद्धान्त तथा वैदिक कर्मकाण्ड का अपेक्षित ज्ञान, भजनोपदेशक रूप में न्यूनतम १ वर्ष का अनुभव, आयु २५ वर्ष से अधिक।

३—आर्यवीर दल शिक्षक

मिडिल/मैट्रिक/विशारत्न/प्रभाकर उत्तीर्ण आर्य वीर दल की कार्य पद्धति का उत्तम ज्ञान, आर्य संस्था का आर्य वीर दल शिक्षक के रूप में शिक्षण अनुभव दो वर्ष। प्रो० सत्यवीर शास्त्री

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ, रोहतक

आर्य वीर दल अधिकारी शिविर

आर्यवीर दल हरयाणा को और अधिक सुसंगठित एवं दृढ बना कर महर्षि दयानन्द के वैदिक नाद को घर-घर तक पहुँचाने की योजना बनाने के लिए सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरयाणा के सभी सक्रिय सहयोगियों का एक प्रशिक्षण शिविर जुलाई के प्रथम सप्ताह में तपोवन देहरादून में लगाने पर विचार किया जा रहा है। अतः सभी आर्यवीर दल के अधिकारियों से निवेदन है कि इस सम्बन्ध में अपने सुझाव और शिविर में भाग लेने वाले अपने सहयोगी अधिकारियों की संख्या तुरन्त लिखें ताकि भोजन एवं आवास का प्रबन्ध सरलता से हो सके। अपनी स्वीकृति की सूचना आर्य वीर दल कार्यालय हरयाणा या मेरे पते पर भेज देवें। प्रो० उत्तमचन्द शरर सचालक

प्रवेश सूचना

आर्य हिन्दी संस्कृत महाविद्यालय चरखी दादरी जिला भिवानी जो महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बन्धित है। ३१ वर्ष से हिन्दी व संस्कृत की लगातार सेवा कर है, मे हिन्दी की प्रभाकर व संस्कृत की विशारद व शास्त्री कक्षाओं का प्रवेश १ जून १९८५ से आरम्भ है। ऋषिपाल आर्य

आचार्य आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखी-दादरी (भिवानी)

सचित्र श्री कृष्ण ट्रैक्ट का विमोचन

नई दिल्ली २७ मई श्री कृष्ण महान् योगी, विद्वान् तथा ईश्वर के परम भक्त थे। उनकी रुक्मणि एकमात्र धर्मपत्नी थी, राधा और १६००० रानियों से कोई सम्बन्ध नहीं था। यह उद्गार आर्यसमाज के वयोवृद्ध सन्यासी महात्मा अमर स्वामी जी ने आर्यसमाज मन्दिर मार्ग में "लोकनायक श्रीकृष्ण" सचित्र ट्रैक्ट का विमोचन करते हुए कहे। श्रीकृष्ण को आर्य लोग आदर्श तथा युग पुरुष मानते हैं।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश व लाला रामचन्द्र अनाज वाले धर्मार्थ ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में देश के युवक युवतियों को महापुरुषों के सचित्र जीवन से परिचय कराने की योजना बनाई है। धर्म प्रचारार्थ २००) हजार व २५) सैकड़ा मंगायें। सम्पर्क करें

श्री प्रेमचन्द गोयल
लाला रामचन्द्र अनाजवाले, धर्मार्थ ट्रस्ट
४०५८ नया बाजार दिल्ली-६

कैमला में आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरयाणा करनाल के तत्वावधान में २६ मई से २ जून १९८५ तक कैमला में एक आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसका संयोजन आधुनिक भाम ब्र० रामस्वरूप जी आर्य ने किया। १०० के लगभग आर्य वीरों ने भाग लिया। जिनको शारीरिक, आत्मिक व बौद्धिक के साथ साथ देशभक्ति की भावना भरके अनुशासित जीवन, उत्तम स्वास्थ्य, चरित्र निर्माण युवाशक्ति को रचनात्मक कार्यों में दीक्षित करने के उद्देश्य से यह शिविर आयोजित किया गया। ब्र० रामस्वरूप आर्य, पं० जगदीशचन्द्र वसु ने आर्य वीरों को प्रशिक्षण दिया। शिविर के साथ साथ आर्य समाज कैमला का उत्सव भी मनाया गया, जिसमें अनेक सम्मेलनों का भी आयोजन किया गया। प्रसिद्ध सन्यासी सर्वश्री स्वामी गोरक्षानन्द जी पं० जगदीशचन्द्र वसु, प्रो० वेदसुमन वेदालंकार एम० ए०, प्राध्यापक डी० ए० वी० कालेज करनाल, पं० अमरसिंह जी कुरुक्षेत्र, पं० कृष्णपाल सिंह जी रणीला, ठा० दुर्गासिंह, श्री जगतराम व बस्तीराम जी, बहन उर्मिला शास्त्री एम० ए० तथा चौ० चन्दसिंह जो राज्य परिवहन मन्त्री चौधरी शिवराम वर्मा भू० पू० मन्त्री हरयाणा, विधान सभा के उपाध्यक्ष चौ० वेदपाल जी ने भी सम्मिलित होकर आर्य वीरों का मार्ग दर्शन किया। ग्रामवासियों पर इस शिविर का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

अधिष्ठाता

सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने हेतु

शराब तथा दहेज विरोधी आन्दोलन के लिए सहयोग की अपील

शराब के बढ़ते हुए प्रचार तथा उसके सेवन करने से सामाजिक बुराइयां बढ़ रही हैं। जहां शराब खरीदने पर मेहनत से कमाया गया धन खर्च होता है, वहां शराब के सेवन करने पर स्वास्थ्य तथा चरित्र नष्ट होता है। अतः गत वर्ष से सभा की ओर से शराबबन्दी आन्दोलन चलाया जा रहा है। ग्राम बालावास जिला हिसार, ग्राम नाहरी जिला सोनीपत ग्राम सिहोटी जिला रोहतक में ग्रामवासियों ने संघर्ष करके शराब के ठेके बन्द करवा दिये हैं। कई अन्य ग्रामों में भी संघर्ष जारी है।

आर्यसमाज सदा ही सामाजिक बुराइयों को समाप्त कराने में अग्रणी रहा है। अतः हरयाणा के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि जिन ग्राम पंचायतों की ओर से शराब के ठेके बन्द करने के लिये प्रस्ताव सरकार को भेजे गये थे, परन्तु फिर भी वहां ग्रामीण जनता की इच्छा के विरुद्ध ठेके खोल दिये हैं, वहां धरना देकर शराब की बिक्री बन्द करावें तथा अपने निकट के ग्रामों की सर्वखाप की पंचायतें बुलाकर शराब पीने तथा दहेज लेन देन पर पाबन्दी लगवाने का कार्यक्रम बनवाने का यत्न करें।

आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ता ग्राम पंचायतों को प्रेरणा करें कि वे शराब के ठेके बन्द करवाने के प्रस्ताव करवाकर ३० सितम्बर तक हरयाणा के आयुक्त कराधान एवं आबकारी चण्डीगढ़ को रजिस्टर्ड पत्र द्वारा भेज देवें। उसकी एक प्रति सभा कार्यालय को भी भेजने का कष्ट करें।

अब ग्रामीण जनता में दोनों बुराइयों को समाप्त करने के लिये चेतना आ रही है। किसान, मजदूर तथा महिलाएं भी शराब के ठेकों को बन्द करवाने के लिये यत्नशील हैं।

अतः इस वातावरण के अनुसार आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को शराब तथा दहेज बन्दी आन्दोलन को गतिशील करने में पूरी शक्ति के साथ जुट जाना चाहिये। सभा की ओर से प्रचार के लिये मांग आने पर भजनमण्डलियों का कार्यक्रम बनाया जायेगा। आर्यसमाज शराब बन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए उदारता पूर्वक धनराशि भी भेजने की कृपा करें।

आपके सहयोग के इच्छुक

ओमानन्द सरस्वती,	प्रो० शेरसिंह,	सत्यवीर शास्त्री	रामकृष्ण
संरक्षक	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक

गठवाला के दादा सूरजमल को श्रद्धांजलि

गठवाला (मलिक) खाप के आदरणीय नेता दादा चौ० सूरजमल जी का गत सप्ताह स्वर्गवास होने पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक में श्रद्धांजलि देते हुए दो मिनट का मौन धारण किया गया।

बहन सुभाषिणी देवी सभा उपप्रधाना ने दादा जी द्वारा किये गये सामाजिक कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने दादा घासीराम जी द्वारा डाली गई परम्पराओं को चालू रखने का प्रयत्न किया।

समालोचना—

आर्यसमाज का इतिहास—चौथा भाग

आर्यसमाज और राजनीति सन् १८७५ से सन् १९२६ तक लेखक डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, प्रो० हरिदत्त वेदालंकार, डा० भवानीलाल भारतीय, प्रकाशक आर्य स्वाध्याय केन्द्र ए/१२ सफदरजंग इन्क्लेव, नई दिल्ली२९- पृष्ठ संख्या ७३५, मूल्य १०० रुपये।

(गतांक से आगे)

नवें अध्याय में यह बताया गया है कि उस समय आर्यसमाज के एक प्रमुख शिक्षण केन्द्र गुरुकुल कांगड़ी को सरकार किन कारणों से सन्देह की दृष्टि से देखने लगी और किस प्रकार गुरुकुल पर सरकारी प्रकोप की काली घटायें घिर आईं और गुरुकुल के अधिकारियों द्वारा सरकारी सन्देह को दूर करने के क्या प्रयास किये गये। भारत के वायसराय लार्ड चेम्सफोर्ड का आगमन गुरुकुल में किस प्रकार हुआ और उसका क्या प्रभाव पड़ा ? इसी अध्याय के एक परिशिष्ठ में गुरुकुल कांगड़ी में बान्धव समाज नामक गुप्त क्रान्तिकारी संस्था के बारे में सर्वथा नवीन प्रकाश डाला गया है।

दसवें अध्याय में यह बताया गया है कि भारत के एंग्लोइंडियन पत्र सिविल एण्ड मिलिटरी गजट तथा पायोनियर और लन्दन का टाइम्स किस प्रकार आर्यसमाज विरोधी प्रचार करने में प्रमुख भाग ले रहे थे और टाइम्स के विशेष संवाददाता ब्रिटिश पत्रकार वेलेन टाइन शिरोल ने इण्डियन अनरेस्ट (भारतीय असन्तोष) नामक पुस्तक में उत्तर भारत, विशेषकर पंजाब में आर्यसमाज को ब्रिटिश विरोधी भावना उत्पन्न करने के लिए प्रधान रूप से उत्तरदायी ठहराया था और इसके लिए बड़े निराले और लचर तर्क एवं युक्तियां प्रस्तुत की थी।

ग्यारहवें अध्याय में आर्यसमाज के प्रति संयुक्त प्रान्त की सरकार के दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया गया है। इसके एक भूतपूर्व उपपुलिस अधीक्षक सेण्डर्स की रिपोर्ट के आधार पर संयुक्त प्रान्त में आर्यसमाज की राजद्रोही गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया है। बारहवें अध्याय में इस बात का विवेचन किया गया है कि किस प्रकार सेनायें और विशेष रूप से दसवी जाट रेजिमेंट के सैनिकों में आर्यसमाज के प्रचार और लोकप्रियता से आतंकित होकर कुछ ब्रिटिश अधिकारियों ने यह प्रस्ताव रखा कि भारतीय सेना में आर्यसमाजियों कि भर्ती पर पाबन्दी लगा दी जानी चाहिए। तत्कालीन प्रधान सेनापति ओ० एम० क्रीच इससे सहमत थे और उन्होंने भारत सरकार के गृह विभाग की सहमति लेकर इस बारे में आवश्यक आदेश जारी करने का निर्णय किया। किन्तु भारत सरकार और तत्कालीन वाइसराय लार्ड मिण्टो के विरोध के कारण कमाण्डर इनचीफ का निर्णय क्रियान्वित नहीं हो सका।

तेरहवें अध्याय में यह बताया गया है कि सरकार द्वारा आर्य समाज को राजद्रोही संस्था समझे जाने के कारण सरकारी अधिकारियों द्वारा आर्यसमाजियों पर अनेक अत्याचार हुए और उनका उत्पीड़न होने लगा। इस विषय में लक्ष्मणराव शर्मा, गुलाबचन्द, प० दौलतराम, इन्द्रजीत आर्य आदि के मामलों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

ब्रिटिश सरकार द्वारा आर्यसमाज को राजद्रोही समझे जाने के बाद देशी राज्यों में भी इसे सन्देह की दृष्टि से देखा जाने लगा और पटियाला में १०० से अधिक आर्यसमाजियों को गिरफ्तार करके इन पर राजद्रोह का अभियोग चलाया गया इसका विस्तृत विवरण १४ वे अध्याय में दिया गया है। १५ व अध्याय में यह बताया गया है कि आर्यसमाज के नेताओं ने सरकारी सन्देह दूर करने के लिए किस प्रकार के प्रयास किये। इनमें एक बड़ा प्रयास आर्यसमाज पर लगाये जाने वाले आरोपों की विस्तृत समीक्षा करने वाले ग्रन्थ आर्यसमाज एण्ड डिक्टेक्टर्स, (आर्यसमाज और उसके निन्दक) का प्रकाशन था। इसके लेखक आर्यजगत् के प्रसिद्ध नेता महात्मा मुन्शीराम तथा आचार्य रामदेव थे। १६ वें अध्याय मे यह बताया गया है कि आर्य समाज पर आई सरकारी प्रकोप की काली घटायें जैसे फटी और सरकारी नीति में किन कारणों से परिवर्तन हुआ।

१७ वें अध्याय में पंजाब के सुप्रसिद्ध नेता लाला लाजपतराय के राष्ट्रीय जागरण में योगदान का विस्तृत विवेचन किया गया है। १८ वें अध्याय में विदेशों में अंग्रेजो के विरुद्ध क्रान्तिकारी संगठन बनाने का प्रयास करने वाले स्वामी जी के शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा के जीवन और कार्यों पर प्रकाश डाला गया है। १९ अध्याय मे वेदों की क्रान्तिकारी व्याख्या करने वाले पं० श्रीपाद दामोदर सातवेलकर की क्रान्तिकारी गतिविधियों और वैदिक सूक्तों की देशभक्ति पूर्ण व्याख्या और अन्य राष्ट्रीय कार्यों का विवेचन किया गया है। बीसवें अध्याय में डी० ए० वी० कालिज के प्राध्यापक और आजीवन सदस्य सुप्रसिद्ध आर्य समाजी नेता भाई परमानन्द के क्रान्तिकारी कार्यों का विवेचन किया गया है और यह बताया गया है कि किस प्रकार उन्होने ला० हरदयाल जैसे क्रान्तिकारियों को इस क्षेत्र में कार्य करने के लिये प्रेरित किया और ब्रिटिश न्यायालय द्वारा भारत का सच्चा इतिहास लिखने तथा क्रान्तिकारी आन्दोलन को संगठित करने के लिये उन्हे प्राणदण्ड दिया गया। वायसराय लार्ड हार्डिंग द्वारा उनका प्राणदण्ड आजीवन कारावास में बदल दिया गया और अण्डेमान से लौटने के बाद राष्ट्रीय शिक्षा का कार्य करते हुए भाई जी ने सरदार भगतसिंह आदि को किस प्रकार क्रान्तिकारी कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की।

२१ वें अध्याय में आर्यसमाज की विचारधारा से प्रभावित प्रमुख क्रान्तिकारियों लाला हरदयाल, प० परमानन्द झांसी, मास्टर अमीरचन्द्र भाई बालमुकुन्द के कार्यों का परिचय देते हुए इस बात का प्रतिपादन किया गया है कि लार्ड हार्डिंग पर चांदनी चौक में दिसम्बर १९११ में बम फेंकने वाले व्यक्ति सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी क्रान्तिकारी केसरी सिंह बारहट के भाई जोरावरसिंह और पुत्र प्रतापसिंह बारहट थे। २२ व अध्याय में उत्तरप्रदेश में अग्रणी क्रान्तिकारी पंडित गेन्दालाल जी दीक्षित का परिचय दिया गया है और २३ वें अध्याय में सरदार भगत सिंह के दादा अर्जुनसिंह के स्वामी दयानन्द से प्रभावित होने का विवरण प्रस्तुत करते हुए सरदार किशनसिंह और अजीतसिंह के कार्य-कलापों का उल्लेख किया गया है। २४ वें अध्याय में स्वामी श्रद्धानन्द के राजनीति मे प्रवेश का वर्णन है और यह बताया गया है कि किस प्रकार उनकी विचारधारा मे परिवर्तन हुआ और महात्मा गांधी द्वारा शुरू किये गये रोलट एक्ट विरोधी आन्दोलन मे उन्होंने हजारों आर्य समाजियों के साथ प्रमुख भाग लिया। २५ वें अध्याय मे काकोरी कांड के नेता रामप्रसाद बिस्मिल का परिचय देते हुए यह बताया गया है कि किस प्रकार फांसी की काल कोठरी में भी उन्होंने ब्रिटिश सरकार से दैनिक अग्निहोत्र करने की सुविधा पाने की मांग की थी और इसके लिए संघर्ष किया था।

२६ अध्याय में राजस्थान के स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज के योगदान का उल्लेख किया गया है। २७ वें अध्याय मे स्वराज्य आन्दोलन के प्रति आर्यसमाज के नेताओं के दृष्टिकोण का विवेचन है और अगले अध्याय में यह बताया गया है कि महात्मा गांधी और कांग्रेस की नीति से आर्य नेताओं में मतभेद किन कारणों से और किस प्रकार उत्पन्न हुए। अन्तिम २८ वें अध्याय मे भारत की राजनीतिक प्रगति में आर्यसमाज के योगदान का उल्लेख करते हुए मथुरा के आर्य स्वराज्य सम्मेलन तथा राजार्य सभा का विवेचन किया गया है और राजनीति में आर्यसमाज द्वारा भाग लेने के विषय मे आर्य नेताओं के विचारों को प्रस्तुत किया गया है।

पुस्तक के अन्त में एक विस्तृत सहायक ग्रन्थ की सूची दी गई है और शब्दानुक्रमणिका ने ग्रन्थ की उपयोगिता बहुत बढ़ा दी है।

यह पुस्तक आर्यसमाज के इतिहास में सर्वथा नवीन तथ्यों और घटनाओं का विवेचन करने वाली है। आर्यसमाज और राष्ट्रीयता के आन्दोलन में अभिरुचि लेने वाले पाठकों के लिए अतीव उपयोगी है और हमें निश्चय है कि इसे पढ़ने के बाद वे इसका दूसरा भाग पढ़ने के लिए भी अतीव उत्सुक होंगे।

आर्यसमाज के इतिहास की योजना का इतिहास भी बड़ा रोचक है। लगभग आधी शताब्दी पहले इसके प्रधान सम्पादक डा० सत्यकेतु जी ने पेरिस में अध्ययन करते समय यह अनुभव किया था कि आधुनिक भारत के जागरण और नवनिर्माण में आर्यसमाज के कर्तृत्व को इसलिये नगण्य समझा जाता है कि उसका कोई विस्तृत विवरण नहीं लिखा गया है। उन्होंने इसे लिखने का संकल्प किया, किन्तु इसकी पूर्ति का बीड़ा उन्होंने तब उठाया जब वे जीवन के ८० बसन्त पूरे करने पर भीषण बीमारी से उठे थे। ऐसे कार्य प्रायः बड़े विश्वविद्यालय और शोध संस्थायें सरकारी सहायता से करती है। उन्होंने इस योजना के लिये अपने पुरुषार्थ से संरक्षकों और प्रतिष्ठित सदस्यों से सहायता प्राप्त करके इस योजना को कार्यान्वित किया है। उनकी यह अखण्ड सारस्वत साधना आर्यसमाज के इतिहास में अनुपम है। हमारी भगवान् से प्रार्थना है कि जीवेम् शरदः शतम् की वैदिक प्रार्थना के अनुसार वे शतायु हों और उससे भी अधिक समय तक जीवित रहें तथा आर्यसमाज के इस गौरवपूर्ण इतिहास की शेष तथा शेष खण्डों के लेखन मुद्रण और प्रकाशन की योजना को पूरा करें।

आर्यसमाज और नवभारत के निर्माण में दिलचस्पी रखने वाले प्रत्येक भारतीय को इस कार्य में तन मन धन से पूरा सहयोग देना चाहिये। यह ग्रन्थ प्रत्येक आर्यसमाज में, आर्यसमाजी परिवार में तथा प्रत्येक शिक्षणालय और विश्वविद्यालय में होना चाहिए।

इस पुस्तक की छपाई, कागज, गेटअप अतीव उत्कृष्ट है, आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कागज और मुद्रण की भीषण मंहगाई को देखते हुए इसका दाम सर्वथा समीचीन है और प्रचार की दृष्टि से व्यावसायिक प्रकाशकों के प्रकाशनों की तुलना में बहुत कम है।

आर्यसमाज तथा भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन एवं स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में अभिरुचि रखने वाले पाठकों के लिए यह अनिवार्य रूप से पठनीय एवं संग्रहणीय ग्रन्थ है।

यह कैसेट सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ, रोहतक से भी प्राप्त हो सकते हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि न० ४३१ — ४०११ — सृष्टि संवत् १९,७२९४९०८६



ओ३म् — कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री — सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १२, अङ्क २८ — २१ जून १९८५ — वार्षिक शुल्क १२) — विदेश में ५ पौंड — एक प्रति ३० पैसे

वेदों में विज्ञान

१—उदजन और ओषजन से जल की उत्पत्ति

उतासि मैत्रावरुणो वसिष्ठ, उर्वश्या ब्रह्मन् मनसोऽधिजात।
द्रप्सं स्कन्नं ब्रह्मणा दैव्येन, विश्वे देवा पुष्करेत्वाददन्त॥

ऋ० ७-३३-११

अर्थ—वसिष्ठ, उत मैत्रावरुण: असि=हे (वसिष्ठ) जल ! तू मित्र और वरुण की सन्तान है।

ब्रह्मन् उर्वश्या मनस: अधिजात: =हे ब्रह्मन्, तू विद्युत की मनोकामना से उत्पन्न हुआ है।

दैव्येन ब्रह्मणा=दिव्य नियम के अनुसार

द्रप्सं स्कन्नं त्वा=बूंद बूंद गिरे हुए तुझको

विश्वे देवा पुष्करे अददन्त=सब देवों ने भूमि में पहुंचा दिया।

भावार्थ—विद्युत् की उपस्थिति में, प्राकृतिक नियमों के अनुसार, ओषजन और उदजन के सम्पर्क से बूंद बूंद जल बना। उस जल को देवों ने भूमि में एकत्रित किया।

२—वायुमण्डल में जल कणों की उपस्थिति

सत्रे ह जाताविषिता नमोभि:, कुम्भं रेत: सिषिचतु: समानम्।
ततो ह मान उदियाय मध्यात्, ततो जातमृषिमाहुर्वसिष्ठ:॥

ऋ० ७-३३-१३

अर्थ—सत्र ह जातौ=आकाश मे पदा हुए, नमोभि: इषितौ=ईश्वरीय नियमों से प्रेरित किये हुये, (मित्र और वरुण वायुओं ने) समानम्=एक साथ सम्पर्क करके (अथवा समान रूप से) कुम्भे रेत: सिषिचतु:=भूतल रूपी कुम्भ में बारम्बार जल को सींचा अर्थात् भूमि पर अत्यधिक जल बरसाया। तत: मध्यात् मान:=उस बरसे हुए जल में से कुछ निर्माण। उदियाय=वाष्प बनकर वायुमण्डल में चला गया। तत: वसिष्ठं ऋषि जातं आहु:=वह जल समस्त प्राणियों के जीवन का आधार होता है ऐसा कहा जाता है।

भावार्थ—आकाश में विद्यमान ओषजन और उदजन वायुओं का सम्पर्क, विद्युत् की उपस्थिति में होने पर, प्राकृतिक नियमों के अनुसार जल बना। यह जल पृथिवी में अत्यधिक मात्रा में इकट्ठा हुआ। उसमें से कुछ वाष्प बनकर आकाश (वायुमण्डल) में चला गया। क्योंकि वह जल (आकाशस्था-जलकण) औषधि, वनस्पति, पशु-पक्षियों एवं अन्य प्राणियों के जीवन का आधार है, अत: वह वसिष्ठ ऋषि कहलाया। ऋषि क्रान्तदर्शी है। यह जलकण समस्त पदार्थों के अन्दर तक पहुँच जाता है। इसे ही Humidity कहा है।

३—विभिन्न माध्यमों से गुजरती प्रकाश की किरणें टेढी हो जाती हैं।

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतव:।
दृशे विश्वाय सूर्यम्॥ यजु० ३३-३१॥

अर्थ—त्यं जातवेदसं देवं सूर्यं=संसार को प्रकाशित करने वाले उस देव सूर्य को

दृशे विश्वाय=विश्व के समस्त प्राणियों को दिखाने की दृष्टि से केतव: उद्वहन्ति=सूर्य की किरणें (उस सूर्य को) ऊपर उठाती हैं।

भावार्थ—प्रात:काल सूर्य के जब प्रथम दर्शन होते हैं, तब सूर्य भूमि की ओट में होता है। उस समय सूर्य सीधी किरणों से दिखाई नहीं दे सकता। दूर आकाश में ऊपर के विरल वायुमण्डल से आती हुई किरणें जब पृथिवी के समीप के घने वायुमण्डल के पास से गुजरती हैं, तो नीचे की ओर झुक जाती हैं। परिणामत: सूर्य, जो उस समय पृथिवी की ओट में होता है, दिखाई देता है। ऐसा प्रतीत होना स्वाभाविक है कि मानो रश्मियों ने उसे ऊपर उठा दिया है ताकि पृथिवी के समस्त प्राणी उसे देख सकें। जब सूर्य की सीधी किरणें पृथिवी पर पड़ती हैं उस समय सूर्य को देखा नहीं जा सकता। परन्तु इन तिरछी किरणों के कारण सूर्य का तीव्र प्रकाश मृदु होकर भूमि पर पहुँचता है। उस समय सूर्य दर्शन सम्भव होता है।

सम्भवत: पौराणिकों द्वारा प्रात:काल सूर्य को जल का अर्घ्यदान इसी कारण होता होगा कि सूर्य की किरणें जल के घने माध्यम में से गुजरती हुई आंखों तक पहुँचते हुए प्रकाश की तीव्रता खो दें।

उष: काल में सूर्य किरणें आँखों की दृष्टि-वर्धक हैं। सीधी तीव्र किरणें नेत्र ज्योति को क्षीण करती हैं।

धर्मवीर
५, अशोक नगर पीलीभीत

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह को बधाई पत्र

आदरणीय प्रो० शेरसिंह जी,

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के १९-५-८५ को सर्वसम्मति से पुन: प्रधान चुने जाने पर लाख लाख बधाई हम शुभकामनाएं भेजते हैं। आपका पिछला कार्य देखते हुये इस बार भी प्रधान चुना जाना जरूरी था क्योंकि आपके मन में आर्यसमाज का कार्य करने की पूरी भावना है। आपने आर्यसमाज को ऊंचा उठाने के लिये दिन और रात एक कर दी है। अत: हरयाणा का आर्यसमाज दिन-दुगनी रात-चौगूनी तरक्की कर रही है। आपने पंजाब में सुलग रही आग से हरयाणा को बचाने के लिये रक्षा वाहिनी का संगठन कर दिया है। महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर की सफलता में आपका योगदान सहराहनीय है। इन सबको भुलाया नहीं जा सकता। आपने हरयाणा में आई बाढ में तन, मन और धन से पूरा कार्य किया और हरयाणा को बचाया। भोपाल में गैस फटने से जो लोग मरे उनके परिवारों को भी आपने हरयाणा से धन इकट्ठा करके उनकी सहायता की। जो भी आपत्ति हरयाणा प्रान्त पर आई आपने उसी आपत्ति का सामना किया और डटकर मुकाबला किया। उस कार्य को करने से आपका नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा और हमेशा के लिये आपकी याद हरयाणा को रहेगी। आशा करते हैं कि आप भविष्य में आने वाले कार्य को ज्यादा से ज्यादा उन्नति पर ले जाएगे। हम भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि आपको परोपकारी कार्य के लिए शक्ति एवं स्वास्थ्य दें।

मामचन्द आर्य
मन्त्री आर्यसमाज चबूतरों जिला अम्बाला

युवकों में क्रान्ति लानी होगी

संजीव आर्य 'मोनू'

आज भारत का युवा वर्ग चौराहे पर खड़ा है। उसकी स्थिति आज सड़क पर पड़े उस पत्थर की तरह हो गई है जिसे जो भी चाहे जिधर ठोकर मारकर ले जाए। युवक किसी राष्ट्र की जान होते हैं, परन्तु आज भारतवर्ष का युवा-वर्ग अपने रास्ते से भटक गया है। प्रत्येक प्रकार की बुराइयां हमारे युवकों में पनप रही हैं। आज युवकों को कोई ठीक रास्ता दिखाने वाला नहीं है। आज भारतवर्ष का युवा वर्ग प्राचीन वैदिक सिद्धान्तों से भटक गया है। पश्चिमी रंग में भारतीय युवा वर्ग रंगता जा रहा है। वह पश्चिमी रंग धीरे धीरे हमारे युवकों में कैंसर की भांति फैलता जा रहा है। अंग्रेजियत का भूत बुरी तरह हमारे युवकों पर सवार है।

आज भारतवर्ष के युवा वर्ग को अपने देश की कोई चिन्ता नहीं है। राष्ट्र की सम्पत्ति को वह अपनी सम्पत्ति नहीं समझता। राष्ट्र के निर्माण में उसका सहयोग न के बराबर है। आध्यात्मिक ज्ञान की तरफ युवकों का कोई आकर्षण नहीं रहा है। वह अपने में ही सीमित रहना चाहता है। केवल फैशन करना तथा गलियों में घूमना ही उसने अपना लक्ष्य बना लिया है। पश्चिमी संगीत तथा सभ्यता के आगे सब कुछ भूल जाना उसने अपनी पहचान सी बना ली है।

एक समय था कि जब हमारी पृथ्वी पर सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य था। सारे विश्व में हमारा डंका बजता था। विदेशी हमारे देश के प्रति सदा आकर्षित रहते थे। प्रत्येक क्षेत्र में हम सबसे आगे थे, चाहे वह विज्ञान का क्षेत्र हो, साहित्य का क्षेत्र हो अथवा व्यापार का क्षेत्र या कोई अन्य क्षेत्र हो। दूर दूर से लोग हमारे यहां शिक्षा ग्रहण करने आया करते थे। परन्तु आज भारतीय युवा इन बातों को भूल गया है वह तो मदिरा, मांस, अण्डे खाकर अपने को भ्रष्ट कर रहा है। वह भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में दिए गए युवकों के बलिदानों को भूल गया है। उसे शायद याद नहीं जिस स्वतन्त्र भारत में वह सांस ले रहा है। वह स्वतन्त्रता कोई एक दिन का परिणाम नहीं बल्कि सैंकड़ों वर्षों से दिये गये हजारों बलिदानों का परिणाम है। याद कीजिए उस हृदय को जब वीर सावरकर को कोल्हू में जोत दिया गया था और जब सावरकर को प्यास लगी तथा उसने पानी मांगा तो अंग्रेज सिपाहियों में से एक ने पानी देने के स्थान पर उसके मुंह में पेशाब कर दिया। सावरकर के मन में निराशावादी विचार उत्पन्न हुये कि आजादी का स्वप्न छोड़ देना चाहिए तभी सावरकर के मन में महर्षि दयानन्द के विचार आए कि महर्षि ने तो लोगों को जागृत करने के लिए अपने प्राण तक दे दिए तथा तभी उसकी निराशा आशा में बदल गई तथा आज हम ऐसे वीरों की वजह से ही स्वतन्त्र हैं।

आज हमारे युवकों के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता है उनमें 'राष्ट्रीय चिन्तन' पैदा करना। क्योंकि जब तक किसी देश के युवकों में राष्ट्रीय चिन्तन नहीं होगा वह देश भी जिन्दा नहीं रहेगा। ऐसा राष्ट्रीय चिन्तन युवकों में पैदा हो कि वह जान सके कि देशभक्ति क्या है? एक बार स्वामी रामतीर्थ जब जापान गये तथा उन्हें वहां के रेलवे स्टेशन पर खाने के लिये कोई फल दिखाई नहीं दिया तो वे बोले कि यह कैसा देश है जहां कि स्टेशन पर खाने के लिए फल भी उपलब्ध नहीं हैं। उनकी ये बातें जब एक जापानी नवयुवक ने सुनी तो वह दौड़कर बाजार गया और फल खरीद लाया और स्वामी जी के आगे रख दिये। स्वामी जी ने जब उसे उन फलों के पैसे देने चाहे तो उसने पैसे लेने से इन्कार कर दिया तथा कहा कि अगर आप मुझे कुछ देना ही चाहते हो तो यह वचन दो कि मेरे देश की बुराई अपने देश में जाकर नहीं करोगे। वाह रे राष्ट्रीय भावना? ऐसी भावना ही हमारे युवकों में भी पैदा होना चाहिए।

आज हमें भटके हुए युवा वर्ग में फिर से नई चेतना लानी है ऐसी चेतना जिससे कि वह ठीक मार्ग पर आ जाये। अगर हमारी अब जैसी स्थिति रही तो हम विनाश रूपी कुएं में गिरते चले जाएंगे। हमें युवकों को इस विनाश रूपी कुएं में गिरने से बचाना होगा। उन्हें ब्रह्मचर्य का पाठ पढ़ाना होगा। उन्हें वैदिक सभ्यता में रंगना होगा। उसे अन्धेरे से प्रकाश में लाना होगा। वेद का सन्देश उसे सुनाना होगा तथा युवा वर्ग में एक नई क्रान्ति लानी होगी।

१७३/११ आर्य कुटीर, कानूनगोयान पलवल

अश्लील गीतों पर प्रतिबन्ध लगे

राधेश्याम आर्य एडवोकेट मुसाफिरखाना, सुलतानपुर

यह देश का दुर्भाग्य ही है कि जिस देश के वातावरण में वेदमन्त्रों की सुमधुर ध्वनि गूंजा करती थी, वहीं आज भद्दे व अश्लील गीतों की बीभत्स आवाज गूंज रही है। इन गीतों के प्रचार व प्रसार से भारतीय संस्कृति तो नष्ट हो ही रही है, हमारे बच्चों पर इनका बयान कुप्रभाव पड़ रहा है। चाहे शहर हो या गांव, प्रत्येक स्थान पर लाउड स्पीकरों से प्रातः सायं तथा दिनभर नवनारियों के अंगों पर बने अश्लील गीतों की ध्वनि सुनी जा सकती है। अधिकांश गीत अश्लील चलचित्रों के होते हैं तथा कुछ अत्यधिक अश्लील गीत स्वतन्त्र रूप से भी बने हुए होते हैं। इन्हीं गीतों से प्रभावित होकर बच्चे तथा नव युवक बिना किसी शर्म के सड़कों पर इन्हीं अश्लील गीतों को जोर जोर से गाते हुये चलते हैं। इन्हीं गीतों के प्रभाव के कारण ही छेड़खानी की भी घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। नई व भावी पीढ़ी को बर्बाद होने से बचाने के लिए समस्त अश्लील गीतों पर पूर्णतः कठोर प्रतिबन्ध लगाना आवश्यक है।

सम्पादकीय

शिक्षा राज्यमन्त्री हरयाणा के नाम पत्र

१०+२ प्रणाली अनिवार्य हिन्दी कोर के विकल्प में संस्कृत कोर या पंजाबी कोर विषय लेने की छूट का प्रावधान

महोदय,

सविनय निवेदन है कि हरयाणा मे इस वर्ष जुलाई से प्रारम्भ की जाने वाली १०+२ प्रणाली के पाठ्यक्रम मे अनिवार्य विषय के रूप में दो विषय १—अंग्रेजी (कोर) २—हिन्दी (कोर) ही रखे गए हैं।

इस विषय में मेरे निम्नलिखित सुझाव हैं—

१—इस प्रणाली मे न० २ अनिवार्य हिन्दी (कोर) के स्थान पर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक द्वारा स्वीकृत भाषा प्रणाली लागू की जावे। रोहतक विश्वविद्यालय मे प्री-यूनिवर्सिटी, आर्टस, साइंस, कामर्स कक्षा से लेकर बी० ए० आर्टस, साइंस, कामर्स तक सभी कक्षाओं मे प्रत्येक छात्र को संस्कृत/हिन्दी/पंजाबी मे से कोई एक भाषा अनिवार्य विषय के रूप मे लेने की छूट है। इसमे ऐच्छिक (इलैक्टिव) रूप मे ली जाने वाली भाषा को अनिवार्य (कम्पलसरी) विषय के रूप मे नही लिया जा सकता।

२—वर्तमान १०+२ प्रणाली के पाठ्यक्रम में ऐसा प्रावधान नही है। यहां अंग्रेजी (कोर) एवं हिन्दी (कोर) के साथ छात्र अंग्रेजी एवं हिन्दी को ऐच्छिक (इलैक्टिव) विषय के रूप मे भी ले सकता है, जो कि तर्क संगत नही है।

इसमें इस प्रकार परिवर्तन किया जा सकता है

३—अंग्रेजी/संस्कृत/पंजाबी इनमे से कोई दो भाषाएं कोर विषय के रूप मे ली जा सकती है। जो भाषा कोर विषय के रूप मे ली जावे उसे ऐच्छिक (इलैक्टिव) विषय के रूप मे नही लिया जा सकता है। यदि अंग्रेजी को अनिवार्य ही करना है तो यह प्रावधान किया जा सकता है कि प्रत्येक छात्र का अंग्रेजी (कोर) या अंग्रेजी ऐच्छिक (इलैक्टिव) मे से एक विषय अवश्य लेना होगा।

४—इस प्रकार प्रत्येक छात्र को अपनी इच्छा के अनुसार भाषा पढ़ने की सुविधा मिल सकेगी।

५—संस्कृत भाषा हिन्दी भाषा की पूरक है। संस्कृत भाषा के ज्ञान के बिना छात्रों को हिन्दी भाषा का ज्ञान भी ठीक ढंग से नही हो पाता।

६—छात्रों को संस्कृत (कोर) के रूप में पढ़ने की छूट देकर बहुत सीमा तक नैतिक शिक्षा शिक्षण की समस्या को भी हल किया जा सकता है। संस्कृत (कोर) का पाठ्यक्रम या सभी भाषाओं का कोर पाठ्यक्रम इसी दृष्टि से तैयार किया जा सकता है। इससे 'एक पन्थ दो काज' वाली कहावत चरितार्थ हो सकती है। संस्कृत भाषा मे तो देश प्रेम एवं नैतिक शिक्षाओं का प्रचुर भण्डार विद्यमान है।

सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्
माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः

जैसे अनमोल वाक्यरत्न इस भाषा मे विद्यमान हैं।

७—१०+२ प्रणाली के पाठ्यक्रम मे यदि हिन्दी (कोर) के विकल्प में संस्कृत (कोर) या जो पढ़ना चाहे उसके लिए पंजाबी (कोर) लेने की छूट न दी गई तो यह इन भाषाओं के प्रति बहुत बड़ा अन्याय एवं पक्षपातपूर्ण व्यवहार होगा।

८—इस शिक्षा नीति के कारण महाविद्यालयों मे संस्कृत अध्यापकों के अनेक पद समाप्त हो जावेंगे तथा भविष्य में अनेक वर्षों तक संस्कृत प्राध्यापकों की नियुक्ति पर स्वतः ही प्रतिबन्ध लग जावेगा। विश्वविद्यालयों के संस्कृत विभागों पर भी इसका दूरगामी दुष्प्रभाव पड़ेगा। मांग न होने पर संस्कृत एम० ए० में कौन प्रवेश लेगा ?

९—१०+२ कक्षाओं में दो वर्ष तक जब छात्रों को अनिवार्य संस्कृत पढ़ने की छूट नही मिलेगी तो बी० ए० स्तर पर अनिवार्य संस्कृत कौन पढेगा ? इस प्रकार रोहतक विश्वविद्यालय की भाषा प्रणाली भी स्वतः ही समाप्त हो जावेगी।

१०—कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र मे भी डिग्री कक्षाओं में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक की भाषा प्रणाली लागू कराई जावे।

११—इस वर्ष से महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक ने प्री-यूनिवर्सिटी (साईंस) में एक नया ग्रुप (आयुर्वेद ग्रुप) प्रारम्भ किया था। अब यह कक्षा विश्वविद्यालय में नहीं रही। इस ग्रुप मे प्री-यूनिवर्सिटी (मैडीकल) या प्री-मैडीकल करके आयुर्वेद की बी० ए० एम० एस० आदि कक्षाओं में प्रवेश लेने वाले छात्रों को यह छूट दी गई थी कि वे अपने साईंस (मैडीकल) विषयों के साथ साथ संस्कृत ऐच्छिक (इलैक्टिव) विषय एक अतिरिक्त विषय के रूप में पढ़ सकते थे, जिससे उन्हें आधुनिक साईंस के साथ साथ संस्कृत के आयुर्वेद ग्रन्थों के अध्ययन में पर्याप्त सहायता मिल सके। वर्तमान १०+२ प्रणाली में यह सुविधा नही है। अतः मैडीकल एवं नोन मैडीकल साईंस के सभी छात्रों का संस्कृत ऐच्छिक (इलैक्टिव) विषय एक अतिरिक्त विषय के रूप मे पढ़ने की छूट दी जावे। बहुत से छात्र बाद में बी० ए० स्तर पर विज्ञान संकाय छोड़कर कला संकाय ले लेते हैं। इससे उनको तथा आयुर्वेद पढ़ने वालों को अत्यधिक सुविधा होगी।

आशा है आप मेरे इन सुझावों पर विचार कर तत्काल १०+२ प्रणाली के पाठ्क्रम मे महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की भाषा प्रणाली को लागू करने के आदेश देने की कृपा करेंगे।

मेरे ये सुझाव किसी भी भाषा के प्रति विरोध के लिए नही हैं, अपितु सभी भाषाओं की उन्नति के लिए विशेष रूप से सभी भाषाओं की आधार स्वरूपा देव वाणी संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार के लिये हैं।

मेरा यह दृढ विश्वास है कि हरयाणा में यदि देवभाषा संस्कृत जीवित है तो यह देवभूमि हरयाणा के अत्यधिक हित में है अहित में नही।

साथ ही यह भी दृढ निश्चय है कि आप जैसे संस्कृत प्रेमी शिक्षा मन्त्री के रहते कम से कम हरयाणा मे संस्कृत के साथ किसी प्रकार का अन्याय एवं पक्षपातपूर्ण व्यवहार नही होगा।

सत्यवीर शास्त्री
सभा मन्त्री

गुरुकुल आमसेना में ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

२६ मई से ३० मई तक गुरुकुल आमसेना में गुरुकुल के आचार्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती की प्रेरणा से स्कूल के विद्यार्थियों को ब्रह्मचर्य एवं वैदिक धर्म की शिक्षा देने के लिए शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें छात्रों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। शिविर का संचालन स्वामी व्रतानन्द जी परिव्राट एवं चन्द्रशेखर शास्त्री ने किया। इसमें बौद्धिक शिक्षा के साथ विद्यार्थियों को नियमित दिनचर्या योगासन प्राणायाम लाठी चालन सन्ध्या यज्ञादि का क्रियात्मक ज्ञान दिया गया।

मुख्याध्यापक महाविद्यालय गुरुकुल आमसेना
खरियार रोड, कालाहान्डी (उडीसा)

नशा व शराबखोरी पूरी दुनिया की समस्या

प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

(गतांक से आगे)

रूस में पश्चिमी देशों की तुलना में नशेबाजी कम रही है। परन्तु यह एक खोज का विषय है कि शोषित समाज को सामन्तशाही और पूंजीवाद से मुक्ति दिलाने के लिए क्रान्ति करने वालों के मन में मजदूर और किसान को शोषण से बचाने के लिए नशाबन्दी की आवश्यकता की अनुभूति क्यों नहीं हुई? हो सकता है, जमीन के मालिकों और मध्यवर्ग के लोगों के विद्रोह के कारण उन्होंने यही सोच लिया हो कि जन-साधारण बुरी आदतों में फंसा रहे और राजकाज के मामलों में दखल न दे तो ही अच्छा है। भारत के साम्यवादियों ने शराब पीने और बेलगाम जीवन को प्रगति का पैमाना मान लिया और नशाबन्दी तथा संयम और साधना की बात करने वालों को महात्मा गांधी समेत प्रतिक्रियावादी कहा। यह इसलिए कि रूस ने न तो अपने देश को कोई नशाबन्दी का अभियान चलाया और न ही दूसरे देशों की साम्यवादी पार्टियों को इस सम्बन्ध में कोई आदेश दिया। धर्म के नाम पर शोषण करने वाली और साधना संयम आदि के द्वारा मानवीय गुणों का विकास करने वाले वास्तव में धार्मिक लोगों को उन्होंने एक थैली के चट्टे बट्टे समझा। धर्म का नाम होना चाहिये, फिर चाहे उसके द्वारा भोले लोगों का शोषण किया जाये, या मानवीय गुणों का विकास व प्रगति का विरोधी है, उसका अन्धाधुन्ध विरोध करना ही सच्चा साम्यवाद है, यही भारत के तथाकथित साम्यवादियों ने समझा। परन्तु रूस के साम्यवादी ऐसा नहीं मानते। उनके जैसे ही पैर जम गये और उनका साम्यवादी शासन स्थिर हो गया, उन्होंने सोचना शुरु किया। विद्यार्थियों को अच्छे से अच्छा भोजन और अन्य सब सुविधाएं दी, परन्तु नशों से बचाने के लिए भी ठोस कदम उठाये। शराब चाहे सब के लिए बन्द नहीं की, परन्तु एक आयु तक के बच्चों के लिये बन्द की गई और बडी उम्र के लोगों को भी वोडका की जगह थोडी अल्कोहल की शराब का प्रबन्ध किया।

रूस और भारत के साम्यवादियों के चिन्तन का अन्तर मेरे सामने उभर कर तब आया जब मैं विश्वशान्ति सम्मेलन के प्रतिनिधि के रूप में १९६२ में रूस में गया। अल्मा आटा (कजाकिस्तान) की राजधानी के करीब एक फार्म पर भारत के प्रतिनिधियों को भोज पर बुलाया। भारत के प्रतिनिधियों में से तथा दो तीन अन्य शराब नहीं पीते थे, उस फार्म की उपाध्यक्षा (महिला) भी शराब नहीं पीती थी। भारत के प्रतिनिधि जिनमें से अधिकतर साम्यवादी थे, बारातियों की तरह पागलपन का व्यवहार कर रहे थे। शेम्पेन की बोतलें जब सब चढ़ा चुके और मेजबानों ने उनको हल्की शराब पेश की तो वे उखड़ गये और मनमाना बोलने लगे। फार्म की उपाध्यक्षा ने मुझे बुलाकर कहा कि अपने देशवासियों को समझाइये कि वे शेम्पेन के लिए शोर न करें पीनी है तो जो हमारे पास है और हम दे रहे हैं उसी पर सन्तोष कर लें। मैंने देश की इज्जत का हवाला देकर उनसे कहा तो लड़ने लगे कि आप कौन होते हैं। मैंने कहा कि साम्यवादी पार्टी के सदस्य होने से ही तुम रूस के जमाई कैसे बन बैठे हो, जमाई हो तो भी मलमनसाहत तो बरतो, महिला कह रही है और तुम आपे से बाहर हो रहे हो। मैंने जब उस महिला को कहा कि आपके द्वारा सिखाये गये साम्यवाद की प्रगतिशीलता में ही तो ये लोग बह रहे हैं, हमारे बस के कहां से आये। तब उन्होने कहा कि रूस ने तो ऐसी प्रगतिशीलता नहीं सिखाई, रूस तो जीवन में संयम और साधना को बहुत मूल्यवान समझता है।

दुःख की बात है कि भारत का तथाकथित साम्यवादी शराबबन्दी का विरोध करता है। गरीब किसान और मजदूर की गाढ़े पसीने की कमाई को शराब के बनाने वालों और ठेकेदारों के हवाले करने की वकालत करने वाला समाजवादी कैसे हो गया। मैं तो यह बात आज तक नहीं समझ पाया। भारत जैसे देश में जहां ५० % लोग गरीबी की रेखा के नीचे है और बाकी ४०% जैसे तैसे करके अपना जीवन चला रहे हैं यहां समाजवादी क्रान्ति नहीं हुई, उसका यही कारण है कि यहां का साम्यवादी, क्रान्ति नहीं धन्धा करता है। मजदूरों को यूनियन बनाना और चलाना भारत में एक धन्धा बन चुका है। साम्यवादी यूनियन का नेता एक तरफ हड़ताल करवाता है वेतन बढ़वाने के लिए कारखानेदार से मजदूरों की लडाई का नाटक रचता है और थोड़ी दूर पर उसी पूंजीपति द्वारा बनाई गई और बेची जाने वाली शराब की वकालत करता है।

सरकार चाहे पूंजीवादी हो और चाहे साम्यवादी, जनसाधारण को बुरी आदतों में फंसाकर तथा उसका मनोबल गिराकर मनमाने ढंग से चन्द लोगों की मौज के लिए शासन चलाने का अधिकार उसको नहीं है। नशीली चीजों का निर्माण चाहे पूंजीपति के कारखाने में जनसाधारण की गुलामी का कारण दोनों समान हैं। सरकार द्वारा ऐसे कारखाने चलाये जायें तो ज्यादा खतरनाक हैं, पूंजीपति को तो कोई सरकार ही शायद रोक सके, जब सरकार लोगों को दिनधाड़े लूटने और उनका मनोबल गिराने पर तुल जाये तो उसका तो कोई इलाज ही नहीं। क्रान्ति ही एक इलाज हो सकता है, परन्तु मोहताज और पतित लोग क्या क्रान्ति कर पायेंगे?

मानव का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब कोई राष्ट्र या समाज पतन और गहरे गर्त में पड़कर अपना विवेक आत्म सम्मान आदि खोकर बेजान और बेसहारा सा हो जाता है, तब उसमें एक तड़प पैदा होती है और वही तड़प पुरुषार्थ को जन्म देती है। निराशा और पतन के गर्त से निकलने का साहस भी उसके साथ ही जन्म लेता है। ऐसे साहसी और पुरुषार्थी लोगों का सहारा मिलने पर जनसाधारण भी अंगड़ाई लेता है। तब अभ्युदय का रास्ता खुलने लगता है। साहसी और पुरुषार्थी लोगों के परिश्रम, साधना और संयम के द्वारा निर्मित राजपथ पर लोग आगे बढ़ने लगते हैं और अपने पुरुषार्थ से नई दुनियां बना डालते हैं। मानव सभ्यता के विकास की यही प्रक्रिया है।

अमीर देशों में मुक्त जीवन और भोग विलास की दौड़ में लोग अपने जीवन शान्ति और सन्तुलन खो बैठे हैं, वे अजीब ढंग का खोखलापन तथा सुनापन महसूस कर रहे हैं। इसी सूनेपन और खोखलेपन को भूलना चाहते हैं शराब पीकर या अन्य नशों में बेहोश होकर परन्तु वहां अब साहस बटोर कर काफी लोग भोग विलास को खेरबाद कहकर सादा और सात्विक जीवन को अपना रहे हैं और साधना तथा सेवा के मार्ग से शान्ति प्राप्त करना चाहते हैं। प्रभुपाद ने इन लोगों की तड़प को समझा और उनको चाह के लिए एक राह दे दी। पश्चिम के सभी देशों में लोगों की संख्या में लोग मांस मदिरा, नशीले पदार्थों को छोड़कर सात्विक भोजन, सादा जीवन, अपना कर साधना और भक्ति की ओर बढ़े हैं। रूस में भी ये लोग पहुंचे। उन पर रोक लगाकर स्वयं रूस की सरकार और नेता शराब तथा नशों से अपनी जनता को बचाने के लिए कानून और कार्यक्रम बनाने में जी-जान से लग गये हैं।

गाव उत्तरोला (गोण्डा) में शुद्धि

१६-६ ८५ को १२ बजे आर्यसमाज उत्तरोला में शुद्धि कार्य सम्पन्न हुआ। इसमें ११ मुसलमानों ने स्वेच्छा से यज्ञोपवीत धारण किया और सपरिवार वैदिक धर्म की दीक्षा ली। स्वामी देवानन्द महामन्त्री हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति हरयाणा और संसारमणि आर्य भूतपूर्व प्रधान... के प्रयत्नों से सफल हुआ। इस कार्य में आर्यसमाज उत्तरोला के प्रधान श्री ज्ञानेश्वर प्रसाद और मन्त्री श्री जगदीश प्रसाद, डाक्टर धर्मपाल आर्य, कोषाध्यक्ष श्री योगी प्रसाद, महाशय छेदीलाल उपस्थित हुए।

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित शराबबन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए जिन ग्रामों में शराब के ठेके खुले हुए हैं, उन ग्राम पंचायतों के सरपंचों तथा पंचों को प्रेरणा करके प्रस्ताव पास करवाने का यत्न करें कि शराब का ठेका बन्द किया जाये। प्रस्ताव का प्रारूप निम्न प्रकार प्रकाशित किया जा रहा है।

सेवा में,

माननीय उपायुक्त महोदय

आबकारी एवं कराधान विभाग हरयाणा, चण्डीगढ

निवेदन है कि हमारे ग्राम............जिला............पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक.........में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है—

यह पंचायत शराब पीने की बढती हुई प्रवृत्ति को ग्राम्य जीवन के लिये बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गांव में अनाचार, अशान्ति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की नशाबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द कर दी जाए और भविष्य में कदापि भी यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाए ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे। सधन्यवाद!

ता० .... विनीत

हस्ताक्षर ग्राम पंचायत के सदस्य

प्रतिलिपि सेवा में—

१- प्रधानमन्त्री, भारत सरकार नई दिल्ली।

२- मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

नोट—जिन पंचायतों के प्रस्ताव ३० सितम्बर ८५ तक सरकार के पास पहुँच जावेंगे, पंचायत एक्ट के अनुसार उन ग्रामों में शराब के ठेके नीलाम नहीं हो सकते।

अतः आर्यसमाजें अपने निकट के ग्रामों में जहां शराब के ठेके खुले हैं, वहां के पंचायतों से प्रस्ताव पास करवाकर ३० सितम्बर तक भिजवाने का [illegible] करें।

प्रो० शेरसिंह
सभा प्रधान

गुरुकुल शुक्रताल में प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल जिला मुजफ्फरनगर उ० प्र० में प्रथम जुलाई से प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है इस गुरुकुल में प्रथमा (कक्षा ६) से शास्त्री (बी० ए०) तक सभी विषयों (संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, वेद दर्शन आदि) का अध्ययन कराया जाता है आपका प्रिय गुरुकुल सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय बनारस से मान्यता प्राप्त है। पांचवीं पास छात्र प्रवेश पा सकते हैं। शिक्षा के साथ साथ यहां यौगिक क्रियाएं, आसन, व्यायाम व धार्मिक शिक्षा का भी उत्तम प्रबन्ध है। शिक्षा एवं आवास की निःशुल्क व्यवस्था है। मध्यमा के निर्धन व योग्यतम छात्रों को ५०) मासिक छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। उत्तम जलवायु, सुरम्य वातावरण, सादा रहन सहन एवं सात्विक आहार यहां की अपनी विशेषता है। यहां के आचार्य वृन्द योग्य एवं कुशल अनुभवी हैं। अतएव आप अपने पुत्रों को उत्तम शिक्षा दिलाने हेतु अविलम्ब सम्पर्क करें।

इन्द्रपाल आचार्य
प्रधानाचार्य गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल, जि० मु० नगर

गुड़गांव गांव में ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर

दिनांक १०-६-८५ से १६-६-८५ तक ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री सभा उपदेशक के अथक परिश्रम व पुरुषार्थ से पाखण्ड के गढ (माता मसानी) गुड़गांव गांव में ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। समापन समारोह पर स्वामी ओमानन्द जी व प्रो० शेरसिंह जी ने बोलते हुए कहा कि दकीयानूसी विचारों को छोडकर शराब, दहेज आदि बिमारियों से दूर रहने का समय आ गया है। अन्त में ब्र० विजयपाल जी द्वारा व्यायाम प्रदर्शन हुआ। स्वामी व्रतानन्द जी, स्वामी योगानन्द पं० ईश्वरचन्द शास्त्री, ब्र० महेन्द्रसिंह जी शास्त्री के क्रान्तिकारी विचार शिक्षार्थियों को मिलते रहे। शिक्षक के रूप में भाई बलवानसिंह जी का सराहनीय योगदान रहा। छत्तरसिंह बोहरा, वजीराबाद, धर्मवीर सिंह सरपंच दौलताबाद, नम्बरदार राजेन्द्रसिंह गुड़गांव, महताबसिंह सुखराली, सत्यपाल मन्त्री आर्यसमाज जैकमपुरा, अत्तरसिंह धनवापुर भाई राज निर्भीक जी गुड़गांव व राजेन्द्रसिंह दहिया का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। शिविर में ४० नवयुवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस अवसर पर सभा की ओर से पं० हरिश्चन्द्र जी के प्रभावशाली भजन हुए।

खजानसिंह अध्यापक

आर्यवीर दल नरवाना का वार्षिक शिविर

आर्यसमाज नरवाना (जीन्द) के तत्वावधान में २६ मई से २ जून तक आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर लगा। शिविर में ७० के लगभग आर्यवीरों ने भाग लिया। आर्यवीर दल हरयाणा के मन्त्री अजीत कुमार जी, वेदप्रकाश जी, मनोहरलाल आनन्द जी, ओमकुमार जी ने शिविर का निरीक्षण किया एवं उपदेश दिया। समाज के पुरोहित श्री प्रेमचन्द जी ने प्रतिदिन प्रातः सायं संध्या हवन कराया। स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी ने बौद्धिक प्रशिक्षण दिया। श्री भूपेन्द्रकुमार, श्री देवेन्द्र दत्त एवं हेमकुमार जी ने शारीरिक प्रशिक्षण दिया, जिसमें आसन, प्राणायाम, लाठी, जुडो कराटे का प्रशिक्षण दिया। समापन समारोह २ जून को हुआ जिसमें आर्यवीरों ने प्रदर्शन किये। नगर से आये हुये लोगों ने आर्यवीरों के प्रदर्शन की प्रशंसा की। २ जून को आर्यवीरों को प्रमाण-पत्र वितरित किये गये।

रामकुमार आर्य
मन्त्री आर्यसमाज नरवाना जि० जीन्द

दे दे

ओ३म् बिन मांगे तूने सब कुछ दिया
एक मांग है मेरी तू मुझे अपना भक्त बना दे।

इंसान इन्सानियत का खून कर
घूम रहा स्वार्थ की चादर ओढ कर
हरेक को बेनकाब कर प्यार का चोला पहना दे।

उस पर खड़ा है कोई
उनका इन्तजार है मुझे
एक दूजे को गले से मिला दे।

रात हो या दिन हर पल नाम हो तेरा
शांति बिगुल बजाकर
हिंसा को पताका जला दे।

मोहब्बत का हूं पुजारी
कह देना चाहता हूं उनसे
कहने का डर मुझमें से निकाल दे।

नफरत डुब जाये
शाम प्यार की खुशबू में सजती रहे
उगते नये सूरज के साथ साथ नई चाह दे।

अनिल कुमार मंगला 'विकी' बम्बई

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन डर्बन (दक्षिण अफ्रीका) सम्बन्धी सूचनाएं

वेद निकेतन डर्बन के प्रधान प० नरदेव विद्यालंकार ने दक्षिण अफ्रीका में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के सम्बन्ध में निम्नलिखित सूचनाएं हमें प्रकाशनार्थ भेजी है। तदनुसार वहां पहुँचने वाले दर्शकों के लिए ३० दिन की बजाय ६० दिन ठहरने की अनुमति भारत सरकार को देने की दिशा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यवाही करेगी। वैसे विदेश जाने वालों को पासपोर्ट में सामान्यतः दक्षिण अफ्रीका जाने की अनुमति नहीं दी जाती, फिर भी सरकार से पत्र-व्यवहार हो रहा है।

वीसा के प्रार्थना पत्र का फार्म ठीक तरह से भरने पर उनके कथनानुसार विशेष कठिनाई की सम्भावना नहीं है। (आवेदन पत्र के इच्छुक वीसा फार्म की कापी इस सभा से प्राप्त कर सकते हैं) प्रतिनिधि सभाएं इस सम्बन्ध में अपने प्रदेश क्षेत्र में भी ये सूचनाएं प्रकाशित करादें।

वीसा फार्म के साथ पासपोर्ट के पहले चार पृष्ठों की फोटो स्टेट कापी जिसमें पासपोर्ट नम्बर, व्यक्ति की पहचान सार्वदेशिक सभा में प्रवेश करने की अनुमति आदि हो, वह भेजना जरूरी है। पासपोर्ट भेजने की आवश्यकता नहीं है। हर एक व्यक्ति के दो फोटो ग्राफ होने चाहिए जिसके पीछे उसके हस्ताक्षर स्पष्ट अक्षरों में (अंग्रेजी में पूरा नाम व जन्म तारीख लिखी हो।)

ट्रेवल एजेन्ट से जांच करके एलो फीवर तथा कोलेरा के हैल्थ के जरूरी सार्टीफिकेट वीसा के फार्म के साथ भेजे जाएं।

पासपोर्ट में प्रवास के देशों में साउथ अफ्रीका प्रवेश पर निषेध लिखा रहता है। इसको रद्द करवाना आवेदक के लिये जरूरी है। प्रवासी के लिए अगर डर्बन पहुंचने पर पासपोर्ट फीस भरनी होगी तो उनकी ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा साउथ अफ्रीका इस फीस को भर देगी।

भारत सरकार से दक्षिण अफ्रीका में प्रवेश की अनुमति दिलाने में सम्भावित विलम्ब को देखकर श्री नरदेव जी का सुझाव है कि पासपोर्ट के पहले चार पृष्ठों की फोटो कापी एवं वीसा फार्म पहले भेज देना चाहिये। दक्षिण अफ्रीकी सरकार वीसा फार्म पर यह मानकर स्वीकृति दे देती है कि वहां उपस्थित रहने के समय तक भारत सरकार की अनुमति पासपोर्ट पर मिल जायेगी।

ओमप्रकाश त्यागी
मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान नई दिल्ली-२

सिन्धी आर्य सम्मेलन

१७ मई से १९ मई १९०५ तक सिंधी आर्य सम्मेलन अखिल भारतीय सिंधी आर्य सभा की ओर से आर्यसमाज पिम्परी पुणे-१७ में बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

इस सम्मेलन में अजमेर, बड़ौदा, अहमदाबाद, पुणे, दिल्ली, धुग्ने बिलासपुर, जबलपुर, बम्बई, नागपुर, कानपुर, इन्दौर, उल्हासनगर, पिम्परी आदि शहरों से आर्यबन्धु सपरिवार सम्मिलित हुए।

श्री देवीदास आर्य प्राचार्य कन्हैयालाल तलरेजा चांदूमल परदेशी, नरेन्द्र कुमार शास्त्री, श्री अशोक किशोरगणी हेमराज आर्य, स्वामी ओमाश्रीत, श्री सत्यव्रत जी राजेश सुरेन्द्रपाल आर्य आदि सुप्रसिद्ध विद्वान् भजनोपदेशक पधारे और सम्मेलन की शोभा बढाई।

सम्मेलन का उद्घाटन सभा के प्रधान श्री गोविन्दराम चेलाणी द्वारा कराया गया। इसमें निम्नलिखित सम्मेलन हुए—वेदप्रचार सम्मेलन, शुद्धि सम्मेलन, अछूतोद्धार सम्मेलन विद्वानों और वक्ताओं ने इन सम्मेलनों में ज्ञान की गंगा बहा दी।

दिनांक १७ मई सायं को विशाल शोभा यात्रा का आरम्भ हुआ, वेदों की सवारी निकाली गई, धूमधाम से सजधज कर पिम्परी के बाजारों में चली और पिम्परी वालों ने, पंचायतों ने स्वागतार्थ फूलों की वर्षा की।

दिनांक १९ मई अजीत किशोर और पचायतों ने सभा मंडप में आये हुए आर्य विद्वानों का और कार्यकर्त्ताओं का श्रीफल और गुलदस्ता देते हुए स्वागत किया।

इस सम्मेलन में निम्नलिखित प्रस्ताव पारित हुए— गोहत्या पाबन्दी, विदेशी मुद्रा के दुरुपयोग पर पाबन्दी, ईसाई वैं मुस्लिमों द्वारा प्रलोभन देकर गरीब लोगों के धर्म परिवर्तन करते हैं, हिन्दुओं की रक्षा की जाये। भारत में जो अस्पताल, अनाथालय, विधवाश्रम, विद्यालय, महाविद्यालय आदि जो विधर्मियों द्वारा चलाये जाते हैं, उनका राष्ट्रीयकरण किया जाये।

मन्त्री
नोशाराम आर्य

डा० देवशर्मा संस्कृत विभागाध्यक्ष नियुक्त

आर्यसमाज शिक्षा सभा अजमेर ने अपने अधीनस्थ दयानन्द महाविद्यालय अजमेर के स्नातकोत्तर विभाग के अध्यक्ष पद पर गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक डा० देवशर्मा वेदालंकार को विभागाध्यक्ष नियुक्त किया है। डा० देवशर्मा ने अपना कार्य विधिवत् सम्भाल लिया है।

श्री वेदालंकार अच्छे वक्ता, उच्चकोटि के विद्वान् तथा अत्यन्त मधुरभाषी हैं। आपके पिता श्री रामनारायण जी शास्त्री आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वानों में से एक थे।

देहात सुधार

राम राज जो ल्याणा चाहो पहले देहात सुधार करो।
आजादी के बेड़े न सब मिल के परली पार करो। टेक
सात सौ साल गुलामी की दया आदत छोड़ कमीणी रे।
आजाद देश में सभी बराबर जात नहीं कोए होणी रे।
नारी का सत्कार करो ना समझो नीच लहू पीणी रे।
नेता जो से केहरी जणती ये देवी हो से सिहणी रे।
विद्या पढ़ाओ पर्दा हटाओ मत जेवर का भार करो।
पढ़ी लिखी सन्तान सुधारै हृदय बीच विचार करो ॥१॥
गांव गाब में बणी पचायत जिसके जुमे काम भारी।
आपस के झगड़े मेटन ने मेम्बर चाहिए न्यायकारी।
घर घर घूम सफाई देखै ना गन्दगी हो बिमारी।
अस्पताल डाकखाने मदरसे मिल खुलवादो सरकारी।
गांव का फण्ड गांव में लाग गाल सब पक्की तैयार करो।
आर्यसमाज तथा लायब्रेरी खोलो जारी कई अखबार करो ॥२॥
सात साल का होले लड़का लड़की जरूर पढ़ानी चाहिये।
नौकरी के ना बस मे हो इसा हुनर सिखाणा चाहिये।
निगरानी करो सख्त बुरी संगत तैं बचाणा चाहिये।
मात पिता ने अपणे काम के लखन लाणा चाहिये।
हुक्का बीड़ी शराब सुल्फा नशे कभी मत यार करो।
खान पान चण्डाला वाले अपने देश तैं बाहर करो ॥३॥
खूड खूड में पानी लागै म्हारे अन्न का घाटा रहै नहीं।
सोने की चिड़िया हो देश म्हारे धन का घाटा रहै नहीं।
गुण्डा सुधरै डण्डे ते सज्जन का घाटा रहै नहीं।
राम राज जल्दी आज्या कुछ दिन का घाटा रहै नहीं।
छत्तरसिंह की बात मानल्यो सब आपस में प्यार करो।
चार सौ बीस बणो मत छलिया सब सच्चा व्यवहार करो ॥४॥

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

सम्पादक के नाम पत्र

देश में गोहत्या कब तक चलेगी ?

श्रीमान् जी,

अंग्रेजों के शासनकाल से ही देश में गोहत्या चल रही है। गोहत्या बन्द करने के बारे में कई प्रयत्न किए गए। परन्तु गोहत्या बन्द होने में नहीं आती हालांकि गोहत्या से देश को वितीय नुकसान बहुत हो रहा है। परन्तु इस ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया जाता। जब अंग्रेजों के समय में गोहत्या होती थी तो लोगों की आम विचारधारा थी कि विशेषकर भारतीय नेताओं की, कि गोहत्या बन्द होनी चाहिये। लोगों का विचार था कि अंग्रेजों का शासन समाप्त होते ही गोहत्या बन्द हो जाएगी। हालांकि जिन लोगों ने यह कहा था कि आजादी के मिलते ही पहली कलम से गोहत्या बन्द कर दी जाएगी। जब उन लोगों का शासन आया तो उन्होंने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया और गोहत्या होती रही। इस विषय में ऋषि दयानन्द ने लाखों हस्ताक्षर कराकर मलका विक्टोरिया को विज्ञापन भी दिया और आर० एस० एस० के लोगों ने भी गोहत्या बन्द होने के बारे में एक ज्ञापन हस्ताक्षर कराकर दिया था। इसके इलावा सन् १९५० से गोहत्या बन्द कराने के बारे में आन्दोलन व सत्याग्रह पर किसी ने भी गोहत्या बन्द करने का प्रयत्न नहीं किया। हालांकि इस दौरान में जनता पार्टी का शासन भी आ लिया, परन्तु उन लोगों ने भी इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

अब लोग हैरान हैं और सोचते हैं कि गोहत्या का कलंक कब तक इस देश के माथे पर चमकता रहेगा।

जयदेव गोयल
पत्रकार जीन्द

आर्यसमाज शान्तिनगर सोनीपत की शुभ कामनाएं

आर्यसमाज शान्तिनगर सोनीपत के पदाधिकारी एवं सदस्यगण आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को नवगठित कार्यकारिणी के लिये अपनी शुभ-कामनाएं दे रहे हैं। प्रो० शेरसिंह जी का तीसरी बार सर्व-सम्मति से चुना जाना इनकी लोकप्रियता, उदारता, ईमानदारी एवम् उत्साह का परिचय देता है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि प्रो० शेरसिंह जी (प्रधान), प्रो० सत्यवीर शास्त्री (मन्त्री) के कुशल, प्रेरक, गतिशील नेतृत्व में हरयाणा की आर्यसमाजें संगठित एवम् सुदृढ होंगी। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार से अज्ञान रूपी अन्धकार का विनाश होगा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का नाम विश्व में सर्वोपरि होगा।

हरिचन्द्र 'स्नेही'

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज सांपला मण्डी जिला रोहतक

प्रधान—चौ० हरियावसिंह पूर्व पंचायत अधिकारी, मन्त्री—श्री मिठनलाल आर्य, कोषाध्यक्ष—गोपाल कृष्ण

आर्यसमाज खरककलां जिला रोहतक

प्रधान—श्री गणपतसिंह, मन्त्री—सूबेदार रघुवीरसिंह, कोषाध्यक्ष श्री महावीरसिंह

आर्यसमाज कैथल शहर जिला कुरुक्षेत्र

प्रधान—श्री अमरसिंह खोरे वाले, उपप्रधान—ओमप्रकाश गुप्त, मन्त्री—मदनगोपाल वर्मा सर्राफ, उपमन्त्री—इकबालचन्द, प्रचारमन्त्री हुरीराम बजाज, कोषाध्यक्ष—पूर्णचन्द बजाज, पुस्तकाध्यक्ष—जगन्नाथ मित्तल, सहायकपुस्तकाध्यक्ष—युद्धेन्द्र कुमार भून, प्रबन्धक आर्य कन्या पाठशाला—डा० मनोहरलाल, लेखानिरीक्षक—ओमप्रकाश मक्कड़

आर्यसमाज चरखी-दादरी जिला भिवानी

प्रधान—श्री सत्यनारायण शर्मा, मन्त्री—हुकमचन्द आर्य, उप-मन्त्री—हरिश्चन्द्र लाम्बा, उपप्रधान—हरिश्चन्द्र गोड़े, रामनारायण चावला, कोषाध्यक्ष—श्यामसुन्दर, सहकोषाध्यक्ष—रिछूराम, प्रचार मन्त्री—देवराज जगदीश फोगाट, सत्यपाल यादव, पुस्तकाध्यक्ष—सतीश कुमार

आर्यसमाज फतेहाबाद जिला हिसार

प्रधान—श्री सत्यपाल बंसल, उपप्रधान—कैलाशचन्द्र, मन्त्री—बुद्धराम आर्य, उपमन्त्री-सत्यपाल, कोषाध्यक्ष—रामलाल अरोड़ा

आर्यसमाज शास्त्री नगर जालन्धर

प्रधान-श्री रामलुभाया नन्दा, वरिष्ठ उपप्रधान—श्री नौतनदास भाटिया रिटायर्ड तहसीलदार, उपप्रधान—त्रिलोकचन्द, महामन्त्री—मास्टर लालचन्द नन्दा, मन्त्री—प्रो० डी० डी० अरोड़ा एम. एस. सी. प्रचारमन्त्री-प्रो० एम० एल० सेठी, कोषाध्यक्ष-प्रेमचन्द भाटिया मालिक गणेश स्पोर्टस एक्सपोर्टस, पुस्तकाध्यक्ष-किशोरीलाल भोला, सम्पत्ति निरीक्षक-मा० मोहनलाल, लेखानिरीक्षक-प्रेम अरोड़ा

आर्यसमाज स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना

संरक्षक-श्री राजाराम सरीन; श्री श्री० पी० पासी, वरिष्ठ उप-प्रधान-यशपाल बांगिया, कनिष्ठ उपप्रधान-प्रो० पी० टण्डन, सत्यपाल आनन्द, अमरनाथ शर्मा, महामन्त्री—डा० एस० बी० बांगिया, मन्त्री-धर्मपाल प्रसीन, धनपतराय, कोषाध्यक्ष-रामधन, उपकोषाध्यक्ष-मा० मुरारीलाल, पुस्तकाध्यक्ष-हंसराज आर्य; उपपुस्तकाध्यक्ष-देवशरण सेठी

आर्यसमाज चम्बा (हिमाचल)

प्रधान—श्री भगवती प्रसाद पंत सहायक अभियन्ता, मन्त्री—प्रो० शामलाल सल्होत्रा, कोषाध्यक्ष—विश्वजीत महाजन, प्रचारमन्त्री—सूरतराम शास्त्री

मुसलमानों से प्रार्थना

गौवों की पुकार सुनो उन पर रहम करो

चिरंजीलाल 'जीव' बराड़ा जि० अम्बाला

ऐ मुसलमान ! हाफिज कुरान देकर ध्यान मेरी सुनले बात तू।
गौ कुशी करना कराना छोड़ अब दीजिये।
इन बे जबानों को सताना छोड़ अब दीजिये॥
न यह बढ़ा जुल्म है बुरा कर्म कुछ तो खा रहम अब कर ना घात तू।
दूध घी देती हैं यह दुनियां को पालती।
खेतयाँ इनके भरोसे पर ही हो रही॥
कुछ कर विचार कर इनसे प्यार मारे ना यार इनको दिन-रात तू।
तेरे जैसा ही है इनके अन्दर आत्मा।
अपने जैसा ही समझकर कर न खातमा॥
न कर इनको नष्ट दे न इनको कष्ट है यह काम भ्रष्ट
सहेगा आफात तू।
यह बुरी आदत है इस आदत को छोड़ दे।
जो बुरी तालीम दे उस मत को छोड़ दे॥
बन अकलमन्द तेरे कट जा फन्द मिले पूर्णानन्द समझ इनको मात तू।
जिद्द अच्छी होती नहीं जिद् तज दे दोस्त तू।
दूध घी पी खा तू इनका खा न गोश्त तू॥
न बहा खून कभी इनका तू दे सजा प्रभु मत कर उत्पात तू।
परोपकारी "जीव" हैं करती उपकार यह।
सब पै उठा रही हैं कुल दुनियां का भार यह॥
कर धृति पाल रख इनका ख्याल होगा निहाल पायेगा निजात तू।

उपदेशक तथा भजनोपदेशकों की आवश्यकता

विज्ञापन संख्या १।८५

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए निम्नलिखित कर्मचारियों की आवश्यकता है। दिनांक ३० जून १९८५ तक निम्नलिखित हस्ताक्षरा के नाम निर्धारित प्रपत्र पर आवेदन पत्र भेजना आवश्यक है। प्रपत्र सभा को पत्र लिखकर मंगवा लेवें।

१—उपदेशक

शास्त्री, आचार्य, सिद्धान्तशिरोमणि, विद्यालंकार आदि शैक्षणिक योग्यता के साथ भाषण कला तथा वैदिक कर्मकाण्ड में निपुणता, उपदेशक कार्य का दो वर्ष का अनुभव, आयु २५ वर्ष से अधिक।

२—भजनोपदेशक

संगीतकला में मान्यता प्राप्त उपाधि, आर्य सिद्धान्तों के ज्ञान मे किसी आर्य संस्था की परीक्षा उत्तीर्ण, आर्य सिद्धान्त तथा वैदिक कर्म काण्ड का अपेक्षित ज्ञान, भजनोपदेशक रूप में न्यूनतम १ वर्ष का अनुभव, आयु २५ वर्ष से अधिक।

३—आर्यवीर दल शिक्षक

मिडिल/मैट्रिक/विद्यारत्न/प्रभाकर उत्तीर्ण आर्य वीर दल की कार्य पद्धति का उत्तम ज्ञान, आर्य संस्था का आर्य वीर दल शिक्षक के रूप में शिक्षण अनुभव दो वर्ष।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ, रोहतक

आर्य कन्या की आवश्यकता

एक सुयोग्य विद्वान् वर के लिए सुशिक्षित आर्य कन्या की आवश्यकता है। वर की आयु २७ वर्ष, रंग गेहुंआ, सुन्दर, कद ५ फुट ४ इंच आय १५००) मासिक है। गुरुकुल की स्नातिका को प्राथमिकता दी जाएगी। प्रचलित जाति बन्धन नहीं। निम्नलिखित पत्ते पर सम्पर्क व पत्र-व्यवहार करें।

सुदर्शनदेव आचार्य
८०/३२ हरिसिंह कालोनी
निकट सुनारियां मोड़, रोहतक



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

आर्य सरकार द्वारा पंजि सं० 83207/73 रजि० नं० P/RTK 49   फोन ४८१२   सृष्टि सं० १६,७२,९४९,०८६



ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष १२. अङ्क २६   २८ जून १९८५   वार्षिक शुल्क १५)   विदेश में ५ पौंड   एक प्रति ३० पैसे

इतिहास में आर्यों को विदेशी लिखना अनुचित

स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री श्री कृष्ण चन्द्र पन्त से उनके निवास स्थान पर भेंट करके एक ज्ञापन दिया जिसमें शिक्षा से सम्बन्धित कतिपय महत्वपूर्ण विषयों पर आवश्यक कार्यवाही करने का अनुरोध किया। शिक्षा मन्त्री महोदय ने आर्यों के विदेशी होने विषयक चर्चा में विशेष रुचि दिखाई। उन्होंने केवल सुना ही नहीं अपितु शिक्षा मन्त्रालय में विशेष सचिव से तुरन्त सम्पर्क कर तत्काल आवश्यक कार्यवाही करने का निर्देश दिया। शिक्षा सचिव ने इस विषय पर चिन्ता व्यक्त करते हुए इतिहास विभाग के विशेष अधिकारी को एतद् विषयक खोज करके जल्दी से जल्दी अपनी रिपोर्ट देने के लिए कह दिया। स्कूलों कालिजों में अनिवार्य धार्मिक शिक्षा के विषय में भी शीघ्र कार्यवाही करने का आश्वासन दिया। शिक्षा मन्त्री ने इस विषय की फाइल अच्छी तरह देखी है। अन्य विषयों पर भी आवश्यक कार्यवाही करने का विश्वास दिलाया। कुछ दिन बाद शिक्षामन्त्री जी का लिखित उत्तर भी स्वामी विद्यानन्द जी को प्राप्त हो गया है। ज्ञापन की प्रति प्रकाशित की जा रही है।

सम्पादक

श्री कृष्णचन्द्र पंत

शिक्षामन्त्री भारत सरकार को ज्ञापन

श्रीमन् महोदय,

निम्नलिखित कुछ बाते आपके विचारार्थ प्रस्तुत हैं—

१—आर्य और द्राविड, उत्तर और दक्षिण आदि के विवाद के मूल में कुछ लोगों के इस देश के मूल निवासी होने तथा कुछ (आर्यों) के विदेश (ईरान आदि) से आकर यहा के आदिवासियों को खदेड़कर इस देश पर अधिकार कर लेने की मान्यता है जिसे विदेशी शासकों ने षड्यन्त्र (फूट डालो और राज्य करो) स्थापित किया, इतिहास विरुद्ध होने के साथ साथ यह मान्यता देश की एकता और अखण्डता में बहुत बड़ी बाधा है। तमिलनाडु में राम के गले में जूतों का हार डालकर सरे बाजार में झाडुओं से मारते हुए उसका जलुस निकालना इसी का परिणाम है। फ्रेंक एन्थोनी ने संसद में मांग की थी—

"Sanskrit should be deleted from the 8th schedule of our constitution, because it is a foreign language brought to this country by foreign Aryan conquarors."   Indian Express 5 9 1977

२३ फरवरी १९७८ को राज्य सभा में मांग की थी कि भारतीय उपग्रह का आयभट नाम भारतीय नहीं है। यह नाम आर्यों का प्रतीक है जो भारतीय न होकर इस महाद्वीप में आक्रमणकारी के रूप में आये थे। (नवभारत टाइम्स २४-२-७८)

अभी कुछ समय से Muslim India नाम से एक अंग्रेजी मासिक का प्रकाशन हो रहा है जिसके मार्च ८३ के अंक में लिखा है—जासूसी कांड में पकड़े गये लगभग एक दर्शन लोगों में एक भी मुसलमान या ईसाई इसलिये नहीं है क्योंकि ये लोग इस देश के मूल निवासी होने के कारण उसे प्यार करते हैं। इसके विपरीत हिन्दू (आर्य) बाहर से आकर इस देश में बसने के कारण इस देश को अपना नहीं समझते। विदेशी होने के कारण हिन्दुओं को भी भारत से निकाल देना चाहिये, जैसे अंग्रेजों को निकाला गया है।

इस सन्दर्भ मे हिन्दुस्तान टाइम्स के ३१ अक्तूबर १९७७ के अंक में प्रकाशित यह रिपोर्ट द्रष्टव्य है—

There is no conclusive evidence of Aryan immigration into India from outside, according to Indian Historians, Linguists and Archaelogists who participated in the recent International seminar at Dushambi, capital of the Soviet Republic of Tadjikistan. Dr- R. N. Banerjee, Director of National Museuri and a member of the Indian delegation, told Samachar that Indian Historians made out this point at the seminar and papers presented by them were very much appreciated, (शेष पृष्ठ ७ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के गणक

श्री नवाबसिंह जी का आकस्मिक निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के गणक श्री नवाबसिंह जी का २३ जून को अपने ग्राम किशनपुर बराल जिला मेरठ मे अचानक निधन हो गया। आप सभा के कार्य पर १५ जून को पानीपत गये थे। बैंकों का कार्य निपटाने पर वे अचानक बिमार हो गये और अवकाश लेकर अपने ग्राम में चले गये। यात्रा की अवस्था में उनका स्वास्थ अधिक खराब हो गया। २३ जून को उन्हे सहारनपुर हस्पताल में उपचारार्थ ले जा रहे थे, परन्तु मार्ग में ही उनका निधन हो गया। सभी ग्राम वासियों ने रोते रोते ही उनकी उसी दिन अन्त्येष्टि कर दी। वे अपने पीछे विधवा धर्मपत्नी तथा एक छोटा लड़का व ५ लड़कियां बिलखती हुई छोड़ गये हैं। उनकी आयु ४९ वर्ष थी।

श्री नवाबसिंह जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर में १९६३ में गणक के रूप में नियुक्त हुए थे। १९७५ मे पंजाब सभा के विभाजन के पश्चात् आप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की सेवा मे आ गये थे, तब से आप बहुत ही लगन, परिश्रम तथा कुशलता से अपना कार्य कर रहे थे। वे हिसाब-किताब मे बहुत विशेषज्ञ माने जाते थे। उनके निधन का समाचार सुनते ही सभा कार्यालय बन्द कर दिया।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिवार को इस महान् दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

युवामञ्च—

समेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्

युवक दीक्षित हों

स्वर्गीय स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती

आज मानव समाज की अत्यन्त दुर्दशा है। प्राकृतिक वैभव अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच चुका है। किन्तु उसका फल विध्वंस दीख रहा है। इसका कारण क्या है ? प्रकृति के जिन तत्त्वों को मानव ने खोज निकाला है। उनके सदुपयोग के लिए जो सदाचार भ्रातृभाव तथा जितेन्द्रियता अपेक्षित है, वह आज मानव समाज में नहीं है। इससे बढ कर दुःख की बात है कि मानव समाज इसका उपाय ठीक नहीं सोच रहा है। आज समाजवादी तथा साम्यवादी लोग कहते हैं कि यदि भोज्य पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न हो तथा उनका वितरण ठीक हो तो मानव समाज के दुःख दूर हो जायेंगे। यह बात कुछ अंश तक ठीक है। जो लोग भूख और दरिद्रता के कारण बुराइयां करते हैं, वह इससे दूर हो जायेगी, परन्तु भूख और दरिद्रता से बढकर तृष्णा और भोगवाद है। उसकी चिकित्सा तो क्या करनी थी, उसको बढाने में लगे हुए हैं।

आज संसार में अन्न और वस्त्र की इतनी कमी नहीं, जितनी मनुष्यता की है, उसे उत्पन्न करने के साधन हैं; ईश्वर भजन, त्याग, ब्रह्मचर्य, जितेन्द्रियता, सत्संग। यदि इन सबको एक शब्द में कहना हो तो वह है उत्तम शिक्षा। उसको ओर मानव समाज का ध्यान नहीं जा रहा। हमारी सम्मत्ति में उत्तम शिक्षा मानव समाज की अन्तिम शरण है।

परन्तु उत्तम शिक्षा का आधार भी तो कुछ होना चाहिए। यही बात आज हम इस लेख में दिखाना चाहते हैं। आज हम शिक्षा शास्त्र का परम मौलिक, परमोपयोगी, परमोपेक्षित सिद्धान्त संसार के सामने रखना चाहते हैं। बात नई नहीं है, परन्तु न जाने इसका शिक्षा शास्त्र में उपयोग क्यों नहीं किया जाता। वह सिद्धान्त है व्रत अथवा प्लेज। हम किसी सैनिक को सेना में भर्ती नहीं करते, जब तक उसको झण्डे के सामने खड़ा करके राष्ट्र रक्षा की शपथ नहीं दिला लेते। इसी प्रकार राष्ट्रपति, सेनापति, राष्ट्र के मन्त्रिमण्डल, संसद के सदस्य आदि सब लोगों से शपथ ली जाती है। वैदिक गृहस्थ आश्रम इसी शपथ के आधार पर खड़ा है। विवाह क्या है ? स्त्री, पुरुष के एक दूसरे के सुख दुःख में जीवनभर साथ देने की शपथ हवन-कुण्ड के सामने हो, चाहे रजिस्ट्रार के दफ्तर में, इससे कुछ अन्तर नहीं पडता, शपथ तो शपथ है। खेद है कि मनुष्य के भावी जीवन के मूलाधार शिक्षणालय में कोई शपथ नहीं।

प्राचीन मर्यादानुसार हर विद्यार्थी को विद्या आरम्भ करने से पहले तीन सार्वजनीन महाशत्रुओं में से एक न एक शत्रु निवारणार्थ शपथ लेनी होती थी। वे सार्वभौम शत्रु संख्या से तीन हैं (१) अभाव, (२) अन्याय), (३) अज्ञान। इनके निवारणार्थ जो व्रत लिया जाता था उसे ही उपनयन संस्कार कहा जाता था। इसीलिए प्राचीनकाल में विद्यार्थी को व्रती या वर्णी कहते थे। वर्णी इसलिये कि वह इन तीनों में से एक शत्रु के नाश के लिए व्रत करता था। अभाव दुःख से लड़ने का व्रती वैश्य, अन्याय दुःख से लड़ने का व्रती क्षत्रिय, अविद्या दुःख से लड़ने का व्रती ब्राह्मण कहलाता था। जो अयोग्यता के कारण इन तीनों में से कुछ न बन सके, वह किसी व्रती के पास रहकर शुश्रषा द्वारा व्रत पालन का लाभ लेता था, वह शूद्र कहलाता था। वह चुनाव करता था कि दुष्ट की सेवा नहीं करूंगा। किसी न किसी लोक सेवक को ही सेवा करूंगा, वह उसका चुनाव था। इसलिए वह भी वर्णी कहलाता था।

आज की शिक्षा में व्रत का कोई स्थान नहीं, न कोई व्रत की महिमा की ओर ध्यान देता है। यदि कोई सबल निर्बल पर अन्याय करता हो तो व्रती व्यक्ति अन्याय शत्रु के निवारणार्थ मर मिटेगा किन्तु व्रतहीन कहेगा मुझे क्या गरज पड़ी है जो मैं इसकी मुसीबत में भाग लू। बस इस पराई मुसीबत में अपने आपको मिटा देने की दीक्षा ने प्राचीन काल में मानव जाति को इतना ऊंचा उठाया था।

ब्राह्मण कहता था कि यदि नगर व ग्राम में एक भी विद्याहीन है तो मुझे धिक्कार है। क्षत्रिय कहता था कि यदि नगर व ग्राम में एक दुर्बल पर भी बलवान् अत्याचार करता है तो मुझे धिक्कार है, मेरे जीने से क्या लाभ। वैश्य कहता था कि यदि मेरे नगर व ग्राम कोई भोजन बिना भूखा मारता है तो मुझे धिक्कार है।

बस हमारी संस्कृति का मूल तत्त्व है—शपथ व्रत, दीक्षा जिसका परिणाम था अधिकतम मात्रा मे स्वेच्छापूर्वक श्रम और दण्ड का न्यूनतम प्रयोग।

रूस की संस्कृति में अधिकतम दण्ड का प्रयोग है।

पूंजीवादी संसार में पूंजीपति को यथासम्भव अत्याचार की छूट है। लखपति का बेटा कैसा ही दुराचारी हो, उसकी सम्पत्ति उसे मिल कर ही रहेगी।

इस अधिकतम स्वेच्छापूर्वक श्रम की भावना जागृत करने का उपाय है शिक्षा से पहले की दीक्षा।

चण्डीगढ़ में ध्यान योग व वेदप्रचार

रिसालसिंह आर्य उपप्रधान केन्द्रीय सभा

चण्डीगढ़ सेक्टर १६ ... में ब्रह्मचारी श्री आर्य नरेश जी वैदिक प्रवक्ता की अध्यक्षता में ९ जून तक योग शिविर तथा वेद चतुष्टय सम्पन्न हुआ। यह शिविर श्रीमती सावित्री देवी जी प्रधाना तथा आर्य समाज के अन्य अधिकारियों के सहयोग से सम्पन्न हुआ। इसके साथ २ ब्रह्मचारी जी के प्रवचन द० ए० वै० स्थापना दिवस सैक्टर ७, ८ तथा २२ के आर्यसमाज में भी हुआ। इस अवसर पर अनेकों युवकों, युवतियों तथा आर्य लोगों ने दैनिक यज्ञ, सध्या, व्यायाम करने तथा चाय, अण्डा; मांस आदि छोड़ने का व्रत लिया

हरयाणा सभा को सहयोग दें

हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा जो विशेष आमन्त्रित सदस्य अन्तरंग सभा में शामिल किये गये। यह सभा प्रधान का एक अच्छा कदम है जो कि सभा अधिकारियों ने समझौता की दिशा में संगठन को बढाने के लिए पहल की है।

मेरा सभी उन माननीय सदस्यों से निवेदन है कि अपने अपने मतभेद भुलाकर वर्तमान सभा के पदाधिकारियों को पूर्ण सहयोग देकर आर्यसमाज के संगठन को मजबूत बनायें। आज आवश्यकता संगठित होने की है। जब हम स्वयं दुर्बलताओं के शिकार हैं तो समाज को स्वच्छ वातावरण कैसे दे सकते हैं ? अच्छा कार्य स्वयं करो इस कहावत को चरितार्थ करो, यही निवेदन है। वेदमित्र हापुड़ वाला

विद्यानन्द जी प्रधानमन्त्री द्वारा सम्मानित

आर्य विद्वत् परिषद् के संयोजक श्री स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को उनकी 'तत्वमसि' पुस्तक पर उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी की ओर से प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी द्वारा ५ हजार रुपए का विशेष पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। यह समारोह ७ मई को तीनमूर्ति भवन में उत्तरप्रदेश के राज्यपाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्यमन्त्री नारायणदत्त तिवारी ने सभी विद्वानों का माल्यार्पण द्वारा सम्मान किया। पूज्यवर स्वामी जी को सरकार द्वारा सम्मानित तथा पुरस्कृत किया जाना आर्यसमाज तथा वेद प्रेमियों के लिए गर्व की बात है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दिल्ली की आर्यसमाजों आर्य शिक्षण संस्थाओं की ओर से हम उन्हें हार्दिक बधाई देते हैं तथा दीर्घायु की प्रभु से कामना करते हैं।

सम्पादकीय

नशा व शराबखोरी पूरी दुनिया की समस्या

प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

(गतांक से आगे)

अमीर देशों में जहां दूध, मक्खन तथा अन्य पौष्टिक आहारों की बहुतायत है और जहां होटलों में डबल रोटी और मक्खन तो पानी की तरह बिना पैसे के मिलते हैं, जहां शराब और दूसरे नशों के द्वारा पौष्टिक भोजन मिलने के कारण कम हानि होती है, वहां लोगों में सब प्रकार के नशों का निषेध करने के लिए जागरूकता बढ़ रही है। उन देशों में शराब तथा मांस छोड़ने के लिए सफल आन्दोलन चल रहे हैं, परन्तु गरीब देशों में प्रगति और प्रवृत्ति सुधार की बजाये बिगाड़ की ओर अधिक है। भयंकर गरीबी और उस पर नशेबाजी, कोढ़ में खाज का काम कर रही है।

धरती की ४ अरब ८० करोड़ कुल जनसंख्या में से २ अरब से अधिक आबादी, भूखी, नंगी, अनपढ़ और बीमार है। उन्हें दो समय पूरा भोजन भी नहीं मिलता, पौष्टिक भोजन का तो सवाल ही नहीं करीब डेढ़ करोड़ बच्चे वर्ष भर में और ४० हजार रोजाना भूख और उसके कारण हुई बिमारियों से मर जाते हैं। जब हम २१ वीं सदी में पदार्पण करेंगे तब धरती पर कुल जनसंख्या ६ अरब से अधिक होगी, जिनमें से ३ अरब से ज्यादा भूखे नंगे होंगे और ६० हजार बच्चे प्रतिदिन भूख के कारण मरने लगेंगे।

भूख और कुपोषण का शिकार होते हैं—दूधमुंहे बच्चे, बढ़ते हुए बच्चे गर्भवती और दूध पिलाने वाली महिलाएं। जो गरीब किसान और मजदूर शराब पीते हैं या दूसरे नशे करते हैं, उनका नजला भी इन्हीं बच्चों और महिलाओं पर ही पड़ता है। भूख के कारण केवल भारत में ही हर साल ६० लाख बच्चे मर जाते हैं और कुपोषण के शिकार हैं। ३ करोड़ ७० लाख बालकपन में ही पैदा हुए बच्चों के मर जाने से संसार में सबसे अव्वल है। यहां १००० बच्चों में से १२७ दूधमुंहे बच्चे मर जाते हैं। उत्तरप्रदेश भारत में इस मामले में सबसे आगे है, वहां १००० में से १६८ बालक मर जाते हैं। स्वीडन में सबसे कम दूधमुंहे बच्चे मरते हैं, १००० में से ७ से भी कम। १९८३ में भारत में २ करोड़ ३० लाख बच्चे पैदा हुए। उनमें ३० लाख तो एक वर्ष के भीतर ही मर गये। १० लाख थोड़ा बड़े होने पर। ६० लाख बच्चे शरीर से और दिमाग से कमजोर और अपंग जैसे हैं। ७० लाख के शरीर और दिमाग की कमजोरी कम है लेकिन वे पूरी तरह स्वस्थ नहीं हैं और दिमाग से भी कमजोर ही हैं।

केवल ३० लाख बच्चे ऐसे हैं जो शरीर और दिमाग से ठीक ठाक हैं। इनमें से भी बड़ी संख्या खाते पीते परिवारों के बच्चों की है। खुराक की कमी के कारण भारत में ४२ हजार बच्चे हर साल अन्धे हो जाते हैं, और ७८ हजार को बहुत कम दिखाई देने लगता है। गरीब किसान और मजदूरों की ३० फीसदी महिलाओं के शरीर में खून की कमी है। भारत में २५ करोड़ से अधिक लोगों को पेट भरने के लिए पूरा दो समय का भोजन नहीं मिलता। बुरी आदतों में फसने के कारण और कमरतोड़ मंहगाई तथा शोषण के कारण गरीब गरीबी में धसता जा रहा है और गरीब अमीर की खाई चौड़ी होती जा रही है। देहात में बसने वाले गरीब देशों के ७५ फीसदी लोगों को साफ सुथरा और इन्सान के पीने लायक पानी भी नहीं मिलता। ऐसा नरक का जीवन जीने पर भी गरीब, शराब और नशों में अपनी खून पसीने की कमाई लुटाने से बाज नहीं आता, उसे अपनी पत्नी और बच्चों तथा दूधमुंहे बच्चों पर तरस नहीं आता।

गरीब देशों और उनमें बसने वाले अरबों गरीब लोगों की गरीबी कुपोषण, बीमारी, निरक्षरता आदि दूर करने के लिए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रम तो बनाये और चलाये जाते हैं, परन्तु उनकी बात रिपोर्टों, समाचार पत्रों आदि में पढ़ने को अधिक मिलती है, जमीन पर नहीं मिलती बुरी रस्म-रिवाज, शराब और नशों आदि से गरीब जनता को छुटकारा दिलवाने के लिए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कोई कार्यक्रम नहीं बनता। संस्कृतियों के विकास और सुरक्षा के नाम पर गलत रस्म-रिवाजों को पोषण दिया जाता है और नशीली चीजों का खुला प्रचार, विस्तार उत्पादन सरकारों द्वारा सब जगह बढ़ता जा रहा है। पिछड़ेपन और अन्धविश्वास का भरपूर लाभ उठाकर तथाकथित उन्नत प्रबुद्ध और जागरूक लोग तथा राष्ट्र गरीब लोगों और राष्ट्रों का शोषण करने में संलग्न हैं। गरीब देशों में भी इसी श्रेणी के चन्द लोग जन-साधारण का शोषण करने में लगे हैं।

विज्ञान के इस युग में अन्धविश्वासों और सामाजिक रूढ़ियों से जनसाधारण को छुट्टी मिलनी चाहिए थी और सभी मानवीय समस्याओं के बारे में प्रगतिशील चिन्तन होना चाहिये था। पूंजीवादी और साम्राज्यवादी शक्तियों का तो यह बाकायदा षड्यन्त्र है कि सभी मजहबों का बोसीदा कर्मकाण्ड, अन्धविश्वास, पाखण्ड और जंगलीपन कम न होने पाये, ताकि आगे बढ़े हुए और पिछड़े देशों के जीवनस्तर का अन्तर बना रहे और वे सदा के लिए पिछड़े देशों को व्यर्थ के विवादों में फंसाकर उनकी प्रगति का मार्ग अवरुद्ध कर दें और उनका शोषण करते रहें, अपने हथियार और अपने कारखानों का माल मनमानी कीमत पर बेचते रहें, और पिछड़े राष्ट्रों का कच्चा माल भी अपनी मनमानी कीमत पर खरीदते रहें। मजहबी जनून और विवादों को फैलाकर एक तरफ उनका शोषण करते रहें और दूसरी तरफ साम्यवाद के प्रभाव से उनको बचाये रखें और सामाजिक तथा आर्थिक क्रान्ति के अभाव में पूंजीवाद और साम्राज्यवाद पनपता रहे। अपने देशों में मानवीय अधिकारों और प्रजातन्त्र की बात करने वाले पूंजीवादी तथा साम्राज्यवादी राष्ट्र दूसरे सभी देशों में तानाशाही की डट कर हिमायत करते हैं। जहां मानवीय अधिकारों की रक्षा होती है और प्रजातन्त्र है तथा साधारण नागरिकों का जीवन स्तर ऊंचा करने की चेष्टा है, उनका ये राष्ट्र डटकर विरोध करते हैं। भारत में खालिस्तान का जनूनी नारा भारत जैसे प्रजातन्त्रवादी देश को कमजोर करने के लिए इन्हीं पूंजीवादी और साम्राज्यवादी शक्तियों अंग्रेजों और अमरीका का उठाया हुआ है।

अफसोस की बात यह है कि साम्यवादी और समाजवादी राष्ट्र भी प्रगतिशील मुक्त चिन्तन को अपनी व्यवस्था के लिए खतरा समझते हैं। वे भी मार्क्सवाद को एक रूढ़िवादी मजहब का रूप देते नजर आ रहे हैं। मजहब (सम्प्रदाय) और धर्म को अलग अलग न मानकर, एक ही समझने का प्रचार पूंजीवादी तो धर्म का वास्तविक स्वरूप लोगों से ओझल रहे इस भावना से कर रहा है और साम्यवादी मजहब के नाम पर शोषण और लूट की प्रतिक्रिया में बहकर बिना सोचे समझे धर्म को मजहब से अलग न करके उसे भी समाप्त करना चाहता है। नहाने के गन्दे पानी के साथ बच्चे को भी फेंक रहा है। धर्म तो प्रेम, दया, करुणा से अलग और कुछ नहीं है। अपना सुख छोड़कर दूसरे का दुःख कम करना ही धर्म है। जिन धार्मिक लोगों ने दीन दुखियों, शोषित लोगों की सेवा की, उन्हें जगाया। ऐसे महापुरुषों का पाखण्डियों, शोषकों और लुटेरों के साथ जोड़ना, बहुत बड़ा अन्याय है। ऐसे महापुरुष समय समय पर अनेक देशों में होते रहे हैं। उनकी जीवन शैली को अपनाकर ही समाजवाद की स्थापना तथा समाज में सुख का फैलाव सम्भव है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

श्री नवाबसिंह जी सभा गणक के प्रति शोक संवेदना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के गणक श्री नवाबसिंह जी का २३ जून को स्वर्गवास होने की सूचना पानीपत से फोन द्वारा २४ जून को दोपहर बाद १ बजे सभा कार्यालय में मिलने पर उपस्थित जन स्तब्ध रह गये। मैं सभा के कार्यालयाध्यक्ष श्री केदारसिंह आर्य के साथ श्री नवाबसिंह के ग्राम में जाने के लिए नई दिल्ली में सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी के निवास स्थान पर गये। उन्हें भी इस दुःखद समाचार को जानकर गहरा आघात पहुंचा। वे अस्वस्थ होते हुए भी हमारे साथ उनके ग्राम में जाना चाहते थे, परन्तु अत्याधिक गर्मी होने के कारण मैंने उन्हें विश्राम करने का अनुरोध किया। अतः मैं श्री केदारसिंह जी के साथ २५ जून को उनके ग्राम किशनपुर बराल पहुंचा तथा उनके दुःखी परिवार तथा रिश्तेदारों के प्रति सभा की ओर से शोक संवेदना प्रकट करते हुए उनकी धर्मपत्नी तथा छोटे छोटे बच्चों को सभा की ओर से यथासम्भव अधिक से अधिक सहायता देने का आश्वासन दिया।

१ जुलाई को उनके ग्राम में विशेष शान्ति यज्ञ तथा शोक सभा का आयोजन किया गया है। सभा कार्यालय में भी उनके प्रति शोक संवेदना प्रकट करने हेतु अनेक महानुभावों ने पत्रों तथा टेलिफोन पर दुःख प्रकट किया है।

सत्यवीर शास्त्री
सभा मन्त्री

सभा के लिए गणक की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए एक अनुभवी तथा कुशल गणक (अकाऊंटेन्ट) की तुरन्त आवश्यकता है।

इच्छुक महानुभाव अपनी योग्यता तथा अनुभव आदि के प्रमाण पत्रों सहित अपना आवेदन पत्र भेजने का कष्ट करें।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक

लुधियाना में विशाल वैदिक सत्संग संपन्न

बच्चो के चरित्र निर्माण धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा के लिए प्रेम माडल हाई स्कूल लुधियाना में आर्य युवक सभा की ओर से १५ जून को एक वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। सत्संग का प्रारंभ यज्ञ से हुआ जो कि प्रसिद्ध विद्वान् पं० रामकुमार जी आर्य ने सम्पन्न कराया। श्री प्रेम जी वर्मा सपरिवार यजमान बने। इस अवसर पर श्री रोशनलाल शर्मा, संयोजक आर्य युवक सभा पंजाब के नेतृत्व में वेदप्रचार भजनमण्डली ने प्रभु भक्ति, मानवता तथा देश प्रेम के गीतों एवं भजनों पर आधारित विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किया। श्री कैलाश शर्मा प्रधान मन्दिर कमेटी पंजाब ने सभा की ओर से श्री प्रेम जी वर्मा को वैदिक साहित्य भेंट किया। शर्मा जी ने नवयुवकों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आर्य युवक सभा के वैदिक धर्म की जो ज्योति जलाई है, इससे जनता को एक नया रास्ता मिलेगा। श्री प्रेम जी वर्मा ने सभी महानुभावों का धन्यवाद करते हुए कहा कि उनका स्कूल बच्चों की प्रत्येक प्रकार की उन्नति के लिए अर्थात् शारीरिक, मानसिक; आत्मिक उन्नति के लिये कटिबद्ध है। बच्चों की आध्यात्मिक उन्नति के लिए भविष्य में भी इस प्रकार के आयोजन किये जायेंगे। इस सत्संग में बच्चों के अभिभावकों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। आर्य युवक सभा द्वारा सड़क पर तथा गली में ओ३म् के झण्डे लगाये गये, प्रबन्ध अति उत्तम था।

अरुण भारद्वाज
महामन्त्री आर्य युवक सभा लुधियाना
७५१ सिविल हस्पताल रोड लुधियाना

आर्यों की वेष भूषा एवं रहन-सहन के साथ सदाचार भी आवश्यक

वैदिक काल में आर्यों का रहन सहन अत्यन्त सादा और सात्विक था। सादा रहन सहन एवं उच्च विचार यह आर्यों का आदर्श रहा था। अपने घर में मनुष्य चाहे जैसा खाता हो पर उसका प्रत्यक्ष अनुभव समाज को नहीं होता। आर्यों ने अपनी सभ्यता में फैशन तड़क-भड़क दिखावा और बनावट को स्थान नहीं दिया। महात्मा गौतम बुद्ध के समय तक आर्य सिला हुआ वस्त्र नहीं पहनते थे। विवाह के समय वर-वधू को (सिलाई कार्य जानते हुए भी) धोती एवं चादर देने का विधान था। सिला हुआ वस्त्र देने का नहीं। इन वस्त्रों की आवश्यकता केवलमात्र वर्षा और गर्मी सर्दी से रक्षा तथा लज्जानिवारण, लज्जा-निवारण की बात सर्दी गर्मी से बचने की अपेक्षा अधिक आवश्यक है। वेद में लिखा है 'मा ते कशप्लकौ दृशन्' अर्थात् तेरे गुप्ताङ्ग न दिखने पावें। परन्तु यह कार्य बहुत ही थोड़े और बहुत सादे कपड़ों से हो सकता है। इसलिए आर्य सभ्यता उतने ही और उसी प्रकार के वस्त्रों की आज्ञा देती है जिनसे काम काज करने में सुविधा हो।

पहनावे के उपरान्त अब देखिये आर्य सभ्यता में केशों का भी बड़ा महत्व है। बालों में विद्युत ग्रहण करने की अद्भुत शक्ति है। इस शक्ति के सहारे केशों के द्वारा द्यौ-तत्त्व मनुष्य में ज्ञान तन्तुओं को बल पहुंचाता है। इससे ज्ञात होता है कि ज्ञान और सूर्य का केशों के साथ अपूर्व सम्बन्ध है। [illegible] पुरुषों के सिर के केशों और दाढी, मूछों की भी प्रशंसा की गई। स्त्रियों के काले और लम्बे बाल उनकी शोभा के द्योतक हैं। लेकिन देश काल, अवस्था और शारीरिक समर्थता-असमर्थता के अनुसार केश न रखने का विधान है। इसलिये कहा गया है कि 'जटिलो मुंडितो वा' अर्थात् चाहे समस्त केश रखे चाहे मुंडवादे। कहने का तात्पर्य है कि जो समर्थ हैं वे रखें और जो असमर्थ हैं वे निकलवा दें। लेकिन चोटी (शिखा-सूत्र) आर्यत्व के चिन्ह हैं। शिखा सूत्र के साथ साथ यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण करने का विधान है। संन्यास आश्रम शिखा सूत्र और जनेवी की आवश्यकता नहीं रह जाती। इसलिये संन्यासी न शिखा रखते और यज्ञोपवीत धारण करते हैं।

आर्य स्त्रियों में यद्यपि आभूषण धारण करने की प्रथा थी, और है तथापि सच्चरित्र, उत्तम स्वभाव और वाणी उनके सच्चे आभूषण समझे जाते थे। केवल अंगूठी आदि। एक दो आभूषण ही पुरुषों के आभूषण थे. परन्तु आभूषणों को धारण करना न करना स्वेच्छा पर निर्भर था और आज भी है। आज के आर्यसमाजी जो कि केवलमात्र पोशाक पर ही अधिक जोर देते हैं न की आचरण पर। जिस मनुष्य की चरित्र रूपी चादर में अगर धब्बा लग जाये तो उसे कभी भी नहीं साफ करवाया जा सकता। अतः वेश भूषा रहन-सहन के साथ साथ उच्च चरित्रवान् होना अति आवश्यक है। महर्षि दयानन्द जी इस प्रकार सर्वगुणों से परिपूर्ण थे और उन्होंने विधर्मियों से डटकर मुकाबला किया था। उन महापुरुषों को याद करो और उनके पद-चिन्हों की ओर अग्रसर हो।

हरिश्चन्द्र शास्त्री
चरखी-दादरी

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित शराबबन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए जिन ग्रामों में शराब के ठेके खुले हुए हैं, उन ग्राम पंचायतों के सरपंचों तथा पंचों को प्रेरणा करके प्रस्ताव पास करवाने का यत्न करें कि शराब का ठेका बन्द किया जाये। प्रस्ताव का प्रारूप निम्न प्रकार प्रकाशित किया जा रहा है।

सेवा में,

माननीय उपायुक्त महोदय

आबकारी एवं कराधान विभाग हरयाणा, चण्डीगढ

निवेदन है कि हमारे ग्राम............जिला............पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक.........में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है—

यह पंचायत शराब पीने की बढती हुई प्रवृत्ति को ग्राम्य जीवन के लिये बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गांव में अनाचार, अशान्ति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की नशाबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द कर दी जाए और भविष्य में कदापि भी यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाए ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे। सधन्यवाद!

ता० .... विनीत

हस्ताक्षर ग्राम पंचायत के सदस्य

प्रतिलिपि सेवा में—

१- प्रधानमन्त्री, भारत सरकार नई दिल्ली।

२- मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

नोट—जिन पंचायतों के प्रस्ताव ३० सितम्बर ८५ तक सरकार के पास पहुँच जावेंगे, पंचायत एक्ट के अनुसार उन ग्रामों में शराब के ठेके नीलाम नहीं हो सकते।

अतः आर्यसमाजें अपने निकट के ग्रामों में जहां शराब के ठेके खुले हैं, वहां की पंचायतों से प्रस्ताव पास करवाकर ३० सितम्बर तक भिजवाने का यत्न करें।

प्रो० शेरसिंह
सभा प्रधान

शिक्षा मन्त्री श्री जगदीश नहरा द्वारा गुरुकुल झज्जर में छात्रावास का शिलान्यास

दिनांक २३-६-८५ को गुरुकुल झज्जर में एक महान् समारोह का आयोजन किया गया। १३-६-८५ से २३-६-८५ तक आर्य वीर दल का प्रशिक्षण शिविर चल रहा था तथा २३ तारीख को दीक्षान्त समारोह था। इसके अध्यक्षीय भाषण के लिए आर्य नेताओं ने आर्यसमाज में लब्ध-प्रतिष्ठित तथा भू० पू० आर्यसमाज सिरसा के प्रधान तथा शिक्षा मन्त्री श्री जगदीश जी नेहरा को आमन्त्रित किया गया था। उन्होंने आर्य वीरों के करतब और उनकी बहुत प्रशंसा करते हुए उनको तथा आर्यसमाज को अपना पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

दीक्षान्त समारोह के पश्चात् आदरणीय शिक्षा मन्त्री श्री जगदीश ने गुरुकुल झज्जर के छात्रावास का शिलान्यास। ११००० रु० देने की घोषणा की। गुरुकुल झज्जर के सभी अधिकारियों और सदस्यों ने उनका हार्दिक धन्यवाद करते हुए विदाई दी।

आर्यवीर दल प्रशिक्षण व्यायामशाला का शिलान्यास

गुरुकुल झज्जर में १३-६-८५ से चल रहे आर्यवीर दल के दीक्षान्त समारोह में भाग लेने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान लाला रामगोपाल जी शालवाले व उसके मन्त्री श्री ओमप्रकाश जी त्यागी ने आर्यवीरों के व्यायाम, लाठी चलाना शस्त्र-अस्त्र चलाने के प्रशिक्षण को बड़े ही रुचिपूर्वक ढंग से देखा तथा उसे देखकर वे अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने यह फैसला किया कि आर्य वीर दल का मुख्य केन्द्र गुरुकुल झज्जर में ही होना चाहिये। इसी कार्य की पूर्ति हेतु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री ला० रामगोपाल जी शालवाले तथा इसके मन्त्री व आर्य वीर दल के संस्थापक श्री ओमप्रकाश जी त्यागी एवं बालदिवाकर हंस इत्यादि नेताओं ने यह फैसला किया कि आर्य वीरों के नियमपूर्वक प्रशिक्षणार्थ व्यायाम शाला का होना अनिवार्य है। अत्यन्त विचार विमर्श के पश्चात् इन विद्वानों ने फैसला किया कि आर्यवीर दल प्रशिक्षण व्यायामशाला की स्थापना यहां गुरुकुल झज्जर में ही की जाए तथा इसके शीघ्र निर्माण की कामना करते हुए लाला रामगोपाल जी एवं श्री ओमप्रकाश जी ने इस व्यायामशाला का शिलान्यास किया।

आर्यसमाज से बुराइयों को दूर करने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण निर्णय

दिनांक २३-६-८५ को आर्यवीर दल का दीक्षान्त समारोह गुरुकुल झज्जर में बड़े उत्साह के साथ मनाया गया जिसमें सम्पूर्ण भारतवर्ष के गणमान्य आर्य विद्वानों ने भाग लिया, मुख्य इस प्रकार हैं—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान ला० रामगोपाल जी शालवाले, आर्यवीर दल के संस्थापक एवं प्रधान श्री ओमप्रकाश त्यागी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह, परोपकारिणी सभा अजमेर (राजस्थान) के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती इत्यादि आर्य नेता भाग ले रहे थे। इनके अतिरिक्त गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारी अधिकारी तथा हजारों की संख्या में लोग उपस्थित थे। इस सभा में समाज से बुराइयों को दूर करने के लिए निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत किये गये–

१—हरयाणा प्रान्त से शराब के ठेके बन्द होने चाहिएं तथा इस विषय में हरयाणा सरकार को गांव के सरपंचों की ओर से प्रस्ताव भेजे जायेंगे।

२—शादियों में सर्वखाप पंचायत के हुए फैसलों को पूर्ण रूप से लागू किया जाना चाहिये तथा फिजूल खर्ची को रोका जाना चाहिए।

३—स्वांग, सिनेमा इत्यादि हमारे नवयुवकों के चरित्र को भ्रष्ट कर रहे हैं। ये भी बन्द होने चाहिएं।

४—दहेज की प्रथा हमारे समाज को पंगु बना रही है। अतः दहेज प्रथा भी बन्द की जानी चाहिए।

५—सैनिक तथा भू० पू० सैनिकों को सरकार सस्ते मूल्यों पर शराब का विक्रय करती है जिससे वे शराब अधिक खरीदते हैं और उस को समाज में लाकर दुरुपयोग करते हैं। इन सैनिकों को सस्ते दामों पर शराब बेचना बन्द होना चाहिए, जिससे यह बुराई दूर होने में सहायता मिलेगी।

६—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह को आश्वासन दिया कि यदि सरकार ने शराब बन्द नहीं की तो इसकी बन्दी के लिए यदि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने आन्दोलन चलाना चाहा तो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली पूर्ण सहयोग एवं समर्थन देगी और इसके साथ कदम से कदम मिलाकर चलेगी।

डा० यज्ञवीर दहिया

वेदप्रचार कार्य की उन्नति के सुझाव भेजें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक अधिवेशन १९ मई को सम्पन्न हुआ है। अधिवेशन की कार्य सूची में वेदप्रचार कार्य को किस प्रकार उन्नत किया जाये, विचारणीय विषय था, परन्तु उन दिनों रोहतक में धारा १४४ लागू होने के कारण अधिक देर तक अधिवेशन की कार्यवाही न चलने के कारण इस विषय पर विचार नहीं हो सका।

अत ११ जून की अन्तरंग सभा के निश्चयानुसार आर्यसमाजों के अधिकारियों तथा सभा के प्रतिनिधियों से निवेदन है कि वेदप्रचार कार्य को उन्नत कैसे किया जाये, इस विषय पर अपने सुझाव संक्षिप्त रूप में साफ साफ शब्दों में लिखकर शीघ्र भेजने का कष्ट करें, ताकि सभा की आगामी अन्तरंग सभा की बैठक में उन पर विचार हो सके।

वेदप्रचार सप्ताह के आयोजन का अनुरोध

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन है कि गत वर्षों की भांति जुलाई से सितम्बर मास में अपनी सुविधानुसार अपने आर्यसमाज में वेदप्रचार सप्ताह अथवा वार्षिक वेदप्रचार का आयोजन करके सभा को सूचित करें।

वेदप्रचार कार्य में शिथिलता आने से ही अवैदिक मतों का प्रचार तथा शराब आदि दुर्व्यसनों का प्रसार होने लगता है। अतः आप अपने यहां वेदप्रचार सप्ताह की तिथियां निश्चित करके यथाशीघ्र सभा को सूचित करें ताकि सभा की ओर से समुचित प्रबन्ध हो सके। इस समय सभा के वेदप्रचार विभाग में निम्नलिखित उपदेशक तथा भजनोपदेशक कार्य कर रहे हैं—

१—पं० चन्द्रसेन वैदिक मिश्नरी उपदेशक
२—पं० सुरेशकुमार शास्त्री विद्यावाचस्पति एम० ए० उपदेशक
३—ब्रह्मचारी महेन्द्रसिंह शास्त्री विद्यावाचस्पति उपदेशक
४—ब्रह्मचारी श्रुतबन्धु शास्त्री विद्यावाचस्पति बी० ए० उपदेशक
५—पं० विद्याभूषण जी आर्य भजनोपदेशक
६—पं० शेरसिंह जी आर्य ,,
७—श्री मुन्शीलाल जी आर्य ,,
८—पं० चिरन्जीलाल जी आर्य भजनमण्डली
९—पं० ईश्वरसिंह जी तूफान आर्य भजनमण्डली
१०—पं० तेजपाल आर्य ,, ,,
११—पं० सुमेरसिंह आर्य ,, ,,
१२—पं० हरिश्चन्द्र आर्य ,, ,,

आशा है आप अपने निश्चय से वापसी डाक सूचित करेंगे। प्रायः आर्यसमाजें शिकायत करते हैं कि वर्ष भर में उनके यहां प्रचार व्यवस्था नहीं की गई। अतः वेदप्रचार की मांग करके अपनी तिथियां सभा को पत्र लिखकर सुरक्षित करवा लेवें।

सत्यवीर शास्त्री
सभा मन्त्री

(पृष्ठ ३ का शेष)

"कामये दुःख तप्तानाम् प्राणीनाम आर्तिनाशनम्" ही वास्तव में धर्म है और इस धर्म के द्वारा सुखी समाज बन सकता है। इससे अलग हटकर समाजवाद की कल्पना की जा सकती है क्या?

गरीबी कैसे मिटे?

गरीबी मिटाने के लिए सर्वसाधारण की आमदनी और उत्पादकता बढ़ना बहुत जरूरी है, परन्तु केवल ऐसा करना ही काफी नहीं है। आमदनी यदि बढ़ भी जाये, परन्तु यदि वह दुर्व्यसनों (बुरी आदतों) की बुरी नजर चढ़ा दी जाये तो गरीबी कैसे मिटेगी, और शोषण कैसे रुकेगा? यदि उस आमदनी से काम करने वाले को और उसके परिवार को अच्छा भोजन और रहन-सहन मिलता है, बच्चे की शिक्षा और परिवार की चिकित्सा का प्रबन्ध होता है, तो परिवार प्रगति के पथ पर आगे बढ़ेगा, प्रत्येक सदस्य की उत्पादकता बढ़ेगी और शोषण से मुक्ति पाने की इच्छा, समय और क्षमता बढ़ेगी। करोड़ों गरीबों में से कुछ लोगों को एक दो सौ रुपये की इमदाद (सहायता) देने से गरीबी कैसे मिटेगी, जब सरकार शराब के कारखाने और दुकानें खोलकर गरीबों की गाढ़े पसीने की कमाई हड़प लेती है। तथाकथित धर्म के ठेकेदारों की रोजी रोटी भी तभी तक चलता है, जब तक लोग होश में नहीं आते, दुर्व्यसनों और रोगों में फंसे रहते हैं और पाखण्डियों को अपना उद्धारक मानकर उनकी जकड़ में रहते हैं अनेक सम्प्रदायों में बटे मानव समाज को वे अपने अपने सम्प्रदायों की जकड़ में रखने के लिए अलगाव, नफरत, ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा और एक दूसरे से लड़ने तथा एक दूसरे को मिटाने का पाठ पढ़ते हैं। आश्चर्य की बात है कि अनेक सम्प्रदायों के प्रवर्त्तकों ने दुर्व्यसनों के विरुद्ध जो जहाद किया और दुःखी मानव की सेवा का अभियान चलाया, उसकी चर्चा में शराब को तो सभी धर्म गुरुओं ने हराम बताया, परन्तु शराबबन्दी और नशाबन्दी के लिए तो किसी सम्प्रदाय के लोगों ने आन्दोलन नहीं चलाया। विज्ञान के इस युग में जब एक और मुक्त चिन्तन की सम्भावना बढ़ रही है, तब सभी सम्प्रदायों को अपना लोप नजर आने लगा है। दुर्व्यसनों में फंसाकर तथा आपस में लड़ाकर ही तो साम्राज्यवादी और पूंजीवादी शक्तियां पिछड़े देशों को अपना दास बनाकर रख सकता है। कट्टरपंथी रूढ़िवादी स्वार्थी साम्प्रदायिक लोग इन्हीं शक्तियों के एजेण्ट हैं। प्रगतिशील तथा तर्कपूर्ण चिन्तन की आंधी जिसे रोकने के लिए ये शक्तियां लगी हैं। यदि चल गई तो न सम्प्रदाय टिक पायेंगे, न साम्राज्यवाद और पूंजीवाद। यह प्रगतिशील शक्तियों के खिलाफ निहित स्वार्थों की अन्तिम लड़ाई है जो अलग अलग नामों से अलग अलग क्षेत्रों और देशों में लड़ी जा रही है। मानव समाज को हर प्रकार के शोषण से मुक्ति दिलाने को चाह जिन संगठनों और शक्तियों में है, उनकी भी परीक्षा का यह समय है। शोषण करने वाली शक्तियां इनको भी बांटने में लगी हैं, और उनकी मदद पर आ गया है इन संगठनों और शक्तियों का रूढ़िवादी चिन्तन और एक दूसरे को समझे बिना एक दूसरे का विरोध। जो प्रेम, दया, करुणा और अपना सुख छोड़कर दुखियों का दुःख मिटाने को वास्तविक धर्म मानते हैं तथा जो लोग साम्प्रदायिक पूंजीवादी और साम्राज्यवादी शक्तियों के शोषण से मानव समाज को मुक्ति दिलाना चाहते हैं, उनको एक मंच पर आकर सब प्रकार के शोषण को समाप्त करने के लिए विश्वव्यापी आन्दोलन और अभियान छेड़ना चाहिए। यही अवसर है प्रतिक्रियावादी और शोषक दानवों से मानव को बचाने का। विज्ञान, विध्वंसात्मक तथा वीभत्स शस्त्र अस्त्रों की रचना करके अपनी विश्वसनीयता खोता जा रहा है और मानव को रूढ़ियों, अन्धविश्वासों तथा शोषण से मुक्ति दिलाने के अपने मार्ग से भटक गया है। वैज्ञानिक भी पूंजीवादी और साम्राज्यवादी शक्तियों के जरखरीद गुलाम बनकर रह गये हैं। विज्ञान का चमत्कार दिखाने वाले स्वयं वैज्ञानिक चिन्तन को तिलांजलि दे रहे हैं। इन बुद्धिमान्, चिन्तनशील, प्रगति के अग्रदूतों को मानव के अस्तित्व को मिटाने के सामान तैयार करने की बजाय मानव को सही मानव बनाने और गरिमापूर्ण प्रेम व सेवा सिंचित जीवन की प्रेरणा देनी चाहिए। दुर्व्यसनों से उपजने वाले खतरों की अधिक गहरी खोज करके उनके दुष्परिणामों को उजागर करना चाहिए। शोषण और दुर्व्यसनों, दोनों से मुक्ति मिलेगी, तभी मानव सुख से रह सकेगा। वास्तविक धर्म के मानने वाले धार्मिकों वैज्ञानिकों तथा यथार्थ में सामाजिक और आर्थिक शोषण को समाप्त करने की इच्छा रखने वालों को मिलकर प्रत्येक व्यक्ति को सुखी और गरिमापूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देनी चाहिए।

(क्रमशः)

नशीली गोलियों से जवानी में ही बुढ़ापा

आज के युवकों और युवतियों में मादक पदार्थों की लत जिस तेजी से बढ़ रही है यदि इसकी ओर ध्यान नहीं दिया गया तो देश में चुस्त युवा पीढ़ी की जगह थके मांदे नर कंकालों की कतारें खड़ी नजर आयेंगी।

जिस तेजी से विज्ञान आगे बढ़ा है उतनी ही तेजी से बढ़ा है— अधिक नशीले एवं खतरनाक पदार्थों का सेवन। ब्राउन शुगर (गरद) नामक द्रव्य की ओर आज की युवतियां युवक उसी तरह खिंच रहे हैं जिस तरह दीपक की लौ की ओर पतंगा।

शहर के युवकों एवं युवतियों में 'गरद' की ओर रुझान किस कदर बढ़ा है, इसका अन्दाज मास्ताकुज में आयोजित वर्कशाप में डा० यूसुफ मर्चेन्ट के इस कथन से लगाया जा सकता है कि गरद के सेवन की लत वालों की संख्या जो कुछ समय पूर्व २००० थी वह बढ़कर ८०,००० पर पहुंच गई है उन्होंने कहा कि यदि यह वृद्धि इसी तरह होती रही तो शहर में गरद सेवन करने वालों की संख्या एक साल बाद न्यूयार्क में मादक पदार्थों के सेवन करने वालों की संख्या २,६०,००० से भी आगे निकल जायेगी।

गरद (ब्राउन शुगर) सफेद रंग की होती है। इसमें हीरोइन, चूहा मारने की दवा, जिंक आक्साइड, फिनोल, धतूरे का बीज, स्टिसमिन, मैंडेक्स, चूना, ग्लूकोज मिला रहता है।

इससे मरदानगी की शक्ति तो मिलती है बाद में वह क्षीण हो जाती है। जवानी में बुढ़ापा आ घेरता है और सेवन करने वाला गल कर कांटा हो जाता है। अंततः इस संसार से मजबूरन उसे शीघ्र ही विदा हो जाना पड़ता है।

एक समाचार के अनुसार बम्बई में इस लत में पड़े पांच लोग प्रतिदिन से शहर खाली छोड़कर ऐसी जगह चले जाते हैं जहां से कभी नहीं लौटते। गरद के फन्दे में मध्यम एवं अच्छे खाते पीते वर्ग के लोगों के अलावा छात्र छात्रायें तथा निम्न वर्ग के कच्चो शामिल हैं।

गरद को भारत के विभिन्न भागों में पहुंचने के लिए बड़ी लम्बी यात्रा करनी पड़ती है। वह अफगानिस्तान से पाकिस्तान होते हुए तस्करों के स्वर्ग कच्छ (गुजरात) पहुंचती है फिर तस्कर सरकार उसे देश के विभिन्न भागों में पहुंचाते हैं, जहां इसे अलग अलग मात्रा में कागज के टुकड़ों में बांधा जाता है। सबसे छोटी इकाई ८० मिलीग्राम २ रु० की होती है मात्रा के हिसाब से दाम बढ़ते जाते हैं।

गरद के चक्कर में पड़े और सौभाग्य से बच निकले एक व्यक्ति ने बताया कि इसके पीने के तरीके इस प्रकार हैं–सिगरेट, चिलम, किशिंग तथा इंजेक्शन।

गरद के सफेद पाउडर को कागज पर रख लेते हैं फिर सिगरेट को ढीला करने के बाद पाउडर को खींचकर अन्दर लेते हैं। चिलम तथा किशिंग की विधि भी कुछ इसी तरह से मिलती जुलती है। हां इंजेक्शन के लिये गरद को नीबू के पानी में घोलकर फिर इंजेक्शन के माध्यम से शरीर में पहुंचाते हैं।

उस व्यक्ति ने बताया कि यह नशा बहुत ही बुरा है। उसके सेवन के बाद स्वर्गीय आनन्द तो मिलता है लेकिन धीरे धीरे क्षीण हो जाता है। जवानी की रवानी खतम हो जाती है और इसे सेवन करने वाला व्यक्ति अतिसार का शिकार हो जाता है। इसकी लत अफीम के नशे की तरह है, जब गरद का नशा समाप्त होता है तो संसार सुना सा लगता है और घबराहट होने लगती है। समाचार पत्रों से संकलित

संकलनकर्ता गिरीश चन्द्र जोशी
मद्यनिषेध व्यवस्थापक, उत्तरकाशी

(पृष्ठ १ का शेष)

मेरा आपसे अनुरोध है कि जब भारत सरकार द्वारा नियुक्त इतिहासविदों, भाषा शास्त्रियों तथा पुरातत्ववेत्ताओं ने एक स्वर से घोषणा कर दी कि आर्य लोग इसी देश के मूल निवासी हैं तो उनके विदेश से आकर यहां बसने वाली मिथ्या कल्पना को दूर करना भारत सरकार का कर्तव्य है। इसके लिए आवश्यक है कि प्राइमरी से लेकर यूनिवर्सिटी स्तर तक की पाठ्य पुस्तकों में एतद् विषयक संशोधन किया जाये।

२–राष्ट्रीय एकता की भावना को सुदृढ करने, शिक्षा के स्तर को ऊंचा करने, अध्यापकों, छात्रों तथा प्रशासकों के निर्बाध रूप से एक राज्य से दूसरे राज्य में आने जाने के लिए आवश्यक है कि–

क–विश्वविद्यालय शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषायें न होकर राष्ट्र भाषा हो।

ख–शिक्षा को संविधान के अन्तर्गत राज्य सूची से निकालकर केन्द्रीय सूची में डाला जाये।

३—समाजवाद की भावना को बल देने और सबको अवसर की समानता प्रदान करने के लिये आवश्यक है कि पब्लिक स्कूल जैसी संस्थाओं पर प्रतिबन्ध लगाया जाये।

४—शिक्षा काल मनुष्य का निर्माण काल है। यह निर्माण नैतिकता की नींव पर होना चाहिये। आवश्यकता को अनुभव करते हुए केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय में तत्कालीन शिक्षा सचिव प्रो० हुमायूं कबीर के हस्ताक्षरों से सभी राज्यों के शिक्षा सचिवों को एक पत्र '(डी० ओ० नं० एफ १८–७५४ डी० आई० दिनांक १-१०-१९५५) द्वारा तमाम स्कूलों व कालिजों में धर्म शिक्षा की व्यवस्था किये जाने के आदेश दिये गये थे। उस पत्र के आरम्भ में कहा गया था—

"There is a svstem of valumes which is widely recognised and resnected. without a common system of velues, no society can glourish and in fact the individuals, contribu'ing it, tend to languish The Sanskrit torm Dharma bringes out this assential characteristic It is to is which binds or holds together the member of a community Steps must, there for be taken to inculcate in the voung a system of values which binds them together as member of one community"

कालान्तर में इसके कार्यान्वयन के लिये बाबू श्री प्रकाश जी की अध्यक्षता में समिति बनाई गई थी। उस समिति ने धर्म शिक्षा के लिए हर कक्षा में सप्ताह में एक दो पीरियड नियत करने और विभिन्न कक्षाओं के लिये उपयुक्त पाठ पुस्तकें तैयार किये जाने की सिफारिश की थी। यह सम्भवत: १९७२ के आस-पास की बात है। १९७१ में मेरे पत्र के उत्तर में भारत सरकार ने लिखा था कि यह योजना विचाराधीन है फिर क्या हुआ मुझे पता नहीं।

मेरा अनुरोध है कि इस योजना पर तत्काल आवश्यक कार्यवाही की जाये। धन्यवाद भवदीय

१४-५-८५ विद्यानन्द सरस्वती
डी १४/१६ माडल टाउन दिल्ली

उपदेशक तथा भजनोपदेशकों की आवश्यकता

विज्ञापन संख्या १।८५

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए निम्नलिखित कर्मचारियों की आवश्यकता है। दिनांक ३० जून १९८५ तक निम्नलिखित हस्ताक्षरी के नाम निर्धारित प्रपत्र पर आवेदन पत्र भेजना आवश्यक है। प्रपत्र सभा का पत्र लिखकर मंगवा लेवें।

१—उपदेशक

शास्त्री, आचार्य, सिद्धान्तशिरोमणि, विद्यालंकार आदि शैक्षणिक योग्यता के साथ भाषण कला तथा वैदिक कर्मकाण्ड में निपुणता, उपदेशक कार्य का दो वर्ष का अनुभव, आयु २५ वर्ष से अधिक।

२—भजनोपदेशक

संगीतकला में मान्यता प्राप्त उपाधि, आर्य सिद्धान्तों के ज्ञान में किसी आर्य संस्था की परीक्षा उत्तीर्ण, आर्य सिद्धान्त तथा वैदिक कर्मकाण्ड का अपेक्षित ज्ञान, भजनोपदेशक रूप में न्यूनतम १ वर्ष का अनुभव, आयु २५ वर्ष से अधिक।

३—आर्यवीर दल शिक्षक

मिडिल/मैट्रिक/विद्यारत्न/प्रभाकर उत्तीर्ण आर्य वीर दल की कार्य पद्धति का उत्तम ज्ञान, आर्य संस्था का आर्य वीर दल शिक्षक के रूप में शिक्षण अनुभव दो वर्ष।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ, रोहतक

आवश्यकता

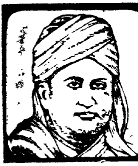
एक सुयोग्य आंग्ल शिक्षक की जो कालिज की छात्राओं को पढ़ा सके। योग्यता बी० ए० बी० एड०, एम० ए० (अंग्रेजी) को प्राथमिकता दी जायगी। आयु ६० वर्ष तक वेतनमान साक्षात्कार होने पर निश्चित किया जायेगा। प्रार्थना पत्र भेजने की अन्तिम तिथि ३ जुलाई १९८५

श्रद्धानन्द कन्या महाविद्यालय फिरोजपुर-झिरका। गुड़गांव
द्वारा—प्रधानाध्यापक श्री दयानन्द उच्च विद्यालय
फिरोजपुर-झिरका

नोट—प्रत्युत्तर प्राप्त होने पर प्रार्थी को साक्षात्कार हेतु स्वयं के व्यय पर आना होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० 23207/73 रजि० न० P/RTK 49 फोन ... सृष्टि सम्वत् १९,७२९४०८६



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १२, अङ्क ३१ १४ जुलाई १९८५ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

शराब कितनी खराब

(गतांक से आगे)

अगर आरम्भ में हो इस रोग का पता चल जाये और रोगी शराब सेवन पूरी तरह से बन्द करके पौष्टिक आहार ले तथा डाक्टर की सलाह के अनुसार चले तो वह तीन महीने के अन्दर ठीक हो सकता है। अगर इस समय ध्यान न दिया जाय तो रोगी की हालत खराब होती जाती है। उसे पीलिया हो जाता है व बुखार रहने लगता है।

ऐसी स्थिति में भी शराब पीना जारी रखने पर सिरोसिस रोग पूरी तरह जिगर को अपनी जकड़ में कस लेता है। जिगर के बहुत बड़े हो जाने के कारण उसमें से होकर जाने वाली रक्त वाहिकाओं पर बुरा प्रभाव पड़ता है, अक्सर यह फट जाती है या मल के साथ खून आने लगता है।

६० प्रतिशत ऐसे मामलों में रोगी पाँच साल से अधिक जीवित नहीं रह पाता है। वह भी उस स्थिति में जबकि वह पूरी तरह से शराब पीना बन्द कर दे। लोगों के मन में यह गलत धारणा बनी हुई है कि पौष्टिक भोजन एक सीमा तक अल्कोहल के कारण जिगर कोशिकाओं को पहुँचने वाली क्षतिपूर्ति में तो सहायता करता है, पर वह इस रोग से रक्षा नहीं कर पाता है।

शराब का उत्पादन

इस वर्ष में जेनेवा में हुये विश्व स्वास्थ्य संगठन के सम्मेलन में भी इस बात पर चिन्ता व्यक्त की गई थी कि विकासशील व गरीब देशों में शराब का उत्पादन उसका सेवन व उसके कारण होने वाली मौतों में गत २० वर्षों में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। कुछ विकासशील देशों में तो बीयर उत्पादन में, तो यह वृद्धि ५०० प्रतिशत तक है। अमीर देशों में भी लोग ऐसी शराब अधिक पी रहे हैं जिसमें अल्कोहल की मात्रा अधिक हो।

सन् १९६० से १९८० तक शराब के उत्पादन व बीयर के उत्पादन में क्रमशः ४० प्रतिशत व १२४ प्रतिशत की संसार में बढ़ोतरी हुई है। इसमें अवैध रूप से तैयार की जाने वाली शराब सम्मिलित नहीं है जो कुल उत्पादन का लगभग ७५ % है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के सर्वेक्षण के अनुसार लेटिन अमरीका में शराब उत्पादन में २००%, अफ्रीका में ४०० % और एशिया में ५०० प्रतिशत वृद्धि हुई है। बहुत कम विकासशील देश अपने यहां होने वाले शराब के उत्पादन व उपभोग के बारे में विश्व स्वास्थ्य संगठन को आंकड़े उपलब्ध करा सकते हैं।

विश्व के सबसे अधिक शराब पीने वाले प्रथम पांच देशों में सबसे पहला स्थान लक्समबर्ग का है। यहाँ सन् १९८० में औसतन प्रति व्यक्ति द्वारा साल में १४ लीटर शराब पी गई, जबकि १९६० में यह मात्रा ८ लीटर थी। दूसरे स्थान पर फ्रांस आता है, हालांकि वहां पिछले कुछ सालों में शराब के सेवन में कमी आई है। स्पेन, इटली व पश्चिमी जर्मनी क्रमशः तीसरे, चौथे व पांचवें नम्बर पर आते हैं।

इस समय शराब के बढ़ते सेवन के कारण संसार में न केवल दुर्घटनायें बढ़ रही हैं, बल्कि तनाव, बिगड़ती आर्थिक स्थिति एवं इसके परिणामस्वरूप उजड़ते परिवारों के कारण लोग बिखर रहे हैं। पोर्टोरिको में ४ % मौतें सिरोसिस रोग के कारण होती हैं। चिली, इटली, पुर्तगाल, फ्रांस व भारत में भी शराब के कारण बहुत लोग मरते हैं। अब ये देश भी उन देशों की सूची में आये गये हैं जहां शराब के कारण सबसे अधिक मौतें होती हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार लेटिन देशों व दक्षिणी अमरीका में बढ़ते शराब के सेवन का कारण यह है कि वहां इसे रोजमर्रा की चीज मान लिया गया है और उनकी संस्कृति व सभ्यता का अंग बन गया है।

बौद्ध धर्म के अतिरिक्त केवल इस्लाम धर्म ऐसा है जिसमें शराब के सेवन पर प्रतिबन्ध लगाया गया है। पर खेद की बात यह है कि इस्लामी देशों में शराब का सेवन तेजी से बढ़ता जा रहा है।

हमारे देश में भी यही हाल है। यहां हर वर्ग शराब का सेवन कर रहा है। जो अमीर हैं वे इसलिए पी रहे हैं, क्योंकि शराब की दावतें देकर वे अपनी खुशियां बांटना चाहते हैं जो गरीब हैं वे अपना गम बांटने के लिये पिये जा रहे हैं और हमारी सरकार दोनों का ही ध्यान रख रही है। उसने शराब बेचने, बनाने के लिए ठेके और कारखाने लगवाये हैं वहीं दूसरी ओर दिखाने के लिए इसके विरोध में प्रचार अभियान छेड़ा हुआ है।

ऐसी हालत में जब तक लोगों के अन्दर स्वयं चेतना नहीं आयेगी तब तक शराब बनती और बिकती रहेगी। लोग मरते रहेंगे और अखबारों को चटपटे समाचार मिलते रहेंगे। इस बारे में सिर्फ इतना ही कहना उचित होगा कि पहले आदमी शराब को पीता है, बाद में शराब आदमी को पीती है।

अनिल त्यागी

(मद्यपान निषेध से साभार)

सभा के लिए गणक की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए एक अनुभवी तथा कुशल गणक (अकाउटेन्ट) की तुरन्त आवश्यकता है। वेतन योग्यता अनुसार इच्छुक महानुभाव अपनी योग्यता तथा अनुभव आदि के प्रमाण पत्रों सहित अपना आवेदन पत्र शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक

वेदप्रचार कार्य की उन्नति के सुझाव भेजें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक अधिवेशन १६ मई को सम्पन्न हुआ है। अधिवेशन की कार्य सूची में वेदप्रचार कार्य को किस प्रकार उन्नत किया जाये, विचारणीय विषय था, परन्तु उन दिनों रोहतक में धारा १४४ लागू होने के कारण अधिक देर तक अधिवेशन की कार्यवाही न चलने के कारण इस विषय पर विचार नहीं हो सका।

अत. ११ जून की अन्तरग सभा के निश्चयानुसार आर्यसमाजों के अधिकारियों तथा सभा के प्रतिनिधियों से निवेदन है कि वेदप्रचार कार्य को उन्नत कैसे किया जाये, इस विषय पर अपने सुझाव संक्षिप्त रूप में साफ साफ शब्दों में लिखकर शीघ्र भेजने का कष्ट करें, ताकि सभा की आगामी अन्तरग सभा की बैठक में उन पर विचार हो सके।

वेदप्रचार सप्ताह के आयोजन का अनुरोध

हरयाणा के आर्यसमाजो से निवेदन है कि गत वर्षों की भांति जुलाई से सितम्बर मास में अपनी सुविधानुसार अपने आर्यसमाज में वेदप्रचार सप्ताह अथवा वार्षिक वेदप्रचार का आयोजन करके सभा को सूचित करें।

वेदप्रचार कार्य में शिथिलता आने से ही अवैदिक मतों का प्रचार तथा शराब आदि दुर्व्यसनों का प्रसार होने लगता है। अतः आप अपने यहां वेदप्रचार सप्ताह की तिथियां निश्चित करके यथाशीघ्र सभा को सूचित करें ताकि सभा की ओर से समुचित प्रबन्ध हो सके। इस समय सभा के वेदप्रचार विभाग में निम्नलिखित उपदेशक तथा भजनोपदेशक कार्य कर रहे हैं—

१—पं० चन्द्रसेन वैदिक मिशनरी उपदेशक
२—पं० सुरेशकुमार शास्त्री विद्यावाचस्पति एम० ए० उपदेशक
३—ब्रह्मचारी महेन्द्रसिंह शास्त्री विद्यावाचस्पति उपदेशक
४—ब्रह्मचारी श्रुतबन्धु शास्त्री विद्यावाचस्पति बी० ए० उपदेशक
५—पं० विद्याभूषण जी आर्य भजनोपदेशक
६—पं० शेरसिंह जी आर्य ,,
७—श्री मुन्शीलाल जी आर्य ,,
८—पं० चिरन्जीलाल जी आर्य भजनमण्डली
९—पं० ईश्वरसिंह जी तूफान आर्य ,,
१०—पं० तेजपाल आर्य ,, ,,
११—पं० सुमेरसिंह आर्य ,, ,,
१२—पं० हरिश्चन्द्र आर्य ,, ,,

आशा है आप अपने निश्चय से वापसी डाक सूचित करेंगे। प्रायः आर्यसमाजें शिकायत करते हैं कि वर्ष भर में उनके यहा प्रचार व्यवस्था नही की गई। अत. वेदप्रचार की माग करके अपनी तिथियां सभा को पत्र लिखकर सुरक्षित करवा लेव।

सत्यवीर शास्त्री
सभा मन्त्री

सीख सके तो सीख

लेखक—दीवान भीमसेन (गुड़गांव)

इतिहास केवल भूत की प्रतिष्ठा नहीं अपितु भविष्य के लिए एक पाठ वर्तमान की एक साक्षी तथा अपने दूर की एक स्मृति है, बुद्धिमान् सदा इतिहास का आश्रय लेते रहे हैं तथा पथप्रदर्शक मानते रहे हैं। श्री एम० जे० अकबर एक विख्यात लेखक की पुस्तक 'इण्डिया सिजेज विद्इन' के वो दृष्टान्त हमारे लिए विचार में लाने योग्य हैं अथवा देश की एकता को बनाए रखना अपने मन तथा स्थिति को गौण स्थान देना वास्तविक राष्ट्र शक्ति है जो हमारे भाई-बन्धु के ध्यान आनी चाहिये।

१९५२ में श्री नेकर ने रामायण को जनता के मध्य जला देने की घोषणा कर दी विधान को अग्नि के सुपर्द करने का भी विचार दे डाला क्योंकि वह तामिल वर्ग की मांग स्वीकार कराने पर तुले हुए थे। डी० एम० के० ने भरसक प्रयत्न इस व्रत को निभाने के लिए बना लिया था। इस वर्ग ने १९५६ में श्री अान्दोराए की अध्यक्षता में आम चुनाव इसी धारा प्रवाह में लड़ने का निश्चय कर लिया था। नाम्बों ने इस प्रयास में पूरा सहयोग का आश्वासन दे दिया। श्री आन्दोराय मेम्बर पार्लियामेंट भी बन गये। इस उथल-पुथल में १९६२ का वर्ष बड़ा क्रान्तिकारी का रहा था। द्राविड़ नाडो को योग्य रूप देने के लिए जून १९६२ में युक्तियुक्त भाषण देते हुए अपने मन्तव्यलक्ष प्राप्ति की सूचना प्रस्तुत करके सरकार से प्रार्थना द्वारा आग्रह करते हुए ललकार भी दिया। उधर १९६२ में चीन द्वारा भारत को लात लगी। दस दिन विवाद चलता रहा, पर किसी भी समय अन्तर्राष्ट्रीय हस्तक्षेप देश की आर्थिक प्रगति में रुकावट तथा घरेलू झगड़े को भण्डा फोड़ की नीति की राह न ली गई।

श्री आन्दोराय वेलोर जेल में थे जब चीनियों के हमले की खबर पत्रों में पढ़ी यद्यपि उस हमले से उत्तरीय भारत प्रभाव में था दक्षिण अछूता था फिर भी २ अक्तूबर को जेल से छूटने पर अपने सारे प्रोग्राम पृथकता से हटा लिए तथा देश की एकता को स्थिर हेतु अपनी तथा अपने समाज की सेवाएं समर्पित कर दी। श्री रामचन्द्रन के अनुसार १९६२ की शोभा यूं प्रदान की गई कि एक बार देश ने सम्मिलित भाव भेंट में सारे मतभेद विलीन करके देश की स्वतन्त्रता पर आंच नहीं आने दी। समय पाकर उनकी मांग फिर चढ़ी, पर समय पर एकता का दृष्टान्त अपने भेद हटा देने की घोषणा उन देशभक्तों के भाग्य में आई। इसी तरह ई० वी० आर० (ई० वी० आर० रामास्वामी नेकर) तमिल वर्ग को पृथक करने वहां के ब्राह्मणों के प्रभाव से मुक्त करने में १९१४ के श्री डा० नैद्रसन मुडलियार ने एक संस्था खड़ी की थी। ई० वी० आर० ने खूब लड़ाई की श्री राजगोपालाचारी की कांग्रेस का विरोध किया। कष्ट सहे, संगठन किया। ट्रावनकोर में अछूतोद्धार का समर्थन किया। ९४ वर्ष की आयु तक अपने लक्ष्य में लगे रहे। यद्यपि वहां का महाराज उनका मित्र था। इसके अतिरिक्त ई० वी० आर० को जेल नसीब नहीं हुई। उसे वैकुम वारियर की उपाधि भी मिली परन्तु देश की एकता में कोई विरोध न लाते हुए अपने मत की पुष्टि में आतंकवाद न आने दिया। इस महान् आत्मा ने बड़ा मान प्राप्त किया। डी० एम० के० की स्थापना में उनका नाम अमर हुआ, पर देश की शान्ति को भंग करने की कभी दिशा प्राप्त नहीं की। इस सारे मतभेद का बड़ा इतिहास है जिसे सुशोभित करने में दक्षिण समाज ने बड़ा योगदान दिया परन्तु भाव-भीनी को सम्मुख रखना शिक्षित तथा सभ्य समाज का रूप देना देशभक्ति का निरालापन दक्षिण भारतीयों के माथे लगा रहेगा। यह दृष्टान्त प्रस्तुत करने में भारत भूमि प्रथममयी रही है। यह बात भुलाई नहीं जा सकती। इतिहास के सराहनीय अपने देश के क्रमशः उत्थान के पथ दृष्टि में ले आए तथा भारत माता की एकता में पूर्ण विश्वास से धन्य-धन्य होने का मान ले सकने की भागीदार बनने का साहस लें तो बड़ी प्रसन्नता का विषय बनाया जा सकता है। देश एक है। इस सारे शरीर की आत्मा एक है। टुकड़े बनाने आत्मा को गलाने का दृश्य भयानक बन जाया करता है।

सम्पादकीय

नशा व शराबखोरी पूरी दुनियां की समस्या

प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

(गतांक से आगे)

मुगल काल में तो हरयाणा न तो प्रलोभनों में फसा और न दुर्व्यसनों मे। अंग्रेजी राज को उखाड़ने में भी 1857 में हरयाणा के लोगों ने लड़ाई लड़ी। बल्लबगढ़ के नाहरसिंह और झज्जर के नवाब तो फांसी पर लटकाये गये। अनेक वीरो ने अपने बलिदान दिये। 20वीं शताब्दी में आकर जो अंग्रेजों की नौकरी मे गये उन मे कमजोरी आई। वैसे फौज मे अनेक जवानो ने अपना खान-पान और चिन्तन नही बदला, झटके भी सहे, और जब दूसरे महायुद्ध के दौरान नेता जी ने फौज खड़ी की उसमें भी हरयाणा के जवानो ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। परन्तु शराब, मांस आदि का प्रचार सरकारी नौकरी करने वालो में फैलने लगा। जन साधारण तो फिर भी अछूता रहा। आशा थी, कि जो थोड़ी बहुत गिरावट हरयाणा में आई थी, वह स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् शायद ठीक हो जाये। हुआ उल्टा ही, शराब और मांस का इस्तेमाल पिछले 35 वर्षों से बहुत अधिक बढ़ा। उससे पहिले गिने चुने लोग ही इन पदार्थों का इस्तेमाल करते थे और वह भी घर से बाहर। परन्तु इन 35 वर्षों मे तो ऐसी हालत हो गई कि अब शराब से इने गिने परिवार बचे हैं। व्यक्ति तो बचे है परन्तु परिवार बहुत थोड़े! पहिले शराब (दारू) पीने वाले पर उगली उठती थी, निन्दा होती थी और वे लुके छिपे ही पी पाते थे, परन्तु अब तो कई बार शाम को जब पियक्कड़ों की महफिल लगती है तो ग्रामों मे भी शरीफ आदमी को रास्ता छोड़ कर बचने का प्रयास करना पड़ता है।

इस अवस्था के कारण, नशाबन्दी के हिमायती और कार्यकर्त्ता निराश से हो गये थे। परन्तु नागौर, चूरू, जोधपुर आदि राजस्थान के जिलो मे अचानक चेतना की नई चिंगारी फूटी। ग्रामीण लोगों ने पंचायत के द्वारा चाय और शराब का पीना बन्द कर दिया और पीने पिलाने वालों पर जुर्माना करने का साहस पूर्ण फैसला ही नही किया, उसे लागू भी कर दिया। यह सूचना हरयाणा के लोगो को भी मिली, और ग्रामीण जनता मे चर्चा चली। हम सोच ही रहे थे कि यह अचानक भगवान् ने एक अवसर दिया है, इसका लाभ उठाकर राजस्थान के जिलों की पंचायत का फैसला हरयाणा की पचायतो द्वारा भी करवाया जाये और उसी प्रकार लागू किया जाये, एक पत्र मिला बालावास से कि लोगो की इच्छा के विरुद्ध शराब का नया ठेका खुल रहा है, क्या करे, आइये और हमें बताइये। सरकार तो नहीं मानी परन्तु हमारी प्रार्थना पर 21 ग्रामो की पचायत ने गान्धी जी के रास्ते पर चलकर धरना देने का निश्चय किया और 6 महीने के अन्दर ही ठेके वाला दुकान बन्द करके चला क्योंकि उसकी एक बोतल भी नहीं बिकी। 8 अप्रैल 1983 को कुरुक्षेत्र में हुई अन्तरंग की बैठक में हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा ने निर्णय किया, कि पंचायतों के द्वारा सरकार को ठेके न खोलने के प्रस्ताव भिजवाये जाये और पीने पिलाने वालो पर पंचायतें कर कर के दण्ड की व्यवस्था की जाये।

सर्वखाप पंचायत जो बेरो में हुई उसमें विवाह आदि रस्मो में फिजूल खर्ची बन्द करने के साथ-साथ शराब के इस्तेमाल पर भी रोक लगाई गई और जुर्माने की व्यवस्था की गई। जगह-जगह छोटी बड़ी पंचायतें हुई और इस निर्णय के समर्थन में जनता ने फैसले किये।

माहरी जिला सोनीपत की पंचायत ने सितम्बर 1984 में प्रस्ताव करके सरकार को ठेका बन्द करने के लिये लिखा। मार्च 1985 के अन्त में ठेका छोड़ दिया गया, जनता की इच्छा के विरुद्ध। इस ग्राम की आबादी 10 हजार के करीब है, शिक्षित महिलाय भी बसों में बैठकर विद्यालय में आती है और इस ग्राम की महिलायें दूसरे ग्रामों में बसों से पढ़ाने के लिये जाती हैं। कुछ अशोभनीय घटना ग्राम में और बाहर महिलाओं के साथ हुई। इस ग्राम के नवयुवक कार्यकर्त्ता और श्री होश्यारसिंह के मार्गदर्शन तथा प्रेरणा पर महिलाओ ने धरना आरम्भ किया। धरना एक महीने से अधिक चला और मामला अदालत में भी गया। ठेका बन्द हो।

कैसी विडम्बना है कि ग्रामीण जनता को सरकार से अपने ही कानून को लागू करने के लिये "(अपने आपको गान्धी की अनुयायी कहने वाला सरकार) से अदालत मे लड़ना पड़ रहा है। मैने भारत के उप-राष्ट्रपति और पुराने गान्धी वादी कॉंग्रेसी नेता को यह सूचना दी तो वे भी बहुत दु.खी हुए।

एक ओर अदालत मे मामला चल रहा है, शराब बेचने पर अन्तरिम रोक हो लगाई है। ग्रामीण 1962 के पचायत एक्ट को लागू करवाने के लिये कानूनी सघर्ष मे हिम्मत के साथ लगे हैं। इस एक्ट का सहारा लेकर ग्रामीण जनता को दिन दहाड़े लूट से बचाने के लिये हम सभी ग्रामो की पंचायतो से शराब के ठेके बन्द करने के लिये सरकार को प्रस्ताव भिजवाने की प्रेरणा कर रहे है। (क्रमश.)

यह सब किस लिये ? (यह अगले अंक में पढ़िये)

हरयाणा के हितों पर कोई आंच नहीं आयेगी

'प्रधानमन्त्री का प्रो० शेरसिंह के नाम पत्र'

रोहतक। 2 जून 85 हरयाणा रक्षावाहिनी एव आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने एक प्रेस वक्तव्य में प्रधानमन्त्री श्री राजीव गान्धी के उस आश्वासन का स्वागत किया है जिसमें उन्होंने उन (प्रो० शेरसिंह) द्वारा हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए लिखे गये पत्र के उत्तर में लिखा है कि पंजाब समस्या पर अकालियों से समझौता करते समय हरयाणा के हितों पर कोई आँच नहीं आने दी जायेगी।

इसी सन्दर्भ मे प्रधानमन्त्री ने लन्दन के टेलिविजन के "ईस्टर्न आई" प्रोग्राम के लिए एक इन्टरव्यू मे चण्डीगढ़ पजाब को देने सम्बन्धी एवार्ड लागू करने के बारे में पूछे जाने पर कहा है कि इस एवार्ड में यह भी दर्ज था चण्डीगढ के बदले में अबोहर और फाजिल्का हरयाणा को दिये जायेगे। हम उस एवार्ड के पाबन्द हैं। अत: चण्डीगढ़ पंजाब को दिया जाये तो अबोहर व फाजिल्का हरयाणा को देने होंगे। क्षेत्रों का यह लेन-देन एक साथ ही हो तो अच्छा रहेगा। हरयाणा रक्षावाहिनी ने प्रधान-मन्त्री श्री राजीव गान्धी के इस सकारात्मक उत्तर का हार्दिक धन्यवाद करते हुए आशा व्यक्त की है कि हरयाणा की जनता भी अपने हितो की रक्षा के लिए संगठित रहेगी।

प्रसिद्ध आर्य नेता श्री हंसराज गुप्त का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब तथा दिल्ली पूर्व महापौर के पूर्व प्रधान श्री हसराज जी गुप्त का ३ जुलाई को निधन हो गया। जिन की आयु ८० वर्ष के लगभग थी। वे विगत दो-ढाई मास से अस्वस्थ थे और मृत्यु के समय श्री नर्सिंग होम में प्रविष्ट थे।

४ जुलाई को हजारों दिल्ली वासियों की उपस्थिति में निगम बोध घाट पर उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार किया गया। इस अवसर पर अनेक आर्यसमाजी कार्यकर्त्ताओं तथा वरिष्ठ नेताओ के अतिरिक्त दिल्ली के उपराज्यपाल, महापौर आदि उपस्थित हुए। आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भी आजीवन सदस्य थे। १४ जुलाई को आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली में साय ४ बजे शोक सभा का आयोजन किया गया है। सभा मन्त्री

आर्यसमाज को बचाया जा सकता है

—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

विश्वविख्यात विद्वान् लेखक टोयनबी ने लिखा है—"विकट परिस्थिति आने पर प्रत्येक व्यक्ति उस परिस्थिति से निकलने के लिये जूझना चाहता है, किन्तु स्वार्थ अथवा भीरुता के कारण जूझ नहीं पाता। उस समय कोई महापुरुष होता है जो सबकी पीड़ा को अपने हृदय में खीच कर परिस्थिति की विषमता से लड़ने के लिये उठ खड़ा होता है और जब कोई ऐसा महापुरुष सामने आता है तब सब के सिर उसके पैरो मे झुक जाते है।"

वर्तमान में आर्यसमाज जिन विकट परिस्थितियों में से गुजर रहा है उनसे निकालने के लिये किसी ऐसे ही अलौकिक पुरुष की आवश्यकता है। बाहर से हृष्ट-पुष्ट दीखने पर भी जीवनी शक्ति का ह्रास होने के कारण आर्यसमाज भीतर से खोखला होता जा रहा है। सबसे बड़ा खतरा आज उन घुसपैठियों से है जो आर्यसमाज का बिल्ला लगा कर आर्यसमाज पर अपना अधिकार जमा बैठे हैं। आर्यसमाज के सदस्यों में आज ८०% ऐसे ही ही लोग हैं। किसी भी समाज की वास्तविक स्थिति का पता उसके साप्ताहिक सत्संग की उपस्थिति से लगाया जा सकता है, जो व्यक्ति एक महीने में एक बार भी समाज मन्दिर मे नही आता और सौ पैसे कमा कर ९९ पैसे अपने लिये रखकर एक पैसा भी समाज को देने के लिये तैयार नहीं, उसका आर्य-समाज से क्या लगाव हो सकता है? 'संसार का उपकार' करने का दम भरने वाला आर्यसमाज सरकारी सहायता के बिना अपने संगठन के विभिन्न स्तरों पर निर्वाचन करने में असमर्थ है। सरकार द्वारा व्यक्तियों की देखरेख में पुलिस के पहरे में हमारे चुनाव होते हैं और फिर निचली अदालत से लेकर हाईकोर्टों में बरसों तक मुकद्दमे लडे जाते है। शिक्षण संस्थाएँ आर्यसमाज के मन्तव्यों के प्रचार का साधन न रह कर भ्रष्टाचार और झगडों का कारण बन गई हैं। गुरुकुल कांगड़ी से बढकर इसका उदाहरण और क्या हो सकता है? आपसी फूट के कारण तथाकथित हितैषियों को हमारा शोषण करने का अवसर मिल रहा है। नेताओं की ठकुरसुहाती प्रवृत्ति के कारण हम अपने उद्देश्यों और कार्यक्रमों को भूल कर समय के प्रवाह में बह कर अपने सर्वनाश की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

राजनीति में धर्म जाकर उसे पवित्र कर देता है, पर धर्म में राजनीति आकर उसे खा जाती है। आज वही हो रहा है। राजनीतिक दाव-पेचों में निष्णात अखाडेबाज तिकड़म के बल पर आर्यसमाज पर छाये हुये हैं। धर्म और राजनीति मे सेव्य-सेवक भाव रहे तो राजनीति बुरी नही किन्तु इसका विपर्यय सर्वनाश का हेतु बन जाता है। जब लोक-नेताओं पर राज-नेता हावी होने लगते हैं, जब सरस्वती लक्ष्मी की चेरी बन कर रहने को विवश हो जाती है तो धार्मिक जगत् में 'दुर्भिक्ष मरण भयम्' की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जब विद्वान्, सन्यासियों, आचार्यों को पीछे डाल दिया जाता है और धन या पद के कारण धनपतियों और राज नेताओं को सम्मानित किया जाता है तो विद्वान् अपनी सन्तानों को वसीयत कर जाते हैं। कि यदि समाज में सम्मानपूर्वक रहना है तो आर्यसमाज से दूर रहना। आर्यसमाज के लिये खपोगे तो तुम्हें कोई नही पूछेगा। यदि तुम म्युनिसिपल कमेटी के मेम्बर बन गये या कुपथा लाखों कमाकर एक सौ एक रुपये चन्दा दे दिया तो तुम वह सम्मान पा सकोगे जो बड़े से बड़े विद्वान् उपदेशक को भी प्राप्त न होगा। इस सन्दर्भ में याद आती है एक अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा-सम्मेलन की अध्यक्षता करने वाले नेता की घटना जो कहते थे—"धार्मिक दृष्टि से मैं शिवलिंग का उपासक हूं, धार्मिक ग्रन्थों में मैं तुलसी रामायण का भक्त हूं। विचारों की दृष्टि से मैं गांधी और मार्क्स से प्रभावित हूं।" ये सज्जन 'हरे रामा हरे कृष्णा' सम्प्रदाय के हैं। कैसे बचेगा ऐसा समाज?

ऐसी स्थिति में भी कुछ लोग हैं जो इस विकट स्थिति से समाज को निकालना चाहते हैं, किन्तु भीरुता के कारण जूझने से कतराते हैं। कुछ हीन भावना से ग्रस्त हैं, तो कुछ सरकार के चक्र में फंसे हैं तो कुछ बिन देश धर्म की चिन्ता किये एक कोने में बैठकर आराम करने को ही आर्यत्व समझ बैठे हैं। हम प्रतीक्षा में हैं कि अब कौन हमारी आवाज सुन कर कुमारिलभट्ट बनकर आर्यसमाज की रक्षा का बीड़ा उठायेगा।

आर्यसमाज के वर्तमान संगठन का आधार बहुमत है। बहुमत को जुटाने के प्रयास में आर्यसमाज के सिद्धांतों, नैतिक आदर्शों, योग्यता आदि की पूरी तरह अवहेलना हो रही है। आर्यसमाज के उपनियमों का अपवाद रूप में भी पालन नहीं हो पाता। यह सब बहुमत का अभिशाप है कि आज आर्यसमाज में अधिसंख्यक लोग ऐसे हैं जिनमें नाममात्र भी आर्यत्व नहीं है। येन-केन प्रकारेण बहुमत जुटाने में कुशल व्यक्ति केवल तिकड़म के बल पर ऊँचे से ऊँचे पद पर आसीन् हो जाते हैं और योग्य तथा चरित्रवान् व्यक्ति आर्यसमाज से दूर जा पड़ते हैं। इसलिये आर्यसमाज के संगठन में आमूल-चूल परिवर्तन आवश्यक है। इस दृष्टि से कुछ सुझाव बुद्धिजीवी लोगों के विचारार्थ प्रस्तुत हैं।

१—मनु को प्रमाण मान कर महर्षि दयानन्द ने लिखा है—"यदि एक अकेला वेदों को जानने वाला, द्विजों में उत्तम संन्यासी जिस धर्म की व्यवस्था कर, वही श्रेष्ठ धर्म है, क्योंकि अज्ञानियों के लाखों करोड़ों मिल के जो कुछ व्यवस्था करें, उसको सभी न मनाना चाहिये।" एतदनुसार आर्यसमाज की सर्वोच्च सत्ता ३ अथवा ५ संन्यासियों में निहित होनी चाहिये। प्रथम बार इन संन्यासियों का चुनाव समस्त प्रान्तीय सभाओं के अन्तरंग सदस्यों द्वारा निर्मित निर्वाचन मण्डल द्वारा किया जाये। तदनन्तर रिक्त स्थानों की पूर्ति अवशिष्ट संन्यासी करते रहें।

उपर्युक्त संन्यासी मण्डल सर्वात्मना आर्यसमाज को समर्पित, पूरा समय आर्यसमाज के ही कार्य में संलग्न किसी विद्वान् तथा चरित्र-वान व्यक्ति (यथासंभव संन्यासी) को सार्वदेशिक सभा का प्रधान नियुक्त करे। इस प्रकार नियुक्त सार्वदेशिक सभा के प्रधान के परामर्श से सार्वदेशिक सभा के प्रधान के गुणों से युक्त व्यक्तियों की प्रान्तीय सभाओं की नियुक्ति भी संन्यासी मण्डल किया करें। अपनी-अपनी मन्त्रिपरिषद् की नियुक्ति का अधिकार तत्तद् प्रधान को होगा। मन्त्रि-परिषद् की नियुक्ति इस प्रकार की जाये कि जो व्यक्ति जिस कार्य के लिये उपयुक्त हो उसे वही कार्य सौंपा जाये तथा योग्यता के साथ-साथ यथासम्भव प्रतिनिधित्व का स्वरूप भी बना रहे। सार्वदेशिक सभा तथा प्रान्तीय सभाओं के मन्त्री भी पूरा समय देने वाले विद्वान् पुरुष ही होने चाहिये। सार्वदेशिक तथा प्रान्तीय सभाओं के प्रधानों को बिना कारण बताये हटाने का अधिकार संन्यासी मण्डल को होगा।

२—सार्वदेशिक सभा तथा प्रान्तीय सभाओं की कार्यकारिणी सभाओं का निर्माण वर्तमान अन्तरंग सभाओं की तरह न होकर राजकीय मन्त्रिमण्डलों की पद्धति पर किया जावे। सभा द्वारा किये जाने वाले कार्य को विभिन्न विभागों में बांट कर प्रत्येक विभाग के लिये एक मन्त्री, सचिव या अधिष्ठाता नियुक्त किया जाये। कार्य-कारिणी में एक भी एक सदस्य ऐसा न हो जिसके जिम्मे कोई न कोई कार्य न हो।

३—जिन संगठनों या संस्थाओं का काम मात्र देश की सीमा तक सीमित है उनके पास तो सैकड़ों नहीं हजारों व्यक्ति ऐसे हैं जो चौबीसों घण्टे अपने संगठन के लिये सोचते और उनकी गतिविधियों में संलग्न रहते हैं।

क्रमशः

जीवक तथागत का वैद्य

—रतनलाल जोशी

अध्ययन समाप्त कर लेने के बाद, जीवक विदा लेने के लिए अपने आचार्य के पास पहुंचे। आचार्य अत्रेय ने अपने योग्य शिष्य पर एक स्नेहिल दृष्टि डाली, फिर गद्गद वाणी में कहा—"हां, वत्स! तुम्हें विदा तो देनी ही पडेगी। अब और कुछ सिखाना शेष भी कहां रह गया है? तुम स्वयं इस विषय के आचार्य हो गये हो, परन्तु…" अत्रेय ने एक क्षण रुक कर अपनी बात पूरी की—"मैं चाहता हूं कि, अपने शिष्यत्व से मुक्त करने के पूर्व तुम्हारी एक और परीक्षा लूं……"

जीवक मौन, सिर झुकाये, आदेश की प्रतीक्षा में खडे रहे और तब आचार्य अत्रेय बोले—"इस तक्षशिला नगर की पांच कोस की सीमा में तुम एक बार पर्यटन करो और हर पौधे की परीक्षा करने के बाद, मुझसे आकर बतलाओ कि, कौन-कौन से पौधे औषधीय गुण से रहित है।"

गुरु को नमस्कार कर, जीवक चल पड़े।

कई दिनों तक वे संपूर्ण क्षेत्र का भ्रमण करते रहे और अन्त में, आकर अपने गुरु से बोले—"प्रभो, मुझे तो एक भी ऐसा पौधा नहीं दिखाई पडा, जिसकी कुछ-न-कुछ औषधीय उपयोगिता न हो।"

आचार्य अत्रेय प्रसन्नता से भर उठे, बोले—"तुम सफल हुए वत्स, जाओ, जाकर आयुर्वेद की सेवा में लगो और अपनी विद्या से अधिक-से-अधिक देशवासियों को व्याधिमुक्त करो। मेरा आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ है।" और, जीवक अपने आचार्य के चरणों में श्रद्धावनत हो गये। यही जीवक आगे चलकर भगवान् बुद्ध के चिकित्सक बने और अपने औषधीय एवं शल्य-चिकित्सा के नये प्रयोगों से उन्होंने आयुर्वेद का महान् हित-साधन किया।

जीवक वस्तुत: कीच से पैदा हुए कमल थे। औरज सन्तान होने के कारण उनकी माता शैलवती उन्हें जंगल में छोडकर चली गयी थी और अभय नामक एक व्यक्ति ने उनका उद्धार कर, पालन-पोषण किया था। कुछ लोग अभय को ही जीवक का पिता मानते हैं; परन्तु कुछ लोग राजा बिम्बिसार को उनका पिता बतलाते हैं। वस्तुत: वे किसके पुत्र थे; यह विषय अब तक विवाद की गुत्थी से नहीं निकल सका है।

कुछ बडे होने पर उन्होंने अपने जीविकोपार्जन के लिए चिकित्सा-व्यवसाय की ओर रुचि दिखलायी और तक्षशिला में आचार्य अत्रेय के शिष्य के रूप में आयुर्वेद का परायण आरम्भ किया। मेधावी वे इतने थे कि, सात वर्षों में ही उन्होंने आयुर्वेद में निपुणता प्राप्त कर ली, जबकि दूसरे छात्र १४ वर्षों में भी कठिनाई से अपना अध्ययन पूरा कर पाते थे -

ज्ञान की आयु निरपेक्षता

आचार्य अत्रेय से विदा लेने के बाद, वे चिकित्सा-कार्य में लग गये; लेकिन उस समय उनकी आयु इतनी कम थी कि, लोगों को उनकी योग्यता के बारे में सन्देह होने लगता था। साकेत नगर की एक महिला ने, जिसकी उन्होंने सर्वप्रथम चिकित्सा की, उन्हें देखा, तो बोल उठी—"क्या आप सचमुच आयुर्वेद के आचार्य हैं?" जीवक ने उस समय तो उसे कोई उत्तर नहीं दिया; पर कुछ काल बाद, जब उसका असाध्य रोग मिट गया, तो बोले—"ज्ञान की गहराई के लिए आयु की सीमा आवश्यक नहीं होती।"

सचमुच चिकित्सा-शास्त्र का उनका ज्ञान बड़ा गहरा था। एक बार राजा बिम्बिसार बवासीर से बुरी तरह पीड़ित थे। कोई भी औषध उनका कष्ट-शमन नहीं कर पा रही थी। तभी जीवक ने चमत्कार दिखाया—मात्र पुलटिस बधवाकर राजा का सदा के लिए कष्ट-निवारण कर दिया। इससे प्रसन्न होकर राजा ने उन्हें राजवैद्य नियुक्त कर लिया।

चिकित्सा-कार्य करने के साथ-साथ जीवक नये-नये अनुसंधानों में भी लगे रहे। उनके इस अनुसंधान ने तो उन्हें बहुत ही प्रसिद्धि दिलायी कि, "रोग सूक्ष्म कीटाणुओं के कारण पैदा होते हैं। बतलाया जाता है कि, उनके पास एक ऐसा अद्भुत कांच था, जिसे शरीर के व्याधिग्रस्त अंग पर रखने से अन्दर की सारी चीजें स्पष्ट दिखायीं पड़ जाती थी। उसी कांच की सहायता से उन्होंने अपना व्याधियों और कीटाणुओं सम्बन्धी अनुसन्धान किया था। उस कांच के कारण उन्हे रोगों का निदान ढूंढने में बड़ी सहूलियत होती थी।

शल्य-चिकित्सा के पितामह

शल्य-चिकित्सा के क्षेत्र में तो जीवक बहुत ही आगे बढे हुए थे। आज के सर्जन भी उनके आगे मात थे। एक बार बिम्बिसार ने राजगृह के एक संभ्रान्त व्यक्ति के सिरदर्द का इलाज करने के लिए उन्हें भेजा। वहां उन्होंने उस व्यक्ति की खोपडी खोल डाली और दर्द के मूल कारण, कुछ कोड़ों को निकालने के बाद, उसे पुन: ज्यों का त्यों बैठा दिया।

स्त्री रोगों और प्रसव-सम्बन्धी मामलों में भी जीवक को बहुत प्रसिद्धि मिली। उन्होंने एक बार एक स्त्री का पेट चीर कर प्रसव कराया था। प्रसूति-सम्बन्धी कार्यों में दक्षता के कारण उन्हें "कौमार भृत्य" के नाम से भी पुकारा जाता था।

मूत्राशय, उदर तथा वस्तिप्रदेशीय अंगों की भी वे शल्य-क्रिया किया करते थे। एक बार वाराणसी के एक सम्भ्रान्त व्यक्ति के पुत्र की अंतड़ियों का एक भाग, उछलने के क्रम में, उदर के किसी सन्धि भाग में बुरी तरह उलझ गया। सभी वैद्यों का उपचार व्यर्थ साबित हुआ और वह लडका सूखकर कांटा हो गया। अन्त में, उसके पिता ने, राजा बिम्बिसार के परामर्श से, जीवक को बुलवाया और उन्होंने शल्य-क्रिया का प्रयोग कर उसे चंगा कर दिया।

बुद्ध के अनन्य भक्त :

एक बार की घटना है कि, बुद्ध के एक सम्बन्धी देवदत्त ने, जिन्हें उनसे कुछ शत्रुता थी, गृद्धकूट पर्वत के नीचे से विचर रहे बुद्ध पर एक बड़ी पत्थर की चट्टान ऊपर से गिरायी। लुढक कर आते-आते वह चट्टान खण्ड-खण्ड तो हो गयी, फिर भी एक बड़े टुकड़े से उनका पैर बुरी तरह कुचल गया। उनके इस घाव को जीवक ने ही चिकित्सा की। इसी तरह जब-जब बुद्ध किसी व्याधि से पीड़ित हुए, जीवक ने उनका उपचार किया।

जीवक भगवान् बुद्ध के अनन्य भक्त भी थे। वे प्रतिदिन तीन बार उनके दर्शन किया करते थे। वेणुवन से अपना निवास-स्थान अधिक दूर होने के कारण उन्होंने अपने आम्र-कुंज में ही एक विहार का निर्माण करवाया था। उनका हर आदेश वे बेझिझक शिरोधार्य करते थे।

'महावग्ग' में वर्णित एक घटना के अनुसार, एक बार एक बौद्ध महात्मा के पीडा-निवारणार्थ जीवक उसके शरीर पर शल्य-क्रिया कर रहे थे। इसमें स्वभावत: ही, उसके शरीर को काफी चीर-फाड करनी पडी। यह दृश्य बुद्ध ने देखा, तो अत्यन्त विचलित हो उठे और उन्होंने जीवक को परामर्श दिया कि, वैसी चीर-फाड़ करने की प्रणाली का वे परित्याग करें। कहते हैं कि, उसी दिन से शल्य-चिकित्सा के इस स्तुत्य विशेषज्ञ ने शल्य-क्रिया को सदा के लिए तिलाजलि दे दी।

(युगवार्ता से साभार)

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका की जयन्ती

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका की जयन्ती डरबन में १३ से १७ दिसम्बर १९८५ को धूमधाम से मनाई जा रही है। इस समारोह में जो आर्य महानुभाव सम्मिलित होना चाहते हों, वे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक से वीसा आदि के कागज प्राप्त करके पासपोर्ट आदि बनवाने के लिए सार्वदेशिक सभा के कार्यालय दयानन्द भवन नई दिल्ली से सम्पर्क करें। —सभामन्त्री

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित शराबबन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए जिन ग्रामों में शराब के ठेके खुले हुए हैं, उन ग्राम पंचायतों के सरपंचों तथा पंचों को प्रेरणा करके प्रस्ताव पास करवाने का यत्न करें कि शराब का ठेका बन्द किया जाये। प्रस्ताव का प्रारूप निम्न प्रकार प्रकाशित किया जा रहा है।

सेवा में,

माननीय उपायुक्त महोदय

आबकारी एवं कराधान विभाग हरयाणा, चण्डीगढ़

निवेदन है कि हमारे ग्राम············जिला············पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक·········में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है—

यह पंचायत शराब पीने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्राम्य जीवन के लिये बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गांव में अनाचार, अशान्ति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की नशाबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द कर दी जाए और भविष्य में कदापि भी यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाए ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठावें की कृपा करेंगे। सधन्यवाद!

ता० ·················· विनीत

हस्ताक्षर ग्राम पंचायत के सदस्य

प्रतिलिपि सेवा में—

१- प्रधानमन्त्री, भारत सरकार नई दिल्ली।

२- मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

नोट—जिन पंचायतों के प्रस्ताव ३० सितम्बर ८५ तक सरकार के पास पहुँच जावेंगे, पंचायत एक्ट के अनुसार उन ग्रामों में शराब के ठेके नीलाम नहीं हो सकते।

अतः आर्यसमाजें अपने निकट के ग्रामों में जहां शराब के ठेके खुले हैं, वहाँ की पंचायतों से प्रस्ताव पास करवाकर ३० सितम्बर तक भिजवाने का यत्न करें।

प्रो० शेरसिंह
सभा प्रधान

भजनोपदेशक संगीत प्रशिक्षण शिविर
१४ से २७ जुलाई १९८५

स्थान—श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय गौतमनगर नई दिल्ली

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध संगीताचार्य पं० पन्नालाल जी पीयूष तथा प० अभिविनय भारती तथा पुराने भजनोपदेशकों द्वारा संगीत प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हो रहा है। इसमें शास्त्रीय संगीत के साथ स्वर्गस्थ पं० बस्तीराम जी, चौ० तेजसिंह जी, कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर एवं कविरत्न पं० प्रकाशचन्द्र जी की शैलियों में व आधुनिक सरल संगीत का भी प्रशिक्षण दिया जाएगा। निवास व भोजन निःशुल्क होगा।

ऐसा आयोजन प्रथम बार दिल्ली में हो रहा है; आर्यसमाज के भजनोपदेशक तथा धर्म प्रचार में रुचि रखने वाले सम्पर्क करें। सम्पर्क व पत्र व्यवहार का पता—श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय ११९ गौतमनगर नई दिल्ली-४९

प्रवेश आरम्भ

गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय शिक्षण संस्था है। १ म० कक्षा से १४ कक्षा तक शिक्षा दी जाती है।

उच्च प्रशिक्षित शिक्षिका वर्ग, पुस्तकालय, नैतिकशिक्षा, चित्रकला साईंस, संगीत, गृहविज्ञान, सांस्कृतिक गतिविधि की आधारभूत विशेषतायें हैं। विस्तृत खेल के मैदान आधुनिक सुविधाओं सहित बड़े छात्रावास, तीसरी कक्षा से संस्कृत एवं अंग्रेजी प्रारम्भ, निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओं के लिये छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा है। मैट्रिक एवं इण्टर उत्तीर्ण कन्यायें भी प्रथम वर्ष तथा तृतीय वर्ष में प्रविष्ट हो सकती है। शिक्षा निःशुल्क दी जाती है। १५ जुलाई से नवीन कन्याओं का दाखिला है। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव ५) रुपये भेजकर नियमावली मंगवा सकते हैं।

भवदीया
दमयन्ती कपूर आचार्या

शोक समाचार

श्री बनवारीलाल 'शादाँ' (मन्त्री आर्यसमाज माडल बस्ती दिल्ली) का १५-६-८५ को स्वर्गवास हो गया। उनकी शोक सभा आर्यसमाज मन्दिर माडल बस्ती में २९-६-८५ को सायं ४ बजे सम्पन्न हुई। आपकी कविताएं सर्वहितकारी तथा अन्य पत्रिकाओं में छपती रहती थीं। आप प्रसिद्ध वैद्य भी थे।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्‌गति प्रदान करे।

मा० जागेराम आर्य की हत्या

सर्वहितकारी के सम्पादक श्री वेदव्रत शास्त्री के श्वसुर देवली (महरौली ब्लाक) नई दिल्ली निवासी श्री मा० जागेराम आर्य (६९ वर्ष) की हत्या उनके निवास स्थान के सामने खानपुर देवली रोड पर ४ जुलाई १९८५ को सायंकाल लगभग ८ बजे देवली गांव के गुण्डों ने चाकू आदि मारकर कर दी। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली से ५ जुलाई को पोस्ट मार्टम के पश्चात् उनका शव मिला और सायंकाल ५ बजे गांव गुड़ाँव के बन्धु बान्धव तथा दूर से आये हजारों रिश्तेदारों ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से देवली की श्मशान भूमि में उनका अन्त्येष्टि संस्कार किया।

मा० जागेराम जी बचपन से ही आर्यसमाज के सम्पर्क में रहे। १९५२ में श्री आचार्य भगवान्देव जी (स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में अपने गांव देवली में चारों वेदों से यज्ञ करवाया और अपने बड़े पुत्र राजवीर तथा भाई ईश्वरसिंह को गुरुकुल झज्जर में पढ़ने के लिये भेजा। कुछ वर्ष पश्चात् ज्येष्ठ पुत्री सुवीरा को कन्या गुरुकुल नरेला में प्रविष्ट करवा दिया।

१९६३ में इनकी धर्मपत्नी का देहान्त हो गया था। इनके दो पुत्र तथा तीन पुत्रियों के पोते पोती, धेवते धेवतियों से पूर्ण परिवार है। दो छोटे भाइयों का परिवार भी साथ हो है।

१६ जुलाई मंगलवार को प्रातःकाल ५ बजे देवली गांव में शोक सभा होगी। गुरुकुल झज्जर, कन्या गुरुकुल नरेला, श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय गौतमनगर नई दिल्ली, महाराजा सूरजमल संस्थान नई दिल्ली आदि संस्थाओं के आप विशेष सहयोगी थे। अभी आप कालकाजी दिल्ली में शाखा अध्यापक थे, सेवानिवृत्त नहीं हुए थे।

ईश्वर दिवंगत आत्मा को सद्‌गति तथा शोक संतप्त परिवार व मित्रजनों को धैर्य प्रदान करे यही प्रार्थना है।

सत्यवीर शास्त्री
सभा मन्त्री

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

दहेज दानव के बढ़ते कदम

राधेश्याम आर्य एडवोकेट मुसाफिरखाना, सुलतानपुर

आज हमारे समाज में दहेज रूपी दानव का स्वरूप भयंकर होता जा रहा है। समाज के प्रत्येक वर्ग में, शहर में, गांव में दहेज की राशि बढ़ती ही चली जा रही है। दहेज पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए सरकार द्वारा कानून बनाया गया है लेकिन यह कानून न जाने कहां लुप्त हो गया है। कई सामाजिक व धार्मिक संगठन दहेज के विरुद्ध लेकिन दहेज का दानव तो सुरसा के मुंह की तरह बढ़ता जा रहा है। एक प्रतिशत भी तो अंकुश इस भयंकर सामाजिक बुराई पर लगता नहीं दिखाई दे रहा है। परिणाम स्वरूप समाज तथा सार्वजनिक जीवन में कुंठा भ्रष्टाचार, घुसखोरी, स्वार्थान्धता, धोखाधड़ी बेतहासा बढ़ रही है और मानवता के स्थान पर पाशविक प्रवृत्तियों का साम्राज्य फैलता जा रहा है। दहेज न केवल एक अभिशप्त सामाजिक बुराई है, बल्कि हमारे मानवतावादी दृष्टिकोण पर एक अमिट कलंक भी है। दहेज दानव की बलिवेदी पर प्रतिवर्ष न जाने कितनी बहनें भेंट चढ़ जाती हैं और हम किंकर्तव्य विमूढ़ से देखते रहते हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि शासन, दहेज से सम्बन्धित कठोर कानून पारित कर उसका कठोरता से अनुपालन कराए तथा सामाजिक संस्थाएं व बुद्धिजीवी इस भयंकर दानव के विरुद्ध युद्ध घोषणा करें।

और अब भिंडरांवाले के पिता सिख राजनीति के केन्द्रबिन्दु

जब से सरकार ने 'अकाली नेताओं को खुश करो' वाली अपनी नीति के अनुसार 'ऑल इण्डिया सिख स्टूडेन्ट्स फेडरेशन' पर लगे प्रतिबन्ध को हटाने का अदूरदर्शितापूर्ण कार्य किया है, तब से पंजाब के सिख उग्रवादियों को जो ज्यादातर इस फेडरेशन के ही सदस्य होते थे, नवजीवन सा मिल गया है। वे तभी से ऐसे उग्रवादी नेतृत्व की खोज में थे, जो भिंडरावाले की टक्कर का हो, और स्वर्गीय भिंडरावाले के ८३ वर्षीय पिता श्री जोगिन्द्रसिंह के रूप में ऐसा नेता मिल भी गया है। श्री जोगिन्दरसिंह आजकल सिख राजनीति के केन्द्रबिन्दु बन गये हैं। वैसे हकीकत यह है कि वे विरोधी अकाली दल के नेता श्री जगदेव सिंह तलवंडी के एक मोहरे से अधिक महत्त्व नहीं रखते। यही कारण है कि उनके आते ही, श्री तलवंडी के प्रबल विरोधी संत लोंगोवाल ने अकाली दल के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया है।

उग्रवादी सिख युवकों ने अपने एक और नेता के रूप में श्रीमती गांधी के हत्यारे सरदार बेअन्तसिंह की विधवा पत्नी बिमल खालसा को भी काफी उभारा है। अकाली दल की नई राजनीति पर भिंडरांवाले का भूत मंडरा रहा है, और वह हत्यारों को शहीदों के रूप में पेश कर रहा है।

यद्यपि श्री जोगिन्द्रसिंह ने अपने 'नव निर्मित' अकाली दल की राजनीतिक नीतियों की घोषणा नहीं की है, तथापि उनके तरुण अनुयायी जो अ० भा० सि० वि० वि० संघ के ऊपर से प्रतिबन्ध उठ जाने पर आजाद घूम रहे हैं, अपने इरादे टेप किए हुए इन भाषणों और गानों से जाहिर कर रहे हैं। 'सिखां दियां महान् कुरबानियां ते प्रेरणा ले के, सरदार सतवर्तसिंह ते सरदार बेअंतसिंह दो सिख नौजवानों दी बहादुरी ने इन्दिरा गांधी दी मौत पेश कर दित्ती है—सरदार अमरसिंह ढिल्लों सिंगोलेरीवाले, और सरदार जसबीरसिंह जोधपुर [illegible] साहेब वाले......।' कैसेट में आगे कहा गया है, "सुन लै, बिमल खालसा मैं भी ओही कुछ करके उठ्ठी, मैं ओही कुछ करके दिखायेयाना सिर दे के लैणू बदला। सिख नाल जिमने है वैर कीत्ता, बदला लेवेंगे, गिन गिन पापियो।"

इन कैसेटों का उद्देश्य आम सिख को भयभीत करके, खामोश करना है, ताकि वह उग्रवाद के खिलाफ अपनी आवाज न उठा सकें। देखना यह है कि अकालियों के नये अध्यक्ष श्री जोगिन्दरसिंह जो अपने दल की नीतियों का निर्धारण 'सिख धर्म के मूल तत्वों के अनुरूप' करने की घोषणा कर चुके हैं, अकालियों और सारे सिख समुदाय को किस दिशा में ले जाते हैं, शांति, सौहार्द, एकता और प्रगति के मार्ग पर या अवनति के आत्मघाती मार्ग पर। यदि उन्होंने गुरु ग्रंथ साहिब से सच्ची प्रेरणा ली तो उन्हें सही नेतृत्व करने का विवेक प्राप्त हो सकेगा।

भवदीय

भारत कल्याण मंच की ओर से,

सदाजीवतलाल चन्दूलाल मानद् कोषाध्यक्ष

आर्यसमाज सान्ताक्रुज वेद वेदांग पुरस्कार

आर्यसमाज सान्ताक्रुज की साधारण सभा दिनांक १६-६-८५ ने कैप्टिन देवरत्न आर्य के इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित किया कि आर्यसमाज सान्ताक्रुज एक स्थाई पुरस्कार की घोषणा करे जिसके अन्तर्गत प्रतिवर्ष आर्यजगत् के एक विशिष्ट विद्वान् को उनकी वैदिकधर्म एवं आर्यसमाज के प्रति की गई सेवाओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने हेतु 'आर्यसमाज सान्ताक्रुज वेद वेदांग पुरस्कार' दिया जाए। इस अवसर पर पुरस्कृत विद्वान् को २१००० रुपयों की थैली, अभिनन्दन-पत्र, रजत ट्राफी व शाल से सम्मानित किया जाये। विद्वान् का चयन एक समिति करेगी जिसमें आर्यसमाज के प्रधान एवं महामन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा आर्यसमाज सान्ताक्रुज की अन्तरंग सभा द्वारा मनोनीत तीन सदस्य होंगे।

भवदीय

महामन्त्री—कैप्टिन देवरत्न आर्य

अहीरवाटी में आदर्श विवाह

राव मंगलसिंह भू० पू० सरपंच खानपुर, तहसील नारनौल जिला महेन्द्रगढ़ ने अपने पौत्र वीरेन्द्र सुपुत्र श्री ओमप्रकाश आर्य, मन्त्री समाज सुधार सम्मेलन जिला महेन्द्रगढ़ एवम् आयु० निर्मला सुपुत्री सुबेदार सावनराम, सुराणा निवासी के शुभ पाणिग्रहण संस्कार पर एक रुपया दान तथा २१ बारातो में जाकर जो आदर्श प्रस्तुत किया है वह सराहनीय है। साधन सम्पन्न और सम्भ्रान्त परिवार होने पर भी दहेज न लेना आज के समय में बहुत बड़ा त्याग है। श्री ओमप्रकाश आर्य जिस निष्ठा और कर्त्तव्य परायणता से समाज में व्याप्त बुराइयों के विरोध में शंखनाद करते हैं उसी भांति नजदीकी समाज के तीव्र प्रतिरोध होने पर कथनी और करनी में कोई भेद न रखना सचमुच साहसिक कार्य है। वैसे आर्यसमाजी होने से सारे का सारा परिवार ही कभी से सामाजिक बुराइयों के विरोध में संघर्षशील है। इनके अपने छोटे से ग्राम में आर्ष गुरुकुल एवम् उच्च विद्यालय बनवाना इनके अथक परिश्रम का परिणाम है।

ताराचन्द आर्य

सब्जी मण्डी नारनौल

आर्यसमाज सातरोड कलां की स्थापना

दिनांक ९-६-८५ को ग्राम सातरोड़ कलां जिला हिसार में सभा के उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी की प्रेरणा व सहयोग से आर्यसमाज की स्थापना हो हुई—

संरक्षक व निर्देशक—श्रीमती करुणा देवी शास्त्री, प्रधान—श्री बिजेन्द्र कुमार, उपप्रधान—दलबीरसिंह सी० ए० जी०, मन्त्री—देवेन्द्रकुमार, उपमन्त्री—महेन्द्रसिंह एस० एस० मास्टर, कोषाध्यक्ष—सुरेशकुमार।

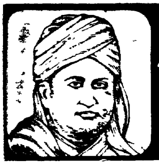
ऋषिवर दयानन्द की फिल्म

आजकल समाचार पत्रो मे इस विषय की प्राय: चर्चा रहती है कि ऋषिवर दयानन्द के जोवन पर आधारित फिल्म बनाई जाए और इस पर उदाहरण के तोर पर कहा जाता है कि महात्मा गांधी के जोवन पर फिल्म बनाई गई और उसके प्रचार के माध्यम से गाधी का मान सारे ससार मे बढ़ा है। इसी उद्देश्य को लेकर कुछ लोग इस बात पर तुले हुए हैं कि प्रचार के लिए ऋषिवर दयानन्द के जोवन पर भी फिल्म बनाई जाए। परन्तु वह लोग इस बात को भूल जाते हैं कि महात्मा गांधो का फिल्म मे जिस व्यक्ति ने महात्मा गाधी के अभिनय को निभाया उसन अपने आपको वास्तविक तौर पर इस प्रकार ढाला कि उसको आकृति स, बालचाल से और व्यवहार से ऐसा प्रतीत होता था कि वास्तविक महात्मा गांधी ही हैं, इसीलिए मैं कहता हूं कि यदि कोई वीर पुरुष ऋषिवर दयानन्द का अनुकरण और अनुस्मरण करक अद्वितीय ब्रह्मचारी दयानन्द का रूप धारण करता है ता उसका स्वागत है, परन्तु यदि कोई दुष्ट आकृति अजितेन्द्रिय पुरुष और व्यभिचारी पुरुष ऋषिवर दयानन्द का रूप धारण करक नकली दयानन्द बनता है तो बात कुछ सोचने वाली बन जाती है। इस विषय में मुझे एक बात याद आती है कि एक बार ऋषिवर दयानन्द के विरोधियो ने एक व्यक्ति को नकली दयानन्द बना दिया और उसको चौराहे पर बिठा कर जूते मारने लगे। ऋषिवर के श्रद्धालुओ ने जब यह देखा तो वे ऋषिवर दयानन्द के पास पहुचे और इस प्रकार सारा वृत्तान्त देकर यह कहने लगे कि यह आपका बड़ा अपमान हो रहा है। ऋषिवर दयानन्द मुस्करा कर बोले इसमें मेरा अपमान कैसे हो रहा है असली दयानन्द तो तुम्हारे सामने बंठा है, हां जो नकली दयानन्द बनेगा उसको जूते ही पड़ेंगे और क्या होगा? तो मेरा कहने का भाव यह है कि आज भी जो नकली दयानन्द बनता है उसको उसी प्रकार जूते मारने की आवश्यकता है और इस कार्य को क्या कोई आर्यवीर दल का वीर पुरुष कर सकेगा—और यदि इस कार्य को आर्यवीर दल वाला नहीं करता तो मैं समझता हूं कि वीरता नाम की कोई वस्तु रही नहीं, केवल दल-ही दल (दलदल) रह गए हैं।

देसराज खोखबाठ
२९० इन्दिरा कालोनी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजी न० 23207/7. उ० न० P/RTK 49 3/7/85 फोन ४८१२ सृष्टि सवत् १,६६,०८५३,०८५



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक-प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १२, अङ्क ३२ २१ जुलाई १६८५ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है,
वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

वेदोपदेश

इन्द्रिय-संयम के बिना योगसाधना का लाभ नहीं मिलता

शंङ्ख ऋषिः। अश्विनौ=विद्याव्यापिनौ (योगिनौ) देवता।
निचृज्जगती छन्दः निषादः स्वरः॥
पुनस्तमेव विषयमाह॥
योगी के कर्त्तव्य का फिर उपदेश किया गया है।

ओ३म्—तेजः पशूनाᳬं हविरिन्द्रियावत्
परिस्रुता पयसा सारघं मधु।
अश्विभ्यां दुग्धं भिषजा सरस्वत्या
सुतासुताभ्याममृतः सोमऽइन्दुः॥ (यजु० १६।६५)

पदार्थः—(तेजः) प्रकाशः (पशूनाम्) गवादीनां सकाशात् (हविः) दुग्धादिकम् (इन्द्रियावत्) प्रशस्तानि इन्द्रियाणि भवन्ति यस्मिन् (परिस्रुता) परितः स्रवन्ति=प्राप्नुवन्ति येन तत् (पयसा) दुग्धेन (सारघम्) सुस्वादयुक्तम् (मधु) मधुरादिगुणोपेतम् (अश्विभ्याम्) विद्याव्यापिभ्याम् (दुग्धम्) पयः (भिषजा) वैद्यकविद्याविदौ (सरस्वत्या) विदुषा स्त्रिया (सुतासुताभ्याम्) निष्पादितऽनिष्पादिताभ्याम् (अमृतः) मृत्युधर्मरहितः (सोमः) ऐश्वर्यम् (इन्दुः) सुस्नेहयुक्तः॥

अन्वय—हे मनुष्याः याभ्यां सुतासुताभ्यां भिषजाऽश्विभ्यां पशूनां परिस्रुता पयसा तेज इन्द्रियावत् सारघं मधु हविर्दुग्धं सरस्वत्यामृतः सोम इन्दुश्चोत्पाद्यते तौ योगसिद्धि प्राप्नुतः॥

सपदार्थान्वयः—हे मनुष्याः। याभ्यां (सुतासुताभ्याम्) निष्पादिताऽनिष्पादिताभ्यां (भिषजा) वैद्यकविद्याविशारदौ (अश्विभ्याम्) विद्याव्यापिभ्यां (पशूनाम्) गवादीनां साकशात् (परिस्रुता) परितः स्रवन्ति=प्राप्नुवन्ति येन तत् (पयसा) दुग्धेन (तेजः) प्रकाशः (इन्द्रियावत्) प्रशस्तानि इन्द्रियाणि भवन्ति यस्मिन् (सारघम्) सुस्वादयुक्तं (मधु) मधुरादिगुणोपेतं (हविः) दुग्धादिक (दुग्ध) पयः (सरस्वत्या) विदुष्या स्त्रिया (अमृतः) मृत्युधर्मरहितः (सोमः) ऐश्वर्यम् (इन्दुः) सुस्नेहयुक्तश्चोत्पाद्यते, तौ योगसिद्धि प्राप्नुतः॥

भावार्थ—हे मनुष्यो! जो (सुताऽसुताभ्याम्) सिद्ध और असिद्ध (भिषजा) वैद्यक विद्या के वेत्ता (अश्विभ्याम्) विद्या में व्यापक दो विद्वान् जैसे (पशूनाम्) गायादि पशुओं के (परिस्रुता) सब ओर स्रवित होने वाले (पयसा) दूध से (तेजः) तेजस्वी करके प्रकाशित करने वाले (इन्द्रियावत्) इन्द्रियों को प्रशस्त करने वाले (सारघम्) अतिस्वादु (मधु) मधुरता आदि गुणों से युक्त (हविः) ग्रहण करने योग्य (दुग्धम्) दुग्धादि पदार्थ (सरस्वत्या) विदुषी स्त्री के द्वारा (इन्दुः) अतिस्नेह से उत्पन्न किये जाते हैं वैसे वे दोनों (सिद्ध-साधक विद्वान्) (अमृतः) मृत्युधर्म से रहित (सोमः) ऐश्वर्य को (इन्द्रियावत्=प्रशस्त इन्द्रियां वाले होकर) योगसिद्धि को प्राप्त करते हैं।

भावार्थ–अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा गोपा गवादीन् पशून् संरक्ष्य दुग्धादिना सन्तुष्यन्ति, तथैव मन आदीन्द्रियाणि दुष्टाचारात् पृथक् संरक्ष्य योगिभिरानन्दितव्यम्॥

भावार्थ—इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमा अलंकार है। जैसे गोपालक गायादि पशुओं का संरक्षण करके दुग्ध आदि से सन्तुष्ट होते हैं; वैसे ही मन आदि इन्द्रियों को दुष्ट आचरण से पृथक् रखकर योगी आनन्दित रहें॥

भाष्यसार–(१) योगसिद्धि का उपाय–सिद्ध और साधक योगी पुरुषों को योग-सिद्धि के लिए यह परमावश्यक है कि जैसे वैद्यकशास्त्र के वेत्ता गायादि पशुओं की रक्षा से उनके दुध से सन्तुष्ट रहते हैं; वैसे ही अपनी इन्द्रियों को वश में करने से योग-मार्ग के जिज्ञासु अमृत सोम =मृत्यु-धर्म से रहित आनन्द को प्राप्त करते हैं॥

(२) अलङ्कार—इस मन्त्र में उपमावाचक इत्यादि पदों के लुप्त होने से वाचकलुप्तोपमा अलंकार है। उपमा यह है कि योगी मनुष्य गोपालकों की भांति गो=इन्द्रियों का संयम करके रक्षा करें॥

[दयानन्द-यजुर्वेद-भाष्य-भास्कर से उद्धृत]

आचार्य सुदर्शनदेव सभा उपमन्त्री

वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन करें

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन है कि अगस्त, सितम्बर तथा अक्तूबर मास में अपनी सुविधा के अनुसार वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन अवश्य करें।

कुछ आर्यसमाजों ने श्रावणी उपाकर्म के दिनों ३० अगस्त से ७ सितम्बर तक की तिथियों में ही उपदेशक तथा भजनोपदेशक भेजने की मांग की है, परन्तु उपदेशकों की संख्या सीमित होने के कारण सभी आर्यसमाजों का इन तिथियों में प्रबन्ध कर सकना कठिन है। अतः इन तिथियों को छोड़कर यदि वेद सप्ताह का आयोजन करें तो सभा को प्रबन्ध करने में सुविधा रहेगी। अभी तक निम्नलिखित आर्यसमाजों के कार्यक्रम अंकित किए हैं–

सभा मन्त्री

आर्यसमाज महम जिला रोहतक	२८ से ३१ जुलाई
,, कनीना जिला महेन्द्रगढ	२, ३, ४ अगस्त
,, थानेसर जिला कुरुक्षेत्र	४ से ११ ,,
,, बहादुरगढ शहर जिला रोहतक	१० से १८ ,,
कन्या गुरुकुल खानपुर जिला सोनीपत	१७, १८ ,,
आर्यसमाज सोनीपत शहर	२६ अगस्त से १ सितम्बर
,, नरवाना जिला जीन्द	३० अगस्त से ७ सितम्बर
,, सालवन जिला करनाल	१ से ७ सितम्बर

वेद में प्रातः ईश स्तुति

(पं० धर्मदेव 'मनीषी' वेदतीर्थ गुरुकुल कालवा)

यजुर्वेद चौंतीसवे अध्याय के चौंतीस से अड़तीस इन पांच मन्त्रों को महर्षि दयानन्द जी महाराज ने 'संस्कार विधि' गृहस्थ प्रकरण में सब मनुष्यों को नित्य प्रातः उठकर चिन्तन करना चाहिये, ऐसा विधान किया है। उनके यहां अर्थ, भावार्थ और मन्त्रो से क्या शिक्षा प्राप्त होती है यह प्रस्तुत किया जाता है—

ओ३म् प्रातरग्निं प्रातरिन्द्र ७ हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रुद ७ हुवेम ॥१॥

अर्थ—हे मनुष्यो! जैसे हम (प्रातः) प्रभातवेला में (अग्निम्) पवित्र स्वप्रकाश स्वरूप परमात्मा व अग्नि को (प्रातः) प्रभात में (इन्द्रम्) परम ऐश्वय को (प्रातः) प्रभात में (मित्रावरुणा) प्राण और उदान को (प्रातः) प्रभात में (अश्विना) अध्यापक और उपदेशक को (हवामहे) स्वीकार करते हैं, वा बुलाते हैं। (प्रातः) प्रभात में (भगम्) सेवन करने योग्य भाग को (पूषणम्) पुष्टिकारक भोग को (ब्रह्मणः) धन वा वेद के (पतिम्) स्वामी व पालक को (प्रातः) प्रभात में (सोमम्) औषधि गण को (उत) और (रुद्रम्) जीव को भी (हुवेम) ग्रहण करवे है-वैसे तुम भी करो।

भावार्थ—जो मनुष्य प्रातः परमेश्वर की उपासना, अग्निहोत्र, ऐश्वर्य की उन्नति का उपाय, प्राण और अपान की पुष्टि, अध्यापक—उपदेशक विद्वानों की तथा औषधियों का सेवन और जीव को प्राप्त करने तथा जानने का प्रयत्न करते है, वे सब सुखो से अलंकृत होते हैं।

उपदेश—हम लोग प्रभातवेला में उस प्रकाश स्वरूप परमेश्वर को और प्रभातवेला मे उस परमेश्वर्यवान् परमेश्वर की और प्रातःकाल के अवसर में प्राण और उदान दोनो के समान सर्वस्नेही सर्वशक्तिमान् परमेश्वर को और प्रभातवेला में ही गुरु और उपदेशक माता और पिता दोनों को उपासना करे, आदर करें, व्यवस्थित करें और नमस्कार करें। प्रभातवेला में ही भजन करने योग्य, सबके पोषक, वेद और ब्रह्माण्ड के स्वामी प्रभु को और प्रभात काल में ही उस अन्तर्यामी प्रेरक और पापियो को रुलाने हारे, सर्वरोग नाशक जगदीश्वर की उपासना करें ॥१॥

ओ३म् प्रातर्जितं भगमुग्र ७ हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्त्ता।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भग भक्षीत्याह ॥२॥

अर्थ—हे मनुष्यो! जैसे हम (प्रातः) प्रभातवेला में (यः) जो (विधर्त्ता) विविध पदार्थों को धारण करने वाला है, (आध्रः) अपुत्र का पुत्र है, (चित्) और (यम्) जिस ऐश्वय को (मन्यमानः) स्वीकार करने वाला, (तुरः) शीघ्रकारी (चित्) और (राजा) प्रकाशमान् राजा है, (यम्) उक्त (भगम्) ऐश्वर्य का (चित्) भी (भक्षि) सेवन कर (इति) इस प्रकार से (आह) परमेश्वर उपदेश करता है। उस (अदितेः) अविनाशी कारण के तुल्य माता के (पुत्रम्) पुत्र (जितम्) जिस पुरुषार्थ से प्राप्त (उग्रम्) अत्युत्तम (भगम्) ऐश्वर्य को (हुवेम) हम ग्रहण करते हैं, वैसे तुम भी स्वीकार करो।

भावार्थ—इस मन्त्र में वाचक लुप्तोपमा अलकार है। हे मनुष्यो! तुम सब प्रातःकाल से लेकर शयन पर्यन्त यथाशक्ति सामर्थ्य विद्या और पुरुषार्थ से ऐश्वय को उन्नति करके आनन्द भोगो दरिद्रों को सुख प्रदान करो यह ईश्वर का उपदेश है।

उपदेश—प्रातः पांच घडी रात्रि रहे तब सदा जयशील अथवा प्रभातकाल में सब हृदयों पर वश करने वाले, सबके सेवन करने योग्य, तेजस्वी, बलशाली इस आदित्य को भी गिरने से बचाने हारे परमात्मा को हम उपासना करते हैं। जो सूर्य आदि लोको का विशेष रूप से धारण करने हारा है और दरिद्र पुरुष भी और बलशाली, वेगवान् पुरुष और समृद्ध राजा भी जिस सेवन भजन करने योग्य ईश्वर को अपना इष्टदेव स्वीकार करता हुआ मैं उसका भजन उपासना करुं इस प्रकार कहा करता है ॥२॥

ओ३म् भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्त स्याम ॥३॥

अर्थ—हे (भग) ऐश्वर्य से युक्त (प्रणेतः) पुरुषार्थ की ओर प्रेरणा करने वाले (भग) ऐश्वर्य [illegible] न वाले (सत्यराधः) सत्यधनों से युक्त (भग) भजनीय ईश्वर। तू (नः) हमारी (इमाम्) इस वर्तमान (धियम्) प्रज्ञा को (ददत्) देता हुआ (उदव) उत्तमता से रक्षा कर। हे (भग) विद्या रूप ऐश्वय को प्रदान करने वाले विद्वान्। तू (गोभिः) गौ आदि तथा (अश्वैः) घोडे आदि पशु और नृभिः) नायक नरों के साथ (नः) हमें (प्रजनय) प्रसिद्ध कर। हे (भग) भजन करने वाले सन्त पुरुष! जिससे हम (नृवन्तः) नरो से युक्त (प्रस्याम) अच्छे प्रकार होवें, वैसा कर॥

भावार्थ—मनुष्य जब जब ईश्वर प्रार्थना तथा विद्वानों का संग किया करें तब प्रज्ञा की ही याचना करें, अथवा सन्त पुरुषों को कामना किया करें॥

उपदेश—हे भगवन् परमैश्वर्यवन् (भग) ऐश्वर्य के दाता संसार वा परमार्थ में आप ही हो तथा (भग प्रणेतः) आपके ही स्वाधीन सकल ऐश्वर्य हैं, अन्य किसी के अधीन नहीं। आप जिसको चाहो उसको ऐश्वर्य देओ। सो आप कृपा से हम लोगों का दारिद्रय छेदन करके हमको परमैश्वर्य वाले करें। क्योंकि ऐश्वर्य के प्रेरक आप ही हो। हे भगवन्! (सत्यराधः) सत्यैश्वर्य की सिद्धि करने वाले आप ही हो, सो [illegible] होता है उस अत्य ऐश्वर्य का दाता आपसे भिन्न कोई नहीं है। (भगेमां धिय ददन्नः) हे सत्य भग! ऐश्वर्य सर्वोत्तम बुद्धि हमको आप दीजिये जिससे हम लोग आपके गुण और आपकी आज्ञा का अनुष्ठान ज्ञान इनको यथावत् प्राप्त हों। सो हमको सत्यबुद्धि, [illegible] और सत्यगुणों को (उदव)=उद्गमय=प्रापय=प्राप्तकर जिससे हम लोग सूक्ष्म से भी सूक्ष्म पदार्थों को यथावत् जाने (भग प्र णो जनय) हे सर्वैश्वर्योत्पादक! हमारे लिए भग=ऐश्वर्य को अच्छी प्रकार से उत्पन्न कर। (गोभिरश्वैः) सर्वोत्तम गाय घोडे और मनुष्य इनसे सहित अनुत्तम=अत्युत्तम ऐश्वर्य हमको सदा के लिये दीजिये। हे सर्वशक्तिमन्! (भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम) आपको कृपा कटाक्ष से सब दिन हम लोग उत्तम उत्तम पुरुष स्त्री और सन्तान, भृत्य वाले हो। आपसे हमारी अधिक यही प्रार्थना है कि कोई मनुष्य हममे दुष्ट और मूर्ख न रहे, तथा न पैदा हो। जिससे हम लोगों को सर्वत्र सत्कीर्ति हो और निन्दा कभी न हो।

(महर्षि दयानन्द कृत 'आर्याभिविनय' द्वितीय प्रकाश। मन्त्र ११)

(क्रमशः)

सम्पादकीय

नशा व शराबखोरी पूरी दुनियां की समस्या

प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

(गतांक से आगे)

हरयाणा प्रदेश में शराबबन्दी का अभियान छेड़ने के चार बड़े कारण हैं—

१—जन स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव, गाढ़े पसीने की कमाई की बर्बादी, समाज में अच्छी मर्यादाओं का समाप्त होना तथा चरित्र का ह्रास।

२—महिलाओं की दुर्दशा और उन पर अत्याचार।

३—बच्चों के सब प्रकार के विकास का मार्ग अवरुद्ध।

४—जन-साधारण के मनोबल में गिरावट।

हरयाणा में जन स्वास्थ्य कितना गिरता जा रहा है। इसका सब से ज्वलन्त प्रमाण तो यह है कि एक अध्ययन के अनुसार हरयाणा और पंजाब के लोगों का औसत कद ५ सन्टीमीटर से भी अधिक कम हो चुका है। छोटे छोटे बच्चों और नवयुवकों के चेहरे पर लाली बहुत कम देखने को मिल रही है और महिलाओं के स्वास्थ्य में तो बेहद गिरावट आई है। घी दूध दही की जगह 'हरयाणा जहां दूध दही का खाणा' था वहां चाय और शराब आ गई है। हरयाणा के ग्रामों में घी दूध खाकर नवयुवक कुश्ती कबड्डी में व्यस्त रहते थे। अब उसमें बहुत कमी आ गई है। ठीक है आज भी पहलवानों में हरयाणा का स्थान ऊपर है परन्तु अखाड़े और कुश्ती का शौक बहुत कम हो गया है। किसान, मजदूर और छोटे कारोबारी लोगों के बच्चे ही इन खेलों में हिस्सा लेते थे। परन्तु जनसंख्या के बेहताशा बढ़ने और मंहगाई के कारण एक ओर जमीन की मलकियत घटती जा रही है और दूसरी तरफ छोटे छोटे किसानों, मजदूरों आदि की खरीदने की शक्ति कम होती जा रही है। जो थोड़ा बहुत बहुत पशुओं की तरह परिश्रम करके कमाते भी हैं वह भी शराब के ठेके पर दे आते हैं। सरकारी कर्मचारी राजनेता या सम्पन्न व्यापारी और उद्योगपति तो शराब दूसरों के पैसे से पीते हैं। सरकारी कर्मचारी घूस लेकर, राजनेता जनता के चन्दे से और साहूकार लोग करों की चोरी और शोषण से। किसान मजदूर आदि गरीब लोग ही अपने गाढ़े पसीने की कमाई की आमदनी से शराब पीते हैं। ऐसे लोगों के बच्चे कैसे पल सकते हैं या विकास कर सकते हैं और उनकी माताएं सब प्रकार के अभाव के कारण सूख सूख कर मरती हैं। बहुत सी महिलाओं को तो मौत की दावत देनी पड़ती है; वह भी सबको मिलती नहीं, और जीवनभर अभाव यातनाओं और सन्तान की बर्बादी अपनी आंखों के सामने देखनी पड़ती है।

गरीब लोगों की आर्थिक बर्बादी से बढ़कर समाज में जो अच्छी परम्पराएं और मर्यादाएं हैं, शराब के नशे में मनुष्य उनको तार तार कर देता है और सब प्रकार से चरित्र का ह्रास भी कर डालता है। शराब तो अनेक बुराइयों को जन्म देती है और व्यक्ति तथा समाज दोनों को पतन के गहरे गर्त में धकेल देती है।

२—मर्यादाओं की समाप्ति और चरित्र के ह्रास का शिकार बनती हैं महिलाएं। बलात्कार की जितनी घटनाएं आज समाचार पत्रों में पढ़ने को मिलती हैं, व कभी किसी ने सोची भी नहीं थी। शिक्षित होने के कारण आज ग्रामीण महिलाएं भी नौकरी करने के लिए बसों में आती जाती हैं। जो अशिष्ट व्यवहार और जोर-जबरदस्ती इन महिलाओं को सहनी पड़ती है उसे वे ही जानती हैं। नाहरी ग्राम की लड़कियों और महिलाओं ने ऐसी घटनाओं का शिकार होने के कारण ही मैदान में उतरने का फैसला किया और शराब की दुकान पर धरना लगाया। महिलाओं को अपने शरीर पर तो सब प्रकार के प्रहार और अत्याचार शराबियों के हाथों सहन करने ही पड़ते हैं, इससे भी बढ़कर जब उसका पति शराब में सब कुछ उड़ा देता है तब अपने बच्चों को भूखा नंगा देखकर उसके मन पर बीतती है उसे मां का हृदय ही जान सकता है। गरीब किसान मजदूर के घर में तो यह दृश्य उपस्थित होंगे ही यदि पुरुष शराब पीयेंगे। हरयाणा में आज अनेक घर नरक बनते जा रहे हैं और अच्छे खाते पीते किसानों के घर भी उजड़ रहे हैं।

क्रमशः

तोहड़ा का कुतर्क

फाजिल्का अबोहर के १०५ गांव हरयाणा को देने की प्रधानमन्त्री की बात पर ही तोहड़ा ने कहा है कि उनको १०४ गांव दे दिये जायें तो वे चण्डीगढ हरयाणा को देने के लिये तैयार हैं। फाजिल्का अबोहर के १०५ गांव भारत सरकार या श्रीमती इन्दिरा गांधी ने हरयाणा को नहीं दिये। ये १०५ गांव हिन्दी भाषी हैं। यह बात १९५६ में ज्ञानी करतारसिंह और सरदार प्रतापसिंह कैरों ने पंजाबी हिन्दी क्षेत्रों का फैसला करते समय मानी थी तथा दिसम्बर १९६५ में अकाल तख्त पर बैठकर अकाली नेताओं ने मोहर लगाई थी। इसी आधार पर सन्त फतेहसिंह ने १९७० में हरयाणा को ये गांव देने के लिए प्रस्ताव भेजा था, ताकि उनको चण्डीगढ मिल सके। चण्डीगढ शाह कमीशन ने हरयाणा को दिया था। वास्तव में तो चण्डीगढ और अबोहर फाजिल्का दोनों ही हरयाणा को मिलने चाहियें। आज भी यदि इन दोनों जगह की जनता से फैसला करवायें तो कोई भी पंजाब में नहीं जाना चाहेगा, हरयाणा में ही वे आना पसन्द करेंगे।

अकाली हर बार लम्बे चौड़े इलाके मांग लेते हैं। क्या किसी भी सरकार या आयोग को यह अधिकार दिया जा सकता है कि लोगों की इच्छा के विरुद्ध वे किसी भी इलाके को किसी प्रदेश से मनमाने ढंग से जोड़ दें।

भारत सरकार को यही चाहिए कि कौन से गांव या इलाके किस प्रदेश में जाना चाहते हैं यह फैसला वहां की जनता को दे। यदि एक सौ घर नहीं एक हजार घर गांव भी हरयाणा या हिमाचल प्रदेश से निकलकर पंजाब में जाना चाहेंगे तो किसी को ऐतराज नहीं होना चाहिये। इसी प्रकार यदि पंजाब से कोई गांव या इलाका हरयाणा व हिमाचल प्रदेश में जाना चाहते हैं तो यह छूट उनको भी हो।

अकाली इस सिद्धान्त को मानें, धमकियां देना और दबाव देकर गलत फैसले करवाने की आदत छोड़ें तो समस्या हल हुई पड़ी है।

चण्डीगढ भी श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सन्त फतेहसिंह की जल कर मरने की धमकी के कारण ही दिया था। वे अपने फैसले में इसके लिए कोई तर्क नहीं दे सकी। जबकि शाह कमीशन ने चण्डीगढ समेत खरड़ तहसील हरयाणा को देने के लिए ठोस तर्क दिये थे।

प्रो० शेरसिंह

पता परिवर्तन

सभी आर्य बन्धुओं को सूचित किया जाता है कि अब मेरा पत्र व्यवहार आदि का स्थाई पता निम्नलिखित है—

सुदर्शनदेव आचार्य
दयानन्द आश्रम नलवा, वाया भिवानी
जिला हिसार

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

सम्पादक के नाम पत्र

'१०+२ प्रणाली तथा संस्कृत' २१ जून ८५ के अंक में आपने इस विषय पर जो विस्तृत सम्पादकीय लिखा है, वह सर्वथा समीचीन है, परन्तु केवल लेख मात्र लिखना पर्याप्त नहीं, अपितु सभा को इस संबन्ध में युद्धस्तर पर स्थायी रूप से प्रयास करना चाहिए कि राज्य और देश के स्तर पर शिक्षा और सेवा के क्षेत्र में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त हो तथा हिन्दी और संस्कृत के अध्ययन और प्रयोग को प्रोत्साहन दिया जाए। पाठ्यक्रम ऐसा हो कि दोनों भाषाओं के पढ़ने के मार्ग में कोई नियम बाधक न हो और सर्वत्र अध्यापकों की नियुक्ति हो।

जिस दिल्ली के अनुकरण पर यह पाठ्यक्रम अपनाया गया है, वहाँ भी अंग्रेजी अनिवार्य नहीं है। केवल कोई भी एक या दो या तीन भाषाएं पढ़ने का नियम रहे या अनिवार्यता केवल हिन्दी की हो, शेष सब भाषाएं वैकल्पिक रहें। पुनः इस पाठ्यक्रम में एक ही भाषा कोर और ऐच्छिक दोनों रूपों में पढ़ी जाए। यह नियम तो सर्वथा निरर्थक विषयों की संख्या की दृष्टि से छात्रों के प्रति भेदभावपूर्ण तथा संस्कृत के लिए घातक है। अतः सभा को इस सम्बन्ध में त्वरित और प्रभावी कार्यवाही करनी चाहिए।

जयदेव आर्य
राजकीय महाविद्यालय नारनौल

गुरुकुल के छात्रों को सूचना

चौ॰ रतीराम लक्ष्मीदेवी धर्मार्थ ट्रस्ट रोहतक हर वर्ष गुरुकुलों में पढ़ रहे निर्धन छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्तियां प्रदान करता है। इसके लिए मार्च में प्रार्थना पत्र भिजवाये जा सकते हैं।

ब्रह्मचारी ओमस्वरूप मन्त्री

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्य केन्द्रीय सभा करनाल

प्रधान—श्री वेदप्रकाश आर्य, उपप्रधान—डा॰ ओमप्रकाश गुप्त, नरदेव शास्त्री, कृष्णलाल बतरा, दिवान विशनदास आर्य, मन्त्री—ओमप्रकाश, प्रचारमन्त्री—लाजपत आर्य, उपमन्त्री—शमशेर कुमार आर्य, भोपाल आर्य, कोषाध्यक्ष—सत्यपाल आर्य, निरीक्षक—श्री आत्मप्रकाश आर्य, यज्ञ प्रमुख—लक्ष्मीनारायण आर्य

आर्यसमाज गुरुकुल कुरुक्षेत्र

प्रधान—श्री धर्मवीरसिंह विद्यालंकार, उपप्रधान—श्री मंगतराम मन्त्री—डा॰ तुलसीराम विद्याभास्कर, एम॰ ए॰ पी॰ एच॰ डी॰, उपमन्त्री—चन्द्रसिंह, कोषाध्यक्ष—उदयसिंह

आर्यसमाज फरमाना (महम) जिला रोहतक

प्रधान—श्री नन्दलाल आर्य, उपप्रधान—धूपसिंह आर्य, मन्त्री—वेदराज शास्त्री, उपमन्त्री—नफेसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—बनारसीदास आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—रामनिवास आर्य

आर्यसमाज सितारपुर तोताहेड़ी जिला महेन्द्रगढ़

प्रधान—रामेश्वरदयाल शर्मा, उपप्रधान—रामचन्द्र आर्य थानेदार मन्त्री—राधेश्याम आर्य, उपमन्त्री—मामचन्द आर्य, कोषाध्यक्ष—राव मामचन्द नम्बरदार, पुस्तकाध्यक्ष—रतिराम, निरीक्षक—श्रीराम

फतेहपुर में आर्य वीर दल स्थापित

आर्यसमाज फतेहपुर जिला कुरुक्षेत्र के तत्वावधान में नये युवकों को आर्यसमाज में लाने के लिए नित्यप्रति प्रातः सायं आर्य वीर दल की शाखा प्रारम्भ की गई। १४-७-८५ को प्रातः आर्यसमाज मन्दिर में आर्य वीर दल की शाखा का विधिवत् प्रतिष्ठा समारोह आर्य वीर दल हरयाणा के सहसंचालक पं॰ उमेदसिंह जी की अध्यक्षता में मनाया गया। इस समारोह में उपस्थित आर्य वीरों को पं॰ उमेदसिंह जी के अतिरिक्त धर्मदेव विद्यार्थी और आर्यसमाज के प्रधान युधिष्ठिरपाल ने सम्बोधित किया। तत्पश्चात् श्री सुभाषचन्द एडवोकेट ने आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद किया और आर्य वीर दल का चुनाव इस प्रकार हुआ—

नगरनायक—श्री आजादसिंह आर्य, शाखानायक—सतपालसिंह आर्य शाखामन्त्री—दिलबागसिंह आर्य, अधिष्ठाता—सुभाषचन्द्र एडवोकेट

आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सिरसा

आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सिरसा में दिवंगत पूज्य बाबा सन्त विनोबा भावे का जन्म दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। नगर के १० विद्यालयों के विद्यार्थियों ने पूज्य बाबा जी के विचार प्रस्तुत किए। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता मा॰ बाबू बजरंगदास जी एडवोकेट ने की। विद्यालय के प्राचार्य श्री द्वारका प्रसाद जिन्दल एवं प्रबन्ध समिति के उपाध्यक्ष श्री जयमलसिंह एडवोकेट ने सभी का विद्यालय पहुँचने पर हार्दिक धन्यवाद किया। इस अवसर पर श्री नित्यानन्द जी आर्य ने विद्यार्थियों का मार्ग-दर्शन किया।

डा॰ सांगवान प्रबन्धक

मा॰ सत्यपाल मरहेटा को विदाई समारोह

कंवारी १५ जुलाई ८५ राजकीय उच्च विद्यालय में कार्यरत हिन्दी अध्यापक श्री मरहेटा का तबादला नारनौंद (भैणी) हो गया है। श्री मरहेटा ने कंवारी हाई स्कूल में चार साल बहुत ही अच्छे ढंग से बच्चों व समाज की सेवा की। वैसे भी मरहेटा जी एक योग्य चरित्रवान् अध्यापक हैं और सामाजिक कार्यों में बढ़चढ़ कर भाग लेते रहे हैं। इस अवसर पर आर्य समाज कंवारी की ओर से उनको विदाई समारोह का आयोजन किया गया। श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने मरहेटा की सेवाओं पर प्रकाश डाला और प्रभु से प्रार्थना की कि भविष्य में भी वे इसी प्रकार से बच्चों की सेवा करते रहेंगे। इस अवसर पर रामकुमार भारद्वाज (हिसार) पं॰ बृजलाल, डा॰ कृष्णकुमार, इन्द्रसिंह दलाल, हरिसिंह आर्य आदि वक्ताओं ने भी मा॰ जी की सेवाओं पर प्रकाश डाला। आर्यसमाज की ओर से यज्ञ का भी आयोजन किया गया। क्रान्तिकारी जी ने इस अवसर पर मा॰ सत्यपाल मरहेटा को दो पुस्तकें भेंट की।

मन्त्री आर्यसमाज कंवारी

ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

१ से ७ जून तक बहन करुणा शास्त्री के प्रयास से ग्राम सालमोर कलाँ जिला हिसार में ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर लगाया गया जिसमें महर्षि दयानन्द वेद प्रचार ट्रस्ट हिसार का आर्थिक सहयोग विशेष रहा शिविर में ७० नवयुवकों ने भाग लिया। एक जून को प्रातः महात्मा चेतनदेव जी ने ओ३म् ध्वज फहराया। प्रतिदिन प्रातः यज्ञ किया गया। सुबह सायं नवयुवकों को आर्य वीर दल का योग्य व्यायाम शिक्षक श्री समेरसिंह आर्य (मेरठ) द्वारा व्यायाम, आसन, दण्ड बैठक, लाठी चलाना आदि का प्रशिक्षण दिया गया। बौद्धिक शिक्षा के लिए समय समय पर विद्वान्, भजनीक, उपदेशक पधारे। महात्मा चेतनदेव जी, डा॰ मदनगोपाल स्वामी रामानन्द जी, स्वामी कीर्तिदेव जी, पण्डित प्रभुदयाल प्रभाकर, मा॰ जिलेसिंह आदि के प्रवचन हुये। पं॰ रामदत्त, पं॰ सुलतानसिंह, पं॰ सुखीराम, महाशय रामस्वरूप आदि के शिक्षाप्रद भजन हुए। कई नवयुवकों ने बीड़ी व शराब का सदा के लिये त्याग किया। अन्त में कुछ लड़कों को महात्मा चेतनदेव जी के कर-कमलों द्वारा पुस्तकें बटवाई गई। सभा को २०० रु॰ दान दिये गये।

वेदप्रचार कार्य की उन्नति के सुझाव भेजें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक अधिवेशन १९ मई को सम्पन्न हुआ है। अधिवेशन की कार्य सूची में वेदप्रचार कार्य को किस प्रकार उन्नत किया जाये, विचारणीय विषय था, परन्तु उन दिनों रोहतक में धारा १४४ लागू होने के कारण अधिक देर तक अधिवेशन की कार्यवाही न चलने के कारण इस विषय पर विचार नहीं हो सका।

अतः ११ जून की अन्तरंग सभा के निश्चयानुसार आर्यसमाजों के अधिकारियों तथा सभा के प्रतिनिधियों से निवेदन है कि वेदप्रचार कार्य को उन्नत कैसे किया जाये, इस विषय पर अपने सुझाव संक्षिप्त रूप में साफ साफ शब्दों में लिखकर शीघ्र भेजने का कष्ट करें, ताकि सभा की आगामी अन्तरंग सभा की बैठक में उन पर विचार हो सके।

वेदप्रचार सप्ताह के आयोजन का अनुरोध

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन है कि गत वर्षों की भांति जुलाई से सितम्बर मास में अपनी सुविधानुसार अपने आर्यसमाज में वेदप्रचार सप्ताह अथवा वार्षिक वेदप्रचार का आयोजन करके सभा को सूचित करें।

वेदप्रचार कार्य में शिथिलता आने से ही अवैदिक मतों का प्रचार तथा शराब आदि दुर्व्यसनों का प्रसार होने लगता है। अतः आप अपने यहां वेदप्रचार सप्ताह की तिथियां निश्चित करके यथाशीघ्र सभा को सूचित करें ताकि सभा की ओर से समुचित प्रबन्ध हो सके। इस समय सभा के वेदप्रचार विभाग में निम्नलिखित उपदेशक तथा भजनोपदेशक कार्य कर रहे हैं—

१—पं० चन्द्रसेन वैदिक मिशनरी उपदेशक
२—पं० सुरेशकुमार शास्त्री विद्यावाचस्पति एम० ए० उपदेशक
३—ब्रह्मचारी महेन्द्रसिंह शास्त्री विद्यावाचस्पति उपदेशक
४—ब्रह्मचारी श्रुतबन्धु शास्त्री विद्यावाचस्पति बी० ए० उपदेशक
५—पं० विद्याभूषण जी आर्य भजनोपदेशक
६—पं० शेरसिंह जी आर्य ,,
७—श्री मुन्शीलाल जी आर्य ,,
८—पं० चिरञ्जीलाल जी आर्य भजनमण्डली
९—पं० ईश्वरसिंह जी तूफान आर्य ,,
१०—पं० तेजपाल आर्य ,, ,,
११—पं० सुमेरसिंह आर्य ,, ,,
१२—पं० हरिश्चन्द्र आर्य ,, ,,

आशा है आप अपने निश्चय से वापसी डाक सूचित करेंगे। प्रायः आर्यसमाजें शिकायत करते हैं कि वर्ष भर में उनके यहां प्रचार व्यवस्था नहीं की गई। अतः वेदप्रचार की मांग करके अपनी तिथियां सभा को पत्र लिखकर सुरक्षित करवा लेवें।

सत्यवीर शास्त्री
सभा मन्त्री

देख मुझे होता विस्मय है

यशपाल आर्य बन्धु, आर्यनिवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद

संसार आश्चर्यजनक वस्तुओं से भरा पड़ा है। किन्तु सबसे आश्चर्यजनक वस्तु स्वयं मानव ही है। यह क्या कम आश्चर्य की बात है कि मानव का चोला पाकर भी वह मानव नहीं बन पा रहा। यदि मानव का चोला पा लेने मात्र से ही वह मानव हो जाता तो वेद का यह आदेश क्यों होता कि मनुर्भव अर्थात् मनुष्य बनो। वेद का यह आदेश पशु पक्षियों के लिए तो है नहीं और न ही पशु पक्षी मानव बन ही सकते हैं। फिर मानव को मानव बनने का यह उपदेश कैसा? स्पष्ट है कि कोई ऐसा विशेष गुण है कि जिसे पा लेने से ही मानव वास्तविक मानव बन पाता है और वह है मानवता।

मानवता क्या है? पशुता का प्रतिवाद ही मानवता है और फिर पशुता क्या है? पश्यति इति पशु के अनुसार जो केवल देखता है, विचारता नहीं वह पशु है और मनुते इति मानवः के अनुसार मनुष्य वह है जो विचार सकता है। 'मत्वा कर्माणि सीव्यति इति मनुष्यः' अर्थात् मनुष्य वह है कि जो मनन या विचारपूर्वक कर्मों को करता है। वस्तुतः 'मननात्मनुष्यः' के अनुसार मननशील होने से वह मनुष्य है। पर सोचें तो सही कि क्या वस्तुतः हमारे कर्म विवेकपूर्वक सम्पादित हो रहे हैं। यदि नहीं तो फिर हम मनुष्य कैसे? है कि नहीं आश्चर्य की बात कि मनुष्य का चोला पाकर भी हम मनुष्य नहीं।

विस्मय का एक कारण और भी है। वह यह कि–आज का मानव जितना मानव से शंकित एवं भयभीत है, उतना किसी अन्य प्राणी से नहीं। सत्य तो यह है कि–

मानव ऊपर आज मानव का लेशमात्र विश्वास नहीं।
मानव मानव से शंकित है प्रेमभाव का वास नहीं॥
कोई भले कहे उत्थान इसमें कहता इसे विकास नहीं।
मेरे मत में आज वस्तुतः घोर पतन का युग आया॥

इतना ही नहीं कवि तो यहां तक कहता है कि–

देख मुझे होता विस्मय है।
पशु से पशु कब डरते?
खग से खग भी कब भय करते;
किन्तु आज इस जग में देखो।
मानव को मानव से भय है॥

और आज स्थिति यह है कि—

शैतान पर विश्वास भले ही कर लूं।
आदमी देखकर डर जाता हूं।

आज का आदमी मुखौटों में है और इन मुखौटों से उसकी पहचान ही समाप्त हो गई है। सत्य है—

सभी नकाबों में हैं, चहरों को पढ़ें तो कैसे?

और यदि पहचान भी हो जाये तो फिर भी मुसीबत क्यों? इस का उत्तर कवि इन शब्दों में देता है—

अब नहीं इन्सान से डर लग रहा है,
अब नहीं शैतान से डर लग रहा है।
प्रीत की भाषा अपावन बन चुकी है,
आज की पहचान से डर लग रहा है॥

आज मानव स्वयं मानव के लहू का पिपासु बना बैठा है। यह एक वास्तविकता है कि जितना मानव का लहू स्वयं मानव ने बहाया है उतना किसी अन्य नहीं। मनुष्य के प्रति जितना क्रूर स्वयं मनुष्य है, उतना कोई अन्य प्राणी नहीं। परम पिता परमात्मा ने इसे दो हाथ क्या इसीलिए दिए थे कि वह औरों को पीड़ा पहुँचाता फिरे? दूसरों का चेहरा ही नोच डाले या जीवन लीला ही समाप्त कर डाले? क्या यही उसका विवेक है, यही है उसका पुरुषार्थ? पता नहीं इसके भीतर का मानव कहां चला गया है कहां खो गई है इसकी मानवता? नैतिकता नाम की कोई वस्तु शेष नहीं रही और स्थिति यह है कि—

नैतिकता नाता तोड़ भगी है न जाने कहां, मानवता हाय आज फूट फूट रोती है। वस्तुतः मानवता विहीन मानव भी कोई मानव है–

दिल में उल्फत नहीं तो कुछ भी नहीं, गुल में नकहत नहीं तो कुछ भी नहीं
आदमी में लाख मोहर हों, आदमीयत नहीं तो कुछ भी नहीं॥

जब तक हम मानवता का मान नहीं करेंगे, संसार का कल्याण नहीं हो सकता। सत्य मानिये जिस दिन हम मानवता का मान करने लगेंगे, मानवता जो उठेगी, दानवता लुप्त हो जायेगी और धरा फिर से स्वर्ग बन जायेगी।

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा सचालित शराबबन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए जिन ग्रामों में शराब के ठेके खुले हुए हैं, उन ग्राम पंचायतों के सरपचों तथा पचों को प्रेरणा करके प्रस्ताव पास करवाने का यत्न करें कि शराब का ठेका बन्द किया जावे। प्रस्ताव का प्रारूप निम्न प्रकार प्रकाशित किया जा रहा है।

सेवा में,

माननीय उपायुक्त महोदय

आबकारी एवं कराधान विभाग हरयाणा, चण्डीगढ़

निवेदन है कि हमारे ग्राम............जिला............पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक.........में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है—

यह पचायत शराब पीने की बढती हुई प्रवृत्ति को ग्राम्य जीवन के लिये बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गांव में अनाचार, अशान्ति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की नशाबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र मे चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द कर दी जाए और भविष्य मे कदापि भी यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाए ताकि उक्त बुराइयो से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे। सधन्यवाद!

ता० .... विनीत

हस्ताक्षर ग्राम पंचायत के सदस्य

प्रतिलिपि सेवा में—

१. प्रधानमन्त्री, भारत सरकार नई दिल्ली।

२. मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

नोट—जिन पचायतों के प्रस्ताव ३० सितम्बर ८५ तक सरकार के पास पहुँच जावेंगे, पचायत एक्ट के अनुसार उन ग्रामों में शराब के ठेके नीलाम नहीं हो सकते।

अत: आर्यसमाजं अपने निकट के ग्रामों में जहां शराब के ठेके खुले हैं, वहां की पचायतों से प्रस्ताव पास करवाकर ३० सितम्बर तक भिजवाने का यत्न करें।

प्रो० शेरसिंह
सभा प्रधान

भीगी सी पलकें सावन की

'भावुक' हाल कहे दिल का
पुनि। लौट गयी व्यथा मन की।
घनघोर घटा के आंचल से
जल की थोड़ी बून्दे झनकी॥
दादुर मोर पुकार करे
देखो अनमोल छटा घन की।
ढोलक ठुमके मन्जिरा छनके
पायल खनकी नव जोबन की॥
मदमस्त भरे मन मस्त करे
भीगी सी पलके सावन की।
उस दिल का आलम क्या होगा
जिस दिल में बसी निज साजन की॥

डा० अनिलकुमार पंवार 'भावुक'
ग्राम मकोंड़ा कलां जिला सहारनपुर (उ.प्र.)

आर्यसमाज मन्दिर का शिलान्यास

ग्राम नचवा जिला हिसार में १२-७-८५ को रात्रि में वेदप्रचार किया गया। १३-७-८५ प्रात:काल यज्ञ के बाद श्री राजकुमार उपायुक्त महोदय हिसार के कर-कमलों द्वारा आर्यसमाज मन्दिर की आधार शिला रखी गई। तत्पश्चात् सार्वजनिक सभा का आयोजन श्री सेठ ओमप्रकाश जिन्दल की अध्यक्षता में हुआ जिसका संचालन सभा के उपदेशक श्री अत्तरसिंह क्रान्तिकारी ने किया। स्वामी आनन्द मुनि, पं० सुलतानसिंह, पं० प्रभुदयाल प्रभाकर के भजन तथा सीताराम आर्य, प० विश्वामित्र, आचार्य सुदर्शनदेव सभा उपमन्त्री, श्री शिवराम जिन्दल उपायुक्त श्री राजकुमार, स्वामी जीवनानन्द जी, श्री रामजीलाल आदि वक्ताओं ने आर्यसमाज क्या है और क्या चाहता है पर प्रकाश डाला। वक्ताओं ने नवयुवको को आर्यसमाज में दीक्षित होने का आग्रह किया। मन्दिर के लिये २१०००) श्री पुष्करलाल आर्य ने नकद दान दिया तथा ५१०००) का और दान देने का संकल्प किया। उपायुक्त हिसार ने ५ हजार रु० देने तय किये।

श्री अत्तरसिंह क्रान्तिकारी ने इस अवसर पर उपायुक्त महोदय को शराबबन्दी आन्दोलन की एक पुस्तिका भेंट की तथा आग्रह किया कि हमारे देहात क्षेत्र में अवैध तरीके से ठेकेदारों की शराब की बिक्री पर कड़े व ठोस कदम उठाकर रोक लगाई जावे।

श्रावणी पर वेद प्रचार विशेषांक

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी सर्वहितकारी की ओर से श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर २८ अगस्त को वेदप्रचार विशेषांक प्रकाशित किया जायेगा। आर्यसमाजें तथा संस्थाएं प्रचारार्थ इसकी अधिक से अधिक प्रतियां मंगवाने का आदेश शीघ्र भेजें। व्यवस्थापक

आर्यसमाज को बचाया जा सकता है

—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

कृण्वन्तो विश्वमार्यं का लक्ष्य लेकर सारे संसार को शारीरिक, सामाजिक व आत्मिक उन्नति को अपना उद्देश्य मानने वाले आर्य समाज के उच्चस्तरीय (सार्वदेशिक व प्रादेशिक) सगठनो में भी ऐसे व्यक्तियों का अभाव है जो अपना सारा समय अपनी अपनी सभा के कार्यों में लगा सकें। इसलिए सार्वदेशिक तथा प्रान्तीय सभाओं के मन्त्रि परिषद् में ऐसे ही व्यक्तियों को नियुक्त किया जाये जो अपना सारा समय सभा के कार्य में लगा सकें। सार्वदेशिक तथा प्रादेशिक सभाओं में नियुक्त मन्त्रिपरिषद के सदस्य एक दूसरे से भिन्न होने चाहिये।

४—प्रस्तावित पद्धति के अन्तर्गत कुछ विभागों के नाम इस प्रकार हो सकते हैं—

१- संगठन, २- वित्त, ३- कार्यालय, ४- आर्यशिक्षा, ५- प्रचारक विद्यालय व प्रचार की आधुनिक शैली का योजना विभाग, ६- अनुसन्धान, ७- प्रकाशन, ८- राजनीति, ९- दलितोद्धार, १०- शुद्धि, ११- गोरक्षा, १२-न्याय व अनुशासन, १३- अन्धविश्वास निवारण, १४- कुरीति निवारण, १५- विदेश प्रचार, १६- महिला प्रचार, १७- युवा संगठन, १८- वनपर्वत प्रचार, १९- राष्ट्रभाषा, २०- संस्कृत, २१- मास मदिरा निषेध, २२- जनसम्पर्क, २३- वर्ण-आश्रम विभाग, २४- आर्य राजसभा आदि।

५—प्रान्तीय सभाओं के साधन और सामर्थ्य सीमित होते हैं। इसलिये वे समूचे प्रान्त में व्यापक प्रचार की व्यवस्था नहीं कर पाती। यदि हर जिले या तहसील को इकाइया मानकर अपने अपने जिले और तहसील में प्रचार की व्यवस्था का दायित्व जिले तथा तहसील के स्तर पर बनाये गये संगठन को सौंपा जाये तो निश्चय से प्रचार कार्य में तेजी आ सकती है। इस दृष्टि से आर्यसमाज के विधान में जिले तथा तहसील स्तर पर गठित उपसभाओं का प्रावधान होना चाहिये। जिला उपसभाओं के प्रधानों को नियुक्ति प्रान्तीय सभा के प्रधान द्वारा तहसील उपसभाओं के प्रधानों की नियुक्ति जिला उपसभा के प्रधान द्वारा की जायेगी। अपनी अपनी कार्यकारिणी बनाने का अधिकार संबद्ध उपसभाओं के प्रधानों को होगा।

६—प्रत्येक स्तर पर सभाओं की साधारण सभाओं का निर्माण अपने से निचलीत सभाओं द्वारा होगा।

७—सर्वोच्च सत्तासम्पन्न सन्यासी मण्डल के अतिरिक्त समस्त नियुक्तियां करने के लिए होंगी। एक बार तीन वर्ष के लिए नियुक्त व्यक्ति अगली ही बार दुबारा नियुक्त न हो सकेगा।

८—यह मात्र रूपरेखा है। इसे कार्यान्वित करने के लिये नीचे ऊपर तक समस्त विधान को नये सिरे से तयार करना होगा।

९—आर्यसमाज के संगठन में साप्ताहिक सत्सगों में २५ % उपस्थिति आय का शतांश चन्दा तथा आचार सम्बन्धी उपनियमों का प्रायः बिल्कुल पालन नहीं होता। अधिकांश आर्यसमाजों में तो न कोई रजिस्टर होता है न साप्ताहिक सत्संग लगता है, न कोई आय का शतांश चन्दा देता है और न सभासद घोषित करते समय सदाचार पर ध्यान दिया जाता है। यह जानते हुए भी कि हम जो कुछ कर रहे हैं यथार्थ के विपरीत है, प्रधान, मन्त्री व कोषाध्यक्ष हस्ताक्षर करते चले जाते हैं। परिणामतः आर्यसमाज का रिकार्ड नीचे से ऊपर तक झूठा बनता चला जाता है। फिर भी हम "सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिये" की रट लगाये जाते हैं। इसलिए ऐसे एक भी सदस्य को आर्यसभासद घोषित न किया जाये—

(क) जो अपनी आय का शतांश चन्दे के रूप में न देता हो।

(ख) जिसकी साप्ताहिक सत्संगों में उपस्थिति २५ % से कम हो।

(ग) जो किसी भी रूप में मास या मदिरा का सेवन करता हो।

१०—मत देने के लिये २५ % उपस्थिति का नियम रहे किन्तु प्रधान, मन्त्री बनने के लिए ६५ % तथा अन्तरग सभासद बनने वाले के लिये ५० % उपस्थिति आवश्यक हो।

११—उपर्युक्त नियमों का कठोरता से पालन होने पर निश्चय ही सभासदों की सख्या कम हो जायेगी। किन्तु संख्या को अपेक्षा गुणों पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिये। सगठन के सभी स्तरों पर नलाई करके यदि घास फूंस या खरपतवार का निकाल फेंका जाये तो काम के पौधे अधिक पनप सकेंगे। ऐसे थोड़े से आर्यसमाजियों को देखकर लोग आर्यसमाज को ओर अधिक आकृष्ट हो सकेंगे। ऐसे थोड़े से व्यक्तियो से बना समाज अधिक सजीव व सशक्त सिद्ध होगा झूठ के पाव नहीं होते। उसके सहारे खड़ा समाज देर तक नहीं चल सकेगा। आज लड़खड़ा रहा है, कल गिर पड़ेगा।

१२—कभी अपने को आर्यसमाजी कहने में हमें गर्व अनुभव होता था। आज यदि लज्जा नहीं तो संकोच अवश्य होना है। आज ऐसी एक भी बात नही जिसे लेकर हम यह कह सके कि और कुछ हो न हो प्रत्येक आर्यसमाजी में अमुक गुण तो अवश्य मिलेगा। आर्यसमाजी अध्यापकों, उपदेशकों, दुकानदारों, व्यापारियों, उद्योगपतियों, वकीलों; अफसरों, बाबुओं, विधायकों, मन्त्रियों आदि में एक भी विशेषता ऐसी नहीं मिलेगी जो [illegible] उन्हें अपने ही वर्ग के आर्यसमाजेतर लोगों से अलग करती हो। आर्यसमाजी और गैर आर्यसमाजी की जीवन पद्धति में किसी के आर्यसमाजी होने के कारण कोई स्पष्ट अन्तर दिखाई नही पड़ता। विधि विधान के अनुसार नीचे से ऊपर तक संगठन का निर्माण हो। आर्यसमाजों को और उनके सदस्यों की सख्या भले ही कम हो जाये, किन्तु जितने भी हों, खरे हों। खोटे सिक्कों से जेब भरी भी हो तो किस काम की ?

१३—हमारा लक्ष्य वैदिक धर्म के सिद्धान्तों के अनुसार मानव समाज का निर्माण करना है। आर्यसमाज स्वयं में साध्य नहीं है, बल्कि वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार के निमित्त साधन रूप में खड़ा किया गया आन्दोलन है। अतः समाज का विकास उसी रूप में उचित है जिसमें वह वैदिक धर्म के विकास में सहायक हो। यही उसकी उन्नति की कसौटी होनी चाहिये। 'क' नाम के आर्यसमाज के सदस्यों की संख्या एक वर्ष में ५० से १०० हो जाये, समाज मन्दिर में ४ कमरे और बन जायें, उत्सव पर १० हजार को बजाय १५ हजार चन्दा जमा हो जाये, उसके अधीनस्थ मिडल स्कूल का हाई स्कूल या हाई स्कूल का कालिज या उसके छात्र छात्राओं की सख्या ६००से बढ़कर १००० हो जाये। दूसरी ओर 'ख' नाम के आर्यसमाज के सदस्यों को संख्या ५० से घटकर २० रह जाये, मन्दिर मे एक भी कमरा न बढे, चन्दा घटकर ५ हजार रह जाये उसके अधीनस्थ शिक्षण संस्था टूट जाये अथवा विद्यार्थियों की सख्या ३०० रह जाये परन्तु उसके सदस्यों में दैनिक यज्ञ आदि करने और नियमित रूप से वेदपाठ करने वालो की संख्या २ से ५ हो जाए, उसके वकील सदस्य झूठे मुकद्दमे लेना छोड़ दें, शिक्षण संस्था के अध्यापकों तथा छात्रो मे अनुशासन आ जाये, बीड़ा सिग्रेट पीने या सिनेमा जाने वालो की संख्या कम हो जाये, दो दुकानदार सदस्यों के बारे में लोग कहने लगे कि ये आर्यसमाजियों की दुकाने हैं, वहां कोई भी चीज शुद्ध और ठीक दामों पर मिलती है, एक दो व्यापारी सदस्यों की साख जम जाये कि इन्कम टैक्स वाले उनके हिसाब की जाँच पड़ताल करना आवश्यक नहीं समझते। दोनों आर्यसमाजो की तुलना करने पर मैं 'ख' नामक आर्यसमाज को उन्नत और 'क' नामक आर्य समाज को अवनत मानूंगा।

क्रमशः

शराबी तथा ईश्वर भक्त

दयाचन्द आर्य ग्राम कत्रि जिला करनाल

एक ओर प्रभु की भक्ति एक ओर शराब की प्याली
कैसे होवै सुधार देश का नही समझ मे आलो ।। टेक।।
शराबी मासाहारी देश का भला नही कर पाये ।
आप दुखी औरो को दुःख दें यह बिल्कुल न शरमाये ।
अपना मुफ्ती माल यवाव डी० सी० बरगे ख्याल बतावें ।
नशा उतरने पर कहते हैं आगी बड़ी कंगाली ।।१।।
प्रभु के नाम की जिनको लग्न है यह मन में सदा हर्षाये ।
आप सुखी औरों को सुख दे गीत प्रभु के गाए ।
परमानन्द को वह पाते हैं बन्धन छूट सभी जाते हैं ।
ऐसे सज्जन लोगों के घर सदा रहे खुशहाली ।।२।।
लाखों घरो का इस पानी ने कर दिया खूब सफाया ।
कोठी और बगलों में भी उल्लुओं का शासन पाया ।
व्यर्थ गई जिन्दगानी उनकी मिट गई नाम निशानी ।
ऐसे दुर्जन लोगों को यह दुनियां बकती गाली ।।३।।
जिन ऋषियों ने प्रभु भक्ति में अपना समय लगाया ।
उनके कारण आज यह भारत जगत् गुरु कहलाया ।
एक दयानन्द ब्रह्मचारी थे वह सच्चे देश हितकारी थे ।
'दयाचन्द' कहै उन ऋषियो ने रखी देश की लाली ।।४।।

सभा के लिए गणक की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए एक अनुभवी तथा कुशल गणक (अकाउटेंन्ट) की तुरन्त आवश्यकता है। वेतन योग्यता अनुसार इच्छुक महानुभाव अपनी योग्यता तथा अनुभव आदि के प्रमाण पत्रों सहित अपना आवेदन पत्र शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

सेवानिवृत महानुभाव भी आवेदन कर सकते हैं।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजी सं० 23207/73 रजि० सं० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८५



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सह-सम्पादक डॉ० यज्ञवीर

वर्ष १२, अङ्क ३३   २८ जुलाई १९८५   वार्षिक शुल्क १५)   विदेश में ५ पौंड   एक प्रति ३० पैसे

वेद-सुधा

विचित्र-प्रभु

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष७ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ॥
यजुर्वेद ७।४२ ॥

(चित्र) विचित्र, विचित्र, अद्भुत (देवानां अनीकम्) देवाना मुखम् देवों का मुख, देवो में मुख्य, देवों मे प्रधान (उत्–अगात्) उत्कृष्टतया, भली भांति प्राप्त है। (चक्षुः) नेत्र है (मित्रस्य) मित्र का, सूर्य का (वरुणस्य) वरुण का, वरण करने के योग्य का, चन्द्रमा का (अग्नेः) अग्नि का, ज्ञानी का, विद्वान् का। (द्यावा) द्यौलोक (पृथिवी) पृथिवी लोक [तथा] (अन्तरिक्षम्) अन्तरिक्ष लोक को (आ-अप्रा) भली भांति आप्लावित कर रहा है। (सूर्य) [वह] प्रकाश स्वरूप, प्रकाशक (आत्मा) आत्मा है, जीवन का कारण है (जगतः) जगत् का, गतिशील का, प्राणियों का (तस्थुषः च) और अप्राणी अर्थात् जड़ का (स्वाहा=सु+आहा) सुन्दर उच्चारण है, ठीक कहा गया है, ठीक कहा है।

प्रस्तुत मन्त्र का प्रथम शब्द 'चित्र' परमपिता परमात्मा की अद्वितीय और अद्भुत शक्ति का वर्णन करता है। 'चित्र' विचित्र अर्थात् वह परमात्मा विचित्र है। क्या सचमुच वह विचित्र है? संसार की प्रत्येक वस्तु पर दृष्टि डालिये, परमात्मा इन सभी से विचित्र है। यदि किसी वस्तु में परमात्मा का कोई गुण मिलेगा भी तो स्वल्प मात्रा में। पूर्णतया तो संसार के किसी भी पदार्थ में—चाहे वह जड़ हो या चेतन—परमात्मा का कोई भी गुण नहीं मिलेगा। उदाहरण के लिये आकाश को लीजिये, आकाश व्यापक है किन्तु वह व्यापक मात्र ही है, सर्वव्यापक नहीं। सर्वव्यापक तो परमात्मा ही है, यहां तक कि व्यापक आकाश में भी व्याप रहा है। यह परमात्मा की विचित्रता ही तो है। संसार का कोई भी पदार्थ, किसी भी प्रकार से, उस जैसा नहीं है। इसी कारण से वेद 'चित्र' विशेषण द्वारा उसकी गुणावली का गान कर रहा है। परमात्मा विचित्र तो है ही, परन्तु उसकी विचित्रतायें किस प्रकार की हैं उनका भी दिग्दर्शन मन्त्र में आगे कराया गया है।

'देवानां अनीकम्' देवों का मुख, समस्त देवों में मुख्य, प्रधान है। है ही प्रधान, इसमें सन्देह को स्थान ही कहां है? संसार के जितने भी दिव्य पदार्थ हैं, उन सबसे बढ़कर दिव्यतायें हैं, उस दिव्य प्रभु में। सत्य बात तो यह है कि समस्त दिव्य पदार्थों में उसी की दिव्यतायें हैं। समस्त दिव्य पदार्थ उसी दिव्य देव की दिव्यता से दीप्यमान हो रहे हैं। वही देव अपनी दिव्यताओं को संसार के विभिन्न पदार्थों में से विभिन्न रूपों में प्रस्फुटित कर रहा है। अग्नि में उसी का तेज है, वायु में उसी की गति, चन्द्रमा में उसी की शीतलता है। सूर्य में उसी की उष्णता और उसी का प्रकाश है। स्वर्ण में उसी की दमक है और हीरे में उसी की चमक—हो भी क्यों नहीं? हिरण्यगर्भ जो ठहरा वह।

देव का एक अर्थ है विद्वान्। संसार के समस्त विद्वानों की विद्वता उस प्रभु की विद्वता के सम्मुख इतनी भी नहीं, जितना हिमालय के सामने राई का दाना। विद्वानों के पास जो विद्या और जो विद्वता है, वह आयी कहां से? आदि सृष्टि में कौन था, जिसने मानव को ज्ञान दिया, विद्वता प्रदान की, विद्वान् कहलाने का अधिकार बनाया? वही था न—वही प्रभु—जिसे वेद ने कहा है 'आनीदवातं स्वधया तदेकम्' तब वह अकेला था और बिना वायु के श्वास ले रहा था, केवल अपने ही धारण सामर्थ्य से तथा 'हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्' वह हिरण्यगर्भ—जो उत्पन्न हुए प्राणी मात्र का एकमात्र स्वामी है—सृष्टि की उत्पत्ति से पहले भी सम्यक् प्रकार था। जो पुकार पुकार कर कह रहा है 'स्तुता मया वरदा वेदमाता' वरदात्री वेद माता मेरे द्वारा प्रस्तुत की गई है। उस परम दयालु ने दया कर सृष्टि के प्रारम्भ में ही मानव के कल्याण के लिए वेद ज्ञान प्रदान किया, जिससे सृष्टि के प्रारम्भ में ही मानव विद्वान् और ऋषि बना और अब भी परम्परा से बनता चला आ रहा है। क्योंकि उस देव की कृपा से ही समस्त विद्वानों (देवों) को ज्ञान प्राप्त हुआ है अतः समस्त विद्वानों (देवों) में वही मुख्य है।

'उत् अगात्' अर्थात् उत्कृष्टतया भली भांति प्राप्त है। अपनी व्याप्ति की शक्ति मात्र से, व्यापक होने के कारण से वह किसी से भी दूर नहीं है। उसके लिये, उसकी खोज में नगर नगर, जंगल जंगल तथा पर्वत पर्वत भटकने की आवश्यकता नहीं है। सर्वव्यापक प्रभु सर्वव्यापक होने के कारण प्रत्येक समय और प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक को प्राप्त है। उसकी प्राप्ति की इच्छा से किसी स्थान विशेष पर जाना अथवा जाने के लिये प्रयत्न करना सर्वथा भूल है।

वह मित्र, वरुण और अग्नि का चक्षु है। मित्र अर्थात् सूर्य, वरुण अर्थात् चन्द्रमा तथा अग्नि जिस चक्षु से देख रहे हैं, वह परमपिता परमात्मा ही है। इन तीनों में जो प्रकाश है, जिस प्रकाश से यह तीनों प्रकाशित हैं, वह उस परमदेव का ही है। यह तीनों तो प्रकृति के परमाणुओं का संघातमात्र हैं और परमाणु अपने आप में प्रकाश रहित हैं। यदि परमाणुओं में प्रकाश होता तो वह प्रलयकाल में भी प्रकाश देते किन्तु उस समय तो 'तम आसीत्तमसा गूढम्' महान् अन्धकार से ढका हुआ अन्धकार था। इस समय जो परमाणु संघात अर्थात् प्रकृति जन्य, सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि से प्रकाश प्रस्फुटित होता रहता है, वह उसी प्रभु का है अतः वह प्रभु इन सबका चक्षु है।

जो लोग संसार में राग-द्वेष रहित होकर अर्थात् संसार के मित्र बनकर रहते हैं, वह उस प्रभु के भी मित्र होते हैं और वह प्रभु परमात्मा देव इन मित्रों का मार्ग दर्शक होता है अर्थात् राग-द्वेष रहित निर्मल चित्त होने से ऐसे लोग ही प्रभु के ज्ञान से वास्तविक लाभ उठाते हैं।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

वेद में प्रातः ईश स्तुति

(पं० धर्मदेव 'मनीषी' वेदतीर्थ गुरुकुल कालवा)

गतांक से आगे

ओ३म् उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्वऽउत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवाना ७ सुमतौ स्याम ॥३॥

अर्थ—हे (मघवन्) परम पूजित धन से युक्त ईश्वर! हम लोग (इदानीम्) वर्तमान समय में (उत) भी (प्रपित्वे) पदार्थों के प्राप्त करने मे (उत) और भविष्यत् काल में (उत) भी (अह्नाम्) दिनों के (मध्ये) मध्य में (भगवन्तः) सकल ऐश्वर्य से युक्त (स्याम) होवें। (उत) और (सूर्यस्य) सूर्य के (उदिता) उदय समय मे (देवानाम्) विद्वानो की (सुमतौ) सुमति में रहते हुए (भगवन्त.) सफल ऐश्वर्य से युक्त (स्याम) होवें ॥

भावार्थ—मनुष्य वर्तमान और भविष्यत् में योगैश्वर्य की उन्नति से लौकिक व्यवहार की वृद्धि और प्रशंसा में सदा प्रयत्न करे ॥

उपदेश—हे परम पूजित धन से युक्त ईश्वर! हम लोग इस वर्तमान समय मे उत्तम पदार्थों को प्राप्त करने में लगे रहे तथा भविष्यत् काल मे भी प्रतिदिन सकल ऐश्वर्य से युक्त हों। सूर्य के उदय काल मे विद्वानों की सुमति मे रहकर सकल योग ऐश्वर्य की उन्नति करे। लौकिक व्यवहार की वृद्धि और प्रशसा मे सदा प्रयत्न करें ॥३॥

ओ३म् भगऽएव भगवाऽअस्तु देवास्तेन वय भगवन्तः स्याम।
त त्वा भग सर्वऽइज्जोहवीति स नो भगपुरऽएता भवेह ॥४॥

अर्थ—हे (देवा:) विद्वानो! जो (भग:) भजनीय एवं सेवनीय (एव) ही (भगवान्) प्रशस्त ऐश्वर्य से युक्त (अस्तु) है, (तेन) उस ऐश्वर्य स्वरूप भगवान् परमेश्वर के साथ (वयम्) हम (भगवन्तः) सकल शोभा से युक्त (स्याम) होवें। हे (भग) अखिल शोभा से युक्त ईश्वर! (तम्) उस (त्वा) तुझको (सर्वः) सब जनता (इत्) ही (जोहवीति) अत्यन्त पुकारती है। हे (भग) सकल ऐश्वर्य प्रदान करने वाले ईश्वर! (स) वह तू-(इह) यहां (नः) हमारा (पुर एता) अग्रगामी (भव) हो॥

भावार्थ—हे मनुष्यो! तुम जो सकल ऐश्वर्य से सम्पन्न परमेश्वर है, और उसके साथ इसके उपासक विद्वान् और उनके साथ सिद्ध और श्रीमान् लोग हों। जो जगदीश्वर माता पिता के तुल्य हम पर कृपा करता है, उसकी भक्ति पूर्वक यहां मनुष्यों को ऐश्वर्यवान् सदा करो।

उपदेश—हे सर्वाधिपते! महाराजेश्वर! आप (भग:) परमैश्वर्य स्वरूप होवे से भगवान् हो। हे (देवा) विद्वानो! तेन भगवतेश्वरेण प्रसन्नेन तत्सहायेवे व—उस भगवान् प्रसन्न ईश्वर के सहाय से (वयं··· स्याम) हम लोग परमैश्वर्य युक्त हों। हे (भग) परमेश्वर! सर्व संसार (त त्वा) उन आपको ही (जोहवीति) ग्रहण करने को अत्यन्त इच्छा करता है। क्योंकि कौन ऐसा भाग्यहीन मनुष्य है जो आपको प्राप्त होने की इच्छा न करे? (स नो······भवेह) सो आप हमको प्रथम से प्राप्त हो। फिर कभी हमसे आप और ऐश्वय अलग न हों। आप अपनी कृपा से इसी जन्म में परमैश्वर्य का यथावत् भोग हम लोगों को करावें और आपकी सेवा में हम नित्य तत्पर रहें। (महर्षि दयानन्द कृत आर्याभिविनय द्वितीय: प्रकाशः मन्त्र ४५)

इस प्रकार परमेश्वर की प्रार्थना उपासना करनी चाहिए।

प्रातर्वेलायामिन्द्रभजनम्—

वयं प्रभातवेलायां भगमिन्द्रं हवामहे।
असि अग्नि: पति: पूषा सदा मित्रं वरेण्यो मे।
अश्विनौ च रुद्रोऽसि वयं सोमं हवामहे ॥१॥
जयी भगवान् तेजस्वी विधर्त्ता खादीनां कर्त्ता।
असि राजा तुरश्चिच्च प्रभुं मान्यं भजामहे ॥२॥
भग: सत्यस्य राधोऽसि प्रणेता धी प्रदातासि।
नरैरश्वैस्तथा गोभिर्वयं नित्यं मोदामहे ॥३॥
इदानीं स्याम भगवन्तः प्रपित्वेऽह्नामुत मध्ये।
अर्कस्योदिता मघवन् वयं मेधामेधामहे ॥४॥
पुर एता भव देव! विबोधय कोऽस्ति पन्था मे।
वयं तु प्राणिनां मघवन् कल्याणं याचामहे ॥५॥

(सुदर्शनदेवाचार्यः)

अर्थ—हम प्रात.काल की शुभवेला में कल्याणकारी इन्द्र परमात्मा की स्तुति करते हैं॥ हे ईश्वर! तू अग्नि, पति, पुष्टकर्त्ता, मित्र एवम् हमारे वरण करने योग्य है। अश्विनौ, रुद्र, सोम आदि संज्ञा वाले परमेश्वर को हम बुलाते हैं॥१॥ वह परमात्मा विजय प्राप्त कराने वाला, तेजस्वी, सबका धारक तथा आकाशादि का निर्माता है। तू सभी का राजा, उत्तम अमन्दानन्द देने वाला है ऐसे प्रभु की हम भक्ति करते हैं।२॥ हे भगवन्! तू कल्याण ऐश्वर्य तथा सत्य को सिद्ध कराने वाला है। मेधा बुद्धि का प्रदान करने वाला है तथा जगत् का कर्त्ता है। हे प्रभो! हम आपकी कृपा से सज्जन पुरुषों, वेगवान् घोड़ों तथा दुधारू गायों के द्वारा सदा प्रसन्न रहें।३॥ हम दिन के मध्य में भी आपको प्राप्त करके ऐश्वर्य शाली हों। हे इन्द्र! सूर्योदय के समय हम मेधा बुद्धि की ही याचना करते हैं॥४॥ पूर्वकाल से ही विश्व के पूज्य देव! कृपया मुझे सच्चा रास्ता बताओ तथा सत् ज्ञान का प्रकाश करो। हम तो प्राणिमात्र का कल्याण चाहते हैं। उसी की मांग करते हैं॥५॥

सावन के झूले

चारों ओर संगीत मधुर,
फूल खिले उपवन में।
झूला पडा वृक्ष शाखा पे,
लड़की गा रही लगन में॥
इनकी सुरीली आवाज,
स्पन्दन करती मन में।
रिमझिम रिमझिम मेघा बरसे,
मोर बोल रहे वन में॥
कभी झूला चला जाय गगन में,
कभी धरा पे आजा।
कभी सूर्य निकले गगन में,
कभी ओ मेघा छाजा॥

डा० अनिल कुमार पंवार 'भावुक'
ग्राम अकोढ़ा कलां जिला सहारनपुर

सम्पादकीय

नशा व शराबखोरी पूरी दुनियां की समस्या

प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

(गतांक से आगे)

३—महिलाओं के बाद यह यातना सहन करनी पड़ती है बच्चों को। उनका विकास तो रुक ही जाता है, स्वास्थ्य बर्बाद हो जाता है, पढ़ना लिखना छूट जाता है और मजबूर होकर बड़ी संख्या में बच्चों को गन्दे वातावरण में जाकर कमाना पड़ता है। मजदूरी ठीक से बच्चे को मिल जाये तो भी शायद काम चल जाये, परन्तु ऐसे लाचार बच्चों से असामाजिक तत्त्व कौन कौन से अपराध करवाते हैं, यह कहना भी कठिन है। ऐसे बच्चों की संख्या आज करोड़ों में पहुँच चुकी है। मां को अच्छी खुराक न मिलने से ७० % बच्चे या तो मर जाते हैं या उनके शरीर या मस्तिष्क में विकलांगता आ जाती है।

४—शराब और नशे के आदि लोगों का मनोबल इतना गिर जाता है कि वे बुराई को बुराई समझने पर भी छोड़ने और उससे बचने का साहस खो बैठते हैं। समाज में हो रहे अन्याय, विषमता, शोषण, भ्रष्टाचार के विरुद्ध खड़े होने का साहस इनमें कहां से आयेगा? ऐसे में शोषण करने वालों का दास बनकर ही जन-साधारण को अपना जीवन चलाना पड़ रहा है और उसमें कोई परिवर्तन आने या क्रान्ति होने की सम्भावना नहीं रह जाती।

मैंने ऊपर चार मुख्य कारण हरयाणा में शराबबन्दी अभियान चलाने के बारे में लिखे हैं। पाठक यदि गहराई से ऊपर विचार करें तो वे स्पष्ट रूप से देख सकेंगे कि हरयाणा जैसी पवित्र धरती पर बसने वाला समाज कितना खोखला हो गया है। केवल आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, अपितु चरित्र की दृष्टि से भी। बुराई के विरुद्ध हो चाहे अपने अधिकारों के लिए प्रतिकार करना हो, हरयाणा आज टस से मस नहीं हो रहा है और सब प्रकार के अन्याय तथा मनमानी को मूक होकर सहन कर रहा है। मनोबल इतना गिर गया है कि न्याय की ओर अधिकारों की लड़ाई लड़ने की बात कहने वालों से बात करने से भी उसे डर लगता है। इससे अधिक मनोबल का ह्रास और क्या हो सकता है?

हरयाणा की ग्रामीण जनता को परमुखापेक्षी होने और गिड़गिड़ाने की जरूरत नहीं है यदि वह नशे से छुटकारा पाले और पारिवारिक रस्म-रिवाजों पर फिजूल खर्ची बन्द कर दें। औसत निकालने पर पता चला कि एक गांव वर्ष भर में शराब पर ५ लाख रुपये बर्बाद कर देता है। यदि उसका पांचवां भाग भी वह अपने ग्राम के विकास के कामों पर खर्च करे तो गांव धीरे धीरे स्वर्ग बन सकता है। ऐसे जागरूक लोगों की सरकार भी क्या अवहेलना कर सकती है? जब ये लोग मनमानी और अन्याय के विरुद्ध खड़ा होने का मनोबल प्राप्त कर लेंगे तो उनके अपने चुने हुए प्रतिनिधि दिन-धाड़े लूट नहीं कर सकेंगे और जो पैसा इस प्रकार की लूट में चला जाता है, वह भी उनके विकास पर ही खर्च करना पड़ेगा।

क्या हरयाणा के लोग अंगड़ाई लेकर अपने अपने परिवार, प्रदेश और देश के भविष्य को उज्ज्वल करने के लिये उठेंगे, चन्द लोगों के द्वारा किया जा रहा अपना शोषण बन्द करेंगे और एक पवित्र समाज बनाकर उत्साह और पूरे मनोबल से उन्नति के पथ पर आगे बढ़ेंगे। क्या हरयाणा के बुद्धिजीवी समाज सेवी, तथा प्रबुद्ध नागरिक अपने कर्त्तव्य के पालन के लिये सामने आयेंगे और सहयोग का हाथ बढ़ायेंगे? मैं सकारात्मक उत्तर की प्रतीक्षा में हूं।

जो सोवत है सो खोवत है जो जागत है सो पावत है

आतंकवादी-अलगाववादी तथा देश-द्रोही तत्त्वों की हिंसक गतिविधियों के कारण राष्ट्र की एकता को खतरा उपस्थित हो गया था, और पंजाब देश की मुख्य धारा से अलग होने की राह पर था। ऐसी अवस्था में इस चक्रव्यूह को तोड़कर पंजाब को राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ना सरल काम नहीं था। प्रधानमन्त्री की सूझबूझ और पहल पर जो समझौता हुआ है, वह उनकी महान् उपलब्धि है और हरयाणा रक्षा वाहिनी इस सफलता पर उनको हार्दिक बधाई देती है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि राष्ट्रहित सर्वोपरि है। पृथकतावादी शक्तियां अभी समाप्त नहीं हुई है और इस सद्भावना और एकता के वातावरण को बिगाड़ने में लगी हुई है। इसलिए राष्ट्रप्रेमी शक्तियों को उनके इरादों को पास पास करने के लिए सजग और सक्रिय रहना पड़ेगा।

आतंकवादियों और राष्ट्र विरोधी शक्तियों के विरुद्ध खुले मैदान में उतरना सन्त लोंगोवाल के साहस का परिचायक है और वे बधाई के पात्र हैं।

यह सत्य है कि इस समझौते में हरयाणा ने कुछ खोया है और आने वाले ६ महिनों में और भी खोये जाने की सम्भावना है। हरयाणा की इस शोचनीय अवस्था के लिए हरयाणा की जनता और नेता बहुत हद तक जिम्मेदार हैं। यह एक कटु सत्य है कि चेतना, संगठन और बलिदान की भावना के बिना न्याय भी नहीं मिलता है। यदि अकालियों की अनुचित मांगें मानी गई और हरयाणा को टुकड़ा फेंकने जैसी बात हुई तो इसके लिए स्वयं हरयाणा के लोग ही जिम्मेदार हैं। राजनीति में तो सब तुलकर मिलता है जितना बड़ा जिसका बाट है उतना ही सामान तुलकर उसे मिलेगा। किसी देश या संगठन का बाट तो उसकी चेतना, संगठन, शक्ति और बलिदान की भावना ही होती है। यह मानना पड़ेगा कि हरयाणा का बाट छोटा है इसलिए जब न्याय तुलना है तो वह अधिक प्राप्त करने की बजाय, सदा कुछ खो देता है।

इस फैसले के अनुसार फाजिल्का अबोहर का मामला खटाई में पड़ गया है और रावी-व्यास के पानी में हरयाणा का उचित भाग मिलने की सम्भावना प्रायः समाप्त कर दी गई है। सतलुज यमुना-लिंक नहर बनाने का वायदा तो किया गया है परन्तु पानी के बिना नहर तो केवल एक लम्बा चौड़ा गढा ही हो सकता है उससे हरयाणा के खेतों की प्यास नहीं बुझ सकती। देखना यह है कि इतना गवा कर भी हरयाणा जागता है कि नहर और न्याय पाने की जो थोड़ी बहुत सम्भावना बची है उसका लाभ उठाता है कि नहीं।

धार्मिक उन्माद का सहारा लिए बिना हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए हरयाणा रक्षा वाहिनी ने हमेशा अपनी आवाज बुलन्द रखने की चेष्टा की है। लेकिन अकालियों की तरह हमने हिंसा और अलगाववाद और संविधान विरोधी रुख कभी नहीं अपनाया। यही नहीं बल्कि इसे राष्ट्र विरोधी और घृणित तरीका समझा है। यदि इसी कारण हरयाणा को न्याय नहीं मिलेगा तो वह देश का दुर्भाग्य होगा।

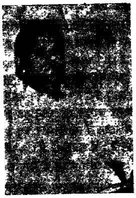
हरयाणा रक्षा वाहिनी का यह निश्चित मत है कि क्षेत्रों और पानी के फैसले करते समय हरयाणा को शामिल न करना हरयाणा के साथ घोर अन्याय है। हरयाणा जिस फैसले में शामिल नहीं है उसे मानने के लिए बाध्य नहीं है और वह अनुचित फैसले को कभी नहीं मानेगा। इस सम्बन्ध में हरयाणा के मुख्यमन्त्री का रवैया निन्दनीय है। विरोधी दल के विधायक अपने निश्चय पर कायम हैं, इसलिये वे बधाई के पात्र हैं। कांग्रेस दल के विधायकों को भी अपना वचन निभाना चाहिए।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पूर्व गणक श्री नवाबसिंह जी के

बच्चों को सहायता के लिए अपील

सर्वहितकारी में छपी सूचना से आपको पता लग ही गया है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मुख्य कर्मचारी श्री नवाबसिंह जी गणक का दिनाक २३ जून को ४६ वर्ष की आयु मे ही आकस्मिक निधन हो गया है। इस कारण सभा को बड़ी क्षति हुई है। वे १९६३ से आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा मे गणक (अकाऊण्टेट) के रूप मे सेवा मे आ गये थे और सभा के हिसाब तथा अन्य प्रबन्ध सम्बन्धी सभी कार्यो को बडी योग्यता



श्री नवाबसिंह गणक

एव निष्ठा के साथ करते थे। उन्होंने निरन्तर २२ वर्ष तक अल्प वेतन पर सभा की सेवा बहुत ही लग्न से की है। अपने जीवन के अन्तिम समय रुग्णावस्था में भी सभा का कार्य किया।

वे अपने पीछे विधवा पत्नी, एक छोटा लड़का तथा ५ लड़कियां छोड़ गये हैं। उन्होंने गत वर्ष केवल एक लड़की की शादी की थी, जिसका ऋण भी अभी तक नही उतार सके थे। भविष्य निधि में भी उनके थोड़े ही पैसे बचे हैं। ऐसी स्थिति मे सभा तथा आर्यसमाजों का नैतिक कर्त्तव्य बनता है कि आर्यसमाज के एक निष्ठावान् कार्यकर्त्ता के परिवार की सहायता दिल खोलकर करे। अब उस परिवार मे कमाने वाला अन्य कोई नही है।

आप आर्यसमाज के निष्ठावान् अधिकारी एव कार्यकर्त्ता हैं। अतः इस पुण्य कार्य के लिए व्यक्तिगत अथवा आर्यसमाज की ओर से अधिक से अधिक राशि सभा कार्यालय में भिजवाने की कृपा करे।

—: निवेदक :—

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	प्रो० सत्यवीर शास्त्री	रामकृष्ण
प्रधान परोपकारिणी सभा	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

वैदिक ऋषि-तत्व पर गोष्ठी

नई दिल्ली, १४ जुलाई (का० प्र०) राजौरी गार्डन में स्थित वेद-सस्थान में स्वामी विद्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में एक गोष्ठी हुई, जिसमें सुश्री प्रतिभा शुक्ला ने वैदिक ऋषियों में से तीन, हिरण्य-गर्भ, हिरण्य-स्तूप और हैरण्य-स्तूप के स्वरूप पर प्रकाश डाला। गोष्ठी में विशिष्ट आमंत्रित लगभग बीस वैदिक विद्वानों के अलावा, अनेक जिज्ञासु व्यक्तियों ने श्रोताओं के रूप में भाग लिया।

वेद-संस्थान की शोध समिति के तत्वावधान मे यह यह वेद-गोष्ठी प्रतिमास के द्वितीय रविवार को प्रातः ११ से १ बजे तक होती है। अगली वेद गोष्ठी ११ अगस्त को होगी। इसमें पूर्व से आन्त्रित महानुभाव ही भाग लेते हैं। जो लोग इसमें श्रोता के रूप मे अथवा चर्चा में भाग लेने के लिए पधारना चाहें, वे निम्न पते पर सम्पर्क करें।

डा० महावीर

ए—३/११ पश्चिम-विहार, दिल्ली—६३

प्रधानमन्त्री ने अकालियों के आगे हथियार डालकर हरयाणा के साथ किया अन्याय

महाशय भरतसिंह संयोजक हरयाणा रक्षा वाहिनी

रोहतक २६ जुलाई। हरयाणा रक्षा वाहिनी के संयोजक महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी ने आज एक प्रेस वक्तव्य मे प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाँधी तथा अकाली दल के अध्यक्ष श्री हरचन्दसिंह लोगोंवाल के मध्य हुए समझौते की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाँधी ने अकालियों के हिंसक आन्दोलन से भयभीत होकर उनके साथ समझौता करके हथियार डाल दिये हैं। उन्होंने पूर्व प्रधान मन्त्री अपनी माता श्रीमती इन्दिरा गाँधी के १९७० के ऐवार्ड को रद्दी की टोकरी में फेंकते हुए अबोहर तथा फाजिल्का के हिन्दी भाषी क्षेत्र हरयाणा को दिये बिना चण्डीगढ पंजाब को देने की घोषणा करके राष्ट्र भक्त तथा शान्ति-प्रिय हरयाणा के साथ घोर अन्याय किया है। जल विवाद तथा हिन्दी भाषी क्षेत्रों के मामलों के निपटारे का निर्णय आयोग को सौंप कर हरयाणा का आंसु पूछने का यत्न किया है। परन्तु इसकी क्या गारन्टी है कि अकाली नेता पूर्व की भान्ति आयोग के निर्णय को मान लेंगे? पूर्व भी अकालियों के साथ कई बार समझौते हुए हैं, परन्तु अकाली कोई न कोई बहाना बनाकर उनसे मुकरते रहे हैं। उन्होंने अपने पवित्र अकाल तख्त पर हरयाणा के नेताओं के साथ चण्डीगढ के बदले अबोहर फाजिल्का हरयाणा को देने का वचन देकर सन्त फतेहसिंह को जल मरने से बचाया था, परन्तु थोड़े ही दिन के पश्चात् वे चण्डीगढ के साथ अबोहर फाजिल्का को भी पंजाब मे रखने का हट करने लग गये। अब भी भिंडरवाले के पिता जोगेन्द्रसिंह के अकाली दल तथा सिख छात्र संघ ने इस समझौते को मानने से इंकार कर दिया है।

अपने वक्तव्य के अन्त में महाशय भरतसिंह ने कहा कि प्रधान मन्त्री ने अकालियों के साथ समझौता करते समय हरयाणा की जनता के साथ घोर अन्याय किया है। हरयाणा की किस्मत आयोग पर निर्भर कर दी है। उग्रवादी अकाली अन्य न्यायविदों की भान्ति आयोग को भी हिंसक धमकियां देकर प्रभावित कर सकते हैं। अतः समय आ गया है कि अब हरयाणा की जनता को अपने हितों की रक्षा के लिए संघटित होकर ठोस पग उठाना चाहिए। ११ अगस्त को दयानन्द मठ रोहतक में इसी उद्देश्य के लिए हरयाणा के सभी राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक कार्यकर्त्ताओं की बैठक आमन्त्रित की गई है।

अबोहर में सार्वजनिक सभा का आयोजन

केन्द्र तथा अकालियों के बीच हुए समझौते से पंजाब के हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का की जनता में रोष की लहर फैल गई है, क्योंकि उन्हें आशा थी कि चण्डीगढ को पजाब मे मिलाने की घोषणा के साथ अबोहर फाजिल्का के क्षेत्रों को भी हरयाणा में शामिल करने की घोषणा की जायेगी। इस पक्षपात तथा अन्याय के प्रति रोष प्रकट करने के लिए ४ अगस्त रविवार को एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया है। इसमें स्वामी ओमानन्द सरस्वती तथा हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया है। २ दिन पूर्व सभा की ओर से पं० हरिश्चन्द्र जी की भजन मण्डली का भी प्रचारार्थ कार्यक्रम बनाया गया है। केदारसिंह आर्य

(पृष्ठ ३ का शेष)

प्रधानमन्त्री ने कल आश्वासन जरूर दिया है कि समझौते पर अमल करते समय वे हरयाणा व राजस्थान को पूरा न्याय देंगे। आने वाला समय ही बतायेगा कि हरयाणा को कितना न्याय मिलता है।

हरयाणा की जनता से मेरी प्रार्थना है कि इस आश्वासन से आश्वस्त होकर फिर न सो जायें। सोये हुए शेर के मुंह में प्रविष्ट होकर मृग उसकी भूख कभी नहीं मिटाते।

वेदप्रचार कार्य की उन्नति के सुझाव भेजें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक अधिवेशन २६ मई को सम्पन्न हुआ है। अधिवेशन की कार्य सूची में वेदप्रचार कार्य को किस प्रकार उन्नत किया जाये, विचारणीय विषय था, परन्तु उन दिनों रोहतक में धारा १४४ लागू होने के कारण अधिक देर तक अधिवेशन की कार्यवाही न चलने के कारण इस विषय पर विचार नहीं हो सका।

अतः ११ जून की अन्तरंग सभा के निश्चयानुसार आर्यसमाजों के अधिकारियों तथा सभा के प्रतिनिधियों से निवेदन है कि वेदप्रचार कार्य को उन्नत कैसे किया जाये, इस विषय पर अपने सुझाव संक्षिप्त रूप में साफ साफ शब्दों में लिखकर शीघ्र भेजने का कष्ट करें, ताकि सभा की आगामी अन्तरंग सभा की बैठक में उन पर विचार हो सके।

वेदप्रचार सप्ताह के आयोजन का अनुरोध

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन है कि गत वर्षों की भांति जुलाई से सितम्बर मास में अपनी सुविधानुसार अपने आर्यसमाज में वेदप्रचार सप्ताह अथवा वार्षिक वेदप्रचार का आयोजन करके सभा को सूचित करें।

वेदप्रचार कार्य में शिथिलता आने से ही अवैदिक मतों का प्रचार तथा शराब आदि दुर्व्यसनों का प्रसार होने लगता है। अतः आप अपने यहां वेदप्रचार सप्ताह की तिथियां निश्चित करके यथाशीघ्र सभा को सूचित करें ताकि सभा की ओर से समुचित प्रबन्ध हो सके। इस समय सभा के वेदप्रचार विभाग में निम्नलिखित उपदेशक तथा भजनोपदेशक कार्य कर रहे हैं—

१—पं० चन्द्रसेन वैदिक मिशनरी उपदेशक
२—पं० सुरेशकुमार शास्त्री विद्यावाचस्पति एम० ए० उपदेशक
३—ब्रह्मचारी महेन्द्रसिंह शास्त्री विद्यावाचस्पति उपदेशक
४—ब्रह्मचारी श्रुतबन्धु शास्त्री विद्यावाचस्पति बी० ए० उपदेशक
५—पं० विद्याभूषण जी आर्य भजनोपदेशक
६—पं० [illegible]सिंह जी आर्य ,,
७—श्री मुन्शीलाल जी आर्य ,,
८—पं० चिरन्जीलाल जी आर्य भजनमण्डली
९—पं० ईश्वरसिंह जी तूफान आर्य ,,
१०—पं० तेजपाल आर्य [illegible]
११—पं० सुमेरसिंह आर्य ,, ,,
१२—पं० हरिश्चन्द्र आर्य ,, ,,

आशा है आप अपने निश्चय से शीघ्र डाक सूचित करेंगे। प्रायः आर्यसमाजें शिकायत करते हैं कि वर्ष भर में उनके यहां प्रचार व्यवस्था नहीं की गई। अतः वेदप्रचार की मांग करके अपनी तिथियां सभा को पत्र लिखकर सुरक्षित करवा लेवें।

सत्यवीर शास्त्री
सभा मन्त्री

आर्यसमाज साम्प्रदायिक नहीं है

दिनांक २०-७-८४ के दैनिक हिन्दुस्तान मे सूर्यकान्त बाली का लेख 'भाषा को सम्प्रदाय से न जोड़ें' पढ़ा। इस लेख में लेखक ने मुख्य रूप से उर्दू भाषा की वकालत की है और उसको सम्प्रदाय से ऊपर उठ कर देखने और उसके महत्त्व को स्वीकार करने का आग्रह किया है। उनका यह दृष्टिकोण वर्तमान परिस्थितियों में समीचीन है। परन्तु उन्होंने इस लेख में आर्यसमाज पर निराधार आरोप लगाये हैं। लेख की मूल वस्तु से हटकर लेखक ने पंजाब और हरयाणा के बंटवारे के समय आर्यसमाज द्वारा चलाये गये आन्दोलन को अवैज्ञानिक और साम्प्रदायिक आन्दोलन कहा है। शायद लेखक को आर्यसमाज के विषय में प्रारम्भिक जानकारी भी नहीं है। आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है जो सम्प्रदायवाद और संकीर्ण विचारधारा के खिलाफ सुधारवादी आन्दोलन चलाती रही है, जिसकी राष्ट्रभक्ति सर्वविदित है। जहां पर भी शासकों का अत्याचार और अन्याय बढ़ा उसके विरोध में आर्यसमाज राष्ट्रवादी विचारधारा को लेकर सदा अग्रणी रहा है। देश का स्वाधीनता आन्दोलन, हैदराबाद का सत्याग्रह, पंजाब का हिन्दी आन्दोलन इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। लेखक ने अपने लेख में यह स्वीकार किया है कि किसी विशेष हिस्से में बोली जाने वाली भाषा वहां के प्रत्येक नागरिक की होती है, चाहे वह किसी भी सम्प्रदाय का हो। परन्तु अपनी इस विचारधारा को उसने आर्यसमाज द्वारा संचालित पंजाब के आन्दोलन से नहीं जोड़ा, वर्तमान हरयाणा प्रान्त की भाषा हिन्दी थी और हिन्दी है। परन्तु जब यह बृहत् पंजाब का हिस्सा था तो यहां के नागरिकों को हिन्दी के स्थान पर बलात् सरकार द्वारा पंजाबी भाषा पढ़ने के लिए विवश किया गया, जिसके खिलाफ आर्य समाज खड़ा हुआ। वह आन्दोलन साम्प्रदायिक नहीं अपितु न्यायोचित मांग के लिए था।

हरयाणा विभाजन का मुख्य कारण साम्प्रदायिक नहीं अपितु आर्थिक था। बृहद् पंजाब के समय वर्तमान हरयाणा का विकास नगण्य था। यहां पर विकास योजनाओं जैसे शिक्षा, कृषि औद्योगिक विकास पर सरकार का कोई ध्यान नहीं था। परन्तु जब से हरयाणा पंजाब से अलग हुआ तब से इसका विकास जिस द्रुतगति से हुआ है वह किसी से छिपा हुआ नहीं है।

लेखक ने अपने लेख में यह मुद्दा उठाकर कि पंजाब हरयाणा विभाजन में पंजाबी को उसका पूरा इलाका नहीं मिला, इसका दोष भी आर्यसमाज के मत्थे मढ़ दिया है। शायद लेखक ने पंजाब और हरयाणा विभाजन के वास्तविक आंकड़ों को नहीं देखा है। पंजाब प्रांत में अबोहर और फाजिल्का का इलाका हिन्दी भाषी है और जहां के निवासी निरन्तर हरयाणा में मिलने के लिये छटपटा रहे हैं। परन्तु उनके अधिकार से उनको वञ्चित रखा जा रहा है। उनको हिन्दी न पढ़ाकर पंजाबी पढ़ने के लिए बाध्य किया जा रहा है। इन परिस्थितियों में हरयाणा का आर्यसमाज यदि अबोहर-फाजिल्का के निवासियों का समर्थन करता है तो यह साम्प्रदायिक नहीं अपितु न्यायोचित कदम है।

प्रो० कृष्णा आचार्या
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक

नवीन प्रवेश तथा आवश्यकता

गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) हरयाणा में नवीन छात्रों का प्रवेश आरम्भ हो चुका है। पाठ्यक्रम गुरुकुल कांगड़ी के अनुसार है। प्रवेशार्थी बालक की आयु १० वर्ष से कम न हो तथा वह कम से कम स्कूल की तृतीया कक्षा उत्तीर्ण हो। गुरुकुल की जलवायु उत्तम तथा स्वास्थ्यप्रद है। अपने बालकों को प्रविष्ट कराने के इच्छुक सज्जन निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

गुरुकुल में एक बी० एस० सी० अध्यापक की भी आवश्यकता है जो उत्तरप्रदेश शिक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रमानुसार नवमी तथा दशमी कक्षाओं को सामान्य विज्ञान तथा गणित पढ़ा सके। अंग्रेजी आदि पढ़ाने के लिए एक बी० ए० बी० एड० अध्यापक की भी आवश्यकता है। वेतन योग्यता अनुसार दिया जायेगा। प्रार्थी महानुभाव निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें अथवा मिलें।

गुरुकुल हिसार शहर से ३ मील की दूरी पर बालसमन्द रोड के निकट नहर के किनारे पर स्थित है।

आचार्य
गुरुकुल आर्य नगर (हिसार)
पो०—आर्य नगर (कुरड़ी) जिला हिसार

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित शराबबन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए जिन ग्रामों में शराब के ठेके खुले हुए हैं, उन ग्राम पंचायतों के सरपचों तथा पंचों को प्रेरणा करके प्रस्ताव पास करवाने का यत्न करें कि शराब का ठेका बन्द किया जाये। प्रस्ताव का प्रारूप निम्न प्रकार प्रकाशित किया जा रहा है।

सेवा में,

माननीय उपायुक्त महोदय

आबकारी एवं कराधान विभाग हरयाणा, चण्डीगढ

निवेदन है कि हमारे ग्राम............जिला............पंचायत ने अपनी बैठक दिनाक.........में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है—

यह पचायत शराब पीने की बढती हुई प्रवृत्ति को ग्राम्य जीवन के लिये बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गांव में अनाचार, अशान्ति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की नशाबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द कर दी जाए और भविष्य में कदापि भी यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाए ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे। सधन्यवाद!

ता० .... विनीत

हस्ताक्षर ग्राम पंचायत के सदस्य

प्रतिलिपि सेवा में—

१- प्रधानमन्त्री, भारत सरकार नई दिल्ली।

२- मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

नोट—जिन पचायतों के प्रस्ताव ३० सितम्बर ८५ तक सरकार के पास पहुँच जावेंगे पंचायत एक्ट के अनुसार उन ग्रामों में शराब के ठेके नीलाम नहीं हो सकते।

अतः आर्यसमाजें अपने निकट के ग्रामों में जहां शराब के ठेके खुले हैं, वहां की पंचायतों से प्रस्ताव पास करवाकर ३० सितम्बर तक भिजवाने का यत्न करें।

ओ० शेरसिंह
सभा प्रधान

घल्लू-घालरा

मारो-मारो या मर जाओ यही है जिनका नारा।
धर्म कर्म और देश जाति से करते सदा किनारा॥
छीनते हैं मा बहनों के सुहाग की रेखा।
विधवा उन्हें बनाते जिन्होंने कुछ न देखा॥ घल्लू......
रेलें पलटें, बसे जलायें और विमान चुरायें।
बम फैंके, आतंक फलाएं और कटार घुमायें॥ घल्लू......
मोटर साईकिल पर करें इशारे बोलें भिन्न-२बोली।
आगे पीछे मौका पाकर अंधाधुन्ध चलाएं गोली॥ घल्लू......
नीली, पीली, काली पगड़ी पहने सन्त कहाते।
गुरुद्वारों में गुण्डों को हथियार चलाना सिखाते॥ घल्लू......
पाकर औरों से इशारा करते भाई का सफाया।
गैरों को कहते भाई हैं भाई को कहें पराया॥ घल्लू......
है देश का दुश्मन तगड़ा 'हरि' मिल के रगड़ा।
जहां भी हाथ आ जाये खत्म करो वहीं झगड़ा॥घल्लू......

वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन करें

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन है कि अगस्त, सितम्बर तथा अक्तूबर मास में अपनी सुविधा के अनुसार वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन अवश्य करें।

कुछ आर्यसमाजों ने श्रावणी उपाकर्म के दिनों ३० अगस्त से ७ सितम्बर तक की तिथियों में ही उपदेशक तथा भजनोपदेशक भेजने की मांग की है, परन्तु उपदेशकों की संख्या सीमित होने के कारण सभी आर्यसमाजों का इन तिथियों में प्रबन्ध कर सकना कठिन है। अतः इन तिथियों को छोड़कर यदि वेद सप्ताह का आयोजन करें तो सभा को प्रबन्ध करने में सुविधा रहेगी। अभी तक निम्नलिखित आर्यसमाजों के कार्यक्रम अंकित किए हैं—

आर्यसमाज	महम जिला रोहतक	२८ से ३१ जुलाई
,,	अबोहर (पंजाब)	२ से ४ अगस्त
,,	लाडवा जिला कुरुक्षेत्र	२६ जुलाई से ४ ,,
,,	कनीना जिला महेन्द्रगढ	२ से ४ ,,
,,	थानेसर जिला कुरुक्षेत्र	४ से ११ ,,
,,	झज्जर रोड बहादुरगढ जिला रोहतक	१० से १८ ,,
,,	मनाना जिला करनाल	१२ से १६ ,,
कन्या गुरुकुल	खानपुर जिला सोनीपत	१७, १८ ,,
आर्यसमाज	महेन्द्रगढ	२४, २५ ,,
,,	भील जिला जीन्द	२६ से २६ ,,
,,	सोनीपत शहर	२६ अगस्त से १ सितम्बर
,,	नरवाना जिला जीन्द	३० ,, ७ ,,
,,	सालवन जिला करनाल	२ से ७ ,,
,,	सिवानी मण्डी जि० भिवानी	४ से ७ ,,
,,	मुवाना जिला जीन्द	१ से ७ ,,
,,	दयानन्द मार्ग कबाड़ी बाजार अम्बाला छावनी	३० अगस्त से ७ ,,
,,	माडल टाउन सोनीपत	३० ,, ७ ,,
,,	रामेश्वरदास आर्य कन्या विद्यालय होली मोहल्ला करनाल (रजत जयन्ती)	१३ से १५ ,,
,,	जीन्द शहर	२३ से २६ ,,
,,	शिवाजी नगर गुड़गांव	७ से १३ अक्तूबर
,,	पुनाहाना जिला गुड़गांव	२१ से २७ ,,
,,	सेक्टर २३ फरीदाबाद	२७ से २६ ,,

सभा मन्त्री

उपदेशकों तथा गायक के चयन का साक्षात्कार ३ अगस्त को १० बजे होगा। प्रत्याशी प्रमाण-पत्रों सहित पधारें।

(पृष्ठ ३ का शेष)

जो वरुण अर्थात् वरण करने के योग्य उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव वाले व्यक्ति हैं, वह प्रभु उन का भी (चक्षुः) मार्ग दर्शक है अर्थात् विद्वान् (विद्+वान्) जानने वाले उस प्रभु के ज्ञान से लाभ उठाते हैं।

पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यौलोक में कोई भी स्थान ऐसा नहीं, जहां परमपिता परमात्मा न हो, जहां उसकी गति न हो, जहां उसकी व्याप्ति न हो, जहां उसका वास न हो। वह केवल (अप्रा) आप्लावित हो रहा है। अपितु (आ) 'आ समन्तात्' सब ओर से सर्व प्रकारेण; भली भांति (अप्रा) आप्लावित हो रहा है। उसकी व्याप्ति सीमित नहीं है, ऐसा नहीं कि वह पृथिवी, अन्तरिक्ष तथा द्यौलोक के किसी क्षेत्र में स्थान विशेष में, कुछ दूरी तक तथा कुछ पदार्थों में व्याप कर रह गया हो। समस्त भू-मण्डल, समग्र द्यौलोक तथा सम्पूर्ण अन्तरिक्ष लोक उससे ओत-प्रोत हैं।

आर्यसमाज को बचाया जा सकता है

—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

१४—आवश्यकता पड़ने पर जब किसी रोगी को खून चढ़ाया जाता है तो इस बात का ध्यान रखा जाता है कि चढ़ाया जाने वाला खून रोगी के वर्ग का हो—उसकी प्रकृति के अनुकूल हो। विपरीत गुणों वाला खून चढ़ाये जाने पर लाभ की बजाय हानि हो सकती है। नये खून के नाम पर जिन लोगों की भरती की जा रही है वे आर्यसमाज की मान्यताओं से कोसों दूर हैं। वेद पढ़ने की बात ही क्या, उनमें से अधिकांश को आर्यसमाज के १० नियमों तक का ज्ञान नहीं होता उन्हें आर्यसमाज में लाने वाले अपनी अपनी स्थिति मजबूत करने के उद्देश्य से चुनाव में हाथ खड़ा करने के लिए लाते हैं और आने वाले भी किन्हीं स्वार्थों से प्रेरित होकर आते हैं। फलतः हमारे सार्वदेशिक, प्रान्तीय तथा स्थानीय संगठनों की आज जो अवस्था है उसके होते हुए हम किस मुंह से दुनियां से कह सकते हैं कि आर्यसमाज में आने से तुम्हारे जीवन में पवित्रता आ जायेगी अपने संगठन को बनाये रखने के लिए अदालतों और पुलिस का सहारा लेने वाला समाज ऋग्वेद के एकता सूक्त का नारा लगाकर संसार का कल्याण करने की बात कैसे कह सकती है? आज हमारे संगठन का नेतृत्व पवित्र आचार-विचार वाले वैदिक विद्वानों संन्यासियों के हाथों से निकलकर वोट बटोरने में सिद्धहस्त सांसारिक व्यवहार में कुशल उछल कूद कर जनता को मोहने वाले विगड़मो हाथों में चला गया है। फिर 'यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः' के अनुसार सामान्य लोगों की स्थिति कैसे भिन्न हो सकता है? आवश्यकता इस बात है कि संगठन में व्यक्तिगत चरित्र को प्राथमिकता दी जाये और प्रमुखता उन लोगों को दी जाये जो सात्विक वृत्ति वाले हों और व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन में ईमानदार हों।

१५—आर्यसमाज के चिन्तन तथा संगठन को किसी राजनैतिक विचारधारा से प्रभावित नहीं होने देना चाहिये। प्रत्येक स्थिति में वह अपना भाग्यविधाता स्वयं रहे। अतः आर्यसमाज के संगठन के विभिन्न स्तरों पर इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि राजनैतिक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण तथा अत्यधिक सक्रिय व्यक्ति आर्यसमाज के संगठन में रहते हुये भी किसी पदाधिकारी के रूप में नियुक्त न होने पावें। राजनेताओं का हम सम्मान करें; किन्तु पूरा समय सर्वात्मना आर्यसमाज को समर्पित विद्वानों, संन्यासियों तथा उपदेशकों आदि से बढ़कर नहीं। राजनेता क्षत्रिय है और प्रायः गृहस्थ होता है। वर्णाश्रम व्यवस्था के अनुसार उसका स्थान ब्राह्मण और संन्यासी की अपेक्षा नीचे है।

१६—विदेशी शासन के जमाने में हमारी शिक्षण संस्थायें राष्ट्रवाद की पनीरी का काम देती थी। उनमें पढ़ने पढ़ाने वालों पर आर्य समाज की छाप होती थी, किन्तु अब उनका कोई उपयोग नजर नहीं आता। इतना ही नहीं कि वे आर्यसमाज के सिद्धान्तों या मान्यताओं के प्रचार में सहायक नहीं रहीं, बल्कि उनके सम्भालने के सिलसिले में अनेक हेय काम करने पड़ते हैं, अवांछनीय तत्त्वों को प्रश्रय देना पड़ता है। चरित्रहीन व्यक्तियों को सम्मानित करना पड़ता है। आर्यसमाजों और प्रान्तीय सभाओं के झगड़ों के मूल में प्रायः ये स्कूल, कालिज ही मिलेंगे। हमारी शिक्षण संस्थाओं के प्रिंसिपलों और मुख्याध्यापकों या मुख्याध्यापिकाओं में शायद ही कोई आर्यसमाजी हो। यदि कोई दिखाई भी देते हैं तो उस दिन तक जब तक वे कुर्सी पर बैठे हैं। उनके भीतर झांक कर देखेंगे तो आर्यसमाज के दर्शन नहीं होंगे। संस्था का संचालन वे बड़ी कुशलता से करते हैं, किन्तु सिद्धान्त, व्यवहार, आचार विचार, रहन-सहन आदि की दृष्टि से उनमें और दूसरी संस्थाओं के आचार्यों में कोई अन्तर नहीं मिलेगा। फिर अध्यापकों का तो कहना ही क्या? उनमें से अधिकतर धूम्रपान, मदिरापान और मांसाहार करने वाले हैं। सिनेमाघर में तो वे हर तीसरे दिन सपरिवार मिल सकते हैं; किन्तु आर्यसमाज मन्दिर में वे १० वर्ष में एक बार भी नहीं जा सकते। धर्म शिक्षा की बात अब प्रायः सुनने में नहीं आती। अब यह व्यवहारिक भी नहीं रहा यद्यपि सरकार की ओर से धर्म शिक्षा अनिवार्य कर दी गई है। अब धीरे धीरे शिक्षा का सरकारीकरण होता जा रहा है। सरकार और यूनिवर्सिटी के नित्य नये आदेशों के कारण जहाँ एक ओर हमारा दायित्व बढ़ता जा रहा है, वहाँ दूसरी ओर हमारे अधिकार समाप्त होते जा रहे हैं। नये वेतन स्तर लागू होने के बाद से नियुक्ति का अधिकार हमारे हाथों से निकल गया है। नियुक्ति के बाद तो न पहले किसी को कुछ कहा जा सकता था और न भविष्य में कहा जा सकेगा। जब कर्त्ता हमारे अनुकूल नहीं तो अनुकूल क्रिया कैसे होगी? फिर भी कुछ उपाय हैं जिन्हें अपनाने पर कुछ न कुछ लाभ उठाया जा सकता है—

(क) आर्यसमाज के प्रत्येक स्कूल और कालिज में प्रतिवर्ष अध्यापकों की गोष्ठी का आयोजन किया जाये। इस गोष्ठी में सभी अध्यापकों की उपस्थिति अनिवार्य हो और आर्यसमाज के सुलझे हुए विद्वान् संक्षेप में आर्यसमाज की मान्यताओं और कार्यकलापों की जानकारी दें।

(ख) समय समय पर विशेष व्याख्यानों की व्यवस्था की जाये। तदर्थ आधुनिक सन्दर्भ में वैदिक सिद्धान्तों की व्याख्या में समर्थ विशिष्ट विद्वानों को आमन्त्रित किया जाये।

(ग) प्रत्येक स्कूल और कालेज में छुट्टी से पहले दिन निम्नलिखित पर्व मनाये जाया करें। इस अवसर पर किसी विद्वान् को आमन्त्रित किया जाये जो पर्व विशेष से सम्बन्धित बातों के साथ साथ निम्नलिखित विषयों की विशेष रूप से किन्तु प्रसंगवश चर्चा अवश्य करें—

१—शिवरात्रि—दयानन्द व व्रतोपवास।

२—होली—यज्ञ व प्रह्लाद के जीवन सम्बन्धी अनर्गल बातें।

३—रक्षाबन्धन-वेद, हैदराबाद सत्याग्रह व संस्कृत दिवस।

४—कृष्ण जन्माष्टमी—कृष्ण चरित्र-पुराणों, महाभारत व गीता की दृष्टि से।

५—स्वतन्त्रता दिवस—दयानन्द व आर्यसमाज का योगदान।

६—दशहरा—राम का मानव रूप, अवतारवाद व श्रवण के सन्दर्भ में जीवित माता की सेवा ही श्राद्ध।

७—दीवाली—दयानन्द।

८—श्रद्धानन्द दिवस-आर्य शिक्षा पद्धति, शिक्षा का माध्यम; शुद्धि व दलितोद्धार।

१७—महर्षि दयानन्द मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा के समर्थक थे, सहशिक्षा के विरोधी थे और ऐसे विद्यालय चाहते थे, जिनमें राजकुमार और दरिद्र के सन्तान एक साथ पढ़ सकें इसलिए आर्यसमाज की ओर से ऐसे स्कूल न खोले जायें जिनमें प्रारम्भ से ही अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दी जाये, लड़के लड़कियां एक साथ पढ़ते हों और जिनमें केवल धनी वर्ग के लोगों के बच्चे ही पढ़ सकें, जो खुल चुके हैं उनके नाम में से दयानन्द, आर्य या आर्यसमाज के किसी नेता का नाम निकाल दिया जाये।

१८—भारत की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति, आचार विचार आदि की रक्षा और उनके विकास के लिए आवश्यक है कि शिक्षा के क्षेत्र में आर्य शिक्षा पद्धति को अपनाया जाये। महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि 'अंग्रेजी ढंग के स्कूल खोलना आर्यसमाज का काम नहीं है।' इसलिये आर्यसमाज की सारी शक्ति आर्ष पद्धति के अपनाने में लगनी चाहिये।

(क्रमशः)

हरयाणा में सिखों की स्थिति

मेजर दरियावसिंह, माडल टाउन रोहतक

१८ जून १९८५ को अवकाश प्राप्त लेफ्टीनेंट जनरल जगजीतसिंह अरोड़ा अखिल भारतीय विद्या परिषद के निमत्रण पर हरयाणा के रोहतक नगर में हिन्दू कालेज के प्रागण में आयोजित एक विशेष सभा में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। इस सभा की अध्यक्षता का अवसर मुझे प्राप्त हुआ। आशा के विपरीत जनरल अरोड़ा जैसे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के अनुभवी व्यक्ति के विचार सुनकर खेद नहीं आश्चर्य भी हुआ। जनरल अरोड़ा ने अपने भाषण में स्पष्ट रूप से हरयाणा की जनता पर सिखों के साथ दुर्व्यवहार करने के निर्मूल आरोप लगाये। उन्होंने यहां तक कहा कि हरयाणा मे न केवल सिखों को द्वितीय श्रेणी का नागरिक समझा जाता है, उन्हें आतंकवादी समझ कर हर सिख का अपमान किया जाता है। प्रतिष्ठित वक्ता के इस प्रकार के दुर्भाग्यपूर्ण उद्गार सुनकर अध्यक्ष पद की गरिमा रखते हुए मैं केवल संकेत के रूप में अपनी निराशा प्रकट कर सका, अन्यथा वक्ता के रूप में श्रोताओं का ध्यान मैं निम्नलिखित तथ्यों की ओर आकृष्ट कराना चाहता था, जिससे जनरल अरोड़ा की धारणा निर्मूल सिद्ध हो जाती है।

पंजाब में हिन्दू व सिख जनता का अनुपात ४७ : ५३ % का है। परन्तु समस्या के मोर्चे में एक भी हिन्दू शामिल नही है। इसलिये पंजाब समस्या या तो केवल सिख समस्या ही है, या फिर ४७ % हिन्दू जनता पंजाब की नागरिक ही नहीं समझी जाती।

जनरल अरोड़ा का आक्षेप है कि हर सिख को आतंकवादी समझ लिया जाता है, विचारणीय है। पहली बात तो यह है कि जितने भी पंजाब की समस्या से जुड़े आतंकवादी अब तक जनता के सम्मुख आये, वे सब सिख वेशभूषा में थे अतएव हर अपरिचित सिख पर सन्देह होना स्वाभाविक ही है। यह मान भी लिया जावे कि तथाकथित आतंकवादी सिख नही थे, किन्तु सिख वेश में अन्य कोई तत्व थे और सिख धर्म स्थलो में जाकर छुपे रहते थे। तब क्या यह समस्त सिख सम्प्रदाय का कर्त्तव्य नही कि उन्हें पकड़कर कानून के हवाले करे और अपने धर्म की मर्यादा व छवि धूमिल होने से बचाए ?

सिखों के साथ नाइन्साफी का सवाल निर्मूल व सर्वथा असत्य है। सर्वप्रथम तो भारतवर्ष ही पूरे विश्व में ऐसा देश है जहां पर एक सम्प्रदाय के लोगों को बिना लाइसेंस हथियार रखने की इजाजत है; पर दूसरों को नहीं। क्या सिख लोग धर्म के नाम पर लटकाई हुई कृपाण का प्रयोग किसी निहत्थे आदमी के साथ परस्पर झगड़ा होने के बाद नहीं करते ?

समस्त विश्व में कोई ऐसी धार्मिक या सामाजिक जगह नहीं है जहां आवश्यकता पड़ने पर कानून व्यवस्था लागू करने वाली एजेंसी प्रवेश कर जांच पड़ताल न कर सके। यदि ऐसा है तो फिर गुरुद्वारों में पुलिस या सेना के प्रवेश पर यह हंगामा क्यों ?

जिस प्रकार पंजाब के कुछ भूतपूर्व सैनिकों ने आतंकवादियों को प्रशिक्षित किया, उस तरह हरयाणा या अन्य राज्य के तो किसी भूतपूर्व सैनिकों ने अपने कर्त्तव्य की अवहेलना नहीं की ?

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है कि हरयाणा की जनता पर लगाए गए आरोप संतुलित व विवेकपूर्ण नहीं है।

(दैनिक ट्रिब्यून से साभार)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

डाक पंजीकरण सं० 83887/73 रजि० सं० P/RTK 49 सृष्टि सम्वत् १,९६,०८५३,०८६



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १२, अंक ३६ ७ अगस्त १९८५ (वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

वैदिक प्रश्नोत्तरी

प्रश्न—यह सारा ससार किसने बनाया है ?

उत्तर—ईश्वर ने।

प्रश्न—ईश्वर कहा रहता है ?

उत्तर वह सर्वव्यापक है। ससार में कही कोई ऐसा स्थान नही जहा परमात्मा न हो।

प्रश्न—उसका मुख्य नाम क्या है ?

उत्तर—ईश्वर के अनेक नामों में सबसे श्रेष्ठ और मुख्य नाम "ओ३म्" है।

प्रश्न—ईश्वर ने मनुष्य को सबसे अच्छी वस्तु क्या दी है ?

उत्तर—सबसे अच्छी वस्तु बुद्धि दी है और उसकी सहायता के लिए ईश्वर ने अपना ज्ञान दिया है।

प्रश्न—ईश्वर का ज्ञान कौनसा है और वह कब दिया गया ?

उत्तर—वेद ईश्वरीय ज्ञान है और वह सृष्टि के आदि में प्रकाशित हुआ था।

प्रश्न—वेद कितने और उनके नाम क्या हैं ?

उत्तर—वेद ४ हैं। ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद और अथर्ववेद।

प्रश्न—इन सब पुस्तको मे सबसे बडा देवता कौन माना गया है।

उत्तर— परमात्मा।

प्रश्न—देवता किसे कहते हैं ?

उत्तर—जो दूसरो को दान करे, उपकार करे वही देवता है।

प्रश्न—देवता कितने और कौन कौन हैं ?

उत्तर—देवता ३३ हैं जिनमें सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वायु इत्यादि मुख्य हैं।

प्रश्न—क्या यह मिट्टी, पत्थर, वृक्ष आदि जिनको पूजकर बहुत लोग पूजते हैं क्या वे देवता नहीं हैं ?

उत्तर—नही, क्योंकि वे कुछ दिव्य पदार्थ देने के स्थान में भेंट पूजा लेते हैं। वे देवता नहीं लेवता हैं। इनकी पूजा हमे कभी नही करनी चाहिए।

प्रश्न—क्या कोई जीवित चलते फिरते देवता भी हैं ?

उत्तर—हा ! माता, पिता, गुरु, अतिथि और विद्वान् पुरुष हमारे लिए जीवित देवता हैं। उनकी पूजा, भक्ति और सेवा सत्कार करना हम सबका परम कर्तव्य है। हमें सच्चे देवताओ को ही मानना चाहिए और सब काम सत्य एव असत्य को विचार करके ही करने चाहिए।

प्रश्न—धर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर—ईश्वर की आज्ञा का पालन, पक्षपात रहित न्याय, सर्वहित करना सब मनुष्यों के लिए सबसे भजनीय कहलाता है।

प्रश्न—धर्म शब्द का अर्थ क्या है ?

उत्तर—जो धारण करने योग्य हो अथवा जिससे किसी वस्तु की सत्ता रहे वह धर्म है। जैसे अग्नि का धर्म प्रकाश और गर्मी है, जब तक यह दोनों गुण उसमें रहते हैं वह अग्नि कहलाती है और उसके नष्ट होने से अग्नि भी राख बन जाती है।

प्रश्न—मनुष्य का धर्म क्या है ?

उत्तर अच्छे गुणो को धारण करके प्राणिमात्र का उपकार करते हुए मोक्ष को प्राप्त करना।

प्रश्न धर्म के लक्षण क्या हैं ?

उत्तर—धर्म के दस लक्षण हैं—

धृति क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रियनिग्रह।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो, दशक धर्मलक्षणम्।

अर्थात् धैर्य, क्षमा, मन को वश मे करना, चोरी न करना, शुद्धता, इन्द्रियो का दमन, आत्मज्ञान, विद्या, सत्य और क्रोध न करना, धर्म के ये दस लक्षण है।

प्रश्न—धर्म का क्या फल होता है ?

उत्तर—धर्म करने से स्वर्ग या मोक्ष मिलता है।

प्रश्न—स्वर्ग किसे कहते है ?

उत्तर—जो विशेष सुख और सुख की सामग्री का जीव को प्राप्त होना है वह स्वर्ग कहलाता है।

प्रश्न—और 'नरक' किसे कहते है ?

उत्तर—जो विशेष दु ख और दु ख की सामग्री का जीव को प्राप्त होना है उसको नरक कहते हैं

प्रश्न—यह स्वर्ग और नरक आकाश मे बने हुए हैं ?

उत्तर—नही यह कोई विशेष स्थान या मकान नही हैं, किन्तु इसी ससार मे जीवात्मा को विशेष सुख एव दु ख के रूप मे प्राप्त हो सकते हैं।

प्रश्न—और 'मोक्ष' किसे कहते हैं ?

उत्तर—जिससे सब बुरे काम और जन्म मरण आदि दु ख सागर से छूटकर सुखरूप परमेश्वर को प्राप्त होके सुख ही में रहना है वह 'मोक्ष' या 'मुक्ति' कहलाती है।

प्रश्न—मुक्ति के साधन क्या हैं ?

उत्तर ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का करना, धर्म का आचरण और पुण्य का करना, सत्सग विश्वास तीर्थ सेवन सत्पुरुषो का सग और परोपकारादि सब अच्छे कर्मों का करना एव सब दुष्ट कर्मों से अलग रहना यह सब मुक्ति के साधन हैं।

प्रश्न—'तीर्थ' किसे कहते हैं ?

उत्तर—जिससे जीव दु खसागर से तर जावे वही तीर्थ है जना येन तरन्ति तत् तीर्थम्। जितने विद्याभ्यास सुविचार ईश्वरोपासना धर्मानुष्ठान सत्य का सग ब्रह्मचर्य जितेन्द्रियता आदि उत्तम कर्म हैं ये सब तीर्थ कहलाते हैं।

प्रश्न लोग तो काशी, प्रयाग, पुष्कर हरिद्वार आदि मे तीर्थ करने जाते हैं वे क्या है ?

उत्तर—यह तीर्थ नहीं हैं, केवल वहा जाने से मनुष्य नही तर सकते। हृदय मे परमात्मा की भक्ति एव उत्तम गुण धारण करने से ही तर सकते हैं।

भाषाओं की जननी संस्कृत

संस्कृत में निर्णय का औचित्य

विगत १८ मई ८५ के समाचार-पत्रो के माध्यम से जब इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री बनवारीलाल यादव द्वारा दिये गये संस्कृत भाषा मे निर्णय का समाचार ज्ञात हुआ तो अनेक संस्कृत प्रेमी सज्जनो तथा संस्थाओ ने इसका स्वागत किया। यद्यपि कुछ लोगों ने संस्कृत भाषा की महत्ता को स्वीकार किया तथापि निर्णय की व्यावहारिकता के कारण औचित्य के माध्यम से समालोचना भी किया।

इस सम्बन्ध मे मेरा अपना विचार है कि संस्कृत भाषा के अन्दर ही भारतीय संस्कृति की झलक मिलती है। जैसा कि कहा भी गया है "भारतस्य प्रतिष्ठा द्वे, संस्कृत संस्कृतिश्च"। लार्ड मैकाले की शिक्षा से आज भारतीयो के मानसिक दासता का परिचय सर्वविदित हो गया है, और शिक्षा प्रणाली की व्यावहारिकता को दृष्टि मे रखते हुए हमारी सरकार नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाने मे जुटी हुई है।

पाश्चात्य संस्कृति व सभ्यता के अन्धानुकरण का स्पष्ट प्रभाव चारित्रिक पतन के रूप मे दृष्टि गोचर हो रहा है। मेरे विचार से गुरुकुल शिक्षा प्रणाली व संस्कृत भाषा के माध्यम से पढने वाला शायद ही ऐसा कोई छात्र होगा जिसने चोरी, बलात्कार, राहजनी, अपहरण आदि कृत्य किये हो, जबकि समाचार पत्रो मे वर्तमान विद्यालयो तथा विश्वविद्यालयो के छात्रों के नाम पढ़ने को मिलते है।

इस सत्य से कोई पराङ्मुख नही हो सकता कि मानव जीवन निर्माण के जन्म से मृत्यु पर्यन्त तक के सोलह संस्कार रूपी साधन संस्कृत भाषा मे ही वर्णित है। ऋषि-मुनियो द्वारा प्रवर्तित आध्यात्मिक ज्ञान की ज्योति, आत्मशान्ति के साधन का मार्ग इसी भाषा मे अपौरुषेय ग्रन्थ वेद में समाहित है जिसका अन्वेषण कर आज विदेशी विद्वान्, वैज्ञानिक जगत् में आविष्कार कर रहे हैं।

संस्कृत भाषा को मृतभाषा कहना स्वय अपनी हीनता प्रदर्शित करना है। जिस भाषा को समस्त भाषाओं को जननी के रूप मे जाना जाता हो, जिस भाषा के महर्षि पाणिनि जैसे वैयाकरण के बारे मे "न भूतो न भविष्यति" कह दिया गया हो, जिस भाषा मे संसार का प्राचीनतम ग्रन्थ 'वेद' मानव मात्र के लिए ज्ञान-विज्ञान के समुच्चय के रूप मे उपलब्ध हो तथा जिस भाषा मे आर्य (हिन्दू) जाति के समस्त कर्मकाण्ड सम्पन्न होते हो वह मृत कैसे ?

विगत मई मास मे इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री बनवारीलाल यादव ने एक अभियोग का संस्कृत मे निर्णय देकर एक प्रशंसनीय एवं साहसी पग उठाया है। साथ ही हम भारतीयो को सावधान किया है, कि संस्कृत सम्पूर्ण, सक्षम एव समृद्ध भाषा है। अतः भारतीयों को संस्कृत भाषा पूरे उत्साह से सीखने की दिशा मे एक सजीव प्रेरणा दी है। सम्पादक

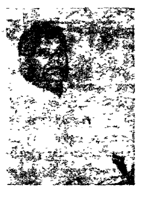
हाँ ! जब यह राज्याश्रय थी तो मध्यकाल के विद्वानो ने प्रतिस्पर्धा मे इसे दुरूह अवश्य बना दिया जिसका भय आज भी जन-साधारण में व्याप्त है। एक समय ऐसा भी रहा जब यह मात्र ब्राह्मण जाति विशेष की भाषा तक सीमित रह गई, तभी से यह व्यावहारिकता से दूर हो गई। परन्तु आज यह सभी वर्ग, जाति, धर्म के लोगो के लिए उपलब्ध है। वहा आज से लगभग ३० वर्ष पूर्व इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे इस भाषा मे छात्र-छात्राओ की संख्या नगण्य थी, वहीं आज छात्राये विशेष कर इस विषय के प्रति आकर्षित है और बिना किसी भेदभाव के सैकड़ों की संख्या में अध्ययन कर रही है।

आज इस भाषा के सरलतम विधि से अध्ययन व व्यावहारिक ज्ञान की दृष्टि से अनेक संस्थाये कार्यशील है। शासन द्वारा भी भाषा के माध्यम से उपाधि प्राप्त करने वालो को मान्यता दी जा रही है। परन्तु जब हम अपने संविधान के अनुरूप स्वतन्त्रता प्राप्ति के ३७ वर्षों के पश्चात् भी राष्ट्रभाषा हिन्दी को पूर्णरूपेण नही अपना सके है तो संस्कृत भाषा दूर रहेगी ही। अतः आज आवश्यकता है कि हम अपनी संस्कृति व सभ्यता के प्रति अटूट निष्ठा व्यक्त करते हुए संस्कृत का अध्ययन कर व्यावहारिकता में परिवर्तन करें। न्यायमूर्ति श्री यादव जी ने हिन्दी, अंग्रेजी में अनुवाद करके ऐतिहासिक निर्णय को गौरवशाली परम्परा संस्कृत भाषा में निर्णय देकर किया है। आशा है भारतीय जनमानस अपने पूर्वजों की इस 'थाती' को सम्यक् रीति से सुरक्षित रखते हुए इनकी श्रीवृद्धि मे योगदान देंगे। इससे जहां एक ओर भाषाई विवाद का अन्त होगा वहाँ दूसरी ओर राष्ट्रीय एकता भी सुदृढ़ होगी।

श्री सुरेश चन्द्र शास्त्री
प्रचार मन्त्री, जिज्ञासु सरलतम संस्कृत प्रचार समिति, प्रयाग

सभा के पूर्व गणक श्री नवाबसिंह जी के

बच्चों की सहायता के लिए अपील



श्री नवाबसिंह गणक

सर्वहितकारी मे छपी सूचना से आपको पता लग ही गया है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मुख्य कर्मचारी श्री नवाबसिंह जी गणक का दिनांक २३ जून को ४६ वर्ष की आयु मे ही आकस्मिक निधन हो गया है। इस कारण सभा को बड़ी क्षति हुई है। वे १९६३ से आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा मे गणक (अकाउण्टेंट) के रूप मे आ गये थे और सभा के हिसाब तथा अन्य प्रबन्ध सम्बन्धी सभी कार्यों को बडी योग्यता एवं निष्ठा के साथ करते थे। उन्होंने निरन्तर २२ वर्ष तक वेतन पर सभा की सेवा बहुत ही लग्न से की है। अपने जीवन के अन्तिम समय रुग्णावस्था में भी उन्होने सभा का कार्य किया।

वे अपने पीछे विधवा पत्नी, एक छोटा लडका तथा ५ लडकियां छोड़ गये है। उन्होंने गत वर्ष केवल एक लड़की की शादी की थी, जिसका ऋण भी अभी तक नही उतार सके थे। भविष्य निधि में भी उनके थोडे ही पैसे बचे हैं। ऐसी स्थिति मे सभा तथा आर्यसमाजों का नैतिक कर्त्तव्य बनता है कि आर्यसमाज के एक निष्ठावान् कार्यकर्त्ता के परिवार की सहायता दिल खोलकर करे। अब उस परिवार मे कमाने वाला अन्य कोई नही है।

आप आर्यसमाज के निष्ठावान् अधिकारी एव कार्यकर्त्ता है। अत इस पुण्य कार्य के लिए व्यक्तिगत अथवा अपने आर्यसमाज की ओर से अधिक से अधिक राशि सभा कार्यालय मे भिजवाने की कृपा करें।

—: निवेदक —

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	प्रो० सत्यवीर शास्त्री	रामकृष्ण
प्रधान परोपकारिणी सभा	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

कुम्भ मेले पर वेद प्रचार का आयोजन

आर्य विरक्त वानप्रस्थ आश्रम की अन्तरंग सभा द्वारा यह निश्चय किया गया है कि आगामी वर्ष अप्रैल १९८६ से हरिद्वार मे होने वाले विशाल कुम्भ मेले मे सभी आर्यसमाजों एवं संस्थाओं के सहयोग से एक बृहत प्रचार कैम्प लगाया जाये।

हरिद्वार के इस कुम्भ मेले मे आर्यजगत् की सम्पूर्ण शक्ति जीवन्त रूप मे प्रतिबिम्बित हो। इस हेतु देश की सभी आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं एव आर्य बन्धुओं से अनुरोध है कि वे इस मेले की रूप रेखा कार्यक्रम आदि के बारे में विचार करने हेतु १८ अगस्त ८५ को आर्य विरक्त वानप्रस्थ आश्रम में बैठक में भाग लेने हेतु आमन्त्रित हैं। यह संयुक्त बैठक अपरान्ह २ बजे से होगी। जगदीश मुनि

संयोजक, उपसमिति वानप्रस्थाश्रम-ज्वालापुर हरिद्वार

सम्पादकीय

केन्द्र अकाली समझौता और हरयाणा

पंजाब समझौते में दो कमीशन (आयोग) नियुक्त करने का प्रावधान किया गया है। एक कमीशन यह फैसला करेगा कि चण्डीगढ के बदले मे कौन सा पंजाब का हिन्दी भाषी क्षेत्र हरयाणा को दिया जाये। दूसरा कमीशन दोनो प्रान्तों की सीमा पर बसे हुए गावो के बारे मे उन प्रान्तो के जो दावे किए जायेंगे, उनके सम्बन्ध मे निर्णय लेगा। पंजाब मे हिन्दी भाषी क्षेत्र जिसको अकालियों ने बार-बार माना (अक्तूबर १९५६, दिसम्बर १९६५, जनवरी १९७०) व अबोहर फाजिल्का के १०५ गाव जिनमे कन्द्र खेड़ा ग्राम भी शामिल है। अकालियों ने कभी भी किसी और इलाके को हिन्दीभाषी नहीं माना और ऐसे गांव और इलाके ढूंढने का काम पहले कमीशन का नहीं है। इसलिए सरकार और कमीशन के पास कोई भी विकल्प नहीं है, सिवाय अबोहर फाजिल्का के १०५ गाँव। इस समझौते मे गांव को इकाई मान कर फैसला करने का सुझाव है। इसलिए कमीशन इसी आधार पर १०५ गाव के बारे मे जांच कर सकते है कि उनमे से कितने गाव इस सिद्धान्त पर पूरे उतरते है। उनकी संख्या १०५ से कम भी हो सकती है और ज्यादा भी हो सकती है।

रावी-व्यास जल का प्रश्न

समझौते मे केवल पंजाब और हरयाणा के किसानो ने जो पानी इस्तेमाल कर लिया। उसके बाद बचे हुए पानी का बटवारा करने के लिए पंचट (ट्रिब्यूनल) के गठन का फसला किया। त्रिपक्षीय वार्ता मे भी पिछले तीन सालो मे भी यह बात कभी सामने नही आई। न्याय तो यह है कि ट्रिब्यूनल पूरे पानी का उचित बटवारा करे और जिसने अपने हिस्से का ज्यादा पानी इस्तेमाल कर लिया उससे वह पानी लेकर दूसरे को दिया जाये। ऐसा न करने पर हरयाणा को न्याय कैसे दे सकेंगे। यह मैं नहीं समझता और हरयाणा और राजस्थान दोनो को न्याय कैसे दे पायेंगे। यह सभव कैसे हो सकता है।

अक्तूबर, १९६६ मे पंजाब का पुनर्गठन करते समय जो एक्ट ससद मे पास किया उसके अनुसार रोपड़, फिरोजपुर, हरिके के हैड वर्क्स का नियन्त्रण भाखड़ा-व्यास प्रबन्ध बोर्ड के पास होना चाहिए। पिछले १७ वर्ष से संसद के कानून की धज्जिया उड़ाकर पंजाब हैड वर्क्स पर कब्जा किए बैठा है और राजस्थान और हरयाणा दोनों का ८५ प्रतिशत पानी दबा लेता है। समझौते मे इसका जिकर न होना तो ठीक है लेकिन यह तो कानून पर अमल करने का मामला है। १७ साल से चल रहे हरयाणा राजस्थान के प्रति इस अन्याय को समाप्त करना चाहिए।

प्रश्न आज हरयाणा की प्रतिष्ठा और उसके अधिकारों का है और इसके लिए सभी दलों, संस्थाओ, स्वयसेवी सगठनो का कत्तव्य है कि वे मिलकर अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ें। सत्ता दल और विरोधी दल के पचडे में इस प्रश्न को डालना हरयाणा के हितो के विरुद्ध है। मेरी सभी नेताओं से प्रार्थना है कि वे दलगत राजनीति से ऊपर उठकर समूचे हरयाणा का प्रश्न बनाकर संघर्ष करें। – प्रो० शेरसिंह

अकालियों का वज़न ज्यादा उनकी बात मान ली गई—शेरसिंह

अबोहर, ४ अगस्त (गोयल): हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रोफेसर शेरसिंह ने आज यहा जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम केन्द्र-अकाली सन्धि का स्वागत करते हैं। सन्त लौंगोवाल ने उग्रवादियों व खालिस्तान के विरुद्ध जो आवाज उठाई है उससे देश की एकता सुदृढ़ होगी।

बिश्नोई मन्दिर मे अपने भाषण मे उन्होंने कहा कि वास्तव में अकालियों का वजन ज्यादा है, हमारा कम है अत उनकी बात मान ली गई। हरयाणा के लोग इस समझौते पर रुष्ट हैं (हरयाणा व राजस्थान को बातचीत मे शामिल नहीं किया गया। यह इन दोनो राज्यों के लोगों का अपमान है।)

उन्होंने कहा कि यह धारणा गलत है कि यदि अबोहर व फाजिल्का हरयाणा मे शामिल हो गए तो इससे पंजाब के हिन्दू कमजोर हो जायेंगे क्योंकि पंजाब के हिन्दू अकेले नही है सारा देश उनके साथ है। इसी तरह यह विचार भी गलत है कि अबोहर-फाजिल्का हरयाणा मे चले गये तो पानी नही मिलेगा। उन्होने कहा कि अकाली शक्तिशाली हैं। उन्होंने अपनी बात मनवा ली और चण्डीगढ व अबोहर फाजिल्का बारे उन्होंने इन्दिरा अवार्ड खत्म करा दिया।

उन्होने कहा कि वास्तव मे १९८१ की जनगणना मे कुछ गड़बड़ हुई है। भाजपा नेता यज्ञदत्त शर्मा व उनके कुछ साथियो के कहने पर भाषा के खाने में हिन्दुओं ने ठीक इन्द्राज नही कराया हालाकि इससे पहले वह अपनी मातृभाषा हिन्दी लिखाते रहे है। अकालियों ने मत फतेहसिंह की जान बचाने के लिए चण्डीगढ के बदले अबोहर-फाजिल्का हरयाणा को देना मान लिया था।

अब तहसील की बजाय गाव को इकाई माना गया है। हरयाणा के लोग तैयार होकर आयोग के समक्ष अपना केस पेश करें। भजनलाल हमे कुछ नही दिला सकते, हमे स्वय तैयार होना पड़ेगा।

(पंजाब केसरी ५-८-८५ से)

सृष्टि संवत्—

डा० लक्ष्मणसिंह की शंका का समाधान

डा० लक्ष्मणसिंह प्रधान—आर्यसमाज सालवन जिला करनाल का दिनांक रहित पत्र प्राप्त हुआ। जिसमे यह जिज्ञासा प्रकट की गई है कि आर्यसमाज मे दो प्रकार का सृष्टि सवत् प्रचलित है उनमे से कौन सा सृष्टि-सवत् ठीक है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश (अष्टम सम्मुल्लास) और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका (वेदोत्पत्ति) मे जिस सृष्टि सवत् का प्रतिपादन किया है, वही हमारे लिए प्रामाणिक मान्य है—

युग	वर्ष संख्या
सतयुग	१७२८०००
त्रेता	१२९६०००
द्वापर	८६४०००
कलि	४३२०००
एक चतुर्युगी	४३२००००
	×७१
एक मन्वन्तर	३०६७२००००
	×६
बीते हुए छे मन्वन्तरो का काल	१८४०३२००००
चालू वैवस्वत मन्वन्तर का काल	+१२०५३२८९६
१९३२ वि० मे महर्षि द्वारा प्रतिपादित	१९६०८५२९७६
महर्षि के बाद बीता हुआ काल	+१०९
२०४२ वि० मे वर्तमान सृष्टि सवत्	१९६०८५३०८५

१ स्वायम्भव, २. स्वारोचिष, ३ औत्तमी, ४ तामस, ५ रैवत् ६. चाक्षुष।

यह उपलिखित सृष्टि सवत् ही महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित है। इसमें भिन्न सृष्टि सवत् आर्यपण्डितों की अपनी कल्पना है। जिसका उत्तर आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट २ एफ, कमला नगर दिल्ली-७ द्वारा प्रकाशित दयानन्द सन्देश मासिक पत्रिका के द्वारा खोलकर दिया गया है। उस विशेषांक को आप अवश्य पढ़े।

एक आर्य सिद्धान्त पर विचार करने का अवसर प्रदान करने के लिए डा० लक्ष्मणसिंह जी का हार्दिक धन्यवाद है।

—सुदर्शनदेव आचार्य सभा उपमन्त्री
(दयानन्द आश्रम, नलवा
हिसार (हरयाणा)

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

वेदमन्त्रोच्चारण प्रतियोगिता

विश्वसंस्कृत प्रतिष्ठानम् (हरयाणा) के तत्वावधान में दिसम्बर में यमुनानगर में एक मन्त्रोच्चारण प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। जो कोई भी यजुर्वेद के कम से कम पांच अध्याय कण्ठस्थ करके सुनायेंगे उनमें से सफल दस प्रतियोगियों को अच्छे पुरस्कार दिए जाए गे। साथ ही जो महिलाए यजुर्वेद के कम से कम दो कोई भी अध्याय कण्ठस्थ करके सुना पायेगी उनमें से सफल पाच प्रतियोगियों को भी अच्छे पुरस्कार दिए जाएगे।

यह प्रतियोगिता हरयाणा प्रदेश के लोगों के लिए ही है। जो बारह के नगरों से आए सफल प्रतियोगी होंगे उन्हें मार्ग व्यय भी दिया जाएगा। हरयाणा प्रदेश के विशेषतः अविज्ञात तथा उपेक्षित वेदपाठियों और वेद प्रेमियो के लिए यह आयोजन है। वृत्त-पत्रो के माध्यम से सूचना का प्रसारण पुनः भी किया जाएगा। इसमें रुचि रखने वाले सज्जनों और सस्थाओ से पूर्ण सहयोग की अपेक्षा है।

पत्र परिचय	सत्यदेव वर्मा
प्रो० सत्यदेव वर्मा	प्रधान
मा० रा० यमुनानगरम्	विश्व स० प्रतिष्ठानम्

आर्यसमाज मडलोडा में वेदप्रचार

गांव मडलोडा जिला करनाल में दिनांक २१-७-८५ को स्वामी रुद्रवेश जी द्वारा भजन व उपदेश हुए जो कि अति संघर्ष के मध्य हुए जिसमें काफी प्रश्न उत्तर हुए। मूर्तिपूजा, कबर पूजा व अन्धविश्वास आदि कुप्रथाओ के विरुद्ध खण्डन करके तर्क सगत उदाहरण देकर हानि व लाभ समझाये गये। शराब व अन्य नशीली वस्तुओं के प्रयोग की हानि समझाई गई तथा शराब व नशीली वस्तुएं इस्तेमाल करना बन्द करने की जनता अपील की गई। दहेज न लेने न देने पर बल दिया गया तथा शादियों में सादगी व कम बारात के साथ बिना किसी हु-हल्ला के करने की शिक्षा दी गई।

मन्त्री आर्यसमाज मडलौडा (करनाल)

आर्यसमाज मन्दिरों का उद्घाटन

आर्यसमाज पुनसिका जिला महेन्द्रगढ

ग्राम पुनसिका तहसील रेवाडी जिला महेन्द्रगढ में आर्यसमाज के मन्दिर का उद्घाटन कृष्ण जन्माष्टमी पर्व के पश्चात् ९ सितम्बर को किया जा रहा है। सभा की ओर से इस अवसर पर वेदप्रचार का प्रबन्ध किया गया है। आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण ग्राम के सरपच कप्तान दाताराम ने तीस हजार रुपये की लागत से आरम्भ किया है। आशा है अन्य दानी महानुभाव कप्तान जी से प्रेरणा प्राप्त करके मन्दिर के निर्माण में अपना योगदान देंगे।

आर्यसमाज मन्दोला जिला भिवानी

आर्यसमाज मन्दोला जिला भिवानी ने १८ से २० मई तक अपना प्रथम वार्षिक उत्सव बडी धूमधाम से मनाया और आर्यसमाज मन्दिर का शिलान्यास स्वामी ओमानन्द सरस्वती के कर-कमलों द्वारा २० मई को प्रातः ८ बजे यज्ञ आदि कराकर कराया गया। इस मन्दिर की स्थापना हेतु गाव मन्दोला निवासियों ने अपनी शामलात भूमि का एक प्लाट जो ७ कराल १२ मरले है। गाव ने बडी उदारता से दान किया है। यह तीन दिन का समारोह श्री टेकराम आर्य पी० टी० आई०, व श्री चमनलाल प्रधान आर्यसमाज मन्दोला के कठोर परिश्रम द्वारा ६००० रु० के खर्च से सम्पन्न किया गया। दानी महानुभाव इस मन्दिर के निर्माणार्थ उदारता पूर्वक दान देवें। आर्यसमाज सस्था के भवन निर्माण के दान में आमदनी-कर की छूट है।

सभा मन्त्री

दक्षिण अफ्रीका में विश्व आर्य सम्मेलन का निमन्त्रण

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका दिनांक १४, १५, १६ दिसम्बर १९८५ को अपने हीरक महोत्सव और विश्व आर्य सम्मेलन का आयोजन कर रही है। हम आशा करते हैं कि भारत से और अन्य देशों से अधिक से अधिक व्यक्ति यहां पहुँचकर इसे सफल बनावें। इसके लिए निम्नलिखित तैयारियां इच्छुक यात्री अभी से कर दें।

१—अपना पासपोर्ट बनवा लेवे। उसमें प्रवास के देशों में साउथ अफ्रीका का नाम अवश्य लिखवा लेवें। वैसे सामान्य रूप से साउथ अफ्रीका के लिए भारत सरकार अनुमति नहीं देती है। पासपोर्ट के सम्बन्ध में आपका स्थानीय ट्रेवल एजेण्ट या क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय आपको मार्ग दर्शन दे सकेगे। आप हमें भी लिखे जिससे हम यहां का वीसा फार्म आपको भेज देगे।

२—अन्य भाई बहन भी स्वतन्त्र रूप से पासपोर्ट और यहां के प्रवेश पाने की अनुमति के लिए प्रयत्न करें।

३—अपने मार्ग व्यय और प्रवास के लिए आवश्यक धन राशि इकट्ठी करें और एक्सचेंज के नियमों को समझ लेवें। हवाई यात्रा के लिए 'वापसी टिकट' बनवाना आवश्यक है। दिल्ली से डरबन का एक तरफ का किराया लगभग १९,०००) रुपये और बम्बई से डरबन का किराया लगभग १७, ५००) रुपये होगा। निश्चित किराया अपने 'ट्रेवल एजेण्ट' से मालूम कर लें।

४—हमारी राय यह है कि आने वाले प्रतिनिधि तथा प्रवासी बन्धु मारिशस होकर डरबन पहुंचे। लौटते समय 'लुसाका' तथा नैरोबी होते हुए वापिस भारत आ सकते हैं। यदि वे ऐसा चाहें, अन्यथा मारिशस होकर ही वापिस आ सकते हैं।

५—प्रवासी भाई बहन यदि वे चाहें तो होटल में ठहर सकते हैं। जिसका किराया लगभग १२ ५० अमेरिकन डालर प्रति व्यक्ति प्रतिदिन होगा। वैसे सभा स्थानीय आर्य अनाथालय में भी ठहरने की व्यवस्था कर रही है, जिसका किराया मात्र ५ अमेरिकन डालर प्रतिदिन होगा।

६ - आप चाहें तो डरबन में तीन सप्ताह तक ठहर सकते हैं। वैसे सम्मेलन का कार्य ४-५ दिन में समाप्त हो जाएगा।

७—वीसा के फार्म की कापी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से भी प्राप्त की जा सकती है। वीसा फार्म के साथ पासपोर्ट के पहले चार पृष्ठों की फोटोस्टेट कापी, जिसमें पासपोर्ट नम्बर व्यक्ति की पहचान, साउथ अफ्रीका में प्रवेश करने की अनुमति आदि भेजना आवश्यक है। पासपोर्ट भेजने की आवश्यकता नहीं है। हर व्यक्ति के दो फोटोग्राफ होने चाहिए जिसमें पीछे उसके हस्ताक्षर स्पष्ट अक्षरों में (अंग्रेजी) में पूरा नाम व जन्मतिथि लिखी हो।

८—ट्रेवल एजेण्ट से जाच करके यलोफीवर तथा कोलरा के टीके का सार्टीफिकेट फार्म के साथ भेजे जावें।

९- पासपोर्ट के प्रवास के देशों में साउथ अफ्रीका प्रवेश पर निषेध लिखा रहता है। इसको रद्द करवाना, आवेदक के लिए जरूरी है। भारत सरकार से दक्षिण अफ्रीका में प्रवेश की अनुमति मिलने में प्रायः कुछ विलम्ब होता है अत. हमारा सुझाव है कि आप अपने पासपोर्ट के पहले चार पृष्ठो की फोटो कापी एव वीसा फार्म पहले ही भर भेज दे।

एस० रामभरोसे

अन्तरंग सभा व रक्षा वाहिनी की बैठकें

११ अगस्त को दयानन्द मठ रोहतक में हरयाणा रक्षा वाहिनी की प्रातः १० बजे, विद्या परिषद् की ११ बजे, विद्यासभा की ११-३० बजे तथा १२-३० बजे अन्तरंग सभा की बठके हो रही हैं। सम्बन्धित महानुभाव समय पर पधारें। सभा मन्त्री

झाडसा में ११ अगस्त से धरना लगेगा

११-८-८५ से झाड़सा गाव (गुड़गांव) में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के आह्वान पर धरना दिया जा रहा है। ग्राम पंचायत झाड़सा व आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव ने सरकार को प्रस्ताव पास करके शराब का ठेका बन्द करने का कई बार अनुरोध किया है। सभा के अधिकारी भी धरने पर पहुंच रहे हैं। ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री

बहराइच में धर्मान्तरण—

विदेशी साजिश का परिणाम

रवीन्द्रमोहन यादव

धर्म एक व्यक्तिगत मामला है। हर व्यक्ति को अधिकार है कि वह अपनी इच्छानुसार धर्म को माने या न माने। वह अपना धर्म छोड भी सकता है। साथ ही कोई दूसरा धर्म स्वीकार भी कर सकता है किन्तु सामूहिक रूप से धर्मान्तरण होने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यह आस्था परिवर्तन का मामला नहीं है। सामूहिक धर्म परिवर्तन का अर्थ ही यह हो जाता है कि इसके पीछे कोई न कोई संगठित शक्ति है, जो भारत के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करके असन्तुलन व तनाव उत्पन्न करना चाहती है। बहराइच में पिछले पांच वर्षों से सामूहिक धर्म परिवर्तन का जो सिलसिला चला आ रहा है, उसके पीछे भी एक ऐसी ही संगठित शक्ति की झलक मालूम पडती है जो खतरनाक अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र को अपने ढग से क्रियान्वित कर रही है।

प्रशासनिक उपेक्षा का परिणाम

उत्तर प्रदेश का बहराइच जनपद भारत नेपाल सीमा की १२८ किलोमीटर लम्बी सीमा रेखा निर्धारित करता है। अधिकांशत: घने जंगलों से घिरा यह जिला घाघरा और उसकी जन्मदात्री गेरूआ और कोडयाला नदियों के साथ साथ रामती और धपला जैसी अनेक नदियों द्वारा भी सिंचित है परन्तु विपुल वन व खनिज संपदा से युक्त उर्वरा धरती वाला यह जिला शासन व प्रशासन की उपेक्षा के कारण शैक्षिक और औद्योगिक क्षेत्र में पिछड़ा ही नहीं अपितु विकास की दृष्टि से भी लगभग शून्य है। सम्पन्न वर्ग तो समानता और निजी साधनों के बल पर अपना अस्तित्व बनाये हुए है, परन्तु हरिजन, गिरिजन, वनवासी एवं निर्बल जातियों, जन-जातियों तथा कमजोर वर्गों के लिए तो आजादी के बाद से आज तक शासन और प्रशासन की यह अनवरत उपेक्षा असहनीय पीड़ा बन बैठी और अधिकांश लोगों की आर्थिक चूलें चरमरा गईं। फिर भी वे जातियां जिनको सरकार व प्रशासन अपने निहित स्वार्थपूर्ति के पश्चात् थोडी बहुत ही सही, आर्थिक सहायता एवं सुविधाएं उपलब्ध करता रहा, धर्मान्तरणकर्त्ता षडयन्त्रकारियों का नरम चारा नहीं बन पाई। परन्तु इन लोगों द्वारा हल्का सा आतंक एवं प्रलोभन उपस्थित किये जाते ही स्थिति नाजुक हो जाती है। 'बुभुक्षित: किम न करोति पापम्?' के अनुसार भूखा अपने साथ सारी दुनियां को जला डालने के सपने तक सजो लेता है। बडी संख्या में लड़ाकू जातियों के लोग पराभव के पश्चात् इन्हीं जंगलों में शरण लेते रहे हैं। इनमें से बहुत से राजस्थान से आकर बसे हैं। बहुतों ने अपना स्थायी निवास नही बनाया, कबिलों के रूप में भ्रमण करते रहे। इसी कारण अनुसूचित जन-जातियों की बडी संख्या इस जिले में है। इन्हीं में से एक पासी है। कलन्दर नाम का इन का एक वर्ग मुगलकाल में ही मुसलमान बना लिया गया था।

नट मूलत: हिन्दू हैं। इनमें से बहुत बड़ा वर्ग शिवाजी महाराज के गुरिला सैनिकों के वशज हैं। इनके नेता 'माना' नामक पूर्वज जो शिवाजी के सहयोगी थे। मराठों के पराभव के बाद इधर भाग आये थे। कुछ राजस्थान से भाग कर आये हैं। आज भी युद्ध, कलाबाजी, व्यायाम और शिकार करना ही इनका मुख्य कार्य है। हल जोतना वर्जित है। विवाह सस्कार होता है। मंडप एव भावर की प्रथाये प्रचलित हैं।

चार वर्ष पूर्व प्रथम चरण में जो धर्मान्तरण ६ ग्रामों में हुए थे वे सभी बहराइच नगर के पडोस के थे। इस समय नगर से दूर नेपाल की सीमा के पास का क्षेत्र चुना गया पिलभितानी क्षेत्र के बाबागंज और मलहीपुर विकास खण्डों की १४ ग्राम सभाये जो पूर्वकाल में नानपारा और नवाबगंज के मुसलमान जागीरदारों के अन्तर्गत रही हैं, मुस्लिम बहुल हैं। यहां इस समय ७० प्रतिशत से लेकर ७५ प्रतिशत तक आबादी मुसलमानों की है। इसी क्षेत्र के १२ ग्रामों में सामूहिक धर्म परिवर्तन हुआ है। अत: शासन की ओर से किया जा रहा यह प्रचार कि यह धर्म परिवर्तन सवर्ण हिन्दुओं के अत्याचारों के परिणाम स्वरूप हुआ है, भ्रामक है।

सांसद का हाथ

सन् १९८३-८४ का कालखंड कुछ शान्ति से गुजर पाया था कि लोक सभा निर्वाचन एव उसके परिणाम लिएहुए सन् १९८५ आ पहुँचा। जब फरवरी मास में विधान सभा चुनावों की प्रक्रिया अपने पूर्ण रूप में चल रही थी, उस समय चुनाव प्रचार कर रहे कार्यकर्त्ताओं द्वारा बहराइच जनपद में २०० से अधिक नटों द्वारा सामूहिक धर्मान्तरण करने की घटना प्रकाश मे आने से सम्पूर्ण क्षेत्र में एक खलबली सी मच गई थी। बहराइच के सासद आरिफ मोहम्मदखान व उनके हम सफर कथित पी० आर० ओ० गयासुद्दीन उर्फ गयात साहब इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा के केन्द्र थे। जन स्रोतों पर आधारित व्यापक सर्वेक्षण से यह स्पष्ट हुआ कि लोकसभा चुनाव से लेकर विधान सभा चुनाव तक सम्पन्न हुए समस्त 'कलमा पढाओ' कार्यक्रमों की तैयारी एव सफलता में इस व्यक्ति का सक्रिय एव प्रयत्क्ष योगदान रहा है। यह विशेष उल्लेखनीय है कि फरवरी व दिसम्बर ८५ को रहमत गांव का सामूहिक जलस, एवं धर्मान्तरित हिन्दुओं के लगभग सभी गाँव उसी क्षेत्र में थे जो गयात साहब को लोकसभा चुनाव में आरिफखान के चुनाव अभियान हेतु सौंपे गये थे। (युगवार्ता से साभार)

क्रमश:

आर्यसमाज की स्थापना

गांव कालपी जिला अम्बाला में मन्त्री श्री गेन्दाराम जी के प्रयत्नों से ३-६-८५ को आर्यसमाज की स्थापना की गई। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक पं० मुन्शीराम जी द्वारा वेद प्रचार हुआ। सभा को इस अवसर पर ५१ रु० वेदप्रचार दिया गया। तथा चुनाव भी किया गया।

चुनाव के पश्चात् यह निर्णय लिया गया कि गाव में बारात आनो हो या गाव से बारात जानो हो उसमें कोई बैंडबाजा नहीं होगा, क्योंकि इस में लोग शराब आदि पीकर नाचते हैं और बेहुदी हरकतें करते हैं। इससे धन का दुरुपयोग होता है। गाँव वालों ने यह एक प्रशंसनीय कदम उठाया है।

प्रधान—चौ० प्रभुराम, उपप्रधान—चौ० तेजाराम सरपच, श्री गोदड़मल, मन्त्री—श्री सुरताराम, उपमन्त्री—श्री अजमेरलाल, सजय चौधरी, कोषाध्यक्ष—फूलचन्द, प्रचारमन्त्री—राजबाला

डा० सूर्यप्रकाश स्नातक का नया पता

डा० सूर्यप्रकाश स्नातक डी० ए० वी० कालेज न्योला जि० अम्बाला से बदल कर अब हंसराज कालेज दिल्ली में आगये हैं। उनका निवास स्थान ए/२६ राम मार्ग आदर्श नगर दिल्ली (फोन ७१२८०८०)

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन

आर्यसमाजो के अधिकारियो से निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित शराबबन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए जिन ग्रामों में शराब के ठेके खुले हुए हैं, उन ग्राम पंचायतों के सरपंचों तथा पंचों को प्रेरणा करके प्रस्ताव पास करवाने का यत्न करें कि शराब का ठेका बन्द किया जाये। प्रस्ताव का प्रारूप निम्न प्रकार प्रकाशित किया जा रहा है।

सेवा में,

माननीय उपायुक्त महोदय

आबकारी एवं कराधान विभाग हरयाणा, चण्डीगढ़

निवेदन है कि हमारे ग्राम............जिला......... ...पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक.........में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है—

यह पंचायत शराब पीने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्राम्य जीवन के लिये बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगो के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गांव में अनाचार, अशान्ति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की नशाबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र मे चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द कर दी जाए और भविष्य में कदापि भी यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाए ताकि उक्त बुराइयो से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे। सधन्यवाद!

ता० ....

विनीत

हस्ताक्षर ग्राम पंचायत के सदस्य

प्रतिलिपि सेवा में—

१- प्रधानमन्त्री, भारत सरकार नई दिल्ली।

२- मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

नोट—जिन पंचायतों के प्रस्ताव ३० सितम्बर ८५ तक सरकार के पास पहुँच जावेंगे, पंचायत एक्ट के अनुसार उन ग्रामों में शराब के ठेके नीलाम नहीं हो सकते।

अतः आर्यसमाज अपने निकट के ग्रामों में जहां शराब के ठेके खुले हैं, वहां की पंचायतों से प्रस्ताव पास करवाकर ३० सितम्बर तक भिजवाने का यत्न करें।

प्रो० शेरसिंह
सभा प्रधान

आर्य उच्चतम माध्यमिक विद्यालय सिरसा का शानदार परीक्षा परिणाम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बन्धित आर्य उच्चतम विद्यालय सिरसा का इस वर्ष ग्यारहवीं श्रेणी का ८१.६ % दसवीं श्रेणी का ७३ ६ % तथा बारहवीं श्रेणी का ७० % परीक्षा परिणाम रहा है। यह परिणाम स्थानीय विद्यालयो मे सर्वोत्तम है। इस वर्ष १०+२ प्रणाली के अनुसार ग्यारहवीं श्रेणी में प्रारम्भ हैं।

प्रिंसिपल द्वारकादास

आर्य कन्या उच्च विद्यालय सोनीपत का उज्जवल परीक्षा परिणाम

इस वर्ष इस विद्यालय ने जिले में उच्च स्थान प्राप्त किया। परिणाम १०० % रहा तथा प्रथम श्रेणी में १७७ तथा मैरिट सूची में १० स्थान मिले।

राजनन्दा मुख्याध्यापिका

वेदप्रचार कार्य की उन्नति के सुझाव भेजें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक अधिवेशन १९ मई को सम्पन्न हुआ है। अधिवेशन की कार्य सूची में वेदप्रचार कार्य को किस प्रकार उन्नत किया जाये, विचारणीय विषय था, परन्तु उन दिनों रोहतक में धारा १४४ लागू होने के कारण अधिक देर तक अधिवेशन की कार्यवाही न चलने के कारण इस विषय पर विचार नहीं हो सका।

अतः ११ जून को अन्तरंग सभा के निश्चयानुसार आर्यसमाजो के अधिकारियो तथा सभा के प्रतिनिधियों से निवेदन है कि वेदप्रचार कार्य को उन्नत कैसे किया जाये, इस विषय पर अपने सुझाव संक्षिप्त रूप में साफ साफ शब्दों में लिखकर शीघ्र भेजने का कष्ट करें, ताकि सभा की आगामी अन्तरंग सभा की बैठक मे उन पर विचार हो सके।

वेदप्रचार सप्ताह के आयोजन का अनुरोध

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन है कि गत वर्षों की भांति अगस्त से सितम्बर मास में अपनी सुविधानुसार अपने आर्यसमाज में वेदप्रचार सप्ताह अथवा वार्षिक वेदप्रचार का आयोजन करके सभा को सूचित करें।

वेदप्रचार कार्य मे शिथिलता आने से ही अवैदिक मतों का प्रचार तथा शराब आदि दुर्व्यसनों का प्रसार होने लगता है। अतः आप अपने यहां वेदप्रचार सप्ताह की तिथियां निश्चित करके यथाशीघ्र सभा को सूचित करें ताकि सभा की ओर से समुचित प्रबन्ध हो सके। इस समय सभा के वेदप्रचार विभाग में निम्नलिखित उपदेशक तथा भजनोपदेशक कार्य कर रहे हैं—

१—पं० चन्द्रसेन वैदिक मिशनरी उपदेशक
२—पं० सुरेशकुमार शास्त्री विद्यावाचस्पति एम० ए० उपदेशक
३—ब्रह्मचारी महेन्द्रसिंह शास्त्री विद्यावाचस्पति उपदेशक
४—पं० सुखदेव शास्त्री सिद्धान्तवाचस्पति ,,
५—पं० विद्याभूषण जी आर्य भजनोपदेशक
६—पं० शेरसिंह जी आर्य ,,
७—श्री मुन्शीलाल जी आर्य ,,
८—पं० चिरन्जीलाल जी आर्य भजनमण्डली
९—पं० ईश्वरसिंह जी तूफान आर्य ,,
१०—पं० तेजपाल आर्य ,, ,,
११—पं० सुमेरसिंह आर्य ,, ,,
१२—पं० हरिश्चन्द्र आर्य ,, ,,

आशा है आप अपने निश्चय से वापसी डाक सूचित करेंगे। प्रायः आर्यसमाजें शिकायत करते हैं कि वर्ष भर में उनके यहां प्रचार व्यवस्था नहीं की गई। अतः वेदप्रचार की मांग करके अपनी तिथियां सभा को पत्र लिखकर सुरक्षित करवा लेवें।

सत्यवीर शास्त्री
सभा मन्त्री

शोक समाचार

करनाल निवासी रा० सा० श्री चौधरी प्रतापसिंह जी का कुछ समय की बीमारी के पश्चात् २६-२७ जुलाई की मध्यरात्रि मे लगभग दो बजे निधन हो गया। आपने वैदिक ग्रन्थों के प्रकाशन एवं वैदिक संस्कृति के प्रचारार्थ "रा० ब० चौधरी नारायणसिंह प्रतापसिंह धर्मार्थ ट्रस्ट" की स्थापना की। आप वैदिक ग्रन्थों के प्रकाशन में विद्वानों की सदा सहायता करते रहते थे।

अच्छे सम्पन्न धनी व्यक्ति होते हुए भी आप में अभिमान की गन्धमात्र नहीं थी। विद्वानों के प्रति सदा नम्रता और सम्मान का भाव रखते थे। आप आर्य प्रादेशिक सभा हरयाणा के प्रधान तथा परोपकारिणी सभा के सदस्य थे। परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा पारिवारिक जनों को धैर्य और शान्ति प्रदान करें।

सभा मन्त्री

आर्यसमाज को बचाया जा सकता है

—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

१९—आने वाली पीढ़ी स्कूलों, कालिजों में तैयार हो रही है। ये युवक-युवतियां आर्यसमाज मन्दिर में तो आते नहीं, इसलिये यदि हम अपनी विचारधारा उन तक पहुंचाना चाहते हैं तो हमें उनके पास जाना होगा। अतः आर्यसमाजों का कर्त्तव्य है कि अपने अपने क्षेत्र में स्थित स्कूलों-कालिजों को अपना केन्द्र बनायें। अपने प्रभाव का प्रयोग कर वहां समय-२ पर आर्यसमाज के विद्वानों के भाषणों की व्यवस्था करें।

२०—वर्तमान में हमारे पत्र आर्यसमाज मन्दिरों तक ही पहुंच पाते हैं, पढे वहां भी नहीं जाते। गैर आर्यसमाजी तो उन्हें छूता भी नहीं। इसलिये ये पत्र आर्यसमाज के प्रचार की दृष्टि से अन्यथा सिद्ध है। आर्यसमाज का एक साप्ताहिक पत्र इस प्रकार का हो जो 'धर्मयुग' व 'हिन्दुस्तान' की तरह हर किसी के हाथों में पहुंचने वाला हो। यह पत्र प्रत्यक्ष में आर्यसमाज का पत्र न जान पड़े, परोक्ष रूप से ही उसकी मान्यताओं का पोषक हो। इसके साथ ही ऐसे कामों से पैसा बचाकर जिन पर व्यय अधिक होता है और लाभ अपेक्षाकृत कम, अंग्रेजी और हिन्दी के दैनिक पत्रों में अपने प्रभाव से अथवा विज्ञापन समझकर पैसा देकर अपनी मान्यताओं के लेख प्रकाशित कराये जायें।

२१—देश की ८० % जनता गांवों में बसती है। संगठन के रूप में आर्यसमाज अधिकांश में शहरों तक सीमित है। वहां भी बहुत कम सभाओं में पुरोहित होते हैं। धर्म प्रचार का सबसे बड़ा साधन पुरोहित होते हैं जिनकी हर घर में पहुंच होती है और जिनकी समय समय पर सबको जरूरत पड़ती है। आर्यसमाज के उंगलियों पर गिने जाने वाले उपदेशक व पुरोहित परम्परा से गांवों में बसे चले आ रहे पुरोहितों का स्थान नहीं ले सकते न तो गांवों में रहने वाले लोग प्रायः दिन शहरों में जा जाकर आर्यसमाज के पुरोहितों को (यदि वहां कोई हो) बुला-बुला कर ला सकते हैं और न एक पुरोहित अपने इर्द-गिर्द के सैकड़ों गांवों की आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है। घर घर में आर्यसमाज पहुंचे, इसके लिए आवश्यक है कि थोड़ी योग्यता वाले ही सही लेकिन आसानी से मिल सकने वाले गांवों में ही रहने वाले पुरोहित तैयार किये जायें।

२२—प्रान्तीय सभायें प्रतिवर्ष दो तीन जिलों को व्यापक प्रचार का केन्द्र बनाये। इस प्रकार केन्द्र बनाये जाने वाले जिले में निरन्तर एक मास तक व्यापक रूप में प्रचार कार्य हो—विधानसभाओं के चुनावों की तरह सारे प्रान्त से हटाकर वैतनिक-अवैतनिक उपदेशकों अनेकों को दलबल के साथ उस मास में उसी जिले में लगा दिया जाये। अन्तिम दो तीन दिन किसी केन्द्रीय स्थान पर महोत्सव हो जिन में विद्वान् नेता व उपदेशक सम्मिलित हों।

२३—पारिवारिक सत्संगों की योजनाबद्ध व्यवस्था की जाये। जिस परिवार में सत्संग होना हो उसे प्रेरणा की जाये कि आग्रहपूर्वक अपने सम्बन्धियों, इष्टमित्रों तथा पड़ोसियों को आमन्त्रित करें जिस प्रकार अपने यहां होने वाले संस्कारों के अवसर पर किया जाता है। आर्यसमाजी न होने के कारण आर्यसमाज के सत्संग में न जाने वाले लोग भी परिवार में होने वाले सत्संग में सम्मिलित होना अपना कर्त्तव्य समझेंगे। ऐसे सत्संगों में व्यवहारोपयोगी मण्डनात्मक उपदेश देना ही उचित होगा, प्रसंगवश किसी सिद्धान्त की चर्चा की जा सकती है।

२४—साप्ताहिक सत्संग का कार्यक्रम ऐसा होना चाहिये कि पारिवारिक सत्संग से प्रेरणा पाकर अन्य मत का यदि कोई नया व्यक्ति सत्संग में पहुंचे तो वह निराश न हो। यज्ञ, भजन (केवल [illegible] भक्ति के) उपदेश आदि का कार्यक्रम क्रमशः चलता रहे। सारा कार्यक्रम पहले से निश्चित हो। संकेत मात्र से एक के बाद एक कार्यक्रम [illegible]। बीच-बीच में आपस में किसी प्रकार की चर्चा न हो। किसी विवादास्पद विषय को न छेड़ा जाये। सूचनायें उपदेश प्रारम्भ होने से पहले दे दी जायें। प्रबन्ध सम्बन्धी बातें सत्संग की समाप्ति पर शान्तिपाठ के पश्चात् अलग से बैठकर की जायें।

२५—वार्षिकोत्सव पर अधिकतर वेद और वैदिक सिद्धान्तों तथा महर्षि दयानन्द की मान्यताओं के पोषक व्याख्यान कराये जायें। पाखण्डों, अन्धविश्वासों, अवैदिक मान्यताओं की रोकथाम के लिये खण्डनात्मक व्याख्यान भी कराये जायें। यथासम्भव शास्त्रार्थों की व्यवस्था की जाये। प्रचलित दलगत राजनीति के व्याख्यान न कराये जायें।

२६—आपस की फूट, दलबन्दी और पार्टीबाजी वर्तमान में आर्य समाज की प्रगति में सबसे बड़ी बाधा है। अतः इसे किसी भी स्तर पर न पनपने दिया जाये। किसी आर्यसमाज या सभा में किसी प्रकार का विवाद उपस्थित होने पर स्थायी रूप से नियत ३ संन्यासियों अथवा अन्य व्यक्तियों से निर्मित न्यायाधीशों के द्वारा निपटाया जाये। इस समिति का निर्णय अन्तिम रूप से सर्वमान्य हो।

२७—आपस में एक दूसरे पर मुकद्दमे करके आर्यसमाज के धन और शक्ति का अपव्यय करने और उसकी प्रतिष्ठा को धूल में मिलाने वाले लोगों को आर्यसमाज के उत्सवों एवं अन्य कार्यक्रमों में न बुलाया जाये। (सम्राट् से साभार)

जूवां, करेवड़ी में वार्षिक वेदप्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से आर्यसमाज जूवां तथा करेवड़ी जिला सोनीपत में १८ से २३ जुलाई तक सभा की नवयुवक भजनमण्डली कुंवर तेजपाल आर्य ने भजनों द्वारा प्रचार किया। जूवां से वेदप्रचारार्थ ११८) तथा करेवड़ी से ५१) प्राप्त हुए।

इसी प्रकार पं० चिरञ्जीलाल जी की भजनमण्डली ने गतसप्ताह आर्यसमाज पट्टी कल्याणा जिला करनाल तथा पं० ईश्वरसिंह तूफान ने २५, २६ जुलाई को आर्यसमाज खरावर जिला रोहतक में भजनों द्वारा वेदप्रचार किया। केदारसिंह आर्य

श्री रघुनाथ पाठक का निधन

दिल्ली २७ जुलाई।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व कार्यालयाध्यक्ष तथा सार्वदेशिक-पत्र के सह-सम्पादक माननीय श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक का ८५ वर्ष की आयु मे १६ जुलाई १९८५ को शाहदरा (दिल्ली) में निधन हो गया है। उनके निधन का समाचार सुनकर आर्यजगत् को गहरा आघात पहुँचा है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में एक शोक सभा में दिवंगत आत्मा को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने श्री पाठक जी के निधन को सार्वदेशिक सभा के इतिहास में एक अपूर्णीय क्षति बताया। उन्होंने बताया कि श्री पाठक जी १९२५ से महात्मा नारायण स्वामी की प्रेरणा से सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे आए और तब से अब तक लगातार ६० वर्ष तक उन्होने सार्वदेशिक सभा के कार्यालय का सफलता पूर्वक सचालन किया है। किसी भी धार्मिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में इतने लम्बे समय ऐसे महत्त्वपूर्ण पद पर कोई दूसरा व्यक्ति सफलतापूर्वक कार्य करता रहा हो, यह असम्भव है। श्री पाठक जी स्वय सार्वदेशिक सभा, सार्वदेशिक सभा को पाठक जी से अलग करके सोचा भी नही जा सकता था। उन्होंने महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज जैसे प्रभूति उच्चतम कोटि के नेताओं का सानिध्य एव मार्ग दर्शन व शुभ आशीर्वाद प्राप्त था।

सार्वदेशिक पत्र जो सन् १९२७ मे मासिक रूप में निकलना शुरू हुआ था, तब से ही यह कार्य पाठक जी के हाथ में रहा। १९६५ से यह साप्ताहिक निकलना शुरु हुआ है। श्री पाठक जी सिद्धहस्त लेखक और कुशल प्रशासक थे। हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी तथा सस्कृत पर उनका पूरा अधिकार था। उन्होंने कई उपयोगी पुस्तके भी लिखी। सार्वदेशिक सभा के लिए भी उन्होंने अमूल्य पुस्तकें लिखीं। उनकी रचनाएं तथा लेख भारत के समस्त हिन्दी, अंग्रेजी दैनिक तथा साप्ताहिक पत्रों में भी बराबर प्रकाशित होते रहते थे।

अन्त मे शोक प्रस्ताव पारित करके दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए परमात्मा से प्रार्थना की गई और शोक सतप्त परिवार के प्रति हार्दिक सवेदना प्रकट की गई।

उपमन्त्री
सच्चिदानन्द शास्त्री

शोक-संवेदना

भाई वेदव्रत जी, सादर नमस्ते।

दिनांक १४ जुलाई १९८५ के सर्वहितकारी में यह वृत्तान्त पढ़कर बडा दुःख हुआ कि माननीय मा० जागेराम जी आर्य अब हमारे मध्य में नही रहे। माननीय मास्टर जी की समाज सेवा, वैदिक संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा, गुरुजनों का सम्मान, विद्वानों का सत्कार, कर्त्तव्य-परायणता और कार्यकुशलता आदि विशिष्ट गुण सदा स्मरणीय रहेंगे।

सुशीला की ओर से सुवीरा को धैर्य प्रदान, बच्चों को प्यार।

आपका
सुदर्शनदेव आचार्य सभा उपमन्त्री

आर्यसमाज बेगा का वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज बेगा जिला सोनीपत का वार्षिक उत्सव गत वर्षों की भान्ति २८ से ३० जून तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी जीवनानन्द जी, महात्मा प्रेमभिक्षु जी, प्रो० उत्तमचन्द शरर व सभा के महोपदेशक पं० चन्द्रसेन जी वैदिक मिशनरी के प्रभावशाली व्याख्यान तथा सभा की भजनमण्डली पं० चिरंजीलाल एवं मुख्याध्यापक श्री ओमप्रकाश जी आदि के मधुर गीत हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

आंकन संवत्सर ... मुद्रि सं० ८३३०७/७३ रजि० सं० P/RTK 49

सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८५



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १२, अंक ३५   १४ अगस्त १९८५   वार्षिक शुल्क १५)   विदेश में ५ पौंड   एक प्रति ३० पैसे

अबोहर फाजिल्का क्षेत्र में आर्य नेताओं का तूफानी दौरा

हिन्दी भाषी जनता द्वारा सर्वत्र हार्दिक स्वागत

२४ जुलाई को हुए अकाली व केन्द्र के समझौते के बाद हिन्दी भाषी क्षेत्र को हरयाणा में शामिल करने के लिए अबोहर-फाजिल्का के क्षेत्र में गतिविधियां बढ़ गई है। अबोहर क्षेत्र के भूतपूर्व एम० एल० ए० मा० तेगराम जी व अन्य कार्यकर्त्ताओं के विशेष निमन्त्रण पर हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी तथा आर्यसमाज के त्यागी तपस्वी नेता श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, ब्र० रामवीर शास्त्री, म० फतेहसिंह भण्डारी मा० दीपचन्द आर्य, प० कुलवन्तराय आर्य, श्री सुखदेव शास्त्री तथा भजनोपदेशक श्री सुमेरसिंह, श्री जयपाल आर्य तथा पं० हरिश्चन्द्र जी ४ अगस्त को ९ बजे बिश्नोई मन्दिर अबोहर मे एक जलसे का आयोजन किया गया। प्रो० शेरसिंह जी ने हिन्दी भाषी क्षेत्र के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। पूज्य स्वामी ओमानन्द जी ने हरयाणा की सीमाओं तथा इतिहास पर प्रकाश डाला। सभा में नगर के सभी शिक्षा सस्थाओ एव सभी वर्ग के व्यक्तियों ने भाग लिया। सभी ने एक स्वर से हरयाणा क्षेत्र मे मिलने के लिए प्रस्ताव पास किया प्रस्ताव मे कहा गया कि—

रविवार ४ अगस्त १९८५ को स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता मे १० बजे दिन में बिश्नोई मन्दिर अबोहर मे हुई सभा मे स्वीकृत प्रस्ताव—

१—प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी अकाली नेता सन्त हरचन्दसिह लौंगोवाल के साथ २४ जुलाई को पजाब के सम्बन्ध में जो समझौता हुआ। उसमें एक पक्ष अकाली दल को ही विश्वास में लिया गया किन्तु दूसरे पक्ष हरयाणा व हिन्दी भाषी अबोहर फाजिल्का क्षेत्र से सलाह नही ली गई। अतः एक पक्ष अकाली दल से ही परामर्श कर केन्द्रीय सरकार ने जो फैसला किया क्या वह हरयाणा, व अबोहर फाजिल्का क्षेत्र को कदापि स्वीकार नही है। हमें यह समझौता करते हुए विश्वास में नहीं लिया गया। अतः हम उस समझौते को मानने के लिए बाध्य नही। इस समझौते से जहा हरयाणा के हितों पर कुठाराघात किया गया। वहा हिन्दी भाषी अबोहर फाजिल्का क्षेत्र के साथ घोर अन्याय किया गया है, क्योंकि प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने अपने २९ जनवरी १९७० के ऐवार्ड में स्पष्ट घोषणा की थी कि चण्डीगढ पंजाब को दिया जावे और उसके बदले में हरयाणा को हिन्दी भाषी ११५ गाँव तथा अबोहर फाजिल्का का क्षेत्र साथ साथ हस्तांतरित किये जावें। अत अबोहर फाजिल्का क्षेत्र के निवासी तभी इस समझौते को स्वीकार करेंगे। जब प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की इच्छानुसार उक्त ऐवार्ड के अनुसार अबोहर फाजिल्का का क्षेत्र हरयाणा में मिलाया जावे।

यह सभा अबोहर फाजिल्का क्षेत्र की जनता को आह्वान करती है कि वह चण्डीगढ के बदले में हिन्दी भाषी अबोहर फाजिल्का क्षेत्र प्राप्त करने के लिए शान्तिपूर्ण ढंग से जोरदार आन्दोलन करे, ग्राम ग्राम और घर घर से इसके समर्थन में आवाज उठावे और प्रधानमन्त्री को अपनी माग के लिए ज्ञापन दे, तार भेजे, शिष्टमण्डल मिलें और माग करे कि वह स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की इच्छा पर श्रद्धापूर्वक फूल चढ़ाकर उनके इस १९७० के ऐवार्ड के अनुसार चण्डीगढ को पजाब में मिलाने के साथ साथ अबोहर फाजिल्का का क्षेत्र भी हरयाणा में मिलाया जावे।

इसके पश्चात् दोपहर बाद ढीगांवाली मे चौ० दौलतराम नम्बरदार की अध्यक्षता मे निकट के १४ ग्रामो के व्यक्तियो ने भी बडी उत्साह के साथ भाग लिया। इस जलसे में प्रो० शेरसिंह ने इन ग्रामो के हरयाणा में भाषायी आधार पर मिलाये जाने का जोरदार समर्थन किया। प्रो० शेरसिंह ने सारा इतिहास लोगो के सामने रखा। लोगो ने बहुत उत्साह दिखाया। स्वामी ओमानन्द जी ने अपने जोशीले विचार रखते हुए लोगो से निडर तथा सगठित होकर हरयाणा में मिलने के लिए उत्साहित किया। श्री सुखदेव शास्त्री ने भी अपने विचार रखे। यहा भी प्रस्ताव पास किया गया—

४-८-८५ को दोपहर बाद गाँव ढीगावाली में चौ० दौलतराम नम्बरदार की अध्यक्षता मे एक दर्जन ग्रामो मे ऊपरलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुए—

गाँव ढीगावाली की सभा मे सम्मिलित गाँव—बरियाम खेडा, शेरगढ, दलमीरखेडा, जण्डवालाहनुमन्ता, मौजगढ, पट्टीबिल्ला, सयावाली धर्मपुरा, कल्लरखेडा, मौजगढ, गुमजाल, पन्नीवाला।

जलसे में १४ ग्रामो के प्रमुख व्यक्ति गाव के सरपच, मेम्बर बडी सख्या मे उपस्थित थे। ये ग्राम सम्मिलित हुए—ढीगावाली बरियाम खेडा, शेरगढ, दलमीरखेडा, जण्डवाला हनुमन्ता, मौजगढ, पट्टीबिल्ला, सैयावाली, धर्मपुरा, कल्लरखेड़ा, मौजगढ, गुमजाल, पन्नीवाला। इन १४ ग्रामों के लोगों का उत्साह दर्शनीय था। उसी दिन १८ किलोमीटर दूर ग्राम रामसरा मे पहुँचे। वहा बडी सख्या मे नर नारी उपस्थित थे। यहा पर चौ० बहादुरसिंह ने अपनी जमीन मे महर्षि दयानन्द बस्ती का उद्घाटन यज्ञ हवन के पश्चात् स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के द्वारा करवाया गया। रात्रि को बडा भारी जलसा हुआ। ग्राम के लोग बड़े उत्साह के साथ प्रचार सुनने के लिए पधारे हुए थे। श्री सुमेरसिंह की हरयाणवी तर्जों में ऐतिहासिक कथा को सुनकर बड़े प्रभावित हुए। श्री सुखदेव शास्त्री ने शराब के विरुद्ध अपने प्रभावशाली विचार रखे। श्री जयपाल आर्य ने भी भजनों द्वारा शराबी का चरित्र लोगों के सामने रखा। स्वामी जी ने १८५७ के स्वातन्त्र्य सग्राम की चर्चा करते हुए उन सिखो की गद्दारी का भी जिक्र किया जिन्होंने अंग्रेजों का साथ दिया था।

प्रो० शेरसिह ने पजाब द्वारा नहरी पानी बन्द किए जाने की शका का उत्तर देते हुए कहा—आप पहले हरयाणा मे मिलने के लिए संगठित होकर प्रयत्न करो। आपके हरयाणा मे मिलने के बाद हम देखेगे कौन आपका पानी बन्द करता है। आप डरे नही, पजाब के मुक्तसर आदि मे तो पहले ही सेम आ रही है। आपका पानी बन्द होने से तो वे पानी में ही डूब जायेगे। दूसरी बात यह भी है कि यदि अकाली उग्रवादी हमारा पानी बन्द कर देते है तो हम हरयाणा में से उनका रास्ता ही बन्द कर देगे। अत. घबराने की कोई बात नही है।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

बहराइच में धर्मान्तरण—

विदेशी साजिश का परिणाम

रवीन्द्रमोहन यादव

(गतांक से आगे)

१९८२ के बाद से अभियान

सन् १९८२ मे आयोजित मुस्लिम सम्मेलन के पश्चात् प्रथम चरण मे ५७ परिवारों के २३१ व्यक्तियों का धर्मान्तरण कराया गया था। कोतवाली देहात क्षेत्र के टटवा गाव के ११ परिवारों के ४९ सदस्य, बाने पुरवा गांव के २१ परिवारों के १०२ सदस्य, रामगांव के १० परिवारो के ४० सदस्य, थाना हजूरपुर के गाव नटपुरा के ४ परिवारों के १२ सदस्य, थाना केसरगज के गाव कुडौनी के ९ परिवारों के २२ सदस्य थाना नानपुरा के गांव अमरफा के २ परिवार के ६ सदस्य व विधान सभा चुनावों के मध्य द्वितीय चरण मे ३१ परिवारो के २१२ सदस्य, थाना नवाबगंज क्षेत्र के गांव चोरो के एक परिवार के ५, रहमत गाव के ८ परिवारों के २० चुनौनी गाव के दो परिवारों के १३, दामोदरवा गाव के तीन परिवारों के १८, मलहीनपुर गाव के ३ परिवारों के १०, मलहीपुर थाना क्षेत्र के गॉव किशरन्ट के एक परिवार के ६, रूपईडीहा थाना क्षेत्र में सालिगपुरा गाव के १ परिवार के पांच, दरगाह थाना क्षेत्र के गाव लमहीया के एक परिवार के चार और बहुगुलिया गाव के ८ परिवारों के २६ सदस्यो को द्वितीय चरण मे धर्मान्तरित किया गया था।

धर्मान्तरण का सगठित तन्त्र

शहर में घटाघर के पास मिलि इमदादी सोसायटी का कार्यालय है। ८ वर्ष पूर्व मुसलमानों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से इस सोसायटी का गठन किया गया था। गठन के समय से ही एक सरकारी स्कूल के अध्यापक श्री नईमउल्ला इसके सर्वेसवा तथा सचालक है। इस सोसायटी के विरुद्ध आयकर का भी एक मामला चल रहा है, किंतु जिस अधिकारी ने यह मामला उठाया था उसका स्थानान्तरण करा दिया गया था। धर्मान्तरण के लिए आवश्यक धन इसी सोसायटी के माध्यम से ही उपलब्ध होता है। इसके अतिरिक्त यहा दारूल उलूम मदरसा, देवबन्द द्वारा सचालित है। एक आवसीय विद्यालय भी है जिसका उद्देश्य शैक्षणिक कम, धार्मिक अधिक दिखाई देता है। भारतीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय इस्लामिक नेताओ के भाषण एव अन्य गतिविधियो मे सलिप्त रहने के कारण यह सस्था इस्लामिक शिक्षा प्रसाद के लिए कृतसकल्प दिखाई पडती है।

जिला प्रसाशन ने इस सामूहिक धर्म परिवर्तन की घटना को पूर्ण रूप से दबाने की कोशिश की थी। १९ फरवरी को इस घटना के ठीक दो दिन बाद जब विभिन्न हिन्दू सगठनों के प्रतिनिधि मडलो ने मिलकर इसकी जानकारी जिला प्रशासन को दी तो पहिले इस घटना का प्रतिवाद करते हुए जिलाधिकारी महोदय ने कहा था कि यह सब आरिफखान के विरोध का प्रयास राजनीति से प्रेरित है। तत्पश्चात् उन लोगो ने धर्मान्तरण प्रभावित क्षेत्र का चप्पा चप्पा छानकर परावर्तित लोगों के नाम, ग्राम व सख्या सहित विवरण प्रस्तुत कर धर्मान्तरण को प्रमाणित किया। फिर भी जब जिला प्रशासन ने नटों को हिन्दू व अनुसूचित जनजाति वर्ग मे मानने से साफ इन्कार कर दिया, तब नट उपजाति के सामाजिक, सास्कृतिक व ऐतिहासिक प्रमाणों को प्रस्तुत कर हिन्दू समाज का अभिन्न अंग मानने को विवश कर दिया गया था, जिसके प्रणामस्वरूप सरकारी अभिलेखो को भी प्रस्तुत करना पड़ा था।

धर्मान्तरण की इस घटना के पीछे जहा अशिक्षा, प्रशासन द्वारा उपेक्षा तथा हिन्दू समाज व्याप्त छुआछूत आदि कुरीतिया थीं, वही विदेशी धन का प्रभाव, जोर जबरदस्ती व धमकी आदि से भी इन्कार नही किया जा सकता क्योंकि धर्मान्तरण प्रभावित क्षेत्र मुस्लिम बहुल है इसलिए इस दलील में कोई भी दम नहीं कि यह हिन्दू समाज द्वारा सताये जाने पर हुआ है। जोर जबरदस्ती का एक मामला थाना नानपारा के ग्राम अमरफा का प्रकाश में आया है। जब इस गांव के वृद्ध नटों ने जबरन मुसलमान बनने से मना कर दिया तो एक प्राथमिक विद्यालय के मुसलमान अध्यापक के नेतृत्व में उनकी पिटाई करके जबरदस्ती कमला पढवाया गया था।

(युगवार्ता से साभार)

सभा के पूर्व गणक श्री नवाबसिंह जी के

बच्चों की सहायता के लिए अपील



श्री नवाबसिह गणक

सर्वहितकारी में छपी सूचना से आपको पता लग ही गया है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मुख्य कर्मचारी श्री नवाबसिंह जी गणक का दिनांक २३ जून को ४९ वर्ष की आयु मे ही आकस्मिक निधन हो गया है। इस कारण सभा को बडी क्षति हुई है। वे १९६३ से आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा मे गणक (अकाउण्टेंट) के रूप मे आ गये थे और सभा के हिसाब तथा अन्य प्रबन्ध सम्बन्धी सभी कार्यों को बडी योग्यता एवं निष्ठा के साथ करते थे। उन्होंने निरन्तर २२ वर्ष तक वेतन पर सभा की सेवा बहुत ही लग्न से की है। अपने जीवन के अन्तिम समय रुगणावस्था में भी उन्होने सभा का कार्य किया।

वे अपने पीछे विधवा पत्नी, एक छोटा लड़का तथा ५ लड़कियां छोड गये हैं। उन्होंने गत वर्ष केवल एक लड़की की शादी की थी, जिसका ऋण भी अभी तक नही उतार सके थे। भविष्य निधि में भी उनके थोड़े ही पैसे बचे हैं। ऐसी स्थिति में सभा तथा आर्यसमाजों का नैतिक कर्त्तव्य बनता है कि आर्यसमाज के एक निष्ठावान् कार्यकर्त्ता के परिवार की सहायता दिल खोलकर करे। अब उस परिवार मे कमाने वाला अन्य कोई नही है।

आप आर्यसमाज के निष्ठावान् अधिकारी एव कार्यकर्त्ता हैं। अतः इस पुण्य काय के लिए व्यक्तिगत अथवा अपने आर्यसमाज की ओर से अधिक से अधिक राशि सभा कार्यालय में भिजवाने की कृपा करें।

—: निवेदक :—

ओमानन्द सरस्वती, प्रधान परोपकारिणी सभा — प्रो० शेरसिंह, प्रधान — प्रो० सत्यवीर शास्त्री, मन्त्री — रामकृष्ण, कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

नगर तोशाम में योग शिविर सम्पन्न

आर्यजगत् को यह जानकर हर्ष होगा कि हरयाणा के प्रसिद्ध नगर तोशाम (भिवानी) मे प्रसिद्ध विद्वान् डा० सुदर्शनदेव आचाय उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्देशन में ब्रह्मचारी जयवीर जी योगाचार्य के आचार्यत्व तथा श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी के संयोजन मे २८ जुलाई से ३ अगस्त तक योग एव व्यायाम प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। इस शिविर में आसन प्राणायाम, दण्ड-बैठक व ब्रह्मचारी जयवीर जी ने बडे सुन्दर ढग से दिया, जिसमें ५० प्रबुद्ध युवकों ने बडे उत्साह एव श्रद्धा से भाग लिया।

बौद्धिक शिक्षक के रूप में ब्र० चेतनदेव जी ने योग दर्शन के आधार पर बताया कि आसन और प्राणायाम का मानव जीवन में विशेष महत्त्व है। शिविर के आयोजन में ब्र० जगदीशचन्द्र, पवनकुमार जगदीशप्रसाद, महावीरप्रसाद का विशेष सहयोग रहा। तोशाम में यह प्रथम योग शिक्षण शिविर सराहनीय रहा। यहां के युवकों पर इसका अमिट प्रभाव पड़ा।

— ब्रह्मचारी सजयदेव

सम्पादकीय—

पाणिनीय सूत्र

'अथ शब्दानुशासनम्'

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी से पदच्छेद, वृत्ति, वार्तिक-टिप्पणी सहित अष्टाध्यायी का द्वितीय संस्करण सन् १९८१ में प्रकाशित हुआ है। जिसके आरम्भ में 'द्वित्रा शब्दा:' नाम से भूमिका आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक ने लिखी है। इस पुस्तक की टिप्पणियों में महर्षि दयानन्द की पाणिनीय शास्त्र की मान्यताओं का खण्डन करने का दु:साहस किया गया है। आर्यसमाजी विद्वानों की भी स्थान-स्थान पर निन्दा की गई है।

इस पुस्तक के परिष्कर्त्ता महामहोपाध्याय पण्डितराज डा० श्री गोपाल शास्त्री दर्शन केसरी हैं जो काशी पण्डित सभा के अध्यक्ष और राष्ट्रपति से सम्मानित विद्वान् हैं। इस पुस्तक का सम्पादन श्री गोपाल दत्त पाण्डेय तथा श्री प्रह्लाद गिरि नामक पण्डितों ने किया है।

पाणिनीय अष्टाध्यायी का प्रथम सूत्र 'अथ शब्दानुशासनम्' है। इस पर टिप्पणी देते हुए श्री गोपाल शास्त्री लिखते हैं—"पतञ्जलि-मङ्गलसूत्रम्, नेदंपाणिनिसूत्रम्, व्यर्थं हठ आर्य समाजिनां पाणिनिसूत्र-ग्रहणे" अर्थात् यह महाभाष्यकार पतञ्जलि का मंगलसूत्र है, यह पाणिनि-सूत्र नहीं है। आर्यसमाजी विद्वान् इसे पाणिनि-सूत्र मानने की व्यर्थ हठ करते हैं।

समीक्षा—श्री गोपाल शास्त्री ने अपने कथन की पुष्टि में कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया कि 'अथ शब्दानुशासनम्' यह पतञ्जलि का मंगल सूत्र है। बिना प्रमाण के किसी वस्तु की सिद्धि नही होती, अपितु लक्षण और प्रमाण से होती हैं "लक्षण प्रमाणाभ्या वस्तुसिद्धिन तु कथनमात्रेण।"

२. महाभाष्य के टीकाकार पण्डित कैयट ने 'प्रदीप' नामक टीका में इसे व्याकरण-शास्त्र का "प्रयोजन-सूत्र" लिखा है, मंगल-सूत्र नही।

३. श्री मेधातिथि भृगु-प्रोक्त मनुसंहिता के प्रथम श्लोक की व्याख्या में लिखते हैं—"पौरुषेयेष्वपि ग्रन्थेषु नेव सवषु प्रयोजनाभिधानमाद्रियते। तथा हि भगवान् पाणिनिरनुक्त्वैव प्रयोजनम् "अथ शब्दानुशासनम्" इति सूत्रसन्दर्भमारभते। अर्थात् पौरुषेय ग्रन्थों में भी ग्रन्थ के प्रयोजन का कथन नहीं किया जाता जैसे भगवान् पाणिनि ने ग्रन्थ के प्रयोजन का कथन न करके 'अथ शब्दानुशासनम्' यह सूत्र आरम्भ किया है।

४. सृष्टिधर पुरुषोत्तम देव कृत भाषावृत्ति में लिखा है—व्याकरणशास्त्रमारम्भमाणो भगवान् पाणिनि मुनि: प्रयोजननामानि-व्याचिख्यासु: प्रतिजानिते "अथ शब्दानुशासनम्" इति। अर्थात् व्याकरण शास्त्र के प्रयोजनों की व्याख्या की इच्छा से 'अथ शब्दानुशासनम्' यह प्रतिज्ञा सूत्र लिखा है।

५ श्री गोपाल शास्त्री का यह कथन कि 'अथ शब्दानुशासनम्' पतञ्जलि का मगल सूत्र, सर्वथा मूर्खता-पूर्ण है, क्योंकि स्वय महर्षि पतञ्जलि इसे पाणिनि का सूत्र लिख रहे हैं। महर्षि पतञ्जलि 'अथ शब्दानुशासनम्' की व्याख्या में लिखते हैं—"कथ पुनरिद भगवत: पाणिनेराचार्यस्य लक्षण प्रवृत्तम्" (महा० १/१/१/१) अर्थात् भगवान् पाणिनि का यह 'अथ शब्दानुशासनम्' सूत्र क्या शब्द को नित्य मानकर प्रवृत्त हुआ है अथवा अनित्य ?

६ यहां महाभाष्य के टीकाकार पण्डित नागो जी भट्ट 'उद्योत' नामक व्याख्या में लिखते हैं—"अथ पाणिनिसूत्रव्याख्यानभूतं वार्तिकमवतारयति" अर्थात् महर्षि पतञ्जलि ने 'अथ शब्दानुशासनम्' इस पाणिनि-सूत्र की व्याख्या में 'सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे' उस वार्तिक सूत्र के अवतरण में उपर्युक्त शब्द लिखे हैं।

इन उपर्युक्त प्रमाणों से यह स्पष्ट है कि श्री गोपाल शास्त्री ही हठकर रहे हैं कि 'अथ शब्दानुशासनम्' यह पतञ्जलि का मंगल-सूत्र है, पाणिनि-सूत्र नहीं। आर्यसमाजी वैयाकरण अनेक प्रबल प्रमाणों के आधार पर इसे पाणिनि-सूत्र मानते हैं, हठ एवं दुराग्रह से नहीं।

७, पाणिनीय व्याकरण शास्त्र का पाणिनीयाष्टक तथा अष्टाध्यायी आदि नाम पाणिनि-कृत नहीं, उसका पाणिनि कृत नाम 'शब्दानुशासन' है। ग्रन्थ का कर्त्ता आरम्भ में ग्रन्थ का नामकरण अवश्य करता है। जैसे योगशास्त्र आदि में 'योगानुशासन' आदि नाम इसी प्रकार के उपलब्ध होते हैं। जो 'अथ शब्दानुशासनम्' को पाणिनि-सूत्र नही मानते वे कृपया पाणिनीय व्याकरण-शास्त्र का पाणिनि कृत नाम बतलाने का कष्ट करें ?

८ हरयाणा साहित्य सस्थान गुरुकुल झज्जर (रोहतक) से दयानन्दाब्द १५३ में प्रकाशित अष्टाध्यायी जिनका सम्पादन श्री विरजानन्द देवकरणि ने किया है, उसमें 'अथ शब्दानुशासनम्' सूत्र भ्रान्ति से प्रत्याहार सूत्रों में गिना है। इसके पृष्ठ १० पर १५ प्रत्याहार सूत्र गिनाए हैं। वास्तव में प्रत्याहार सूत्र १४ हैं जिनसे 'अण्' आदि प्रत्याहार बनते हैं। 'अथ शब्दानुशासनम्' से कोई प्रत्याहार नही बनता। अत: यह प्रत्याहार सूत्र नही है। यह तो शास्त्र का पाणिनि कृत नामकरण है।

सुदर्शनदेव आचार्य
सभा उपमन्त्री

हरयाणा में वेद प्रचार सप्ताह कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में निम्न स्थानो पर वेद प्रचार सप्ताह का कार्यक्रम बनाया गया है :—

कन्या गुरुकुल खानपुर जि० सोनीपत		१७, १८ अगस्त
आर्य समाज सोहना जि० गुड़गांव		१९ से २५ ,,
,,	संघीवाड़ा मौहल्ला नारनौल जि० महेन्द्रगढ	२० से ३० ,,
,,	महेन्द्रगढ	२४ से २५ ,,
,,	झील जि० जीन्द	२६ से २८ ,,
,,	नरवाना जि० जीन्द	३० अगस्त से ७ सितम्बर
,,	सोनीपत शहर	२ से ७ ,,
,,	सालवन जि० करनाल	१ से ७ ,,
,,	मुवाना जि० जीन्द	१ से ७ ,,
,,	दयानन्द मार्ग कबाड़ी बाजार अम्बाला छा०	३० अगस्त से ७ सितम्बर
,,	माडल टाउन सोनीपत	३० अगस्त से ७ सितम्बर
,,	सिवानी मण्डी जि० भिवानी	४ से ७ ,,
,,	पुनसिका जि० महेन्द्रगढ	६, ७ ,,
,,	झज्जर रोड रोहतक	१६ से २२ ,,
,,	भोगपुर कनालसी जि० अम्बाला	२७ से २९ ,,
,,	अलाहर जि० कुरुक्षेत्र	२७,२८ ,,
,,	जीन्द शहर	२३ से २९ ,,
,,	शिवाजी नगर गुडगांव	७ से १३ अक्तूबर
,,	आर्य कन्या विद्यालय होली मोहल्ला करनाल	५, ६ ,,
,,	फलगू मेला जि० कुरुक्षेत्र	१२ से १४ ,,
,,	कन्या गुरुकुल पंचगांव जि० भिवानी	२५ से २७ ,,
,,	सैक्टर १३ फरीदाबाद	२७ से २९ ,,
,,	पुनाहाना जि० गुडगाव	२५ से २७ ,,

सभा मन्त्री

शोक समाचार

(किशन पुरा) मण्डी गन्नौर के ऋषि भक्त चौ० नारायण दास जी बत्रा का 27 जून 1985 को अचानक दिल के दौरे के कारण स्वर्गवास हो गया। वे आर्य समाज को अन्थक सेवा करते थे और आवैतनिक रुप में पुरोहिताई जन्म भर निभाई। उनकी मृत्यु से मण्डी और गन्नौर शहर वाले उनकी शव यात्रा में भारी संख्या में शामिल हुए। इनकी जुदाई मे आर्य समाज को भारी क्षति हुई। भगवान् उनकी आत्मा को सद् गति प्रदान करें और शोक सत्पत परिवार को शान्ति एवं धैर्य दे। हरिचन्द बत्रा

ऋषि सन्देश

छान्दयोग्य—उपनिषद में कथा है कि—एक बार प्राणों में अर्थात् प्राण तथा इन्द्रियो मे विवाद उठ खडा हुआ कि उन में सर्वश्रेष्ठ कौन है हर एक कहने लगा, अहश्रेयान्, अहश्रेयान्—मैं बडा हू, मैं बडा हूं। वे प्राण जगत् के पिता प्रजापति के पास गए और बोले, भगवान् हम में कौन श्रेष्ठ है ?

प्रजापति ने उत्तर दिया तुम में से जिसके निकल जाने से शरोर अत्यन्त घृणित दीख पड़े, वही, वही तुम मे से श्रेष्ठ है ?

पहले वाणी बाहर निकल गई, साल भर बाहर रहने के पश्चात् जब लौटी और अन्य इन्द्रियो से बोली मेरे बिना कैसे जीवन निर्वाह हुआ। उन्होने उत्तर दिया जैसे गूगे बिना बोले निर्वाह करते हैं हम भी वैसे चलते रहे, वाणी अपनी यर्थाथता समझ गई और शरीर में प्रविष्ट हो गई। फिर चक्षु बाहर निकल गये, साल भर बाहर रहने पर लौटे तो अन्य इन्द्रियों से बोले हमारे बिना कैसे बीती ? उन्होंने उत्तर दिया, जैसे अन्धे बिना देखे प्राण द्वारा प्राण लेते, वाणी द्वारा बोलते, कानों द्वारा सुनते ऐसे हम भी रहे। चक्षु भी अपनी यथार्थता समझ गये और शरीर में प्रविष्ट हो गये। फिर श्रोत बाहर निकल गये साल भर बाहर रहने के पश्चात् जब लौटे तो अन्य इन्द्रियों से बोले, हमारे बिना कैसे जीवित रहे जैसे बहरे बिना सुने जीवन निर्वाह करते हैं, हम भी वैसे रहे।

श्रोत्र भी अपनी यथार्थता समझ गए और शरीर में प्रविष्ट हो गये।

अब मन बाहर निकल गया। साल भर बाहर रहकर जब लौटा तो अन्य इन्द्रियों से बोला मेरे बिना कैसे बने रहे ? उन्होंने उत्तर दिया जैसे बालक सोचते विचारते नही, परन्तु प्राण से प्राण, वाणी से बोलते नेत्र से देखते श्रोत्र सुनते हैं वैसे हम भी रहे। मन भी अपनी हैसियत समझ गया और शरीर में प्रविष्ट हो गया। अब जब प्राण निकलने को उद्यत हुआ तब उसने दूसरे प्राणों को अर्थात् इन्द्रियों को उखाड दिया जैसे खूटे से बन्धा एक उत्तम घोड़ा दौड़ने लगे तो खूटों को उखाड फैकेगा। यह देख कर इन्द्रियां प्राण के निकट आकर बोली, भगवन् तुम फलो फूलो, तुम ही हम सब में श्रेष्ठ हैं तुम यहा से मत जाओ। कथा का भाव यह है कि शरीर प्राण से ही प्रतिष्ठित है।

यदि हम किसी वृक्ष की जड मेंकुलाहड़ा चलावे तो रस बह निकलेगा, परन्तु वृक्ष बना रहेगा। इस प्रकार यदि हम वृक्ष के मध्य मे वार करें तो भी रस बह निकलेगा, परन्तु वृक्ष की जिस टहनी को प्राण छोड जाता है वह सूख जाती है।

इस प्रकार यदि कोई व्यक्ति अपने जीवित किसी भी सगे सम्बन्धी को बुरे शब्द भी कहता है तो लोग उसको निन्दा करते है। परन्तु प्राण निकल जाने पर शरीर को रसी से बाधकर अग्नि में डाल देते हैं और बड-बड़े कोलों वाले लठों से इधर-उधर करते है तो कोई भी निन्दा नही करता। क्योंकि प्राण के निकल जाने से उसकी कोई कीमत नही रहती। इस प्रकार आर्यसमाज का प्राणवेद है। आर्यसमाज का प्राण मैंने इसलिए लिखा है कि मैं आर्यसमाज के कार्य में कुछ कहना चाहता हू। क्योंकि आर्यसमाज का मुख्य कार्य वेदप्रचार का है। परन्तु वेदप्रचार है क्या ? थोड़ा इस पर विचार करना होगा। आज यह हालत बनी है कि यदि कोई गीत गाने में दक्ष है तो वह गीत गाने की वेदप्रचार समझता हो यदि कोई यज्ञ (अग्निहोत्र) करवाने में होशियार है तो उसी को वेदप्रचार कहता है, कोई ऋषि वर दयानन्द की गाथा गाता है। कोई वेद ऋचाओं को उच्चे स्वर से पढ़कर अपने को धन्य मान रहा है।

वास्तव में वेद विषय को जानना, मानना और उन पर कार्य करके अपने जीवन को सुखमय बनाना, और फिर उसका प्रचार करना ही वेदप्रचार है।

यदि हम कितना भी कार्य करते हैं यदि वह वेद के आधार पर नही तो वह कार्य गली सड़ी घास के समान है जिसकी कोई कीमत नहीं।

तो इस बात पर विचार करें कि वेद विषय क्या है ?

वेदों में अवयव रूप विषय तो अनेक है, परन्तु उनमें से चार मुख्य है।

1. विज्ञान अर्थात् पदार्थों को यथार्थ जानना 2. कार्य, 3. उपासना 4 ज्ञान है।

विज्ञान उसको कहते है जो कर्म, उपासना और ज्ञान है, इन तीनों से यथावत उपयोग लेना और परमेश्वर से लेके तृण पर्यन्त पदार्थों का साक्षात् बोध, उनसे यथावत उपयोग का करना, इससे यह विषय इन चारो में भी प्रधान है। क्योंकि इसी मे वेदों का मुख्य तात्पर्य है। सो भी दो प्रकार का है। एक तो परमेश्वर का यथावत् ज्ञान और उसकी आज्ञा का बराबर पालन करना और दूसरा यह है कि उस रचे हुए सब पदार्थों के गुणो को यथावत् जान के उनसे कार्य सिद्ध करना अर्थात् ईश्वर ने कौन-कौन से पदार्थ किस-किस प्रयोजन के लिए रचे है और इन दोनों में से भी जो ईश्वर का प्रतिपादन है सो ही प्रधान है। परमपद अर्थात् जिसका नाम मोक्ष है जिस परब्रह्म को प्राप्त हो के सदा सुख में रहना, जो सब आनन्दों से युक्त, सब दुःखों से रहित और सर्वशक्तिमान परब्रह्म है जिसके (ओ३म्) आदि नाम है। उसमें सब वेदों का तात्पर्य है।

उसकी प्राप्ति कराने मे सब वेद प्रवृत हो रहे है, उसकी प्राप्ति के आगे किसी पदार्थ की प्राप्ति उत्तम नहीं है।

क्योंकि जगत् का वर्णन, दृष्टान्त और उपयोगादि का करना यह सब परब्रह्म को ही प्रकाशित करते है तथा सत्य धर्म के अनुष्ठान जिसको तप कहते है, वे भी परमेश्वर की ही प्राप्ति के लिए तथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम के सत्याचरणरूप जो कर्म है वे भी परमेश्वर की प्राप्ति कराने के लिए है। जिस ब्रह्म की प्राप्ति की इच्छा करके विद्वान् लोग प्रयत्न और उसी का उपदेश भी करते है

वेदों में दो विद्या है एक अपरा और दूसरी परा।

इनमें अपरा यह है जिससे पृथ्वी और तृण से लेके प्रकृति पर्यन्त पदार्थों के गुणों के ज्ञान से ठीक-ठीक कार्य सिद्ध करना होता है। दूसरी परा कि जिससे सर्वशक्तिमान ब्रह्म की यथावत् प्राप्ति होती है। यह परा विद्या, अपरा विद्या से अत्यन्त उत्तम हो क्योंकि अपरा अपरा का ही उत्तम फल परा विद्या है।

यह परमेश्वर ही वेदों का अर्थ है और इससे पृथक् जो जगत् है सो वेदों का गौण अर्थ है और इन दोनों में से प्रधान का ही ग्रहण होता है।

इससे क्या आया कि वेदों का मुख्य तात्पर्य परमेश्वर के ही प्राप्ति कराने और प्रतिपादन करने में है। उस परमेश्वर के उपदेश रूप वेदों से कर्म, उपासना और ज्ञान इन तीनों कांडों का इस लोक और परलोक के व्यावहारों के फलों को सिद्धि और यथावत् उपकार करने के लिए सब मनुष्य इन चार विषयों के अनुष्ठान में पुरुषार्थ करें, यही मनुष्य देह धारण करने का फल है

अत. वेदप्रचार से ही आर्यसमाज का मान है। इज्जत है। आर्यसमाज का कोई कार्य चाहे कितना महान् क्यों न दिखाई देता हो यदि उसमें वेद उपदेश की झलक नहीं तो वह कुछ भी नहीं।

देशराज खीरबाल्ट
290 इन्दिरा कालोनी
रोहतक

शोक-समाचार

आर्यसमाज कोसली जि० रोहतक के कर्मठ कार्यकर्ता श्री मास्टर फूलसिंह ग्राम कान्हड़वास का 4-8-85 को देहान्त हो गया। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति दे। वे 85 वर्ष के थे।

अशोक आर्य,
प्रधानः-आर्य समाज कोसली (रोहतक)

मार्ग-दर्शन

रतनसिंह देर सांझ गये तक घर नहीं लौटा। मां, बहन, भाभी सारा घर परेशान है। बापू इधर-उधर ढूढ रहे हैं। डरते डरते रजवाहे की ओर भी देख आए पर कहीं कुछ पता नही चला। घर में मातमी छाई हुई है। रतनसिंह परीक्षा परिणाम से धक्का खाकर आत्महत्या करने के इरादे से गांव से कुछ दूर रजवाहे पर गया, पर मरने की हिम्मत नहीं जुटा सका। आत्मग्लानि, अपमान, भय से पस्त घर लौटने का साहस नहीं जुटा पाया। तीन-चार दिन बहन की ससुराल में रह कर जब मानसिक उद्वेग कुछ कम हुआ तो अपने घर वापिस आ सका। उसके सामने और घर के अन्य जनों के सामने बस अन्धकार ही अन्धकार है। बहुत कुछ त्यागकर कठिनाई से इसकी पढाई चल रही थी सो समाप्त हुई। जो कुछ इस नाते उसके घर वालों ने किया था सब व्यर्थ हो गया।

रघुनाथ ने हिन्दी में एम० ए० पास कर लिया। अब क्या करे। वह रोज जिन मित्रों से मिलता है वे पिछले कई वर्षों से सब यों ही रोज पुस्तकालय में आ जाते है और अपने व्यक्तित्व को चाय के कुछ प्यालों में डुबो कर शाम घर लौट जाते हैं। यह सब एक आशा के सहारे चल रहा है कि किसी न किसी दिन काम जरूर मिलेगा। रघुनाथ को भी अब इसी लाईन में आ जाना है। पर गांव में घर वालों की अपेक्षाओं का क्या हो। बूढ़ा बाप, थोड़ी सी जमीन से जूझते दो जवान भाई, मामूली नौकरी पर बड़ी मुश्किल से पैसे खर्च करके लगा साथ का भाई, अन्धी मां और भरा पूरा परिवार। सब की आशा रघुनाथ पर लगी थी और अनजाने ही सब यह मान बैठे थे कि उनका लायक भाई परीक्षा पास करते ही एक अच्छी सी नौकरी पा जाएगा और मोटी तनख्वाह से घर के सारे दलिद्दर को दूर भगा देगा। रघुनाथ सब समझता है पर किसी को कुछ स्पष्ट करने का साहस उसमें नही है।

इसी प्रकार के अन्य अनेक उदाहरण, किस्से ·· ··

कसूर किस का है। रघुनाथ पढ़ाई में अच्छा है। और बातें भी ठीक-ठाक हैं। हिन्दी भाषा या साहित्य में भी कहीं कुछ कमी नही। फिर·········। रतनसिंह भी अच्छा और मेहनती लड़का है। उसमें सामान्यत: कोई ऐब नही। पर न जाने क्यों वह परीक्षा में उत्तीर्ण न हो सका। उसे समझ में नहो आता कि आखिर गलती कहा है और क्या है? कहां क्या गडबड़ है? यह रघु और रतनसिंह ही नहीं बहुतों की समझ में नहीं आता। इसे एक बार विश्लेषण करके ठीक से समझ लिया जाये तो बहुत कुछ बात सुलझ जाये। गत कुछ दशाब्दियों में विशेषत: हमारे देश में जिस गति से जनसख्या, मंहगाई और बेरोजगारी बढ़ी है उससे कहीं अधिक अनुपात में प्रतियोगिता बढी है। यह स्वाभाविक भी है। जनसंख्या, बेरोजगारी और महगाई जितनी बढेगी नए प्रत्याशियों को उपयुक्त स्थान पाने के लिये उतना ही अधिक प्रयत्न करना पड़ेगा। अस्तु—इस प्रतियोगिता की दौड में जो गलत ट्रैक पर चला गया वह अन्त तक पहुच कर निराश ही होगा। ट्रैक की इसमे कोई गलती नहीं. प्रतियोगी की क्षमता भी बेशक है पर परिणाम नि:सन्देह कुछ नहीं निकल सकता। इस पर दु:खी हो, र चाहे आत्महत्या कर ली जाये या मातम मना लिया जाये फर्क कुछ नही पड़ता।

उपाय क्या है। देहात में रहने वाला 17-18 वर्ष का युवक विशेषत: वह जिसके माता-पिता तथा बन्धु-बान्धव आज के युग की जटिलताओं से स्वभावत: अनभिज्ञ हैं, क्या करे?

योग्यता-साधन-लक्ष्य और समग्रसमर्पण इन चार कड़ियों को ध्यान में रखा जाये तो शायद आज को जटिलताओ के व्यूह से निपटा जा सकता है। सर्वप्रथम युवक को ईमानदारी से अपनी योग्यता, क्षमता का सही सही मूल्यांकन करना चाहिए। यह काम शान्त भाव से अन्तर्मुखी होकर स्वयं किया जा सकता है। कठिनाई होने पर अपने अच्छे मित्रों के पास बैठकर सलाह मशविरे से स्वत: किये गये मूल्यांकन की जांच की जा सकती है। अनावश्यक रूप से आपकी योग्यता या अयोग्यता के बारे में जो पूर्वाग्रह से ग्रसित न हों उन अपने स्वजनों से बातचीत करके भी अपनी योग्यता का मूल्यांकन किया जा सकता है। आप कितने पानी में हैं इसकी ठीक-ठीक थाह लेने के बाद उपलब्ध साधनों की समीक्षा कोजिए। आर्थिक साधनों की माप-तोल कर लेना सर्वप्रथम आवश्यक है। आप जहां जिस कोर्स में प्रवेश की कामना करते हैं वहां प्रतिदिन पहुंचने की क्या व्यवस्था होगी यह सब भी नोट कर लीजिए। प्रवेश आपको अपनी योग्यता के आधार पर मिल सकता है या कही से और किसी की सहायता की अपेक्षा होगी। वह सहायता आपको कैसे मिलेगी और क्यों कोई आपकी सहायता करेगा? इत्यादि बातों का पूरा-पूरा लेखा जोखा करके अपने नोट्स बना लीजिये। इस प्रकार जांचे गये योग्यता और साधनों के परिपेक्ष्य मे आप किस क्षेत्र में व्यवस्थित होना चाहते हैं इसे शात एवं स्थिर चित्त होकर तय कीजिये। इस सम्बन्ध में कुछ विकल्प भी अपने पास अवश्य रखिये। ऐसे लक्ष्य पर हाथ कतई मत धरिये जो आपकी योग्यता और उपलब्ध साधनो के सन्दर्भ मे आपकी पहुंच से परे हो। बोना आदमी ऊंचे फल को तोडने का प्रयत्न करे तो सबका हास्यस्पद बनता है और व्यर्थ की उछल कूद में कभी कभी चोट भी खा लेता है। अपनी तथा अपने परिवार की आवश्यकताओं के साथ इस निर्धारित लक्ष्य का सम्बन्ध भी अवश्य स्थापित कीजिए। ऐसा न करने से हो सकता है परिवार के अन्य सदस्य आपसे जो उचित अपेक्षाएं रखते हैं उन पर आंच आए जो कि आपके लिए अच्छी न हो। याद रखिए समाज में आप एकाकि नही हैं। आपने समाज से अपने बन्धु-बान्धुओं मे और इष्ट मित्र वर्ग से बहुत कुछ जाने अनजाने में पाया है। पाने और देने की प्रक्रिया सदा दुतरफी होती है। आप इसकी अवहेलना करके समाज में प्रसन्न होकर नही रह सकते। इस प्रकार इन तीन कडियों का यथासंभव समूचा विवेचन विश्लेषण करके आप अपने आप में पूरी तरह से स्पष्ट हो ले कि आप क्या चाहते हैं और आपका सही ट्रैक कौनसा है। एक बार आपने इस ट्रैक को ठीक से पहचान लिया तो नि:सन्देह आप इसके अन्त तक अवश्य पहुंचेंगे। आपका नम्बर कौनसा आता है इसकी कतई परवाह मत कीजिए जी जान से पूरे प्रयत्न से इस पर जुट जाइए। एक बात तो तय है कि आप गलत ट्रैक पर व्यर्थ का परिश्रम नही कर रहे हैं। हो सकता है आपको कभी असफलता का सामना भी करना पड़े पर उससे निराश होने की कतई आवश्यकता नहीं है। यह क्या कम है कि आप सही मार्ग पर चल रहे हैं और उन बहुतों से आगे हैं जो अब तक इधर-उधर भटक ही रहे हैं।

आप एक काम कभी मत कीजिए—निरुद्देश्य मत रहिए। अपने गन्तव्य को तय किए बिना भीड या रेवड के साथ मत हो लीजिए। बडे जंक्शन पर जाकर बिना तय किए जिस किसी ट्रेन मे बैठने से आप कभी भी किसी ठिकाने पर नही पहुच सकते इसे याद रखिए। रतनसिह और रघुनाथ के साथ यही हुआ। न वे अपना लक्ष्य तय कर सके थे और न उन्होंने यात्रा आरम्भ करने से पहले अपने उपदानो का जायजा लिया था। आप ऐसा न करें।

नोट:—रतनसिह और रघुनाथ वास्तविक नहीं हैं।

—जयपाल विद्यालकार

श्री व्रजेन्द्र कुसुम प्रज्ञाचक्षु से आर्य जनता सावधान

विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि उक्त समाज सेवक जनता से यह कह कर धन बटोर रहा है कि महर्षि दयानन्द कृत आर्याभिविनय ग्रन्थ को इतिहास मे प्रथम बार नेत्रहीनो के लिए ब्रेलिपि मे प्रकाशित करायेंगे या करा लिया है। वस्तुत स्थिति यह है कि आर्यसमाज बडा बाजार पानीपत ने गत वर्ष अपनी शताब्दी के अवसर पर श्री व्रजेन्द्र जी के माध्यम से यह ग्रन्थ प्रकाशित कराया इसकी कुछ प्रतिया उन्होंने अपने पास भी रख ली होंगी, जिसे वह अब जनता को दिखा कर धन बटोर रहे हैं।

हमने यह पुस्तक देश भर के सभी अन्ध विद्यालयो को नि शुल्क भेज दी हैं। इस ग्रन्थ की पर्याप्त प्रतिया हमारे पास शेष है। जहा कही आवश्यकता हो हम इसे नि.शुल्क भेज सकते हैं। इसलिए जनता से आग्रह है कि अपने धन को किसी की स्वार्थ पूर्ति मे नष्ट न करें।

ठाकरदास वत्रा
मन्त्री
आर्यसमाज बड़ा बाजार, पानीपत

गांधी तेरे ये अनुयायी

—रामकुमार भारद्वाज

सन् १९४८ मे गाँधी जी के मरने के बाद, गांधी जी के नाम को जीवित रखने के लिए या गांधी जी की यादगार के लिए या गांधी जी के रचनात्मक कामो को आगे बढ़ाने के लिए, गाधी जी के नाम पर सम्पूर्ण भारत मे एक कोष एकत्रित किया गया और इस कोष का एक ट्रस्ट बना दिया गया और उस ट्रस्ट का नाम गांधी स्मारक निधि रख दिया गया।

हिन्दुस्तान मे गाधी जी के नाम पर जितनी संस्थाएं खुली है। उनमे आज क्या कुछ हो रहा है। ये बात किसी से छिपी नही है।

गाधी जी ने कहा था कि हिन्दुस्तान गावों में बसता है। मगर इन सस्थाओ के सचालक आज कुण्डलो मारकर बैठे हुए है। अगर ये सस्थाए आज गाधी जी का सच्चे मायनो मे प्रचार कर पाती, तो मैं समझता कि ये वास्तव में ही गांधी जी की अनुयायी है।

आज इन सस्थाओ के जो सचालक या डिक्टेटर बने बैठे है। अगर इनके सामने इनका कोई कार्यकर्त्ता स्पष्ट या सच बोल देता है तो उस का वही पर मुह बन्द कर दिया जाता है।

क्या गांधी जी ने हमे यही सिखाया था? नही। गाधी जी से एक बार पूछा गया था कि आपका सन्देश क्या है? तो गाधी जी ने जवाब दिया था "कि मेरा जीवन ही मेरा सन्देश है" ये बात थोड़ा गहराई मे समझने की है। गाधी जी कहते थे कि व्यक्ति के शब्द नहीं बल्कि उसका आचरण बोलना चाहिए। आज हम गाधी जी के चित्र की पूजा तो करते है, मगर चरित्र की पूजा नही करते।

यही कारण है कि आज गाँधी संस्थायें गाँधी जी का प्रचार करने में ना काम रही हैं। दूसरी बात आज इन संस्थाओ के जो संचालक बने बैठे हैं वो ये कहते हैं कि कार्यकर्त्ता नहीं मिलता। कार्यकर्त्ता क्यों नहीं मिलता, क्या कारण?

गाँधी जी के समय में जो भी गाधी जी से पहली बार मिलने गया वह गाधी जी का ही हो गया। क्यों हो गया, क्योंकि गाधी जी ने उसे एक विचार दिया। गांधी जी से वो एक विचार लेकर आया। आज इन सस्थाओ के जो संचालक बने बैठे हैं उनके पास विचार नाम की की कोई चीज है ही नही। उनके पास केवल द्वेष, घृणा, सकुचित विचार हैं और आज इन सस्थाओं मे अफ्सर शाही बड़े जोरों से हावी है।

गाँधी जी के नाम गाधी जी के ये अनुयायी और ये संस्थाए केवल मात्र एक धब्बा है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि सरकार इन सस्थाओं को अपने हाथ मे ले ले और इनका स्वय सचालन करे। सरकार के हाथ मे लेने से ये फायदा होगा कि इन सस्थाओ मे आज कार्यकर्त्ताओं का जो शोषण हो रहा है वह समाप्त हो जाएगा। अब तो कोई दूसरा ही गाधी इस देश में पैदा होगा जो गाधी जी के नाम और रचनात्मक कामो को आगे बढ़ायेगा।

आर्यावर्त युवक परिषद् का वार्षिक चुनाव

सरक्षक—स्वामी सुधानन्द सरस्वती, अध्यक्ष—ब्रह्मचारी महेन्द्रसिंह शास्त्री, सयोजक व कार्यालय सचिव— प० ईश्वरचन्द्र शास्त्री, उपाध्यक्ष खजानसिंह अध्यापक, पं० चन्द्रदेव शास्त्री व जयप्रकाश आर्य, सचिव—पहलवान रामफलसिंह (मोडी मकड़ाना) भिवानी, उपसचिव—महताब सिंह (सुखराली), महेन्द्रपाल (गुड़गाव गांव) कोषाध्यक्ष—राजेन्द्रसिंह (सिलाना) सोनीपत, प्रचार सचिव—जीतेन्द्रकुमार (पत्रकार), मुख्य शिक्षक—बलवानसिंह योगाचार्य (सांघी) रोहतक

सूचना—आर्यावर्त युवक परिषद् लगातार ३ वर्षों से विद्वान् व कर्मठ कार्यकर्त्ता ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री (महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा) के नेतृत्व में दक्षिणी हरयाणा (गुड़गाव, महेन्द्रगढ व सोनीपत) में ब्रह्मचर्य शिविरों, अखाड़ों के माध्यम से नवयुवको को आर्यसमाज में दीक्षित कर आज की मूल समस्या चारित्रिक पतन, आर्थिक सामाजिक विषमता के विरुद्ध उनमें चेतना का संचार कर रही हैं जो आज के मानव का परम कर्त्तव्य है। —रामफल पहलवान

स्वतन्त्रता सेनानी

इस भारत में ना कभी, देशभक्तों की कमी रही।
हर भारतवासी के मन में, स्वतन्त्रता की रमी रही॥
भारत माँ के वीरों से, थी डरती दुनियाँ सारी।
लक्ष्मी, दुर्गा और सारन्धा, हुई वीरांगना नारी॥
लेखनी उठा ली 'भावुक' ने लिखने को कविताई।
भगतसिंह और राजेन्द्र ने, गल में फासी खाई॥
चन्द्रशेखर वीर जिन्होंने, देश पर जान गवाई।
भारतीय केसरी नेता सुभाष ने, आजाद हिन्द फौज बनाई॥
गांधी जैसे महापुरुषों ने, सत्य अहिंसा अपनाई।
कानपुर के नाना साहब ने, स्वतन्त्रता की आग लगाई॥
हुए थे महान् राजनीतिज्ञ, सरदार पटेल भाई।
जिन्होंने राज्यों को इकट्ठा करके, शक्ति एक बनायी॥

जागो भारतवासी

जागो जागो भारत वालो।
अपने कर्त्तव्य को सम्भालो॥
इस मातृभूमि के लिए।
जान की भी बाजी लगा लो॥
देश से गरीबी निकालो।
सत्य मार्ग को अपना लो॥
निष्क्रियता को छोडो।
स्वार्थ से मुख मोडो॥
इस मातृभूमि की गोद मे।
पले पौसे हैं मौज में॥
उन शहीदों की जवानी।
है अति करुणादायक कहानी॥
जिन्होंने दे दिया सर।
कोडे खाते रहे उम्रभर॥
आज पन्द्रह अगस्त को,
याद उनकी कीजिए।
उनके उज्ज्वल चरित्र से।
कुछ तो शिक्षा लीजिए॥

डा० अनिल कुमार प्रवार 'भावुक'
ग्राम अकौढ़ा कलां जिला सहारनपुर

यज्ञ प्रार्थना में संशोधन

आजकल आर्यसमाजो के सत्संगों में वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध कविता पाठ किए जाते हैं। कई बार भाषण आदि भी वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध सुनने को मिलते है। जैसे यज्ञ सम्बन्धी कुछ विवरण इस प्रकार हैं—

१ आर्यसमाजों में यज्ञ के पश्चात् पं० लोकनाथ जी 'तर्क वाचस्पति' द्वारा रचित यज्ञ प्रार्थना गाई जाती है। इस प्रार्थना की छठी कली का चरण है—

"लाभकारी हो हवन हर जीवधारी के लिए।"

जीवधारी का अर्थ यह है कि कोई जीव किसी दूसरे जीव को धारण किए हुए हो तथा प्राणधारी का अर्थ है कि जिसने प्राणो को धारण कर रखा हो। अतः इसमें 'प्राणधारी' ही होना चाहिए न कि 'जीवधारी'।

२—कई आर्यसमाजों में अन्तिम कली में बोला जाता है—

'हाथ जोड़ झुकाय मस्तक वन्दवा हम कर रहे'

इस पर आपत्ति यह है कि ईश्वर सर्वव्यापक होने से हाथ में भी व्याप्त है तो हाथ किस लिए जोड़ना? तथा ईश्वर यदि निराकार है तो हाथ किसको जोडना और मस्तक किसको झुकाना? अतः प्रेम रस से तृप्त होकर वन्दना हम कर रहे ही बोला जाएं।

सभी आर्य पुरोहितों एव आर्यसमाजी भाईयों से मेरा निवेदन है वे इस ओर ध्यान दें। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा अन्य प्रादेशिक आर्य समाजों से भी मेरा निवेदन है कि वे आर्यसमाज के समस्त पुरोहितों को आदेश देवें कि उपर्युक्त पाठ ही बोला जाए।

ब्रह्मचारी संजयदेव
महामन्त्री, भारतीय नवयुवक सभा
महर्षि दयानन्द आश्रम मसेवा (हिसार)

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित शराबबन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए जिन ग्रामों में शराब के ठेके खुले हुए हैं, उन ग्राम पंचायतों के सरपंचों तथा पंचों को प्रेरणा करके प्रस्ताव पास करवाने का यत्न करें कि शराब का ठेका बन्द किया जावे। प्रस्ताव का प्रारूप निम्न प्रकार प्रकाशित किया जा रहा है।

सेवा में,

माननीय उपायुक्त महोदय

आबकारी एवं कराधान विभाग हरयाणा, चण्डीगढ

निवेदन है कि हमारे ग्राम............जिला............पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक.........में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है—

यह पंचायत शराब पीने की बढती हुई प्रवृत्ति को ग्राम्य जीवन के लिये बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गांव में अनाचार, अशान्ति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की नशाबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द कर दी जाए और भविष्य में कदापि भी यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाए ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे। सधन्यवाद!

ता० ....   विनीत

हस्ताक्षर   ग्राम पंचायत के सदस्य

प्रतिलिपि सेवा में—

१- प्रधानमन्त्री, भारत सरकार नई दिल्ली।

२- मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

नोट—जिन पंचायतों के प्रस्ताव ३० सितम्बर ८५ तक सरकार के पास पहुंच जावेंगे, पंचायत एक्ट के अनुसार उन ग्रामों में शराब के ठेके नीलाम नहीं हो सकते।

अत: आर्यसमाज अपने निकट के ग्रामों में जहां शराब के ठेके खुले हैं, वहां की पंचायतों से प्रस्ताव पास करवाकर ३० सितम्बर तक भिजवाने का यत्न करें।

प्रो० शेरसिंह
सभा प्रधान

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम—'वेद सन्देश' लेखक—प्रो० रामविचार एम० ए०, दयानन्द कालेज हिसार, पृष्ठ संख्या—३१६, मूल्य—२१ रु० मात्र

पुस्तक 'यथा नाम तथा गुण' है। लेखक ने वास्तव में सागर को गागर में भरने का सफल प्रयास किया है। ग्रन्थ में १३ वेदमन्त्रों की इतनी विस्तृत, सरल, सुललित तथा मनोरंजक शैली में व्याख्या की है जो अन्यत्र सर्वथा दुर्लभ है। मन्त्रगत विषय से सम्बन्धित अन्य ग्रन्थों एवं भाषाओं के भी पर्याप्त उद्धरण देकर इसे और भी रोचक तथा ज्ञानवर्धक बना दिया गया है। थोड़े में यों समझिये कि मानो विद्वान् लेखक ने अपनी महती विद्वत्ता का फोटो इस ग्रंथ में चित्रित कर दिया है। यह ग्रंथ वेद के स्वाध्यायशीलजनों के लिए तो उपयोगी है ही, उपदेशक वर्ग के लिये भी इसमें पर्याप्त सामग्री है। प्रत्येक पुस्तकालय तथा वेदभक्त परिवार में इस ग्रंथ की एक प्रति अवश्य ही होनी चाहिए।

आचार्य दयानन्द एम० ए०
सदस्य—विद्यार्य सभा
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

डा० सुमन की गिरफ्तारी के वारंट जारी

देहरादून ८ अगस्त। विश्व प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता, मानवतावादी विचारक एवं लेखक, आर्यसमाज के युवा प्रवक्ता डाक्टर आनन्द सुमन के विरुद्ध राजस्थान सरकार के निर्देश पर भीलवाडा प्रशासन ने धारा २९५ ए एवं १५३ के अन्तर्गत अभियोग दायर कर डा० सुमन की गिरफ्तारी के वारण्ट जारी किये हैं। ज्ञातव्य है कि मई १९८५ में डा० सुमन ने भीलवाडा में प्रताप जयन्ती समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में अपने सम्बोधन में अन्तर्राष्ट्रीय साम्प्रदायिक तत्वों को मस्ती से कुचलने का आह्वान किया था—डा० सुमन के भाषणों को २०-२५ हजार व्यक्ति प्रतिदिन एकत्र होकर सुनते थे। एक समय ऐसा आया जब उनकी वक्तृत्व शैली से प्रभावित होकर जैन समाज की प्रमुख साहसी फूल कुंवर ने डा० सुमन को अपना आदर्श स्वीकारा था उन्होंने कहा था कि आज जीवन में प्रथम बार मैंने निर्भीकता एवं निष्पक्ष तुलना एवं सत्य का महत्त्व समझा है। डा० सुमन वेद और कुरान के प्रकाण्ड विद्वान् हैं। उनकी विद्वता मतान्ध एवं संकीर्ण बुद्धि के लोगों को चुभती है। इसी कड़ी में डा० सुमन पर चार वर्षों में अनेक बार प्राणघातक हमले हुए हैं एवं अनेको अभियोग चल रहे हैं जिनमें प्रमुख हैं—बदायूं ग्वालियर, कासगज रायसैन, दुर्ग सडीला, विदिशा कानपुर कोटा, मुरादाबाद, अलीगढ, हापुड, गाजियाबाद, सीतापुर, भीलवाडा (१९८४ के) उदयपुर बासवाडा, भोपाल गज, बासौदा एवं अनेकों स्थानों के अभियोग। आर्यसमाज के इतिहास में इतने अभियोग एवं हमले अब तक किसी पर भी नहीं हुए। किन्तु डा० सुमन निर्भीक एवं निष्पक्ष भाव से निरन्तर सत्य के शोधन एवं प्रचार मे लगे हुए है। म० प्र० सरकार तो उनके टेप भाषणो एवं प्रदेश में आने तक पर भी प्रतिबन्ध लगा चुकी है। म० प्र० में डाक्टर सुमन की पुस्तकें भी जब्त हैं। ज्ञातव्य है कि डा० सुमन चार वर्ष पूर्व ३०-८-८१ को इस्लाम मजहब त्याग कर वैदिक धर्म में दीक्षित हुए थे। तभी से वह निरन्तर प्रचार कार्य में लगे हैं। डाक्टर सुमन द्वारा रचित दस पुस्तकें अब तक प्रकाशित हो चुकी है।

क्रान्ति प्रकाशन तपोवन आश्रम देहरादून

आर्य वन विकास फार्म ट्रस्ट (अबासर) जि० साबरकांठा गुजरात में वैदिक योग प्रशिक्षण एवं दर्शनाध्यापन का—

अभूतपूर्व आयोजन

वैदिक धर्मप्रेमी सभी महानुभावों को यह जानकर अतीव हर्ष होगा कि आर्यजगत् के मूर्धन्य दार्शनिक विद्वान् एवं महान् योगी श्री पूज्यपाद स्वामी सत्यपति जी महाराज द्वारा चैत्र शुक्ला प्रतिपदा वि० सं० २०४३ तदनुसार मार्च १९८६ से निरन्तर दो वर्ष तक चुने हुए, प्रतिभा सम्पन्न, मेधावी दस (१०) ब्रह्मचारियों को ऋषि शैली मे छहों दर्शनों के अध्यापन के साथ साथ क्रियात्मक वैदिक योग का गहन शिक्षण प्रशिक्षण दिया जावेगा। इस अवधि मे सभी ब्रह्मचारियों के लिये आवश्यक सुविधाओं से युक्त आवास, पुष्कल मात्रा मे दूध, घृत, भोजन, वस्त्र तथा पाठ्य-सामग्री आदि का पूर्ण प्रबन्ध नि:शुल्क होगा।

युग-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के दिव्य स्वप्नों को साकार करने में अत्यन्त सहायक इस रचनात्मक आयोजन का उन ब्रह्मचारियो को अवश्य ही लाभ उठाना चाहिये, जो एकमात्र पवित्र वैदिक धर्म प्रचार प्रसार में अपने सम्पूर्ण जीवन को लगाने के लिए कृत-सकल्प हों। दर्शन-पाठ्यक्रम से पूर्व कुछ निर्देशित शास्त्रों का प्रार्थी ब्रह्मचारियों द्वारा पूर्वाध्ययन सुविधापूर्ण होगा। अत: अभिलाषी ब्रह्मचारी निम्न पते पर आश्विन पूर्णिमा विक्रमी सम्वत् २०४२ तदनुसार २८ अक्तूबर १९८५ तक पत्र व्यवहार करें।

पता
स्वामी सत्यपति परिव्राजक
२-एफ, कमला नगर,
दिल्ली—११०००७

निवेदक
आर्य वन विकास
फार्म ट्रस्ट

स्वाधीनता दिवस : हमारा संकल्प

आज हम अपना स्वाधीनता दिवस की अड़तीसवी वर्ष गाठ मना रहे है। नि सन्देह हमने भौतिक क्षेत्र मे असीमित प्रगति की है। निर्माण विज्ञान, टेक्नालोजी, सेना व खाद्यान्न के क्षेत्रो मे आश्चर्यजनक विकास हुआ है। राष्ट्र का बाह्य स्वरूप पूर्णतया परिवर्तित होगया है। उद्योगो की प्रगति भी कम गौरव की बात नही है। लेकिन इसके विपरीत उसी गति से राष्ट्रीय चरित्र का भी पतन हुआ है। ऋषि मुनियो की पवित्र संस्कृति के देश मे आज मानवता कराह रही है। सारे देश मे निम्न स्तर से लेकर उच्चस्तर तक प्रत्येक क्षेत्र मे, भीषण भ्रष्टाचार, अकर्मण्यता, स्वार्थन्धता का साम्राज्य फैला हुआ है। भाई-भाई के खून का प्यासा हो गया है। साम्प्रदायिक तनाव, अराष्ट्रीय गतिविधियां राष्ट्र के माथे पर कलक बनी हुई है। घूसखोरी का बाजार गर्म है। तस्करी, काले धन की बहुतायत है। अपहरण, बलात्कार, डकैती, हत्या आज के युग में साधारण सी बात है। दहेज के नाम पर हत्याएं निरन्तर हो रही है। व्यवस्था-शान्ति की जिम्मेदार पुलिस स्वयं भ्रष्टाचार के शिकजे में फसी हुई है। नैतिकता, मानवीयता, सच्चरित्रता, सद्भावना लुप्त होती जा रही है। यदि इन्सान की इन्सानियतें नही रहेगी तो इस असीमित भौतिक विकास का क्या होगा ?

आइए! हम भारत के लोग, स्वाधीनता दिवस के पुण्य पर्व पर संकल्प ले एक महान् राष्ट्र के निर्माण का और भारत में फैल रही दानवी प्रवृत्तियो को समाप्त करने का। यही स्वाधीनता के लिए मर मिटने वालो के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

आया स्वतन्त्रता त्यौहार

भेदभाव हो दूर धरा से,
मिटे गरीबी, महगायी।
जगे जवानो मे मानवता–
भरी नवलतम तरूणायी।

जन जन में फिर उपजे व्यापक
प्रेम–दया व सद् - व्यवहार।
आया स्वतन्त्रता त्यौहार॥

दनुज वृत्तियां सारी जग की,
दानवता के साथ जलें।
मनुज त्याग दे द्वेष भावना,
सभी परस्पर गले मिलें।

नव आशा, अभिलाषाओं का
पुनः धरा पर हों संचार।
आया स्वतन्त्रता त्यौहार॥

जाति-पाति के छूत-छात के,
क्षत-विक्षत हों कलुषित भाव।
बढ़े सभी का नित्य निरन्तर,
मानवता की ओर झुकाव।

त्याग-तपों से, बलिदानों से–
करें मनुजता का श्रृंगार।
आया स्वतन्त्रता त्यौहार॥

राधेश्याम आर्य एडवोकेट मुसाफिरखाना, सुलतानपुर

पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज सेवासदन बल्लबगढ जिला फरीदाबाद को योग्य पुरोहित की आवश्यकता है। मासिक दक्षिणा योग्यतानुसार दी जावेगी गृहस्थी व वानप्रस्थी अधेड़ आयु के उम्मीदवारों को वरीयता। आवास व्यवस्था मन्दिर में ही, अकेले रहने पर भोजन व्यवस्था सदस्य परिवारों में। योग्य उम्मीदवार पूर्ण विवरण सहित शीघ्र ही आवेदन करें।

सत्यदेव गुप्त
प्रचार मन्त्री आर्यसमाज सेवासदन बल्लबगढ़

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजी नं० 83207/73 रजि० नं० P/RTK 49 फोन ४=१२ सृष्टि संवत् १,९६,०८५३,०८५



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १२ अङ्क ३६ २१ अगस्त १९८५ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

हिन्दी भाषी क्षेत्र हरयाणा में मिलाने तथा प्रदेश के हितों की रक्षार्थ—

हरयाणा रक्षा वाहिनी द्वारा प्रान्तीय उपसमिति का गठन

रोहतक ११ अगस्त, आज यहां हरयाणा रक्षा वाहिनी की बैठक दयानन्दमठ में प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में हरयाणा के कोने-कोने से भारी संख्या में कार्यकर्ताओं ने भाग लिए, इनमें महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी, चौ० बदलूराम पूर्व विधायक, स्वामी धर्मानन्द जी, श्री सुखदेव शास्त्री, मा० निहालसिंह आर्य, वैद्य भरतसिंह आर्य, श्री अशोक कुमार कोसली, म० फतेहसिंह भण्डारी, प्रिंसिपल गुगनसिंह, ब्र० रामवीर शास्त्री, म० दरयावसिंह आर्य, चौ० भूपेन्द्रसिंह एडवोकेट रोहतक, श्री बलदेवसिंह आर्य, जिला सिरसा, श्री प्रतापसिंह शास्त्री, लाला बद्रीप्रसाद आर्य, ला० छबीलदास आर्य (जिला जीन्द), पं० सत्यदेवशास्त्री, चौ० हरिकिशनसिंह मलिक पूर्व सैशनजज, वैद्य ताराचन्द आर्य, श्री महावीरसिंह मटिण्डू, जिला सोनीपत, डाक्टर प्रेमनारायण अम्बा नोलोखेड़ी, श्री बलदेव कृष्ण आर्य, श्री जसवन्तसिंह, श्री महाराजकृष्ण चौपड़ा, चौ० धर्मसिंह राठी पूर्व विधायक पानीपत, प्रिंसिपल लालसिंह (जिला करनाल), वैद्य हरिश्चन्द्र आर्य नारनौल श्री पारब्रह्म मर्मार्थी पत्रकार, श्री रामचन्द्र राव पूर्व विकास अधिकारी रेवाड़ी जिला महेन्द्रगढ़, पं० हरिश्चन्द्र रादौर जिला कुरुक्षेत्र, मा० तेगराम पूर्व विधायक, श्री साहबराम भादू श्री ब्रह्मप्रकाश अबोहर, चौ० महीराम एडवोकेट, श्री बलदेवकृष्ण शर्मा श्री लीलाधर पत्रकार फाजिल्का, आचार्य दयानन्द एम० ए० हिसार, श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री, दीवान भीमसेन, श्री श्यामलाल आर्य गुड़गांव, चौ० राजेन्द्रसिंह पूर्व विधायक फरीदाबाद, आचार्य ऋषिपाल, मनुदेव शास्त्री, मा० कुलवन्तराय आर्य जिला भिवानी आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

उपस्थित कार्यकर्ताओं को हरयाणा रक्षा वाहिनी के संयोजक महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी ने वर्तमान परिस्थितियों का उल्लेख करते हुए हरयाणा की जनता से हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए एक जुट होकर कार्य करने का अनुरोध किया।

प्रो० शेरसिंह जी ने इस अवसर पर अकाली तथा केन्द्र के समझौते पर [illegible] हुए कहा कि २४ जुलाई को साढ़े तीन [illegible] लूटमार, [illegible] की बसों से उतार उतार कर [illegible] खालिस्तान की मांग को समाप्त [illegible] हरचन्दसिंह लौंगोवाल ने प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी के साथ समझौता करके अन्धी [illegible] राष्ट्र की मुख्यधारा में पुनः शामिल होने की घोषणा की [illegible] इस समझौता का स्वागत करना चाहिए, परन्तु अब भी कुछ सिरफिरे उग्रवादी अकाली हिंसक गतिविधियां [illegible] और विदेशों में एक टापू खरीदकर वहां खालिस्तान राज्य की घोषणा करके [illegible]

सैनिकों ने अमृतसर में सैनिक कार्यवाही के समय विद्रोह किया था, उन्हें सैनिक नियमों के अनुसार ही कठोर दण्ड देकर आवश्यक पग उठाना चाहिए। केन्द्र अकाली समझौते में उनके लिए जो पुनर्वास की बात कही गई है, वह राष्ट्र के लिए हानिकारक होगी। प्रधान मन्त्री ने हरयाणा के हितों की उपेक्षा की है और इन्दिरागांधी ऐवार्ड को समाप्त करते हुए अबोहर फाजिल्का को हरयाणा में मिलाने की बात न कहकर चण्डीगढ़ को पंजाब में शामिल करने की घोषणा से हमें निराशा हुई है। इस समझौते में हरयाणा की ओर से जब कोई प्रतिनिधि शामिल नहीं किया गया है, तब हरयाणा की जनता इस समझौते को मानने के लिए पाबन्द नहीं होगी। हरयाणा की जनता की राय लिये बिना ही समझौता हम पर थोंप दिया गया, यह हरयाणा के साथ घोर अन्याय है। आपने हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल की चण्डीगढ़ छोड़ने की तैयारी की आलोचना करते हुए कहा कि आयोग की रिपोर्ट मिलने पर ही नई राजधानी बनाने की बात चलनी चाहिए। जब तक हमें चण्डीगढ़ के बदले अबोहर फाजिल्का तथा पंजाब में रह गये हिन्दी भाषी ग्राम नहीं मिल जाते तब तक चण्डीगढ़ को खालिस्तान नहीं करना चाहिए। राजस्थान के मुख्यमन्त्री राजस्थान के हितों की रक्षा न होने पर अपना विरोध तथा रोष प्रकट किया है, परन्तु हरयाणा के मुख्यमन्त्री को हरयाणा के हितों की चिन्ता न होकर अपनी कुर्सी बचाने की चिन्ता अधिक हो रही है। आपने हरयाणा के सभी दलों के विधायकों तथा सांसदों को स्मरण कराते हुए कहा कि गत वर्ष हरयाणा भवन दिल्ली में सभी दलों की बैठक में निश्चय किया गया था कि हरयाणा की उपेक्षा होने पर हम तुरन्त त्याग-पत्र देंगे, परन्तु तीन सप्ताह समझौता हुए व्यतीत हो गये उन्होंने अपने त्याग-पत्र स्पीकर को नहीं दिये। अब त्याग तथा संघर्ष की घड़ी में दलगत से ऊपर उठकर हमें हरयाणा के हितों की रक्षा करनी चाहिए। आपने सभी दलों के नेताओं को विश्वास दिलाया कि हरयाणा रक्षा वाहिनी संघर्ष में कन्धे से कन्धा मिलाकर हरयाणा के लिए संघर्ष करने में पहली पंक्ति में रहेगी।

भारत सरकार द्वारा आयोग तथा न्यायधीकरण के सामने हरयाणा का पक्ष प्रस्तुत करने के लिए प्रान्तीय स्तर की उपसमिति के गठन की घोषणा करते हुए आपने हरयाणा के बुद्धि जीवि नेताओं से अनुरोध किया कि हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए जिन के पास जो उपयोगी सामग्री है, उसे हरयाणा रक्षा वाहिनी के कार्यालय दयानन्द मठ रोहतक में भेजकर सहयोग करना चाहिए। उपसमिति का गठन निम्न प्रकार किया गया है—

१—स्वामी ओमानन्द सरस्वती—संरक्षक, २—प्रो० शेरसिंह—अध्यक्ष, ३—म० भरतसिंह वानप्रस्थी—संयोजक, ४—चौ० बदलूराम पूर्व विधायक, ५—अमीरसिंह एडवोकेट, जिला रोहतक, ६ चौधरी धर्मसिंह राठी पूर्व विधायक, ७—बा० मूलचन्द पूर्व वित्तमन्त्री, ८—चौ: विजयसिंह एडवोकेट, ९—चौ० जिलेसिंह एडवोकेट (करनाल), १०—चौ० महाराजसिंह एडवोकेट, ११—पं० रघुवीर शरण पूर्व सांसद, १२—बख्शी आदचर्जलाल जिला अम्बाला, १३—चौ० बिशनसिंह एडवोकेट, १४—श्री शेरसिंह शेर एडवोकेट, १५—चौ० प्रीतमपालसिंह एडवोकेट, १६—चौ० सत्यदेवसिंह पूर्व पुलिस अधीक्षक जिला कुरुक्षेत्र,

(शेष पृष्ठ ५ पर)

वीतराग स्वामी सर्वानन्द का अभिनन्दन

प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु वेदसदन अबोहर

श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को आयु इस समय ८० वर्ष या इससे भी कुछ ऊपर ही होगी। संन्यास-दीक्षा लिए हुए भी तीस वर्ष से ऊपर हो गये। आर्यसमाज की सेवा में वह कब समर्पित हुए, इसका मुझे ठीक ठीक तो ज्ञान नहीं परन्तु यह प्रामाणिक बात है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की सन्यास दीक्षा में भाग लेने वाले दो व्यक्ति इस समय हमारे मध्य हैं। एक श्री वीरेन्द्र जी। स्वामी जी महाराज का सन्यास दीक्षा का जो चित्र जीवन चरित्रो में हैं उसमें महाशय कृष्ण जी के पास नीचे बैठा एक बालक है, वह श्रीवीरेन्द्र ही हैं। तब श्री वीरेन्द्र तो बहुत छोटे थे, परन्तु पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज दूसरे व्यक्ति है जिन्हे अब तक दीक्षा का वह दृश्य नही भूला। तब आप ब्र० रामचन्द्र के रूप में विद्या अध्ययन कर रहे थे। स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने सम्भवत: एक बार बताया था कि प० आत्मानन्द जी विद्यालकार ने भी यह समारोह देखा था। वह तीसरे व्यक्ति हैं जो हमारे मध्य है। इस प्रकार स्वामी सर्वानन्द जी ६८ वर्ष से माता आर्यसमाज की सक्रिय सेवा कर रहे है।

दिवगत स्वामी वेदानन्द जी गुरुकुल भटिण्डा वालों ने एक बार बताया था कि ब्रह्मचारी रामचन्द्र ने मथुरा जन्म शताब्दी १९२५ ई० को गृह त्याग किया था। यह बात प्रामाणिक ही लगती है क्योंकि आप श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय स्थापित होते ही इसमे प्रविष्ट हो गये इस प्रकार से राम विरक्त होकर पूरे साठ वर्ष से दिन रात ऋषि का कार्य कर रहे हैं। आपने आर्यसमाज के झण्डे तले मानव समाज की हो नही प्राणिमात्र की जो सेवा की है—उसका लेखा जोखा करना अति कठिन है।

आर्यसमाज के एक तप:पूत ने, एक पूज्य वृद्ध सन्यासी ने मुझे लिखा है कि आगामी ऋषि बोध पर स्वामी जी का अभिनन्दन होना चाहिए। अभिनन्दन ग्रन्थ छपना चाहिए और यह ग्रन्थ मुझे ही सम्पादित करना वा लिखना होगा। पूज्य स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ ने एक बार कुछ साधुओं की प्रेरणा से लोह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के सन्यास के पचास वर्ष पूरे होने पर उनका अभिनन्दन ग्रथ तैयार करने की सूचना पत्रो में दी परन्तु यह कार्य न हो पाया।

मुझे इससे पूर्व भी कई मूर्धन्य आर्य सन्यासियो ने स्वामी जी के भक्तों यथा प० जगन्नाथ जी चण्डीगढ वालों ने स्वामी जी का जीवन चरित्र तैयार करने की सत्प्रेरणा दी। प० जगन्नाथ जी ने श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के जीवन के कई चित्र सम्भाल रखे थे। ये चित्र लोह पुरुष ग्रथ में दिये गये। उन्होंने स्वामी सर्वानन्द जी के भी अनेक चित्र मेरे लिये रख छोडे है।

अभिनन्दन करने के लिए कोई समिति होनी चाहिए और अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशन के लिए धन भी चाहिए। स्वामी सर्वानन्द जी का स्वभाव हम सब जानते हैं। वह इस प्रकार के अपने अभिनन्दन का कडा विरोध करेंगे परन्तु हमें तो अब यह कार्य करना ही है अन्यथा 'पितृ श्राद्ध' कैसे हो? मेरा आर्यजगत् के दो शिरोमणि नेताओं वा पूज्य सन्यासियों से विनम्र निवेदन है कि वे इस कार्य को हाथ में लें। हम उनके पीछे चलेगे। स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने स्वामी जी से ही सन्यास दीक्षा ली है और प्रभु ने स्वामी ओमानन्द जी को नये नये पवित्र कार्यो को हाथ में लेने और उन्हें कर दिखने का वरदान दे रखा है। क्या यति मण्डल के प्रधान वा अपने दीक्षा गुरु के अभिनन्दन का आयोजन करने में वह पीछे रहेगे? दूसरे हैं हमारे माननीय संन्यासी नेता वेदज्ञ श्री स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज। आपका श्री स्वामी सर्वानन्द जी से ४५ वर्ष से भी पुराना सम्बन्ध है। आप स्वामी जी के बडे श्रद्धालु है आर्यजगत् में आपका विशेष मान सम्मान है। ये दोनों साधु महात्मा आगे आए तो यह समारोह बहुत सुन्दरता से सम्पन्न होगा। अभिनन्दन ग्रन्थ भी छप जावेगा। स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने आर्यसमाज को कितने अच्छे अच्छे कर्मठ साधु, वानप्रस्थी व विद्वान् दिये हैं। ये सब लोग साथ जुड़ जावेगे।

अभिनन्दन समिति बने तो कोषाध्यक्ष का नाम भी मैं ही सुझा देता हूं। श्री महात्मा प्रेमप्रकाश जी वानप्रस्थी धूरी मण्डी इसके लिये सर्वथा उपयुक्त व्यक्ति हैं। वह स्वामी जी के सुशिष्य हैं, कर्मठ है, अनुभवी हैं और एक दानी कुल में जन्मे विख्यात आर्य तपस्वी हैं। आर्य जाति के उत्साही मिशनरी ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी को समारोह की सफलता के लिए सब प्रान्तों में भेजा जावे। यद्यपि स्वामी जी भ्रमण कम करते हैं परन्तु सब प्रान्तों में आप वैदिक धर्म, शुद्धि प्रचार साहित्य प्रकाशन वा आर्य प्रचार की सहायता के लिए चुपचाप ठोस सहायता भेजते रहते हैं। उड़ीसा, बिहार, उ० प्र०, राजस्थान, हरयाणा मध्यप्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, केरल सब प्रान्तों में आपके शिष्य वा भक्त कार्य कर रहे है। मंगलूर (कर्नाटक) में कार्यरत वानप्रस्थी प्रिंसिपल मञ्जुनाथ जी शास्त्री एम० ए० लाहौर के उपदेशक विद्यालय के स्नातक वा स्वामी जी के शिष्य हैं। ऐसे सब पूज्यजनों का सहयोग मिलेगा।

समिति का गठन होने तक अभिनन्दन ग्रंथ का कार्य पड़ा नहीं रहेगा। यह कार्य तो मैंने आज से ही आरम्भ कर दिया। यदि स्वामी दीक्षानन्द जी व स्वामी ओमानन्द जी यह कार्य किसी अन्य विद्वान् लेखक को सौपेंगे तो मैं अपनी सामग्री सहर्ष ऐसे पूज्य महानुभाव को भेज दूंगा। समिति के गठन के लिए बैठक बुलाने की आवश्यकता नहीं यति मण्डल समर्पित लोगों का संगठन है। ये दोनों पूज्य साधु मिलकर कार्य का बटवारा कर दे। धन संग्रह का कार्य आरम्भ होते ही मैं सबसे पहले अपनी २५१) की आहुति भेज दूंगा।

वर्षा ऋतु समाप्त होते ही मैं हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, वानप्रस्थी महाशय भरतसिंह जी व केदारसिंह आर्य को साथ लेकर स्वामी जी के जन्म स्थान की यात्रा करने जाऊंगा। वहां से पुराने लोगो से श्री महाराज के बालकाल की जो जानकारी मिलेगी वह लाऊंगा। तोन चार वर्ष पूर्व श्री केदारसिंह जी व श्री नथासिंह जी (हा! अब वह नहीं रहे) के साथ मैंने ऐसा कार्यक्रम बनाया था। अब यह हो जावेगा।

आर्यो! जिस महापुरुष ने उठती जवानी में सब सुख-साज और इन्द्रियों के भोग पर लात मार दी। जिस यति ने एक श्वास श्वास वैदिक धर्म व लोक सेवा में दिया है। जिस पुज्यात्मा ने परपीड़ा हरण का हमारा इतिहास बनाया है। जिसके निष्कलंक जीवन पर इस समाज को अभिमान है। विधर्मी भी जिसकी सेवा साधना के सामने नतमष्तक हैं। सस्कृत भाषा के लिए जिसने जीवन होम दिया है। गऊ माता के इस अद्वितीय पालक के अभिनन्दन में प्रमाद न होने पावे।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के पश्चात् ला० देवदत्त जी दीनानगर चिन्तित थे कि पं० रामचन्द्र जी त्यागी तपस्वी तो हैं परन्तु स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी व्यक्तित्व के अभाव में मठ कैसे चलेगा? यहां कौन आएगा? देखिए दयानन्द मठ ने कितनी उन्नति की है। चम्बा में भी शानदार दयानन्द मठ बन गया है। वहां भी कितना कार्य हो रहा है। ब्र० विरजानन्द जी, आचार्य सत्यप्रिय जी, ब्र० रामवीर, डा० सेवाराम जैसे महानुभावो से विनती है कि वे इसे आन्दोलन का रूप दे दें।

हरयाणा का पक्ष प्रस्तुत करने की तैयारी

पंजाब सरकार तथा अकाली दल हरयाणा के जिला अम्बाला कुरुक्षेत्र तथा सिरसा के कुछ ग्रामों को पंजाबी भाषा के नाम पर उन्हें पंजाब में मिलाने की तैयारी कर रहे हैं। इस उद्देश्य से पजाब सरकार तथा अकाली दल ने उपसमितियों का गठन कर दिया है और हरयाणा के कुछ ग्रामों तथा नगरों को पजाबी भाषी सिद्ध करने के लिए भारत सरकार तथा अकालियों के मध्य हुए समझौते के अनुसार आयोग तथा न्यायाधिकरण के समक्ष अपना पक्ष प्रस्तुत करने की तैयारी आरम्भ कर दी है।

नदी जल की समस्या का सम्बन्ध तो सारे हरयाणा की जनता से है। इस विषयक पक्ष प्रस्तुत करना भी आवश्यक है परन्तु पजाब सीमा से लगते हुए ग्रामों की समस्या सीमित है। इसकी तैयारी जि० अम्बाला कुरुक्षेत्र जीन्द तथा सिरसा की जनता ने विशेष रूप से करनी है। इसी उद्देश्य से हरयाणा रक्षा वाहिनी की ११ अगस्त की बैठक में एक प्रान्तीय उपसमिति का गठन किया गया था, जिसकी सूचना सर्वहितकारी के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित की है।

हरयाणा सरकार भी अपना पक्ष तैयार करने की तैयारी कर रही है। जिस प्रकार पजाब सरकार के अतिरिक्त अकाली दल भी अपनी तैयारी पृथक् रूप से कर रहा है। अत: हरयाणा की जनता की ओर से भी तैयारी करना आवश्यक है। सम्भव है हरयाणा सरकार के आयोग के समक्ष पक्ष प्रस्तुत करने में कुछ त्रुटि रह जाये तो हरयाणा रक्षा वाहिनी भी अपना पक्ष तैयार करके आयोग के समक्ष अकाली दल की भान्ति हरयाणा के हितों के लिए प्रस्तुत करेगी। हरयाणा रक्षा वाहिनी द्वारा जो प्रान्तीय उपसमिति गठित की गई है, उसमे सभी राजनैतिक तथा सामाजिक नेताओ को सम्मिलित करने का यत्न किया है।

हरयाणा रक्षा वाहिनी के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने अपनी तैयारी के लिए पंजाब के सीमावर्ती जि० अम्बाला, कुरुक्षेत्र, जीन्द तथा सिरसा में २३ से २५ अगस्त तक कार्यकर्त्ताओं की बैठक का कार्यक्रम बनाया है। सभी स्थानो पर सूचना तथा प्रचारक भेजे जा रहे हैं। कार्यक्रम के अनुसार प्रो० शेरसिंह २३ अगस्त को प्रात: ११ बजे अम्बाला, उसी दिन दोपहर बाद ३ बजे कुरुक्षेत्र, २४ अगस्त को प्रात: ६ बजे कैथल, दोपहर बाद ३ बजे नरवाना और २५ अगस्त को प्रात: ६ बजे टोहाना तथा उसी दिन दोपहर बाद सिरसा पहुंचेंगे।

इन जिलो के कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि अपनी सुविधा के अनुसार इन बैठकों मे भारी सख्या में सम्मिलित होने का कष्ट करें। ग्रामों के प्रमुख कार्यकर्त्ताओ को भी इन बैठको की सूचना भिजवा देवे, ताकि हरयाणा का पक्ष प्रस्तुत करने के लिए उपयोगी सुझाव तथा आवश्यक आंकड़े मिल सकें।

यह समय आलस्य का नही है। अकाली अपनी तैयारी पूरी शक्ति के साथ कर रहे है। हरयाणा की जनता को भी पहना आलस्य त्यागना होगा। स्मरण रहे जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है।

महाशय भरतसिंह
सयोजक हरयाणा रक्षा वाहिनी

आर्य वीर दल अधिकारी शिविर सम्पन्न

आर्य वीर दल हरयाणा के प्रान्तीय अधिकारियों का प्रथम शिविर महात्मा दयानन्द जी के संरक्षण में वैदिक साधना आश्रम तपोवन, देहरादून में बडे सुखद वातावरण मे सम्पन्न हुआ जिसका सयोजन ब्र० धर्मदेव विद्यार्थी ने सफलतापूर्वक किया। शिविर मे शाखा संचालन शारीरिक प्रशिक्षण तथा कई महत्त्वपूर्ण गोष्ठियां भी हुई जिन्हें सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान उप-संचालक डा० देवव्रत आचार्य, महात्मा दयानन्द जी, श्री सुखदेव शास्त्री व प्रो० उत्तमचन्द जी शरर ने सम्बोधित किया। शंका-समाधान एवं बहस का रचनात्मक कार्यक्रम काफी सफल रहा। आर्य वीर दल द्वारा हरयाणा में विशेष कार्य करने के लिए एक [illegible] कार्यक्रम तैयार किया गया जिसके अनुसार २०, २१, २२ सितम्बर को कैथल में आर्य वीर महा सम्मेलन किया जायेगा उसमें एक हजार आर्य वीर पूर्ण गणवेश में राष्ट्र सेवा का व्रत लेंगे तथा आर्यसमाज को प्रान्तभर के युवकों में फैलाया जायेगा।

मन्त्री आर्य वीर दल हरयाणा

गुरुकुल गौतमनगर में भजनोपदेशक संगीत प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

नई दिल्ली १४ जुलाई से शुरु हुआ भजनोपदेशक सगीत प्रशिक्षण शिविर आज ता० २८ को प्रशिक्षणार्थियों के भजन गायन और शास्त्रीय लयताल ठेके आदि के प्रदर्शन के साथ समाप्त हो गया। सगीताचार्य श्री पन्नालाल जी पीयूष ने शिविरार्थियो को दादा बस्तीराम, चौ० तेजसिह, कु० मुखलाल आर्य मुसाफिर, प० प्रकाशचन्द्र कविरत्न तथा संगीतमय प्रशिक्षण दिया जिसके लिए सबने उनकी सराहना की। गुरुकुल आचार्य प० हरिदेव जी ने घोषणा की कि आगामी वर्ष भी शिविर इसी प्रकार लगेगा और ब्रह्मचारियो को साम गान अभ्यास का यत्न किया जायेगा।

वेदोद्धारिणी द्वैमासिका पत्रिका के सम्पादक, सगीत के शास्त्रीय ज्ञाता प० अभिविनय शास्त्री ने समारोह का सचालन किया। लाला श्याम सुन्दर जी ने अध्यक्षता की, श्री रामनाथ जी सहगल, आर्यजगत् के सम्पादक श्री क्षितीश जी, पूज्य स्वामी सत्यप्रकाश जी, केन्द्रीय सभा प्रधान ने आशीर्वाद दिया, आर्यसमाज क्षेत्र में यह प्रथम समारोह था जो सफल रहा।

झाड़सा जि० गुड़गाँव में शराब के ठेके पर धरना आरम्भ

(निज सवादाता)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नवयुवक उपदेशक ब्रह्मचारी महेन्द्रसिंह शास्त्री के पुरुषार्थ तथा ग्राम पचायत झाडसा जि० गुडगाव के सरपंच चौ० खजानसिंह एडवोकेट एव गुड़गाव नगर के आर्यसमाजों के अधिकारियो के सहयोग से १८ अगस्त ८५ इतवार को हवन यज्ञ के पश्चात् शराब के ठेके पर धरना आरम्भ हो गया। धरने का उद्घाटन करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने आर्यजनता से अनुरोध किया कि शराब जैसी भयङ्कर बुराई को समाप्त करने के कार्य में जुट जाये ताकि किसान मजदूर द्वारा लहू पसीने से कमाई गई आमदनी शराब के सेवन करने से बर्बाद न हो सके। आपने सरकार को भी चेतावनी देते हुए परामर्श दिया कि जो पचायते शराब का ठेका बन्द करवाने के प्रस्ताव समय पर सरकार को भेज देती है उनके ठेके कानून के अनुसार तुरन्त बन्द कर देने चाहिये। अन्यथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता सघर्ष के मैदान में उतर जायेगे। सभा की ओर से प० सुमेरसिंह जी तथा प० जयपाल आर्य की भजनमण्डलियों ने ग्रामों में शराब विरोधी प्रचार किया।

कन्दू खेड़ा के गलियारे का विवाद

अबोहर फाजिलका क्षेत्र में कन्दू खेड़ा ग्राम का गलियारा वाद विवाद का विषय बना हुआ है। इस सम्बन्ध में एक विख्यात पत्रकार का तर्कपूर्ण लेख आगामी अंक में पढिए।

— सम्पादक

फरीदाबाद तथा फतेहपुर में स्वतन्त्रता दिवस

आर्यसमाज फरीदाबाद तथा फतेहपुर जि० कुरुक्षेत्र मे १५ अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। वक्ताओ ने स्वतन्त्रता प्राप्ति में आर्यसमाज के योगदान का स्मरण करवाया और राष्ट्रद्रोहियों से सावधान रहने का परामर्श दिया।

अन्तरंग सभा के आवश्यक निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक सिद्धांती भवन रोहतक में ११ अगस्त ८५ को दोपहर बाद सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में निम्नलिखित महत्त्व पूर्ण निश्चय किये गये—

१—सभा के पूर्व गणक श्री नवाबसिंह के परिवार की सहायता

सभा के कर्मठ तथा लगनशील गणक श्री नवाबसिंह जी के निधन पर शोक प्रकट करने के पश्चात् उनके बेसहारा परिवार की सहायता के लिए २५ हजार रुपया संग्रह करने का निश्चय किया है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हरयाणा के सभी आर्यसमाजों तथा अन्तरंग सभा के सदस्यों से अनुरोध किया है कि वे अपना अपना योगदान सभा को भेजकर यश के भागी बनें। धन संग्रह होने पर इस निधि से उनके परिवार को २५०) मासिक सहायता दी जायेगी।

२—शहीद सैनिक परिवारों को सहायता

गत वर्ष अमृतसर में की गई सैनिक कार्यवाही में जो हरयाणा निवासी सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए हैं उनके परिवारों की सहायता के लिए सभा द्वारा संग्रहित राशि से एक एक सिलाई मशीन तथा १०१) और जख्मी सैनिकों को १०१) तथा सम्मानार्थ प्रशस्ति पत्र दिया जायेगा।

३—वेदप्रचार की उन्नति हेतु सुझावों पर विचार

सभा के वेदप्रचार कार्य के प्रसार के लिए सुझाव आमन्त्रित किये गये थे, उन पर विचार विमर्श करने के उपरान्त निश्चय किया गया कि प्रत्येक जिले में एक उपदेशक तथा एक भजन मण्डली अवश्य नियुक्त की जावे, ताकि प्रत्येक ग्राम में वेदप्रचार द्वारा ऋषि दयानन्द का सन्देश पहुंचाया जावे।

अन्तरंग सभा ने प० सुखदेव शास्त्री सिद्धान्त वाचस्पति को उपदेशक तथा प० जयपाल आर्य की भजन मण्डली को नियुक्त किया है।

४—शराब के ठेकों पर धरना

शराबबन्दी अभियान के अन्तर्गत सभा की ओर से सभा उपदेशक प० महेन्द्रसिंह शास्त्री तथा चौ० खजानसिंह एडवोकेट के संयोजन में ग्राम भाडसा में शराब के ठेके पर १८ अगस्त रविवार को धरना आरम्भ करने का कार्यक्रम बनाया गया। सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी धरणे का उद्घाटन करेंगे। सभा की भजनमण्डलियों द्वारा शराब विरोधी प्रचार करवाया जा रहा है।

५—प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती को जयन्ती पर रामायण गोष्ठी

आर्य जनता की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्य विद्यासभा हरयाणा के निश्चयानुसार आर्यजगत् के विख्यात वैदिक विद्वान् पं० जगदेवसिंह सिद्धान्त शास्त्री की ८५ वीं जयन्ती विजय दशमी पर २२ अक्तूबर ८५ को सिद्धान्ती भवन रोहतक में रामायण पर गोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी के संयोजन महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में संस्कृत विभाग के प्रवक्ता डा० यज्ञवीर को मनोनीत किया गया है।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री
सभा मन्त्री

आर्य विद्या परिषद् हरयाणा की कार्य समिति का चुनाव

आर्य विद्या परिषद् हरयाणा की साधारण सभा की बैठक ११ अगस्त को कार्य समिति का चुनाव निम्न प्रकार किया गया—

१—प्रो० शेरसिंह, २—महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी, ३—बहन सुभाषिणी देवी, ४—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, ५—डा० सुदर्शनदेव आचार्य ६—डा० रघुवीरसिंह, ७—डा० रणजीतसिंह, ८—वेदमित्र, ९—प्रिंसिपल लाभसिंह

प्रस्तोता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रामलीला मैदान दिल्ली

दक्षिण अफ्रीका अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन सूचना

सार्वदेशिक तथा अन्य पत्रों के द्वारा आर्य जनता को दिसम्बर १९८५ में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के बारे में विस्तृत जानकारी पहले ही दी जा चुकी है। इस विषय में सार्वदेशिक सभा ने भारत सरकार से अनुरोध किया था कि उक्त सम्मेलन में भाग लेने के लिए दक्षिण अफ्रीका जाने के इच्छुक आर्य बन्धुओं को उनके पासपोर्ट पर विशेष अनुमति दी जाय। जैसा कि आप जानते हैं कि सामान्य अवस्था में भारत सरकार भारतीय नागरिकों को दक्षिण अफ्रीका में प्रवेश की अनुमति नहीं देती है।

हमें सूचित करते हुए हर्ष है कि भारत सरकार ने हमारी प्रार्थना स्वीकार करते हुए सैद्धांतिक रूप से उन आर्य बन्धुओं को जो अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने डरबन जाना चाहते हैं, को दक्षिण अफ्रीका में प्रवेश के लिए विशेष आज्ञा देने का निर्णय ले लिया है, किन्तु यह आज्ञा सामूहिक रूप से किसी संस्था या व्यक्तियों के किसी भी संगठन को नहीं दी जायेगी। इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को स्वतन्त्र रूप से अपने क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी को आवेदन पत्र देना होगा। जो उस प्रार्थना पत्र को विदेश मन्त्रालय भारत सरकार नई दिल्ली को विशेष अनुमति प्राप्त करने के लिए भेज देंगे।

अतः उन समस्त आर्य बन्धुओं से जो आर्य महासम्मेलन में भाग लेने दक्षिण अफ्रीका जाना चाहते हों, हमारा अनुरोध है कि वे तुरन्त अपने क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी से इस विषय में आगे सम्पर्क करके उन्हें अपना प्रार्थना पत्र दे दें। आर्यसमाज तथा आर्य संस्थाएं भी जो अपने प्रतिनिधि डरबन भेजना चाहते हों, वे भी अपने प्रतिनिधियों से व्यक्तिगत रूप से तदानुसार कार्यवाही करने का परामर्श देवें।

प्रार्थना पत्र में यह अवश्य लिखा जाय कि मैं आर्यसमाज से सुबद्ध हूं और दक्षिण अफ्रीका जाने का मेरा एकमात्र उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेना ही है। सभा मन्त्री

पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज सेवासदन बल्लबगढ जिला फरीदाबाद को एक योग्य पुरोहित की आवश्यकता है। मासिक दक्षिणा योग्यतानुसार दी जावेगी गृहस्थी व वानप्रस्थी अधेड़ आयु के उम्मीदवारों को वरीयता। आवास व्यवस्था मन्दिर में ही, अकेले रहने पर भोजन व्यवस्था सदस्य परिवारों में। योग्य उम्मीदवार पूर्ण विवरण सहित शीघ्र ही आवेदन करें।

सत्यदेव गुप्त
प्रचार मन्त्री आर्यसमाज सेवासदन बल्लबगढ़

अबोहर फाजिल्का क्षेत्र में आर्य नेताओं का तूफानी दौरा

हिन्दी भाषी जनता द्वारा सर्वत्र हार्दिक स्वागत

(गतांक से आगे)

४ अगस्त रात्रि को १० बजे चलकर ११ बजे लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड के ग्राम पंचकोशी पहुँचे। वहां ग्राम के मुख्य दो व्यक्तियों से हरयाणा पंजाब के समझौते पर विचार हुआ, वहां भी सभी लोग हरयाणा में सम्मिलित होने के लिए सहमत थे।

४ अगस्त को रात्रि से ही जोर की वर्षा हो रही थी, प्रात श्री आदलाल जी के घर पर यज्ञादि करके ७ बजे यहां से चलकर ग्राम रोहिड़ावाली व ताजापट्टी पहुँचे, यहां पर रोहिड़ावाली के सरपंच ओमप्रकाश तथा ताजापट्टी के सरपंच नन्दराम तथा दूसरे मेम्बर और जनता के आदमी उपस्थित थे। प्रो० शेरसिंह ने उन्हें इस समझौते के विषय में लोगों को जानकारी दी, दोनों ग्रामों की पंचायत ने हरयाणा में मिलने का प्रस्ताव किया। प्रस्ताव का प्रारूप मा० तेगराम जी ने समझाया। इस समय मूसलाधार वर्षा हो रही थी। यहां पर भी लोग ट्रैक्टर आदि लेकर वर्षा में भीगते हुए बड़े उत्साह के साथ उपस्थित थे।

यहाँ से चलकर भुमियावाली ग्राम में पहुँचे। सरपंच मनीराम की अध्यक्षता में बैठक हुई। ग्राम के सभी लोग बड़ी सख्या में उपस्थित थे। प्रो० शेरसिंह ने अपने विचार रखते हुए कहा—अगर आप इस समय हरयाणा में जाने से चुक गए तो यह समय आपको फिर कभी नही मिलेगा। स्वामी ओमानन्द जी ने हरयाणा की प्रगति का उल्लेख करते हुए कहा हरयाणा आज कृषि में सभी प्रान्तों से आगे निकल गया है। उद्योग-धन्धों में भी वह किसी प्रांत से पीछे नहीं है। हरयाणा की प्रगति चारों तरफ से हो रही है। आपका ये इलाका भी जब हरयाणा में आ जायेगा तब धान और कपास के भी भण्डार भर जायेगे। हम अन्न और कपास के बारे में भी आत्मनिर्भर हो जायेंगे। यहां भी पचायत ने प्रस्ताव पास किया। श्री सुखदेव शास्त्री तथा मा० तेगराम जी ने भी अपने विचार रखे।

इसके पश्चात् ग्राम खुईखेड़ा पहुंचे। यहां पर पंजाब के भूतपूर्व मन्त्री श्री राधाकृष्ण सुतार के घर पर प्रमुख व्यक्तियों की मीटिंग हुई। चौ० राधाकृष्ण जी ने प्रो० शेरसिंह जी का तथा स्वामी ओमानन्द जी का हार्दिक स्वागत किया और हरयाणा में मिलने की अपनी सहमति जाहिर की। तदन्तर पाकिस्तान की सीमा के पास बसे ग्राम रिवाली और ढाबा पहुचे। सरपंच जसराम जी ने बड़े उत्साह के साथ जलसा रखा हुआ था, दोनों ग्रामों के नर-नारी राजकीय उच्च विद्यालय में बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित थे। प्रो० शेरसिंह जी ने लोगो को हरयाणा तथा पजाब के हिन्दी भाषी इलाके के विषय में विस्तार से जानकारी दी। उन्होने कहा—यदि हरयाणा को सीमाएं पाकिस्तान से लग जाती हैं तो देश सुरक्षित रह सकता है। हरयाणा देश की रक्षा में पंक्ति का काम देगा।

पंजाब के साथ रहेंगे तो उग्रवादी सीमा का लाभ उठाकर हथियार लेकर देश में गड़बड़ो कर सकते हैं। इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द जी ने कहा—अपने अधिकार लिए जाते हैं। कमजोर व्यक्ति कुछ नहीं कर सकते। इसलिए बहादुरी के साथ हरयाणा में मिलने के लिए तैयार रहो। अपनी मांग कमोशन से मिलकर हिन्दी भाषी होने का प्रमाण देकर हरयाणा में शामिल हो जाओ, डरो नहीं। डरना किस बात का है। आप अपने अधिकार तो मांग ही रहे हो। तुम्हारी मांगे उचित हैं। आने वाले ३१ दिसम्बर से पहले पहले तयार हो जाओ मा० तेगराम जी ने तथा सुखदेव शास्त्री ने भी अपने प्रेरणार्थक विचार रखे। यहां पर भी दोनों ग्रामों के पंचायतों ने प्रस्ताव पास किया।

इसके पश्चात् ४ बजे चलकर फाजिल्का पहुंचे। वहां आर्यसमाज मन्दिर में पहले से ही प्रो० शेरसिंह जी तथा स्वामी ओमानन्द जी के पधारने की प्रतीक्षा में लोग उपस्थित थे। समाज के मन्त्री उम्मादत्त शास्त्री ने बड़ा स्वागत किया। अनेक लोग उपस्थित थे। यहां प्रो० शेरसिंह जी ने लगभग डेढ घण्टे तक अपने विचार रखे। नहरी पानी, भाषा, व्यापार, रहन-सहन लौंगोवाल-राजीव समझौते के विषय में विस्तार से उन्हें बताया। लोगों ने प्रो० साहब से इस विषय में अनेक प्रश्न भी पूछे। परिणाम स्वरूप सन्तोषजनक उत्तर पाकर लोग हिन्दी भाषी क्षेत्र हरयाणा में मिलने के लिए तैयार हो गए। मा० तेगराम ने अपने विचार रखते हुए कहा—यहां सवाल भाषा का है क्योंकि भाषा के आधार पर ही दोनों का विभाजन होगा। इसलिए अपना उज्ज्वल भविष्य बनाने के लिए यहां की जनता को हरयाणा में मिलना चाहिए। अन्यथा आपकी सन्तान अपने धार्मिक ग्रंथ जो कि संस्कृत भाषा तथा हिन्दी भाषा में है, उनके पढने से वंचित हो जायेगी।

इस प्रकार प्रो० शेरसिंह जी के तूफानी दौरे से लोगों में बहुत जागृति आई। यहां के नर-नारी क्योंकि बिल्कुल हिन्दी भाषी हैं। अत अब वे अपने अधिकार को पाने के लिए उठ खडे हुए हैं। सब वर्गो के लोग हरयाणा में शामिल होने के लिए बडे से बडा बलिदान देने के लिए तैयार हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा इस अवसर पर प० सुमेरसिंह, पं० जयपाल आर्य तथा पं० हरिश्चन्द्र आर्य की भजन मण्डलियों का ग्रामों में प्रचार का कार्यक्रम बनाया गया था। जहा भी सभा के प्रचारक गये वहां हरयाणा तर्जों पर गीत सुनने के लिए जनता वर्षा की भी परवाह न करते हुए उमड पडती। वहां के आर्यसमाज के अधिकारियों ने सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह से अनुरोध किया कि हमारे आर्यसमाजों का सम्बन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से स्वीकार करे ताकि हमें भी वैदिक धर्म प्रचार सुनने का अवसर मिलता रहे। यहा के ग्रामों में प्रचार के अभाव से आर्यसमाजें शिथिल हो रहे हैं क्योंकि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पास ग्रामीण जनता के लिए एक भी भजनमण्डली आज तक नही भेजी गई पंजाब के प्रचारक केवल शहरों में ही बडी कठिनता से प्रचारार्थ आ पाते हैं। सभा प्रधान जी ने विश्वास दिलाया कि जब भी प्रचार की माग की जावेगी, प्रचार की व्यवस्था अवश्य की जायेगी। हम इस क्षेत्र को हरयाणा की भान्ति ही अपना मानते हैं।

केदारसिंह आर्य

(पृष्ठ १ का शेष)

१७—चौ० बिरजासिंह एडवोकेट नरवाना, १८—चौ० भलेराम नैन अन्दाना जि. सङ्गरुर, १९—डा० रामनारायण ढीगडा टोहना, २०—चौधरी मनफूलसिंह पूर्व विधायक, २१—चौ० मेहरचन्द पूर्व विधायक जिला हिसार, २२—डा० रणधीरसिंह सागवान, २३-चौ० लाघूराम भूडेसर, २४—वैद्य रामदयाल, २५—श्री रामकिशन गुप्त मण्डी डबवाली २६—प० जनार्दन शर्मा एडवोकेट डेराबस्सी (लालडू क्षेत्र) २७—मा० तेगराम पूर्व विधायक (अबोहर), २८—चौधरी महीराम बिश्नोई एडवोकेट (फाजिल्का) २९—राव रामचन्द्र आर्य रेवाडी, ३०—बा० उदमीराम एडवोकेट नारनौल जिला महेन्द्रगढ, ३१—आचार्य ऋषिपाल ३२—लाला बनारसीदास गुप्त पूर्व मुख्यमन्त्री जिला भिवानी, ३३—दीवान भीमसेन, ३४ श्री श्यामलाल आर्य जिला गुडगाव, ३५—चौ० राजेन्द्रसिंह एडवोकेट पूर्व विधायक जिला फरीदाबाद, ३६—चौधरी फतेहसिंह मलिक, ३७—चौ० हरकिशनसिंह पूर्व सेशनजज (सोनीपत) ३८- बा० मूलचन्द जैन करनाल ३९ बा० रघुवीरसिंह।

इसी प्रकार हरयाणा के जिलों मे कार्यकर्त्ताओ की बैठकें करके करके जिला स्तर पर भी उपसमितियो का गठन बाद में किया जायेगा।

पानी के बटवारे के सम्बन्ध मे प्रो० शेरसिह जी ने स्पष्ट किया कि समझौते मे जो १ जुलाई की तिथि के रेकार्ड का उल्लेख किया है, उसे आधार मानने मे हरयाणा का घाटा रहेगा क्योंकि हैड वर्क्स पर पजाब का कन्ट्रोल है। पजाब के कर्मचारी पानी के वितरण मे पक्षपात कर सकते है। पजाब के बटवारे से पूर्व हरयाणा क्षेत्र को जो पानी मिलता था और कृषकों को पानी के बिलों के भुगतान के लिए जो आबियाना शुल्क लिया जाता था, उसका हिसाब लगाकर ही पानी का बटवारा न्यायपूर्वक हो सकता है।

प्रो० शेरसिह जी द्वारा इन प्रस्तावो तथा सुझावो का प्रिंसिपल गुरनसिह, ला० छबीलदास आर्य, श्री पारब्रह्म परमार्थी, चौ० धर्मसिह राठो, मास्टर निहालसिंह आर्य, चौधरी साहबराम अबोहर, श्री लीलाधर शर्मा पत्रकार फाजिल्का आदि नेताओ ने समर्थन किया तथा हरयाणा रक्षा वाहिनी द्वारा समय समय पर हरयाणा के हितों की रक्षार्थ सर्वप्रथम आवाज बुलन्द करने की सराहना की।

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित शराबबन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए जिन ग्रामों में शराब के ठेके खुले हुए हैं, उन ग्राम पंचायतों के सरपंचों तथा पंचों को प्रेरणा करके प्रस्ताव पास करवाने का यत्न करें कि शराब का ठेका बन्द किया जावे। प्रस्ताव का प्रारूप निम्न प्रकार प्रकाशित किया जा रहा है।

सेवा में,

माननीय उपायुक्त महोदय
आबकारी एवं कराधान विभाग हरयाणा, चण्डीगढ़

निवेदन है कि हमारे ग्राम............जिला............पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक.........में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है—

यह पंचायत शराब पीने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्राम्य जीवन के लिये बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गांव में अनाचार, अशान्ति और अपराध फैलते हैं। धन का भी सारा विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की नशाबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द कर दी जाए और भविष्य में कदापि भी यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाए ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठावेंगे को कृपा करेंगे।

धन्यवाद!

ता० .... विनीत

हस्ताक्षर ग्राम पंचायत के सदस्य

प्रतिलिपि सेवा में—

१- प्रधानमन्त्री, भारत सरकार नई दिल्ली।

२- मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

नोट—जिन पंचायतों के प्रस्ताव ३० सितम्बर ८५ तक सरकार के पास पहुँच जावेंगे, पंचायत एक्ट के अनुसार उन ग्रामों में शराब के ठेके नीलाम नहीं हो सकते।

अतः आर्यसमाजें अपने निकट के ग्रामों में जहां शराब के ठेके खुले हैं, वहां की पंचायतों से प्रस्ताव पास करवाकर ३० सितम्बर तक भिजवाने का यत्न करें।

प्रो० शेरसिंह
सभा प्रधान

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत

प्रधान—श्री रामानद सिंगला, उपप्रधान—बाबूराम मित्तल, मन्त्री—ठाकरदास बतरा, उपमंत्री—मदनमोहन, कोषाध्यक्ष—कुलभूषण पुस्तकाध्यक्ष—दीपचन्द निर्मोही

आर्यसमाज मीरपुर जिला महेन्द्रगढ

प्रधान—बाबू रामसिंह यादव, मन्त्री—शेरसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री मुन्शीराम आर्य,

आर्यसमाज अशोक विहार दिल्ली

प्रधान—सर्व श्री के० बी० राय, उपप्रधाना—श्रीमती सन्तोष तनेजा, मन्त्री—विजय भूषण आर्य, कोषाध्यक्ष—हरप्रकाश आलूआलिया पुस्तकाध्यक्ष—राजेश गुप्ता, लेखानिरीक्षक—जसवन्तलाल मदान

आर्यसमाज स्वामी दयानन्द मार्ग कबाड़ी बाजार अम्बाला छावनी

सरक्षक—मा० पन्नालाल, प्रधान—जयप्रकाश आर्य, उपप्रधान—डाक्टर दिलबाग राय बी. ए एल. एल. बी एवं मा० सर्वदयाल, मन्त्री—जगदीश आर्य, प्रचारमन्त्री—वेदमित्र हापुड़वाले, उपमन्त्री—ओमप्रकाश सिंगला एवं खैरातीलाल, पुस्तकाध्यक्ष—सोमप्रकाश, कोषाध्यक्ष—वेदप्रकाश शर्मा,

आर्यसमाज नई कालोनी गुड़गांव

प्रधान—डा० विद्या भूषण तनेजा, उपप्रधान-पन्नालाल, अमृत राय वर्मा, जनरल सैक्ट्री—श्यामलाल आर्य, प्रचारमन्त्री विद्या सागर गुप्ता, उपमन्त्री—हरिश्चन्द आहूजा, कोषाध्यक्ष—कुन्दनलाल भल्ला, पुस्तकाध्यक्ष-जगतराम भाटिया

स्त्री आर्यसमाज ग्राम भोगपुर कनलसी जिला अम्बाला

मन्त्री—श्रीमती सन्तोष आर्या, उपमंत्री—कुमारी कुसमलता चौहान, प्रधाना—कुमारी कैलाशो आर्या, उपप्रधान—कुमारी सुदेश चौहान, कोषाध्यक्ष—श्रीमती बृजमोहनी चौहान, प्रचारमन्त्री—कुमारी कुसमलता पुण्डीर, कुमारी कुसम पुण्डीर

भारतीय नवयुवक सभा नलवा

संरक्षक व निर्देशक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, प्रधान—ब्रह्मचारी चेतनदेव 'वैश्वानर', उपप्रधान—वजीरसिंह आर्य, महामन्त्री—ब्र० संजयदेव 'क्रान्तिकारी' प्रचार मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष—डा० रामचन्द्र आर्य, मुख्य सचेतक—अत्तरसिंह आर्य 'क्रान्तिकारी'

आर्यसमाज नलवा में वेदप्रचार सप्ताह एवं योग शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज नलवा (हिसार) की धर्मशाला में ४ अगस्त से १० अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह एवं योग शिविर बड़े ही समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सर्व श्री डा० सुदर्शनदेव जी आचार्य राजकीय महाविद्यालय नलवा, श्री भरतलाल जी शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज हासी, ब्रह्मचारी सजयदेव जी 'क्रान्तिकारी' तथा अन्य विद्वानों के भी वेद विषयक सारगर्भित व्याख्यान हुए। डा० सुदर्शनदेव जी आचार्य ने वेद शब्द की व्याख्या करते हुए इस ओर श्रोताओं का ध्यान आकृष्ट किया कि 'विश्व की शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक सभी समस्याओं का समाधान वेदपथानुयायी होने से ही सम्भव है।' ब्रह्मचारी चेतनदेव जी 'वैश्वानर' एक सप्ताह तक वेदकथा करते रहे। योग शिविर का सचालन ब्रह्मचारी जयवीर जी व्यायामाचार्य ने किया, जिसमे ६० शिक्षणार्थियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

अत्तरसिंह जी क्रान्तिकारी द्वारा सारे कार्यक्रम का सफल संयोजन किया गया। पं० अमरसिंह, पं० रामेश्वर जी तथा चौ० हेतराम आदि सभी महानुभावों का प्रशसनीय योगदान रहा।

इस आयोजन का श्रेय सेठ श्री पुष्करलाल जी आर्य को जिन्होने सपरिवार इस कार्यक्रम में भाग लिया और तन, मन तथा धन से सहयोग देकर इसे सम्पन्न किया।

बेगराज भाऊका
प्रधान आर्यसमाज नलवा जिला हिसार

भुच्चो मण्डी में वेद सप्ताह

२८-७-८५ को भुच्चो मण्डी में आर्यसमाज की स्थापना के पश्चात् ५-८-८५ से ११-८-८५ तक वेद सप्ताह मनाया गया। श्री ओमप्रकाश आर्य वानप्रस्थी अधिष्ठाता आर्य वानप्रस्थ आश्रम बठिण्डा द्वारा पारिवारिक सत्सग सन्ध्या, हवन, यज्ञ के पश्चात् उनके प्रवचन होते रहे। कार्यक्रम बडा उत्तम रहा।

मन्त्री जिला आर्य सभा भटिण्डा

शोक समाचार

आर्यसमाज कोसली जिला रोहतक के कार्यकर्त्ता मा० फूलसिंह का ३०-७-८५ को देहान्त हो गया। वे ८० वर्ष के थे।

परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति तथा परिवार-जनों को धैर्य प्रदान करे।

सभा मन्त्री

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

सभा के पूर्व गणक श्री नवाबसिंह जी के बच्चों की सहायता के लिए अपील


श्री नवाबसिंह गणक

सर्वहितकारी में छपी सूचना से आपको पता लग ही गया है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मुख्य कर्मचारी श्री नवाबसिंह जी गणक का दिनांक २३ जून को ४९ वर्ष की आयु में ही आकस्मिक निधन हो गया है। इस कारण सभा को बड़ी क्षति हुई है। वे १९६३ से आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा में गणक (अकाउण्टेंट) के रूप में आ गये थे और सभा के हिसाब तथा अन्य प्रबन्ध सम्बन्धी सभी कार्यों को बड़ी योग्यता एव निष्ठा के साथ करते थे। उन्होंने निरन्तर २२ वर्ष तक अल्प वेतन पर सभा की सेवा बहुत ही लग्न से की है। अपने जीवन के अन्तिम समय रुग्णावस्था में भी उन्होंने सभा का कार्य किया।

वे अपने पीछे विधवा पत्नी, एक छोटा लड़का तथा ५ लड़कियां छोड़ गये है। उन्होंने गत वर्ष केवल एक लड़की की शादी की थी, जिसका ऋण भी अभी तक नहीं उतार सके थे। भविष्य निधि में भी उनके थोडे ही पैसे बचे हैं। ऐसी स्थिति में सभा तथा आर्यसमाजों का नैतिक कर्त्तव्य बनता है कि आर्यसमाज के एक निष्ठावान् कार्यकर्त्ता के परिवार की सहायता दिल खोलकर करें। अब उस परिवार में कमाने वाला अन्य कोई नही है।

आप आर्यसमाज के निष्ठावान् अधिकारी एव कार्यकर्त्ता हैं। अत: इस पुण्य कार्य के लिए व्यक्तिगत अथवा अपने आर्यसमाज की ओर से अधिक से अधिक राशि सभा कार्यालय मे भिजवाने की कृपा करे।

—: निवेदक :—

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिंह	प्रो० सत्यवीर शास्त्री	रामकृष्ण
प्रधान परोपकारिणी सभा	प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

स्व० नवाबसिंह के परिवार सहायतार्थ प्राप्त दान सूची

आर्यसमाज नीलोखेड़ी जिला करनाल	२००)
मन्त्री आर्यसमाज नारनौल जिला महेन्द्रगढ	१५१)
डा० देशराज खीरवांट इन्दिरा कालोनी रोहतक	१०१)
डा० बृजमुनि कुन्द्रा किला रोड रोहतक	१०१)
मास्टर निहालसिंह आर्य दिसावर खेड़ी जिला रोहतक	१०१)
पारब्रह्म परमार्थी पत्रकार रेवाड़ी जिला महेन्द्रगढ	१०१)
प्रिंसिपल लाभसिंह आर्य हायर सैकण्ड्री स्कूल पानीपत (करनाल)	१००)
प्रधान आर्यसमाज कोसली जिला रोहतक	११)
चौधरी वेदामत्र जी चण्डीगढ	१०१)
ब्रह्मचारी रामवीर गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक	१०१)
श्री बलदेव कृष्ण आर्य करनाल	१०१)
आचार्य ऋषिपाल आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखीदादरी जिला भिवानी	१०१)
श्री धर्मसिंह राठी माडल टाउन पानीपत जिला करनाल	१००)
प्रो० शेरसिंह सभा प्रधान नई दिल्ली	१००)
वैद्य ताराचन्द खरखोदा जिला सोनीपत	११)
बसदेवसिंह आर्य सिरसा	१०१)
दीवान भीमसेन शान्ताकुंज नई कालोनी गुड़गांव	१००)
प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री डालावास जिला भिवानी	१०१)
सेठ जयकिशन आर्यसमाज डिडवाड़ा जिला जीन्द	१०१)
जय भगवान आर्य मन्त्री आर्यसमाज जीन्द रोड सफीदों (जीन्द)	१००)
बहादुरशाह यादव प्रधान आर्यसमाज रामसरा जिला फिरोजपुर (पजाब)	५१)
श्रीकृष्ण सुनारिया वाले ग्राम मालकोष जिला भिवानी	५)
श्री रामफल आर्य मैनेजर ग्रामीण बैंक सांवड जिला भिवानी	१०)
लैंसनायक नरेन्द्रकुमार ग्राम नीमडी ,, ,,	५)

सभी दान दाताओं का सभा की ओर से हार्दिक धन्यवाद। आशा है अन्य दानी महानुभाव भी सूची में अपना नाम लिखवाकर पुण्य के भागीदार बनेगे।

रामकृष्ण
सभा कोषाध्यक्ष

श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर

वेद विशेषांक

सर्वहितकारी के पाठकों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर २८ अगस्त का सर्वहितकारी वेद विशेषाक प्रकाशित होगा। इसमें आर्यजगत् के विख्यात विद्वानों के लेख तथा कविताए प्रकाशित होगी।

वेद के स्वाध्याय के लिए बहुत ही उपयोगी सामग्री पाठकों को पढने के लिए मिलेगी। जिन महानुभावों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है, उन्हें यह विशेषांक नही भेजा जा सकेगा। अत: अपना शुल्क २६ अगस्त मे पूर्व भेज देवे। नवीन ग्राहकों से भी शुल्क प्राप्त होने पर उन्हें भी यह विशेषाक भेजा जायेगा। अत: अपनी प्रति सुरक्षित करवा लेवें।

व्यवस्थापक सर्वहितकारी
सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक

डिपो होल्डर की परेशानी
या
जनता की परेशानी

मुझे सन् १९८५ के ८ महीनों में केवल एक बार २२ जून को राशन कार्ड की चीनी मिली है वह भी सिविल सप्लाई विभाग के कर्मचारियों की उपस्थिति के कारण। उस दिन मैंने डिपो होल्डर की लिखित शिकायत भी की थी, लेकिन अभी तक कुछ भी नही हुआ। जुलाई की चीनी प्राप्त करने के लिए दूसरे तीसरे दिन दुकान के चक्कर लगाता रहा किन्तु दुकान बन्द ही मिली।

आज १६ अगस्त को सौभाग्य से दुकान खुली मिली। पूरी जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया तब डिपो होल्डर चमनलाल ने मुझे जो लिखित सूचना दी है वह नीचे दी जा रही है—

"वार्ड न० १२ पाड़ा मोहल्ला, राशन डिपो न० १६७ मेरी राशन कार्ड के हिसाब से १४ क्विटल ६४ किलो चीनी बनती है जबकि मुझे १३ बोरी चीनी दी जा रही है। जनता मुझ से जवाब मांगती है कि राशन कार्डों की चीनी कहाँ है? कृपया मुझे इस परेशानी से दूर करे। चमनलाल १६-८-८५'

सिविल सप्लाई विभाग के उच्चाधिकारियों से तथा जिले के उपायुक्त श्री प्रदीपकुमार चौधरी से मेरा नम्र निवेदन है कि वे इस प्रकार की राशन वितरण प्रणाली को दूषित करने वाली कार्यवाही को रोकें और अपराधी पाये जाने वाले लोगों के खिलाफ कठोर कार्यवाही करें।

मैंने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। साधारण जनता को प्राय: सर्वत्र इसी प्रकार परेशान किया जा रहा है।

वेदव्रत शास्त्री
सम्पादक

अबोहर-फाजिल्का के आर्य भाइयों से

टेक—हो जावो तैयार समय है जगने का
पछतावोगे फेर नही कुछ बनने का

१—उठो लेकर अंगडाई सब आर्य हिन्दू भाई।
हमारी हिन्दी मात्री भाषा है वेदो के अनुयाई।
काम नहीं दबने का।। पछतावोगे फेर ···

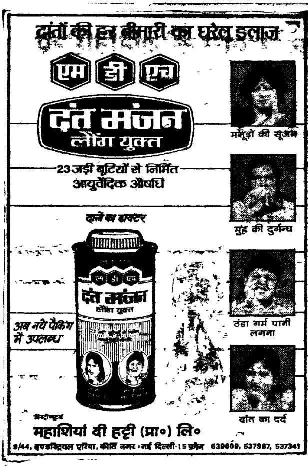
२—यहा उग्रवादी पथी ललकारा निर्दोष हिन्दुओं को मारा।
हत्याचार किये इतने ला खालिस्तान का नारा।
कर्म किया डसने का।। पछतावोगे फेर·········

३—इन्हे गऊओं का सर उड़ाया, मन्दिरो मे फकवाया।
भगवान् की प्रतिमा तोड़ी, पंडित का शीश उड़ाया।
इस पुजारी अपने का ।। पछनावोगे·········

४—यहां पर कमीशन आवेगा उसको साफ बतादो।
हिन्दी हमारी माता हमारा हरयाणा से नाता।
अब समय है डटने का ।। पछतोवोगे ·······

५—अगर चाहो भविष्य बनाना अब हरयाणा मे मिल जाना।
आजाद होगी हिन्दी भाषा सुनो हरिश्चन्द का गाना।
यह फेर नही मिलने का ।। पछतावोगे·········

हरिश्चन्द आर्य
भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा



शोक समाचार

जिला महेन्द्रगढ के कर्मठ आर्य प्रचारक महाशय रामजीलाल ग्राम मोहदीपुर का ६५ वर्ष की आयु मे २१ जून को निधन हो गया।

परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा की सद्गति तथा परिवार-जनों को धैर्य प्रदान करे। सभा मन्त्री



उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें।

शाखा कार्यालय :-
६३ गली राजा केदारनाथ,
चावड़ी बाजार, दिल्ली—६
(स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार से खरीदें) फोन नं० २६१८३८

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि सं० 83807/73 रजि० न० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १,९६,०८५३,०८६

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र



प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १२ अङ्क ३८ १४ सितम्बर १९८५ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

झाड़सा गांव ने शराब का ठेका उठवाकर अपना इतिहास दोहरा ही दिया

आज देश का सभ्य व असभ्य कहे जाने वाला प्रत्येक व्यक्ति शराब जैसी भयंकर बिमारी से शायद ही बचा हुआ होगा। ज्यो ज्यो शराब जैसी सक्रामक बिमारी का समाज में विस्फोट होता है त्यों त्यो राष्ट्र और जाति का मानसिक स्तर पतनोन्मुख होता है। आज जिन लोगों पर देश की खुशहाली का दायित्व है वे ही पीड़ित व शोषित समाज को ठीक रास्ते से हटाने का प्रयत्न कर रहे हैं। आज गरीब मजदूर व किसान जब कार्य करके साय को घर की तरफ दौडना प्रारम्भ करता है तो रास्ते में उसे शरीर व धन का नाश करने वाला शराब का ठेका दिखाई पडता है। मेरा देश के तथाकथित कर्णधारों से यह कहना है कि वे आटा, दाल, चीनी, मिट्टी का तेल, शिक्षा चिकित्सा आदि लोगो की आवश्यक वस्तुओं को कम दाम में व्यवस्था क्यों नही करते? दुर्भाग्य है आज देश के रक्षक को दूध की जगह शराब मिलती है।

आज की तात्कालिक समस्या 'शराब' को मद्दे नजर रखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने एक सघर्ष छेड़ा है। जब मैंने झाड़सा वजीराबाद, सुखराली, कन्हई समयपुर, तिगरा, घाटा, गुडगांव में जाकर नाहरी जिला सोनीपत बालावास जिला हिसार मे शराब के ठेकों को बन्द करवाने की कही तो लोगो में कुछ चेतना आई। इस उपलक्ष्य में गुडगाव के आर्यसमाजों चौ० खजानसिंह सरपच झाड़सा, श्री छत्तरसिंह जी वोहरा वजीराबाद, चौधरी गोपीचन्द जी झाड़सा आदि के कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक रात्रि को जैकमपुरा आर्यसमाज मन्दिर गुडगाव मे श्री मुन्शीराम जी सचदेवा की अध्यक्षता में हुई। उस बैठक मे शहर व ग्राम के व्यक्तियों ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। मैं तुरन्त सभा के कार्यालय रोहतक आया और प० सुमेरसिंह जी की भजनमण्डली को झाडसा में शराब के ठेके को समाप्त करने के सघर्ष हेतु उतार दिया। उनका झाड़सा गाव में बड़े जोर-शोर से ७ दिन तक प्रचार कार्यक्रम निरन्तर होता रहा। उसके उपरांत धरने के प्रारम्भ तक सभा के अन्य प्रचारक प० जयपाल जी के प्रभावशाली भजन होते रहे। बैठक के पूर्व निर्णय के अनुसार मैंने उपायुक्त गुड़गाव से मिलने का समय निश्चित कर लिया। फिर नगर व ग्रामवासी उपायुक्त महोदय से ३ अगस्त को श्री गोपीचन्द जी, श्री सत्यपाल जी, आर्य की अध्यक्षता में मिले तथा शराब के ठेके को झाड़सा गांव से उठवाने का कथनोपकथन के बाद ज्ञापन दिया। लेकिन ठीक आश्वासन न मिलने पर धरने की तैयारियां प्रारम्भ कर दी गई। इसी सन्दर्भ में मैं धरने के उद्घाटन हेतु पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की सेवा में गुरुकुल झज्जर में उपस्थित हुआ। उसी समय पूज्य स्वामी जी ने मेरे सिर व कमर पर हाथ रखते हुए सफलता का आशीर्वाद दिया। यह एक कर्मयोगी का आशीर्वाद था। तत्पश्चात् उसी दिन खुशीराम जी लोक सेवक रिवाडी, मन्त्री नशाबन्दी समिति हरयाणा, भाई होशियारसिंह जी नाहरी से भी इसी सन्दभ में बातचीत की। इसके बाद ६ अगस्त को प्रो० शेरसिंह जी प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से उनके निवास स्थान साकेत नई दिल्ली में मिला और उनसे धरने की स्वीकृति प्राप्त की। उधर से श्री खजानसिंह जी एडवोकेट ने ८३-८४ मार्च ८५ के शराबबन्दी प्रस्ताव तथा उसके रिमाइन्डर की प्रतिया मुझे दी, मैंने वे सभी प्रतिया सम्बन्धित अधिकारियो को सौंप दी। १७ अगस्त को जिला उपायुक्त महोदय एस० पी०, सदर - एस० एच० ओ०, डी० ई० टी० सी० गुडगाव को चेतावनी भी दी कि यदि किसी भी पक्ष को कोई नुकसान होता है तो आप उत्तरदायी होगे। उसी रात्रि साय मेरे नाम से उपायुक्त महोदय का परवाना आया व शीघ्र मिलने के लिए कहा। उन्होने भेंट मे मेरे से कहा कि आप धरना न देवे। लेकिन मैंने पूर्व लिखित कथन को दोहराया कि धरने बगैर शराब का ठेका उठेगा नही।

आखिर 'धरने' के रूप में सघर्ष १८ अगस्त को १ बजे चौधरी खजानसिंह जी एडवोकेट की अध्यक्षता मे प्रारम्भ कर दिया गया। यज्ञ के बाद सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी ने अपनी अध्यक्षता में धरने का उद्घाटन किया। चौ० खजानसिंह ने सम्पूर्ण पचायत की तरफ से आश्वासन दिया। श्री सत्यपाल जी आर्य ने शहर से धन सग्रह व सहयोग दिलाया। युवा नेता चौ० गोपीचन्द जी ने भी आगे आकर अपने आपको सघर्ष हेतु समर्पित किया। श्री ओमप्रकाश जी पच ग्राम पचायत तथा रवीन्द्रलाल बिस्मिल ने भी सरकार पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया जाहिर की। इस धरना मे तन-मन- धन से सहयोग देने वाले काफी व्यक्ति सामने आये। सर्वप्रथम चौ० खजानसिंह व पचायत के सहयोग को नही भुलाया जा सकता जिन्होंने दो वर्ष पहले सरपच बनते ही शराब का ठेका उठवाने के लिए प्रस्ताव पास किया था जिसमें मुख्यत: श्री ओमप्रकाश, बहन मीनाक्षी देवी जैन, श्री बलेराम सैनी, महेन्द्रलाल जैन, श्री धर्मेन्द्र, श्री छत्तरसिंह, चन्द्र, रघुवीरसिंह, खजानसिंह जी थे। इसके साथ साथ धरने पर श्री सुरतसिंह जैलदार, हुक्मसिंह जैलदार, सुरेन्द्रसिंह' सत्यवीरसिह, महावीरसिंह ठाकुरान, मानसिंह महलावत, प० निहालसिंह, प० प्रहलादसिंह, स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती, कन्हई, स्वामी शान्तिवेश बसई, प० दीनदयाल, सरपच खजानसिह के छोटे भाई लाला, भूतपूर्व सरपच हुक्मसिह, भूतपूर्व सरपंच ब्रह्मदत्त, दीवान नम्बरदार, भीमसिंह नम्बरदार, उदयसिंह, प्रतापसिंह, राजेशकुमार, जिलेसिंह, यज्ञदत्त मींयावाजी, गु० गुरदयाल वजीराबाद, बलवीरसिंह, राजेराम सैनी, डा० सुभाष व नवलकिशोर गोल्डन उद्योग, लहरीसिंह, नफेसिंह, विजय कोशिश, अत्तरसिंह, गगाराम, बाल्मीकि, रमेशसिंह किलोड, मा० दिलीपसिंह, प० छाजुराम राज निर्भीक, सतीश मराठा, पीताम्बर सैनी, जगदीश, कुलदीप, अत्तरसिंह सरपच धनवापुर, चौधरी धर्मसिंह सरपच दौलताबाद, राजेन्द्र दहिया, रामफल, गजेन्द्रसिंह यादव, टीकरी व राव हसराम टीकरी आदि व्यक्तियो ने तन-मन-धन से सहयोग दिया।

श्री गोपीचन्द जी ने अपनी मोटर-साईकल का प्रयोग धरने के रूप में हर समय किया तथा सभी अखबारों तक समाचार पहुचाने का श्रेय भी आप को ही जाता है। डा० सुभाष व श्री नवलकिशोर जी ने दूध आदि की व्यवस्था बडी तन्मयता से की। प० प्रहलाद व हरीराम ने विद्वानो साधुओ की सेवा मे कोई त्रुटि नही आने दी। लाला जी, ओमप्रकाश राज निर्भीक, सतीश मराठा, प० निहालसिंह, स्वामी प्रेमानन्द, स्वामी शान्तिवेश, राजेराम शराब को सदा सदा के लिए तिलाञ्जलि देने वाले चौ० नफेसिंह जी सक्रिय कार्यकर्त्ता रहे हैं। शहर

(शेष पृष्ठ ३ पर)

आर्य संस्कृति

—श्री देवव्रत आचार्य, उपप्रधान सचालक, सार्वदेशिक आर्य वीर दल

सस्कृति जागरूकता की वह सम्पत्ति है, बोध और चेतना का वह प्रकार है, जो मनुष्य की आत्मा में बिना किसी बाह्य सम्पत्ति को प्रभावित किये शोभा, शिष्टता और शक्ति के विकास में सहायक होता है। अथवा परम्परागत अनुस्यूत (जुडे हुये) सस्कार ही सस्कृति कहलाती है। पहले से वर्तमान दुर्गुणों को हटाकर उनके स्थान पर सद्गुणों का आधान कर देने का नाम सस्कार है[1]। सस्कारित व्यक्ति को ही संस्कृत कहा जाता है। जिन गुणों से उसे सस्कृत किया गया है उसे ही सस्कृति कहते हैं। अग्रेजी भाषामे इसका पर्यायवाची शब्द Culture है जो कि Cultire धातु से बना है जिसके अर्थ बोना उत्पन्न करना इत्यादि है।

संस्कृति और सभ्यता में अन्तर—

सस्कृति का सम्बन्ध आन्तरिक जगत् से है जबकि सभ्यता व्यक्ति के बाह्य जीवन से सम्बन्धित है। अहिंसा, सत्य, चोरी का परित्याग, अपनी स्त्री के अतिरिक्त अन्य सभी स्त्रियों में पुत्री, बहिन या माता का भाव इत्यादि गुण सास्कृतिक कहे जा सकते है। बाह्य शिष्टाचार, सफाई रखना, वातचीत का ढङ्ग, परस्पर व्यवहार ये सभ्यता के प्रतीक हैं। कोई व्यक्ति सभ्य हो सकता है परन्तु यह आवश्यक नही कि वह सस्कृत भी हो। किसी भी राष्ट्र या जाति की सस्कृति में धर्म, दर्शन, इतिहास एव परम्पराओं का होना आवश्यक है।

धर्म और सस्कृति का सम्बन्ध[2]—संस्कृति मानव को पूर्ण मानव (Cultured man) बनाता है और धर्म इसमे सहायता करता है।

आर्य संस्कृति का मूलाधार वेद है।[3] इसलिए इसे वैदिक संस्कृति भी कह सकते हैं। वैदिक सस्कृति में मनुष्य समाज को गुण कर्म के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार वर्णों में बाटा गया है। मनुष्य के जीवन को शतायु मानकर उसे ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम में विभक्त किया है जिससे कि वह पुरुषार्थचतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की प्राप्ति कर सके। ५ वर्ष से २५ वष तक ब्रह्मचर्याश्रम मे रहकर धर्म का आचरण, विद्याध्ययन, इन्द्रिय जय, शारीरिक एव मानसिक शक्ति का सञ्चय तथा तपस्वी जीवन व्यतीत करना। २५ वर्ष से ५० वर्ष तक गृहस्थ आश्रम में विवाह करके धन ऐश्वर्य का सञ्चय और ससार के सुखोपभोग, ५० से ७५ वर्ष की आयु में वानप्रस्थ आश्रम में पुनः धर्म का आचरण और तप करना एव इसके पश्चात् के जीवन को सन्यास आश्रम मे रहकर ईश्वरचिन्तन, परोपकार इत्यादि मे लगाना मानव का लक्ष्य कहा गया है।

धर्म—शरीर धारण के लिए अर्थ, मन की सन्तुष्टि के लिए काम, बुद्धि के लिए धर्म और आत्मा के लिए मोक्ष की आवश्यकता होती है। इनकी प्राप्ति का सूत्र ऐसे भी बना सकते हैं—धर्म(अर्थ+काम)=मोक्ष अर्थात् ब्रह्मचर्याश्रम में धर्म और ज्ञानार्जन करके गृहस्थ आश्रम में धर्म सत्सग स्वाध्याय सहित धनैश्वर्य तथा काम स्त्री सुखादि को भोगते हुए वानप्रस्थ आश्रम में अर्थ काम से अनासक्त होकर सन्यास आश्रम में मोक्ष की प्राप्ति करना। आज की सभ्यता में धर्म और मोक्ष को तिलाञ्जलि देकर केवल अर्थ और काम को ही मनुष्य का ध्येय समझ लिया गया है। जिसका दुष्परिणाम यह हुआ कि सर्वत्र अशान्ति, लूट-खसोट, शोषण, भ्रष्टाचार, जनसख्या वृद्धि, रोग, युद्ध इत्यादि से ग्रस्त होकर मानवता कराह रही है।

वैशेषिक दर्शन में धर्म की व्याख्या करते हुए महर्षि कणाद ने कहा है—यतोऽभ्युदयनि श्रेयससिद्धिः स धर्मः अर्थात् जिससे इस लोक का सुख और परलोक (मोक्ष) सुख दोनों की प्राप्ति हो वह धम कहलाता है। अपने कर्त्तव्य कर्मों को करना ही धर्म है। महाभारत में महर्षि वेदव्यास ने एक ही वाक्य में धर्म के मर्म को स्पष्ट कर दिया है—'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्' अर्थात् जिस व्यवहार को आप अपने लिए अनुचित समझते हैं उसका आचरण दूसरों के लिए मत करो। यही धर्म का सार है।

उचित और अनुचित की मनुस्मृति में कसौटी दी गई है।

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षात् धर्मस्य लक्षणम् ॥२।१२॥

वेद और उसके अनुकूल शास्त्र, सज्जन पुरुषों का आचरण और अपनी आत्मा जिसकी साक्षी दे उन कर्त्तव्य कर्मों को करना ही धर्म है। परन्तु अन्तरात्मा की ध्वनि उन्हे ही सुनाई देती है जिनके मन और बुद्धि पर तमोगुण एव रजोगुण का आवरण चढा हुआ न हो।

धर्म किन्ही अन्धविश्वासों की मान्यता न होकर तर्क की कसौटी पर जो खरी उतरे ऐसी मान्यताओं को कहते हैं।[1] धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य, क्रोध न करना इन दस लक्षणों वाला धर्म संसार के सभी मानवों को ग्राह्य है। जो व्यक्ति धर्म की रक्षा (आचरण) करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है। अधर्माचरण वाला व्यक्ति नष्ट हो जाता है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि आर्य संस्कृति की आधारशिला में धर्म का स्थापन किया है जिस पर अर्थ काम का भवन बनाकर अन्तिम मञ्जिल मोक्ष का मार्ग भी दिखलाया है।

अर्थ—आचार्य चाणक्य ने सुखस्य मूल. धर्मः, धर्मस्य मूलमर्थः अर्थात् सुख का मूल धर्म और धर्म का मूल धन है, यह कहकर धन की विशेषता तो बतला ही दी है। बहुत सारे कार्य धन द्वारा ही सिद्ध होते हैं। शरीर का धारण करना बिना धन के सम्भव नहीं है अत आश्रम मर्यादा के अनुसार गृहस्थ-आश्रम में धन कमाकर उसका उपभोग करने का विधान किया गया है। रोटी, कपडा और मकान ये व्यक्ति की शरीर धारण के लिए मूलभूत आवश्यकतायें हैं। आर्य संस्कृति में इस समस्या को अपनी आवश्यकताये घटाकर एवं त्याग तप का जीवन व्यतीत करके हल किया है। केवल गृहस्थी लोग ही कमाते थे। शेष तीन आश्रमों का निर्वाह भी गृहस्थी के साथ ही चलता था। परन्तु उनकी आवश्यकताये बहुत ही सीमित थीं। क्योंकि यह कभी भी सम्भव नही है कि ससार के सभी मनुष्यों को कोठी, कार और सुखोपभोग के साधन मिल सकें। आज भी यदि सुखोपभोग के अनावश्यक साधन, विलासिता की सामग्री, धूम्रपान, मद्यपान, संग्रह की प्रवृत्ति और शस्त्रास्त्र पर व्यय होने वाला धन तथा शक्ति पूर्वोक्त मूलभूत आवश्यकताओं पर व्यय किए जाये तो सबका उपकार हो सकता है।

काम—काम जीवन का रचनात्मक फव्वारा है। जैसे शरीर को अर्थ की अनिवार्यता है वैसे ही मन को संसार के सुखोपभोगों की लालसा निरन्तर बनी रहती है। शाङ्गंधर में पुरुषों का स्त्रियों में और स्त्रियों का पुरुषों में जो स्वाभाविक आकर्षण है उसे काम कहा है। आर्य सस्कृति में इस विषय पर गम्भीरता से विचार किया है। मनु महाराज की दी गई व्यवस्था बहुत ही समुचित है।

वेदानधीत्य वेदौ वा वेदं वापि यथाक्रमम्।
अविलुप्तब्रह्मचर्यो गृहस्थमाश्रमाविशेत् ॥ मनु० ३।२

अर्थात् चार, तीन दो या कम से कम एक वेद को पढकर ४८, ३६, या २५ वर्ष में युवक और २४, १८ या १६ वर्ष की युवति जिनका ब्रह्मचर्य व्रत खण्डित नही हुआ हो, वे गृहस्थ आश्रम में प्रविष्ट होवे। गृहस्थ आश्रम में सयम सहित जीवन व्यतीत करे। सन्तानोत्पत्ति के लिए ही गृहस्थ धर्म अपनाये। पितृऋण से अनृण होने के लिए एक पुत्र ही पर्याप्त है। इसीलिये पहले पुत्र को धर्मज और शेषों को कामज सन्तान कहा है। परन्तु वेद में दश पुत्र तक उत्पन्न करने की आज्ञा दी गई है। साथ ही बहुत सन्तान वाला व्यक्ति दुःख भोगता है, यह भी कहा है।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

१- सस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते (चरक)।

२ The aim of the culture is perfection and religion helps to attain that perfection (Arnold).

३- सा प्रथमा सस्कृतिर्विश्ववारा। यजु० ७।१४

१- यस्तर्केणानुसन्धत्ते स धर्मं वेद नेतरः। मनु०

सम्पादकीय

हरयाणा में शराबबन्दी अभियान के बढ़ते कदम

बालावास तथा नाहरी के बाद अब झाड़सा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने गत वर्ष गुरुकुल कुरुक्षेत्र में सम्पन्न हुई अपनी अन्तरंग सभा की बैठक मे शराबबन्दी अभियान आरम्भ करने का प्रस्ताव पारित करके हरयाणा की जनता से अनुरोध किया था कि जिन ग्रामों की जनता ने पचायत एक्ट के अनुसार अपने ग्राम से शराब के ठेके बन्द करने के प्रस्ताव हरयाणा सरकार को भेजे थे। परन्तु किसी कारणवश प्रस्ताव की अनदेखी करके सरकार ने उन ग्रामो में शराब के ठेके निलाम कर दिये, वहा शराब जैसी सामाजिक बुराई को समाप्त कराने के लिए ठेको पर शान्तिपूर्वक धरने देने का अनुरोध किया था। सभा के उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों ने प्रात भर में घूम-घूम कर शराब के सेवन के विरुद्ध प्रचार किया। सभा के साप्ताहिक पत्र सर्वहितकारी मे विद्वानो के लेख प्रकाशित किये गये। आर्यसमाजों ने अपने उत्सवों पर शराबबन्दी सम्मेलनों का आयोजन करके शराब के विरुद्ध जनमत तैयार करने का भरसक प्रयत्न किया। ग्राम कवारी जिला हिसार के एक नवयुवक कार्यकर्त्ता श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने ग्राम बालावास मे शराब के ठेके पर सभा के प्रस्तावानुसार धरना देने की योजना बनाई और इस कार्य हेतु निकट के ग्रामो की पचायत बुलाई और ठेके को उठवाने मे सहयोग की माग की। पचायतों ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव करके हरयाणा सरकार को भेजे। जब प्रस्तावो पर ध्यान न दिया था तो पचायतो के प्रतिनिधियों ने शिष्ट मण्डल के रूप मे जिलाधीश से लेकर मुख्यमन्त्री तक भेट करके ठेकों को उठवाने की प्रबल माग की परन्तु शराब के ठेकेदार ने भी अपनी पहुच वहा तक ले जाकर अड़चने डालनी आरम्भ की, परन्तु आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ ने अपने निश्चय के अनुसार बालावास शराब के ठेके के सामने धरना लगा दिया। इस अवसर पर पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा सभा प्रधान प्रो० शेरसिह ने स्वय उपस्थित होकर आर्य जनता को मार्ग दर्शन किया। दूर दूर से आयसमाज के प्रचारक, साधु तथा वानप्रस्थी वहा पहुंचने लगे और शराब की हानियों से ग्राहको को सावधान किया। फलस्वरूप शराब को बिक्री बन्द होने लगी। इस प्रकार विवशहोकर ठेकेदार अपनी जहरीली बोतलो को उठाकर भाग गया। यह शराबबन्दी आन्दोलन की प्रथम विजय हुई।

इसके बाद जिला सोनीपत के दहिया गोत्र के प्रसिद्ध ग्राम नाहरी में भी वहा के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ ने पचायत के सहयोग से शराब के ठेके पर इसी प्रकार शान्तिपूर्वक धरना दिया और पचायत के प्रस्ताव की अवहेलना करने पर न्यायालय का भी दरवाजा खटखटाया दोनो मोर्चों पर यहां भी आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने दूसरी विजय प्राप्त की। नाहरी में ग्राम की नारियो ने भी पुरुषों के साथ बढ़-चढ़ कर धरने को सफल करने मे अनुकरणीय कार्य किया। इस प्रकार पंचायतो का समर्थन मिलने से उत्साहित होकर सभा के नवयुवक विद्वान् उपदेशक ब्रह्मचारी महेन्द्रसिह ने भी ग्राम झाडसा जिला गुडगांव में वहा के नवयुवक सरपच तथा एडवोकेट चौ० खजानसिह तथा उनके सहयोगियो के साथ शराब के ठेके पर धरना देने का कार्यक्रम बनाया। इसमें भी आर्यसमाज के कार्यर्त्ताओ को तीसरी बार सफलता मिली। इसका पूरा विवरण सर्वहितकारी के प्रस्तुत अक के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित किया गया है।

सर्वहितकारी में निरन्तर आर्यसमाजों के नाम एक अपील प्रकाशित की जा रही है। पचायतों द्वारा शराब के ठेके बन्द करवाने हेतु प्रस्ताव का प्रारूप भी छापा जा रहा है। परन्तु खेद है कि इस ओर बहुत कम आर्यसमाजों ने ध्यान देते हुए पचायतो को प्रेरणा करके प्रस्ताव करवाकर हरयाणा सरकार के आयुक्त आबकारी विभाग को भेजे हैं। यह उदासीनता आर्यसमाज के प्रगति के कार्यों में बाधा है। यदि आर्यसमाजे अपने निकट के ग्रामों में जहां शराब के ठेके हैं, वहा प्रस्ताव पास करवाकर ३० सितम्बर तक सरकार को भिजवा देवे तो शराबबन्दी आन्दोलन मे काफी सफलता मिल सकती है। देखना है कि झाड़सा के बाद अब कौन सा ग्राम इस ऐतिहासिक सूचि मे नाम लिखवाने का सौभाग्य प्राप्त करेगा।

सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

पृष्ठ १ का शेष)

की ओर से आर्यसमाज शिवाजी नगर, भीमनगर माडल टाउन न्यू कालोनी जैकमपुरा का योगदान रहा, जिसमे न्यू कालोनी मे श्यामलाल आर्य सभा अन्तरग सदस्य एव जैकमपुरा आर्यसमाज के मन्त्री श्री सत्यपाल आर्य का विशेष योगदान है। मान्य श्री सत्यपाल आर्य के विषय में जितना लिखा जाये उतना ही थोड़ा है क्योकि जब भी पैसे के बारे इनसे बातचीत की गई चाहे वह योग शिविर हो या शराबबन्दी कार्यक्रम सभी मे अग्रणी रहे। प० ईश्वरचन्द्र जी शास्त्री का योगदान भी इस अवसर पर भुलाया नही जा सकता।

ज्योंहि धरना १८-८-८५ को १ बजे श्री खजानसिह जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ तब से ही ठेके पर एक पैसे की भी शराब की बिक्री नहीं हुई। उसी समय भाई निर्भीक जी ने एक पव्वा शराब का खरीद लिया जिसमें देखने पर पाया गया कि बडे बडे कीड़े व मकोड बोतल में पडे सड रहे है। विडम्बना यह है सरकार शराब रूपी जहर को भी शुद्ध नही देना चाहती, उसमें भी मिलावट। तत्पश्चात् उप-आबकारी व कराधान आयुक्त को इस विषय में सूचना देकर बोतल में कीडे मकोडो को दिखाया गया। बाद मे निरीक्षण करने पर पाया कि ठेके की बोतलों का आमतौर से यही हाल है तभी १० सैम्पल निरीक्षण के लिए भर कर ले जाये गये। धरना ११ स्वयसेवको का २४ घण्टे हेतु अनिश्चित काल के लिए प्रारम्भ किया गया था।

धरने की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि धरना अल्प काल अर्थात् २० दिन ही चला इससे प्रमाणित होता है कि कार्यकर्त्ताओं ने सघर्ष को जुझारू रूप दिया। दूसरा सघर्ष वर्ष के मध्य मे उठाना पड़ा जबकि अन्य सभी सघर्ष जो प्रथम अप्रैल या ३१ मार्च को प्रारम्भ करने के बाद भी लम्बे चले। तीसरा ईश्वर कृपा सयोग से हरि तृतीया से सघर्ष को प्रारम्भ कर जन्माष्टमी को समापन समारोह के रूप में समाप्त कर दिया।

मान्य सभा प्रधान प्रो० शेरसिह जी दोनों अवसरो पर उद्घाटन (हरितृतीया) तथा समापन (जन्माष्टमी समारोह) पर उपस्थित रहे और जनता का मार्ग दर्शन किया। जिस योगीराज श्रीकृष्ण ने अन्याय के दमनार्थ भयकर नर विपल्व महाभारत युद्ध की चुनौती को स्वीकार किया। ऐसे महापुरुष को सच्ची श्रद्धाजलि यही हो सकती है कि हम भी सघर्ष का जीवन यापन कर नफाजत व नजाकत को ठोकर मारकर मानवता के पुजारी बने। ध्यान रहे वही राष्ट्र, जाति, देश व सगठन जीवित रहे हैं जिन्होंने तात्कालिक समस्याओं को अनदेखा नहीं किया। यदि आर्यसमाज को जीवित रहना है तो वह अपने पूर्व के जुझारू इतिहास को पढकर शिक्षा ले। कहते है पाकिस्तान बनने से पूर्व झाडसा गाव के अन्दर जब वहा मुसलमान भी रहते थे। अंग्रेज सरकार ने एक गौ काटने का हत्था लगाने का भी प्रयत्न किया था। यह कार्य अंग्रेज सरकार की नीति के अन्तर्गत इसीलिए आता था ताकि हिन्दू और मुसलमान आपस मे लडते रहे तथा आजादी के विचारो को कभी सोच भी न सके। उसी समय गाव वालो ने यह फैसला किया था कि चाहे हमारा बच्चा बच्चा कट जावे लेकिन हम गाव मे गौ कशी का जघन्य अपराध अपनी आखो के सामने बर्दाश्त नही कर सकते। दूसरी तरफ यह गांव ३६० गाव का चौधरी होने के नाते भी सघर्ष मे कूदने से हिचकचाता नही है इसीलिए सरकार को वहा से गौ हत्या हटाना पडा। यह इहिहास की दृष्टि से इस गाव व इलाके की प्रथम विजय थीं। दूसरी विजय अभी अभी आपके सामने इस पापिन पिशाचिनी शराब के ठेके को उठवाने के बाद हुई है। आखिर झाड़सा गाव ने शराब का ठेका उठवाकर अपना इतिहास दोहरा ही दिया। अब देखते है तीसरा सघर्ष इतिहास के पन्नों पर कब आता है।

ब्र० महेन्द्र शास्त्री
उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

भयावह अपवाद

(श्री भीमसैन गुडगांवा)

हम प्राय: प्रात साय शान्ति की रट लगाते हैं। वह है जो अशान्ति का मठ बनाते है। कई है जो धैर्य पूर्वक वातावरण का प्रयास करते है, पर ऐसे भी है कि घल्लुघारा सप्ताह मनाकर बीते हुए सकटों की स्मृति दुहराते है। मानव जहा शान्त स्वभाव है वहा क्रान्ति का नामलेवा अपना जलवा दिखाते हैं। युद्ध शायद सन्तोष का पलडा भारी रखने की खातिर पीछे नही रहना चाहता। इसी आड़ में ईसा पूर्व ३६०० वर्ष से लेकर आज तक मानव जाति केवल २९२ वर्ष ही शान्ति से रह सकी जबकि इस बीच १४५१३ छोटे बडे युद्ध लडे गये, जिनमें लगभग तीन अरब व्यक्तियों की आहुति दी गई। मालमताह का तो क्या कहना विचार है। एक के आगे बीस शून्य शून्य(......) व्यक्तियों से हाथ धोना पड़ा, यू तो युद्ध से सब डरते हैं। पर युद्ध हो जाने पर विश्व इतिहास भरा पड़ा है। रामायण महाभारत इत्यादि इत्यादि ने धरती को खूब रंगा, इतना तक भी अनुमान है कि इन युद्धों में खोई सम्पत्ति यदि गवाई न होती तो सारी पृथ्वी १६० किलोमीटर चौड़ी और दस मीटर मोटी सोने की प्लेट से ढांप सकते। गत ३० वर्षों में ससार भर में ११६ युद्ध हुए। ईराक ईरान का युद्ध लगभग ५ वर्षों से चल रहा है। शान्ति के सन्देश सब देते हैं। फिर भी करोड़ों की हानि प्रतिदिन होती जा रही है। बीते हुए ३० वर्षों में ६६ क्षेत्रों में जो लड़ाई लड़ी गई उनमें से ८१ देशों की सेनाओं ने भाग लिया जहां दो करोड़ जानें गई तथा लगभग ६०० अरब रुपए का माल (तदनुसार कादम्बनी ६/८५) इतनी हानि, चमकते आंकड़े फिर भी इस समय ससार में प्रति मिनट एक करोड़ तीस लाख रुपये हथियारों के बनाने में खर्च होते हैं। जिसका अर्थ यह है कि दोनों पक्षवादी प्रतिवादी अपने को सुसज्जित करने में भरसक प्रयत्न कर रहे हैं और कुछ न सही, युद्ध बन्द करने का प्रचार भी तो दाम मांगता है। इन सरकारी कर्मचारियों का हर्जा-खर्चा विचार में लाने का है। इस समय ससार भर में २ करोड २५ लाख लोग सेना में लग रहे है। एक से बढ़कर यंत्र विमान, जल के अन्दर पानी वाली किश्तिया तबाह करने वाले साधन, राडार, नया से नया निराला सामान तैयार है कि कहीं विपति आये तो पिछड़ना न पड़े। फलस्वरूप तनाव, रक्षा के साधन, भयमुक्त होने के प्रयास भिन्न है, युद्ध की ललकार तो बड़ी है, पर अमरीकी लोग जो अपने को पूरा तैयार मानते है रात में अपने घर से दूर ४५ प्रतिशित अकेले एक मील नही जा पाते।

गठजोड़ एक स्वतन्त्र कार्यालय है जासूसी और गुप्त समाचार हाथ, मार लेना और गर्ज की कि अपने को सम्पन्न करने के लिए नया से नया विचार बनाया जा रहा है। यह तो युद्ध का एक रूप हुआ। अब दूसरा रूख भी देखिये सैन्य प्रवृत्ति की वजह से ३४ प्रतिशत बच्चे (अमरीकन) कौटुम्बिम व्यभिचार के शिकार हो रहे है, जिनमें ६० % लड़कियां हैं। वियतनाम युद्ध की समाप्ति पर ७० हजार वियतनाम स्त्रिया अमेरिकी सैनिकों के हवाले हुई। इस सारे वातावरण का परिणाम देशों के पतन व उत्थान पर विचारणीय है। रुकना तो दूर रहा अब तीसरी जग के लिए प्रकाश को भूमि स्थल बनाने की तैयारी भी जारी हो चुकी है। दो चार सालों में एक नया मोड़ लेने का आरम्भ है। इस पर भी कहे सब यही जा रहे हैं कि हम युद्ध नही करना चाहते, आश्वासन यह भी कि हम केवल अपने को सुरक्षित रखने के लिए पाबन्द हो रहे हैं। पर पाखण्ड मे भी सब पाबन्द हुआ। जिन दिनों हिटलर की धूम चली थी सब सोचते थे कि हिटलर ससार भर में छा जाएगा। उसने अपनी तरफ से कोई ढग सोचने के बाहर नही रखा था। इसे सब महाराक्षस भी मानते थे। पर उसके दबदबे का क्या कहना। परमाणु बम, वायु में जहरीली गैस, विस्फोटिक सामान हमारी बदनीयती की बोलती तस्वीर ले रहे है। योगीराज अरविन्द के समय से युद्ध के आतक अपना बोल बाला करते आए, पर एक दूसरे की ताक में, एक दूसरे से नीच, दूरदर्शी तथा सम्पन्न होने का दावा करने से सफलता को हाथ लगाता है। इसकी ओर भी तस्वीर है कि विश्व की आधी जनसख्या अथवा १०० करोड लोगो की वार्षिक आय ५००० रुपए से कम है तथा ४५ करोड़ जन कुपोषण के शिकार हैं। इधर ५० हजार छोटे बड़े परमाणु अस्त्र, उधर कुपोषण, इधर दौड़ धूप, उधर गोल माल, दम्भ व दर्प का नगा नाच मचा रहे हैं। इस तरह सब मिल मिलाकर मानवता को दाव लगाए बैठे हैं। फिर भी हम आस्तिक उस महती कृपा से विश्वास उठा नहीं सकते। यदि आतंकवादी हिटलर का युग टल गया तो यह भी संकट टल सकता है। अगर हम मानवता में टिके रहें। यह प्रभु कृपा का बड़ा वरदान है।

सोहना में वेदप्रचार सप्ताह सम्पन्न

सोहना में वेदप्रचार सप्ताह दिनांक १७-८-८५ से २३-८-८५ तक बड़े उत्साह पूर्वक मनाया गया यह कार्यक्रम नगरों के भिन्न भिन्न स्थानों पर होता रहा। इस समारोह में स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती तथा पण्डित नरदेव जी पधारे जिन्होंने प्रतिदिन नये नये विषयों पर वेद के आधार पर अपने विचार प्रस्तुत किये। श्रोताओं की संख्या दिन प्रतिदिन बढती गई। इसका जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

नवाबसिंह जी की सहायार्थ की गई अपील पर सोहना आर्यसमाज की ओर से ५१ रु० और महिला आर्यसमाज की ओर से १२१ रु० प्राप्त हुए जो कि मनोआर्डर द्वारा भेज रहे हैं।

हरयाणा सरकार को अपने दावे पेश करने का निर्देश

चण्डीगढ ६ सितम्बर (संघी) मैथ्यू आयोग ने हरयाणा सरकार को निर्देश दिया है कि वह चण्डीगढ के बदले में पंजाब के हिन्दी भाषी गांव पर अपने दावे १४ सितम्बर तक पेश करे।

यह निर्देश सुप्रीम कोर्ट के भूतपूर्व न्यायधीश श्री के० के० मैथ्यू ने दिल्ली में ६ सितम्बर की हुई अपनी पहली बैठक में जारी किया। केवल आधा घण्टे तक चली उक्त बैठक मे श्री मैथ्यू ने पंजाब को हरयाणा के दावों पर अपना जबाब २४ सितम्बर तक देने को कहा। यह भी फैसला किया गया कि दावों के पक्ष एवं विरोध में दलीलें २३ सितम्बर से शुरू होगी। पजाब सरकार अपना पक्ष पेश करने के लिए तीन प्रमुख वकीलों की सेवाए ले रही है। इनमें सुप्रीमकोर्ट के श्री सोली सोराबजी, श्री एम० आर० अग्निहोत्री तथा पंजाब व हरयाणा हाईकोर्ट के श्री जो० एस० ग्रेवाल शामिल है।

हरयाणा सरकार ने अपना केस लड़ने के लिए सुप्रीमकोर्ट के वकीलों श्री वेणु गोपालन व श्री कपिल सिब्बल, पजाब व हरयाणा हाईकोर्ट के श्री आनन्द स्वरूप तथा श्री अतुल जैन की सेवाएं ली हैं। श्री अतुल जैन पजाब व हरयाणा होईकोर्ट के मुख्य न्यायधीश श्री पी० सी० जैन के बेटे हैं।

परिवार नियोजन

थोड़े बच्चे पैदा करके ऐसी मौज उड़ाई।
दशा बुरी होगई दोनों की रोते लोग लुगाई॥
हिजडा पुरुष हुआ तभी से हिजड़ी बनी लुगाई।
माथा पीटकर दोनों रोते जबसे नस कटवाई॥
काया का कंकाल हो गया हड्डी बाहर आई।
उठते बैठते सास फूलती आए रोज जम्भाई॥
दुर्घटना में लडका मर जा लड़की हुई पराई।
बूढा-बुढिया बैठे देखे खावे माल जमाई॥
यौवन मे ही आया बुढ़ापा पानी कौन पिलाये।
खाना-पीना होगया दूभर जीवन कौन जिलाये॥
सोचो, समझो और विचारो शासन कौन करेगा?
चार शादियां करने वाला शासक यहां बनेगा॥
लोकतन्त्र और प्रजातन्त्र का नाम न लेवा होगा।
'जीया' जैसा फौजी ही भारत का शासक होगा॥
'हरि' ने अपना फर्ज निभाया आगे जाने भाई।
भूत-भविष्यत्-वर्तमान का समय बड़ा दुखदाई॥

वेद एक विज्ञान है

(रवीन्द्रलाल ,बिस्मिल' गुडगांव)

वक्त का उद्‌घोष है वेद एक विज्ञान है। दुर्भाग्य है उन लोगों का जो इस तथ्य से अन्जान है। 'सर्वभूतेषु आत्मवत्' वेद का ही गान है। जन्म से मरण तक का भरा इसमें सम्पूर्ण ज्ञान है। ईश्वर ने प्रकट किया मानवजाति के लिए, माध्यम बने जो ऋषिगण उनका इंसानियत पर अनतुला अहसान है सकीर्णवाद, साम्प्रदायिकता से दूर है श्रुति।

मनुष्यता के गुणों की ये सर्वज्ञान सर्वोत्तम खान है। किसान है राजाओं का राजा प्रथम वेद ने घोषित किया, मेहनतकश है मालिक दुनियाँ का इस विचार को वेद ने घोषित किया, इसलिये तो वेद सम्पूर्ण है, महान है। दुनिया आई और चली गई और भी आती रहेगी, जो वाणी कायम रहेगी सदा दब नहीं सकती किसी से भी किसी युग में, वेद वो बुलन्द जबान है। वेद पर चलो ओ! वेद के विचारको ओ! वेद के प्रचारको दिले 'बिस्मिल' करता अब ये शक्तिशाली आह्वान है। वेद के रास्ते पर को चलकर तो देखे, फिर देखो हर बडी से बडी मुश्किल भी लगती कितनी आसान है। वेद प्रचार तो किया, आचरण नहीं लिया, अन्यायी राजा का साथ दिया, यही बात तो है जिससे नकली आर्य समाजी ढोंगी है शैतान है। अन्याय को खत्म कर डालेगे जिसके प्रकाश बाण 'बिस्मिल' वेद वो ही कमान है। कलियुग में विरजानन्द के शिष्य दयानन्द ने वेदों को प्रकाशित किया।

इस सच से वाकिफ मन सकल जहान है। वेद के रास्ते से ही भारत का चक्रवर्ती राज्य हो सका, इस बात के गवाह अब जमीन आसमान हैं। वेद मानवजाति की अमिट, अमर पहचान है। वैदिक साम्यवाद ही जग का कल्याण करेगा अब दिले बिस्मिल का कुछ ऐसा ही ध्यान है।

ऋषि सन्देश

डा० देशराज खीरबांट, इन्दिरा कालोनी, रोहतक

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद्भद्रं तन्नआसुव॥

पदार्थ—हे (देव) उत्तम गुणकर्मस्वभावयुक्त (सविता) उत्तम गुण कर्म स्वभावो में प्रेरणा देने वाले परमेश्वर! आप हमारे (विश्वानि) सब दुरितानि) दुष्ट आचरण वा दुःखों को (परासुव) दूर कीजिए और (यत्) जो (भद्रम्) कल्याणकारी धर्मयुक्त आचरण वा सुख है (तत्) उसको (न) हमारे लिए (आसुव) अच्छे प्रकार उत्पन्न कीजिए।

ईश्वर मनुष्यों के दुष्ट आचरण और दुःखों को दूर कर देता है, परन्तु कब करता है जब मनुष्य स्वय अपनी समर्थता के साथ प्रयत्न करता है और फिर भगवान् से प्रार्थना करता है।

तीन कारण हैं जिनसे मनुष्य बुराइयों से दूर रह सकता है।

१. लोकलाज, २ आत्मग्लानि, ३ परमात्मा का डर।

लोक लाज—जब मनुष्य विचार करने लग जाता है कि यदि वह कोई बुरा कार्य करेगा और उसकी मान हानि होगी तो वह बुराई से बच जाता है।

आत्मग्लानि—जब मनुष्य यह सोचता है कि हिंसा, स्तेय, असत्य, ब्रह्मचर्य और परिग्रह से आत्मग्लानि होगी, आत्मविश्वास जाता रहता है और आत्मबल भी नहीं रहता तो वह बुराई से पीछे हट जाता है।

परमात्मा का डर—जब मनुष्य परमात्मा को सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी जान लेता है और वह जानता है कि परमात्मा हमारी बुराइयों को देख रहा है, और हमारे मनों के सकल्पों, विकल्पों को जानता है तो वह बुरी बात को सोचना बन्द कर देगा। जब मन में बुरे विचार नही रहेगे तो बुरे कार्य करने का प्रश्न ही नही उठता।

अतः परमात्मा से प्रार्थना करने के साथ स्वय भी प्रयत्न करना चाहिये और उसके लिए लोकलाज, आत्मग्लानि और प्रभु का भय हमेशा याद रखना चाहिए, तब मनुष्य बुराई से दूर रहेगा और सुख स्वयं प्राप्त हो जावेगा।

(पृष्ठ २ का शेष)

इसका समाधान सम्भवतः यही है कि यदि राष्ट्र को आवश्यकता है और स्त्री पुरुष का शारीरिक स्वास्थ्य समुन्नत तथा सन्तान पालन पोषण के लिए समुचित साधन उपलब्ध हैं तो आपद् धर्म में दश सन्तान तक उत्पन्न करके राष्ट्र को दी जा सकती हैं। जैसे कि द्वितीय विश्व महायुद्ध में योरोपीय देशों के लाखो वीर पुरुषों के हताहत होने के पश्चात् वहा की सरकारों ने स्त्री पुरुषों को अधिक सन्तान उत्पन्न करने के लिए प्रेरित किया। रूस में किसी स्त्री की दश सन्तान जीवित रहने पर आज भी उसे राजमाता के पद से सम्मानित किया जाता है। परन्तु दुर्बल व्यक्तियों को सन्तानोत्पत्ति का अधिकार नही है। दुर्बल सन्तति राष्ट्र के लिए भारस्वरूप है। कौन पुरुष अधिक सन्तान उत्पन्न करने का अधिकारी है इसके लिए भी शारीरिक शक्ति का परिमाण दिया गया है। यदि घोडे के समान ३ योजन=१२ कोष=२४ मील या ५ योजन=४० मील दौडते हुए जाकर वापिस आ सके तो वह राष्ट्र को आवश्यकता होने पर अधिक सन्तान बनाकर दे सकता है।[1]

परन्तु ऋषियों ने चेतावनी देते हुए कहा है कि भोग भोगने से उनसे कभी छुटकारा नही पाया जा सकता। जैसे कि अग्नि में घृत डालने से वह और भी प्रज्वलित हो जाती है।[2] इसी भांति भोग भोगने से इन्द्रियां और भी चपल तथा आसक्त हो जाती हैं। विषयों में अधिक आसक्त मनुष्य रोगी होकर मोक्ष पथ का पथिक नही बन सकता[3] अतः ज्ञानपूर्वक भोगों से निवृत्त होने का प्रयत्न ही श्रेयस्कर है।

मोक्ष - आर्य संस्कृति में मनुष्य जीवन का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष ही माना गया है। इसके साथ ही कर्मफल तथा पुनर्जन्म का सिद्धान्त भी सर्वमान्य है। कोई भी व्यक्ति क्षणभर के लिए भी कर्म किए बिना नहीं रह सकता। जैसा कर्म किया जायेगा उसका वैसा ही फल भी मिलेगा। यदि बबूल का पेड़ बोया जाये तो उससे कांटे ही प्राप्त होंगे, आम नहीं। किया हुआ कर्म कर्त्ता को ही भोगना पड़ता है उसे क्षमा नहीं किया जा सकता। अतः अच्छे कर्म करते हुए पश्चात् उनसे भी विरक्त होकर निष्काम कर्मों के साथ यम नियमादि योगांङ्गों की सीढ़ी का आलम्बन लेकर मोक्ष रूपी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम में प्रयत्न करने का विधान किया है विना मुक्ति के दुःखों से अत्यन्त छुटकारा सम्भव नही है।

ससार का इतिहास इस बात का साक्षी है कि किसी समय सस्कृति और सभ्यता में यूनान, मिश्र, रोम इत्यादि देश बढे चढे थे, किन्तु इस्लाम की प्रचण्ड आंधी ने उन्हें सदा के लिए धराशायी कर दिया। वह आंधी भारत देश को पददलित करती हुई इधर भी आई। परन्तु इस देश की सास्कृतिक भूमि इतनी सुदृढ एव सुगठित थी कि यह आधी उसका कुछ भी नही बिगाड सकी।

सदियो की दासता में भी जब हमारा अस्तित्व नही मिट सका तो इसके पीछे सस्कृति की सुदृढ आधार-शिला ही कारण है। चारो वेद, छः दर्शन, स्मृतिया, ब्राह्मणग्रन्थ, रामायण, महाभारत, गीता उपनिषद् आदि आर्य सस्कृति की अमूल्य निधि हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जीवन, योगेश्वर श्रीकृष्ण जी का गीतोपदेश आज भी कोटि कोटि मानवों का मार्गदर्शन करने के लिए प्रकाश स्तम्भ है। जहा अन्य सस्कृतियों के अनुयायी सत्ता प्राप्ति के लिए पुत्र, भाई एव पिता का भी वध करते रहे वहां राजसिंहासन को गेंद के समान राम और भरत दोनों ठुकराते हैं यह उदाहरण अन्यत्र ढूढे पर भी नही मिलेगा। परस्त्री को माता के समान समझने वाले वीर लक्ष्मण, दुर्गादास, शिवाजी वे नररत्न हैं जिनकी छवि कभी धूमिल नही हो सकती। ब्रह्मचर्य व्रत के धनी स्वामी शङ्कराचार्य, महर्षि दयानन्द, सीता जैसी पतिव्रत-धर्मपरायण। देवी आदि ऐसे उदाहरण है कि जिन पर मानवता गर्व कर सकती है। ये महामानव आर्य सस्कृति की छत्र-छाया मे ही पले है।

१—यद् धावसि त्रियोजन पञ्चयोजनमाश्विनम्।
ततस्त्व पुनरायासि पुत्राणा नो असः पिता॥ अथर्व० ६।१३१।३

२—न जातु काम कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते॥ मनु० २।९४

३—भोगे रोगभयम्

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन

आर्यसमाजो के अधिकारियो से निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित शराबबन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए जिन ग्रामों में शराब के ठेके खुले हुए हैं, उन ग्राम पंचायतों के सरपचो तथा पंचो को प्रेरणा करके प्रस्ताव पास करवाने का यत्न करें कि शराब का ठेका बन्द किया जाये। प्रस्ताव का प्रारूप निम्न प्रकार प्रकाशित किया जा रहा है।

सेवा में,

माननीय आयुक्त महोदय

आबकारी एवं कराधान, हरयाणा, सेक्टर-१७ चण्डीगढ

निवेदन है कि हमारे ग्राम............जिला............पंचायत ने अपनी बैठक दिनाक.........में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है—

यह पचायत शराब पीने की बढती हुई प्रवृत्ति को ग्राम्य जीवन के लिये बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगो के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गाव में अनाचार, अशान्ति और अपराध फलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार को नशाबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द कर दी जाए और भविष्य मे कदापि भी यहा शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाए ताकि उक्त बुराइयो से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठाने की कृपा करेंगे।

सधन्यवाद!

विनीत

ता० ....

हस्ताक्षर ग्राम पंचायत के सदस्य

प्रतिलिपि सेवा में—

१- प्रधानमन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली।

२- मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

नोट—जिन पचायतों के प्रस्ताव ३० सितम्बर ८५ तक सरकार के पास पहुँच जावेंगे, पचायत एक्ट के अनुसार उन ग्रामों में शराब के ठेके नीलाम नहीं हो सकते।

अत: आर्यसमाज अपने निकट के ग्रामों मे जहां शराब के ठेके खुले हैं, वहां की पंचायतो से प्रस्ताव पास करवाकर १० सितम्बर तक भिजवाने का यत्न करे।

प्रो० शेरसिंह
सभा प्रधान

शोक समाचार

मास्टर त्रिलोकचन्द जी (सुसर श्री अजीतकुमार आर्य, मन्त्री आर्य वीर दल हरयाणा, पलवल) का निधन १४ अगस्त रात्रि अचानक हालत बिगड़ जाने से होगया। मास्टर जी आर्यसमाज शान्तिनगर एव ऋषि नगर से सम्बद्ध रहे है तथा उनका पूरा योगदान इन संस्थाओ को मिलता रहा है।

१८-८-८५ को आर्यसमाज सोनीपत की ओर से उन्हे भावभीनी श्रद्धांजलि भी दी गई। वह अपने पीछे एक लड़का, तीन लड़किया एवं पत्नी को छोड़ गये हैं।

मन्त्री आर्यसमाज

२४-८-८५ के दिन आर्मी में बहादुरी प्राप्त करने वा आर्य समाज मन्दिर कोसली के पूर्व निरीक्षक सूबेदार मेजर लालाराम आर्य का निधन हो गया। उनकी आयु ७६ वर्ष थी।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्माओं को सद्गति तथा असह्य वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

अशोककुमार आर्य
प्रधान आर्यसमाज कोसली (रोहतक)

हरयाणा का पक्ष तैयार करने हेतु

प्रो० शेरसिंह का टोहाना, सिरसा तथा डबवाली का दौरा

(कार्यालय सवाददाता द्वारा)

हरयाणा रक्षा वाहिनी एव आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अध्यक्ष प्रो० शेरसिह ने श्री के० के० मैथ्यू आयोग के समक्ष हरयाणा का केस तैयार करने के लिए ८ सितम्बर रविवार को आर्यसमाज टोहाना जिला हिसार पधारे। वहा पजाब के सीमावर्ती २४ ग्रामों के पंच तथा सरपचों के अतिरिक्त प्रमुख कार्यकर्त्ताओ ने एक बैठक मे सर्वसम्मति से प्रस्ताव किया कि अकाली पजाबी भाषी क्षेत्र होने का नारा देकर जिन ग्रामों को पजाब मे सम्मिलित करने का दावा कर रहे है, उसका हम विरोध करते हैं और पजाब मे जो हिन्दी भाषी ग्राम रह गये थे, उन्हे हरयाणा में सम्मिलित करने का मैथ्यू आयोग से अनुरोध करते है। माननीय प्रो० शेरसिह ने उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को इस अवसर पर सम्बोधित करते हुए हरयाणा के हितो की रक्षार्थ एक जुट रहने की अपील की।

६ सितम्बर को प्रो० साहब सारा दिन सिरसा रहे और सिरसा तथा निकट के ग्रामों के कार्यकर्त्ताओ से सम्पर्क किया और सभा द्वारा संचालित आर्य सस्थाओं का निरीक्षण किया। १० सितम्बर को डबवाली मे प्रो० शेरसिह ने हरयाणा सरकार द्वारा नियुक्त उपसमिति की बैठक में भाग लिया और अबोहर फाजिल्का क्षेत्र मे पधारे हुए कार्यकर्त्ताओं को विश्वास दिलाया कि इस हिन्दी भाषी क्षेत्र को हरयाणा में मिलाने के लिए आयोग को ज्ञापन दिया जायेगा।

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज बाबरा मोहल्ला रोहतक

प्रधान—मा० दीपचन्द आर्य, उपप्रधान—श्री मुलखराज आर्य, मन्त्री—केसरदास आर्य, उपमन्त्री—श्री आनन्दसिह, कोषाध्यक्ष—श्री दलीपसिह, पुस्तकाध्यक्ष—महेन्द्रपाल सिंह

अन्तरग सदस्य—

श्री राममेहर एडवोकेट, रामकुमार आर्य, रूपचन्द चावला, श्री प्रेमचन्द शास्त्री, श्री रामदयाल, श्री किशनचन्द, प्रेमप्रकाश विज, श्री मदनलाल आर्य

औषधालय समिति—श्री केसरदास, अर्जुनदास, केन्द्रीय आर्य सभा के सदस्य—श्री केसरदास, श्री मदनलाल

आर्यसमाज माडल टाउन रोहतक

प्रधान—श्री एस० डी० चावला सेवानिवृत्त इन्जिनियर, उपप्रधान अनन्तराम शास्त्री, मन्त्री—रामचन्द बत्रा, उपमन्त्री—श्री रामलुभाया कोषाध्यक्ष—हसराज खुराना, पुस्तकाध्यक्ष-श्री लक्ष्मणदास

आर्यसमाज बूबका जिला कुरुक्षेत्र

प्रधान—चौ० समासिह आर्य, उपप्रधान—महाशय रामकिशन जी भजनोपदेशक, मन्त्री—नाथीराम आर्य, कोषाध्यक्ष—धर्मपाल जी आर्य उपमन्त्री—ताराचन्द आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—शेरसिह, प्रचारमन्त्री—म० आत्माराम आर्य

आर्यसमाज फतेहपुर जिला कुरुक्षेत्र

प्रधान—चौ० युधिष्ठिरपाल भूतपूर्व प्रबन्धक मिल्ट्री फार्म, उपप्रधान-चौ० ओमप्रकाश भूतपूर्व थानेदार, मा० इन्द्रसिंह, मन्त्री—प्रा० धर्मदेव विद्यार्थी, उपमन्त्री—सुभाषचन्द एडवोकेट, कोषाध्यक्ष—मास्टर बृज भूषण, पुस्तकाध्यक्ष-राजकुमार एल० आई० सी० लेखानिरीक्षक—मास्टर रामेश्वर दयाल

आर्य वीर दल फतेहपुर जिला कुरुक्षेत्र

अधिष्ठाता-सुभाषचन्द्र एडवोकेट, नगर-नायक—दिलबाग आर्य, मन्त्री—प्रेमकुमार आर्य, शाखानायक—जोगेन्द्र आर्य

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

ईसाई युवती ने वैदिक धर्म स्वीकारा

ग्वालियर २२ अगस्त। विगत दिवस स्थानीय आर्यसमाज मन्दिर चित्रगुप्तगज में २४ वर्षीय ईसाई युवती कु० मोनिका माईकल, भोपाल ने स्वेच्छा से 'वैदिक धर्म' में प्रवेश किया। शुद्धि संस्कार आर्यसमाज के पुरोहित श्री मंगलदेव शास्त्री ने कराया। शुद्धि के बाद मोनिका का नाम 'मेनका' रखा गया और श्री राकेश सक्सेना के साथ उसका विवाह संस्कार भी सम्पन्न हुआ। सस्था के मन्त्री किशोरीलाल गोतम के सद्प्रयत्नों से यह शुद्धि सस्कार हुआ। इस अवसर पर सस्था की प्रधान श्रीमती उमा वरतरिया एवं अन्य उपस्थित सदस्यो ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया।

किशोरीलाल गोतम
मन्त्री आर्यसमाज, चित्रगुप्तगज, ग्वालियर

रक्षा बन्धन पर्व

दिनांक ३०-८-८५ को आर्यसमाज कवारी की तरफ से बडे हर्ष व उल्लास के साथ मनाया गया। प्रधान अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी के घर पर प्रात ७ बजे हवन किया गया। यज्ञ में काफी सख्या मे आर्य बन्धुओ व बच्चों ने भाग लिया। प्रधान जी तथा मा० जयपालसिंह जी ने रक्षा बन्धन किसे कहते है और क्यो मनाया जाता है आदि पर प्रकाश डाला। महाशय मनसाराम व महाशय रिसालसिंह के शिक्षाप्रद भजन हुए।

मन्त्री आर्यसमाज कवारी

आर्यवीर दल की शाखायें प्रारम्भ

गुरुकुल कालवा जिला जीन्द में १५ अगस्त से ३० अगस्त तक सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया जिसके ब्रह्मा सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उप-सचालक आचार्य देवव्रत जी थे। आचार्य जी ने इसी दौरान २५ अगस्त को हरयाणा प्रान्तीय आर्य वीर दल के बौद्धिकाध्यक्ष को बुलाकर कालवा में आर्यवीर दल को शाखाये विधिवत् स्थापित की। गुरुकुल के ब्रह्मचारी गुरुकुल की शाखाये चलायेगे और गांव कालवा की शाखा के निम्नलिखित अधिकारी नियुक्त किये गये—मन्त्री—श्री सत्यवान् आर्य, उपमन्त्री—दलवीर आर्य, शाखा सचालक-अजीत आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—खजानसिह आर्य। तपोनिष्ठ आचार्य श्री बलदेव जी का मार्गदर्शन तथा आचार्य देवव्रत जी और स्वामी योगानद जी की प्रेरणा तथा स्थानीय अधिकारियो का सहयोग सराहनीय रहा।

प्रो० ओमकुमार आर्य
बौद्धिकाध्यक्ष हरयाणा प्रान्तीय आर्यवीर दल

दादरी क्षेत्र में वैदिक धर्म प्रचार

आर्यजगत् को यह जानकर हर्ष होगा कि आर्यजगत् के उत्साही नवयुवक ब्रह्मचारी संजयदेव जी ने दादरी (भिवानी) क्षेत्र मे आर्य समाज एवं वैदिक धर्म प्रचार की धूम मचा रखी है। ध्यान रहे कि जून मास में ब्रह्मचारी जी ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। इसी प्रकार श्रावणी पर्व (३० अगस्त) के अवसर पर ग्राम दातौली तथा चिडिया में यज्ञों एवं वेदप्रचार दिवस का आयोजन ब्रह्मचारी जी की प्रेरणा से किया गया। इस अवसर पर ग्राम के अनेक नर-नारियों ने ने लिया तथा दुर्व्यसनों को छोड़ने की प्रतिज्ञा की। इसी अवसर पर आर्यसमाज दातौली की विधिवत् स्थापना की गई। ब्रह्मचारी जी की सम्मति से इसके पदाधिकारी निम्नलिखित चुने गए-

१. सरक्षक व निर्देशक—महाशय जगराम आर्य
२ प्रधान—महाशय दलीपसिंह आर्य
३. उपप्रधान—मा० दयानन्द एम० ए०
४. मन्त्री—महाशय बलवीरसिंह आर्य सरपच
५. प्रचारमन्त्री एवं कोषाध्यक्ष—मा० स्वरूपसिह आर्य

मन्त्री आर्यसमाज दातौली

आर्यसमाज मन्दिर बालावास का निर्माण

आर्यजगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गत वर्ष ग्राम बालावास (हिसार) में ठेका शराब के विरुद्ध आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के संरक्षण में शराबबन्दी आन्दोलन के रूप मे छ: मास तक एक प्रबल सघर्ष चलता रहा। हरयाणा के कोने कोने से आर्य सन्यासी विद्वान, उपदेशक एवं प्रचारक लोग जिस स्थल पर अपने प्रवचन व भाषणों के द्वारा सुरापान आदि दुर्व्यसनों के परित्याग का उद्घोष करते रहे, उसी पवित्र स्थल पर १४ अगस्त १९८५ से विधिवत् आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण का कार्य आरम्भ हो गया है। ग्राम पंचायत बालावास ने मन्दिर के लिए १ एकड भूमि दान में दी है। निर्माण कार्य के उपरान्त दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय के माध्यम से शिक्षित नवयुवकों को वेद-वेदांग, आर्य सिद्धान्त, योग, आसन, व्यायाम, ब्रह्मचर्य देशभक्ति और भाषण कला आदि का उच्चकोटि का शिक्षण दिया जायेगा जिससे वे देश-देशान्तरों मे वैदिक धर्म का प्रचार कर सके। अत इस पवित्र कार्य के लिए आर्यसमाजी बहन-भाई तथा सभी आर्य अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग प्रदान कर यश एवं पुण्य के भागी बने। ५०० रु० से अधिक दान देने वाले महानुभाव तथा संस्थाओं का नाम उनकी स्मृति के लिए पत्थर अकित किया जाएगा।

अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
अध्यक्ष आर्यसमाज भवन निर्माण समिति बालावास
पो० कवारी जिला हिसार

जन्म दिवस पर यज्ञ

दिनाक १५ अगस्त को दयानन्द आश्रम नलवा (हिसार) मे डा० सुदर्शनदेव आचार्य के पुत्र ब्र० ओमदर्शन के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर स्वामी शीलनाथ (वैदिक योग आश्रम), श्री आर० के० चोपडा (रा० महाविद्यालय नलवा), श्री भगवाना राम आर्य (अधीक्षक आई० टी० आई० नलवा), श्री कृष्णलाल रगा (रा० महाविद्यालय नलवा) तथा श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने पधारकर बालक को आशीर्वाद प्रदान किया। यज्ञ के पश्चात् अभ्यागतजनों के लिए प्रीतिभोज का आयोजन किया गया। १० रुपये आर्यसमाज मन्दिर बालावास तथा १० रुपये वैदिक योग आश्रम नलवा को दान दिया। आयोजन प्रभावशाली रहा।

ब्रह्मचारी सजयदेव 'क्रान्तिकारी'
भारतीय नवयुवक सभा
दयानन्द आश्रम नलवा जिला हिसार

नामकरण संस्कार

दिनांक २३ अगस्त को आर्यजगत् के उत्साही नवयुवक ब्रह्मचारी संजयदेव ने श्री भूपसिंह ग्राम दातौली (भिवानी) के घर बच्चे का नामकरण सस्कार किया। ब्रह्मचारी जी ने अपने व्याख्यान में यह बताया कि सस्कारो का मानव जीवन मे विशेष महत्त्व है। आस-पास के नरनारियो ने पधार कर बच्चे को आशीर्वाद दिया।

बलवीरसिंह आर्य सरपच
मन्त्री आर्यसमाज दातौली पो० चिडिया (भिवानी)

आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बधित कुछ आर्यसमाजों के लिए पुरोहितों की आवश्यकता है। सस्कार आदि कार्यो में निपुण तथा वैदिक सिद्धान्तों के विद्वान् अपनी योग्यता तथा अनुभव के प्रमाण पत्रो सहित अपने आवेदन पत्र सभा को भेजने का कष्ट करे।

सभा के ऋषि लगर दयानन्द मठ रोहतक के लिए एक पाचक (रसोइया) की तुरन्त आवश्यकता है। अत इच्छुक पाचक कार्यालय पहुचकर सम्पर्क करे।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

वैदिक यति मण्डल की आवश्यक बैठक महर्षि दयानन्द मठ दीनानगर में सम्पन्न

दिनाक २४-२५ अगस्त को वैदिक यति मण्डल की विशेष बैठक पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, आचार्य गुरुकुल झज्जर एव महात्मा देवानन्द जी योगी (महात्मा दयानन्द जी) तथा युवा ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी के तत्वाधान मे नियोजित होकर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समस्याओ पर विचार विमर्श किया गया, वैदिक यतिमण्डल के सस्थापक त्यागमूर्ति वीतराग, वयोवृद्ध पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती महाराज के अभिनन्दन उपलक्ष्य मे आर्यजगत् की सभी प्रान्तीय सस्थाओ के माध्यम से तथा वैदिक यति मण्डल के सदस्यो द्वारा ११ लाख की श्रद्धा-निधि शीघ्र ही ६ मास के अन्दर सग्रहीत कर पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी का अभिनन्दन किया जाये। यह महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव (निर्णय) किया गया, इसको सब ही उपस्थिति यति मण्डल के सदस्यो ने करतल ध्वनि से सहर्ष स्वीकार किया। दूसरा प्रस्ताव आर्यसमाजो से सम्बन्धित सभी संन्यासी वानप्रस्थियो को यति मण्डल की सदस्यता प्राप्त करने पर विधिवत् प्रमाण-पत्र दिया जाये। उन्ही सन्यासी, वानप्रस्थियो को आर्यसमाजो मे अथवा आर्य परिवारो के विशेष आयोजनो मे आमन्त्रित किया जाये। बिना प्रमाणपत्र के निरकुश स्वेच्छाचारी, काषाय व स्त्रधारी, कथित सन्यासी तथा वानप्रस्थियो पर प्रतिबन्ध लगाया जाये।

आर्यसमाजो मे आई शिथिलता हटाने हेतु वैदिक यति मण्डल के तत्त्वावधान मे अवैदिक पाखण्ड विचारधारा को नष्ट करने हेतु छोटे-छोटे ट्रैक्ट व साहित्य लागत मूल्य से भी कम मूल्य में प्रकाशित कराना तथा आगामी विशाल कुम्भ मेले मे भी वैदिक यतिमण्डल के तत्वावधान में प्रचार केन्द्र (कॅम्प) चालू करना, बिना मूल्य वितरण कराना महत्त्वपूर्ण निश्चय किया गया। वैदिक यतिमण्डल कीशालाओ की स्थापना प्रान्तीय स्थानो पर स्थापित कर यति मण्डल के कार्य का विस्तार योजनाबद्ध अनुशासनशील बनाना।

वैदिक यति मण्डल द्वारा शुद्धि कार्यों में योगदान देना। समय समय पर विशेष अवसरो पर बिभिन्न प्रान्तो में अधिवेशन बुलाकर पदयात्राओं द्वारा प्रचार करना। यतिमण्डल का यह विशेष लक्ष्य रहेगा। परन्तु वेदिक यति मण्डल का केन्द्र महर्षि दयानन्द मठ, दीनानगर में ही रहेगा। और उपरोक्त यति मण्डल के अध्यक्ष का चुनाव सर्वसम्मति से निश्चय किया कि स्थायी रूप से स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती ही रहेगे। इसके पश्चात् उन्ही की इच्छानुसार योग्यतम स्वामी तपस्वी सन्यासी का चयन सर्वसम्मति से होने पर स्थायी रूप से वैदिक यति मण्डल के अध्यक्ष के रूप मे बने रहेगे। समय-समय पर यतिमण्डल की गतिविधियों पर सब आर्यजगत् के पत्रो मे प्रकाशित किया जायेगा। कार्य का एवं संगठन का विस्तार होने पर वैदिक यति मण्डल की मासिक पत्रिका स्वतन्त्ररूप से प्रारम्भ करने का निश्चय किया गया है।

वैदिक यति मण्डल की आगामी बैठक (अधिवेशन) तीन मास के अन्दर रोहतक स्थित वैदिक भक्ति साधना आश्रम मे लेने का निश्चय किया गया, उसी अवसर पर पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी का अभिनन्दन श्रद्धानिधि निश्चयानुसार एकत्रित कर भेंट की प्रथम किस्त अर्पण की जावेगी। उपरोक्त वैदिक यति मण्डल की बैठक मे प्रत्यक्ष भाग लेने के आधार पर आर्यजगत् को बताने का यत्न किया गया है। विशेष वृत्त केन्द्र कार्यालय से शीघ्रतया प्रकाशित होगा ऐसी अपेक्षा है।

स्वामी केवलानन्द सरस्वती

कश्यप वैदिक सत्सग आश्रम, कृष्णगज अजमेर (रजि०)

फतेहपुर जिला कुरुक्षेत्र में श्रावणी उपाकर्म

आर्यसमाज फतेहपुर की ओर से गाव के बीच खुले मैदान मे २९, ३० अगस्त को विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। गांव मे सैकड़ों आर्यों द्वारा प्रभातफेरी ने लोगो को आकर्षित किया। यज्ञ के समय ४०० व्यक्तियो व युवको को यज्ञोपवीत दिए गये। यज्ञोपवीत तथा रक्षा बन्धन पर लोगो को व्याख्यान द्वारा समझाया गया। चौधरी युधिष्ठिरपाल के मधुर भजन हुए। ज्ञातव्य है कि इस समय आर्यसमाज मन्दिर का पूर्ण निर्माण कार्य जोरो से चल रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

[illegible] द्वारा पंजि सं० 83207/73 रजि० सं० P/RTK 49

सृष्टि संवत् [illegible]



ओ३म् [illegible]

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १२ अङ्क ३९ २१ सितम्बर १९८५ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

वेदोपदेशः

ओ३म्— शग्धि पूर्धि प्रयंसि च शिशीहि प्रास्युदरम् ।
पूषन्निह क्रतुं विदः ॥ ऋ० १।४२।९
घौरः कण्वऋषिः । पूषा देवता ।

सब प्रकार से शक्तिशाली बन ।

भावार्थ—हे जीवात्मन् ! तुम पूषा हो, स्वयं पुष्टिशील हो, तथा अपनी प्रजा रूप मन, बुद्धि, इन्द्रिय आदि को भी पुष्टि शक्ति दे सकने वाले हो। पर यदि तुम्ही परिपुष्ट न होकर निर्बल बने रहे तो शरीर का सारा साम्राज्य ही बिगड़ जाने का भय है।

शग्धि—तुम शक्तिशाली बनो, ऐसे ताकतवर बनो कि जो भी आन्तरिक शत्रु कामक्रोधादि अथवा बाह्य शत्रु तुम से सघर्ष करने आए तो उन्हें पराजित कर सको। जैसे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने को सर्वप्रथम इतना शक्तिशाली बनाया कि उन्होंने प्रचार कार्य करते हुए अनेकों शत्रुओं का मुकाबला किया और उन सबों को पराजित किया।

पूर्धि—तुम स्वय को पूर्ण बनाओ, पूर्णमासी के चन्द्रमा के समान पूर्ण हो जाओ। विकास रुका होने के कारण जो तुम मे अधूरापन दिखाई देता है, उस अवस्था को दूर करो। वह अधूरापन दूर होगा प्रयास के द्वारा।

प्रयसि—तुम प्रयास करो। समृद्ध होने के लिए प्रयास करो। कर्त्तव्य पालन के लिए प्रयत्न करो। अपना दिव्यगुणों का साम्राज्य बढ़ाने के लिए प्रयत्न करो। याद रक्खो—बिना प्रयास किए स्वय सफलता द्वार पर आकर खड़ी नहीं हो जाती।

शिशीहि तुम स्वयं को तीक्ष्ण करो। जाकरुक प्रतिभावान् तथा प्रखर तेज बनाओ। तेजस्विता समस्त शत्रुओं के सम्मुख चुनौती बनकर खड़ी हो सकती है तथा विजय की पताका फहराने में सहायक होती है। इसके विपरीत मन्दता, कुण्ठा, संशयों में डालकर पराजय का कारण बनती है।

उदरम्[illegible]—तुम उदर पूर्ति करो। तुम्हारा अपना उदर इस शरीर के [illegible] भी विशाल है। शरीर का पेट तो थोड़े से भोजन के खाने-पीने से ही भर जाता है। पर तुम्हारे उदर में जितना भी डालते जाओ वह कम ही पड़ता है। तुम्हारा भूख आध्यात्मिक भूख है। वह साधारण से भोजन से नहीं; अपितु सत्यशीलता व्रतपालन, यज्ञ, वेदाध्ययन, योगाभ्यास, अहिंसा, [illegible], त्याग, दान, योगसमाधि के द्वारा ब्रह्म के साक्षात्कार आदि से ही शान्त हो सकती है। उस भोजन को तुम अपने लिए भी संचित करो तथा उससे [illegible] लोगों के भी उदर की पूर्ति करो।

पूषन्निह क्रतुविद:—हे पूषन ? हे मेरे आत्मन् !

तुम इस देह या लोक में रहते हुए अपने कर्त्तव्य को समझाओ। [illegible] वह [illegible] खड़ी [illegible]

कर्त्तव्य को जाने बिना न सही दिशा मे प्रयास हो सकता है, न सही दिशा मे पूर्णता प्राप्त की जा सकती है। न सही दिशा में तीक्ष्णता (प्रखरता) तेजस्विता सम्पादित की जा सकती है। इन गुणों के बिना शक्ति कहा से प्राप्त हो सकती है।

हे जीवात्मन् ! यदि तुम वेद की इस प्रेरणा को वस्तुत: ग्रहण कर लोगे, तभी तुम सच्चे पूषा अर्थात् सच्चे शक्ति के पुजारी, सच्चे पुष्टि के देव बन जाओगे। शक्तिरेव जयते

सुखदेव शास्त्री सिद्धान्त वाचस्पति,
उपदेशक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए

प्रो० शेरसिंह को प्रधानमन्त्री से भेंट

(कार्यालय संवाददाता द्वारा)

हरयाणा रक्षा वाहिनी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने १३ सितम्बर को १२-३० बजे प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से भेण्ट की और उनसे अनुरोध किया कि जल वितरण तथा चण्डीगढ के बदले अबोहर फाजिल्का आदि हिन्दी भाषी क्षेत्र हरयाणा को देने में न्याय दिलवायें क्योंकि हरयाणा की जनता सदा शान्तिप्रिय तथा राष्ट्रप्रेमी रही है। इसके सैनिकों ने जहां बड़े से बडा बलिदान देकर भारत की सीमाओं की सुरक्षा की है वहा इसके किसानों तथा मजदूरों ने अन्न के उत्पादन में वृद्धि करके भारत को आत्म निर्भर बनाया है।

प्रधानमन्त्री ने प्रो० शेरसिंह की बात को बहुत ध्यान से सुना तथा न्यायोचित कार्यवाही करने का आश्वासन दिया।

हरयाणा रक्षा वाहिनी ने मैथ्यू आयोग को ज्ञापन दिया

हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने १४ सितम्बर को श्री के० के० मैथ्यू आयोग के समक्ष हरयाणा रक्षा वाहिनी की ओर से ज्ञापन प्रस्तुत किया।

इसी प्रकार हरयाणा सरकार ने भी मैथ्यू आयोग के सामने पंजाब के ४१० हिन्दी भाषी ग्रामों पर अपना दावा पेश किया। चण्डीगढ पजाब को दिये जाने के बदले में पंजाब को ये हिन्दी भाषी क्षेत्र स्थानान्तरित किये जाने हैं। उल्लेखनीय है कि केन्द्र अकाली समझौते के अन्तर्गत गठित मैथ्यू आयोग का गठन उन हिन्दी भाषी क्षेत्रो का निर्धारण करने के लिए किया गया है जो चण्डीगढ के बदले हरयाणा को दिये जाने हैं। पंजाब सरकार भी २५ सितम्बर के बाद आयोग के समक्ष अपना दावा प्रस्तुत करेगी।

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित शराबबन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए जिन ग्रामों में शराब के ठेके खुले हुए हैं, उन ग्राम पंचायतों के सरपंचों तथा पंचों को प्रेरणा करके प्रस्ताव पास करवाने का यत्न करें कि शराब का ठेका बन्द किया जावे। प्रस्ताव का प्रारूप निम्न प्रकार प्रकाशित किया जा रहा है।

सेवा में,

माननीय आयुक्त महोदय

आबकारी एवं कराधान, हरयाणा, सैक्टर-१७ चण्डीगढ़

निवेदन है कि हमारे ग्राम............जिला............पंचायत ने अपनी बैठक दिनांक.........में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है—

यह पंचायत शराब पीने की बढती हुई प्रवृत्ति को ग्राम्य जीवन के लिये बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गांव में अनाचार, अशान्ति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की नशाबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पंचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द कर दी जाए और भविष्य में कदापि भी यहां शराब का ठेका खोलने की अनुमति न दी जाए ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहां शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठावेंगे कृपा करेंगे। सधन्यवाद!

ता० .... विनीत

हस्ताक्षर ग्राम पंचायत के सदस्य

प्रतिलिपि सेवा में—

१- प्रधानमन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली।

२- मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

नोट—जिन पंचायतों के प्रस्ताव ३० सितम्बर ८५ तक सरकार के पास पहुँच जावेंगे, पंचायत एक्ट के अनुसार उन ग्रामों में शराब के ठेके नीलाम नहीं हो सकते।

अतः आर्यसमाजें अपने निकट के ग्रामों में जहां शराब के ठेके खुले हैं, वहां की पंचायतों से प्रस्ताव पास करवाकर ३० सितम्बर तक भिजवाने का यत्न करें।

प्रो० शेरसिंह
सभा प्रधान

अंडे बिमारियों के घर और जहर (विष) हैं

श्री काशीनाथ शास्त्री, गोंदिया (महाराष्ट्र)

आज दिन अण्डो का प्रचार खूब बढ़ गया है व बढ़ रहा है। परन्तु इस बात को बहुत ही कम लोग जानते व समझते हैं कि अण्डों का सेवन मनुष्य के लिए कितना घातक है। कोई बात यदि मन की पवित्रता या धार्मिक दृष्टि से वैज्ञानिक परीक्षणों के आधार पर विचार करेंगे। हृदय रोगों पर अनुसधान कर रहे विशेषज्ञों का कहना है कि हृदय रोग के रोगी लिए अण्डा सबसे अधिक हानिकारक है। अण्डा खानेवाले लोगों की धमनियों मे रक्त के प्रवाह में प्रायः बाधा उत्पन्न हो जाती है। इंग्लैंड के डाक्टर राबर्ट ग्रास प्रो० इरविंग डेविडसन तथा अमेरिका के डाक्टर कैथेरीन निम्मो व डाक्टर जेमन विलकिन्सने परीक्षणों द्वारा सिद्ध किया है कि अण्डों में कोलेस्ट्रोल की मात्रा इतनी अधिक होती है कि जिसके कारण दिल की बीमारी, उक्त चाप गुर्दों की बीमारी और पित्त की थैली (पित्ताशय) मे पथरी इत्यादि अनेक रोग पैदा हो जाते हैं। डा० ई० वी० मक कोलम ने परीक्षण करके पता लगाया है कि अण्डों में कार्बोहाइड्रेट्स और कैलशियम बिल्कुल नही होता, अतः अण्डे पेट में बड़ी आत में जाकर सड़ान पैदा करते हैं।

डा० राबर्ट ग्रास का यह भी कहना है कि अण्डे की सफेदी सबसे भयानक तत्त्व है। जिन जानवरों को अण्डे की सफेदी खिलाई गई उन को लकवा मार गया और उनकी चमड़ी सुज गई। डा० गोविन्दराज ने परीक्षण करके यह निष्कर्ष निकाला है कि अण्डों में नाईट्रोजन फास्फोरिक एसिड और चरबी की मात्रा अधिक है। इस कारण ये पदार्थ शरीर में तेजाबी माद्दा पैदा करते हैं और मनुष्य को रोगी बनाते हैं। यह कहना भी असत्य है कि अण्डे और मांस में पौष्टिक तत्त्व सब्जी और फलों की तुलना में अधिक होते हैं। बल्कि इसके विपरीत (जैसाकि पूर्व पंक्तियों में सप्रमाण लिखा जा चुका है) अण्डे और मांस में ऐसे विषाक्त तत्त्व पाये जाते हैं जो कई बीमारियों को जन्म देने वाले सिद्ध होते हैं। यह बात भी अब वैज्ञानिक आधार पर सिद्ध हो चुकी है कि कच्ची और उबली हुई सब्जियां तथा फलों का सेवन मनुष्य को स्वस्थ रखने के लिए सबसे अधिक उपयुक्त है। ब्रिटेन के 'फ्रेश फ्रुट एण्ड वेजिटेबल इन्फार्मेशन ब्यूरो' ने अपनी हाल ही की एक रिपोर्ट में कहा है कि गाजर, मूली खरबूजा और आम मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए बहुत ही उपयोगी भोजन है। आलू और केला विटामिन्स से भरपूर होते हैं। केले के प्रयोग से मानसिक दबाव कम होता है, पौरुष बढता है और दाम्पत्य जीवन अधिक आनन्दमय बन जाता है।

प्रतिवर्ष होने वाले विश्व शाकाहारी सम्मेलन में भाग लेने वाले संसार के सभी देशों के प्रतिनिधियों द्वारा भी शाकाहार और फलो के सेवन का महत्त्व प्रतिपादित किया जाता है। शाकाहार का महत्त्व समझ लेने के कारण ही पाश्चात्य देशों के लोग (जिनमे अभी तक मांसाहार व अण्डों का प्रचलन बहुत अधिक था) अब इनका सेवन धड़ाधड़ छोड़ रहे हैं। अब तक अकेले ब्रिटेन में ही कई लाख व्यक्ति मांस व अण्डों का सेवन छोड़ चुके हैं। कृषि विभाग फ्लोरिडा(अमेरिका) के अक्तूबर १९६७ हेल्थ बुलेटिन में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार १८ महीनों के परीक्षण के बाद अण्डों में डी. डी टी. जहर पाया गया।

अण्डा सेवन के दुष्परिणामों के सम्बन्ध में इतना ही लिखना पर्याप्त है। आशा है कि सुधी पाठकों को लेख उपयोगी सिद्ध होगा।

(आर्य सेवक से साभार)

आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बधित कुछ आर्यसमाजों के लिए पुरोहितों की आवश्यकता है। संस्कार आदि कार्यों में निपुण तथा वैदिक सिद्धान्तों के विद्वान् अपनी योग्यता तथा अनुभव के प्रमाण पत्रों सहित अपने आवेदन पत्र सभा को भेजने का कष्ट करें।

सभा के ऋषि लंगर दयानन्द मठ रोहतक के लिए एक पाचक (रसोइया) की तुरन्त आवश्यकता है। अतः इच्छुक पाचक कार्यालय पहुंचकर सम्पर्क करें।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

[illegible] की ओर से—

हरियाणा को न्याय देने के लिए नियुक्त मैथ्यू आयोग के समक्ष प्रस्तुत

ज्ञापन

सेवा में,

मानतीय मैथ्यू आयोग, नई दिल्ली ।

मान्यवर !

पंजाब के सम्बन्ध में राजीव-लौंगोवाल समझौते का आधार श्रीमती इन्दिरा गान्धी द्वारा किया गया 1970 का पंच फैसला ही है। इसलिए इन दोनों की तुलना से आयोग को अपने कार्य-क्षेत्र को सुनिश्चित करने में सुविधा मिलेगी।

राजीव-लौंगोवाल समझौते का अनुच्छेद 7(1) इन्दिरा गान्धी पंच फैसले के अनुच्छेद 3 के अन्तिम वाक्य का अन्तिम भाग और अनुच्छेद 4 की हू-ब-हू नकल है।

राजीव लौंगोवाल समझौते के अनुच्छेद 7(2) और इन्दिरा गान्धी पंच फैसले के अनुच्छेद 5 में यह अन्तर है कि पंच फैसले में फाजिल्का तहसील के 107 गांव और दो नगर (फाजिल्का और अबोहर) हरयाणा को देने की स्पष्ट घोषणा है, जबकि समझौते में फाजिल्का अबोहर हरयाणा को देने के बारे में फैसला करने का काम एक आयोग को सौंपा गया है। आयोग भाषाई सादृश्य के आधार पर हरयाणा से सटे हुए इलाकों को गांव को इकाई मानकर हरयाणा को चण्डीगढ़ के बदले में देगा।

समझौते के अनुच्छेद 7(4) के अनुसार अन्य इलाकों के सम्बन्ध में हरयाणा और पंजाब के दावों का फैसला करने के लिए दूसरे आयोग का गठन किया जायेगा। वह आयोग भाषाई सादृश्य के आधार पर हरयाणा पंजाब से सटे हुए इलाकों का गांव को इकाई मानकर फैसला करेगा। 1970 के पंच फैसले में फैसला उन्हीं अन्य इलाकों का करना था, परन्तु उस विवाद में हिमाचल प्रदेश भी एक पक्ष था, जो समझौते में पक्ष नहीं बनाया गया। तीनों प्रदेशों की सीमाओं का समायोजन करने के लिए कौन से सिद्धान्त आधाररूप में अपनाये जायें, इसका फैसला तीनों प्रदेशों की सरकारों पर छोड़ दिया गया था।

यदि भाषा के आधार पर पंजाब के पुनर्गठन और उसके फलस्वरूप उठी हुई समस्याओं के इतिहास के सन्दर्भ में, इन दोनों दस्तावेजों को एक साथ मिलाकर पढ़ा जाये तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि दोनों दस्तावेजों ने इलाकाई (क्षेत्रीय) विषय के तीन घटक माने हैं। (1) चण्डीगढ़ राजधानी (2) फाजिल्का अबोहर क्षेत्र (3) प्रदेशों की सीमाओं के समायोजन सम्बन्धी अन्य इलाके। घटक नं० 1 और (2) को मिलाकर एक मसला माना गया और घटक नं० (3) को दूसरा अलग मसला माना गया।

यह आयोग घटक नं० (1) और नं० (2) को मिलाकर जो मसला बनता है, इसका समाधान करने के लिए बनाया गया है। अन्य इलाकों के मसले का समाधान समझौते के अनुच्छेद 7(4) के अनुसार गठित दूसरा आयोग करेगा।

इरादा बिल्कुल साफ है। फाजिल्का तहसील और उससे सटे हुए गांव अधिसूचना में दिये गये सिद्धान्तों के आधार पर हरयाणा को दिये जाने का फैसला आयोग को करना है। शाह-कमीशन की तरह इकाई अब तहसील नहीं रही, इकाई गांव मान लिया गया है। गांव किस तहसील में है, इसका अब कोई महत्व नहीं रहा, यदि वह गांव अधिसूचना में दिये गये सिद्धान्तों पर पूरा उतरता है तो चाहे वह गांव फाजिल्का तहसील का हो या उससे लगती हुई दूसरी तहसील का, वह हरयाणा को दिया जा सकेगा।

नये समझौते में एक नया विचार और नई धारणा जोड़ दी गई है। वह नया विचार और नई धारणा है, क्षतिपूर्ति करने और मुआवजा देने की। चण्डीगढ़ की क्षतिपूर्ति करने और मुआवजा रूप में पंजाब के हिन्दी भाषी क्षेत्र हरयाणा को दिये जाने हैं।

शाह-कमीशन ने अपनी रिपोर्ट के 15 अनुच्छेदों में खरड़ तहसील और चण्डीगढ़ के प्रश्न पर खुलकर विचार किया है। इस इलाके के निवासियों की भाषा, विद्यार्थियों द्वारा शिक्षा का माध्यम तथा अन्य सम्बन्धित मामलों पर गहराई और विस्तार से विचार करने के पश्चात् आयोग ने हिन्दीभाषी होने के नाते खरड़-तहसील चण्डीगढ़ को शामिल करके हरयाणा को दी। चण्डीगढ़ को राजधानी पंजाब को देने की बात तभी सोची जा सकती थी जब पंजाब से लगती हुई दो-तिहाई खरड़ तहसील पंजाब के पास हो, जो कि शाह-कमीशन ने उसको नहीं दी। उसके बिना पंजाब चण्डीगढ़ से नहीं जुड़ता था। इसलिए भारत सरकार ने चण्डीगढ़ को पंजाब और हरयाणा की संयुक्त राजधानी बनाने का फैसला अक्तूबर 1966 में किया, तब खरड़ तहसील का दो-तिहाई हिन्दीभाषी इलाका जो शाह-आयोग ने हरयाणा को दिया था, पंजाब को इसलिए दे दिया, ताकि पंजाब प्रदेश के लोगों को चण्डीगढ़ में पहुंचने के लिए हरयाणा के इलाके में से न गुजरना पड़े। इन ग्रामों की संख्या 283 बनती है (ग्रामों की सूची संलग्न है) नये समझौते के अनुसार चण्डीगढ़ केन्द्रशासित इलाका नहीं रहेगा, उसमें से चण्डीगढ़ राजधानी परियोजना अलग निकालने के कारण पंजाब को 20 गांव और मिल जायेंगे। चण्डीगढ़ राजधानी परियोजना के लिए 24 हिन्दी भाषी गांव उठाये गये थे। इस प्रकार नये समझौते के बाद शाह-कमीशन के फैसले के खिलाफ कुल मिलाकर पंजाब को 327 गांव मिल जाते हैं। यदि शाह-कमीशन के फैसले पर अमल होता तो ये सारे के सारे 327 गांव हरयाणा को मिल जाते। यदि हरयाणा की क्षतिपूर्ति करनी है और मुआवजा देना है तो 327 गांव और चण्डीगढ़ राजधानी परियोजना की भूमि, जायदाद, कार्यालय संस्थान आदि की कीमत लगाकर हरयाणा को दस हजार करोड़ (10,000 करोड़) रुपये कीमत की भूमि, जायदाद तथा अनुदान मिलने चाहिये।

यदि हम थोड़ा गहराई में जाकर विचार करें तो हरयाणा को चण्डीगढ़ के बदले में पंजाब के हिन्दीभाषी क्षेत्र देने की बात एकदम अयथार्थ और मिथ्या लगेगी। यदि हरयाणा को हिन्दी भाषी इलाके ही दिये जाने हैं तो इसे मुआवजा कैसे कह सकते हैं, जबकि अनुच्छेद 7(4) के अनुसार गठित आयोग द्वारा वही हिन्दीभाषी इलाके हरयाणा को मिल सकते हैं। यदि यह आयोग हिन्दीभाषी इलाकों के अलावा और कुछ दे ही नहीं सकता, तो इस माननीय आयोग की भूमिका और कार्य क्या रह गया। संसार में कभी-कभी विलक्षण घटनायें घटती हैं और पंजाब समझौते का यह अंश उसका एक ज्वलन्त उदाहरण है।

परन्तु अब जबकि भारत की न्यायपालिका के एक जाने माने सुविज्ञ विद्वान् ने इस आयोग के अध्यक्ष का पद सम्भालना मान लिया है, हम उनके समक्ष तर्कपूर्ण तथा शान्तभाव से आवेग रहित होकर अपना पक्ष इस आशा से रख रहे हैं कि न्याय के पारखी, असलियत को पहचानकर, युक्तियुक्त फैसला देकर, हरयाणा प्रदेश के जन्म से लेकर आज तक होते आरहे अन्याय को दूर करते हुए, हरयाणा की यथासम्भव क्षतिपूर्ति करेंगे।

आज जिस अवस्था में यह मसला हमारे सामने है, वह किन रास्तों से होकर गुजरा है, इसकी गहरी पहुंच के लिए हमें थोड़ा विस्तार से घटनाक्रम को बयान करना पड़ेगा। जिससे माननीय आयोग को हरयाणा को न्याय देने में मदद मिलेगी और वह सुनिश्चित निष्कर्ष निकाल सकेगा।

भाषा समस्या तथा पंजाब के पुनर्गठन का इतिहास

सच्चर फार्मूला

भारत के विभाजन के फैसले के बाद श्री भीमसेन सच्चर की जगह डा० गोपीचन्द भार्गव को कांग्रेस दल का नेता बनाया गया। अकाली कांग्रेस में शामिल हो गये। डा० भार्गव पूर्वी पंजाब के पहिले मुख्यमन्त्री बने। उनको अकाली दल के तारासिंह तथा नागो के दोनों धड़ों का समर्थन मिला। ज्ञानी करतारसिंह, तारासिंह धड़े के नेता थे। डा० भार्गव से बहुत कुछ लेकर भी ज्ञानी करतारसिंह और रक्षा मन्त्री स० बलदेवसिंह को पूरा सन्तोष नहीं था, इसलिए डा० भार्गव से अपना समर्थन वापिस लेकर उन्होंने मार्च 1949 में श्री भीमसेन सच्चर को कांग्रेस दल का नेता चुनवा लिया। सरदार पटेल के आदेश पर उनको भार्गव धड़े के ३ मन्त्री अपने मन्त्रिमण्डल में लेने पड़े, डा० भार्गव को शिक्षा मन्त्री बनाया गया। श्री सच्चर को डा० भार्गव की अपेक्षा कम लचकीला मानकर अकालियों ने डा० भार्गव को फिर से मुख्यमन्त्री बनाने का मनसूबा बनाया। परन्तु ऐसा करने से पहिले वे दोनों के सहयोग से एक भाषाई फार्मूला मनवा लेना चाहते थे। अलग अलग से दोनों को मुख्यमन्त्री रखने और बनाने का वायदा देकर तथा कांग्रेस हाई कमान का समर्थन जुटाकर 1 अक्तूबर 1949 को एक फार्मूला जो सच्चर फार्मूले के नाम से जाना गया, मन्जूर करवा लिया। उसके थोड़े समय बाद ही डा० भार्गव को फिर से मुख्यमन्त्री बना दिया। उस फार्मूले के अनुसार पंजाब को पंजाबी भाषी तथा हिन्दी भाषी मण्डलों तथा कुछ द्विभाषी इलाकों में बांटा जाना था। अन्तरिम बांट अकालियों ने मनमर्जी से करवाली, परन्तु अन्तिम फैसला एक वर्ष बाद आने वाली 1951 की जनगणना के आधार पर होना था। कांग्रेस दल में इस मसले पर इतना तनाव हो गया कि एक मन्त्री का महकमा छिन गया और तीन संसदीय सचिव त्याग पत्र दे गये। इस विवाद के कारण प्रदेश में साम्प्रदायिक तनाव तूल पकड़ गया, फलस्वरूप 19 1 की जनगणना के फार्म में से भाषा का कालम समाप्त कर दिया गया। इसलिये सच्चर फार्मूले के सम्बन्ध में भाषाई मण्डलों का मामला भी समाप्त कर देना पड़ा। सच्चर फार्मूला ढह गया और उसका एक भाग ही बचा रहा जिसके मुताबिक विद्यार्थियों के अभिभावक पहिली भाषा और माध्यम का निर्णय करेंगे और सरकार यदि 10 विद्यार्थी एक कक्षा में और 40 विद्यार्थी स्कूल में किसी भाषा के पढ़ाये जाने की मांग करें तो उसका प्रबन्ध स्कूलों में कर देगी।

राष्ट्रपति शासन

कांग्रेस दल का विवाद समाप्त नहीं हो सका, बल्कि बढ़ गया, यहां तक कि भार्गव मन्त्रिमण्डल बर्खास्त करना पड़ा और जून 1951 में राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया। अकाली तथा डा० भार्गव कांग्रेस छोड़ गये, परन्तु उन्हें बहुत बड़ी हार का सामना करना पड़ा।

राज्य पुनर्गठन आयोग तथा क्षेत्रीय फार्मूला

राज्य पुनर्गठन आयोग का गठन होने पर 1953 में अकालियों ने पंजाबी सूबे के निर्माण के लिए आयोग को अपना ज्ञापन दे दिया। हरयाणा क्षेत्र के 25 विधायकों ने भी विशाल हरयाणा (जिसमें पंजाब का हरयाणा क्षेत्र, दिल्ली, पश्चिमी उत्तरप्रदेश के जिले तथा राजस्थान के भरतपुर और अलवर जिले शामिल थे) बनाये जाने के लिए अपना ज्ञापन पेश कर दिया। आयोग ने दोनों मांगें ही नहीं मानीं। समझौते के तौर पर अकालियों ने क्षेत्रीय फार्मूला भारत सरकार के सामने रखा जिसे मानकर संविधान में क्षेत्रीय समितियों के गठन का प्रावधान कर दिया गया। इसके तुरन्त पश्चात् 1956 मे अकाली दल को राजनैतिक दल के रूप में भंग करके अकाली कांग्रेस मे फिर से शामिल हो गये।

क्षेत्रों का सीमांकन

गृहमन्त्री पं० गोविन्द वल्लभ पन्त ने पंजाब के सभी राजनैतिक दलों की बैठक बुलाकर हिन्दी और पंजाबी क्षेत्रों की सीमाएं निश्चित करने के लिए खुली बहस सुनी। उसके पश्चात् उन्होंने इस काम के लिए स० प्रतापसिंह कैरो, प्रो० शेरसिंह, चौ० देवीलाल, ज्ञानी करतारसिंह, श्री वीरेन्द्र पांच सदस्यों की कमेटी बना दी। बाद में पं० मौलीचन्द्र शर्मा को भी इसमें शामिल कर लिया। सदस्यों का आपस में और पं० पन्त के साथ बैठकर विचार चलता रहा और फैसला अन्तिम बैठक में जो 24 अक्तूबर, 1956 को हुई, करके गृहमन्त्रालय को सौंप दिया गया। विचार विनिमय के दौरान ज्ञानी कर्तारसिंह ने अबोहर फाजिल्का का इलाका हिन्दी क्षेत्र में जाना मान लिया परन्तु उन्होंने यह प्रश्न उठाया, कि क्योंकि एक गांव कन्दूखेड़ा जो दूसरे कुछ गांवों के साथ फाजिल्का तहसील से निकालकर मुक्तसर तहसील में डाल दिया था, वह हरयाणा की सिरसा तहसील और फाजिल्का तहसील के जुड़ने में रुकावट है, इस लिए सम्भव नहीं होगा। मामला गम्भीर था, इसलिए गृहमन्त्री पर छोड़ दिया गया। पं० पन्त ने कन्दूखेड़ा गांव के चुने हुए सरपंच, मैम्बरान पंचायत तथा नम्बरदारों को दिल्ली बुलवाया साथ ज्ञानी कर्तारसिंह, प्रो० शेरसिंह और चौ० देवीलाल को भी बुला लिया। लोगों की वार्ता सुनकर, उन पर जिरह करने के बाद, तीनों कमेटी के सदस्यों की सह-मति से पं० पन्त ने यह निर्णय कर दिया कि कन्दूखेड़ा हिन्दी भाषी है। इसलिए 24 अक्तूबर, 1956 की बैठक की कार्यवाही में यह लिखा गया कि "तहसील मुक्तसर का गाव कन्दूखेड़ा जो तहसील सिरसा की लोहगढ़ जैल और तहसील फाजिल्का के गांव को जोड़ता है निसन्देह हिन्दी भाषी क्षेत्र में जायेगा। विधान सभा के सदस्य अपनी क्षेत्रीय समिति में बैठ सकें, इसके लिए यह आवश्यक था कि उनके विधान सभा के हल्के एकभाषी बनाये जायें। इसी आधार पर हल्का हदबन्दी कमीशन ने 1957 की अपनी रिपोर्ट में जो हल्के घोषित किये, उनमें मुक्तसर तहसील अकेले कन्दूखेड़ा गांव को मुक्तसर तहसील के मलोट विधान सभा हल्के से निकालकर फाजिल्का तहसील के अबोहर विधान सभा हल्के में शामिल कर दिया। अकालियों ने या कन्दूखेड़ा के किसी निवासी ने भी आगे चलकर भी इस पर कोई आपत्ति नहीं उठाई। स्पष्ट है कि हरयाणा की सिरसा तहसील के ग्रामों का फाजिल्का तहसील के ग्रामों से जुड़ा होने का मामला अन्तिम रूप से 1956 में ही तय हो गया था।

इसके पश्चात् भारत सरकार को फाजिल्का तहसील के हिन्दी भाषी माने गए विधान सभा के हल्कों को हिन्दी क्षेत्र में मिला देना चाहिए था। परन्तु प्रशासनिक सुविधा का वास्ता देकर स० प्रतापसिंह कैरों और ज्ञानी कर्तारसिंह ने जिला फिरोजपुर और जिला हिसार के यथापूर्व बने रहने की बात भारत सरकार से मनवा ली। दलील यही थी कि अकाली पंजाबी सूबे की मांग तो छोड़ ही चुके हैं, फिर प्रशासनिक ढांचे को क्यों अस्त-व्यस्त किया जाये।

भाषा समस्या तथा हिन्दी आन्दोलन

प्रान्तों के पुनर्गठन का अन्तिम फैसला होने पर देश में केवल दो द्विभाषी प्रांत रह गए, बम्बई और पंजाब। पंजाब में सरकारी नौकरी में प्रवेश के लिए मैट्रिक स्तर की पंजाबी की परीक्षा पास करना अनि-वार्य था और मैट्रिक तक पंजाबी भाषा का पढ़ना भी। बम्बई में इस प्रकार की कोई अनिवार्यता नहीं थी। सरकारी नौकरियों में हरयाणा का हिस्सा वैसे ही बहुत कम था, और इसीलिए विकास के कामों में भी पिछड़ गया था। आर्यसमाज ने हरयाणा तथा अन्य हिन्दी भाषी लोगों के प्रति भेदभाव की इस नीति को समाप्त करने के लिए बड़ा शक्ति-शाली आन्दोलन चलाया। स० प्रतापसिंह कैरों ने हरयाणा क्षेत्र के लिए पहिले तो अनिवार्यता हटाने का वचन दे दिया, परन्तु फिर मुकर गए, इसीलिए आन्दोलन हुआ। वह आन्दोलन मई 1957 मे आरम्भ हुआ और भारत सरकार के आश्वासन पर कि शीघ्र ही समाधान निकाल लिया जाएगा, दिसम्बर 1957 के अन्त में वापस ले लिया गया। समस्या का सही और सवमान्य हल निकालने के लिए भाषाविदों और शिक्षाशास्त्रियों की एक समिति बना दी गई।

क्षेत्रीय असन्तुलन तथा भेदभाव

हरयाणा के लोगों को क्षेत्रीय समिति के माध्यम से अपनी शिका-यतों को सुनकर प्रकाशित और प्रसारित करने का अधिकार मिला। साम्प्रदायिक सवाल पीछे पड़ गये। वे आंकड़े जो पूर्णतया सांख्यि

करते थे कि हरयाणा के साथ भेदभाव की नीति चल रही है, एकत्रित करके प्रकाशित किये गये। उससे हरयाणा की जनता में एक नई चेतना आई। पजाब के सिख ग्रौर हिन्दू दोनों ही हरयाणा क्षेत्र का शोषण कर रहे थे। चुनौती का उत्तर देने में अक्षम अकालियों ने समस्या को साम्प्रदायिक मोड़ देने की कोशिश की, परन्तु उनको हरयाणा के द्वारा दिये गये आकड़ों का युक्तियुक्त उत्तर देने तथा सिखों के साथ भेदभाव का व्यवहार करने के न तो उदाहरण मिले ग्रौर न ही वे उनकी सृष्टि कर पाये। जब ग्रार्थिक प्रश्न खुलकर सामने आते है तो साम्प्रदायिक प्रश्न स्वयमेव ओझल हो जाते हैं, तथा तर्क विवेक ग्रौर बुद्धि हावी हो जाते हैं। इससे पंजाब के लोगों की चित्तवृत्ति शुद्ध हो गई ग्रौर साम्प्रदायिक तथा जातिवादी तत्त्वों को अपने बचाव के लिए सफाई देने की नौबत ग्रा गई।

1961 की जनगणना

इस परिष्कृत और शुद्ध वातावरण मे 1961 की जनगणना हुई। कोई-विवाद नही था, लोग स्वाभाविक ढंग से ग्रपना प्रचार करते रहे। पहिली बार पंजाब की दशा का सही चित्रण जनगणना के द्वारा हुआ।

दास कमीशन

क्षेत्रीय फार्मूले का लाभ हरयाणा को हुआ। हिन्दी क्षेत्रीय समिति के द्वारा क्षेत्रीय भेदभाव पर आधारित पजाबी क्षेत्र के शोषण का पर्दाफाश हुआ। हरयाणा को ग्रलग राज्य बनाने की माग उभरने लगी। मास्टर तारासिह ने सिखो के साथ भेदभाव का शोशा छोड़ा। पं० जवाहरलाल नेहरू ने उनका पक्ष सुनने के लिए दास आयोग का गठन कर दिया। अकालियो के पास उदाहरण तो थे नही इसलिए वे खिसक गये। हरयाणा लोक समिति ने तथ्यों और ग्रांकड़ों पर ग्राधारित ग्रपना ज्ञापन पेश किया। जब प्रो० शेरसिह ने आंकडों ग्रौर तथ्यों के ग्राधार पर अपना पक्ष ग्रायोग के समक्ष रखा, तो अकाली दल के छोटे नेता जो सुनवाई के समय वहां ग्राये थे, चुनौती का उत्तर न होने की हालत में चुपके से उठकर चले गये। परन्तु ग्रकाली ऐसी घटनाओं से हतोत्साहित नही होते। पजाबी सूबा बनने के बाद 19 वर्षों में केवल अकाली और दूसरे सिख मुख्यमन्त्री बनने पर वे ग्रपना पुराना राग नहीं छोड़ रहे। ग्राज भी निस्संकोच गाये जा रहे हैं।

1962 ग्रकाली दल फिर जी उठा

1962 के आरम्भ में जब पूर्व ग्रकाली नेताओं को विधान सभा ग्रौर लोकसभा मे प्रर्याप्त कांग्रेस टिकट नही मिले, तो वे कांग्रेस से बाहर ग्राये ग्रौर अकाली दल फिर से जी उठा। ग्रकालियों को विधान सभा में ग्रौर लोक सभा में बहुत कम सीटे मिली। परन्तु हरयाणा लोक समिति तथा ग्रन्य साथी दलों ने मिलकर हरयाणा मे विधान सभा की 54 सीटों मे से 23 ग्रौर लोक सभा की 7 सीटो में से 5 सीटें जीती।

1965 पंजाबी सूबे की मांग फिर उठी

अपना राज्य आप चलाकर ग्रपनी दशा सुधारने की तीव्र इच्छा हरयाणा के लोगों में देखकर, अकालियों के हौसले फिर बुलन्द हो गये, ग्रौर उन्होने फिर से पजाबी सूबे की मांग उठा दी। परन्तु ग्रपनी ग्रादत के ग्रनुसार उन्होने फिर से ग्रम्बाला, करनाल ग्रौर हिसार जिले के इलाकों को प्रस्तावित पजाबी सूबे मे शामिल कर लिया। हरयाणा के नेताओं ने उनसे सहयोग करने से इन्कार कर दिया। उनकी शर्त यह थी कि ग्रकाली पहिले यह मानें कि पजाबी क्षेत्र को जैसा वह 24 ग्रक्तूबर 1956 में माना गया था, पंजाबी सूबा बनाने की बात खुलकर कहें और हिन्दी क्षेत्र को हरयाणा बनाने की। यह बात उन्होंने मान ली, परन्तु हरयाणा के नेताओं ने यह आग्रह किया कि यह फैसला ग्रौर उसकी घोषणा ग्रकाल तख्त पर बैठकर हो। इसलिये दिसम्बर 1965 में ग्रकालियों तथा हरयाणा के नेताओं की बैठकें ग्रकाल तख्त पर हुई ग्रौर अकालियों ने 1956 के फैसले पर मोहर लगाई।

पंजाब का पुनर्गठन

मार्च 1966 में पंजाब के पुनर्गठन का निर्णय हुआ। उसके बाद शीघ्र ही ज्ञानी कर्तारसिह, स० प्रकाशसिह बादल, स० अजमेरसिह, स० हरचरणसिह हुडियारा अकाली नेताओं तथा चौ० देवीलाल, प्रो० शेरसिह, चौ० रणबीरसिह, बाबू मूलचन्द जैन ग्रादि नेताओं ने मिल बैठकर पंजाब ग्रौर हरयाणा की सीमाओं के दोनो ग्रोर के गावो की पहचान का काम शुरू कर दिया, कि कौन से गांव हिन्दी भाषी हैं ग्रौर कौन से पंजाबी भाषी। गांव को इकाई माना गया ग्रौर दूसरे सम्बद्ध तत्त्वों के साथ-साथ भाषा और सस्पर्शता के सिद्धान्तो के ग्राधार पर यह काम शुरू किया गया। सर्वसम्मत्ति से यह भी निर्णय हुग्रा कि यदि 10 या उनसे ग्रधिक एक भाषा भाषी गावों के बीच मे दूसरी भाषा बोलने वाले 1 या 2 गांव पड़ते हैं जो उन 10 या उससे अधिक गांव को अपनी भाषा बोलने वाले इलाके से जुडने मे बाधा बनते हैं तो यही नही कि वे एक या दो गांव बाधा नही बनने दिये जायेगे, बल्कि वे भी उन 10 या अधिक गाव के साथ ही उस इलाके मे चले जायगे। यह काम चल ही रहा था कि शाह कमीशन के गठन का समाचार मिला। वह समिति छोटे से इलाके के सम्बन्ध में ही निर्णय ले पाई थी।

शाह कमीशन

शाह कमीशन की अधिसूचना निकलते ही अकाली तथा हरयाणा के नेता ग्रायोग के समक्ष अपना पक्ष रखने मे जुट गये। 1961 की जनगणना को आधार बनाकर सरकार ने सही कदम उठाया। क्योंकि गाववार जनगणना के आकड़े उपलब्ध नहीं थे, केवल तहसील स्तर तक ही थे, इसलिये शाह कमीशन ने तहसील को ही इकाई बनाया। सब तथ्यो ग्रौर आकडो का अध्ययन करके कमीशन ने खरड तहसोल चण्डीगढ समेत हरयाणा को दी। फाज़िल्का तहसोल, दो कानूनी बारीकियों के आधार पर, हरयाणा को नही दी गई। पहिली यह कि क्योंकि तहसील को नही तोडना, इसलिये यदि दूसरी तहसील का एक गाव दो इलाकों के मिलने में रुकावट बनता है, तो हिन्दीभाषी होते हुये भी वह तहसील दूसरे हिन्दी भाषी इलाके से नहीं मिल सकती। दूसरी यह कि क्योकि 1956 के फैसले के बाद 9 साल तक यह मामला नही उठाया गया तो कमीशन ग्राज पुरानी बात को क्यों ध्यान में लाये? शाह कमीशन यह मानते हुए भी कि फाजिल्का तहसील के बड़े हिस्से की भाषा, रीति रिवाज, रहन सहन ग्रौर चलन बाकी फिरोजपुर जिले से नही मिलते, दो कानूनी बारीकियो के आधार पर, हरयाणा को देने से इन्कार कर दिया। लालड़ू-डेराबस्सी जिला पटियाला का इलाका और सुनाम सब तहसील के 27 गांवों जिनको सब ने हिन्दीभाषी माना, इसीलिये हरयाणा को देना नहीं माना, क्योंकि ऐसा करने के लिये तहसील तोड़नी पडती है, ग्रौर भाषा के आकडे तहसील स्तर पर ही उपलब्ध हैं। इन इलाको को भी अकालियों ग्रौर सरदार दरबारासिह तथा दूसरे नेताओ ने हिन्दीभाषी माना है, इसलिये अब जब कि गांव को इकाई मान लिया गया है, इन इलाकों को हरयाणा को देने मे कोई बाधा नही रह गई है।

शाह कमीशन के प्रतिवेदन पर केन्द्र सरकार का फैसला

कमीशन का फैसला आने पर ग्रकालियों तथा दूसरे नेताओं ने प्रधान मन्त्री पर खरड तहसील ग्रौर चण्डीगढ के शाह ग्रायोग के फैसले को बदलवाने के लिये दबाव डाला। वे चाहते थे कि या तो चण्डीगढ़ पजाब की राजधानी बनाई जाये नही तो पजाब ग्रौर हरयाणा दोनों की संयुक्त राजधानी बने। सयुक्त राजधानी बनाने के लिये चण्डीगढ़ को केन्द्रशासित बनाना ग्रावश्यक हो गया, ताकि दोनो राज्यो का दर्जा बराबर रहे। हरयाणा के सभी दलों के विधायकों ने मिलकर यह फैसला किया कि यदि शाह कमीशन का फैसला बदल गया तो वे सब त्यागपत्र दे देंगे, ग्रगले दिन ही श्री सत्यनारायण सिन्हा ने कांग्रेस दल के दोनों धडों को मनाकर यह कहलवा दिया कि वे इस बारे मे फैसला प्रधान मन्त्री पर छोडते हैं। प्रधान मन्त्री ने चण्डीगढ को सयुक्त राजधानी बनाने का ऐलान कर दिया। चण्डीगढ को केन्द्रशासित क्षेत्र बनाने का भी फैसला हो गया। पंजाब के लोगों ने यह दलील देकर कि वे अपनी राजधानी में हरयाणा के क्षेत्र मे से गुजर कर नहीं ग्राना चाहेंगे, प्रधान मन्त्री से खरड़ तहसील के पंजाब की ग्रोर लगते हुए 283 गांव पंजाब को दिये जाने का भी फैसला करवा लिया। हरयाणा से पूछा ही नही गया। यहां तक हुग्रा कि हरयाणा को भी तो चण्डीगढ पहुंचने के लिये लालड़ू डेराबस्सी (जो आज तक पंजाब में है) से गुजर

कर आना पडता है। वह इलाका उसी दलील के आधार पर हरयाणा को नही दिया गया। दोहरे माप दण्डों का इससे बड़ा प्रमाण और क्या होगा? पजाब के लोगों को चण्डीगढ पहुंचने के लिये हरयाणा के इलाके से एक फर्लांग चौड़ा रास्ता भी दिया जा सकता है। परन्तु यह विचार श्रीमती इन्दिरा गांधी के ध्यान में ही नही आया। यह विचार तो अकाली दिमाग की ईजाद है, सरदार स्वर्णसिंह पुराने अकाली जो ठहरे। तिस पर यह कि सरदार स्वर्णसिंह अपने इस नवीन विचार को ऐसे मामले में लागू करवा गये जहां उसकी कोई प्रासंगिकता ही नही है, कन्दूखेडा तो जाना माना हिन्दीभाषी गांव है। यदि उस समय हरयाणा को भी पूछ लिया जाता तो जब पजाब को इतना बड़ा खरड़ तहसील का हिन्दी भाषी इलाका शाह कमीशन के फैसले के खिलाफ दिया उसी समय फाजिल्का तहसील भी हरयाणा को दी जानी चाहिये थी, वह दी जा सकती थी। उल्टा फाजिल्का अबोहर का दावा तो बहुत मजबूत था क्योंकि शाह कमीशन उसे हिन्दी भाषी मान चुका था और वहा के रस्म रिवाज, चलन आदि बाकी फिरोजपुर जिले से भिन्न मान चुका था। पजाब अपनी अनुचित बात मनवाने में सफल और हरयाणा अपनी उचित बात मनवाने मे असफल इसलिये रहता आया है, क्योंकि [illegible] अपने दलों मे प्रभावशाली रहे है और वे सभी विधान सभा, लोक सभा और राज्य सभा मे अकालियों के समर्थन से ही निर्वाचित होते रहे हैं। इसलिये बडे विरोधी दल सदा अकालियो का समर्थन करते रहे हैं और उनके आन्दोलन से तग आकर सत्ताधारी दल शांति खरीदने के लिये लालायित रहा है। यह तथ्य श्रीमती इंदिरा गाधी ने 1970 में अपना पच फैसला देने से कुछ दिन पहले प्रो० शेरसिह को कहा और माना। हरयाणा के लोक सभा सदस्यों ने जब खरड़ तहसील का बडा भाग तथा चण्डीगढ पजाब को दिये जाने की पजाब पुनर्गठन विधेयक की दफा पेश हुई तो उसका विरोध किया, परन्तु जब बड़े विरोधी दल और कांग्रेस दोनों पक्ष में थे तो उनकी आवाज नक्कार खाने में तूती बन कर रह गई।

चण्डीगढ़

खरड़ तहसील के 283 गांव पजाब में मिलाने के बाद, पजाब के लिये चण्डीगढ को अपनी राजधानी के रूप मे मागने का रास्ता खुल गया। सितम्बर 1969 में स० दर्शनसिह फेरुमान ने चण्डीगढ पंजाब को दिये जाने के लिये आमरण व्रत शुरु कर दिया। हरयाणा की ओर से श्री उदयसिह मान ने भी आमरण व्रत मुकाबले पर कर दिया। प्रधान मन्त्री ने स्पष्ट घोषणा की, कि वे धमकियों और भूख हड़तालों के सामने झुककर कोई फैसला नहीं करेंगी, फैसला सम्बन्धित राज्यो की मन्त्रणा से ही होगा। इस आश्वासत को दोहराते हुए उन्होंने श्री उदयसिह मान को पत्र लिखा, और श्री उदयसिंह मान ने भूख-हडताल समाप्त कर दी। उसके करीब एक महीने के पश्चात् स० दर्शनसिह फेरुमान दम तोड़ गये। प्रधान मन्त्री टस से मस नही हुई, डटी रही। कुछ समय बाद सत फतहसिह ने आत्मदाह की धमकी देदी। हरयाणा ने भी लाखों लोगों का दिल्ली के इतिहास में एक अभूतपूर्व जलूस निकाला और शाह कमीशन के फैसले पर अमल करते हुए चण्डीगढ़ हरयाणा को देने की मांग की। हरयाणा के लोगों के रग ढंग देखकर सन्त फतहसिह समझ गये कि उनका खेल आसान नही इसलिए उन्होंने स० हरकिशनसिह सुरजीत और स० सोहनसिह बस्सी (पजाब सरकार के राजस्व मन्त्री) को सदेशा देकर प्रो० शेरसिह के पास भेजा। सन्त फतहसिह का यह प्रस्ताव था कि "यदि हरयाणा पंजाब को चण्डीगढ देना मान ले, तो अकाली दल (जिसके सन्त फतह सिह सिपहसालार थे) हरयाणा को फाजिल्का अबोहर का इलाका, एक साथ देने को तैय्यार है।" जब सन्त फतहसिह का यह प्रस्ताव श्रीमती इन्दिरा गान्धी को बताया गया, तो उन्होने जाच से प्रमाणित होने पर, पजाब को चण्डीगढ और हरयाणा को फाजिल्का अबोहर का इलाका देने का ऐलान कर दिया। प्रेस विज्ञप्ति का मसौदा तैय्यार करते समय प्रधानमन्त्री सचिवालय के अधिकारियो ने 24 अक्तूबर 1956 के कागजात ध्यान से नही पढे, इसलिये स० स्वर्णसिंह उनको गुमराह करने में सफल होगये और सिरसा तहसील तथा फाज़िल्का तहसील को जोड़ने वाले मुक्तसर तहसील के कन्दूखेड़ा गाव में से 1 फर्लांग चौड़ा रास्ता देने की बात मसौदे मे शामिल कर दी गई। कन्दूखेडा स्वयं हिन्दीभाषी गांव था, इसलिये रास्ता देने का सवाल ही पैदा नहीं होना चाहिए था। विज्ञप्ति छपते ही श्री इन्द्रकुमार गुजराल और प्रो० शेरसिह ने प्रधानमन्त्री के सामने विरोध प्रकट किया और आवश्यक संशोधन की बात कही। परन्तु उस मुकाम पर संशोधन करने की बात प्रधान मन्त्री ने नहीं मानी, और प्रो० शेरसिह को कहा "अब छोडिये, आप जो चाहते थे फाज़िल्का अबोहर, वह आपको मिल गया।"

पंजाब की अकाली सरकार के मुख्यमन्त्री जस्टिस गुरनामसिह ने फैसले का पुरजोर स्वागत किया और पंजाब भर में सरकारी तौर पर दीवाली मनाई। हरयाणा के लोगों ने अपना विरोध प्र.ट करते हुए प्रदेश भर में जलूस निकाले और पुलिस की गोलियों से 6 नवयुवक मारे गये। बाद मे हरयाणा ने फैसले को राष्ट्र के बड़े हित के सामने अपने छोटे हित को छोड़ते हुए, स्वीकार किया। शर्त यह थी, कि बहुत शीघ्र एक कमीशन का गठन होगा, जो चण्डीगढ और फाजिल्का अबोहर को छोड़कर बाकी इलाकाई मांगों पर विचार करके जल्दी अपनी रिपोर्ट देगा, और रिपोर्ट मिलने के शीघ्र बाद फाजिल्का अबोहर तथा दूसरे इलाके जो हरयाणा को वह कमीशन देगा, उन के साथ हरयाणा को हस्तान्तरित कर दिया जायेगा, जैसा कि पच फैसले के अनुच्छेद 9 में कहा गया है। पंजाब सरकार बहाने बनाकर आयोग के गठन को टालती रही, और केन्द्र सरकार ने भी टालमटोल की नीति अपना ली। चण्डीगढ को देने के लिये पाच साल की अवधि निश्चित की हुई थी।

ज्ञानी जैलसिंह की भूमिका

ज्ञानी जैल ने प्रधानमन्त्री के पंच फैसले को गलत और पंजाब के हितों के खिलाफ बताया। ज्ञानी जैलसिंह श्रीमती इन्दिरा गांधी को इस बात पर कायम करने में सफल हो गये कि पच फैसले का विरोध करके वे अकालियों को कटघरे में खडा कर देंगे और चुनावों में कांग्रेस को इसका बड़ा लाभ मिलेगा। उन्होंने खुलकर पंजाब के लोगों से कहा कि वे चण्डीगढ पंजाब को दिलवा देंगे और फाजिल्का अबोहर हरयाणा को नहीं देंगे। पजाब में हुए 1972 के चुनावों में कांग्रेस जीत गई और ज्ञानी जैलसिंह मुख्यमन्त्री बन गये।

फाजिल्का अबोहर के लोगों का उत्पीड़न और जोर जबरदस्ती

मुख्यमन्त्री बनते ही ज्ञानी जैलसिंह ने फाजिल्का अबोहर के इलाके के लोगों का उत्पीडन शुरु कर दिया। नहरों का पानी गाहे बगाहे बन्द करने लगे और पानी की मात्रा भी मनमाने ढग से घटाते रहे। सरकारी स्कूलों में हिन्दी के द्वारा शिक्षण का विकल्प समाप्त कर दिया। एक कक्षा में 10 और स्कूल में 40 विद्यार्थियों की मांग के फैसले की धज्जिया उड़ाते हुए, 100 विद्यार्थियों की मांग पर हिन्दी पढाने का प्रबन्ध करने की जिम्मेदारी निभाने से साफ इन्कार कर दिया। संविधान के अनुच्छेद 350 (ख) के अनुसार राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किये गये विशेष अधिकारी ने राष्ट्रपति को तीन बार अपना प्रतिवेदन लिखकर भेजा कि संविधान के अनुच्छेद 350 (क) के अनुसार भाषाई अल्पसंख्यकों को प्राथमिक शिक्षा उनकी भाषा में दी जाये, उसका पंजाब सरकार ने फाज़िल्का अबोहर के इलाके में खुले तौर पर उल्लंघन किया है। राष्ट्रपति के आदेश पर गृहमन्त्रालय ने पंजाब सरकार का ध्यान इस बात की ओर दिलाया, परन्तु पजाब सरकार ने इसकी कोई परवाह नही की। प्रो० शेरसिह ने जब इस सम्बन्ध में ज्ञानी जैलसिंह से बात की, तो उन्होंने जवाब दिया, कि वे फाजिल्का अबोहर के लोगो को हिन्दी तभी पढ़ायेंगे जब वह यह प्रस्ताव पास कर देंगे कि वे पंजाब में ही रहना चाहते हैं। प्रो० शेरसिह ने समझा, कि शायद यह बात मजाक में उन्होंने कही है, लेकिन वह हैरान रह गये जब उन्होंने उस इलाके के लोगो के शिष्टमण्डल के समक्ष अबोहर में यही बात दोहराई, और वह खबर समाचार पत्रो मे पढ़ी। प्रो० शेरसिह ने जब यह बात प्रधानमन्त्री को बताई तो उन्होंने भी हैरानगी जाहिर की। उत्पीडन और जोर जबरदस्ती से तग आकर अबोहर फाजिल्का के लोगों ने राष्ट्रपति तथा प्रधान मन्त्री को ज्ञापन के द्वारा प्रार्थना की कि उनका उत्पीड़न समाप्त करने के लिये उनके इलाके को भी चण्डीगढ़ की तरह केन्द्रशासित क्षेत्र बना दिया जाये। उनकी यह

बात तो नही मानी गई, परन्तु प्रधानमन्त्री ने कहा कि उनके उत्पीड़न की इजाजत नही दी जायेगी।

चण्डीगढ को पंजाब में मिलाने की 5 साल की अवधि समाप्त होने वाली थी, इसलिए ज्ञानी जैलसिंह ने प्रधानमन्त्री से मांग की कि चण्डीगढ़ पंजाब को ठीक समय पर दे दिया जाये और फाजिल्का अबोहर का इलाका पंजाब में ही रहने दिया जाए। जब प्रो० शेरसिंह सरकारी दौरे पर अबोहर फाज़िल्का के इलाके में गये तो 23 सितम्बर, 1974 को एक संवाददाता ने पूछा कि चण्डीगढ तो पंजाब में जा रहा है, फाजिल्का अबोहर का क्या होगा? प्रो० शेरसिंह ने कहा कि पंच फैसला तो एकमुश्त सौदा है। पंजाब को चण्डीगढ तभी मिलेगा जब हरयाणा को फाजिल्का अबोहर मिले। इस वक्तव्य पर पंजाब कांग्रेस के अध्यक्ष तथा मुख्यमन्त्री के साथ अखबारों में प्रो० शेरसिंह की बहस छिड गई। जब उन्होंने प्रधानमन्त्री से सम्पर्क किया तो उन्होंने दो टूक बात कहने की बात टाल दी। इस पर 10 अक्तूबर, 1974 को प्रो० शेरसिंह ने मन्त्री-मण्डल से त्याग-पत्र दे दिया (वक्तव्य की प्रतिलिपि तथा अखबारो की कतरने सलग्न हैं)। जब पजाब को जनवरी 1975 मे चण्डीगढ देने की बात भी [illegible] गई तो हरयाणा तथा फाजिल्का अबोहर के लोगो ने चैन की सास ली।

अकालियों का तथाकथित धर्मयुद्ध

मई 1980 मे पजाब की अकाली सरकार तोड दी गई। नये चुनाव के बाद अकाली अपनी सरकार नहीं बना सके, और उन्होने आन्दोलन की तैय्यारियां शुरु कर दी। आन्दोलन की शुरुआत तो 1981 में ही हो गई थी, परन्तु अप्रैल 1982 में जब श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सतलुज यमुना लिंक नहर की खुदाई का शुभारंभ किया तब अकालियों ने अपना आन्दोलन गरम कर दिया और उसे "धर्मयुद्ध" का नाम दिया। इलाकाई मसले पर उन्होंने ज्ञानी जैलसिंह से प्रेरणा ली, और मांग कर दी कि चण्डीगढ पंजाब को दिया जाये और फाजिल्का अबोहर हरयाणा को कभी न दिया जाये। सन्त फतहसिंह द्वारा 1970 में दी गई अपनी ही पेशकश से अकाली मुकर गये। वे अकालतख्त जैसे पवित्र स्थान पर किये हुए फैसले का निरादर करने पर तुल गये और अपने हस्ताक्षरों के अक्तूबर 1956 के दस्तावेज को भी भूल गये। उनकी "धर्म" की यही परिभाषा है क्या? पिछले तीन वर्षों में वे "अलग कौम" (अलग राष्ट्र) की बात करते रहे, स्वर्णमन्दिर में हथियार जमा करने और बेगुनाह लोगों को मरवाने को भी भारत सरकार का ही काम कहते रहे तथा श्रीमती इन्दिरा गाधी के कातिलों को सरोपे भेट करते रहे। जब सन्त लोंगोवाल ने राष्ट्र की एकता और अखंडता में आस्था व्यक्त की और अकाली मांगों का हल संविधान के दायरे में खोजने की बात कही तथा हिंसा और आतकवाद की निन्दा की तो सारे राष्ट्र ने उनको बधाई दी। सन्त कहलाते हुए भी वे हरयाणा के मामले में तंगदिली से ऊपर नही उठ पाये। अब वे हमारे बीच में नहीं रहे और एक महान् उद्देश्य के लिये बलिदान हुए इसलिये हम हृदय से उन्हें अपनी श्रद्धाञ्जलि पेश करते हैं।

तीसरा दौर

इलाकाई मसले के सम्बन्ध मे अपने आन्दोलनो के तीसरे दौर में अकाली चण्डीगढ प्राप्त करने में सफल हो गये, और फाज़िल्का अबोहर के जुड़े हुए मामलों को खटाई में डालने मे भी, जो कि नए समझौते के अनुसार एक आयोग को फैसले के लिये सौपा गया। उन्होंने चण्डीगढ से जुडा होने पर भी फाजिल्का अबोहर का नाम समझौते में नही आने दिया। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने हमेशा यह कहा कि क्योंकि इलाकाई मसले का प्रभाव सीधा हरयाणा पर पडता है, इसलिये उसके सम्बन्ध में कोई फैसला भी हरयाणा को शामिल किये बिना और उसको सुने बिना नही किया जायेगा। नया फैसला होते समय तो हरयाणा तस्वीर से बिल्कुल गायब कर दिया गया। हमने सक्षेप में उन घटनाओं का उल्लेख किया है जिनके कारण देश आज की स्थिति पर पहुचा।

हरयाणा के हानि लाभ का लेखा जोखा

शाह आयोग

लाभ	हानि
खरड़ तहसील चण्डीगढ समेत	1- फाजिल्का तहसील 2- लालडू डेरा बसी का इलाका 3- सुनाम सब तहसील के 27 गांव

अकाली आन्दोलनों का पहिला दौर

लाभ	हानि
कुछ नही	1- खरड़ तहसील के 283 गांव 2- चण्डीगढ़ पंजाब हरयाणा की सयुक्त राजधानी और केन्द्र-शासित क्षेत्र

दूसरा दौर

लाभ	हानि
फाज़िल्का तहसील के 107 गाव और २ कस्बे	चण्डीचढ़ राजधानी परियोजना तथा चण्डीगढ के केन्द्रशासित क्षेत्र के 20 गांव

तीसरा दौर

लाभ	हानि
चण्डीगढ के बदले में दिये जाने वाले इलाके (मैथ्यू आयोग द्वारा)	चण्डीगढ राजधानी परियोजना तथा केन्द्रशासित क्षेत्र के 20 गाव

शुद्ध परिणाम

जहां तक हरयाणा का प्रश्न है, शाह आयोग की सिफारिश तथा श्रीमती इन्दिरा गान्धी के पंच फैसले निष्प्रभाव, व्यर्थ और रद्द कर दिये गये।

थोड़ी सी आशा

नये समझौते में एक आशा का पुंज है कि इसको मानने के लिये अकाली तथा भारत सरकार वचनबद्ध हैं। परन्तु अकालियो के साथ तो एक मुश्किल हमेशा रहती है कि वे किसी बात पर भी जमते नही, उन्हें न हस्ताक्षर बाँधते है न अकाल तख्त और न स्वयं दी गई पेशकश और वचन। उन्होने अभी से गृह मन्त्रालय के वरिष्ठ लोगों को ऊँची-नीची बाते कहनी शुरु कर दी हैं। उनसे तो प्रधानमन्त्री ही निपटे और बाँध सके तो बाँधे। प्रधानमन्त्री क्योकि आयोग का फैसला मानने के लिये वचनबद्ध हैं इसलिये आशा बन्धती है कि न्यायमूर्ति के द्वारा हरयाणा को न्याय मिल सकेगा।

कुछ भटकाने वाली बाते

पजाब में बसे हिन्दीभाषी गांवों के लोगो की भाषा का निर्णय करने के लिये पजाब के कुछ मित्र बन्धुओं ने 1981 की जनगणना की वकालत शुरु की है। हमने तथ्य देकर यह साबित किया है कि पजाब का शासन चलाने वाले अकाली और काग्रेसी, पजाबी सूबा बनने के बाद फाजिल्का तहसील तथा दूसरे हिन्दी भाषी इलाकों का उत्पीडित करने में लगे हुए है और वे सब साधनो का उपयोग करके इन इलाकों को पजाब में रखने के लिये एक दूसरे से बढकर लगे हुए हैं। मैथ्यू आयोग बनने के बाद भी उत्पीडन का सिलसिला जारी है। ये प्रशासक सविधान के अनुच्छेद 350 (क) की अवहेलना लगातार 19 साल से करते आ रहे हैं। ऐसे लोगो के शासन के रहते जनगणना होगी, तो उसमे कैसी तस्वीर आयेगी, उसका अनुमान लगाना कठिन नही। 1961 में जब जनगणना हुई. तब पजाब एक था, और दोनो पजाबी और हिन्दी भाषी इलाको का सरकार मे साझा था। वातावरण भी तनाव रहित और हर प्रकार से सामान्य था, इसलिए जनगणना का काम ठीक हुआ। 1971 की जनगणना के जो आँकड़ आये हैं उनकी तुलना 1961 के आँकड़ो से करे तो पता लगेगा कि पंजाब की बाकी तहसीलों में तो तस्वीर वैसी की वैसी है लेकिन

फाजिल्का तहसील में तस्वीर उल्टी हो गई है। 1961 मे वहाँ हिन्दी भाषी लोगों की संख्या 60% से अधिक थी और पंजाबी भाषी लोगों की लगभग 40% थी। 1971 में हिन्दी भाषियों की सख्या 42% रह गई और पजाबी भाषियों की 58% हो गई। 1981 की तस्वीर इससे खराब ही होगी, इसमे कोई सन्देह नहीं। वैसे वे आँकड़े अभी उपलब्ध नही हो पाये है। पजाब का पुनर्गठन तो 1966 में हुआ था, इसलिये 1961 की जनगणना ही एकमात्र प्रासगिक दस्तावेज हो सकता है। 1981 की जनगणना मे तो पूरी छलयोजना चली है, ऐसी घड़ी घडाई जनगणना को कैसे आधार बनाया जा सकता है। यदि थोड़ी देर के लिये तर्क के लिये मान भी लिया जाये कि 1981 की जनगणना ठीक थी तो भी यदि 1981 को आधार मान लिया तो यह एक ऐसी नजीर और मिसाल बन जायेगा जिसको लेकर सारे देश में हलचल मच जायेगी। ऐसा किया गया तो फिर सब प्रदेशों की सीमाए प्रत्येक दस वर्ष के बाद बदलनी पड़ेगी, जैसे विधान सभा और लोक सभा के हल्के बदले जाते थे। अब तो वह काम भी इस शताब्दी के लिये बन्द कर दिया गया है।

शाह आयोग के प्रतिवेदन ने इस मनघड़न्त कथा और भ्रम को भी उखाड़ फेका है कि पश्चिमी पजाब से आये हुए विस्थापितों की भाषा पजाबी मान लेनी चाहिये। विश्वविख्यात भाषाविद् ग्रियरसन ने भारत भर का भाषायी सर्वेक्षण करते समय यह स्पष्ट कर दिया था कि पश्चिम पजाब के लोगो की भाषा 'लहन्दा' और 'जटकी' है, जो सिन्धी के अधिक निकट, पजाबी तो केवल पूर्वी पंजाब के कुछ ज़िलों की भाषा है। इसीलिये 1911, 1921 और 1931 की जन गणनाओं में पश्चिम पजाब के लोगों की भाषा 'लहन्दा' और 'जटकी' ही अकित की जाती रही। वैसे भी सीमावर्त्ती गाँवों के लोग जो बोली बोलते हैं वह हमेशा एक मिश्रित बोली या खिचडी बोली होती है जिसमें दोनों भाषाओं के शब्द रहते है। इसलिये किसी भी भाषाविद् के लिये यह सम्भव नही कि वह भाषा के बारे में सही निर्णय कर सके। भाषा का निर्णय तो गांव के लोग स्वयं ही कर सकते हैं। माननीय कमीशन के पिछले दिनों दिये गये वक्तव्य से हम यही समझ पाये हैं कि गांव की भाषा जानने के लिये वे गांव के लोगों से पूछकर ही उनकी भाषा के सम्बन्ध में निश्चय कर पायेंगे।

हमारी माँगें

हम अपनी मांगे फाजिल्का तथा उससे जुड़े हुए गांवों तक ही सीमित रखते यदि पंजाब को केवल चण्डीगढ़ राजधानी परियोजना ही दी जाती। परन्तु चण्डीगढ़ के साथ पजाब को जोड़ने के लिए खरड तहसील के दो-तिहाई भाग से भी हरयाणा को वंचित कर दिया गया और वह इलाका पजाब को दे दिया गया। इतना बड़ा इलाका हरयाणा की सुनवाई किये बिना, और सलाह किये बिना ही पंजाब को दे दिया गया, जबकि शाह कमीशन के फैसले के बाद वह इलाका हरयाणा का भाग बन चुका था। वास्तविकता तो यह है कि हरयाणा को चण्डीगढ के बदले में ही नही, बल्कि चण्डीगढ़ दिये जाने के लिए खरड़ का जो इलाका दिया गया उसके बदले में भी इलाका मिलना चाहिए। चाहिये तो यह था कि जब खरड़ तहसील का इलाका पजाब को दिया उसी समय हरयाणा को भी उसके बदले में इलाका दिया जाता। कभी न देने से तो देर मे देना भी अच्छा ही है। खरड़ तहसील के इलाके जो पजाब को दिये गये उनको चण्डीगढ़ के हिसाब मे ही जमा करना चाहिये, क्योंकि यदि वे इलाके नही मिलते तो चण्डीगढ पजाब को मिल ही नही सकता था, क्योंकि तब चण्डीगढ पंजाब के साथ जुड़ ही नही सकता था। इसलिये चण्डीगढ के बदले में हरयाणा को इलाका देते समय इस तथ्य को ध्यान मे रखना जरूरी है।

अकालियों समेत पंजाब के नेता बार बार यह मानते रहे हैं कि डेरा बस्सी का इलाका और सुनाम सब तहसील के 27 गाँव हिन्दी भाषी हैं। फाजिल्का तहसील के साथ इन इलाकों को दिए जाने से भी हरयाणा की क्षतिपूर्ति तो नहीं होती परन्तु इससे पूरा न्याय न सही न्याय की झलक तो मिल सकेगी।

1970 के श्रीमती इन्दिरा गांधी के पच फैसले में चण्डीगढ़ तथा फाजिल्का अबोहर छोड़कर दूसरे इलाकों के निर्णय के लिए एक आयोग के गठन का वायदा किया गया था, जैसा कि नये समझौते में भी आश्वासन दिया गया है। परन्तु 15 साल बीतने पर भी श्रीमती इन्दिरा गांधी के आश्वासन के बाद भी उस आयोग का गठन नहीं हुआ। हरयाणा सरकार भी लिख लिखकर थक गई, परन्तु क्योंकि पजाब आयोग का गठन नही चाहता था, इसलिए नही हुआ। हमे डर है कि 26 जनवरी 1986 को जब पजाब को चण्डीगढ़ और हरयाणा को उसके बदले मे इलाका मिल जायेगा, तो पंजाब दूसरे आयोग के गठन में रुचि लेगा। हिमाचल प्रदेश तो इस बार समझौते से वैसे ही बाहर रखा गया है। इसलिये केवल हरयाणा की माग पर दूसरे आयोग का गठन हो सकेगा, इस पर विश्वास नही होता। यह दूसरा कारण है कि मैं फाजिल्का तहसील और उसके साथ लगते मुक्तसर तहसील के गावो के साथ साथ ही लालडू बस्सी के इलाके और सुनाम सब तहसील के 27 गाव (जिनको पजाब के सभी दलो के नेताओं ने हिन्दी भाषा भाषी माना हुआ है) भी हरयाणा को दिये जाने की प्रार्थना कर रहा हूं। मैं जानता हूँ कि इतने से भी हरयाणा की क्षतिपूर्ति सही मायने में नही होगी परन्तु नाम के लिये तो क्षतिपूर्ति होगी ही।

सक्षेप मे हमारी माँग है कि चण्डीगढ राजधानी परियोजना तथा खरड तहसील के 300 गाव जो चण्डीगढ को पजाब के साथ जोडने के लिये दिए गये, उसकी क्षतिपूर्ति के लिये बदले मे, पूरी फाजिल्का तहसील तथा उससे जुड़े हुए मुक्तसर तहसील के 95 गांव, लालडू बस्सी का इलाका तथा सुनाम सब तहसील के 27 गांव हरयाणा को दिये जाये। अकालियो ने अपने आन्दोलनों के तीन दौरों मे हरयाणा को जो क्षति पहुँचाई, यह उसका मुआवजा तो नही हो सकता, परन्तु दिल की कुछ तसल्ली जरूर होगी।

हमने सक्षेप में पूरी स्थिति माननीय कमीशन के सामने सही परिप्रेक्ष्य में रखने का पूरा प्रयास किया है। हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष, माननीय कमीशन के सामने जो भी आवश्यक स्पष्टीकरण इस सम्बन्ध में आवश्यक हों, वे तथा अन्य सम्बन्धित जानकारी देने लिये उपस्थित रहेंगे।

धन्यवाद सहित।

भवदीय

प्रो० शेरसिंह

ति० 14 सितम्बर 1985 — अध्यक्ष, हरयाणा रक्षा वाहिनी

डा० यज्ञवीर नागपुर विश्वविद्यालय द्वारा आमन्त्रित

डा० यज्ञवीर प्राध्यापक सस्कृत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, को नागपुर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित "All India Seminar on Post Independence Sanskrit Literature" पर बोलने के लिए आमन्त्रित किया गया है। यह महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय एवं संस्कृत विभाग के लिए गौरव का विषय है।

इस विद्या गोष्ठी का आयोजन यू० जी० सी० के अनुमोदन पर नागपुर विश्वविद्यालय का संस्कृत विभाग कर रहा है तथा सम्पूर्ण भारत के प्रत्येक विश्वविद्यालय से एक-एक विद्वान् को इस विद्या गोष्ठी में बोलने के लिए आमन्त्रित किया गया है। इस विद्यागोष्ठी का सम्पूर्ण व्यय नागपुर वि० वि० वहन करेगा। डा० यज्ञवीर बधाई के पात्र हैं। जिन्हें अखिल भारतीय स्तर की विद्यागोष्ठी में भाग लेने के लिए आमन्त्रि किया गया है।

केदार सिंह आर्य

ऋषि सन्देश

आर्यसमाज की मान्यताओं के कुछेक :—

१. ईश्वर—जिसके गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप सत्य ही हैं, जो केवल चेतनमात्र वस्तु है, तथा जो अद्वितीय, सर्वशक्तिमान्, निराकार, सर्वत्र-व्यापक, अनादि और अनन्त आदि सत्य गुण वाला है और जिसका स्वभाव अविनाशी, ज्ञानी, आनन्दी, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु और अजन्मादि है, जिसका कर्म जगत् की उत्पत्ति, पालन और विनाश करना तथा सर्व जीवों को पाप पुण्य के फल ठीक-ठीक पहुंचाना है, उसको ईश्वर कहते हैं।

२. पुण्य—जिसका स्वरूप विद्यादि शुभ गुणों का दान और सत्य-भाषणादि सत्याचार का करना है उसको पुण्य कहते हैं।

३. पाप—जो पुण्य से उल्टा और मिथ्या भाषणादि करना है उसको पाप कहते हैं।

प्रार्थना—अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिए परमेश्वर वा किसी सामर्थ्यवान् पुरुष से सहाय लेने को प्रार्थना कहते हैं।

४ उपासना—जिससे ईश्वर ही के आनन्द स्वरूप में अपने आत्मा को मग्न करना होता है, उसको उपासना कहते हैं।

यज्ञ—उसको कहते हैं जिसमें विद्वानों का सत्कार यथायोग्य शिल्प अर्थात् रसायन जो पदार्थ विद्या उससे उपयोग लेना और शुभ गुणों का दान, अग्निहोत्रादि जिनसे वायु, वृष्टि, जल, औषधि की पवित्रता करके सब जीवों को सुख पहुंचाना है उसको यज्ञ कहते हैं।

५. पचायतन पूजा—जीते माता, पिता, आचार्य, अतिथि और परमेश्वर का यथायोग्य सत्कार करना है उसको पचायतन पूजा कहते हैं।

६. पूजा—जो ज्ञानादि गुण वाले का यथायोग्य सत्कार करना है उसको पूजा कहते हैं।

७. अपूजा—जो ज्ञानादि रहित जड़ पदार्थ और जो सत्कार के योग्य नहीं है, उसका जो सत्कार करना है वह अपूजा है।

८. जड़—जो वस्तु ज्ञानादि गुणों से रहित है, उसको जड़ कहते हैं।

९. चेतन—जो पदार्थ ज्ञानादि गुणों से युक्त है उसको चेतन कहते हैं।

बच्चों का निर्माण—माता, पिता, आचार्य ही करते हैं। कुल पुरोहित तो होता ही नहीं और संन्यासी बच्चों में उपदेश नहीं करते।

१०. परमात्मा जीवों के कर्मों का बहीखाता नहीं बनाता बल्कि कर्मों को ज्ञान में धारण करना है यथासमय जीवों को फल के रूप में देता है।

११. अग्निहोत्र से देव पूजा नहीं होती, और भूतों (अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश) की पूजा आर्य लोग कभी नहीं करते। हवन से केवल जल, वायु की शुद्धि होती है। घर में प्रातः सायं दो समय ही हवन करना चाहिए, जो नहीं करता वह पापी है। कभी कभार समाज में यजमान बनना और वहां खड़े होकर आशीर्वाद देते हैं, उससे कुछ लाभ नहीं।

१२. यज्ञमय जीवन—अपने मन, वचन, कर्म को वेद रीति से करना ही यज्ञमय जीवन है।

१३ आर्यावर्त्त देश—हिमालय, विन्ध्याचल, सिन्धु नदी और ब्रह्मपुत्र नदी, इन चारों के बीच और जहां तक इनका विस्तार है, उनके मध्य में जो देश है उसका नाम आर्यावर्त्त है।

जब तक वादी प्रतिवादी होकर प्रीति से वाद व लेख न किया जावे तब तक सत्यासत्य का निर्णय नहीं हो सकता। इसीलिए सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद व लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है। यदि ऐसा न हो तो मनुष्य जाति को उन्नति कभी न हो सके।

१४. नमस्ते—मैं तुम्हारा मान्य करता हूं।

यही सज्जनों की रीति है कि वे अपने पराये दोषों को दोष और गुणों को गुण जानकर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग करें।

सत्यार्थ-प्रकाश अनुभूमिका १४ समु०

सन्देशवाहक—देसराज सीरवाट
६० इन्दिरा कालोनी, रोहतक-१२४००१

झाड़सा में नसबन्दी हेतु प्राप्त दान सूची

१.	चौ० खजानसिंह एडवोकेट सरपंच झाड़सा	१५१
२.	चौ० सतपाल जी आर्यसमाज मन्त्री जैकम्पुरा	१५१
३.	गोल्डन उद्योग झाड़सा	११३
४.	आर्यसमाज न्यू कालोनी गुड़गांवा	१०१
५.	,, जैकम्पुरा ,,	१००
६	मुन्शीराम जी सचदेवा प्रधान आ. स. जै.	५१
७.	आर्यसमाज अर्जुननगर गुड़गांव	५०
८.	,, भीमनगर ,,	५०
९.	,, माडल टाउन ,,	५०
१०.	,, शिवाजी नगर ,,	५१
११.	पं० निहालसिंह झाड़सा गुड़गांवा	२१
१२.	मा० कन्हैयालाल जी मन्त्री केन्द्रीय आर्य सभा गुड़गांवा	२१
१३.	म० चन्दनसिंह जी प्रधान आर्यसमाज शिवाजी नगर	२१
१४.	चौ० सुरतसिंह जी जेलदार झाड़सा गुड़गांवा	१५
१५.	चौ० हुकमसिंह ,, ,, ,,	१०
१६.	मा० दिलीपसिंह ,, ,,	१०
१७.	श्री छत्तरसिंह बोहरा वजीराबाद ,,	१०
१८.	श्री गुरदियाल सिंह ,, ,,	१०
१९.	चौ० बृजलाल झाड़सा गुड़गांवा	११
२०.	सतीश मराठा हीरानगर ,,	१०
२१	राज निर्भीक गुडगांव गांव गुड़गांवा	१०
२२	पं० झाज्जुराम झाड़सा ,,	२०
२३.	अतरसिंह ,, ,,	१०
२४.	रमेशचन्द किलोड़ झाड़सा ,,	१०
२५.	गगाराम ,, ,,	१०
२६.	करतार ठाकरान ,, ,,	१०
२७.	धर्मपाल ,, ,,	१०
२८.	ओमप्रकाश ,, ,,	१०
२९.	सुनील ,, ,,	८
३०.	चौ० बलबीरसिंह ,, ,,	५
३१.	चौ० सुरेन्द्रसिंह ,, ,,	५
३२.	पीताम्बर सैनी ,, ,,	५
३३.	जगदीश ,, ,,	५
३४.	भगतराम ,, ,,	५
३५.	बृजलाल सैनी ,, ,,	२
३६.	विजय कौशिक ,, ,,	५
३७.	चौ० गोपीचन्द जी गहलोत झाड़सा गुड़गांवा	१००
	योग	१२३६

शिक्षा क्षेत्र में एकरूपता लाने के लिए सम्मेलन

दिनांक पांच-छः अक्टूबर, १९८५ को भारतवर्ष के सभी गुरुकुलों को एक सूत्र में बांधने के लिए दयानन्द वेद विद्यालय ११९ गौतमनगर, नई दिल्ली-४९ मे श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ की ओर से एक सम्मेलन रखा गया है। जिसमें सभी गुरुकुलों के आचार्य महानुभाव या प्रतिनिधि ही भाग ले सकेंगे।

वर्तमान समय मे यह आवश्यक हो गया है कि सर्वत्र शिक्षण संस्थानों में आर्ष पाठ्य प्रणाली प्रारम्भ की जाए। श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ के माध्यम, से महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सभी गुरुकुलों का सम्बन्ध स्थापित किया जा सकेगा।

मार्ग निर्देश :— बसों से आने वाले महानुभाव अन्तर्राज्यीय बस अड्डा कश्मीरी गेट दिल्ली मे डी टी० सी० को मालवीय नगर जाने वाली बस न० ५०३ पकड़कर युसुफ सराय उतरें।

रेलवे स्टेशन से आने वाले फौव्वारे से चलने वाली बस न० ५०२ से सफदरजग मेडीकल उतरें। वहा से युसुफ सराय अगला स्टॉप है।

दयानन्द वेद विद्यालय वहीं निकट ही सुदर्शन सिनेमा के पास है।

वेदानन्द वेदवागीश
प्रस्तोता
श्रीमद्दयानन्द विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर (रोहतक)।

जींद में वेद-प्रचार सप्ताह तथा कार्यकर्ता बैठक

वेद प्रचार मण्डल जींद और स्थानीय तीनों समाजों के तत्त्वावधान में २४ सितम्बर से २९ सितम्बर तक वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है।

रात्रिकालीन आयोजन—	समय रात्रि ८ से १० बजे तक
२४ से २८ तक	पंजाबी धर्मशाला जींद में
प्रातः के आयोजन—	प्रतिदिन ७ से ९ तक
	बारी-२ से तीनों आर्यसमाजों में
प्रतिदिन का वेदोपदेश—	स्वामी जगदीश्वरानन्द जी, दिल्ली
प्रतिदिन भजन—	श्री बनारसीलाल जी भजनोपदेशक
	आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

विशेष :— २९ ता० को रात्रि-कार्यक्रम न होकर सुबह ८ से ११ बजे तक पंजाबी धर्मशाला में ही होगा। मध्याह्नोत्तर २ से ४ बजे तक वेद प्रचार विषयक जिला बैठक होगी जिसमें जिले की समाजों के वरिष्ठ पदाधिकारी अवश्य पहुंचे। इस बैठक में प्रो० शेरसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा और पूज्य स्वामी ओमानन्द जी का बहुमूल्य मार्गदर्शन मिलेगा। ये दोनों आर्यनेता २९ तारीख को प्रातःकालीन सभा को भी सम्बोधित करेंगे।

—चन्द्रसिंह शास्त्री
संयोजक वेद प्रचार मण्डल, जींद।

श्री घूडमल आर्य पुरस्कार वेदमार्तण्ड आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति को

हिण्डोन सिटी। स्थानीय आर्यसमाज हाल में ३० अगस्त से ६ सितम्बर, १९८५ (रक्षाबन्धन से श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक) वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत यजुर्वेद पारायण यज्ञ का सफल आयोजन स्वामी ओमानन्द जी के आचार्यत्व में सोत्साह सम्पन्न हुआ। श्री आर्य मुनि वानप्रस्थी ने व्यवस्था का भार सुचारु रूप से वहन किया। श्री सत्यपाल जी सरल के हृदयग्राही भजनोपदेश भी हुये।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर श्री प्रहलाद कुमार आर्य द्वारा अपने पूज्य पिताजी की पुण्य स्मृति में स्थापित "श्री घूडमल आर्य पुरस्कार" आर्यजगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति वेदमार्तण्ड आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति को उनके सर्वथा अछूते व अनूठे ग्रन्थ "वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त" तीन खण्ड पर ससम्मान समारोह पूर्वक भेंट किया गया। उस में अभिनन्दन-पत्र, एक शाल एवम् १५०१/- रुपये की राशि समर्पित की गई। इस समारोह का सफल संचालन डा० ओम्प्रकाश जी वेदलंकार एम०ए०, पीएच०डी० हैड आफ दि डिपार्टमैंट हिन्दी भरतपुर वालों ने किया।

इस भव्य समारोह में निकट की अनेकों आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों ने भी आचार्य जी को माल्यार्पण कर नागरिक अभिनन्दन में भाग लिया। अन्त में प्रीतिभोज का आयोजन किया गया।

सचिव, श्री घूडमल आर्य पुरस्कार समिति,
आर्यसमाज, हिण्डोन सिटी (राज०)

सम्पादक के नाम पत्र

विशेषांक पसन्द आया

सभा के मुखपत्र "सर्वहितकारी" का "श्रावणी वेदांक" मिला। वास्तव में यह अङ्क पठनीय एवं ज्ञानवर्द्धक है। इसमें सभी लेख अच्छे तथा प्रेरणादायक थे। सम्पादकीय लेख का तो अपना अलग ही महत्त्व रहा। वास्तव में यह पत्र वैदिक सिद्धान्तों एवं महर्षि दयानन्द जी के मिशन को पूरा करने के लिए कृतसंकल्प है। इस पत्र में विशेषांकों की बड़ी धूम रहती है। यह अङ्क भी अपनी उसी परम्परा के अनुरूप है। विशेषांक के इस सफल प्रकाशन के लिए बधाई स्वीकार करें।

रामकुमार आर्य
आ० स० दुल्लागढ़
गोहाना (सोनीपत)

श्री नवाबसिंह परिवार सहायतार्थ दान सूची

7-9-85 तक का योग :	4657-00
मन्त्री आर्यसमाज मुवाना, जि० जींद	51-00
„ „ नरवाना „ „	31-00
„ „ सालवन, जि० करनाल	31-00
अकालगढ़, जि० जींद निवासी ORP श्री रणबीरसिंह पूर्विया (अरुणाचल)	100-00
श्री सन्तराम आर्य आर्यसमाज चिड़िया जि० भिवानी	11-00
श्री राममेहर एडवोकेट रोहतक	101-00
आर्यसमाज जैकबपुरा गुड़गांव छावनी	134-00
स्त्री आर्यसमाज गुड़गांव छावनी	66-00
श्री भीष्म प्रतापसिंह शास्त्री, ग्राम भापड़ोदा, जि० रोहतक	10-00
श्रीमती कविता पिलानी (राज०)	40-00
प्रो० सत्यवीसिंह विद्यालंका हिसार	101-00
मुख्याध्यापक गुरुकुल गदपुरी, जि० फरीदाबाद	20-00
ए० सी० आर० के० मलिक हैदराबाद	100-00
श्री कुन्दनलाल जी वद्य लुधियाना	10-00
श्री राजेन्द्र जी अबोहर	10-00
मन्त्री आर्यसमाज न्यू कालोनी गुड़गांवा	1000-
रलीराम लक्ष्मीदेवी ट्रस्ट रोहतक	101-00
आचार्य गुरुकुल डिकाडला (करनाल)	101-00
अब तक का योग	6665-00

निम्नलिखित दोनों राशियां 202 रु० सीधे श्री नवाबसिंह के परिवार के परिवार को भेजी गई हैं।

श्रीमती शकुन्तला दीक्षित माडल टाउन दिल्ली	101-00
कार्यालयाध्यक्ष गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ	101-00

दमनचक्र से भयभीत होकर पंच व सरपंच हरियाणा भागे

सिरसा, 14 सितम्बर (दिव्यकार): अबोहर-फाजिल्का को हरियाणा में मिलाए जाने के समर्थन में हुई हरियाणा सीमा विवाद समिति की बैठक के बाद उस क्षेत्र के लोगों पर पजाब प्रशासन द्वारा दमनचक्र और भी तेज कर दिया है।

इस बात की जानकारी इस क्षेत्र के कुछ गांवों से भाग कर यहां अपने रिश्तेदारों के पास रह रहे पंचों, सरपंचों ने दी। इन पंचों व सरपंचों ने अपना नाम गुप्त रखने का अनुरोध करते हुए कहा कि वे पंजाब प्रशासन के दमनचक्र से भयभीत होकर यहां आए हैं। उन्होंने यह भी बताया कि बी डी ओ तथा पंचायत अधिकारी पुलिस की मदद से कुछ पचों व सरपंचों को अगवा करके ले गए हैं और उन पर पंजाब के पक्ष में प्रस्ताव पास करने का दबाव डाला जा रहा है। इन लोगों ने केन्द्र सरकार से अनुरोध किया है कि वह इस सम्बन्ध में हस्तक्षेप करे।

भूल-सुधार

सर्वहितकारी के गतांक में "सभा के भजनोपदेशक पं० सुमेरसिंह संकट में" शीर्षक से एक शोक समाचार प्रकाशित हुआ है। उक्त शोक समाचार सभा के उपदेशक पं० सुरेशकुमार शास्त्री के लिखित पत्रानुसार प्रकाशित किया गया था।

परन्तु अब पं० सुरेशकुमार शास्त्री ने स्वयं ही पत्र लिखकर सूचना दी है कि उन्होंने [illegible] भेजी थी। जांच करने पर पता चला है कि पं० सुमेरसिंह जी का [illegible] पर ही है और उस की पत्नी भी जीवित है। भ्रान्तिवश समाचार को प्रकाशित होने पर मुझे खेद है।

—सभामन्त्री

भारत माता की गुहार......

प्रधानमन्त्री तथा शिक्षामन्त्री से

(ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावचस्पति)

मेरे प्रिय पुत्रो ! अपने उज्ज्वल इतिहास के पन्नों पर दृष्टिपात करके तो देखो कि मेरा उत्कृष्ट और मनोहर स्वरूप अरबों वर्षों तक कैसे अक्षुण्ण बना रहा, और उसकी ओर कोई पापी दुरात्मा कुदृष्टि से देखता तो ऐसी पटकी खाता कि कभी फिर कमीनी और नीच हरकतों की ओर मुंह न उठाता।

इसका एकमात्र कारण रहा कि मेरे सुपुत्र राजा महाराजा और सम्राट् राष्ट्र के चरित्र निर्माण की ओर ध्यान देते थे। इसके लिए आदर्श माता आदर्श पिता तथा आदर्श आचार्य का होना नितान्त आवश्यक है। भारतीय संस्कृति का मूलाधार था—

सारे सहज गुणों का सार, सादा जीवन उच्च विचार।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भावी भारत का यह स्वप्न देखा था, और इसीलिए उन्होंने खादी के पहनावे और सादे रहन सहन पर बल दिया था। पूज्य बापू जी चाहते थे कि स्वतन्त्र भारत के कर्णधार अपनी आवश्यकताओं को कम करके सादे रहन सहन का पाठ पढाये, और इसके बिल्कुल ही विपरीत हुआ।

सत्ता में आते ही हमारे मन्त्रीगण अपनी शान शौकत को बढाने लगे। इतना ही नहीं उन्होंने आकाशवाणी तथा बाद में दूरदर्शन के द्वारा अश्लील चित्रों से चरित्र को दूषित करने वाले प्रोग्रामों की भरमार करनी आरम्भ कर दी।

स्वराज्य प्राप्त होने तक हमारे देशवासियों की यह भावना थी कि गुलामी को जंजीरों से जकड़ी मुझ भारत माता की चारित्रिक छवि के धूमिल होने का कारण अंग्रेज हैं। आजादी प्राप्त होने का समारोह जब धूमधाम से इण्डिया गेट पर मनाया जा रहा था और मेरे हजारों सपूत रिकार्ड भरी धुन के साथ मस्ती से गा रहे थे—

आज हुआ यह पुण्य प्रभात, आज हम स्वतन्त्र हैं, आज हम स्वतन्त्र हैं-

आर्यसमाज के उपदेशक लोग तो अपनी भावनाओं के साथ हर्ष विभोर हो उठे थे। अपनी भावनाओं को जनता के समक्ष उपस्थित करते हुए बोल उठते थे—

अपनी भाषा अपना भेष, अपनी संस्कृति अपना देश।

धीरे धीरे समय बीतता गया और मेरी आशाओं पर पानी फिरता गया। राष्ट्र के जिन नेताओं के हाथ में स्वराज्य की बागडोर आई, उन्होंने योरोप के स्वप्न देखने आरम्भ कर दिये। क्लबों तथा बड़े बड़े होटलों का निर्माण होना आरम्भ हो गया। योरोप की भांति ही ये नेता लोग तथा इनकी देखा देखी पैसे वाले लोग होटलों तथा क्लबों में मौज-मस्ती करने लगे, और इन्होंने नाचने गाने को इतना महत्त्व दिया कि इसी को भारतीय संस्कृति मान बैठे।

प्राचीन आचार विचार की मान मर्यादाओं को तो इन्होंने एक ओर ताक पर रख दिया। केवल दिखलाने के लिए तो सेंसर बोर्ड रहा परन्तु उसने कभी यह नहीं सोचा कि इन फिल्मों तथा नाटकों से चरित्र निर्माण होगा या शनैः शनैः विनाश और पतन के बीच फूटकर नव युवक तथा नवयुतियों को विषय रूपी वृक्ष के फलों का उपभोग करना होगा। जिस कारण वे समय से पूर्व ही शक्तिहीन होकर स्वावलम्बन का पाठ न पढ सके।

जब जब नये नये प्रधानमन्त्री और शिक्षामन्त्री आते रहे और यह आश्वासन देते रहे कि शिक्षा और इतिहास में परिवर्तन हुए बिना देश की प्रगति नहीं हो सकती।

मैं रोती रही चिल्लाती रही कि कहां है अब वह—

"सा प्रथमा संस्कृतिः विश्ववारा" ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास की वे प्राचीन मर्यादायें कहां लुप्त हो गईं, जिन पर राष्ट्ररूपी भवन को खड़ा किया जाता था, और यह चौमंजिला भवन इतना मजबूत और आकर्षक होता था कि हम इसे कहते थे—सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्।

किसी ने भी ध्यान नहीं दिया कि जब भवन की नींव ही कमजोर होगी तो चारमंजिलें बननी तो दुष्कर हैं पहली मंजिल ही चरमरा कर गिर पड़ेगी।

नवयुवकों तथा नवयुवतियों में तो स्वभाव से ही धार्मिक शिक्षा के अभाव में अश्लील गानों तथा चित्रों की ओर आकर्षण होना ही था। छोटे बालक और बालिकाएं भी कैसे बचते, जब कि उनके माता पिता ही उन्हें अपने साथ ले डूबने के आदी बन गये हों।

मेरे प्रिय पुत्र राजीव ! तथा प्रिय पुत्र कृष्णचन्द्र !

जैसा कि आप दोनों बार बार घोषणायें कर रहे हो कि शिक्षाप्रणाली में शीघ्र परिवर्तन करेंगे और भारत का गौरवपूर्ण इतिहास भी प्रस्तुत करेंगे, जिससे राष्ट्र की सतति अपने चरित्र को उन्नत करके भारत की उन्नति में चार चांद लगायेगी।

परन्तु याद रक्खो ! जब तक चलचित्रों तथा दूरदर्शन पर कामुकता भरे गाने और चित्र बन्द नहीं करोगे, तब तक तुम्हारा यह स्वप्न आकाशपुष्प ही बना रहेगा। क्या मजाक बनाया है। तीन वर्ष के बच्चे को भी मैंने गाते हुए सुना है—

ईचक दाना, बीचक दाना, दाने ऊपर दाना।
छज्जे ऊपर लड़की नाचे, लड़का है दीवाना॥

याद रक्खो ! आज जो लूट-पाट, हत्या तथा डाकेजनी की घटनाएं हो रही हैं, उनमें बहुत बड़ा हाथ चलचित्रों का है। कई नवयुवक पकड़े जाने पर यह बयान दे चुके हैं कि हमने यह सब सिनेमा देखकर सीखा है। परमात्मा आपको सुबुद्धि प्रदान करे कि आप मुझ भारत माता के बिगड़े स्वरूप को पुनः स्वच्छ और निर्मल बना दें।

स्वामी दयानन्द पर लिखी किताबों पर पाबन्दी की मांग

लखनऊ ५ सितम्बर (जनसत्ता)। लोकदल सदस्यों ने बुधवार को उत्तर प्रदेश विधानसभा में मांग की कि स्वामी दयानन्द पर लिखी मेरठ के एक लेक्चरार की किताबों पर पाबन्दी लगाई जाए। उनका कहना था कि इन किताबों में स्वामी दयानन्द की बदनामी की गई है।

लोकदल के बेनीप्रसाद वर्मा ने ये किताबें अध्यक्ष को सौंपीं। अध्यक्ष ने जरूरी कार्रवाई के लिए किताबें मुख्यमन्त्री को सौंप दी। श्री वर्मा ने कहा कि इन किताबों में स्वामी दयानन्द के लिए अपमानजनक भाषा का प्रयोग किया गया है।

दयानन्द की देन

प्रो. ओमकुमार आर्य, जीन्द

दयानन्द की देन विश्व को भारी है।
हम अब तक समझे नहीं यह भूल हमारी है॥
उसने पाखण्ड मिटाया, और सच्चा धर्म बताया
वह सूरज बनकर आया, संग नया सवेरा लाया
फैली उजियारी है।
उसी के दम से आज यह शान हमारी है॥१॥

जब तर्क दामिनी दमकी, तो टूटी नींद मजहब की
हो गई यह बात गजब की, व्याख्याएं बदल गईं सबकी
दुनिया हारी है।
दयानन्द ने बिगडी दशा सुधारी है॥२॥

है वेदज्ञान ईश्वर का, इस पर हक है नर-नारी का
यह तो है दुनिया भर का, नहीं किसी एक के घर का
घोषणा भारी है।
इतिहास कहे यह कदम क्रान्तिकारी है॥३॥

सोया देश जगाकर, बिछुडों को गले मिलाकर
फिर आर्यसमाज बनाकर, ऋषि चले गये समझाकर
ज्ञान पिटारी है।
इसे सुरक्षित रखना निधि तुम्हारी है॥४॥

डरबन में आर्य महा-सम्मेलन

जाति भेद की नीति के गढ दक्षिण अफ्रीका में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के सानिध्य में जो ससार के समस्त आर्यसमाजों की सार्वभौम सस्था है, दिसम्बर १९८५ में एक विश्व आर्य महासम्मेलन होने जा रहा है। इस महासम्मेलन में देश-विदेश की अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधियों के भाग लेने की आशा है। ससार में वैदिक सस्कृति और विश्व भ्रातृवाद के प्रचार एव प्रसार के लिए भावी कार्यक्रमो पर वहां विचार विमर्श होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका जो उस देश की आर्यसमाजों की प्रतिनिधि सस्था है, ने इस आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया है। भारत के अतिरिक्त यूरोप, इङ्गलेंड, अमेरिका आदि से भी विभिन्न हिन्दू सस्थाओं के प्रतिनिधि इस सम्मेलन में भाग लेने पहुचेगे। फीजी से आने वाले प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व लौटोका के पूर्व महापौर बैरिस्टर सुरेन्द्र प्रसाद करेगे। श्री ब्रह्मदत्त स्नातक जो भारत सरकार के सूचना और प्रसारण विभाग के उच्चाधिकारी रह चुके है। वे आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका के पदाधिकारियो को सम्मेलन की कार्य व्यवस्था तथा चर्चा के लिए प्रस्तावित विषयों की रूपरेखा तैयार करने सहायता करेगे।

इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए जाने वाले व्यक्तियों को भारत सरकार के विदेश मन्त्रालय ने सीमित अवधि के लिए पासपोर्ट पर अनुमति देना स्वीकार कर लिया है।

सुरेशचन्द्र पाठक
कार्यालय सचिव
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द भवन, नई दिल्ली—२

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

[illegible] 33307/73 [illegible] P/RTK 40 फोन [illegible]

कृण्वन्तो विश्व

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १२ अङ्क ४० २८ सितम्बर १९८५ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे



वेदों की यथार्थता—

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

प्रेमचन्द श्रीधर एम० ए०

गुरुवर विरजानन्द व्याकरण के सूर्य थे। उनके पार्थिव शरीर के त्याग करने पर देव दयानन्द ने कहा था 'आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया है'। ऐसे महान् गुरु के चरणों में बैठकर देव दयानन्द ने पाणिनि की अष्टाध्यायी और पातञ्जल का महा भाष्य पढ़ा था और आर्ष अनार्ष ग्रंथों के अन्तर को समझा था। आर्ष अनार्ष ग्रंथों को समझना ही देव दयानन्द की महानतम उपलब्धि थी। इसी उपलब्धि ने ही भावी भारत के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया।

देव दयानन्द ने स्पष्ट किया कि वाङ्मय के दो रूप हैं। अपौरुषेय और पौरुषेय। पुन: पौरुषेय के भी दो रूप हैं-आर्ष और अनार्ष। आर्ष वाङ्मय ब्रह्मा से जैमिनि पर्यन्त और उसके उपरान्त का सारा वाङ्मय आचार्य साहित्य या अनार्ष वाङ्मय की श्रेणी में आता है। जिनकी आस्था अपौरुषेय ज्ञान में है उन्हें आस्तिक और शेष सबको उन्होंने नास्तिक कोटि का स्वीकार किया क्योंकि—

नास्तिको वेद निन्दकः। मनु०

जो वेद के अपौरुषेयत्व को स्वीकार करता है वही आस्तिक है। देव दयानन्द ने इसलिए स्पष्ट रूप से घोषणा की—

"वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

आर्यसमाज का तीसरा नियम—

श्रावणी उपाकर्म पर वेद कथाओं का प्रारम्भ होता है। इसका मुख्य उद्देश्य ही वेद का प्रचार-प्रसार रहता है। इस शुभ अवसर पर वेद के सम्बन्ध में कुछ चिन्तन मनन उपयुक्त रहेगा। इसी दृष्टि से हम निम्न तीन मूलभूत प्रश्नों पर विचार करेंगे।

१. वेद की उत्पत्ति किस प्रकार हुई?
२. वेद का कर्ता कौन है?
3. वेदों का प्रयोजन क्या है?

हर सत्य का आधार प्रमाण है। प्रमाण भी दो प्रकार का है। स्वतः प्रमाण और परत: प्रमाण। जब अपौरुषेयत्व की बात करते हैं तो इसका अर्थ है कि वेद स्वत: प्रमाण हैं। ईश्वर का दिया हुआ मानवमात्र के लिए श्रेष्ठतम ज्ञान है। वेद का ज्ञान बिना किसी भेद भाव के सब मनुष्यों के लिए है भले ही वे किसी भी जाति वर्ग अथवा देश के हों। वेद का अर्थ ही है 'ज्ञान'। जितने भी अन्य धर्म ग्रन्थ हैं सब परत: प्रमाण हैं क्योंकि वे मनुष्यकृत हैं। मनुष्य सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान कभी नहीं हो सकता वह अल्पज्ञ है और उसकी शक्ति सीमित है। इस सीमितता और अल्पज्ञता के कारण ही उसमें अपूर्णता है। अपूर्णता कभी पूर्णता को जन्म नहीं दे सकती। इसलिए मनुष्यकृत सभी ग्रन्थ अपूर्ण हैं और उनमें शाश्वत तथा सार्वभौम सत्यों का भी अभाव है। प्रायः ऐसे ग्रन्थों की मान्यताएं साम्प्रदायिक तथा एक पक्षीय हैं।

ज्ञान भी दो प्रकार है। स्वाभाविक तथा नैमित्तिक। पशु पक्षी अपने स्वाभाविक ज्ञान के कारण ही तैरना और उड़ना जानते हैं। एक मल्लाह के पुत्र को भी अपने पिता से नदी में तैरना सीखना पड़ेगा। तैरना तो अलग बात है, मनुष्य के बच्चे को चलना और बोलना भी सीखना पड़ता है। ऐसे बहुत से प्रयोग किए गए जिनमें मनुष्य के बच्चों को मानव समाज के वातावरण से अलग अलग रखा गया और बच्चे कुछ भी नहीं सीख पाए केवल वन में जिन पशुओं के बीच उन्हें रखा गया वैसा उनका भी स्वभाव बना। इससे स्पष्ट है कि मनुष्य के लिए नैमित्तिक ज्ञान की आवश्यकता है। वेद ईश्वर के द्वारा दिया गया नैमित्तिक ज्ञान है जो सृष्टि के प्रारम्भ में ही मिला।

शिक्षा के बिना ज्ञान की उत्पत्ति नहीं हो सकती।

नोपदेशमन्तरा ज्ञानोत्पत्तिः।

हम अपने माता-पिता और आचार्य से ज्ञान प्राप्त करते हैं परन्तु आदि सृष्टि में इन सबका ज्ञान प्राप्त का साधन क्या था?

सर्गादौ वेदोपदेशः पूर्वेषामपि गुरुणा।

स एष पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात।

इस प्रकार परमात्मा 'गुरुणां गुरुः' ठहरा।

इस प्रकार प्रत्येक कल्प के आदि में जब सृष्टि का प्रादुर्भाव होता है तब—

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। ऋ० १०।१९०।३

इस प्रकार अपने अनन्त ज्ञान बल से परमात्मा ने ऋत और सत्य को जन्म दिया—

ऋतञ्च सत्यञ्चाभिद्धतपसोऽध्यजायत।

महाभारत के शान्ति पर्व में महर्षि वेदव्यास कहते हैं—

अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टास्वयम्भुवा।
आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः॥

सृष्टि के आदि में स्वयम्भू परमात्मा से ऐसी दिव्य वाणी (वेद) का प्रादुर्भाव हुआ जो नित्य है और जिससे संसार की प्रवृत्तियां चलीं।

और ऋग्वेद के मन्त्र १०।९०।९ के अनुसार वेद की उत्पत्ति—

तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत॥

सत् जिसका नाश कभी नहीं होता, चित् जो सदा ज्ञान स्वरूप है, आनन्द जो सदा सुख स्वरूप है उसी परम ब्रह्म परमात्मा से (ऋचः) ऋग्वेद (यजुः) यजुर्वेद (सामानि) सामवेद और (छंदांसि) इस शब्द से अथर्ववेद भी ये चारों वेद उत्पन्न हुए। इस मन्त्र में 'जज्ञिरे' और 'अजायत' इन दोनों क्रियाओं के अधिक होने से वेद अनेक विद्याओं से युक्त हैं ऐसे जाना जाता है। इसी प्रकार 'तस्मात्' इससे यह निश्चय होता है कि वेद ईश्वर से ही उत्पन्न हुए किसी मनुष्य से नहीं। 'छन्दांसि' शब्द से अथर्ववेद का ग्रहण करना चाहिये। महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में ऐसा अर्थ किया है।

क्रमशः

न्यायशास्त्र की आवश्यकता

(पं० [illegible] 'मनोजी' [illegible] गुरुकुल [illegible])

न्यायशास्त्र के प्रवर्तक महर्षि गौतम हैं। इन्होंने [illegible] जगत् के तत्त्वो पर विचार किया और [illegible] का विवेचन किया। इनका एकमात्र ग्रन्थ 'न्याय सूत्र' है। इस ग्रंथ का लक्ष्य है नि श्रेयस या परमतत्त्व की प्राप्ति तथापि विशेष रूप से यह प्रमाणो के द्वारा तर्क करने की शिक्षा देता है। इसीलिए इस शास्त्र का न्याय शास्त्र तकशास्त्र आदि नाम हैं। इस ग्रन्थ के ही आधार पर समस्त न्यायशास्त्र का विस्तृत साहित्य है। इस ग्रंथ या शास्त्र का मुख्य लक्ष्य है 'प्रमाण और प्रमेय के विशेष ज्ञान से नि श्रेयस को प्राप्त करना किन्तु जब तक सशय प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय वाद जल्प, वितण्डा हेत्वाभास छल, जाति तथा निग्रह स्थानो का विशेष रूप से ज्ञान नहीं होगा, तब तक प्रमेय का ज्ञान अच्छी प्रकार से नही हो सकता। अतएव गौतममुनि ने कहा है कि उपर्युक्त सोलह पदार्थों के तत्त्वज्ञान से मुक्ति मिलती है। इस शास्त्र में इन सोलह पदार्थों के लक्षणो की प्रमाणो के द्वारा परीक्षा की गई है। इस न्याय सूत्र' पर अनेक व्याख्यायें लिखी गई थी, किन्तु वात्स्यायनमुनि का भाष्य सबसे प्राचीन व्याख्या है जो आज भी उपलब्ध है। इनका भाष्य सर्वोत्कृष्ट है।

महर्षि गौतम ने एक सर्वाङ्गपूर्ण तर्कशास्त्र की रचना की। इस ग्रंथ के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि यह सत्यासत्य के निर्णय के लिए प्रधानतया बनाया गया है। अतएव इस शास्त्र में वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल जाति तथा निग्रहस्थान इन विषयो का विस्तारपूर्वक विचार किया गया है। अन्य शास्त्रो की तरह न्यायशास्त्र भी मोक्ष-शास्त्र है तथा दु खनिवृत्ति या नि श्रेयस की प्राप्ति, इस शास्त्र का भी चरम लक्ष्य है। यह ग्रन्थ विपक्षियो के मत के खण्डन के लिये एक अमोघ अस्त्र का काय देता है। अन्य मतावम्बी स्वकल्पित सूत्रो को महर्षि गौतम के सूत्रो मे मिलाकर प्रचार करना इस ग्रंथ के कुछ अशो को निकालकर हटा देना, सूत्रो को उलट पुलट कर देना। अनेक प्रकार से दूषित करने लगे। इसलिए आस्तिक विद्वानो को इस न्यायशास्त्र की विशेष रक्षा करनी पडी। अनेक बार सूत्रों का उद्धार किया गया। अन्त मे वृद्ध वाचस्पतिमिश्र (प्रथम) ने न्याय सूची निबन्ध नाम का एक ग्रंथ लिखा जिसमे न्याय सूत्रों का आधार किया और सूत्रो को प्रकरणो को तथा अक्षरो तक को गिनकर लिपिबद्ध किया। इसी से हमें मालूम होता है कि न्यायसूत्र मे ५ अध्याय, १० आह्निक ८४ प्रकरण ५२८ सूत्र १९६ पद तथा ८३ ८५ अक्षर हैं। इस प्रकार आज न्यायशास्त्र या न्यायसूत्र हमारे सामने है।

यह स्पष्ट है कि वस्तुओ के यथार्थ ज्ञान के लिए प्रमाण होते हैं। इसलिए शास्त्र में निर्णित विषयो का यथाथ ज्ञान जितने प्रमाण से हो सके उतने ही प्रमाणो की सख्या को इस शास्त्र मे मानने की आवश्य कता होती है। अतएव यदि सभी वस्तुओं का ज्ञान एक ही प्रमाण से हो जाये तो दूसरे प्रमाणो को मानने की कोई आवश्यकता नहीं। इसी लिए चार्वाक ने एकमात्र प्रत्यक्ष को ही माना है वैशेषिक तथा बौद्धो ने प्रत्यक्ष और अनुमान को माना है। साख्य ने प्रत्यक्ष अनुमान तथा शब्द को माना है। प्रभाकर मिश्र मीमासक गुरुमत ने प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द उपमान तथा अर्थापत्ति को माना है। कुमारिलभट्ट मीमासक तथा वेदान्तियो ने प्रत्यक्ष अनुमान, उपमान, शब्द अर्थापत्ति तथा अभाव को एव पौराणिको ने उपर्युक्त छ के अतिरिक्त सम्भव और ऐतिह्य को भी माना है।

न्यायशास्त्र के प्रमेयो को जानने के लिए चार ही प्रमाणों की आवश्यकता होती है। अतएव प्रत्यक्ष अनुमान, उपमान तथा शब्द इन चारो को न्यायशास्त्र ने प्रमाण माना है। प्रमाण के द्वारा जिन पदार्थों का यथार्थज्ञान हो वे ही प्रमेय कहे जाते हैं अर्थात् जो पदार्थ यथार्थज्ञान प्राप्त करने योग्य हो वे प्रमेय हैं। प्रमेय का लक्षण—

आत्मशरीरेन्द्रियार्थबुद्धिमन प्रवृत्तिदोषप्रेत्यभावफलदु खापवर्गास्तु प्रमेयम् ॥

[illegible] बारह प्रमेय [illegible]। [illegible] सब [illegible] प्रमाणो से जाने जा सकते हैं। [illegible] उसके [illegible] से जगत् के सभी पदार्थों का [illegible] है। [illegible] सभी पदार्थों में [illegible] प्रकार के दोषों को [illegible] सार [illegible] कर मोक्ष की इच्छा करता है। पश्चात् गुरु के उपदेश से योगशास्त्र में कहे गये अष्टाङ्ग योग का अभ्यास कर [illegible] प्राप्त कर साधक आत्मा का साक्षात्कार करता है। साथ ही साथ उसके अविद्या, अस्मिता, [illegible] और अनात्मा को एक [illegible], राग द्वेष तथा अभिनिवेश (मृत्युभय) ये पाच क्लेश नष्ट हो जाते हैं। पश्चात् वह निष्काम कम करता है जिससे भविष्यत में उसके कर्मजन्य सस्कार नहीं उत्पन्न होते। पूर्व पूर्वजन्मों के कर्मजन्य सस्कारों के या सचित कर्मों के ज्ञान को योगाभ्यास के प्रभाव से प्राप्त कर उन कर्मों के भोगने मे योग्य भिन्न भिन्न शरीरों को काव्यव्यूह के द्वारा उत्पन्न कर कर्मो के भोग मे तीव्रता को बढाकर सभी भोगो को भोग लेने के पश्चात् पूर्व कर्मों के नाश हो जाने से भविष्यत काल मे होने वाले शरीरों के अभाव में जब वर्तमान शरीर का मरण होता है तभी इक्कीस दु खों की आत्यन्ति की निवृत्ति होती है और साधक मुक्त हो जाता है। इसी बात को गौतममुनि ने भी कहा है। मिथ्या ज्ञान के नाश हो जाने से रागद्वेष आदि दोषो का नाश होता है पश्चात् प्रवृत्ति नहीं होती। फिर जन्म ही नहीं लेना पड़ता और अन्त मे दुःख के नाश होने से मुक्ति मिलती है। इन्हीं बारह प्रमेयो के यथार्थज्ञान की प्राप्ति के लिए न्यायशास्त्र का अध्ययन करना आवश्यक है। इन्ही के ज्ञान के द्वारा इस जगत् के पदार्थो का तत्त्वज्ञान है और पश्चात् साधक आत्मा की खोज में अग्रसर हो जाता है, परन्तु इनके साथ के लिये सशय से लेकर निग्रहस्थान पर्यन्त चौदह पदार्थों एव प्रमाणों का भी ज्ञान अत्यावश्यक है।

जो मनुष्य न्यायशास्त्र को ठीक प्रकार से जान जाता है उसको कोई बालक धोखा नही दे सकता। साम्प्रदायिक तथा वैज्ञानिक विवादो में जो बातें साधारण भी दृष्टि में कठिन मालूम होती हों वह इस दर्शन के ज्ञाता को अति सुगम है और जिन प्रश्नों का उत्तर देने में ससार के बडे बड मत चकराते हैं उसका उत्तर इस विज्ञान के ज्ञाता बडी सुगमता से दे सकते हैं। सम्प्रति धार्मिक सिद्धान्तों के ज्ञानभाव से मनुष्यो मे अनेक प्रकार के विवाद हो रहे हैं और इस दर्शन को न जानने से वे झगड समय समय पर विकट रूप धारण कर लेते हैं। इन विवादो को मिटाने के लिए न्यायशास्त्र पढना अत्यावश्यक है। आचार्य वात्सायन ने इस शास्त्र की प्रशसा करते हुए लिखा है—

प्रदीप सर्वविद्यानामुपायो सर्व कर्मणाम्।
आश्रय सर्वधर्माणां विद्योद्देशे प्रकीर्तिता ॥

अर्थात् यह न्यायशास्त्र सब विद्याओ का प्रकाशक सब कर्मों का उपाय और सब धर्मों का आश्रय तथा सब विद्या क्षेत्र मे विस्तृत है।

आर्य कन्या विद्यालय होली मोहल्ला करनाल

रामेश्वरदास आर्य कन्या विद्यालय होली मौहल्ला करनाल की स्वर्ण जयन्ती ४, ५ ६ अक्तूबर ८५ को मना रहे हैं जिसमे कन्याओ के प्रति योग्यता भाषण, वेदमन्त्र प्रतियोग्यता आदि धूमधाम से मना रहे हैं जिसके द्वारा वेदप्रचार किया जावेगा।

महाराज कृष्ण चोपडा

आकाशवाणी से वार्ता

वार्ताकार—प्रो० ओमकुमार जीन्द

तिथि ६-१०-८५ समय सुबह ७-३०

विषय जब हमने सच बोलना शुरु किया।

आर्यसमाज झाड़सा का वार्षिक चुनाव

प्रधान—चौ० [illegible]सिह एडवोकेट सरपच, उपप्रधान—चौधरी सूरतसिह, प० दीवानसिह नम्बरदार, प० निहालसिह, मन्त्री—श्री गोपीचन्द, उपमन्त्री—राजेश कुमार ठाकरान; सुरेन्द्रकुमार ठाकरान कोषाध्यक्ष—ओमप्रकाश सदस्य पचायत

सम्पादकीय

नशाबन्दी आन्दोलन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा बधाई की पात्र है कि उसके तत्त्वावधान में प्रातभर में नशाबन्दी आन्दोलन आयोजित किया जा रहा है। आन्दोलन के मुख्य केन्द्र इस समय भिवानी, रोहतक, हिसार और सोनीपत जिले हैं। प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष भूतपूर्व केन्द्रीय राज्य मन्त्री प्रो० शेरसिंह हरयाणा की पंचायतों को इस अभियान में खींच लाने का सत्प्रयास कर रहे हैं। उनकी धर्मपत्नी विदुषी शोभा जी महिलाओं में जागरण का बीड़ा उठाए हुए हैं। इस आन्दोलन को मिली प्रारम्भिक सफलताओं से आशा जगी है कि हरयाणा सरकार को शीघ्र ही अक्ल आ जाएगी। ग्राम नाहरी, सिहोंटी, आसौदा, छारा, भादसा, बालावास आदि ग्रामों मे आन्दोलनकारियों ने जिस शालीनता संयम, उत्साह और निर्भीकता से आन्दोलन का संचालन किया है उससे निश्चय ही ठोस परिणाम निकल सकते हैं और इस दिशा में भारत के शेष प्रांत प्रेरणा ग्रहण कर सकेंगे।

यह अत्यन्त लज्जा की बात है कि गांधी जी के नाम पर वोट बटोरने वाले और पुरानी कांग्रेस के नाम पर शताब्दी का ढोंग रचाने वाले बहरूपिए कांग्रेसियों ने देश को मदिरा का नरक बनाने की जैसे शपथ ले रखो है। आजादी के बाद मदिरा की बिक्री और प्रचलन इतना बढ़ गया है कि देश की राजधानी दिल्ली में तो बसों व गाड़ियों में बहू बेटियों का आबरू बचाकर घर लौटना कठिन हो रहा है तथा अन्धा प्रशासन अपने को असहाय मान रहा है। प्रो० शेरसिंह जी के अनुसार देश में सालभर मे हजार करोड़ रुपये की शराब पी जाती है। प्रतिरक्षा और शिक्षा का बजट भी इस राशि से कम है। हरयाणा प्रान्त में वर्ष भर में अनुमानतः तीन सौ करोड़ रुपए की शराब बिकती है। राज्य में चार लाख इन्सान इसका नियमित रूप से सेवन करते हैं और यदाकदा पीने वालों की संख्या चालीस लाख के लगभग है। अनुमानतः प्रत्येक गांव में एक साल में पांच लाख की शराब बिकती है। राज्य मे ३५० के लगभग ठेके हैं। सरकार की नीति यदि बदली नहीं गई तो यह संख्या भविष्य में और बढ़ सकती है।

यह देश का दुर्भाग्य है कि यहां हर अच्छे काम के लिए आन्दोलन चलाना पड़ता है। स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान आजाद भारत का जो नक्शा भारतीयों के दिल दिमाग में उतर गया था वह न जाने कब हकीकत बन पाएगा?

मोरारजी देसाई ने पांच वर्षों में शराबबन्दी की एक योजना बनाई थी लेकिन इन्दिरा कांग्रेस ने उसे एकदम उलटकर पांच वर्षों में पाच गुणा शराबखोरी बढ़ाने की प्रवृत्ति दिखाई है। इस पर भी लाला रामगोपाल शालवाले फतवा देते हैं कि सारे आर्यसमाजी आंखे बन्दकर इन्दिरा कांग्रेस की भेड़ें बन जाएं। देश का बंटाधार तो हो ही रहा है आर्यसमाज को भी उस टेढी लकीर का फकीर बनने को कहा जा रहा है। इस सोच पर [illegible] किया जाए।

आवश्यकता इस बात की है कि इस सोच को बदला जाए। सार्वदेशिक सभा से अपेक्षा [illegible] है कि शराबबन्दी आन्दोलन का नेतृत्व वह स्वयं सम्भाले और व्यापक रूप दे। इस कार्य में नशाबन्दी [illegible] समिति, नई दिल्ली, हरयाणा की अन्य [illegible] संस्थाओं विद्यार्थियों अध्यापकों व पंचायतों तथा विभिन्न जातीय संगठनों (जाट सभा, गूजर सभा, अहीर सभा, रोड सभा, सैनी सभा आदि आदि) का सक्रिय सहयोग प्राप्त किया जाना चाहिए। कम से कम आर्यसमाज यह गौरव तो हासिल करले कि देश का एक अंग मदिरा के विष से उसने सर्वथा मुक्त करा लिया है। ऐसे ही सशक्त आन्दोलनों से किसी संगठन की जीवन-शक्ति का [illegible] करता है, केवल नारे लगाने से नहीं।

(सम्राट से साभार)

आर्यसमाज दक्षिण अफ्रीका कैलोफोर्निया अमरीका का उत्सव

आर्यसमाज कैलोफोर्निया अमरीका का प्रथम वार्षिकोत्सव सितम्बर मास में आर्यसमाज लासएजल्स के हाल मे मनाया गया। हरयाणा के भूतपूर्व शिक्षामन्त्री स्वामी अग्निवेश भारत से यहाँ पधारे। मदनलाल गुप्ता, मन्त्री की प्रेरणा पर तीन दिन आर्य परिवारों के निवास पर स्वामी जी का ओजस्वी भाषण तथा वेदप्रचार कार्यक्रम हुआ।

उत्सव के अन्तिम दिन आर्यसमाज को दुल्हन की तरह सजाया गया तथा कार्यक्रम यज्ञ से आरम्भ हुआ। श्रीमती कमला शर्मा तथा रामचमेली ने अपने सुन्दर भजनों द्वारा आर्य जनता को प्रभावित किया। कुमारी अंजु गुप्ता अमित नय्यर ने कार्यक्रम मे भाग लेकर पुरस्कार जीता। आर्यसमाज की कर्मठ कार्यकर्त्री सुमित्रा अमीन ने अपने भाषण द्वारा आर्यजनता को आर्यसमाज के बारे मे विशेष जानकारी दी। दोपहर को श्रीमती वीना मेहता ने सभी आर्य परिवारों के लिए ऋषि लंगर का आयोजन किया।

श्रीमती सुमित्रा अमीन तथा श्रीमती रामचमेली जो कि भारत में हरिजन तथा निर्धन वर्ग में आर्यसमाज का प्रचार कर रही है और कई मास से यहां आर्यसमाज का प्रचार कर रही हैं। उन्हे सराहनीय सेवाओं के उपलक्ष्य में प्रमाण पत्र तथा पदक द्वारा पुरस्कृत किया गया तथा सुमित्रा जी को हार्दिक विदाई दी गई। श्रीमती कमला शर्मा जो कि लगभग दस वर्ष से अमरीका में घर घर आर्यसमाज का प्रचार तथा संस्कार करा रही हैं, उन्हें विशिष्ट सेवा प्रमाण पत्र तथा पदक द्वारा सम्मानित किया गया।

स्वामी जी ने अपना परिचय देने के पश्चात् लोगों को यज्ञ की महिमा का पूर्ण ज्ञान कराया। भारत की घटनाओं की भी जानकारी दी गई तथा परिवारों को आर्य धर्म तथा सत्संग में आने का अनुरोध किया और स्वामी दयानन्द जी ने जो कार्य हरिजन तथा निर्धन के लिए आरम्भ किया था उस पर प्रकाश डाला, स्वामी जी ने यह भी जानकारी दी कि वह स्वय अब इस कार्य को पूरा करने में लगे हुए हैं। इसी बीच समाज का हाल कई बार दयानन्द के जयकारों से गूंज उठा।

मदनलाल गुप्ता
मन्त्री

आर्यसमाजों को शुद्ध निर्वाचन पद्धति का पालन हो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा पारित (१ नवम्बर १९७१ से लागू) आर्यसमाज के विधान (उपनियमों) के अनुसार ही आर्य सभासदों को मत देने का अधिकार दिया गया है। आर्यसभासद की परिभाषा इस प्रकार है—

क—सदाचार पूर्वक (संध्या आदि नित्यकर्म, शुद्धवृत्ति तथा वैदिक संस्कार युक्त) तथा दुराचार रहित (मद्यादि मादक द्रव्य, मासादि अभक्ष्य पदार्थ, जुआ, रिश्वत आदि दुर्व्यसनों से मुक्त) जीवनयापक व्यक्ति हो।

ख– उपरिलिखित व्यक्ति का नाम दो वर्ष तक अंकित रहा हो (सभासदपंजिका में)।

ग—अपनी आय का शतांश मासिक/वार्षिक अथवा २५० रुपये धन देता हो।

घ—साप्ताहिक सत्सगों में २५ प्रतिशत उपस्थित रहा हो।

उपरिलिखित नियमों में छूट देने की सीमा कुल सदस्यों का केवल ५ प्रतिशत रखी गई है, परन्तु आजकल शतप्रतिशत छूट दे दी जाती है, यह बात सर्वथा अनुचित है।

आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक में इस वर्ष के निर्वाचन (१९८६ में होने वाले चुनाव) के लिए इन नियमों का दृढता से पालन किया जाएगा। आशा है, अन्य आर्यसमाज भी इसका अनुकरण करके आदर्श प्रस्तुत करेंगे।

जीवनानन्द सरस्वती
प्रधान आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक

एक उलझन

२८ जुलाई १९८५ के सर्वहितकारी में प्रथम पृष्ठ पर स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक, अध्यक्ष वैदिक संस्थान, नजीबाबाद का 'विचित्र प्रभु' शीर्षक लेख पढा। लेख के दूसरे कालम के तीसरे पहरे में स्वामी जो लिखते है—'यह तीनों तो प्रकृति के परमाणुओं का संघातमात्र है और परमाणु अपने आपमे प्रकाश रहित हैं। यदि परमाणुओ में प्रकाश होता तो वह प्रलय काल में भी प्रकाश देते……।'

उलझन यह उत्पन्न हुई है कि यदि परमाणु प्रकाश रहित हैं तो प्रकृति को सत्त्व, रज और तम रूप में कैसे विभाजित किया जायेगा, जबकि सत्त्व मे केवल प्रकाशमय परमाणु, रज में प्रकाश और तम मिश्रित परमाणु और तम मे प्रकाश रहित परमाणु माने गये है। यदि यह माना जाय कि परमाणु प्रकाश रहित होते है और उनमें परमात्मा का प्रकाश होता है तो सृष्टि में और प्रलय काल में कही और कभी भी अन्धकार नही होना चाहिये, क्योंकि परमात्मा सर्वत्र व्यापक और नित्य होने के कारण सर्वत्र प्रकाश ही रहेगा। परन्तु ऐसा नहीं है। अस्तु! प्रकृति के सत्त्व (प्रकाशमय) और रज (मिश्रित) परमाणुओं को परमात्मा सृष्टि उत्पत्ति के समय सघातरूप मे एकत्र करता है जिनसे सूर्य, चन्द्रमा, तारे, अग्नि आदि की रचना होती है और वे अपने प्रकाश रहित पृथ्वी आदि लोकों को प्रकाशित करते हैं।

रही बात प्रलयकाल में भी प्रकाश रहने की। प्रलय काल में तो परमाणु पृथक् पृथक् रहते हैं और उनका कोई सघात नहीं होता अतः वे प्रकाश दे ही नही सकते इसीलिए प्रलयकाल में तमः आसीत तमसा गूढ़म के अनुसार अन्धकार रहता है। सृष्टि में यह भी देखने में आता है कि मनुष्य प्रकृति के परमाणुओं से विद्युत आदि उत्पन्न कर रहा है, जिनमें जल, वायु, कोयला और परमाणु ऊर्जा मुख्य है। बैटरी आदि का निर्माण भी इसी प्रकार किया जाता है। यदि परमाणु प्रकाश रहित होते तो इन सब का निर्माण मनुष्य नहीं कर सकता था। वैसे भी अग्नि को पांच महाभूतों में गिना जाता है और जिसकी उत्पत्ति तीसरे नम्बर पर मानी गई है यथा—तस्माद् वा एतस्माद् आत्मनः आकाश· सम्भूतः आकाशाद् वायुः वायोरग्निः…………। फिर सभी परमाणुओं को प्रकाश रहित कैसे माना जाता है?

प्रभु के प्रकाश स्वरूप होने से उसके ज्ञानवान् होने का तात्पर्य ही होता है। प्रकाश तो भौतिक पदार्थ है और परमात्मा भौतिक पदार्थ है नही। अत· सूर्य, चन्द्रमा, तारे और अग्नि आदि प्रकाशमय परमाणुओं से ही बने हैं, ऐसा निश्चय है। सत्वरजतस्मसा साम्यावस्था प्रकृति। एतेषां विषमावस्था विकृतिः अथवा सृष्टि। यदि परमाणु प्रकाशरहित हों तो सोना, चांदी, हीरे मोती, कांच आदि अनेक धातुओं में चमक कहां से आयी? इन सबका निर्माण रज परमाणुओं से ही सम्भव है, अतः ये चमकदार होते हुए भी दूसरों को प्रकाशित नहीं कर सकते। क्योकि इनमें प्रकाश की मात्रा न्यून होती है। अस्तु इन सारी उलझनों को देखते हुए यही निष्कर्ष निकलता है कि स्वामी जी की मान्यता ठोस आधार पर स्थित नहीं है।

हरिदत्त वि० प्र०
वीयू-१६०, विशाखा एन्कलेव दिल्ली-३४

यज्ञ प्रार्थना में संशोधन सम्बन्धी शंकाओं का समाधान

(१) १४ अगस्त के सर्वहितकारी अंक में प्रकाशित मेरे 'यज्ञ प्रार्थना मे सशोधन' नामक लेख पर श्री चन्द्रशेखर 'भ्रमर' स्नातक (आर्यसमाज २३ सैक्टर फरीदाबाद) की प्रतिक्रिया प्राप्त हुई।

(क) श्री स्नातक जी लिखते हैं, ब्रह्मचारी संजयदेव जी द्वारा किया गया यज्ञ प्रार्थना संशोधन एकदम अतर्क सगत दिखायी पडता है। जबकि जीव और प्राण एक दूसरे पर्याय हैं तो जीवधारी और प्राणधारी का अर्थ अलग अलग कैसे हो सकता है।

उत्तर—श्री स्नातक जी ने जीव और प्राण को पर्यायवाची बतलाया है। मुझे बड़ा आश्चर्य है कि श्री स्नातक जी जिस उपाधि से विद्वान् प्रतीत होते है, उन्हें प्राण और जीव में आकाश पाताल का भेद है—उसका भी ज्ञान नहीं। प्राण, अपान, उदान, व्यान ये प्राण कहाते हैं और 'जीव प्राण धारणे' इस पाणिनि मुनि के प्रमाण से प्राणों का धारण करने वाला आत्मा जीव कहाता है। अब श्री स्नातक जी समझ सकते है कि प्राणधारी और जीवधारी में कितना अन्तर है।

(ख) श्री स्नातक जी लिखते हैं कि भूख से तृप्त होने के बाद भूख का अस्तित्व नही रहता। ऐसे ही प्रेम रस से तृप्त होवे के बाद प्रेम का भी अस्तित्व नही रह जाएगा।

उत्तर—श्री स्नातक जी नही जानते किसी प्रसग मे उदाहरण कैसे दिया जाता है? मुझे बड़ा भारी विस्मय है कि श्री स्नातक जी 'तृप्त' शब्द के अर्थ से भी अनभिज्ञ है। इसलिए उन्होने उपर्युक्त उदाहरण दिया है। तृप्त शब्द का अर्थ 'तृप्त प्रीणने' इस पाणिनि के प्रमाण से प्रसन्न होना है। भूख से कोई तृप्त नही होता, अपितु भोजन से तृप्त होता है। इसलिए स्नातक जी से मेरा निवेदन है कि वे सत्य को ग्रहण करने तथा असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहकर एक आर्य होने के नाते इस विषय में पुनर्विचार करे।

बालावास में आर्यसमाज मन्दिर का उद्घाटन एवं प्रथम वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक १८, १९ सितम्बर ८५ को धरना स्थल पर आर्यसमाज मन्दिर बालावास जिला हिसार का उत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। प्रातः साढे सात बजे यज्ञ द्वारा प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम में आचार्य सुदर्शनदेव ने अपने व्याख्यान में मानव धर्म पर प्रकाश डाला। स्वामी शक्तिवेश ने मन्दिर का उद्घाटन किया। ५०० रुपये नकद तथा अन्य सहयोग देने का आश्वासन दिया। बहन करुणा शास्त्री ने नारी जाति के उत्थान पर बल दिया। अध्यापक संघ के महामन्त्री श्री शेरसिह ने सरकार की गलत नीतियों का खण्डन करते हुए बताया कि सरकार अमीरों के बच्चों की पढ़ाई पर १२०० रुपये मासिक खर्च करती है जबकि एक गरीब के बच्चे पर मात्र १६ रुपये आता है। शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन पर जोर दिया। इनके अतिरिक्त स्वामी मेधानन्द जी, स्वामी कीर्तिदेव, श्री संग्राम आर्य, डा० मदनगोपाल आदि ने भी विचार रखे। सभा की भजनमण्डली पं० आशाराम प्रेमी पं० गजराजसिह तथा पडित सुलतानसिह, प० खुशीराम, महाशय मामचन्द, म० रिसालसिह के शिक्षाप्रद भजन हुये। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के ब्रह्मचारियो का आसनों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन भी दर्शनीय एवं प्रभावशाली रहा।

उत्सव की कार्यवाही समाप्त करते हुए आर्यसमाज कंवारी के प्रधान श्री अत्तरसिह आर्य क्रान्तिकारी ने अपने समापन भाषण में विशेषकर ग्राम बालावास के लोगों को अपने गांव में पूर्णतया शराब बन्दी के बारे में सचेत किया।

सूबेदार हरचन्द आर्य
प्रधान आर्यसमाज बालावास

२ अक्तूबर महात्मा गांधी के जन्मदिवस पर विश्लेषणात्मक

आर्यसमाज और महात्मा गांधी

सुखदेव शास्त्री, उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना १८७५ में की थी। आर्यसमाज की स्थापना का उद्देश्य महर्षि ने इसके नियमों का निर्माण करते हुए स्पष्ट से उद्घोषित किया था—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है—अर्थात् शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक उन्नति करना। इस उद्देश्य को लेकर महर्षि ने देश में प्रचार आरम्भ किया। साथ ही आर्यों के लिए वेदों का पढ़ना पढाना और सुनना सुनना परम धर्म बताया। इन महान् उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आर्यसमाज ने देश विदेश में एक महान् वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात किया जो देश की सीमाओं को लांघकर अमेरिका तक भी पहुंची। इग्लैंड के इण्डिया हाउस तक पहुच कर अनेक क्रान्तिकारियों ने भारत विरोधी गद्दारों को मौत के घाट उतारा। भारत में तो बड़ी तेजी के साथ क्रान्ति एक आन्दोलन बनकर खड़ी हो गई। सुदूर दक्षिण अफ्रीका के बीहड़ जंगलों तक पहुचो जिसके सन्देशवाहक थे आर्यसमाज के अनेक क्रान्तिकारी वीर भाई परमानन्द सरीखे धुन के धनी नेता। स्वतन्त्रता सग्राम की अग्नि को सर्वप्रथम जलाने वाले आर्यसमाज के ही दीवाने थे, जिन्होंने देश के लिए सर्वस्व समर्पण कर दिया। महर्षि दयानन्द ने स्वतन्त्रता प्राप्ति का जो कार्य आरम्भ किया था जिसके कारण १८८३ में महर्षि का बलिदान भी इसी के कारण हुआ था। उनके बलिदान के पश्चात् आर्यसमाज के हजारों नौजवानों ने अपने आपको देश के लिए होम दिया था। उनके बलिदानों के कारण ही देश को आजादी मिली। महर्षि दयानन्द ने ही सर्वप्रथम अंग्रेज के साथ सहयोग न करने का बीज बोया था। जिस असहयोग आन्दोलन भी कहा जा सकता है। उन्होंने परोपकारिणी सभा के वसीयत नामे में लिखा था—जहां तक हो सके न्याय प्राप्ति के लिए सरकारी अदालन का दरवाजा न खट-खटाया जाए, इसकी चर्चा महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के ११ वे समुल्लास में भी की है।

नमक सत्याग्रह की नींव भी सर्वप्रथम महर्षि के द्वारा ही रखी गई थी। अंग्रेजी सरकार भारतीयों पर बड़े अत्याचार कर रही थी, तब १८७५ में आर्यसमाज व सत्यार्थप्रकाश की रचना की गई, उसी समय सत्यार्थप्रकाश के प्रथम संस्करण में महर्षि ने अंग्रजी सरकार को धिक्कारते हुए लिखा—

"एक तो यह बात है कि नोन और पौन रोटी में जो कर (टैक्स) लिया जाता है मुझको अच्छा मालूम नहीं होता क्योंकि नोन (नमक) बिना दरिद्र का भी निर्वाह नहीं किन्तु सबको नोन (नमक) आवश्यक होता है और वे मेहनत मजदूरी से जैसे तैसे निर्वाह करते हैं उनके ऊपर भी यह नोन का कर दण्ड तुल्य रहता है। इससे दरिद्रों को क्लेश पहुंचता है। अतः कर (टैक्स) लवणादिकों के ऊपर न चाहिए।"

गरीबी दूर करने का ऐलान भी महर्षि ने ही किया था।

अदालतो का बहिष्कार भी उन्होने ही करने की बात कही थी। सत्यार्थप्रकाश के प्रथम संस्करण में ही उन्होंने आरम्भ में ये बाते सरकार तथा जनता दोनों के लिए कही। वे लिखतें हैं—सरकार कागज को बेचती है और बहुत सा कागजों पर धन बढा दिया है। इससे गरीब लोगों को कष्ट पहुंचता है, सो यह बात राजा को करनी उचित नहीं, क्योंकि इसके होने से बहुत गरीब लोग दुःख पाके बैठे रहते हैं, कचहरी में बिना धन के कुछ बात होती नहीं, इससे कागजों के ऊपर जो बहुत धन लगाया है सो मुझको अच्छा मालूम नहीं देता।

इसी प्रकार गोरक्षा के प्रश्न को भी महर्षि ने सर्वप्रथम अंग्रेजों और भारतीय जनता के सामने रखा था, क्योंकि १८५७ में इसी प्रश्न को लेकर मंगलपाण्डे, तांत्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई झांसी आदि वीरों के द्वारा अंग्रेज का युद्ध में सामना करना पड़ा। गोरक्षा के लिए नामधारी सिक्खों का भी अपूर्व बलिदान हुआ था। गोरक्षा का प्रश्न उन दिनों अंग्रेज सरकार से विद्रोह का कारण बन गया था। ऐसे भयानक समय में महर्षि दयानन्द ने गोरक्षा का प्रश्न उठाया था। इसे रुकवाने के लिए कर्नल नार्थब्रुक से प्रार्थना भी की थी जो लन्दन जाने वाले थे। उन्होने गोहत्या का सारा उत्तरदायित्व अंग्रेज सरकार पर ही डाल दिया था। इधर इसे रुकवाने के लिए जनता से हस्ताक्षर करवाने आरम्भ कर दिए थे। जो विक्टोरिया महारानी को सौंपने थे। उस समय महर्षि दयानन्द ने राष्ट्रीय स्वाधीनता के क्षेत्र में एक नई दिशा तथा जोशपूर्ण क्रान्ति का निर्माण कर दिया था, अंग्रेजी सरकार उसे सहन न कर सकती थी, इसी कारण महर्षि का १८८३ में अंग्रेजी सरकार के महान् षड्यन्त्र के कारण महा बलिदान हुआ।

महर्षि के पश्चात् तो उनके आर्यसमाज के लोगों ने उनके सुधार के कार्यों को बहुत ही आगे बढाया। प्रत्येक क्षेत्र में उन्होंने एक क्रान्ति सी मचा दी। स्वामी श्रद्धानन्द ने शिक्षा के क्षेत्र में वह क्रान्ति की जो अंग्रेजी सरकार भी चकित रह गई। जहां स्वामी जी ने शिक्षा का प्रचार किया वहां १९२१ में संगीनों के सामने भी अपनी छाती को अडा दिया। लाला लाजपतराय जैसे नेताओं ने आजादी के लिए क्या कुछ नहीं किया। देश निकाला तक भोगा। आर्यसमाजी सिक्ख कुल में पैदा हुए किशनसिंह व अजीतसिंह ने भी लाजपतराय के साथ ही देश निर्वासन की सजा को भोगा था। कितने और भी क्रान्तिकारियों को आर्यसमाज ने पैदा किया, जो फांसी पर चढे, काले पानी की सजा काटी। यह सब देशोत्थान का कार्य महर्षि दयानन्द ने और उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने किया। महर्षि दयानन्द के कार्य और आर्यसमाज के प्रगतिशील कार्यों से आर्यसमाज के बाहर के नेता भी बड़े प्रभावित रहे। स्वराज्य का मन्त्र सबसे पूर्व महर्षि ने ही दिया था। लोकमान्य तिलक, गोपालकृष्ण गोखले, दादा भाई नौरोजी तथा अन्य तत्कालीन नेता आर्यसमाज के ही देशहितैषी कार्यों से सहमत थे। आर्यसमाज से ही प्रेरणा पाते थे। इन्हीं नेताओं में एक गांधी जी भी थे।

महात्मा गांधी

महात्मा गांधी का जन्म भी १८६९ में गुजरात के नगर राजकोट में हुआ। महर्षि दयानन्द के जन्म के लगभग ४५ वर्ष बाद। महर्षि ने उस समय कार्य क्षेत्र में आकर बडे जोरों से प्रचार कार्य आरम्भ कर रक्खा था। १८६९ में काशी शास्त्रार्थ करके वे काशी को पराजित कर चुके थे। १८७२ में देश की स्वतन्त्रता के लिए कलकत्ता में वायसराय नार्थब्रुक से बातचीत भी कर चुके थे। सत्यार्थप्रकाश तथा आर्यसमाज की भी स्थापना कर चुके थे। गाधी जी अभी छोटे से बच्चे ही थे। गांधी जी राजकोट में शिक्षा पाकर इग्लैंड पढने के लिए चले गए थे। मई १८९३ में अब्दुल्ला एण्ड कम्पनी का मुकद्दमा लड़ने के लिए वे दक्षिण अफ्रीका पहुचे थे। दक्षिण अफ्रीका पहुचने के एक वर्ष बाद गांधी जी के मन में वैदिक धर्म और वेदों की रचना के सम्बन्ध में जिज्ञासा पैदा हुई। उन्होंने जून १८९४ से कुछ पहले रामचन्द्र भाई को धर्म सम्बन्धी कुछ प्रश्न लिखकर भेजे थे। जिनमें वैदिक धर्म व वेद के सम्बन्ध में भी प्रश्न पूछे गए थे। वेद किसने रचे? क्या वे अनादि है? यदि ऐसा हो तो अनादि का क्या अर्थ है?

गांधी जी के दक्षिण अफ्रीका पहुंचने के कुछ वर्ष बाद ही आर्य समाज के अनेक विद्वान् वेद प्रचार करने के लिए अफ्रीका पहुचे। उनमे एक थे प्रो० भाई परमानन्द। ये १९०५ में दक्षिण अफ्रीका पहुचे। गांधी जी ने स्वयं सनातनी होकर भी अफ्रीका में उनका न केवल स्वागत ही किया, बल्कि उनके पक्ष में 'इण्डियन ओपीनियन' मे प्रोफेसर परमानन्द शीर्षक से एक लेख भी लिखा और २८ अक्तूबर १९०५ को जोहनिसबर्ग मे उन्हे मानपत्र भी समर्पित किया। इसके साथ ही आर्य समाज से प्रभावित होकर महात्मा गांधी ने २६ अगस्त १९०५ को 'इण्डियन ओपीनियन' में प्रकाशित अपने लेख मे आर्यसमाज के बारे में लिखा—"आर्यसमाज भारत के किसी स्थापित रूढिगत धर्म का प्रतिनिधित्व नहीं करता। यदि हम यह कहे कि आर्यसमाज एक ऐसा समाज है जो अभी अपने अस्तित्व के लिए सघर्ष और नए अनुयायी बनाने के लिए उपयुक्त परिस्थिति तैयार कर रहा है, तो इससे उसका यश कम नहीं होता। यह हिन्दु धर्म में सुधार का प्रतीक है"। भाई परमानन्द की प्रशंसा में उन्होंने लिखा—आर्यसमाज ने सच्चे देशभक्त और बहुत

आर्यसमाज की देन

जग उद्धारक, समाज सुधारक एक आर्यसमाज बताया।
बिना प्रचार ना हो जागृति सच्चा ज्ञान दर्शाया ॥ टेक ॥

बिना इसके प्रचार बरण मूर्ख धक्के खाते थे।
धर्म कर्म ध्यान नहीं पाषाण पूजने जाते थे।
पाखण्डी मस्टण्डे सारे देश को लूट कर खाते थे।
वेदों के प्रचार बिना ईश्वर साकार बनाते थे।
आर्यसमाज ने भेद खोल दिया ईश्वर निराकार बताया ॥१॥

अवतारवाद, मूर्ति पूजा, पाखण्डवाद का नाश किया।
बुद्धि विरुद्ध मत जितने उनका पर्दाफाश किया।
जादू, टोना, दिशा सूल का बिल्कुल सत्यानाश किया।
फलित ज्योतिष की आशा छोड़ ईश्वर पर विश्वास किया।
सत्य मार्ग दर्शाकर बुद्धि का पर्दा हटाया ॥२॥

हिन्दू नहीं आर्य हैं इसका भी प्रचार किया।
राम राम जय गुरुदेव हटा नमस्ते का विस्तार किया।
यज्ञ धूम मचा सारे जग में मानव जाति का उपकार किया।
विधवा विवाह प्रचलित कर स्त्री जाति का उद्धार किया।
मदिरा सेवन, मास भक्षण की वृति को छुड़वाया ॥३॥

बड़े १ उपदेशक साधु तपस्वी बहुत हुए ब्रह्मचारी।
कर कर के प्रचार किया जग उपकार भारी।
जीवन कर दिया दान हुए बहुत से प्रचारी।
संस्कृत हिन्दी से प्रेम किया गुरुकुल किए जारी।
'रामचन्द्र' कह उपकार कितने ना जाता ऋण चुकाया ॥४॥

मा० रामचन्द्र आर्य, नलवा (हिसार)
सहसम्पादक बड़वा समाचार पाक्षिक

कृष्ण ईश्वर था न राम ईश्वर था

चिरंजीलाल 'जीव' बराड़ा जि० अम्बाला

कृष्ण ईश्वर था न राम ईश्वर था।
कृष्ण योगी था राम आदर्श नर था ॥
वे पैदा हुए थे वे मर भी गये हैं।
अजन्मा था कोई न कोई अमर था ॥
वे राजा थे दोनों वे नीति निपुण थे।
पछाड़ा था दुश्मन को बल इस कदर था ॥
वे थे धर्म रक्षक महापुरुष थे वे।
वे विद्वान् थे पास ताकत थी जर था।
वे श्रेष्ठ आये थे धर्म वैदिक था उनका।
पर उपकारी थे उनसे कुश हर बशर था ॥
गृहस्थी थे 'जीव' उनका आला चलन था।
प्रभु आगे उनका झुका रहता सर था ॥

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे नारि गृहे द्वारि सखा श्मसाने।
देहश्चितायां पर लोक मार्गे धर्मानु गो गच्छति जीव एकः ॥

———

धन रहे भूमि गड़ा और पशु रहें खूंटे बन्धे।
घर के दर तक स्त्री जाती है तेरी संग तेरे ॥
मरने पै बन्धु तेरे जाते हैं संग श्मशान तक।
देह यह तेरी चिता तक साथ दे तेरा फकत ॥
आगे तो हैं साथ जाते कर्म नेको बद तेरे।
जिनका अच्छा और बुरा फल भुगतना तुझको पड़े ॥
धर्म पर "जीव" चल तू क्यों पड़ा है शोक में।
कर्म अच्छे कर कि जिससे सुख मिले परलोक में ॥

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

पंजि० सं० 23207/73 रजि० सं० P/RTK 49 — सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८५



ओ३म्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री — सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री — सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १२ अङ्क ४१ ७ अक्तूबर १९८५ — वार्षिक शुल्क १५) — विदेश में ५ पौंड — एक प्रति ३० पैसे

वेदों की यथार्थता—

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

प्रेमचन्द श्रीधर एम० ए०

(गतांक से आगे)

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि वेदों का कर्ता परमेश्वर को छोड़कर अन्य कोई नहीं। अत: वेद परमेश्वर की कल्याणी वाणी है और सब मनुष्यों के लिए बिना किसी भेदभाव के दिया गया ज्ञान है।

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य:।
ब्रह्मराजन्याभ्यां ७ शूद्राय चार्य्याय च स्वाय चारणाय ॥ यजु० २६/२

वेद का पवित्र और कल्याणकारी ज्ञान जन-जन के लिए है। वेद अन्य धर्म ग्रन्थो की तरह किसी एक जाति सम्प्रदाय या वर्ग का धर्म ग्रन्थ नही है। वेद पढ़ने और सुनने का अधिकार सबको है।

इस प्रकार वेद शाश्वत सत्य का ज्ञान है, जो सब प्राणियो के कल्याण के लिए सृष्टि के प्रारम्भ मे ही ईश्वर के द्वारा नैमित्तिक ज्ञान के रूप मे मिला। वेद के पठन-पाठन श्रवण और मनन तथा ज्ञान के अनुरूप आचरण मे ही मनुष्यमात्र के जीवन का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। उन सबका जो इस पवित्र मार्ग के अनुयायी हैं यह धर्म और कर्त्तव्य है कि निष्ठापूर्वक अपनी समग्र शक्ति को इसके प्रचार प्रसार में लगा दे तभी 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का लक्ष्य पूर्ण हो सकता है।

डाबूराम दहिया की डबास खाप तथा कंझावला का योद्धा लालचन्द

(निहालसिंह आर्य अध्यापक)

ऋग्वेद मंडल ८।२५।२२ के मन्त्रानुसार हमारे पूर्वजों ऋषियो ने आर्यावर्त के वीर रमणीक स्वर्ग प्रदेश हरयाणा का नाम धरा था जो प्राकृतिक तथा गौणिक ही है। यह सदा से ही गणतन्त्रीय जटाओं (खापों) का जनगण रहा है। इन गणों अर्थात् जटाओं खापों की स्थापना सबसे पहले हर-हर महादेव शिव तथा उसके पुत्रों ने की थी। शिव की इन जटाओं गणो से ही राष्ट्रीय जाट नाम चला आ रहा है। उत्तरी भारत मे विशेषकर दिल्ली के चारों ओर १५०-१५० मील के प्राचीन विशाल हरयाणा में अब भी गणों अर्थात् जटाओ खापों का संगठन है।

इन खापो की संख्या अब अनुमान पौने तीन हजार है। इनमे एक प्रसिद्ध खाप 'दहिया खाप' है। जिसका नामकरण वीरभद्र के वशज दहियाभद्र के वश से हुआ था। कुछ लोग दधीचि ऋषि के नाम से दहिया का वश मानते हैं। पहली बात ही ठीक लगती है। दहियाओं की राजधानी गोदावरी नदी पर थालनेर थी। जोधपुर के पास कई ग्राम हैं। दादा दहिया दधरेड़े से रोहतक मण्डल में अनुमान ९०० वर्ष पूर्व बरोणा-गोपालपुर के खेड़े पर आया था अब यहा दहिया खाप के ४०-४५ ग्राम सम्पन्न हैं। भारत में इनके कुल ग्राम ३६० हैं। दादा दहिया के साथ कुण्डू और हुड्डा भी दधरोड़ा से आए थे। डबास भी दहिया की शाखा है। इन चारों का भाईचारा है। दहिया का पूरा लेख फिर लिखूंगा।

डाबूराम दहिया की डबास खाप—

हजारों वर्ष पहले से दहियाओं और चौहानों का बहुत मेल और सहयोग रहा है। पृथ्वीराज चौहान से पहले अजयपाल चौहान ने अजमेर बसाया था उसका सेनापति ओमाराम दहिया था। फिर विग्रह राज (वीसलदेव) ने अजमेर का दुर्ग बनाया था। इसी के समय में दहिया दल में डाबूराम दहिया के नाम से एक अलग दल बना था क्योंकि यह प्रसिद्ध योद्धा था। दहिया तथा डबास सूर्यवंश की शाखाएं हैं।

डाबूराम योद्धा की डाबूवास, डबास खाप—

डाबूराम दहिया के नाम से दिल्ली के पास डाबूवास खाप का पहला ग्राम राणी खेडा बसाया था। इसके पास चार ग्रामों का चोगामा कहाता है। परन्तु राणीखेडा से बडे पुत्र कंभूराम के नाम पर कंझावला ग्राम बसाया, यह डाबूवास ही डबास खाप कहलाती है। अत दादा ग्राम कंझावला है। यहा पास में दिल्ली रोहतक में डबासो के २४ ग्राम हैं। कुछ ग्राम पजाब, बिजनौर, मेरठ में भी हैं। नेपाल मे डबास राणा के बहत्तर ग्राम हैं।

कंझावला का योद्धा लालचन्द—

शाहजहां बादशाह का एक महल ग्राम जौनती (टटेसर) मे था, वह यहां आया करता था। शाहजहां के समय स० १६८७ वि० अर्थात् सन् १६३० ई० मे बादशाह के विरुद्ध पुर्तगालियों ने विद्रोह कर दिया था तब बादशाह की प्रार्थना पर कझावला के योद्धा लालचन्द ने ३०५ मल्लों का दल लेकर पुर्तगाली विद्रोह को दबा दिया। इन मल्लों में १५० दहिया तथा १५५ डबास के युवक थे। तब शाहजहा ने इस उपलक्ष में पुरस्कार में जिला बिजनौर में डबासों को १९ ग्राम दिए थे जो इस प्रकार हैं—

पिपली, डबासों वाला, सिखेड़ा, पाडली, लाम्बा खेड़ा, मण्डावली, मुजफ्फरा, झिलमिल, (छोटी-सी रियासत) जोतपुर, मिण्डावर, शेखपुरा आदि हैं। नगीना रियासत भी बिजनौर में है। ये बिजनौर मे सतरहवीं के अन्त में या अठारहवीं शती के आरम्भ में गए थे। मुजफ्फर नगर में मिण्डकाली, कंझावला से गया है। १७६१ ई० में पानीपत में अब्दाली के विरुद्ध सिसाणा का दलबीर और कझावला का जयबीर दलपति थे।

पता—जसौर खेड़ी, रोहतक (हरयाणा)

आर्यसमाज बहादुरगढ़ में प्रचार अभियान

दिनांक २२-९-८५। रविवार आर्यसमाज बहादुरगढ़ के नेतृत्व मे यहां की बाल्मीकि बस्ती मे प्रचार कार्य कराया गया। जिसमे आचार्य सुशीलचन्द शास्त्री एव प्रो० जयदेव आर्य के विचारो से प्रभावित हो अनेकों श्रोताओ ने वैदिक धर्म की मान्यताओं पर चलने व दुर्व्यसनो को त्यागने का व्रत लिया।

—श्रीगणेश चोपड़ा
मन्त्री आर्यसमाज, बहादुरगढ

आर्यवीर दल हरयाणा का नौवां प्रान्तीय महासम्मेलन कैथल में सफलतापूर्वक सम्पन्न

पलवल। सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरयाणा का महासम्मेलन श्रद्धानन्द नगर कैथल में स्वामी ओमानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे बड़े उत्साह एवं सफलतापूर्वक सम्पन्न होगया।

सम्मेलन का आरम्भ शुक्रवार, २० सितम्बर को सायं यज्ञ एवं सामूहिक सध्या के साथ स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती एव स्त्री आर्य-समाज कैथल के सहयोग से हुआ।

रात्रि को श्री अमरसिंह जी की प्रधानता मे एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसका संचालन प्रो० उत्तमचन्द जी शरर ने किया। सम्मेलन मे सर्वश्री सियाराम निर्भय (बिहार), डा० राणाप्रताप गन्नौरी, जफर साहब, हरीशचन्द्र नाज सोनीपती, श्रीमती श्यामा त्यागी, बेताब अलीपुरी, सत्यपाल बेदार, बर्क साहब, मातिश साहब, ओंकार नीरव एव व्याकुल जी ने आर्यवीरों को प्रेरणा देते हुए सरस कविता पाठ किया जिसे हजारों श्रोताओं ने मुक्तकण्ठ से सराहा। पलवल के युवाकवि गिरिराज शर्मा की कविता 'हरयाणा के शूरवीर' पुरस्कृत हुई।

शनिवार प्रात: सैकडों आर्यवीरों की सामूहिक शाखा दर्शनीय थी जिसमें पूरे हरयाणा का प्रतिनिधित्व रहा। डा० देवव्रत जी आचार्य ने शाखा का संचालन एवं प्रशिक्षण कार्य किया। स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती ने यज्ञ करवाया तथा पं० शिवकुमार जी शास्त्री ने प्रेरणा-दायक प्रवचन दिया।

आर्यवीरों द्वारा प्रदर्शित व्यायाम प्रदर्शन ने तो मानो समा बाध दिया। ब्रह्मचारियों द्वारा दो-दो कारों को रोकना, जंजीर तोड़ना, सरिया मोड़ना, मलखम्भ व्यायाम, आसन आदि को जनसमूह ने तालियो की गड़गडाहट से थपकी दो।

इसी के साथ आर्यवीर दल हरयाणा ने श्री राणा रामसिंह जी मध्यप्रदेश, श्री सत्यपाल आर्य पलवल, श्री जगदीश मित्र आर्य रोहतक को उनके आजीवन दल की सेवा करते रहने के लिए वस्त्र, खड्ग एव नकद धन राशि देकर सम्मानित किया गया।

सायं ३ बजे हजारों आर्यवीरो एव विभिन्न स्थानों से पधारे आर्य-प्रतिनिधियों की विशाल शोभायात्रा ओ३म् ध्वजों एव बैनरों के साथ बेण्ड वाजो से सुसज्जित होकर नगर के मुख्य मार्गों से निकली। इन्द्र भगवान् ने अमृतवर्षा करके परीक्षा भी ली किन्तु जलूस आगे बढ़ता ही रहा। जलूस में स्कूटरों घुड़सवारों के साथ जीप में ओमानन्द जी सरस्वती, प० बालदिवाकर हस (प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्यवीर दल), डा० देवव्रत व्यायामाचार्य (उपप्रधान सेनापति सा०आ०वी० द०) प्रो० उत्तमचन्द शरर (संचालक आर्यवीर दल हरयाणा), विराजमान थे। आर्य वीरांगनाएँ एव स्त्रीसमाज मधुर गीत गा रही थी। यज्ञ की झाकी मनोहारी थी। मार्ग में नगरवासियों ने पुष्पवर्षा की तथा जल-पान करवाया। कैथल के इतिहास में इतनी विशाल रैली आज तक नही निकली थी।

"राष्ट्रीय समस्याएँ और और आर्यसमाज" सम्मेलन में प० शिव-कुमार जी शास्त्री भूतपूर्व ससद-सदस्य ने जात-पात एवं छुआछात त्यागने के बारे में, डा० रामप्रकाश जी ने आर्यसमाज को साहित्यिक रूप से समृद्ध बनाने, श्री वीरूराम जी ने सिनेमा तथा दूरदर्शन के माध्यम से अश्लील प्रदर्शन पर रोक लगाने तथा चौ० शिवराम वर्मा भूतपूर्व मन्त्री हरयाणा सरकार ने सुझाव दिया कि भारत 'धर्मनिरपेक्ष' नही 'मत निरपेक्ष होना चाहिए।

"आर्यवीर दल और आर्यसमाज" सम्मेलन में प्रो० रामविचार तथा प्रो० रामकुमार जी ने स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में आर्यवीर दल को आर्यसमाज का भावी भविष्य तथा रीढ की हड्डी बताया। आर्यसमाजो को आर्यवीर दल की स्थापना करने की प्रेरणा भी की गई।

सम्मेलन में प्रो०. उत्तमचन्द जी शरर, संचालक आर्यवीर दल हरयाणा ने निम्नलिखित नियुक्तियां कीं।

सन् १९८५-८६ के लिए नियुक्तियां

संरक्षक—लाला लक्ष्मणदास (बल्लभगढ़), डा० गणेशदास (करनाल)
स्वामी जीवनानन्द सरस्वती (रोहतक)
सह संरक्षक—श्री मनोहरलाल आनन्द (रोहतक)
उपसंचालक—श्री उमेदसिंह शर्मा (कैथल), श्री रामचन्द्र आर्य (गुड़गांव)
महामन्त्री—श्री अजीतकुमार आर्य (पलवल)
कोषाध्यक्ष—श्री वीरभान आर्य (पलवल)
बौद्धिकाध्यक्ष—प्रो० ओमकुमार (जीन्द), श्री लाजपतराय (करनाल),
प० विश्वामित्र जी (हिसार)
प्रचारमन्त्री—श्री देशराज आर्य (रोहतक)
आर्यवीर विजय पत्रिका—
सम्पादक—श्री धर्मदेव विद्यार्थी (नग्वाना)
सहसम्पादक—श्री बाबूराम गुप्ता एडवोकेट (कैथल।
व्यवस्थापक—श्री वेदप्रकाश आर्य (रोहतक)
प्रधान शिक्षक—श्री सत्यपाल आर्य (पलवल)
लेखा निरीक्षक—श्री लक्ष्मणदास आर्य (बल्लभगढ़)

मण्डलपति

रोहतक—जगदीश मित्र आर्य, सोनीपत—श्री हरीशचन्द्र स्नेही,
करनाल—श्री जगदीशचन्द्र मधोक, जीन्द—श्री रामकुमार आर्य,
कुरुक्षेत्र—श्री हरिराम आर्य, अम्बाला—श्री रामलाल आर्य
फरीदाबाद—श्री वेदप्रकाश आर्य गुडगांव—श्री सत्येन्द्रप्रकाश शास्त्री,
सिरसा—श्री नौरंगसिह एडवोकेट, भिवानी—श्री जगदीशचन्द्र आर्य,
महेन्द्रगढ—श्री वेदप्रकाश आर्य, हिसार—श्री सजयकुमार आर्य

अजीतकुमार आर्य
मंत्री, आर्यवीर दल हरयाणा,
आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर, पलवल-१२१११०

साम्प्रदायिकता और भारतीय सेना



पण्डित ब्रह्मदत्त स्नातक शास्त्री,
शिरोमणि एम० ए०

परिचय—ऋग्वेद के मण्डल १—७ के ऋषिकृत भाष्य के संस्कृत से अंग्रेजी में सम्पादक, पत्रकार एवं लेखक तथा हैदराबाद सत्याग्रह में दलपति (१९३९ में)
भारतीय सूचना सेवा (रिटा०)

आतंकवाद की समाप्ति के लिए सिख रेजिमैंट की कुछ बटालियनों को भंग करने का समाचार हाल में प्रकाशित हुआ है। इसका अर्थ यह नहीं है कि भारतीय सेना से उनको हटाया जाएगा अपितु उनको अन्य बटालियनों में भेजा जायेगा। यह स्मरण रहे कि देश के स्वाधीन होने के बाद स्थल सेना की टुकड़ियों का नाम यद्यपि अब तक जातीय अथवा प्रादेशिक नामों के आधार पर चलाया जा रहा है, और उसके कारण मराठा इन्फेन्ट्री, महार रेजिमैंट, कुमायूं रेजिमैंट, गोरखा राइफल्स, बंगाल लैन्सर्स, पंजाब बटालियन, जाट रेजिमैंट, मद्रास सैपर्स, डोगरा रेजिमैंट जैसी टुकड़ियां भारतीय स्थल सेना में कार्य कर रही हैं। शूरता की इन परम्पराओं का पालन ब्रिटिश सेना की विरासत के रूप में भारत को मिला है। वहां भी स्काटलेंड और यार्कशायर जैसे नामों पर टुकड़ियां बनी हुई हैं।

इस सम्बन्ध में एक सुधार धीरे-धीरे यह लाया गया है कि भारतीय सेना में से सैनिक और गैर-सैनिक जातियों का भेद समाप्त किया गया और सेना की भर्ती में अब सब प्रदेशों और वर्गों को समान अवसर दिए जाने लगे हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि सेना की विभिन्न इकाइयों में अब उस नाम वाली टुकड़ी में केवल विशिष्ट जातीय और प्रदेश के लोग ही नहीं रखे जाते हैं, अपितु इन विभिन्न इकाइयों में समान भारतीयता का भाव जगाने के लिए उनको मिला-जुला या संयुक्त कर दिया गया है। उनकी कार्यप्रणाली भी प्रादेशिक या जातीय आधार पर पूर्णतः नहीं रखी गई यद्यपि उन सैनिक टुकड़ियों के नामों की विशेषता को सैनिकों में भरने का पूरा प्रयत्न राष्ट्रीय और सांस्कृतिक आधार पर किया जाता रहा है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत में अंग्रेजों की परम्परा को तोड़कर धार्मिक आधार पर बनी सैनिक टुकड़ियों को भंग कर दिया गया। हमारी राष्ट्रीय सरकार ने धार्मिक आधार पर बनी मुस्लिम रेजिमैंन्ट को भारतीय सेना से सदा के लिए समाप्त कर दिया और उन सैनिक टुकड़ियों के सैनिकों एवं अफसरों को भारतीय सेना की अन्य टुकड़ियों में यथोचित रूप से व्यवस्थित कर दिया। गलती यह हुई कि धार्मिक आधार पर बनी इन सैनिक टुकड़ियों के नामों को समाप्त करने की दिशा में सिख धर्म के अनुयायियों के साथ विशेष पक्षपात करके उनके नाम पर बनी सिख रेजिमैंट और सैनिक टुकड़ियों का नाम नहीं समाप्त किया गया। सम्भवतः इसका कारण भारत की राष्ट्रीय सरकार के प्रथम रक्षा मन्त्री सरदार बलदेवसिंह की अदूरदर्शी पक्षपातपूर्ण नीति थी जिसके अन्तर्गत ब्रिटिश शासन की भेदभावभरी नीति का पालन करते हुए भारतीय सेना में सिखों को उनकी जनसंख्या के अनुपात से कई गुना स्थान आज भी दिया जा रहा है।

सेना में सिख :

स्वतन्त्र परन्तु विभाजित भारत की सेना में 1947-48 के तुरन्त बाद सिख सैनिक और अफसरों की संख्या कुल भारतीय सेना का 24 प्रतिशत के लगभग थी। अविभाजित भारत में भारतीय सेना का प्रायः 12 प्रतिशत सिख सिपाही व अफसर थे। बाद में भारतीय सेना के विस्तार होने पर यह अनुपात कम हुआ, परन्तु आज भी देश में 2 प्रतिशत जनसंख्या वाले सिखों को भारतीय सेना में 13 प्रतिशत से ऊपर स्थान प्राप्त हैं। सेना के उच्च पदों और विशेषतः वायु सेना और स्थल सेना के अफसरों में सिखों का प्रतिशत बहुत ऊंचा है। संसद व उसके बाहर इसके बावजूद अकाली व सम्प्रदायवादी सिख सेना में सिखों पर भेदभाव का आरोप लगाते रहते हैं। श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या के बाद सिख रेजिमैंट की इन बटालियनों में तथा अन्य सैनिक टुकड़ियों में जिस प्रकार भारतीय सेना के हथियारों को लूटकर अपने सैनिक अधिकारियों की हत्या, और उनके आदेशों का उल्लंघन करके इन लोगों ने जो भारतीय राष्ट्र के प्रति गद्दारी उन नाजुक क्षणों में दिखलाई, वह सचमुच एक चौंकाने वाली बात थी।

इन कार्रवाहियों के धीरे-धीरे प्रकाश में आने के बाद भारतीय सेना के उच्च अधिकारियों ने यह पाया कि सिख धर्म और उनकी वीरता की परम्पराओं के सम्मान करने के लिए केवल सिखों के नाम पर बनी टुकड़ियां सेना में बनी रहीं, परन्तु उसका दुष्परिणाम बड़ी संख्या में इन भगोड़े सिख सैनिकों के दुष्कृत्यों से धीरे-धीरे पता चल रहा है। उससे स्पष्ट होता जा रहा है कि अकाली और आतंकवादियों के प्रभाव में आकर इन भगोड़े सिख सैनिकों ने देश के साथ कितना विश्वासघात और गद्दारी की और भारतीय सेना को लज्जास्पद स्थिति में ला खड़ा किया। खेद की बात तो यह है कि जहां चीफ एयर मार्शल अर्जुनसिंह तथा अन्य वरिष्ठ सिख सैनिक अफसर भारतीय सेना की ऊंची और शानदार परम्पराओं को बनाए रखने के लिए अनुशासन के हामी हैं, वहां अकाली दल के हामी लैफ्टिनैन्ट कर्नल जगजीतसिंह अरोड़ा तथा कुछ रिटायर्ड सैनिक अधिकारी अन्य मंचों से इन बागी सिख सैनिकों के लिए क्षमादान की मांग कर रहे हैं। यह निरी हास्यास्पद स्थिति होगी कि बिना उचित दण्ड के इनको सेना में बरकरार रखा जाए और वे क्षमा खेद सहित भी न मांगे।

विद्रोह की चिंगारी :

इन भगोड़े और बागी सैनिकों और अफसरों के बचाव और रिहाई के लिए सन्त लोंगोवाल और उनका अकाली दल, सिख बुद्धिजीवी, सिख नव युवा संगठन (तथा जनता पार्टी भी) भिंडरावाला के अनुयायी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष तोहड़ा, विदेश स्थित शत्रुओं के दलाल और सिख धनिक व व्यापारी एड़ी और चोटी का जोर लगाकर और झूठे वक्तव्यों द्वारा सरकार जनता और विशेष सैनिक अदालतों को गुमराह कर रहे हैं। उनकी तुलना ब्रिटिश सेना के आजाद हिन्द फौज में शामिल और स्वतन्त्रता पूर्व के नौ सेना विद्रोह से को जारही है।

इस दृष्टि से भारत सरकार के रक्षा मन्त्रालय का यह नवीनतम निर्णय स्वागत करने योग्य है कि जिसके अन्तर्गत भारतीय सेना से सिख साम्प्रदायिकता के उन्मूलन की दिशा में फिलहाल नवीं सिख बटालियन को भंग किया जारहा है। आशा और सम्भावना की जारही है कि अंग्रेजो के समय से साम्प्रदायिकता के ये किले जो कि सिख सैनिक टुकड़ियों के नाम पर भारतीय सेना में चल रहे हैं उनको शीघ्र समाप्त कर दिया जाएगा। भारतीय सेना और भारतीय राष्ट्र की सुदृढता की दिशा में निश्चय ही यह एक सराहनीय प्रयत्न माना जाएगा।

चण्डीगढ से प्राप्त एक समाचार अनुसार सिख रेजिमैंट की नौवीं बटालियन तोड़ी जारही है। ऐसा इसलिए क्योंकि इस बटालियन ने स्वर्ण मन्दिर में सैनिक कार्रवाही के बाद विद्रोह कर दिया था। "मार्लिन्स सिख" नाम से जानी जाने वाली इस बटालियन में 7-8 जून की रात विद्रोह हो गया था। राजस्थान के श्रीगंगानगर रेंज में तैनात इस बटालियन के अधिकांश सैनिक लालगढ़ जत्तन में यूनिट लाइंस छोड़कर फरार होगए थे। बताया जाता है कि बटालियन तोड़ने के

आदेश दे दिए गए हैं। यह काम अगस्त तक पूरा होने की उम्मीद है। खबर है कि उच्च स्तर पर एक साल तक भारी सोच विचार के बाद यह फैसला किया गया है।

इससे पहले 1950 में दूसरी असम बटालियन भी विद्रोह के कारण भंग कर दी गई थी।

आपरेशन ब्लू स्टार के कारण जिन बटालियनों में विद्रोह हुआ उनके पुनर्गठन की भी योजना बन रही है। ऐसी ही एक बटालियन है तीसरी सिख बटालियन। पूर्वी कमान में बागबास कैंट में तैनात इस बटालियन में 11 जून को विद्रोह होगया था। जांच के बाद इसके 35 सैनिकों को ब्लैक लिस्ट में डाल दिया गया यानी उन्हें मुख्य अपराधी माना गया। 199 सैनिक ऐसे माने गए जिन्होंने विद्रोह में शिरकत की। तीसरी सिख बटालियन को "रत्ताज सिख" के नाम से जाना जाता है।

अठारहवीं सिख बटालियन के पुनर्गठन की भी सम्भावना है जम्मू के पास मिग्न साहब में तैनात इस बटालियन से 230 सैनिक भागे थे। इनमे से 27 पर कोर्ट मार्शल हो रहा है। पंजाब रेजिमेंट का 14वीं बटालियन में भी विद्रोह हुआ था। यह बटालियन पूणे के पास खिरकी में तैनात थी।

सात जून को विद्रोह से पहले नौवी सिख बटालियन में छह अफसर, 25 जेसीओ और 535 जवान थे। विद्रोह के बाद 8 जून को इसमें अफसरों और जेसीओ के अलावा केवल 150 जवान रह गए थे। बाकी जवान अफसरों के क्वार्टरों पर गोलियां चलाकर फरार हो गए थे। इसके 60 जवानों और तीन जेसीओ पर जनरल कोर्ट मार्शल और बाकी पर संक्षिप्त मुकदमा चलाने का फैसला किया गया है।

विद्रोह के तुरन्त बाद कमाण्डिंग अफसर लें० कर्नल इकबालसिंह सभरवाल को हटाकर उनकी जगह पर लें० कर्नल करमसिंह विर्क को नियुक्त किया गया। श्री सभरवाल को मेजर बना दिया गया। यूनिट के दो अफसरों मेजर डी० के० कपूर और मेजर के० के० शर्मा पर जांच बिठा दी गई है और उन्हें दूसरी यूनिट में भेज दिया गया है। यूनिट को तीन जगहों में बांट दिया गया है। अभी यह निश्चित नहीं है कि सरकार इस यूनिट को तुरन्त संगठित करेगी या 10 वर्षों के बाद जैसी कि परम्परा रही है, जिन जवानों या अफसरों पर कोई आरोप नहीं है उन्हें रेजिमेंट सेंटर पर अन्य यूनिटों में भेजे जाने की सम्भावना है।

शोक समाचार

आर्यसमाज सालवन के युवा उप प्रधान कुवर राजवीरसिंह आर्य के पूज्य पिता जी ठाकुर मातुसिंह का 85 वर्ष की आयु में दिनांक 25-9-85 को प्रात. साढे पांच बजे निधन हो गया। ठाकुर मातुसिंह की आर्यसमाज के प्रति बड़ी श्रद्धा थी। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे। —सभा मन्त्री

आर्यसमाज तावडू मे वेद सप्ताह

आर्यसमाज तावडू जिला गुड़गांव में 1 से 9 सितम्बर तक वेद सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी शान्तानन्द जी के प्रवचन तथा श्री मंगलदेव जी के भजन हुए। —मन्त्री आर्यसमाज

आर्यसमाज मुस्तफाबाद जि० अम्बाला का चुनाव

श्री बूलचन्द जी प्रधान, श्री मोहनलाल जी वकील उप-प्रधान, श्री रत्नचन्द जी मन्त्री, श्री सुन्दरलाल जी उप-मन्त्री, श्री प्रकाश जी खजान्ची, श्री मोहनकुमार जी पुस्तकाध्यक्ष।

आर्यसमाज किशनपुरा माजरा जि० अम्बाला का चुनाव

प्रधान—श्री चौ० सोमनाथ आर्य, उप-प्रधान—श्री सत्यपाल आर्य, महामन्त्री—श्री सुखदर्शनलाल आर्य, मन्त्री—श्री राकेशकुमार, प्रचार मन्त्री—श्री रामेश्वरदास आर्य, निरीक्षक तथा कोषाध्यक्ष—श्री मा० प्रेमपाल आर्य।

आर्यसमाज हांसी का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज हांसी का 33वां वार्षिकोत्सव दिनांक 20-21-22 सितम्बर शुक्र, शनि, रविवार को मनाया गया जिसमें आर्य जगत् के उच्च कोटि के विद्वान् ब्रह्मचारी आर्य नरेश, आचार्य वेदप्रकाश जी, पं० मंगनलाल जी शास्त्री, पं० धर्मपाल जी शास्त्री, भजनोपदेशक महाशय वीरेन्द्र जी वीर शामली वाले पधारे। उत्सव से पूर्व 15 सितम्बर से 19 सितम्बर तक आर्य संन्यासी पूज्यपाद स्व० मुनीश्वरानन्द जी गाजियाबाद वालों की वेद कथा हुई। —भरतलाल शास्त्री आर्यसमाज हांसी.

बाबरा मोहल्ला रोहतक में सत्संग

आर्यसमाज बड़ा बाजार रोहतक में प्रात:कालीन दैनिक यज्ञ वेदपाठ सहित आरम्भ हो गया है।

समय 6–45 से 7–30

विशेष : रविवार का सत्संग इसी स्थान पर प्रात: 8 से 10 बजे तक लगता है। केसरदास आर्य

मन्त्री आर्यसमाज बाबरा मोहल्ला

आर्यसमाज सेवासदन बल्लबगढ़ (फरीदाबाद) का नवां वार्षिकोत्सव

सभा के सहयोग से आर्यसमाज का नवां वार्षिकोत्सव २८, २९ सितम्बर को निर्विघ्न सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा के भजनोपदेशक पं० विद्याभूषण जी समय पर पहुंच गये और पूर्ण सहयोग किया। वेद प्रचार में २००) रु० दे दिए हैं। इनके अतिरिक्त उत्सव पर पं० शिवकुमार जी शास्त्री, पं० ओमप्रकाश जी पुरुषार्थी, प० राजगुरु जी शर्मा (महू), आचार्य प्रेमभिक्षु जी, पं० गुलाबसिंह जी राघव आदि विद्वान् पधारे तथा श्री पी० के० बंसल प्राचार्य की अध्यक्षता व सारस्वत मोहन मनीषी के संयोजन में विराट् कवि सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

– सत्यदेव गुप्त प्रचार मन्त्री

आर्यसमाज मनाना में वेद प्रचार

श्री रणवीरसिंह शास्त्री जी द्वारा दिनांक 20-9-85 से 26-9-85 तक रात्रि 9-00 से 10-00 बजे तक सप्ताह भर विभिन्न विषयों पर व्याख्यान हुए। दिनाक 22-9-85 को साप्ताहिक सत्संग उपरान्त दर्जन भर युवक युवतियों ने यज्ञोपवीत लिए व वैदिक धर्मानुसार आचरण करते हुए देश, समाज सेवा का व्रत लिया।

—मन्त्री आर्यसमाज मनाना, जि० करनाल

ध्यान योग शिविर

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आर्यनगर ज्वालापुर योगधाम में स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती योगी, नारायण मुनिश्चतुर्वेद की अध्यक्षता में रविवार आश्विन शुक्ला १४ सं० २०४२ वि० तदनुसार २७ अक्टूबर सन् १९८५ ई० से शनिवार कार्तिक कृष्णा ५ सं० २०४२ वि० तदनुसार २ नवम्बर सन् १९८५ ई० तक ध्यान योग शिविर का आयोजन किया जारहा है, जिसमें आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा, ध्यान आदि अष्टांगयोग का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जावेगा तथा यम नियमादि योग के आवश्यक विषयों का ज्ञान भी कराया जावेगा। शिविरार्थी शारीरिक रोगों तथा मानसिक अशान्ति से छुटकारा पाने के लिए विविध यौगिक उपायों से लाभ प्राप्त करके आत्मदर्शन का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे।

विनीत :

[illegible] सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

वैदिक भारत के निर्माण में आर्यसमाज का योगदान

डा० सुरेन्द्रसिंह कादियाण, एम.ए., पी-एच.डी.

महर्षि दयानन्द की साधना सर्वतोमुखी थी किन्तु उनकी एकमात्र महान् देन थी 'वेदों की ओर लौटो' का उनका महाघोष। उनका समूचा जीवन वेदमय था और समूचा चिन्तन भी वेदों पर आधारित था। उनके प्रवचनों, पत्रों, विज्ञापनों और पुस्तकों में वेदों के प्रति उनकी अगाढ़ निष्ठा तथा दृढ़ विश्वास की स्पष्ट झलक दृष्टिगोचर होती है। जीवन के विविध सोपानों का उनका चिन्तन एवं मन्थन वेदाधृत है। वेदों का भाष्य करने की उनकी सहज प्रवृत्ति से स्वतः सिद्ध है कि वे लोक-परलोक के लिए वेदों को अनिवार्यता पर बल देते थे। तत्कालीन ज्वलन्त समस्याओं का समाधान उन्होंने वेदों में ही खोजने का प्रयास किया। वेदों के प्रति जनमानस में जो उदासीनता, अविश्वास और भ्रान्ति थी उसे मिटाने के लिए उन्होंने अथक एवं सार्थक योगदान दिया। वेदों के प्रति विश्वास जगाकर स्वामी दयानन्द ने पराधीन भारत की ठण्डी रगों में उष्णता का संचार किया, आत्महीनता में डूबे भारतीयों में स्वाभिमान जगाया, अकर्मण्य जीवन में तूफानों से भिड़ने की शक्ति पैदा की। वेदों के प्रति श्रद्धा से अभिमुख हुए लोगों के समुदाय को उन्होंने 'आर्यसमाज' का नाम दिया।

ऋषि ऋण से अनृण होने के लिए आर्यसमाज ने वेदभाष्य पर बल दिया, संस्कृत के पठन-पाठन की व्यवस्था के लिए गुरुकुल खोले, वेद विद्या पर सहायक साहित्य प्रकाशित किया, वेदों पर अनुसंधान कार्य को प्रोत्साहन दिया, वेद गोष्ठियों का आयोजन किया, वेदों को जन-सामान्य में प्रचारित करने के लिए उपदेशक तैयार किये, पत्र-पत्रिकाएं निकालीं और वैदिक विद्वानों को समय समय पर पुरस्कृत किया। आर्यसमाज की इस बहुमुखी योजना ने देश-विदेश में वेदों के प्रति विश्वसनीयता जाग्रत की। आर्यसमाज ने वेदों पर इतना अधिक बल दिया कि जवाहरलाल नेहरू जैसे स्वतन्त्र विचारक को आर्यसमाज एक प्रतिक्रियावादी संस्था जान पड़ी और इस प्रकार भारत के प्राचीन इतिहास में वेदों की महत्ता से अपनी अनभिज्ञता प्रकट की। महात्मा गांधी ने भी आर्यसमाज के बढ़ते यश पर कीचड़ उडेलने में कोई कसर नहीं उठा रखी। चूंकि आर्यसमाज ने सभी मत-सम्प्रदायों में फैले गुरुडम को चुनौती दे रखी थी अतः ईर्ष्यावश देश-विदेश के प्रमुख पंथ व मजहब उसके पीछे हाथ धोकर पड़ गए। इस तनाव व संघर्ष का जो सबसे बड़ा दुष्परिणाम निकला वह यह था कि जनसाधारण में वेदों के प्रति जो रुचि जगी थी वह शनैः शनैः अवरुद्ध एवं कुण्ठित होने लगी। विविध सम्प्रदायों द्वारा फैलाई भ्रान्तियों के कारण आर्यसमाज को एक सम्प्रदाय और वेदों को साम्प्रदायिक ग्रन्थ समझा जाने लगा। एक अन्य कारण से भी वेदों के प्रति विश्वास भंग होने लगा, वह कारण था आर्यसमाजियों के जीवन में कथनी व करनी में बढ़ता अन्तर। प्रारम्भिक आर्यों का जीवन वेदमय नहीं तो वेदों की ओर अधिकाधिक उन्मुख अवश्य रहता था किन्तु बाद में निरन्तर शिथिलता आती रही। उनका जीवन आदर्श जीवन न रह सका जो कि वेद प्रचार की अनिवार्य कसौटी था।

महर्षि दयानन्द भारत को वैदिक भारत के रूप में विश्व के मानचित्र पर उतारना चाहते थे और इसी दिशा में बढ़ते हुए उन्होंने वेदभाष्य का दुष्कर कार्य अपने हाथ में लिया तथा उनके मरणोपरान्त भी यह कार्य अनवरत रूप से चलता रहे इसके लिए आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज इस दिशा में यदि ईमानदारी से आगे नहीं बढ़ता तो उस पर महर्षि के प्रति विश्वासघात का दोष आता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् आर्यसमाज के अनेक संगठनों ने वेदभाष्यों के प्रकाशन की व्यवस्था की है, वेदों पर अनुसंधान को प्रोत्साहन दिया है, वेद शतक के सस्ते संस्करण निकाले हैं, लेकिन इन सब बातों से वह वातावरण नहीं बन सका जो महर्षि दयानन्द के विचारों को साकार बना सके। वैदिक भारत के निर्माण की दिशा में आर्यसमाज को एक बहुआयामी योजना तैयार करनी होगी और दृढ़ता से उसको पालन करना होगा। आर्यसमाज में दूरदर्शी एवं सुलझे हुए विद्वानों व नेताओं का अभाव नहीं है अतः यह विश्वास रखा जाना चाहिये कि ऐसी योजना वे बनाना चाहें तो बना सकते हैं और उसे सफलतापूर्वक क्रियान्वित भी कर सकते हैं। इस दिशा में अब तक न सोचने का कारण यही रहा है कि आर्यसमाज अनेक दिशाओं व कार्यों में विभाजित है और उस पर बराबर दबाव रहता है कि अमुक कार्य को पहले करो और अमुक को बाद में। सच्चाई यह है कि आर्यसमाज का वर्तमान नेतृत्व इतना अयोग्य और अकर्मण्य है कि वह नहीं समझता कि प्राथमिकता किस बात को दी जानी चाहिये। आर्यसमाज के जिस कार्य को अन्य संगठनों ने अपने हाथ में ले लिया है उधर अपनी शक्ति झोंकने के स्थान पर हमें वेदों के प्रकाशन व प्रचार पर लगानी चाहिये।

फुटकर उपाय—

१- प्रत्येक आर्यसमाजी नियमित रूप से सन्ध्या करे।

२- प्रत्येक आर्यसमाजी स्वाध्यायशील हो।

३- प्रत्येक आर्यसमाजी अपने सम्पर्क में आने वालों पर वेदों की महत्ता प्रकट करे।

४- प्रत्येक आर्यसमाजी रामलीला, रासलीला, स्वांग, सिनेमा श्राद्ध-तर्पण, जाप, देवी-देवताओं के जगरातों आदि पाखण्डों के विरुद्ध नेतृत्व संभाले। ऐसे अवसरों पर पाखण्डविरोधी साहित्य वितरित किया जा सकता है, उसके मुकाबले में सत्संग या वेद कथाओं का आयोजन किया जा सकता है।

५- सुरम्य स्थानों पर वैदिक आश्रम स्थापित हों जहां कुछ दिन निवास करके गृहस्थी-जन धर्म लाभ कमा सकते हैं।

६- मन्दिरों के निर्माण के स्थान पर व्यक्ति के निर्माण पर जोर दिया जाए।

७- आर्यसमाज से ऐसे लोगों को तुरन्त निष्कासित कर दिया जाए जो नेतृत्व हथियाने के लिए आर्यसमाज का बिल्ला लगाये घूम रहे हैं लेकिन उसके उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक नहीं हैं।

८- आर्य परिवार के समस्त सदस्यों को समाज के साप्ताहिक सत्संगों में उपस्थित होना चाहिये और प्रयास हो कि पड़ौसियों को भी उसके लिए आमन्त्रित करें।

९ सभा-सम्मेलनों में ऐसे नेताओं को आमन्त्रित न करें जिनकी धार्मिक आस्था असमञ्जस की स्थिति में हो।

१०- पुरोहितों और उपदेशकों को पूरा सम्मान व सुविधायें दी जायें -

११- जिलों को केन्द्र बनाकर ग्राम-ग्राम, नगर-नगर में वेदों का डंका बजे। जिला केन्द्र खुलें, आकर्षक हों।

१२- प्रचार के आधुनिकतम साधन अपनाये जायें।

१३- अस्पतालों, अनाथों, विधवाओं व आदिवासियों के बीच जाकर रोगियों, दुःखियों और निर्धनों की सहानुभूति अर्जित करने की योजना बने और उनमें वेदों के प्रति आस्था जगाई जाये।

१४ प्रतिनिधि सभाओं व सार्वदेशिक सभा का नेतृत्व संस्कृतज्ञ अधिकारियों के हाथों में हो, वे संन्यासी हों तो और भी उत्तम।

१५- वर्ष में ऐसे स्नेह-सम्मेलनों, यात्रा-कार्यक्रमों की शुरुआत हो जिनमें सभी प्रान्तों के आर्य भाग लें। इनमें वेदोपदेश की सुन्दर व्यवस्था की जाये।

१६- तीर्थ स्थानों और मेलों में वैदिक शिविर लगाये जायें।

१७- ट्रेनों, बसों, स्कूल-कालेजों, दफ्तरों, अदालतों, होटलों, सिनेमा घरों और शराब के ठेकों पर जमा भीड़ में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ छोटे-छोटे ट्रैक्ट निःशुल्क वितरित हों।

१८- देश भर में वेद गोष्ठियों, वेद सम्मेलनों, वेद परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं का आयोजन हो।

महात्मा गांधी का संदेश

गोरक्षा हिन्दू धर्म का दुनियां को दी हुई एक कीमती भेंट है और हिन्दू धर्म भी तभी तक रहेगा जब तक गाय का रक्षा करने वाले हिन्दू मौजूद है। हिन्दू धर्म की रक्षा तिलक करने, स्वरशुद्ध मन्त्र पढ़ने या तीर्थयात्रा करने से नहीं होगी, बल्कि गाय को बचाने की उनकी शक्ति से ही होगी। (यंग इण्डिया, ६-१-१९२१)

25,000 आर्य युवक तैयार करने की योजना

आगामी वर्ष के लिए एक लाख रु० का बजट स्वीकृत तथा युवा उद्घोष के 500 आजीवन सदस्य बनाकर 50,000 रु० की स्थिर निधि का निश्चय

11 सदस्यीय संरक्षक मण्डल का गठन

नये पदाधिकारियों की घोषणा

उत्तर प्रदेश इकाई के गठन हेतु ब्रह्मचारी विश्वपाल जयन्त अध्यक्ष नियुक्त

नई दिल्ली। रविवार 25 अगस्त, 1985 को प्रातः 11 बजे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल की अध्यक्षता में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली (अन्तरंग सभा) का वार्षिक अधिवेशन आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर माग, नई दिल्ली में ईश्वर स्तुति प्रार्थना मन्त्र तथा गायत्री मन्त्र के पाठ के साथ प्रारम्भ हुआ। शोक प्रस्ताव, गत वार्षिक अधिवेशन की कार्यवाही की सम्पुष्टि, वार्षिक प्रगति विवरण प्रस्तुत किया गया। गत वर्ष का आय-व्यय श्री प्रवीण कुमार ने प्रस्तुत किया जिसके पारित होने के बाद वार्षिक निर्वाचन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। श्री धर्मवीर अध्यक्ष व श्री अनिल आर्य महामन्त्री निर्वाचित हुए। उन्होंने खुले अधिवेशन में आगामी वर्ष के लिए निम्न प्रकार अधिकारियों की नियुक्ति की घोषणा की—

संरक्षक मण्डल—सर्वश्री स्वामी सत्यपति जी महाराज, स्वामी जगदीश्वरानन्द जी, श्री क्षितीश वेदालंकार, ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी, श्री रतनचन्द सूद, श्री यशपाल 'सुधांशु', श्री हीरालाल चावला, श्री रामलाल मलिक, श्री ईश्वरचन्द आर्य, श्री योगेश्वर आर्य, श्री मुल्खराज भल्ला।

वरिष्ठ उपाध्यक्ष—श्री धर्मपाल आर्य, उपाध्यक्ष ब्र० विश्वपाल जयन्त व श्री विश्वनाथ आर्य, मन्त्री - श्री राजकुमार आर्य, उपमन्त्री श्री वीरेन्द्र आहूजा, कोषाध्यक्ष श्री यशपाल रेलन, बौद्धिकाध्यक्ष पं० खुशीराम शर्मा, प्रचार मन्त्री श्री चन्द्र मोहन आर्य, संगठन मन्त्री श्री राजपाल आय, कार्यालय मन्त्री श्री उमेश कुमार आय, पुस्तकालयाध्यक्ष व उपकार्यालय मन्त्री श्री रणवीरसिंह आर्य, प्रधानशिक्षक श्री धर्मपाल आर्य, शिक्षक श्री महेन्द्र आय, लेखा निरीक्षक श्री रामनाथ सहगल, प्रतिष्ठित सदस्य ब्र० रामदेवी आर्या, कु० उर्मिला आर्या, श्री प्रकाशचन्द आर्य, श्री ब्रह्मप्रकाश वागीश, ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य, श्री योगेश आर्य (एडवोकेट), श्री मेघश्याम वेदालंकार।

इस अवसर पर मण्डल-शाखाधिकारियों को नियुक्तियां भी की गई। योग्य प्रतिभाशाली नौजवानों को पुरस्कार देकर तथा शाखानायकों को विसल-डोरी-फुटबाल देकर सम्मानित किया गया। आर्यसमाज अनारकली (मन्दिर मार्ग) ने आर्य युवकों के भोजन व अल्पाहार का उत्तम प्रबन्ध किया।

(चन्द्रमोहन आर्य)
प्रेस सचिव
केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली प्रदेश

वार्षिकोत्सव

गुरु विरजानन्द स्मारक करतारपुर का वार्षिकोत्सव तथा योग साधना शिविर 6 से 13 अक्तूबर 1985 को मनाया जा रहा है। जिसके मुख्य आकर्षण निम्न हैं :—

1 योग साधना शिविर 2. सामवेद पारायण यज्ञ 3 ध्वजारोहण 4 महिला सम्मेलन 5. श्रद्धांजलि सम्मेलन 6. शोभा यात्रा 7. यौगिक प्रवचन आदि।

आर्य नेता देवव्रत धर्मेन्दु जी को श्रद्धांजलि

आर्य नेता पं० देवव्रत धर्मेन्दु जी के आकस्मिक निधन पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव, आर्य प्रादेशिक सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के महासचिव श्री अनिल कुमार आर्य, आर्य युवक परिषद् दिल्ली (रजि०) के मन्त्री श्री ओमप्रकाश-आर्य, परोपकारिणी यज्ञ समिति के मन्त्री श्री कमल किशोर आर्य, आर्य बाल गृह-आर्य कन्या सदन के श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व राजधानी के अनेक धार्मिक सामाजिक नेताओं ने भी श्री धर्मेन्दु जी को अपनी श्रद्धांजलि दी है।

उल्लेखनीय है कि १६ सितम्बर, सोमवार सायं फिक्की आडिटोरियम नई दिल्ली में आयोजित अपने अभिन्न मित्र स्वर्गीय चौधरी देशराज की स्मृति सभा से लौटे थे, जबकि डाक्टरों ने उन्हें बीमारी के कारण घर से बाहर निकलने के लिए मना किया था। पं० देवव्रत धर्मेन्दु राजधानी के प्रमुख आयनेता व आर्य युवक परिषद् (रजि०) दिल्ली के प्रधान थे। वे आर्यसमाज में युवा शक्ति को लाने में सदा प्रयत्नशील रहे।

सारे देश में सत्यार्थ-प्रकाश परीक्षाएं करवाना तथा बच्चों-युवकों के लिए भाषण-प्रतियोगिताएं आयोजित करना, उनकी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों थीं।

चन्द्र मोहन आर्य
प्रेस सचिव, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्

सेवा में,

आर्य प्रतिनिधि सभा (हरयाणा)

विषय:— निर्माणाधीन बूचड़खाने के निर्माण को बन्द करवाने के लिए प्रार्थना-पत्र।

दिनांक २०-९-८५ को आर्यसमाज पुनाहाना में एक जनसभा का आयोजन हुआ, जिसमें प्रस्ताव सं० ३० जिला गुड़गांव (हरयाणा) द्वारा क्षेत्र में बन रहे बूचडखाने के विषय में निम्न प्रस्ताव पारित हुआ।

महोदय,

निवेदन है कि हमारे कस्बे में फिरोजपुर-झिरका जिला गुड़गांव से तीन किलोमीटर देहली अलवर मार्ग पर मुख्य सड़क से केवल कुछ गजों के फासले पर एक बूचड खाने का निर्माण हो रहा है।

श्रीमान् जी इस क्षेत्र में हिन्दू अल्पसंख्यक हैं और क्षेत्र में गो-वध चोरी छिपे व खुले रूप में भी बहुत अधिक मात्रा में होता है, इसलिए साम्प्रदायिक उपद्रव प्रायः बने रहते हैं। बूचड़खाना खुलवाने से यह काम उन लोगों के लिए और भी आसान हो जायेगा। और अन्य पशुओं की आड़ में गौ-कशी आम हो जायेगी। वसे भी बीमारियाँ फैलने के अवसर बढ़ जायेंगे।

अतः आर्यसमाज पुनाहाना उपरोक्त बूचड़ खाने का सख्त विरोध करता है कि इस क्षेत्र को साम्प्रदायिक तनाव से सुरक्षित रखने के लिए इस बूचड़ खाने के निर्माण को अविलम्ब रोका जाये।

फल्गू मेले पर वैदिक-धर्म प्रचार का आयोजन

हरयाणा के प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान फल्गू जिला कुरुक्षेत्र में 12 से 14 अक्तूबर तक सभा की ओर से वैदिक धर्म प्रचारार्थ शिविर का आयोजन सभा के प्रचारक पं० हरिश्चन्द्र जी की देखरेख में किया जा रहा है। इस शुभावसर पर सभा की अन्य भजन मण्डलियां पं० चिरंजीलाल, पं० मुन्शीलाल, पं० बनारसीलाल व पं० शेरसिंह भी पहुंच रहे हैं। चार दिन तक चारों वेदों से यज्ञ भी किया जायेगा।

सत्यवीर शास्त्री
सभा मन्त्री

असङ्गति दूर कीजिए

(वेदानन्द वेदवागीश)

हम वैदिक धर्मावलम्बी वेद को प्रामाणिक ग्रन्थ मानते हैं। क्योंकि वेद आदिसृष्टि में सच्चिदानन्द जगदीश्वर से चार महर्षियों के हृदय-अन्तःकरण में प्रकट हुए थे। भगवान् नित्य, अजर, अमर है, अतः उसका ज्ञान भी नित्य, अजर और अमर है। वेद और सृष्टिकर्त्ता का शाश्वत अविनाभाव से नित्य सम्बन्ध है। वेद शब्द रूप है और शब्द की गणना गुणों के अन्तर्गत है। गुण गुणी में समवाय सम्बन्ध से रहा करता है। गुणी सदा द्रव्य होता है। नौ द्रव्यों में आकाश भी एक द्रव्य है। परिशेषानुमान से शब्द आकाश का गुण है। यद्यपि आकाश की उत्पत्ति मानी गई है, पर उत्पत्तिमान् अवकाश होता है आकाश नहीं। इसलिए नित्य आकाश में उसका गुण शब्द भी नित्य हुआ। सुतराम्—इस प्रकार से भी वेद ज्ञान नित्य है, जो सदा से एक-सा विद्यमान होता आया है।

उस वेद में आया है—"अहं भूमिमददामार्याय वृष्टिं दाशुषे मर्त्याय" ईश्वर कहता है—मैंने यह भूमण्डल आर्यों को प्रदान किया है और वर्षा दानशील मानवों पर करता है। किन्तु हम इस विश्व में कुछ विपरीत भी देखते हैं। गुड़-गोबर एक-सा प्रतीत होता है। जो श्रेष्ठ मनुष्य हैं, आर्य हैं, वे भी भूमि रख रहे हैं और जो अनार्य, छली, कपटी, मांसाहारी, शराबी आदि हैं, वे और भी अधिक भूमियां—अन्नादि उत्पादन के लिए अधिकार में किए हुए हैं। इसी तरह वर्षा भी अच्छे-बुरे दोनों के खेतों में होती है। तब कैसे वेद की बात सच्ची मानी जावे। इस का दूसरा अर्थ हुवा कि भगवान् झूठा-मिथ्याभाषी है और उसका दिया हुआ वेद भी सत्यता से रहित है। पर ऐसा आज तक किसी ऋषि-महर्षि ने नहीं माना। सभी इन पूज्य महर्षियों ने जहां ईश्वर को सर्वदा शुद्ध-बुद्ध, सदाचारी, सत्यभाषी स्वीकार किया है वहां उसके प्रदत्त ज्ञान को भी त्रुटि-हीन अङ्गीकार किया है।

जब ऐसी बात है, तो ऊपर उठाई गई शंका समाधान मांगती है। जो महानुभाव वेदों का स्वाध्याय करते हैं वे जानते हैं कि वेद-वचन सर्वथा तथ्य से ही परिपूर्ण है।

भूमि का प्रदान श्रेष्ठ जनों के लिए भगवान् ने किया है। अब उनका कर्त्तव्य बन जाता है कि अनार्यों, दुष्ट पुरुषों से जमीन छीनें और जब तक वे अपने आचरणों को न सुधार लें, तब तक उन्हें भूमि न दें। यह है—"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" सदाचरण में रहते हुवे विश्व को आर्य बनाते चलो का उद्बोधन।

जैसे जुवारियों, तस्करों, जेबकतरों, व्यभिचारियों का संघटन होता है, वैसे सदाचरणतत्परों का भी सम्मिलन होना चाहिये। ऐसा न होने पर दूसरा वर्ग तो पनपेगा ही। जब भगवान् ने श्रेष्ठ जनों को ऐश्वर्य दिये जाने की घोषणा कर रक्खी है, यदि वह उस सम्पन्नता की भी रक्षा नहीं कर पाते, तो भगवान् भी उन्हें फिर भोग-सामग्री नहीं देता।

ग्राम-ग्राम, नगर-नगर में श्रेष्ठ पुरुषों के संघटन यदि शराबियों, मांसाहारियों, तस्करों आदि को मार-पीट दूर भगावें, तो इन्हें कौन रोकता है। दुराचारी तो स्वयं ही स्वपाप से मरा हुवा होता है, वह सत्पुरुष के समक्ष ठहर नहीं सकता। सज्जन कहे जाने वाले ऐसे व्यक्ति जो निजकर्त्तव्यहीन हैं, वस्तुतः आर्य कहलाने योग्य नहीं हैं। भले ही वे स्वयं को धार्मिक मानें, किन्तु वैदिक दृष्टि से वे बहुत दूर चले गये हैं।

मान लीजिए—पाठशाला में अध्यापक जी शिष्यों को पढ़ा रहे हैं। चेलों के अपराध पर अध्यापक जी उन्हें कोई दण्ड नहीं देते, तो विद्यार्थी उच्छृङ्खल, उद्दण्ड, अभिमानी तथा कुटेवों से भरपूर ही बनेंगे। अतः वरेण्य पाठक अपने शिष्यों की निकम्मी बुरी आदतों को छुड़ाने में ही अपनी कृतकृत्यता समझते हैं। शिष्य भी ऐसे ही अपने हितैषी अध्यापकों का आदर करते हैं और दोषों के छूट जाने तथा विद्वान् बन जाने पर अपने गुरुजनों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं।

वैदिक धर्मावलम्बियों ने इस प्रकार का अपना कर्त्तव्य भी भगवान् पर छोड़ दिया है, जो अनुचित है। ईश्वर कहता है—यदि तुम दुराचारियों पर आक्रमण करो तो वे लुके-लुके छिपे-छिपे फिरें, तुम्हारे सम्मुख होने का उनमें साहस ही न हो।

यजुर्वेद के प्रथम ही अध्याय में आप पढ़ेंगे—धार्मिक वही है जो दुर्जन पर पहले प्रहार करता है। इस से वह विजयी होता है। आज लोगों ने समझ लिया है कि अच्छा आदमी वही है, जो किसी को कुछ नहीं कहता। इस भारत भूमि पर इस विचारधारा के लोग दिनानुदिन बढ़ते जा रहे हैं। जिसका परिणाम यह हुआ है कि दोषी पुरुषों की संख्या बढ़ती जा रही है और श्रेष्ठ जनों का ह्रास हो रहा है।

इसलिए श्रेष्ठ बनो और श्रेष्ठ बनकर दूसरों को गुणसम्पन्न बनाओ, तब वेदवचनों की तथ्यता का पता चलेगा।

सरकारी परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम का लाभ उठाना

प्रतिवर्ष लाखों विद्यार्थी विभिन्न सरकारी नौकरियों की भर्ती परीक्षाओं में बैठते हैं। अधिकांश उम्मीदवारों की धारणा है कि उन परीक्षाओं का माध्यम केवल अंग्रेजी ही है, जबकि अब केन्द्रीय सरकार की अनेक परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम की छूट दी जा चुकी है। भारतीय प्रशासनिक सेवा जैसी उच्च स्तर की परीक्षा में भी अंग्रेजी के अलावा कई विषयों के उत्तर हिन्दी माध्यम से देने की छूट पिछले कई वर्षों से मिली हुई है। अब विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने जूनियर फैलोशिप परीक्षा के लिए भी हिन्दी माध्यम की छूट दे दी है। कितना अच्छा हो कि उन परीक्षाओं में बैठने वाले व्यक्ति हिन्दी माध्यम का लाभ उठायें। उससे वे अपने विचारों को अच्छी प्रकार व्यक्त कर सकेंगे और परीक्षा में अधिक अच्छे अंक प्राप्त करने में सफल होंगे। जिन व्यक्तियों ने इन सुविधाओं का लाभ उठाया है, ऐसे सैकड़ों व्यक्ति अच्छी सफलता प्राप्त कर सके हैं। इन परीक्षाओं की तैयारी कराने के लिए अनेक नगरों में प्रशिक्षण केन्द्र हैं। वे यदि हिन्दी माध्यम से परीक्षा की तैयारी कराने की व्यवस्था करें तो उनके क्षेत्र के प्रत्याशी उसका स्वागत करेंगे। हिन्दी सेवी संस्थाओं को भी इस विषय में आगे आना चाहिये।

भवदीय :
हरिबाबू कंसल,
महामन्त्री, हिन्दी व्यवहार संगठन,
डी 35, साउथ एक्सटेंशन भाग 1, नई दिल्ली-110049

"अन्तर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन"

थाईलैण्ड की प्राचीन राजधानी अयोध्या और वर्तमान राजधानी बैंकाक में द्वितीय "अन्तर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन" जनवरी 1986 में होने वाला है। उस अवसर पर एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जावेगा जिसमें रामायण तथा श्री राम के जीवन से सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने वाली सामग्री होगी।

प्रथम "अन्तर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन" भारत में 27 नवम्बर, 1984 से प्रारम्भ होकर 8 दिसम्बर, 1984 तक हुआ था। इसका प्रारम्भ अयोध्या से हुआ। अयोध्या के अतिरिक्त चित्रकूट, प्रयाग, पंचवटी, किष्किन्धा, रामेश्वरम् आदि स्थानों पर रामायण के सम्बन्ध में गोष्ठियां हुईं तथा श्रीराम से सम्बन्धित स्थलों के भ्रमण का कार्यक्रम रहा। इस सम्मेलन में सोवियत रूस सहित 9 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

भारत की अनेक संस्थाओं तथा व्यक्तियों के पास "अन्तर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन" की प्रदर्शनी के योग्य सामग्री होगी। उसे यदि वे सम्मेलन के लिए दे सकें तो भारत से बाहर के नागरिकों को रामायण तथा श्रीराम के सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त हो सकेगी। निवेदन है कि जिन संस्थाओं अथवा व्यक्तियों के पास इस प्रकार की सामग्री है वे उसे उक्त प्रदर्शनी के लिए दे सकते हैं, उसका विवरण वे कृपया श्री लल्लनप्रसाद व्यास, महामन्त्री, द्वितीय अन्तर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन, सी-13, प्रेस इन्क्लेव, साकेत, नई दिल्ली-110017 को सूचित करने का कष्ट करें। आशा है भारत तथा अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध सुदृढ करने की दृष्टि से इसमें अधिकतम व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त होगा।

सधन्यवाद, हरि बाबू कंसल,
प्रदर्शनी प्रमुख, अन्तर्राष्ट्रीय रामायण सम्मेलन।

आर्यवीर दल समय की पुकार है

—स्वामी ओमानन्द

कैथल, २२ सितम्बर। सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरयाणा का विशाल सम्मेलन बड़ी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर हजारो युवक हरयाणा प्रान्त तथा अन्य राज्यों से एकत्रित हुए। युवकों का उत्साह एव प्रदर्शन देखने लायक था। इस अवसर पर एक जलूस भी निकाला गया। कैथल के मुख्य मार्ग से १० हजार व्यक्तियों का यह जलूस नगरवासियो को चमत्कृत कर रहा था। ढोलक की गुमक पर ऋषि दयानन्द और वीरता के गीतों को गाती टोलिया गगनभेदी जयकारे, फहराती ओम पताकाए युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द के उपकारों को स्मरण करा रही थी। रात्रि में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में कवियों ने देश भक्ति, आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द की काव्य लहरियों से श्रोताओं का मन मोह लिया।

हरयाणा के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी ओमानन्द ने अपने वक्तव्य में कहा—आज देश में आर्यवीर दल की बड़ी आवश्यकता है। अनैतिकता भ्रष्टाचार और चरित्रहीनता की बहती नदी के प्रवाह को रोकने के लिए आर्य विचारों के चरित्रवान् युवकों की माग समय की पुकार है और इसे आर्यवीर दल ही पूरा कर सकता है। सिनेमा और फैशन की अन्धी दौड़ ने हमारे युवकों को खोखला कर दिया है। ब्रह्मचर्य का सन्देश देनेवाले गुरु, ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले वीर बालक वीर बालिकाएँ, युवक युवतिया और उनके चेहरों पर दमकने वाली लालिमा आज खोजे से नही मिल रही है। उन्होंने आह्वान किया कि आज हर माता पिता को अपने बच्चों को चरित्र एवं नैतिकता की शिक्षा-दीक्षा दिलाने के लिए आर्यसमाज और आर्यवीर दल एवं आर्य वीरांगना दल में भेजना चाहिए तथा गुरुकुलों में शिक्षित करना चाहिये। उन्होंने आर्यवीर दल के उत्थान के लिए चेतावनी देते हुए कहा—आर्यवीर दल तभी सफल हो पायेगा जब इसके पथ प्रदर्शक नेता एवम् आर्यवीर इसके प्रति समर्पित होंगे। आज ऐसे दीवानो की आवश्यकता है जो भूख, प्यास, गर्मी सर्दी की परवाह न करके अनथक कार्य करें।

इस अवसर पर श्री पं० शिवकुमार शास्त्री भू० पू० संसद सदस्य, श्री बाल दिवाकर हंस, श्री उत्तमचन्द शरर ने भी आर्य युवको को प्रोत्साहित किया।

संवाददाता आर्यसन्देश

ईसाई महिला 'वैदिक धर्म' में

आज दिनांक १८-८-८५ रविवार को आर्यसमाज मन्दिर मे ईसाई धर्मावलम्बी महिला 'सोफिया' ने स्वेच्छा से 'वैदिक धर्म' (हिन्दू) ग्रहण किया। वैदिक धर्म ग्रहण करने के उपरान्त सोफिया का हिन्दू नाम 'सरिता' रखा गया। शुद्धि संस्कार श्री रामगोपाल आर्य द्वारा कराया गया।

सरिता स्टाफ नर्स के पद पर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र रेलमगरा में कार्यरत हैं।

आर्यसमाज के मंत्री ज्ञानप्रकाश गुप्ता ने बतलाया है कि ईसाई एवं मुस्लिम धर्मावलम्बी जो स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण करते हैं उनका आर्यसमाज द्वारा शुद्धि संस्कार कर वैदिक धर्म ग्रहण कराया जाता है। गुप्ता ने ईसाई एवं मुस्लिम धर्मावलम्बी जो भूख, लालच डर आदि कारणों से हिन्दू धर्म छोड़ गये थे, उनका आह्वान किया कि वह पुन: अपने मूल धर्म में वापिस आ सकते हैं, आर्यसमाज उनका हमेशा स्वागत करेगा।

(ज्ञानप्रकाश गुप्ता)
मन्त्री
आर्यसमाज, उदयपुर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

407/73 राज० प० P/RTK 49



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री,   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सह-सम्पादक डा० यशवीर

वर्ष १२ अङ्क ४३   १४ अक्तूबर १९८५   वार्षिक शुल्क १५)   विदेश में ५ पौंड   एक प्रति ३० पैसे

परमात्मा मिलता है

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक,
अध्यक्ष-वैदिक संस्थान नजीबाबाद उ० प्र०

तं पृच्छता स जगामा स वेद स चिकित्वान् स ईयते स न्वीयते ।
तस्मिन्सन्ति प्रशिषस्तस्मिन्निष्टयः स वाजस्य शवसः शुष्मिणस्पतिः ।।
ऋग्वेद १।१४५।१।

मन्त्र का प्रथम वाक्य "त पृच्छता स जगामा स वेद" तीन वाक्यों में विभक्त है, तं पृच्छता, सः जगाम, स वेद। सम्पूर्ण वाक्य का अर्थ हुआ—उसको पूछो, वह पहुंचा हुआ है, वह जानता है। 'तं पृच्छता' को लोक भाषा में उसको पूछो के स्थान पर उससे पूछो बोला जाता है।

उससे पूछो को सुनते ही प्रश्न उपस्थित होता है, कौन है वह? जिसकी ओर मन्त्र इङ्गित कर रहा है। मन्त्र का निर्देश किससे पूछने का है? यदि हम किसी से कुछ पूछना चाहते है तो यह आवश्यक है कि जिससे पूछना चाहते हैं, उसे वह ज्ञात होना चाहिये, जो हम पूछना चाहते हैं। यदि हम किसी बात को ऐसे व्यक्ति से पूछ बैठे, जो स्वय ही न जानता हो तो वह हमें बतायेगा ही क्या? बता तो वही सकता है, जो स्वयं जानता हो। यदि जानता हो, परन्तु उसकी जानकारी दूसरों पर आधारित हो अर्थात् उसने केवल मात्र दूसरों से सुन रखा हो, उसका स्वय का कोई अनुभव न हो तो वह जो कुछ बतायेगा, उसमें भ्रान्ति हो सकती है। उदाहरण के लिये हम किसी व्यक्ति से किसी स्थान का मार्ग पूछते हैं तो जहा यह आवश्यक है कि वह मार्ग ज्ञात हो, वहां यह भी आवश्यक है कि उसने वह मार्ग देखा भी हो और मार्ग उसने तब देखा होगा, जब वह कभी उस स्थान पर गया हो, बिना जाये, मार्ग देखने का प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होता। यदि उसने उस स्थान को जानेवाले मार्ग को देखा नहीं अर्थात् वह कभी उस स्थान को गया नहीं तो हो सकता है कि उसका उस विषय का ज्ञान भ्रान्त हो और यदि यह मान भी लिया जाय कि उसका वह ज्ञान भ्रान्तिरहित है तो भी बिना देखे ठीक-ठीक ज्यों का त्यों वह बता सकेगा, इसमे सन्देह है इसलिये वेद ने कहा है कि उससे पूछो (सः जगाम) वह [जो] पहुंचा हुआ है और (सः वेद) वह [जो] जानता है।

प्रत्येक चित्र का एक अधेरा पार्श्व भी होता है अतः कई बार ऐसा भी होता है कि हम किसी स्थान पर पहुंच चुके, किसी मार्ग से जा चुके भी होते हैं किन्तु फिर भी मार्ग स्मरण नही रहता। जब स्वय को ही स्मरण नहीं हो तो अन्यों को क्या बताया जाय? अत वेद ने कहा "त पृच्छता स जगामा स वेद" उस से पूछो, जो पहुंचा हुआ है अर्थात् जा चुका है और जो जानता भी है।

द्वितीय वाक्य में कहा है "सः चिकित्वान् सः ईयते स. नु ईयते।" इस वाक्य के दो उपवाक्य हैं। (सः चिकित्वान्) वह चिकित्सा कर सकता है, वह अज्ञान रोग को दूर कर सकता है, वह समझा सकता है, उसमें समझाने की योग्यता है। है न, सः वेद=वह जानता है, वह योग्यता रखता है।

प्रश्न उत्पन्न होता है कि वह मिलता भी है, जो उससे पूछे और जो उससे अपने अज्ञान रोग की चिकित्सा कराये अर्थात् उससे संज्ञान, उस संज्ञान प्रदान करनेवाले से चित संज्ञाते' संज्ञान प्राप्त कर सके।

संशय को मन से दूर कीजिये। वह मिलेगा और अवश्यमेव मिलेगा। प्रस्तुत मन्त्र स्पष्ट शब्दों में घोषणा कर रहा है "सः ईयते" वह प्राप्त होता है तथा 'सः नु ईयते' वह निश्चयपूर्वक प्राप्त होता है। उसके प्राप्त होने में सन्देह का कोई स्थान नहीं—उसे प्राप्त करने वाला चाहिये।

संसार की स्थिति पीलिया के रोगी जैसी है, जिसे सब पीला ही पीला दृष्टिगोचर होता है। दोष तो हमारी दृष्टि का है 'सः जगाम' वह तो पहुंचा हुआ है। बताओ वह कहां नहीं है? प्रश्न यह नहीं कि वह कहां है? अपितु प्रश्न यह है कि वह कहां नहीं है? है संसार में कोई ऐसा स्थान? जहां वह न हो। यदि कोई स्थान भी ऐसा सम्भव हो सके कि जहां परमात्मा न हो तो ससार के उस भाग की गाड़ी ही ठप हो जाय। ससार की गाड़ी का चक्र चल ही उस की शक्ति से, उसके सहारे से रहा है। वह तो प्रत्येक स्थिति में प्रत्येक स्थान पर और प्रत्येक वस्तु में है। कण-कण में, अणु-अणु, परमाणु-परमाणु में ओत-प्रोत हो रहा है। "दीदार कहा नही है, कोई दीदावर तो हो।" कोई देखने वाला तो हो, वह तो सब स्थानों पर पहुंचा हुआ है। वह प्राप्त किया जा सकता है और निश्चयपूर्वक प्राप्त किया जा सकता है किन्तु कब? जब—

आंख, कान, मुख बन्द कर, नाम निरञ्जन लेय।
भीतर के पट तब खुले, जब बाहर के पट देय।।

मन्त्र का तीसरा वाक्य है "तस्मिन् सन्ति प्रशिषः तस्मिन् इष्टयः।" इस वाक्य के दो भाग हैं। पहले भाग मे कहा है "तस्मिन् प्रशिषः सन्ति" उस में उत्तम शिक्षायें हैं और दूसरे भाग में कहा है "तस्मिन् इष्टय," उसमें इष्टियां, सत्कर्म और भद्रभाव हैं। यदि उसमें उत्तम शिक्षायें, सत्कर्म और भद्रभाव न हों तो वह अज्ञान को किस प्रकार दूर कर सकता है? उत्तम शिक्षाओं के अभाव में ही तो दुष्कर्म होते हैं और सत्कर्मों की प्रेरणा सर्वदा उत्तम शिक्षाओं से ही मिला करती है। परमात्मा के पास उत्तम शिक्षायें हैं और साथ ही है भद्र भाव—तभी तो वह सत्कर्म-कर्ता है, उससे कभी कोई दुष्कर्म नहीं होता, उत्तम शिक्षायें ही भद्रभाव की जननी हैं तथा भद्रभाव से ही सत्कर्मों का सम्पादन होता है। यदि मानव अपना कल्याण चाहता है तो उस का एक ही प्रकार है कि वह परमपिता परमात्मा की शरण मे जाय और दुष्कर्मों से बचने के लिये, दुष्कर्म रूपी रोग के निवारणार्थ उस परम पावन प्रभु से चिकित्सा कराये, उससे संज्ञान प्राप्त करे। वह अज्ञान और तज्जन्य दुष्कर्म रोग की चिकित्सा कर सकता है, क्योंकि उसमें उत्तम शिक्षायें हैं। जब अज्ञान रोग की चिकित्सा हो जायगी, अज्ञान दूर हो जायगा। जब उत्तम शिक्षायें प्राप्त होंगी, तब भद्रभाव जगेंगे, तब भद्रभावों का उदय होगा, जितना-जितना भद्रभावों का उदय होगा, उतनी ही उतनी सत्कर्मों में प्रवृत्ति होगी, क्योंकि भद्रभाव सत्कर्मों के प्रेरक होते हैं। जिस प्रकार भद्रभावों की उत्पत्ति

(शेष पृष्ठ ५ पर)

बाजपेयी की कलाबाजी

राजीव-लोंगोवाल समझौते के तुरन्त पश्चात् भारतीय जनता पार्टी ने अखिल भारतीय स्तर पर अपना यह निश्चय घोषित किया था कि फाजिल्का-अबोहर का इलाका हरयाणा में शामिल करना चाहिए। पंजाब शाखा ने पंजाब में रहने के लिए और हरयाणा शाखा ने हरयाणा को दिए जाने के लिए प्रस्ताव पास किया।

5 अगस्त को मैं, स्वामी ओमानन्द जी, मा॰ तेगराम तथा अन्य साथी खुईखेड़ा गांव में श्री राधाकिशन जी से मिले थे। उन्होंने स्पष्ट कहा था कि अखिल भारतीय स्तर पर निर्णय होने से तो उनके हाथ खुल गये हैं, यदि उन्होंने भी फाजिल्का अबोहर पंजाब में रहने के पक्ष में फैसला किया होता तो भी मैंने पंजाब वालों को बोल दिया है कि मैं तो हरयाणा में मिलाये जाने के पक्ष में खुलकर प्रचार करूंगा। उन्होने तो चौधरी लहरीसिंह की 1965 की बात को दोहराते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी के पल्ले कुछ नही है, वे अपने इलाके को नहीं छोड सकते। भारतीय जनता पार्टी को उनका निशान वापिस पकड़ा देंगे।

आज जब श्री अटल बिहारी बाजपेयी अकाली दल से सौदा करके अपने दल के एक हिन्दू को उनके मन्त्रिमण्डल में डालने के लिए उतावले हो रहे हैं, अब वे रोज अपना ब्यान बदलते हैं। दो दिन पहले उन्होंने कहा कि फाजिल्का-अबोहर के चुनाव में यह इलाका किधर जाये यह चुनाव का मुद्दा बिल्कुल नही था। आज कह रहे हैं कि उनके साथियों ने पंजाब के पक्ष में बोलकर वोट मांगे थे और वे अकालियों की मांग का समर्थन करेंगे। वास्तव में भाजपा के नेता श्री बरनाला को अपना बिना शर्त समर्थन पेश कर आये हैं।

मैं फाजिल्का अबोहर के गांवों में घूमा हूं और लोगों की हरयाणा में मिलाये जाने की बेताबी से पूरी तरह परिचित हूं। भाजपा को वोट इसलिए मिले, क्योंकि वे अकाली और पंजाब कांग्रेस फाजिल्का अबोहर पंजाब में रखना चाहते थे और लोकल कांग्रेस के लोग चुप थे, उनके सामने और किसी भी दल का उम्मीदवार नहीं था, इसलिए उन्होंने सरकार के सामने अपना रोष प्रकट करने के लिए भाजपा के उम्मीदवारों को ही विकल्प मानकर वोट दे दिए।

भाजपा का इस समय अकाली दल से हाथ मिलाना और फाजिल्का अबोहर के मामले में उनका समर्थन करना फाजिल्का अबोहर की जनता के साथ विश्वासघात होगा।

श्री अटलबिहारी बाजपेयी का हरयाणा प्रदेश के अपने ही विधायकों के साथ विश्वासघात है परन्तु यह उनकी आन्तरिक समस्या है, वे जाने।

प्रो॰ शेरसिंह
—अध्यक्ष हरयाणा रक्षा वाहिनी

सम्पादक के नाम पत्र

श्रीमान् जी,

नमस्ते। आपकी साप्ताहिक पत्रिका दिनांक 14-9-85 में आपने एक कविता "परिवार नियोजन" शीर्षक से दी है। इसमें कवि महोदय ने लिखा है नसबन्दी से स्त्री-पुरुष हिजड़े बन जाते हैं और काया कंकाल हो जाती है—सांस फूलने लगती है और यौवन में ही बुढ़ापा आ जाता है। यह सर्वथा गलत है। मुझे नसबन्दी कराए छः वर्ष हो गए हैं और मैं 48 वर्ष की आयु में सर्वथा स्वस्थ हूं। मेरे मित्र श्री बलदेव राज विग भी 48 वर्ष के हैं और उन्हें नसबन्दी कराए 12 वर्ष हो गए हैं। प्रतिदिन 2 घण्टे लान-टेनिस खेलते हैं और पूर्णतः स्वस्थ हैं और 40 वर्ष के ही लगते हैं। इसी प्रकार मैं बहुत से लोगों को जानता हूं जो नसबन्दी के बाद पूर्णतः स्वस्थ हैं और एक भी ऐसा व्यक्ति मुझे नहीं मिला है जिसका नसबन्दी से स्वास्थ्य खराब हो गया है।

परिवार नियोजन आज के युग में आवश्यक है। यदि भारतवर्ष की आबादी एक सौ करोड़ हो जावे और आधे लोगों को भोजन, कपड़ा और मकान न मिले तो इससे अच्छा है कि आबादी 50 करोड़ हो और सभी नागरिक सुशिक्षित हों और गरीबी रेखा से ऊपर हों। इजराईल की आबादी कितनी कम है परन्तु सारे अरबों पर छाए हुए हैं। स्वामी दयानन्द एक थे परन्तु उन्होंने सारे भारतवर्ष का कायाकल्प ही कर दिया। आवश्यकता इस बात की है कि सन्तान भले ही कम हो परन्तु सुशिक्षित और सबल हो।

भवदीय
सुभाष आहूजा, प्रधान आर्यसमाज, जगाधरी

अबोहर-फाजिल्का का फैसला भी राजीव गांधी करें
—राधा कृष्ण

अबोहर, 9 अक्तूबर (गोयल) पंजाब विधानसभा में भाजपा ग्रुप के नेता चौधरी राधा कृष्ण जो फाजिल्का विधानसभा क्षेत्र से चुने गए हैं, ने यहां कहा कि चण्डीगढ़ की तरह अबोहर फाजिल्का क्षेत्रों का फैसला भी प्रधानमन्त्री राजीव गांधी को करना चाहिए। अबोहर-फाजिल्का के निर्णय को आयोग को सौंपकर हरयाणा को खुश किया गया है। अबोहर-फाजिल्का क्षेत्रों को 15 वर्ष से फांसी पर लटकाया हुआ है। इससे हिन्दू हरयाणा में और सिख पंजाब में रहने की बात करेंगे। इस प्रकार दो भाई हिन्दू और सिख आयोग की अदालत में झगड़ा करेंगे। इनमें प्रेम किस तरह हो सकेगा।

उन्होंने कहा कि बलराम जाखड़ ने अबोहर-फाजिल्का को हरयाणा में शामिल करने के लिए हमारे साथ मिलकर आवाज उठाई थी लेकिन वह इस बारे में पांच वर्ष तक मौन साधे रहे। तब कहा गया था कि फाजिल्का तहसील की 62% आबादी हिन्दी भाषी है परन्तु हरयाणा से इनकी सीमा नहीं मिलती अतः फाजिल्का तहसील हरयाणा में शामिल नहीं हो सकती।

उन्होंने चौधरी देवीलाल का नाम लिए बगैर कहा कि उन्होंने कहा कि अबोहर-फाजिल्का से चुनाव में हिन्दी भाषी बागड़ी जीतते हैं अतः यह क्षेत्र हरयाणा में शामिल हों। चौधरी राधा कृष्ण ने कहा कि हमारे से तो अभी तक इस बारे में किसी ने पूछा नहीं।

पंजाब के हिन्दुओं ने कांग्रेस की बजाए अकाली दल पर भरोसा किया है अतः हिन्दुओं ने इस चुनाव में अकाली पार्टी को वोट देकर सफल बनाया। उन्होंने कहा कि हम अकालियों के गलत कामों का विरोध करेंगे जबकि अच्छे कार्यों की प्रशंसा करेंगे। उन्होंने कहा कि बलराम जाखड को अबोहर में शक्ति समाप्त हो गई है। (पंजाब केसरी)

मेवात के कई गांवों में गोहत्या : एक गिरफ्तार

पुन्हाना, 3 अक्तूबर (एस) मुहर्रम की रात मेवात के कई गांवों में गोहत्या की सूचना मिली है। पुलिस ने छापे मारकर कई मन गोमांस, खालें और गोहत्या के लिए प्रयुक्त हथियार पकड़ लिए हैं। इस सिलसिले में एक अभियुक्त को मौके पर गिरफ्तार कर लिया गया जबकि कई अन्य फरार हो गये हैं।

बताया जाता है कि मुहर्रम की रात पुलिस की एक गश्ती टुकड़ी ने एक व्यक्ति यासीन पुत्र सुमेर निवासी परपड़वास को सन्देह के आधार पर पकड़ा तो उससे गोमांस बरामद हुआ जिसे वह खरीद कर ला रहा था।

तब थानाध्यक्ष के नेतृत्व में पुलिस ने तुरन्त लुहिगा कलां गांव में दो स्थानों पर, गौधोला तथा परपड़वास गाव में छापे मारकर भारी मात्रा मे गाय का मांस, खाल आदि बरामद की। यहां से एक व्यक्ति गाय की हत्या करते भी पकड़ा गया था जबकि आधा दर्जन व्यक्ति भाग गये। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर खोज प्रारम्भ कर दी है।

गत दिनों स्थानीय पुलिस ने करीब 33 बछड़े अलग-अलग व्यक्तियों से बरामद किये थे। जो कि हरयाणा से उत्तर-प्रदेश तथा राजस्थान को ले जाये जारहे थे।

फरीदाबाद भाजपा के महामन्त्री श्री ध्रुवचन्द बंसल ने पुलिस के साहस की प्रशंसा की है और मांग की है कि सभी गो-हत्यारों को तुरन्त गिरफ्तार किया जाए।

आन्दोलन की धमकी

कल यहां से लगभग 18 किलोमीटर दूर गांव भटगांव में ग्राम पंचायत की एक बैठक हुई, जिसमें एक प्रस्ताव द्वारा राज्य सरकार से मांग की गई है कि वह गांव से शराब के ठेके को बन्द करे, अन्यथा गांव के लोग आन्दोलन चलाने पर मजबूर होंगे। प्रस्ताव में आर्यसमाज, भटगांव के सचिव महेन्द्रसिंह के प्रति आभार व्यक्त किया गया, जिन्होंने ग्राम पंचायत के सदस्यों को इस बारे मे प्रस्ताव पास करने के लिए बाध्य किया।

स्मरण रहे कि हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा ने राज्य के सभी गांवों की ग्राम पंचायतों को अपने-अपने गांवों से शराब के ठेके बन्द करने के लिए प्रस्ताव पास करने की अपील की है।

रावी-व्यास जल-विभाजन हेतु बैठाए गए आयोग की प्रक्रिया के विषय में शीघ्र घोषणा जारी की जाए

हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह का श्री राजीव को पत्र

रोहतक, 11 अक्तूबर। हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने रावी-व्यास जल-विवाद के बारे में बैठाए जाने वाले आयोग की प्रक्रिया, क्षेत्र आदि निश्चित करने के संदर्भ में प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी को गत 24 सितम्बर को एक पत्र लिखा था। यहाँ वह पत्र अविकल रूप मे दिया जा रहा है। पत्र में कहा गया है—

गत 13 सितम्बर 85 को आप के साथ हुई बात के सदर्भ में मैं आपको अगले ही दिन पत्र लिखना चाहता था किन्तु आप उसके तुरन्त बाद अपनी पंजाब एवं उत्तर प्रदेश की यात्राओ के कारण बहुत अधिक व्यस्त थे। मेरे विचार से आप अब अपेक्षाकृत कुछ फुर्सत में हैं तथा मुझे आशा है कि मेमोरेन्डम के अभीष्ट अनुच्छेदों पर भली प्रकार दोबारा विचार कर सकते हैं ताकि हरयाणा को रावी जल का उचित भाग मिल सके। सैटिलमेंट के इस मेमोरेण्डम के अनुच्छेद 9.1 एव 9.2 पढ़ने के बाद, जिसमे आपके द्वारा राजस्थान को आश्वासन दिया गया है कि सन् 1955 मे निर्धारित उसके हिस्से पर कोई आंच नहीं आयेगी, इससे सैटिलमेंट के बारे मे यह शंका उभरी है कि हरयाणा को उसका कम से कम 3.5 एम. ए. एफ हिस्सा भी नही मिलेगा। एक समाचारपत्र ने चण्डीगढ़ से अपनी रिपोर्ट मे पजाब द्वारा 1.7.85 को इस्तेमाल किये जा रहे रावी-व्यास जल के जो आँकडे दिये हैं उन्होंने इस शंका को और बल दिया है। हरयाणा की जनता में इससे बहुत बेचैनी फैली है और यह स्वाभाविक भी है क्योंकि इससे भविष्य मे हरयाणा की आर्थिक स्थिति प्रभावित होगी।

मैंने इस दृष्टि से कि इस समझौते के अन्तर्गत हरयाणा को भी रावी व्यास जल से उसका उचित भाग मिलने की कोई सभावना है, अनुच्छेद 9.1 तथा 9 2 के एक एक शब्द को दोबारा पढ़ा है। अनुच्छेद 9.1 का पहला शब्द "किसानों" से मुझे सुराग मिला, किसान अपने द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले पानी की प्रत्येक बूंद की कीमत अदा करते हैं। इसलिये किसानों द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले पानी की मात्रा उस जल कर से पता लग सकती है जो सिंचाई विभाग उनसे वसूल करता है। इस सिस्टम से पूर्व प्रयुक्त जल के लिये ली गई उगाही तथा 1.7 85 तक इस्तेमाल किये गये पानी पर ली गई उगाही का अन्तर बडी आसानी से साबित कर देगा कि इस सिस्टम से पंजाब कितना पानी ले रहा है। इसके इलावा किसानों द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले पानी की मात्रा जानने का और कोई तरीका नहीं। समाचारपत्रों में छपे आँकड़े विश्वसनीय नहीं क्योंकि उन्होंने यह तरीका नहीं अपनाया।

अनुच्छेद 9.2 के अनुसार, सुप्रीम कोर्ट के किसी जज की अध्यक्षता में बना आयोग हरयाणा व पंजाब द्वारा शेष जल के लिये प्रस्तुत क्लेम पर विचार करेगा तथा छह मास के अन्दर अपनी रिपोर्ट देगा। जब तक कि प्रस्तुत क्लेम [illegible] परिभाषित नहीं किये जायेंगे तब तक आयोग निर्धारित समय के अन्दर अपनी रिपोर्ट नही दे सकेगा। दो माह पहले ही गुजर चुके हैं और अभी तक कोई आवश्यक समझे जाने वाले कानूनी या संवैधानिक कदम आयोग बैठाने के संदर्भ में नहीं उठाये गये हैं।

रावी-व्यास सिस्टम से हरयाणा-पजाब को उनके हिस्से का पानी देने के विषय का लम्बा इतिहास है। सन् 1961 में पंजाब सरकार द्वारा हरयाणा डेवेलपमेंट कमेटी गठित की गई और यह सिफारिश की गई कि हरयाणा को कुल हिस्सा, पूरे राज्य के अन्य क्षेत्रों में समानता के आधार पर 7 एम. ए. एफ. पानी दिया जाना चाहिये। वाही कमेटी ने एक साइन्टिफिक कदम के रूप में तथा भूमि और पानी के इस्तेमाल की दृष्टि से हरयाणा के लिये 4.56 एम. ए. एफ. पानी की सिफारिश की। पंजाब पुनर्गठन एक्ट 1966 के अनुसार हरयाणा सरकार ने पंजाब से कोई समझौता न होने की दशा में केस केन्द्र सरकार के पास भेज दिया। केन्द्र सरकार ने अपना निर्णय मार्च 1976 में सुनाया। यह निर्णय लागू करने के लिये तथा एसवाईएल चैनल के निर्माण के लिए पंजाब सरकार ने हरयाणा सरकार से 1 करोड रुपये 1975 में तथा 1 करोड रुपये 1978 मे वसूल किये किन्तु चैनल पर कोई कार्य नहीं किया गया। 1979 में दोनों सरकार सुप्रीम कोर्ट में गईं। सन् 1981 में सुप्रीम कोर्ट से केस वापिस ले लिया गया तथा दिसम्बर 1981 मे एक एग्रीमेट पर हस्ताक्षर हुए। अकाली दल ने इनमें से किसी भी निर्णय को स्वीकार नहीं किया तथा सुप्रीम कोर्ट के जज अथवा जल आयोग द्वारा निर्णयो पर रिव्यू कराने की बात कही।

इस विषय मे विचार करने के अनुसार समझौते के तहत बैठाए जाने वाले आयोग का मुख्य कार्य यह निश्चित करना होगा कि रावी-व्यास सिस्टम से हरयाणा व पजाब को कितना पानी दिया जाना चाहिये जैसे कि संयुक्त पंजाब में यह पुराने एस्टीमेट के अनुसार 8.3 एम.ए एफ. था और नये के अनुसार 8.3 एम.ए.एफ है। एक बार यदि यह होगया तो शेष पानी का बटवारा बडी आसानी से हो जाएगा। वांछित कागजात सिंचाई मन्त्रालय में मौजूद हैं। जिनमें राज्य सरकार व केन्द्र सरकार द्वारा गठित की गई कमेटियों के निष्कर्ष सुरक्षित हैं। इस प्रकार आयोग सबद्ध राज्य सरकारों से नए दावे मँगवाकर उन पर तीन माह के अन्दर निर्णय दे सकता है।

मैं निवेदन करता हूँ कि आयोग सवैधानिक प्रक्रिया एवं मेरे पत्र को दृष्टिगत रखते हुए इसके क्षेत्र को परिभाषित करने की घोषणा के सदर्भ में यथाशीघ्र कदम उठाकर अनुगृहीत करें। (शेरसिंह)

श्री राजीव गाँधी,
प्रधानमंत्री भारत
नई दिल्ली

किससे डरना ?

(सुरेशचन्द्र वेदालंकार, आर्यसमाज गोरखपुर)

अभय मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं पुरो य: ।
अभय नक्तमभयं दिवा न: सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।।
अ० १९।१५।६

(मित्रात् अभयं) मित्र से अभय (अमित्रात् अभयं) शत्रु से अभय (ज्ञातात् अभय) ज्ञात पदार्थ से अभय और (य: पुर: अभयं) अज्ञात पदार्थ से हम सब के लिए अभय होवे। (नक्तं अभयं) रात्रि के समय अभय और (दिवा: न: अभयं) दिन के समय हम सब अभय होकर रहें। और (सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु) सब दिशाओं में रहने वाले हमारे मित्र बनकर रहे।

कई वर्ष पहले एक विदेशी पत्रिका के एक लेखक का लेख देखने को मिला। उसने अपने ग्राहकों से पूछा था कि उन्हें सबसे अधिक कौनसी चीज पसन्द है? या उन्हें अपने मन की वस्तु मांगते ही मिल जाय तो वह कौनसी चीज पाना चाहेंगे?

एक माली ने एक हरा-भरा बगीचा और एक सुन्दर घर मांगा।

एक लेखक ने कहा, "मुझे अच्छी तन्दुरुस्ती दो, बाकी बातों को मैं देख लूंगा।"

धनी परिवार की एक महिला ने एक छोटा सा बछेड़ा पसन्द किया। दूसरी ने एक पहाड़ी स्थान में झरनों से सुशोभित एक छोटा-सा घर, सेबों से लदा हुआ छोटा-सा बगीचा और साथ में चारों ओर प्राकृतिक सौन्दर्य की मांग की थी।

एक प्रसिद्ध वकील ने देहात के जीवन को पसन्द किया था, जहां उसे शान्तिमय वातावरण में, छोटे-छोटे नाती पोतों के साथ जिन्दगी बिताने का अवसर मिले।

सिनेमा की एक प्रसिद्ध तारिका ने यह याचना की थी कि वह किसी के प्रगाढ़ प्रेम में डूब जाए। उसी के शब्दों में "यद्यपि यह भी एक प्रकार का सिर दर्द है, परन्तु यह ऐसा है कि इसके बिना जीवन बेकार हो जायेगा।"

परन्तु उस पत्रिका के एक सम्मानित ग्राहक ने, जिसको प्रत्येक व्यक्ति आदर और प्रेम की दृष्टि से देखता था, बतलाया कि "ईश्वर मुझे वह शक्ति दे कि मैं अपनी वर्तमान परिस्थितियों का स्वागत करूं और जीवन को अधिक निर्भयता के साथ बिताऊं।"

वह व्यक्ति जो अपनी वर्तमान परिस्थिति से सन्तुष्ट नहीं रहता और आने वाली चिन्ताओं से ग्रस्त रहता है, उसका वर्तमान तो बिगड़ता ही है, भविष्यत्काल भी बेकार कष्टमय हो जाता है। इसीलिए यह मंत्र कहता है कि मैं मित्र से, शत्रु से, ज्ञात अथवा अज्ञात व्यक्ति से, रात और दिन सब अभय रहूं।

मित्र से कैसा डर? सच्चा मित्र अपने मित्र की उन्नति, सुख और सुविधा की सदा कामना किया करता है। अपने प्रिय की भलाई की कामना कभी-कभी अज्ञान के कारण अपने मित्र के लिए हानिकारक हो जाती है और उसका मित्र जीवन के किसी विकास से रुक जाता है, उसकी उन्नति नहीं हो पाती। इसलिए यह मंत्र कहता है मित्र से न डरूं, अर्थात् मेरा मित्र मोह या अज्ञान के कारण मेरी उन्नति में बाधक न बने। साथ ही इसका यह भी तात्पर्य है कि मैं मित्र के प्रति इतना निर्भीक रहूं कि अपना कोई भी पाप, बुराई या दुष्कर्म उसके सामने प्रकट करते हुए भयभीत न होऊं। जब हम अपने मित्र से इतने निर्भीक होंगे तो हमारे पाप पश्चात्ताप की अग्नि में जल जायेंगे और हमारा चरित्र निर्मल हो जायेगा।

शत्रु से भी अभय बनूं। महान् पुरुषों के हृदय में किसी के प्रति शत्रुता नहीं रहती। पर अज्ञानवश लोग [illegible] उनसे शत्रुता करने लगते हैं। वे उनके शत्रु बन जाते हैं। उनसे डरकर हम अपने मार्ग से विचलित न हों।

स्वामी दयानन्द के जीवन को कासगंज की एक घटना है। कासगंज के प० दुर्गादत्त ने स्वामी जी महाराज की निन्दा में ही अनेक श्लोक रचकर अपने मन की भड़ास निकाली।

एक दिन की बात है। महाराज उपदेश कर रहे थे। सभा मण्डप खचाखच भरा था। एक जाट क्रोध में भरा हुआ, मोटा लट्ठ लिए हुए श्रोताओं को चीरता सभा में घुस पड़ा और 'अबे-सबे' कहता स्वामी जी पर बरस पड़ा। डंडा दिखाकर वह ऋषि से पूछने लगा, "बता, कहां मारकर इससे तेरा अन्त करूं।" सभा में खलबली मच गई। महाराज जरा भी न डरे और प्रदीप्त नेत्रों से देखते हुए कहा, "यदि धर्म प्रचार करना, सत्य का प्रचार करना अपराध है तो इसका अपराधी मेरा मस्तिष्क है। यदि तू मुझे अपराधी समझता है तो इसको फोड़।" परन्तु महाराज की इस निर्भीकता का फल यह हुआ कि जाट के साथ आए सभी महाराज के विरोधी भाग गए। जाट के हाथ से भी डंडा छूट गया। वह श्री चरणों में गिर पड़ा और रो-रोकर अपने अपराध के लिए क्षमा मांगने लगा।

ज्ञात और अज्ञात सभी भयों से हम बचें। हम अनेक वस्तुओं को शरीर के लिए, मन के लिए हानिकारक समझते हैं, पर हम उनसे बचते नहीं—अपने आपको उनसे दूर नहीं कर पाते, ज्ञात भय की हानि से होने वाले जो कारण हैं, उनसे हमें अपने को बचाना चाहिए। अर्थात् ऐसी वस्तुएं जो हमें हानि पहुंचा सकती हैं, उनसे निर्भय होने का मतलब है कि हम उनसे बचें और उनके चक्कर में न आएं। इसी प्रकार अज्ञात भय भी मनुष्य को सताते रहते हैं। अज्ञात भयों से बचने का उपाय है जीवन में कभी घबराना नहीं चाहिए। ये अज्ञात भय छिपकर आक्रमण करने वाले शत्रुओं के रूप में हम पर आक्रमण करते हैं और उस समय इनके आक्रमण से बचने के लिए हममें प्रत्युत्पन्नमतित्व या तुरन्त सूझ की आवश्यकता है।

स्वामी दयानन्द के जीवन की एक घटना है कि वे ज्येष्ठ संवत् 1925 वि० में जब कर्णवास पहुंचे तो जेठ के दशहरे का पर्व समीप था। ठाकुर कर्णसिंह भी वहां दलबल सहित पहुंच गया। यह चक्रांकित गुरु रंगाचार्य का शिष्य था। स्वामी जी ने उसे गंगा स्तुति के श्लोकों को गप्प बताया। गंगा को जल बताते हुए वे बोले, "मोक्ष गंगा जल से नहीं, कर्मों से होता है।" उसे रामलीला के विषय में बताया कि यह पूर्व पुरुषों का स्वांग ठीक नहीं। उनके तिलक को भिखारियों का तिलक बताया और पूछा, "भुजायें क्यों जला रखी हैं?" ठाकुर उत्तर तो क्या देता, क्रोध के आवेश में तलवार निकाल बैठा। दयानन्द महाराज ने भयभीत होना कभी सीखा ही न था। शान्ति से चक्रांकित मत का खण्डन करते रहे और बोले, "यदि सत्य कहने में सिर कटता है तो इसकी मुझे परवाह नहीं।" तब कर्णसिंह ने क्रोध में महाराज पर तलवार चलाई। उन्होंने वह उससे छीन ली और पृथ्वी पर टेककर तोड़ डाली। स्वामी जी महाराज पर ज्ञात और अज्ञात किसी भय का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

अज्ञात भय का एक उदाहरण आप इस रूप में भी देख सकते हैं कि मान लीजिए आप किसी सुप्रसिद्ध व्यापारिक संस्था में छोटे अफसर हैं। प्रधान संचालक संस्था की उन्नति के लिए प्रति सप्ताह अधिकारियों की बैठक करता है और उसके लिए सुझाव मांगता है, उपयोगी सुझावों को लेकर कम्पनी की उन्नति करना चाहता है।

कहीं संचालक अप्रसन्न न हो जाय, या वह आपके सुझावों को अस्वीकार न कर दे, आप इस भय या आशंका से कुछ नहीं कहते हैं तो इस अज्ञात भय से कम्पनी और आपकी दोनों की हानि है। अतः अज्ञात भयों से भी हमें बचना चाहिए। वेद कहता है रात्रि और दिन हमारे लिए अभय हों। रात्रि की गहन तमिस्रा में नाना प्रकार के जीव-जन्तु, सांप-बिच्छू तथा चोर डाकू मनुष्यों को भयभीत करते हैं। इनके मनुष्य मृत्यु या कष्ट के ही कारण बनते हैं। प्रकाशादि साधनों से मनुष्य इनसे अभय हो सकता है। वैसे तो मृत्यु कोई भय की बात नहीं। मृत्यु तो शान्ति है। मृत्यु मानो नवजीवन का प्रारम्भ है, आनन्द का दर्शन है, एक पर्व है। अरस्तू मानी [illegible] के [illegible] है। यह भावना आने पर हम अभय बन सकते हैं। वैदिक संस्कृति में मृत्यु का

ढंक काट फेंककर उसे सु... ...पर बना दिया है। 'प्राणो मृत्युः' मृत्यु जीवन है, प्राण है, आनन्द है ... पुराना वस्त्र हटाकर नया धारण करता है—इस विचार वाले को ... रात और दिन में डरने की आवश्यकता नहीं।

अन्त में यह ... मन्त्र कहता है कि सम्पूर्ण दिशायें हमारी मित्र हों। मित्र से निर्भीक ... होने की शिक्षा देने के बाद दिशाओं को मित्र बनाने की बात कही गई ... है। दिशाओं से अभिप्राय उनमें रहने वाले प्राणियों से है। यह मि... ...त्रता तभी हो सकती है जब हम आत्मतत्त्व का उन तक विस्तार क... ...रें। दूसरों को अपना बनायें। अपने और पराये का भेद जो मिटा देता ... है, वह कभी भयभीत नहीं होता।

किसी भी प्रकार के भय का कारण है—भेद भावना, अपने और पराये का भेद। इसी के कारण जाति-पाति के, स्पृश्यास्पृश्य के, ब्राह्मण-ब्राह्मणेतर के, हिन्दू मुसलमान के सैकड़ों घेरे हैं। इसके अलावा गुजराती, महाराष्ट्रीय, मद्रासी, बंगाली, बिहारी आदि प्रान्तीय घेरे हैं। इनमें रहने वालों को असंख्य प्रसाद तो मिलता ही नहीं, बल्कि वे एक दूसरे के भयों से विह्वल हो अपने को दूसरे से पृथक् करने की योजनायें बनाते रहते हैं। यदि आप सभी दिशाओं को अपना मित्र बनाना चाहते हैं, तो उन भेदों को दूर करने के लिए ऊपर उठिए। भेदों की दीवारें मिटा दीजिये। सारे विश्व के प्रवाह को प्रेम से पास आने दीजिए। ऊपर का उमड़ने दीजिए। मन में यह संकल्प कीजिए कि—

मैं भेद जला दूंगा सारे,
दे-देकर वेदों की साखी।

इसलिए मन्त्र कहता है वैदिक संस्कृति के उपासकों! आप लोगों ने एक दूसरे को अलग-अलग करके जितने पाप किए हैं वही अधिक हैं। अब उठो, हरिजनों को, अछूतों को गले लगाओ, सारी पद-दलित जनता को गले लगाओ। हम सब एक ही ईश्वर के पुत्र हैं। इस एकता की—मित्रता की भावना को हृदय में लाकर भारत भूमि में ऐक्य का, मित्रता का निर्माण करके फिर से संसार को एक करने का प्रयत्न करें, कृण्वन्तो-विश्वमार्यम् सारे संसार को आर्य बनायें तो यह हमारी मातृभूमि मानव जाति का एक तीर्थ क्षेत्र बन जाएगी।

चोर भय का कारण क्यों है? सोचा है आपने? ऋषि तो 'स्तेनानां पतये नमः' कहकर चोर का आदर करता है। ऋषि कहता है, अरे चोरो! तुम चोर नहीं। यदि समाज तुम्हारे साथ ठीक तरह व्यवहार करे तो तुम चोरी नहीं करोगे। मैं तुम में मनुष्यता देख रहा हूं। मुझे तुम में दिव्यता दिखाई दे रही है। मैं तुम्हारी उस मनुष्यता को उस दिव्यता को नमस्कार करता हूं जिसे देखकर तुम चोरी छोड़ दोगे और सब तुम्हें नमस्कार करेंगे। इस प्रकार सभी के प्रति सुधार की भावना लाने पर ही सबका उद्धार होगा।

वह सौभाग्य प्राप्त कब होगा, जब सब में देखूंगा ब्रह्म रूप।
तब होगा सुख का पार नहीं, लहरेगा सुख-सागर अनूप॥

(पृष्ठ १ का शेष)

के लिए उत्तम शिक्षाओं की आवश्यकता है, ठीक उसी प्रकार सत्कर्मों के लिये भद्र भावों की आवश्यकता है। वेद ने यह स्वर्ण-सूत्र; स्वर्ण-सिद्धान्त प्रस्तुत किया है—मानव जीवन की सफलता के लिये। किन्तु इतना होने पर भी यदि मानव गड़बड़ करे, उसकी उत्तम शिक्षाओं से लाभ प्राप्त न करे, जिससे भद्रभावों की उत्पत्ति होकर सत्कर्मों का आचरण हो—तो उसकी व्यवस्था भी है। सुन लीजिए मन्त्र का चौथा वाक्य क्या कहता है?

"सः वाजस्य शवसः शुष्मिणः पतिः" वह ज्ञान व क्रिया-शक्ति का, बल का तथा शोषण-शक्ति का पति अर्थात् स्वामी है। वह ज्ञान का स्वामी है, ज्ञान उसके अधिकार में है, वह ज्ञान से सम्पन्न है, ज्ञान-स्वरूप है। मानव की कोई भी गतिविधि उससे छिपी नहीं रह सकती। एक तो वह सब स्थानों पर पहुंचा हुआ है, दूसरे ज्ञान का भण्डार है और फिर ज्ञान भी किस प्रकार का? जिस के साथ क्रियाशीलता है। वाज का अर्थ जहां ज्ञान है, वहां क्रिया भी है। वह केवल ज्ञानी ही नहीं है अपितु ज्ञान को क्रिया में परिणित करने की शक्ति से भी सम्पन्न है।

परमात्मा की क्रियाशीलता भी साधारण नहीं—यह ध्यान रहे। वह तो 'शवसः' बल का भी स्वामी है, उसके पास अपरिमित बल है। वह है ही बलस्वरूप—तभी तो वैदिक साधक कहता है "बलमसि बलं मयि धेहि" तू स्वयं बल है, बलस्वरूप है, बल का भण्डार है, मुझे भी बल प्रदान कर।

प्रिय पाठकगण! जहां ज्ञान के साथ क्रियाशीलता भी है और बल भी, वहां किस प्रकार पार पाया जा सकता है? सीधी तरह कोई होश में नहीं आये तो वह अपनी क्रियाशीलता का बल पूर्वक प्रयोग करेगा और तब—.........। तब क्या? अभी आगे भी उसके पास कुछ है। आपको ज्ञात होना चाहिये कि वह "शुष्मिणः पतिः" शोषण शक्ति का भी स्वामी है। जो उसकी उत्तम शिक्षाओं के द्वारा अपने में भद्रभाव उत्पन्न करके सत्कर्मों में प्रवृत्त नहीं होता, वह प्रभु अपनी ज्ञानमय क्रिया शक्ति का बलपूर्वक प्रयोग करके इस प्रकार के दुष्कर्मियों का शोषण कर डालता है।

अब विचार कीजिए कि कौन सा वह उपाय है, जिसे करके उससे बचा जा सके। उससे बच निकलने का न कोई मार्ग है और न कोई ठौर-ठिकाना। कारण यह कि वह सब स्थानों पर पहुंचा हुआ है। केवल एक ही—और एकमात्र उपाय यही है कि उसको शरण गहो और उसकी उत्तम शिक्षाओं को ग्रहण कर भद्रभावमय जीवन बनाकर सत्कर्मों में प्रवृत्त हो जाओ और उसकी प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील बनो। इसी में मानव जीवन की सफलता है।

आर्यसमाज पिन्जौर का वार्षिकोत्सव—सम्पन्न

पिन्जौर, ७ अक्तूबर। आर्यसमाज पिन्जौर के तत्त्वाधान में ४, ५, ६ अक्तूबर को उत्सव बड़े हर्ष एवं उल्लास पूर्वक मनाया गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मधुर गायक श्री पं० शेरसिंह एवं श्री पं० विजय भूषण जी का भजनों के द्वारा देश भक्ति, प्रभु भक्ति तथा विभिन्न विषयों पर सुमधुर भजन हुए जिसकी जनता ने सराहना की। साथ ही आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सुयोग्य उदीयमान युवा विद्वान् श्री पं० सुरेशकुमार शास्त्री, विद्याभास्कर, विद्यावाचस्पति, एम०ए० के जीवन के उत्कृष्टतम बनाने वाले प्रभावशाली प्रवचन हुए जिसकी छाप पिन्जौर की जनता के जनमानस में अंकित हुई तथा लोगों ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। ६ अक्तूबर का ठीक १२ बजे ऋषि लंगर का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ जिसमें लगभग १००० पिंजौर नगर निवासियों ने भाग लिया और आनन्द पूर्वक भोजन किया। इस अवसर पर सभा को वेद-प्रचारार्थ ५०० रु० दिये गये।

—राजेशसिंह आर्य
मन्त्री आर्यसमाज पिन्जौर (अम्बाला)

ऋषि सन्देश—

यज्ञ तथा वेद मन्त्र

वेद ने मनुष्य को परमात्मा के अर्पण करके निष्काम कर्म करना सिखाया तथा लोक-कल्याणार्थ बड़े से बड़े त्याग का उपदेश दिया और यह कर्म करना लोग घर-घर में सीख जावें इसलिए कल्प सूत्रकारों ने अग्निहोत्र, दर्श-पूर्ण-मास अश्वमेध आदि यज्ञों की कल्पना की। परन्तु कालान्तर मे आलस्य, प्रमाद और लोभ के वशीभूत लोगों ने इस यज्ञ विद्या को जादू टोने की विद्या बना डाला, वैदिक लोगों ने यज्ञ बनाये तो इसलिए थे कि घर-घर में लोग त्यागमय जीवन का उपदेश प्राप्त करके, उस पर आचरण करके मनुष्यमात्र का कल्याण करने में समर्थ हो, किन्तु लोगो ने यह समझ लिया कि मन्त्रों का स्वर सहित उच्चारण करने मात्र से तथा यज्ञ क्रियाओं के अनुष्ठान मात्र से कल्याण हो जायेगा। ऐसे वेदवादियों का परब्रह्म की आराधना, लोक-कल्याण तथा निष्काम कर्म करने से कुछ सम्बन्ध नहीं रहा। ये तो लोगों को यह बताते फिरते हैं, कि इन मन्त्रों को इस प्रकार पढ़ने से ग्राम मिल जाते है, इन मन्त्रो से राज्य मिल जाता है, इन मन्त्रों से स्वर्ग मिलता है। शास्त्र में उन यज्ञों का जो फल लिखा है वह सब यथार्थ है, किन्तु वह फल उन मन्त्रों का ठीक-ठीक अर्थ जानकर उसके अनुसार आचरण करने से होता है न कि मन्त्रों के उच्चारण मात्र से। मन्त्रों का ठीक अर्थ भी तब समझ मे आजाता है जब मन्त्रों के अनुसार विनियोग की व्याख्या हो, अस्तु।

ये वेदवादी आजकल कहते हैं कि गायत्री मन्त्र वेदों का सार है और कहते हैं कि माला लेकर जप करो तो रोग भाग जावे, सारे कार्य सफल हो जाते हैं।

इस बात मे कोई दो राय नहीं कि गायत्री मन्त्र को बार-बार पढ़ना चाहिए, जिससे हमें यह ध्यान रहे कि हमें क्या करना है। इस-लिए गायत्री मन्त्र का अर्थ जो ऋषिवर दयानन्द ने यजुर्वेद के छत्तीसवें अध्याय के तीसरे मन्त्र में किया है, वह लिखते हैं—

पदार्थ—हे मनुष्य लोगो! जैसे हम लोग (भूः) कर्मकाण्ड की विद्या (भुवः) उपासना काण्ड की विद्या और (स्वः) ज्ञानकाण्ड की विद्या को सग्रहपूर्वक पढ़के (यः) जो (नः) हमारी (धियः) धारणावती बुद्धियों को (प्रचोदयात्) प्रेरणा करे उस (देवस्य) कामना के योग्य (सवितुः) समस्त ऐश्वर्य के देने वाले परमेश्वर के (तत्) उस इन्द्रियों से न ग्रहण करने योग्य परोक्ष (वरेण्यम) स्वीकार करने योग्य (भर्गः) सब दुःखों के नाशक तेजःस्वरूप का (धीमहि) ध्यान करें वैसे तुम लोग भी करो।

भावार्थ—इस मन्त्र मे वाचकलुप्तोपमालङ्कार है जो मनुष्य कर्म उपासना और ज्ञानसम्बन्धी विद्याओ का सम्यक् ग्रहण कर सम्पूर्ण ऐश्वर्य से युक्त परमात्मा के साथ अपने आत्मा को युक्त करते हैं तथा अधर्म अनैश्वर्य और दुःखरूप मलो को छुड़ाके धर्म ऐश्वर्य और सुखों को प्राप्त होते है, उनको अन्तर्यामी जगदीश्वर आप ही धर्म के अनुष्ठान और अधर्म का त्याग कराने को सदैव चाहता है।

मन्त्र मे त्रयी विद्या को प्राप्त करने के लिए मेधा बुद्धि की परमात्मा से कामना की गई है। परन्तु उसके साथ, प्रयत्न भी करना होगा, तप और ब्रह्मचर्य का पालन करने के साथ-साथ बुद्धिवर्धक पदार्थों का सेवन भी करना होगा और फिर ज्ञान प्राप्त कर लेना ही पर्याप्त नहीं उसके अनुसार अपने मन, वचन और कर्म को करना भी आवश्यक है। यजुर्वेद 34।5

जिस मन मे जैसे रथ के पहिये के बीच के काष्ठ में अरा लगे होते हैं वैसे ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद सब अरों से स्थित और जिसमें अथर्ववेद स्थित है, जिसमें प्राणियों का समग्र सर्वपदार्थ सम्बन्धी ज्ञान सूत्र में मणियो के समान सयुक्त है, वह मेरा मन कल्याणकारी वेदादि सत्यशास्त्रों का प्रचार रूप संकल्प वाला हो। इससे क्या सिद्ध होता है कि त्रयी विद्या को पढ़ना चाहिए, और उसके लिए परमात्मा से मेधा बुद्धि को प्रार्थना करें, और स्वय भी प्रयत्न करें और ज्ञान प्राप्त करके उस प्राप्त किये ज्ञान के अनुसार अपने मन में शुभ संकल्प करे। अस्तु।

इसी प्रकार यज्ञ करते समय त्याग की भावना पैदा करना और यह जानना कि यह जो हवि है इसमें मेरा कुछ भी नहीं सब कुछ परमात्मा का है, और परोपकार के लिए मैं इसका प्रयोग करता हूं।

इसी प्रकार अग्निहोत्र द्वारा जब तक वह नहीं सीख जावें कि जिस प्रकार समिधा स्थूल अग्नि के लिए अपने आपको अर्पण करके दीप्ति उत्पन्न करती है, इसी प्रकार दीक्षा और तपरूपी अग्नि के अर्पण करके मनुष्य भी जीवन का उद्देश्य पूर्ण नहीं कर लेता तब तक अग्निहोत्र का कोई लाभ नहीं। दीक्षा तथा तप को अग्नि स्पष्ट कहा है।

(यजु॰ 4।7)

'दीक्षायै तपसे अग्नये स्वाहा'।

आशा है पाठकगण इस वेद उपदेश को समझेंगे और अपने जीवन को यज्ञमय बनाने का संकल्प लेंगे।

संदेशवाहक :
देसराज सोरवांट, रोहतक

आर्यसमाज कालका का शताब्दी समारोह एवं वेद सप्ताह सम्पन्न

कालका—३० सितम्बर। आर्यसमाज कालका में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी हर्ष एवं उल्लास के वातावरण में शताब्दी समारोह का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। इस शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य मे कालका का आर्यसमाज शहर से निकलकर गांव में भी गया। १५ सितम्बर से २१ सितम्बर तक गांव-गांव में प्रचार हुआ। ये ऐसे गांव थे जिनमें लोगों को यह भी नहीं पता कि आर्यसमाज किस चिड़िया का नाम है तथा आर्यसमाज नाम की कोई संस्था भी संसार मे है। यहां के लोग ऋषि दयानन्द का नाम तक नहीं जानते थे फिर भी आर्यसमाज के उत्साही नवयुवक उपदेशक श्री सुरेशकुमार जी शास्त्री एम॰ ए॰ की कठिन तपस्या से यहां की जनता आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द से परिचित हुई। इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए आर्यसमाज कालका श्री शास्त्री जी का सदव ऋणी रहेगा कि इन्होंने दिन-रात घूम-घूम कर लोगों को प्रचार के लिए प्रेरित किया और प्रचार करवाया तथा ऋषि कार्यों को गति प्रदान की। इस कार्य में इनका सहयोग आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के युवा भजनोपदेशक श्री पं॰ तेजपाल जी आर्य की भजनमण्डली ने दिया। इनकी भी इन पंक्तियों में प्रशसा किये बिना नहीं रहा जा सकता कि साथियों के बिमार होने पर भी इन्होंने अपने काम मे जरा भी कमी नही आने दी और अपने मधुर गायन से लोगों को आनन्दित किया और आर्य विचारधारा से लोगों को परिचित करवाया। साथ ही आर्य प्रतिनिधि सभा के उदीयमान युवा विद्वान् श्री सुरेशकुमार शास्त्री एम॰ ए॰ ने जोवन को समुन्नत एव विकसित करने वाले विचार रखे जो जनता के मानस पर सहज ही अंकित हो गये। इस सारे कार्यक्रम को सुनने के पश्चात् जो ग्रामीण जनता (जो पाखण्ड से एकदम तंग आ चुकी है) ने आग्रह किया कि इस प्रकार के प्रोग्राम हर दूसरे तीसरे महीने अवश्य होने चाहिय। इस बार की हमारी प्रचार यात्रा गांव—रामपुर जंगी, नानकपुरा, खुहवाला, पप्लोहा, हकीमपुर, हलू टपरा में हुई। जो ये हमारा कार्यक्रम सफल हो सका श्री शास्त्री जी की त्याग और तपस्या का ही परिणाम है। इन्हीं से प्रेरणा लेकर हम कालका के आर्यबन्धु प्रतिज्ञा करते हैं कि प्रतिवर्ष देहाती क्षेत्र में पूरा एक मास प्रचार करवाकर अपने नगरीय आर्यसमाज की जड़ें फैलाने और ऋषि की मान्यताओं को प्रचारित करने का संकल्प दृढ़तापूर्वक करते हैं।

इसके साथ ही 22 सितम्बर से आर्यसमाज कालका के विशाल प्रांगण में शताब्दी समारोह का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ जिसका उद्घाटन बड़े हर्षमय वातावरण में श्री लाला पूर्णचन्द जी आर्य प्रबन्धक आर्य कन्या उच्च विद्यालय कालका ने ओ३म् ध्वज लहराकर किया तथा विद्यालय की छात्राओं ने ध्वज गान किया। इसके साथ ही वेद की पवित्र अमृत धारा को प्रवाहमान किया गया। जिसको गति देने के लिये श्री तेजपाल जी एवं पार्टी ने अपने सुमधुर भजनों के द्वारा अपना कार्यक्रम रखा तथा पं॰ सुरेशकुमार जी शास्त्री एम॰ ए॰ ने उपनिषदों एवं वेद प्रवचन के द्वारा कालका नगर की जनता को अमृत धारा में स्नान करवाया।

—सुरेन्द्रपाल शर्मा
मन्त्री, आर्यसमाज कालका, अम्बाला

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के समाचार

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के खेल जगत् में बढ़ते कदम

(देवव्रत शास्त्री एम.ए. आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र)

गत वर्ष से गुरुकुल कुरुक्षेत्र में खेल विभाग हरयाणा की ओर से कुश्ती विंग मिला हुआ है जिसमें दस ब्रह्मचारी श्री प्रकाशसिंह जी दहिया कुश्ती कोच की देख-रेख में प्रशिक्षण पाते रहे हैं। जिसमें से गत वर्ष पांच ब्रह्मचारी हरयाणा भर में प्रथम स्थान व चार ब्रह्मचारी द्वितीय स्थान प्राप्त कर कीर्तिमान स्थापित कर चुके हैं। इस वर्ष भी खेल विभाग हरयाणा ने गत वर्षों के छात्रों की कुश्ती से प्रभावित होकर पुनः कुश्ती विंग गुरुकुल कुरुक्षेत्र में दे दिया है। जिसके परिणामस्वरूप हमारे पहलवान पिछले वर्ष से भी अधिक उन्नति कर रहे हैं। अब तक जहां भी अखाड़ों में यह ब्रह्मचारी गये सदैव जीत कर ही आये हैं।

अभी १६-१७-१८ सितम्बर, ८५ को जिला कुरुक्षेत्र के स्कूल स्तर की खेल प्रतियोगिताएं हुई जिनमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने सम्पूर्ण जिले से आये हुए छात्रों को विभिन्न प्रतियोगिताओं में बुरी तरह पछाड़ा तथा जिला कुरुक्षेत्र में सभी स्कूलों के छात्रों की खुली छुट्टी दे दी कि कोई भी किसी स्कूल का छात्र हमारे वजन के अनुसार हमसे कुश्ती कर सकता है। दूसरे खेलों में भी जैसे कबड्डी में गुरुकुल की टीम प्रथम रही जब कि बाहर से जो टीमें आई हुई थीं, वह जोन के हिसाब से विभिन्न स्कूलों के छात्रों को मिलाकर चुनकर आई हुई थी लेकिन गुरुकुल की किसी भी टीम में बाहर से हमने किसी भी छात्र को नहीं मिलाया था, इसके बावजूद भी भारी अंकों के अन्तर से कई कबड्डी टीमों को गुरुकुल की टीम ने बुरी तरह पछाड़ा। इसी तरह हाकी यथा फुटबाल आदि खेलों में भी हमारी टीम कुरुक्षेत्र जिले में प्रथम रही है।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र सन् १९१२ से श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित संस्था है। विभिन्न उतार चढ़ाव में से गुजरती हुई यह संस्था इस समय हर तरह से उन्नति के पथ पर अग्रसर है। इस का सर्वाधिक श्रेय गुरुकुल के सच्चे भक्त परिश्रमी व लगनशील प्रधान श्री चौधरी सत्यदेवसिंह जी रिटायर्ड आई. पी. एस. को जाता है। जो रात दिन इसी की उन्नति बारे चिन्तन करते रहते हैं। इसी प्रकार इनका सहयोग रहा तो निश्चित रूप से यह संस्था अपने पूर्व गौरव को पुन. प्राप्त कर गुरुकुलों के लिए एक आदर्श रूप में बन सकेगी।

जिला कुरुक्षेत्र की आर्यसमाजों को शुभ सूचना

गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने आज के युग में बढ़ती दहेज, शराब, मांस, अन्धविश्वास, धर्म के प्रति अरुचि आदि की भावना को नकारात्मक बनाने व सुख समृद्धि एव आपसी सद्भाव के वातावरण को स्थापित करने के लिए आर्यसमाज के क्षेत्र में मधुर गायक युवा भजनोपदेशक पं० रामनिवास जी की भजनमण्डली को प्रचारार्थ रखा है। वैदिक धर्म की उन्नति एवं वेदप्रचार के लिए आप इन्हे आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र के पते पर पत्र लिखकर बुला सकते हैं।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा वेदप्रचार

गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा अब तक गांव रमाना, गुढ़ा, पीन्डारसी, फतेहपुर, म्योली, रावणहेड़ा, खनोदा व बरसाना में वैदिक धर्म का प्रचार पं० रामनिवास जी की भजनमण्डली द्वारा हुआ। जिनमे नौजवानों को यज्ञोपवीत दिये गये व शराब, मांस बीड़ी आदि बुराइयों को छुड़ाने की प्रतिज्ञायें करवाई गई।

गुरुकुल के पदाधिकारियों का कालिज पार्टी द्वारा स्वागत

नई दिल्ली 13 सितम्बर। आर्यसमाज में गुरुकुल पार्टी और कालिज पार्टी का चिरकालीन विवाद अब समाप्तप्राय समझना चाहिये। आर्यसमाज (अनारकली) में आर्य प्रादेशिक सभा और डी०ए०वी० कालिज कमेटी की ओर से आयोजित गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगडी के नव नियुक्त कुलाधिपति और कुलपति का भावपूर्ण अभिनन्दन किया गया। समस्त आर्य जनता में इस अभिनन्दन समारोह ने नई आशा और नये उत्साह का संचार कर दिया है।

इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान् डा० सत्यकेतु विद्यालकार के गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति बनने पर और वैदिक वाङ्मय के प्रसिद्ध विद्वान् डा० सत्यकाम वर्मा के कुलपति बनने पर यह अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया था। गुरुकुल के पदाधिकारियों का कालेज पार्टी के द्वारा किया गया स्वागत सभी को चकित करने वाला था। आर्य समाज के सभी वर्ग परिस्थितियों के अनुसार अपने आपसी मतभेदों को भुलाकर एकजुट हो सकते हैं, यह इस बात की निशानी है। आर्यसमाज जैसी प्रगतिशील संस्था से यह आशा करनी ही चाहिये।

मुख्य अतिथि, सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने नये कुलाधिपति और कुलपति को चेतावनी देते हुए कहा कि आज पुष्पमालाओं से आपका स्वागत किया गया है, परन्तु इससे आपके मार्ग की बाधायें कम नही होंगी। बहुत बड़ी जिम्मेवारी आप दोनों पर आ पड़ी है।

प्रो० रत्नसिंह ने कहा कि गुरुकुल हमारी श्रद्धा का पात्र रहा है और समस्त आर्यजनता उसकी ओर बड़ी आशा भरी दृष्टि से देखती रही है परन्तु पिछले कुछ वर्षों में गुरुकुल की जो दुर्दशा हुई है, उससे समस्त आर्यजनता अन्दर ही अन्दर खून के आंसू पी रही थी। हमें आशा करनी चाहिये कि गुरुकुल पुनः अपने प्राचीन वैभव को प्राप्त करेगा। प्रो० वेदव्रत ने गुरुकुल के सभी स्नातकों की ओर से नव निर्वाचित पदाधिकारियों को पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

इस समारोह के आयोजन का श्रेय आर्य प्रादेशिक सभा को है। उन्होंने दोनों महानुभावों को पूर्ण समर्थन और सहयोग का आश्वासन दिया।

अब यह आशा की जा रही है कि वैदिक वाङ्मय और प्राचीन भारतीय संस्कृति तथा साहित्य के अनुसंधान में गुरुकुल कांगड़ी और डी०ए०वी० कालेज कमेटी परस्पर सहयोग से काम करेंगे। अन्य अनेक दिशाओं में भी परस्पर सहयोग की संभावना है। डी ए०वी० के साधनों की बहुलता और गुरुकुलीय विद्वानों की लगन के मिल जाने से आर्य जनता उत्साहित हो उठी है।

इसी समारोह मे संस्कृत के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् और राष्ट्रपति से पुरस्कृत डा० सत्यकाम शास्त्री का भी अभिनन्दन किया गया। इस समारोह में स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती भी उपस्थित थे।

आर्यसमाज सेक्टर २३ न्यू टाउन फरीदाबाद मे वेदप्रचार

२७-९-८५ से २९-९-८५ तक बड़े उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री प० कर्मवीर जी शास्त्री दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार तथा श्री पं० शेरसिंह जी भजनोपदेशक तथा श्री पं० रामचन्द्र जी ने भजनों द्वारा वेदप्रचार किया। शराब बन्दी, दहेजप्रथा पर प्रकाश डाला तथा इसका जनता पर बहुत प्रभाव हुआ। दहेज प्रथा तथा भ्रष्टाचार आर्यसमाज के प्रचार से समाप्त हो सकता है।

आर्यसमाज समालखा मण्डी का उत्सव धूमधाम से सम्पन्न

आर्यसमाज समालखा मण्डी जिला करनाल का उत्सव 5-6 अक्तूबर को धूमधाम से गुडमण्डी में मनाया गया। 5 अक्तूबर शनिवार को प्रातः 8 बजे यज्ञ के साथ उत्सव का समारम्भ हुआ। बाद दोपहर 2 बजे ध्वजारोहण हुआ तथा इस अवसर पर उपस्थित विशाल जन-समुदाय ने तीस वर्षों बाद इस आयोजन को सम्पन्नता तक पहुंचाने मे महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले आर्यसमाज समालखा मण्डी के प्रधान श्री रामेश्वरदयाल जी (काठ मण्डी वाले) का पुष्पमालाओं से लादकर हार्दिक अभिनन्दन किया। इसके बाद शोभायात्रा आरम्भ हुई जिसका नेतृत्व ऊट पर ओ३म् का ध्वज लिए आर्यवीर कर रहा था। उसके पीछे चार घोड़ियों पर चार आर्यवीर केसरिया पगड़ी बाधे तथा ओ३म् का झण्डा लिये चल रहे थे।

कन्या गुरुकुल-मोरमाजरा, गुरुकुल डिकाडला तथा निकटस्थ सभी ग्रामों से आर्यजन अपने-अपने ट्रैक्टर लेकर महर्षि तथा वैदिक धर्म का नाद गुजाते हुए इस शोभायात्रा की शोभा बढ़ा रहे थे। वीरता और भक्ति की धुन बजाता हुआ बैण्ड भी सबके मनो को मोह रहा था। यह शोभायात्रा समालखा मण्डी के लिए अभूतपूर्व थी। बुग्गियों पर भजन-मण्डलियां वैदिक धर्म की विशेषता तथा ऋषि दयानन्द के उपकारों का गुणानुवाद करती चल रही थी। नगर की विभिन्न धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओं ने भी शोभायात्रा तथा आर्यसमाज समालखा मण्डी के अधिकारियो का स्थान-स्थान पर स्वागत द्वार, पुष्पमालाओं शीतल जल, फलाहार तथा वाचिक बधाइयो और शुभकामनाओं द्वारा जोरदार स्वागत किया। 5 बजे यह शोभायात्रा आर्यसमाज मन्दिर मे समाप्त हुई। इसके पश्चात् रात्रि तथा अगले दिन को तीनों बैठको मे श्रद्धेय स्वामी रामेश्वरानन्द जी, डा० रामप्रकाश जी, आचार्य हरिकेशदत्त जी साहित्यालकार, प० रणवीर जी शास्त्री एम० ए० विद्यावाचस्पति, आचार्य देवव्रत जी शास्त्री एम० ए० तथा आचार्य प्रद्युमन कुमार जी नैष्ठिक प्रभृति विद्वानों तथा चौ० नत्थासिह, प० ताराचन्द जी वैदिक तोप, महाशय चिरजीलाल एव महाशय मुशीलाल एव बहन कलावती जी ने सत्य सनातन वैदिक धर्म के विभिन्न पहलुओं को अपनी ओजस्वी वाणी द्वारा उपस्थित जनसमुदाय के सम्मुख स्पष्ट किया जिसे श्रोताओं ने शान्तिपूर्वक सुना। दोनों दिन देसी घी की पूरी सब्जी तथा बूदी ऋषि लगर में भोजन करने वालों को रसास्वादित करती रही। समालखा कस्बे तथा आसपास की ग्रामीण जनता वर्षों बाद हुए इस उत्सव तथा इसकी सफलतापूर्वक सम्पन्नता पर प्रसन्नता व्यक्त करती देखी जा सकती थी। इस उत्सव की सफलता में पानीपत के आर्य बन्धुओं तथा गुरुकुल डिकाडला के संचालक ब्रह्मचारी ओमस्वरूप जी का भरपूर योगदान रहा। इस उत्सव की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह रही कि कस्बे के लगभग 100 नवयुवकों ने यज्ञोपवीत लिया तथा इस आयोजन की सफलतार्थ अपने को समर्पित किये रखा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को इस अवसर पर ५००) वेद प्रचारार्थ दिए गए।

– मन्त्री, आर्यसमाज समालखा मण्डी

हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लेनेवालों को भी पेंशन

(हमारे कार्यालय द्वारा)

चण्डीगढ 10 अक्तूबर। भारत सरकार ने निर्णय किया है कि 1938-39 के आर्यसमाज हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लेने वालों को पेशन दी जाएगी। इसकी अवधि एक अगस्त 1950 से होगी। लेकिन केवल ऐसे सत्याग्रहियों को पेशन मिलेगी जो कम से कम छः मास तक जेल मे रहे हों।

लेकिन हरिजनों व महिलाओ की हालत में कैद को अवधि तीन मास ही पर्याप्त होगी। इसके लिए आवेदन-पत्र केन्द्रीय सरकार को भेजे जा सकते हैं और इसकी एक प्रति हरयाणा सरकार को भेजनी होगी।

—दैनिक ट्रिब्यून

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

... हरयाणा डाक पंजी सं० 23807/73 रजि० सं० P/RTK 49 फोन ... सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८६

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १२ अङ्क ४४   २१ अक्तूबर १९८५   वार्षिक शुल्क १५)   विदेश में ५ पौंड   एक प्रति ३० पैसे

श्री पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती स्मृति अङ्क —

आर्यसमाज के गौरव—सिद्धान्ती जी

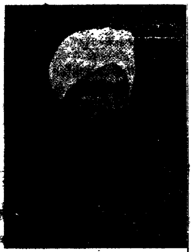
स्व० पं० नरेन्द्र (स्वामी सोमानन्द)

नीतिकार चाणक्य मुनि ने उत्तम पुरुष का स्वरूप इस प्रकार बताया है :—

धर्मे तत्परता मुखे समधुरता दाने समुत्साहिता,
मित्रेऽवंचकता गुरौ विनयिता चित्तेऽतिगम्भीरता।
आचारे शुचिता गुणे रसिकता शास्त्रेऽतिविज्ञानिता,
रूपे सुन्दरता हरौ भजनिता सत्स्वेव संदृश्यते॥

इस श्लोक में सत्पुरुषों के ११ गुण वर्णित किये गए हैं १—धर्म का दृढ़ता से पालन, २—वाणी में मिठास, ३—दान त्याग में उत्साह ४—मित्र के प्रति धोखा नहीं, ५—गुरु के प्रति विनय की भावना, ६—चित्त में गम्भीरता, ७—आचरण में पवित्रता, ८ गुणों के प्रति लगाव, ९—शास्त्रों का विशेष रूप से ज्ञान, १०—शरीर में स्वास्थ्य, ११—प्रभु का सदा भजन चिन्तन।

आर्ष साहित्य के अनुशीलन में सदा अनुरक्त



(श्री पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती)

विद्वद्वर श्री पं० जगदेवसिंह जी शास्त्री इन गुणों के मूर्तरूप हैं। दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर के आदि स्नातकों में आप हैं। यद्यपि मैंने भी इसी संस्था से शिक्षा प्राप्त की पर सिद्धान्ती जी मुझसे पूर्ववर्ती थे। हम दोनों के आचार्य और गुरुजन एक ही थे—पू० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज और पू० स्वामी वेदानन्द जी महाराज। आपने उपदेशक विद्यालय से 'सिद्धान्तभूषण' [illegible] कर अपना विद्याध्ययन जारी रखा और गुरुकुल मटिण्डू तथा गुरुकुल किरठल में अध्यापन कार्य करते हुए शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की। ऋषिवर के आदर्श "स्वाध्यायान्मा प्रमदः" स्वाध्याय से कभी प्रमाद न करो, का अक्षरशः पालन करते हुए सिद्धान्ती जी ने आर्ष ग्रन्थों का अनवरत मन्थन, गहन अनुशीलन और प्रचुर ज्ञान वर्द्धन किया है। इस समय आप आर्य-समाज के मूर्धन्य विद्वानों में अनन्यतम हैं। महर्षि दयानन्द के प्रति तो आपकी अविचल और कट्टर भक्ति है। तर्क और युक्ति के आधार पर आप महर्षि के सिद्धान्तों के पोषक हैं। इतना ही नहीं अपितु आपका दृढ़ विश्वास है कि महर्षि प्रणीत "सत्यार्थप्रकाश" "ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका" इत्यादि ग्रन्थ और वेदभाष्य अक्षरशः सत्य हैं, प्रामाणिक हैं और वेदानुकूल हैं। इस विषय मे आप कभी किसी के साथ तनिक भी समझौता करने को तैयार नहीं और सदा किसी भी विद्वान् के साथ शास्त्रार्थ करने अथवा उसे चुनौती देने के लिए तैयार रहते हैं। आज आर्यसमाज में बहुत कम ऐसे सज्जन और विशेषतः विद्वान् हैं जो ऋषि के सिद्धान्तों के प्रति इतनी अविचल आस्था रखते हों। यह अत्यन्त खेद की बात है कि आज का सामान्य आर्यसमाजी जहां ऋषिकृत ग्रन्थों और वैदिक साहित्य के स्वाध्याय के प्रति प्रायः उपेक्षा वृत्ति उदासीन है, वहा अधिकाश आर्य विद्वान् भी वैदिक वाङ्मय और सिद्धान्तों तथा महर्षि दयानन्द के मन्तव्यो के अनुशीलन अवगाहन, गम्भीर चिन्तन और मन्थन तथा अपने ज्ञानवर्धन के प्रति प्रायः उपेक्षावृत्ति धारण किये हुए हैं इस सम्बन्ध में विद्वन्मण्डल की जो युक्ति है, वह मैं जानता हूं पर जैसा कि महाभाष्य के प्रारम्भ मे ही पतंजलि ऋषि ने कहा है कि

"निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च" विद्वान् को बिना किसी स्वार्थ के कर्त्तव्य समझ कर ही वेद का अध्ययन अध्यापन करना चाहिए और ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। आर्य विद्वज्जन भी इस आर्ष वचन का पालन करें तो इससे उनका अपना और आर्यसमाज का भी अपरिमित हित हो सकेगा। सिद्धान्ती जी का जीवन इस दिशा मे हम सबके लिए प्रेरक है।

आर्यसमाज के आन्दोलनों के नायक

आर्यसमाज का जो आन्दोलन पक्ष है, श्री पं० जगदेवसिंह जी शास्त्री, उसमें भी सदा अग्रसर रहे हैं। हैदराबाद सत्याग्रह मे आप किरठल महाविद्यालय (मेरठ) से एक जत्था लेकर वहा पहुचे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के आदेशानुसार आपने निजाम रियासत में पहुंच तुलजापुर मे सत्याग्रह किया और कारावास दीक्षा की। १९५७ में पंजाब में जब हिन्दी सत्याग्रह चला उसका नेतृत्व करते और उसमें सोत्साह भाग लेते हुए आपने हिसार में कारावास दण्ड भुगता। इसके बाद जब हरयाणा को पंजाब से पृथक् प्रदेश बनाने का आन्दोलन चला, उसमें भी सिद्धान्ती जी का मूर्धन्य स्थान था। सच तो यह है कि हरयाणा प्रदेश निर्माण के आन्दोलन का सूत्रपात ही आपकी प्रेरणा से हुआ। लोकसभा के सदस्य रहते हुए 'हरयाणा' राज्य के निर्माण में भी आपकी भूमिका विशिष्ट रही।

'ओ३म्' चुनाव चिह्न से विजयी

१९६२ मे जब सिद्धान्ती जी लोकसभा के लिए उम्मीदवार खड़े हुए तब आपका चुनावचिह्न 'निकलता सूर्य था' परन्तु प्रचार मे 'ओ३म् ध्वज रखते थे और इसी पर आप विजयी हुए। हारे हुए उम्मीदवार ने जब 'ओ३म्' चिन्ह को साम्प्रदायिक कहकर अदालत मे अर्जी दी और यह मामला सर्वोच्च न्यायालय में पहुचा तब वहां यह निर्णय दिया गया कि 'ओ३म् का चिन्ह साम्प्रदायिक नहीं है, सिद्धान्ती जी के जीवन की जहा यह अनोखी घटना है वहा भारत के राजनीतिक क्षेत्र मे भी पहला ऐसा उदाहरण है जब ईश्वर के निज नाम 'ओ३म्' की इच्छा मे विजय प्राप्त की गई हो। प्रदेश विधान सभाओं और दोनो (संसद) मे अनेक आर्यसमाजी सदस्य विजयी होकर पहुचे पर किसी ने भी आज तक

(शेष पृष्ठ ८ पर)

कहानी एक [illegible] साधु की

(प्रकाशवीर शास्त्री)

हजारों वर्ष पहले महाभारत में व्यास जी ने लिखा था—चिकनी चुपड़ी और मनभाती बात कहने वाले संसार में बहुत मिल जायेंगे। लेकिन प्रत्यक्ष मे कड़वी परन्तु परिणाम में सुखद बात कहने वाले माई के लाल विरले ही मिलेंगे। सत्य बोलने वालों को कभी-कभी तो कठोर लटठमार भाषा का प्रयोग करने वाले तक की भी सज्ञा दे देते हैं। प्रारम्भ मे सच्चाई सुनने में लगती भी कुछ कड़वी है। पर धीरे धीरे जब उसके सुनने और समझने वालों की सख्या बढ़ती जाती है तो मीठा झूठ कानो को काटने लगता है।

सामाजिक क्षत्र मे सिद्धान्ती जी के साथ मिलना और बोलना तो कई बार हुआ पर मेरे मन पर उनके व्यवहार की कुछ छाप बैठी नहीं। लम्बे समय तक मैं उन्हे विद्वत्ता के बोझ से दबा हुआ एक सस्कृत का विद्वान ही समझता रहा। रहन सहन से तो वे ठोस विद्वान भी नही लगते थे। ऐसा लगता था—गाव का कोई किसान है जो हल जोतने के बाद नहा धोकर आ बैठा है। लेकिन जब उनके दो चार भाषण सुने तो मुझे लगा—अन्दर कुछ सार है। फिर भी लोक व्यवहार की कसौटी पर वह जमे नही। कई बार अपने मित्रो को मैंने कहा भी—सरसता ता इस व्यक्ति के पास छूकर भी नही निकली पता नही कौन सी मिट्टी से यह बने हैं।

उनके व्यक्तित्व की इसी ऊहापोह मे पजाब का हिन्दी सत्याग्रह १९५७ में आ गया। उस समय पाकिस्तान बन जाने से पजाब विभाजित हो चुका था। फिर भी आज के मुटठी भर जिलों वाले पजाब से बह बडा था। वतमान हरयाणा और हिमाचल का बहुत बडा भाग उस समय के पजाब का हिस्सा था। पजाब सरकार हिन्दी भाषा भाषियों की सख्या आधे से अधिक होते हुए भी गुरुमुखी लिपि में पजाबी उन पर थोपना चाहती थी। आर्यसमाज ने इसके लिए एक सत्याग्रह किया। मैं उस सत्याग्रह आन्दोलन का प्रचार मन्त्री था। सिद्धान्ती जी के साथ रहकर निकट से काम करने का पहला अवसर तो तब मिला और दूसरा १९६२ के बाद ससद मे जब वह पजाब से ससद सदस्य बनकर आए। यहा उनके स्वभाव, कार्यशैली सरलता और आत्मीयता की सर्वथा भिन्न तस्वीर देखने को मिली। व्यक्ति तो एक ही था स्वभाव भी कुछ बदल नही गया था। पर साथ रहकर जानने का जितना अवसर उन दिनो मिला वह पहले नही मिल सका था। इसीलिए अपनी बद्धमूल धारणा को बदलने मे भी कुछ अधिक समय नही लगा। अब तो मेरी ही भाति भ्रमवश किसी ने सिद्धान्ती जी का अधूरा चित्र अपने मस्तिष्क मे बना रखा हो तो उसे सभालने मे भी मैं उनकी मदद कर देता हूँ।

सिद्धान्ती जी स्नेह और आत्मीयता की सजीव प्रतिमा हैं। अपना बनाकर कोई उनसे बड से बडा त्याग और बलिदान करवा सकता है। उन्हें यह आभास हो जाए कि यह व्यक्ति कष्ट मे है और तू इस स्थिति में है जो इसकी सहायता कर सके। फिर किसी के कहने या दलील देने की जरूरत उन्हे नहीं है। मैं उनकी उस उदात्त भावना से भली भाति परिचित हू। जब कई बार अपने को कष्ट मे रखकर भी दूसरों का बोझ अपने कधों पर उन्होंने ले लिया। कानो कान किसी को खबर भी न होने दी। जबकि दूसरे इसका ढोल न जाने कहा-कहा पीटते फिरते। पर कोई चालाकी मक्कारी अथवा दबाव मे आकर उन्हें झुकाना चाहे तो वह टूट तो जायेंगे लेकिन झुकगे नही। इसमे जहा एक अधिक विद्वान की विद्या सहायक बनी वहा उनका अनुशासन में बधा सैनिक जीवन भी कुछ कम सहायक नही है। अपनी इस प्रौढ अवस्था में भी वह अपने को एक अनुशासनप्रिय सैनिक ही अधिक मानते हैं। उन्हें अपने सैनिक जीवन पर गर्व भी है।

ससद मे उन दिनो निर्दलीय सदस्यो ने काम चलाने के लिए अपना एक छोटा सा सगठन बना रखा था। सबने मिलकर मुझे उसका सयोजक बना दिया था। सिद्धान्ती जी को जब मैं पूछता आप किस विषय पर बोलना चाहेगे तो एक ही उत्तर उनका होता था—सेना और सैनिको की बहस मे मेरा नाम जरूर रहे। उसके बाद कोई और विषय भी हो तो देखा जाएगा। उनकी प्रारम्भ से ही यह धारणा रही, हमारी सेना जो देश की रक्षा मे सदा सन्नद्ध रहती है उनकी समुचित सुमादर हमारे देश के राजनेता नहीं देते। विशेष रूप से भी हमारे सेवानिवृत्त [illegible] जरूर कुछ सुख [illegible] के [illegible] से पहले को बहुत कम [illegible] दिया जाता था।

सेना का काम सीमाओं की रक्षा करना स्वयं ही केवल नहीं है। देश की आन्तरिक और [illegible] के [illegible] भी जरूरत पड़ने पर सेना बुलाई जाती है। चीन में और इजरायल जैसे कुछ अन्य देशों में तो सेवारत और सेवानिवृत्त दोनों तरह के सैनिकों से देश के विकास कार्यों और सीमा सुरक्षा [illegible] के रूप में भी काम लिया जाता है। इजरायल ने तो सारे राष्ट्र को ही [illegible] करने के लिए अनिवार्य सैनिक प्रशिक्षण की व्यवस्था कर रखी है। सिपाही भारत का हो चाहे किसी दूसरे देश का वह पैसे से भी अधिक प्रतिष्ठा को महत्त्व देता है। यदि उसमें भी कजूसी उसके लिए बरती जाए और केवल प्राण न्यौछावर करने के उपदेश उसे दिए जायें तो एक बार वह अपनी देशभक्ति में खुलकर खेल तो जाएगा पर मन में एक कसक उसके जरूर रह जाएगी। सिद्धान्ती जी इसीलिए सैनिकों की समस्याओं पर गहराई से सोचते और बोलते रहे हैं। भारतीय सेना में वीर भूमि हरयाणा ने जितने सैनिक और सेनानायक दिये हैं उस पर कोई भी देश अभिमान कर सकता है। यहाँ के निवासी निरामिषभोजी और शराब के व्यसन से कोसो दूर रहे हैं। इसीलिए यहाँ के सैनिकों के खानपान की भी सेना में विशेष व्यवस्था रहती थी। लेकिन अब जिस तरह मास मदिरा का प्रचार हरयाणा में हो रहा है उससे लगता है कि अगली पीढ़िया इस व्यसन मे बुरी तरह फस चुकी होंगी। फिर यह धरती उतनी ही मात्रा में देश को सैनिक देती रहेगी इसमें सन्देह होने लगा है।

हरयाणा को घी-दूध का भण्डार कहा जाता था। आज भी यह कहावत इस राज्य के लिए प्रसिद्ध है—देशां मा देश हरयाणा जहा दूध दही का खाणा। गायो मे हरयाणा प्रान्त की भी अपनी पृथक नसल है जो दूर-दूर तक प्रसिद्ध है। मास-मदिरा को प्रोत्साहन देने की बजाय यदि गुजरात की अमूल डेरी की तरह हरयाणा के हर जिले में दुग्ध उत्पादन केन्द्र बना दिए जायें तो राज्य सरकार को शराब की बिक्री से अधिक आय इससे होने लगेगी। इस क्षत्र की परम्पराओं की भी रक्षा इससे हो जायेगी।

राजनीति और समाज दोनों मे आजकल एक यह हवा और चल पड़ी है—कोई भी विवाद हो उसके लिए बीच का माग खोजने लगते हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती के सामने भी कई बार ऐसे अवसर आए जब मध्यममार्गी उन्हे समझाने आये। स्वामी जी बोले दो और दो चार ही होते हैं कभी पौने चार या सवा चार नहीं हो सकते। सैद्धान्तिक क्षेत्र में आर्यसमाज भी इसीलिए [illegible] से किसी के गले नही उतरता। सस्ती [illegible] या मुक्ति उसकी [illegible] में नहीं आती। जीवन भर सिद्धान्ती जी इसी सत्य के प्रचारक रहे हैं। उनके भाषणों में भी सिद्धान्तों की सम्पुष्टि पर विशेष बल होता। लेकिन भाषणों से अधिक प्रभावशाली उनका जीवन भी एक भाषण है। १९६२ के चुनावों मे सिद्धान्ती जी [illegible] अपना चुनाव अभियान चलाते थे।

[illegible] विरोधी कांग्रेसी प्रत्याशी ने इसी को आधार बनाकर चुनाव [illegible] की कि इन्होंने चुनाव में धार्मिक [illegible] का प्रयोग किया है। [illegible] तो इसे सजा कर सकते थे। पर उन्होंने [illegible] किया। ससद की सदस्यता भले ही [illegible] झूठ नहीं बोला जाएगा। सर्वोच्च न्यायालय ने सिद्धान्ती जी के पक्ष में निर्णय देते हुए उनकी स्पष्टवादिता की सराहना की। बच्चों जैसी सरलता और फक्कड़ों जैसी मस्ती उनके सिद्धान्तनिष्ठ व्यक्तित्व में मिलेगी। ससद सदस्यों को प्रथम श्रेणी मे यात्रा करने की जो सुविधा प्राप्त है उस आधार पर जब वह उस श्रेणी में यात्रा करते थे तो कभी-कभी डर लगता रहता था—कोई उनसे यह न पूछ बैठे—किस क्लास का टिकट आपके पास है।

श्वेतवस्त्रधारी इस साधु को लोकैषणा तो लगता है छूकर नहीं निकली। ससद मे और बाहर भी कभी उन्होंने यह प्रयास नहीं किया—उनका नाम समाचार पत्रों में मोटी पक्तियों में हो। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के साप्ताहिक पत्र आर्य मर्यादा का वर्षों तक सम्पादन

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सम्पादकीय

स्वर्गीय पं० जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती की ८५वीं जयन्ती पर २२ अक्तूबर ८५ को वाल्मीकि रामायण पर विद्वद्गोष्ठी का आयोजन किया गया है। सर्वहितकारी का २१ अक्तूबर का अंक भी "सिद्धान्ती स्मृति अङ्क" के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। "जगदेवसिंह सिद्धान्ती अभिनन्दन ग्रन्थ" से कुछ चुने हुए लेख पाठक इस अङ्क में पढ़ सकेंगे जो सिद्धान्ती जी के जीवनकाल में ही लिखे गये थे।

नवम्बर १९४२ ई० में ब्रह्मचारी भगवान्देव जी को लाकर गुरुकुल झज्जर सम्भलवानेवालों में श्री सिद्धान्ती जी प्रमुख थे किन्तु अन्त समय तक कभी भी गुरुकुल झज्जर की प्रबन्ध व्यवस्था में बाधक नहीं बने। प्रतिवर्ष गुरुकुल झज्जर के वार्षिक उत्सव पर अवश्य आते थे किन्तु सायकाल जब गुरुकुल की प्रबन्धकारिणी विद्यार्यसभा का अधिवेशन होता था उस समय बाहर खुले पण्डाल के नीचे उपस्थित आर्यों की शङ्काओं का समाधान करते थे।

सिद्धान्ती जी के भाषण और शंका-समाधान तो मैं १९४६ से ही सुनता आ रहा था किन्तु १९५४ मे अन्तेवासी के रूप मे न्यायदर्शन (वात्स्यायन भाष्यसहित) पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। न्याय शास्त्र पर सिद्धान्ती जी का पूर्ण अधिकार था। न्याय के पांच अध्यायों के संस्कृतभाषा मे बनाये सिद्धान्ती जी के ५ प्रश्न-पत्र मेरे पास सुरक्षित हैं और उत्तरसचिका भी।

सिद्धान्ती जी आर्य सिद्धान्तों के तो ज्ञाता थे ही साथ ही अनेक शास्त्रों के पण्डित भी थे। लेखक, वक्ता और जननेता भी थे। इतना सब कुछ होते हुए भी घमण्ड और मिथ्याभिमान से बहुत दूर थे।

एक दिन की बात है मैं सम्राट् प्रेस (पहाडी धीरज, दिल्ली) में चला गया। सिद्धान्ती जी प्रूफ संशोधन कर रहे थे। सामान्यतया लोग 'महत्त्व' शब्द को 'महत्व' ही लिखते और छापते रहते हैं। मैंने अपने स्वभाव के अनुसार गुरु जी को टोक दिया कि यह अशुद्ध है। "महतो भावो महत्त्वम्"। 'महत्' शब्द से भाव अर्थ में 'त्व' प्रत्यय करने पर महत्+त्व='महत्त्व' शब्द बनता है। इस पर सिद्धान्ती जी ने कहा आगे से ऐसा ही होगा और साथ ही मेरे न्यायशास्त्र के गुरु होते हुए भी यह भी कहा कि व्याकरण शास्त्र के तो आप ही प्रामाणिक विद्वान् हैं।

जैसे आजकल सरस्वती नदी पर अनुसन्धान या अन्वेषण कार्य की चर्चा समाचारपत्रों में चल रही है इसी प्रकार की चर्चा पहले भी चली थी। गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम प्रयाग (इलाहाबाद) में है ऐसी मान्यता है। किन्तु सिद्धान्ती जी की मान्यता थी कि शिवालक की पहाड़ियो से कुरुक्षेत्र होती हुई पश्चिम अरब सागर की ओर बहनेवाली सरस्वती नदी के तट पर प्राचीनकाल में हरयाणा प्रदेश में प्रमुख ऋषियों के आश्रम थे। महर्षि दयानन्द ने भी सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास मे मनुस्मृति २।१७ और २।२२ श्लोको की व्याख्या में आर्यावर्त की सीमा सरस्वती पश्चिम् में अटक नदी, पूर्व में दृषद्वती (ब्रह्मपुत्रा) नदी, उत्तर में हिमालय और दक्षिण में विन्ध्याचल तक मानी है।

हिमालय और विन्ध्याचल के बीच, विनशन से पूर्व तथा प्रयाग से पश्चिम के स्थान को मनुस्मृति (२।२१) में 'मध्यदेश' कहा है। प्रायः मनुस्मृति के टीकाकार 'विनशन' की व्याख्या नही करते किन्तु मन्वर्थमुक्तावली में कुल्लूकभट्ट ने स्पष्ट लिखा है "विनशनात् सरस्वत्यन्तर्धानदेशात्पूर्वम्" विनशन उस स्थान का नाम था जहां सरस्वती का अन्तर्धान होता था, उससे पूर्व मे मध्यदेश की सीमा थी।

'णश् अदर्शने' धातु से वि उपसर्ग लगाकर ल्युट् प्रत्यय करने पर 'विनशन' शब्द बनता है। अदर्शन, अन्तर्धान, अनुपलब्धि, लोप शब्द एकार्थ के द्योतक हैं। पाणिनि ने "अदर्शनं लोपः" (अष्टाध्यायी १।१।६०) अदर्शन की लोप संज्ञा का विधान किया है। स्वर्गीय सिद्धान्ती जी को जब मैंने 'विनशन' का अर्थ "सरस्वती अन्तर्धान देश" बतलाया तो बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे हमारी समस्या सुलझ गई।

सिद्धान्ती जी कर्मकाण्ड के विशेष ज्ञाता थे। जून १९६४ में मैंने अपना विवाह संस्कार करवाने के लिये सिद्धान्ती जी से प्रार्थना की। सिद्धान्ती जी ने प्रेमपूर्वक समझाया कि विवाह संस्कार करवाने का अधिकार केवल गृहस्थाश्रमी पण्डित का है। मैं वानप्रस्थ आश्रम में हूं अतः रघुवीरसिंह जी शास्त्री आपका संस्कार करवा देंगे और उपस्थित मैं भी रहूंगा लेकिन एक शर्त के साथ—आप (वर) सहित ५ बाराती होने चाहिए, अधिक होंगे तो मैं बिना ही कुछ खाये वापिस आजाऊँगा।

सिद्धान्ती जी ने "वैदिक विवाह पद्धति" पुस्तक लिखी थी जो मैंने उनके जीवन काल में ही प्रकाशित कर दी थी। एक और लेख सिद्धान्ती जी ने मुझे लिखकर दिया था "मृत्यु के पश्चात् जीव की गति" यह अभी तक नही छपा है। पाठक सर्वहितकारी के किसी आगामी अङ्क में इसे पढ सकेंगे।

१९७३ में आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के पानीपत चुनाव के पश्चात् श्रद्धेय सिद्धान्ती जी की विशेष प्रेरणा अथवा आदेश से ही मैंने सर्वहितकारी साप्ताहिक पत्र का डिक्लेरेशन भरकर प्रकाशन प्रारम्भ किया था। वैसे इस कार्य में स्वामी ओमानन्द जी, प्रो० शेरसिंह जी, बाबू जगन्नाथ जी, महाशय भरतसिंह जी, बनवारीलाल जी आदि का भी आशीर्वाद तथा सहयोग था।

रुग्णावस्था के पश्चात् अन्तिम दिनों में सिद्धान्ती के स्वभाव में कुछ परिवर्तन होगया था। उनका एक लेख किसी कारणवश सर्वहितकारी मे न छप सका। पत्रोत्तर में मैंने आगामी अंक में छापने के लिए लिख दिया था किन्तु पत्र मिलने से पूर्व ही देहली से रेल मे बैठकर रोहतक आ पहुंचे और नाराज होकर कहने लगे मेरा आने जाने का रेल किराया आपने देना होगा। मैंने हंसते हुए नम्रता से कहा—सिद्धान्ती जी! किराये की क्या बात है आपको भोजन करवाकर दक्षिणा भी देंगे। एकदम सब नाराजगी लुप्त होगई और प्रसन्न होकर कहा "यह हुई न पण्डितोंवाली बात"।

लेन देन मे, खाने पीने मे बहुत ही स्पष्ट और मितव्ययी थे। जहां तक सम्भव होता अपने लिए दूसरों को कष्ट नही देते थे। अत्यन्त त्यागी तपस्वी और पुरुषार्थी थे। परिवार के सभी बच्चो से आत्मीयता रखते थे। ऐसे व्यवहारकुशल महापुरुषों के अब दर्शन दुर्लभ हो रहे हैं। प्रभु हमें शक्ति दें हम सिद्धान्ती जी के जीवन से प्रेरणा लेकर आत्मोत्थान के साथ-साथ परोपकार के पथ के पथिक बन सकें।

—वेदव्रत शास्त्री

स्व० नवाबसिंह जी के परिवार की सहायतार्थ दान

२१-९-८५ गतांक का योग	६६६५-००
पं० प्रभुदयाल पुरोहित आर्यसमाज बस्ती हरफूलसिंह सदर थाना रोड, दिल्ली (एक थाली, दो कटोरी दो गिलास एक चम्मच कुल (६ बर्तन) घर भेजे गए)।	२०/-
मंत्री आर्यसमाज धामड रोहतक	५१/-
मंत्री आर्य पारिवारिक सत्संग सभा रोहतक	२०/-
श्री वीर भानुसिंह आर्य मन्त्री आर्यसमाज झील डा० घासोकलां जिला जीन्द	१५०/-
महाशय हरद्वारीलाल आर्यनगर रोहतक (मासिक सहायता)	१०/-
श्री पवनकुमार जी आर्य आफ चिरन्जीलाल आर्य-धर्मार्थ ट्रस्ट बरनाला (पंजाब)	४०/-
आर्यसमाज मेन बाजार बल्लबगढ फरीदाबाद	२०१/-
अब तक का योग	७१५७-००

जिन आर्यसमाजों की ओर से इस सहायता यज्ञ मे अभी तक आहुति नहीं डाली है, उनसे नम्र निवेदन है कि सभा की दिन रात सेवा करने वाले दिवगत कार्यकर्त्ता के परिवार की सहायता करके यश के भागी बनें।

प्रो० शेरसिंह	प्रो० सत्यवीर शास्त्री	रामकृष्ण
प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धान्ती भवन, रोहतक

जन-क्षितिज के उज्ज्वल नक्षत्र—सिद्धान्ती जी

(प्रोफेसर शेरसिंह)

सार्वजनिक जीवन में व्यक्तिगत शुचिता तथा सत्यनिष्ठा के सिद्धान्ती जी आदर्श प्रतीक हैं। गत ३० वर्षों से मेरा उनके साथ निरन्तर सम्पर्क रहा और इसी निजी अनुभव के आधार पर मैं यह निस्संकोच कह सकता हूं कि उन जैसी सात्विकता, सरलता विरले ही व्यक्तियों में मिलेगी।

सन् ४६ में मैंने संयुक्त पंजाब विधान सभा का चुनाव कांग्रेस टिकट पर लड़ा। उसमें सिद्धान्ती जी ने अपने सब सम्बन्धों को भुलाकर केवल देशभक्ति और आर्यसमाज के दृष्टिकोण से मेरा समर्थन किया। अपने घर का बैल ताँगा लेकर वे गाँव-गाँव घूमे और दिन-रात एक कर दिया। उसके बाद उनके साथ मेरी घनिष्ठता निरन्तर बढ़ती चली गई और प्रायः सभी गतिविधियों में मेरे साथ उनका सहयोग रहा।

सन् ५७ में भाषा के प्रश्न पर मेरा कांग्रेस के साथ विरोध हो गया और मैं, सिद्धान्ती जी तथा आचार्य भगवान्देव जी (स्वामी ओमानन्द सरस्वती) की प्रेरणा पर हिन्दी रक्षा आन्दोलन में सम्मिलित हो गया। सन् १९६२ में उन्हीं के सहयोग से मैंने हरयाणा लोक समिति नामक राजनैतिक दल की स्थापना की और सिद्धान्ती जी इसी के टिकट पर झज्जर रिवाड़ी क्षेत्र से लोक सभा के लिए चुने गए। संसद में भी उन्होंने सदा हरयाणा के हितों का प्रबल समर्थन किया। सन् १९६६ में 'हरयाणा राज्य' के निर्माण में भी उन्होंने एक विशिष्ट भूमिका निभाई।

हरयाणा राज्य के निर्माण के फलस्वरूप मतभेद का आधार समाप्त होने पर कुछ केन्द्रीय नेताओं के आग्रह पर मैं फिर कांग्रेस में सम्मिलित हो गया। सिद्धान्ती जी जीवन भर कांग्रेस के आलोचक रहे हैं, परन्तु जब मैंने उनसे अनुरोध किया तो उन्होंने उसका सम्मान करते हुए सहमति दे दी और झज्जर क्षेत्र सहर्ष मेरे लिए खाली कर त्याग का परिचय दिया।

चण्डीगढ के प्रश्न पर उन्होंने मेरे साथ कन्धे-से-कन्धा मिलाकर काम किया। मैं यद्यपि कांग्रेस में था और वे कांग्रेस के विरोधी ही रहे, परन्तु सब कामों में मेरा और उनका सहयोग यथावत् रहा। कोई भी समस्या या प्रश्न हो, जब मैं उनसे चर्चा करता तो बस यही कह देते थे कि मुझे सदा अपने साथ समझें केवल जो करना हो, मुझे बता दिया करें।

अर्थशुचिता भी इनमें अनुकरणीय है। हिसाब-किताब के बहुत पक्के हैं। संस्थाओं के एक-एक पैसे को बहुत कृपणता के साथ देख-भाल कर खर्च करते हैं और उसका बहुत स्वच्छ हिसाब रखते हैं। यात्रा में भी किसी के साथ जायेंगे तो एक पैसा भी किसी का अपनी ओर न रहने देंगे और तत्काल चुका देंगे। रहन-सहन विचार तथा व्यवहार में भी निश्छलता एवं सादगी ओत-प्रोत है। सिद्धान्त, मान्यता एवं अनुशासन में वे जितने कठोर हैं, व्यवहार में उतने विनम्र एवं शिष्ट हैं। बनावट उन्हें छू तक नहीं गई, छोटे-से-छोटे व्यक्ति के साथ भी उनका शिष्टाचार उच्च स्तर का रहता है। परन्तु बड़प्पन दिखाने वाले के साथ उनका स्वभाव एकदम रूखा हो जाता है। उन्हें शिष्टाचार से ही झुकाया जा सकता है।

हरयाणा, पश्चिमी उत्तरप्रदेश तथा राजस्थान उनके कार्य के विशेष क्षेत्र रहे हैं। इस विस्तृत क्षेत्र के ग्रामीण समाज में उन्हें विलक्षण लोकप्रियता प्राप्त है। उनकी विद्वत्ता तथा चरित्र का सर्वत्र प्रभाव है। इस सारे क्षेत्र की धार्मिक तथा सामाजिक गतिविधियों के तो वे गत ५० वर्ष से केन्द्र ही रहे हैं। सर्वखाप पंचायत के संस्थापक और अध्यक्ष के नाते उन्होंने विवाह आदि अवसरों पर अपव्यय और अयुक्त दहेज के विरोध में जो सफल अभियान चलाया, उसकी अपनी ही छाप है। ग्रामीण कृषक वर्ग को इन फिजूलखर्चियों से छुड़ाकर उन्होंने ठोस हित किया। उसका एक सुन्दर परिणाम यह हुआ कि इन इलाकों में लोगों ने मकान बनाने तथा शिक्षा संस्थाओं को खड़ी करने में अपने गाढ़े पसीने की कमाई का सदुपयोग किया।

हमारे देश में समाज सेवा के लिए जीवन अर्पण करने वालों की पुरानी पीढ़ी में सिद्धान्ती जी जैसे इने-गिने व्यक्ति रह गए हैं। उनके चिन्तन, आचार-विचार तथा निःस्वार्थता का जो स्तर रहा, वह अब कथावशेष ही बनता जा रहा है। जन-क्षितिज पर निराली शान से चमकने वाले ये नक्षत्र अब अंगुलियों पर ही गिने जा सकते हैं। हरयाणा के नवनिर्माण और आर्यसमाज के इतिहास में सिद्धान्ती जी की अनूठी देन स्वर्णिम अक्षरों में अंकित रहेगी। आगामी पीढ़ियों के लिए वे प्रेरणास्रोत रहेंगे। सिद्धान्ती जी जो कुछ हैं, स्वयं बने हैं और अपने को बनाकर उन्होंने हजारों युवकों को बनाया है।

हरयाणाकेसरी आर्यनेता पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती का सम्मान

—निहालसिंह आर्य

नेता तुम आर्यवीर हमारे सुभग सुधी श्रीमान्।
हम सब मिलकर देव आपका करते हैं सम्मान।

—वीरप्रसूभूमि हरयाणा, जहां घी दूध दही का खाणा।
रोहतक मण्डल ग्राम बरहाणा, जन्म लिया द्युतिमान्,
हम सब मिलकर............... ॥१॥

—धन्य हुई है जननी माता, पूज्य पिता संरक्षक त्राता।
कुलभूषण पीढ़ी निर्माता मिल गई शुभ सन्तान,
हम सब मिलकर .... ॥२॥

—ब्रह्मचर्य की रीति निभाई, पुरुषार्थ से विद्या पाई।
ओ३म् भजन में प्रीति लगाई मिल गया वैदिक ज्ञान,
हम सब मिलकर .... ॥३॥

—देव दयानन्द के आभारी, आर्यसमाज प्रतिष्ठा प्रसारी
देश धर्म पर दृढ़ बलिहारी किया योगामृत पान,
हम सब मिलकर............... ॥४॥

—निर्मोही और तपस्वी त्यागी, कर्मठ वीर धीर बड़भागी।
शील सरल गम्भीर विरागी, सच्ची सुन्दर शान,
हम सब मिलकर............... ॥५॥

—पुरुषार्थी जनसेवाकारी, निरभिमानी सर्वहितकारी।
जनगणनायक शक्तिधारी सत्यवादी बलवान्।
हम सब मिलकर............... ॥६॥

—वैदिकधर्मी याज्ञिक ज्ञानी, गोरक्षा सामाजिक मानी।
हिन्दी भाषा के अभिमानी नर नामी विद्वान्।
हम सब मिलकर... .. .. ॥७॥

—राष्ट्रवादी खापों को बढ़ाया, वीर हरयाणा फिर बनवाया।
सासद बनकर देश जगाया हुए गणतन्त्रीय प्रधान,
हम सब मिलकर............... ॥८॥

—धन्य धन्य आचार्य प्यारे, लेखक उपदेशक रखवारे।
आर्यों की आंखों के तारे धर्मधुरी भगवान्,
हम सब मिलकर .... ॥९॥

—अब भी हमें सन्मार्ग दिखाओ, वैदिक ज्योति फिर चमकाओ।
ऐसा अमृत स्रोत बहाओ, शीतल सुखद वरदान,
हम सब मिलकर वीर आपका करते हैं सम्मान ॥१०॥

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत एवं उसकी शिक्षण संस्थाओं की सम्मिलित सभा अपने माननीय सदस्य श्री ऋषिराज जी गुप्त की आकस्मिक मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट करती है। वह आर्यसमाज पानीपत के एवं संस्थाओं के सक्रिय कार्यकर्त्ताओं में से थे। दृढ़ आर्यसमाजी थे। उनके आकस्मिक निधन पर हम सब शोक प्रकट करते हैं। ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे और परिवारजनों को यह असह्य दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

रामानन्द सिंगला

प्रधान आर्यसमाज बड़ा बाजार, पानीपत

संस्कारविधि में लिखित महर्षि दयानन्द सम्मत बृहद्यज्ञ पद्धति

(लेखक श्री सत्यदेव शास्त्री, मन्त्री आर्यसमाज सोनीपत नगर)

सन् १९६१ के मई मास में सम्पन्न नवमार्यमहासम्मेलन के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने 'यज्ञपद्धति प्रकाश' छापकर एक महत्त्वपूर्ण कार्य किया था। आर्यसमाजों में यज्ञों में प्राय: जितनी प्रकार की गडबड़ी होती है, इस पद्धति में उनको दूर करने की पूर्णरूपेण चेष्टा की गई है। किन्तु इतना होने पर भी इस पद्धति में भी कुछ त्रुटियां रह गई हैं। यज्ञपद्धति प्रकाश की भूमिका में प्रथम पृष्ठ पर लिखित लेख का भी इस पद्धति में उल्लंघन किया गया। "यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्" इस मन्त्र में इस बात का वर्णन है—कि कर्मकाण्ड में कुछ अधिक करना भी वैसा हो पाप है जैसा कुछ कम करना। अत: ऋषिकृत पद्धति में न हम कुछ बढ़ा सकते हैं और न घटा ही सकते हैं। अत: हमें मर्यादा में रहकर जैसा ऋषि ने लिखा है वैसा और उतना ही करना चाहिए। ऋषि पारदर्शी होते हैं। पद्धतियों में वे जिन मन्त्रों को और उन मन्त्रों को जिस प्रकार से वर्णित करते हैं वह कुछ विचार कर ही करते हैं। यज्ञ किसी मौलिक बात के अनुकरण हैं जिसको साक्षात्कृतधर्मा ब्रह्मा से लेकर महर्षि दयानन्द सरस्वती तक ऋषि समझते चले आरहे हैं। अत: पद्धतियों में स्वेच्छाचारिता से परिवर्तन और परिवर्धन नहीं करना चाहिए। जैसा देखा जाता है यज्ञ करानेवाले कुछ प्रमुख व्यक्ति अपनी-अपनी शैली बनाते हैं।

संस्कारविधि के सामान्य प्रकरण का क्रम

आर्यसमाजों के साप्ताहिक अधिवेशनों मे तथा अन्य पर्वों में जो विशिष्ट यज्ञ होते हैं उनमें संस्कारविधि का सामान्य प्रकरण आदि से अन्त तक बिना विचारे बोला जाता है। फलस्वरूप स्विष्टकृत् आहुति बीच में आजाती है। वस्तुतस्तु संस्कारविधि का क्रमिक सामान्य प्रकरण प्राजापत्याहुति तक ही है। अग्न आयूंषि आदि चार पवमान आहुतियां तथा 'त्वं नो अग्ने' आदि अष्टाज्याहुति मन्त्र तो विशिष्ट संस्कारों के मन्त्र हैं। उन संस्कारों में बार-बार न लिखने पड़े अत: सामान्य प्रकरण के अन्त में छाप दिए गये हैं। सामान्य प्रकरण तो प्रार्थना के "विश्वानि देव" आदि आठ मन्त्रों से लेकर 'प्रजापतये स्वाहा' पर समाप्त हो जाता है।

'भूरग्नये स्वाहा' आदि चार व्याहृति आहुति स्विष्टकृत् आहुति और प्राजापत्याहुति ये तीनों तो समस्त यज्ञ पूरा हुए पश्चात् सबके अन्त में करनी चाहिएं। अर्थात् प्रार्थना के आठ मन्त्रों से प्रारम्भ करके 'अग्नये स्वाहा' 'सोमाय स्वाहा' 'प्रजापतये स्वाहा' 'इन्द्राय स्वाहा' आधारावाज्यभागाहुतियां तक संस्कारविधि लिखित क्रम से यज्ञ करता चला जावे। इसके पश्चात् जितना बड़ा यज्ञ करना हो सब करे। 'सूर्यो ज्योति' आदि नित्य यज्ञ की आहुतियां भी दे लें। 'अग्न आयूंषि' आदि चार आहुतियां तथा 'त्वं नो अग्ने' आदि अष्ट आज्याहुतियां देनी हों वे भी दे लेवें और जो कुछ यज्ञ करना हो वह भी कर ले। जब यज्ञ समाप्त करने लगें तब सबके अन्त में 'अग्नये स्वाहा' आदि चार आधारावाज्यभाग आहुतियां देकर 'भूरग्नये स्वाहा' आदि चार व्याहृति आहुति फिर 'यदस्य कर्मणो' की स्विष्टकृत् आहुति और 'प्रजापतये स्वाहा' की आहुति देकर समाप्त करें।

यज्ञपद्धति प्रकाश में 'पूर्णाहुतिप्रकरण' ऋषिप्रदर्शित पद्धति के नितान्त विपरीत लिखा है। यज्ञपद्धति प्रकाश मे लिखित बृहद् यज्ञपद्धति में पृष्ठ १७ 'ऋत्विग्वरणम्' से लेकर पृष्ठ ४४ तक में लिखित 'ओम् आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा' तक की विधि ठीक है। इसके पश्चात् ही चार 'अग्न आयूंषि आदि पवमानाहुति और 'त्वं नो अग्ने' आदि अष्ट आज्याहुतियां देनी चाहिए तदनन्तर पूर्णाहुति प्रकरण होना चाहिए। किन्तु बृहद् यज्ञपद्धति मे तथा १५ जुलाई १९८४ का प्रकाशित श्री आचार्य सुदर्शनदेव जी द्वारा लिखित 'वैदिक उपासना पद्धति' में ये बारह आहुतियां स्विष्टकृत् आहुति और प्राजापत्याहुति के पश्चात् लिखी हैं जो ऋषि लेख के सर्वथा विपरीत हैं। ऋषि ने संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण में स्पष्ट लिखा है—'इसमें मुख्य होम के आदि और अन्त में जो आहुतियां दी जाती हैं उनमें से यज्ञ कुण्ड के उत्तर भाग में जो एक आहुति और यज्ञ कुण्ड के दक्षिण भाग में दूसरी आहुति दी जाती है उनका नाम 'आघारावाज्याहुती' कहते हैं और जो कुण्ड के मध्य में आहुतियां दी जाती हैं उनको 'आज्यभागाहुती' कहते हैं। जब प्रधान होम अर्थात् जिस-जिस कर्म में जितना जितना होम करना हो करके पश्चात् पूर्णाहुति पूर्वोक्त चार 'आघारावाज्यभाग' देवे। पुन: शुद्ध किये हुए उसी घृतपात्र में से स्रुवा को भरके प्रज्वलित समिधाओं पर व्याहृति की चार आहुति देवें। ये चार घी की आहुतियां देकर स्विष्टकृत् होमाहुति एक ही है यह घृत की अथवा भात की देनी चाहिए। इसका मन्त्र 'ओम् यदस्य कर्मणो इत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्' इससे एक आहुति करके 'प्राजापत्याहुति' करे। यहां पर पूर्णाहुति प्रकरण समाप्त होता है।

ऋषि ने संस्कार कि विधि के सामान्य प्रकरण में चार पवमानाहुतियां और अष्टाज्याहुतियों का स्पष्ट उल्लेख किया है कि ये आहुतियां कहा देनी चाहिए, ऋषि लिखते हैं "परन्तु ये नीचे लिखी आहुतियां चौल समावर्तन और विवाह में मुख्य हैं। वे चार मन्त्र हैं "ओम् भूर्भुवः स्वः। अग्न आयूंषि:" इत्यादि। इनसे घृत की चार आहुतियां करके (अष्टाज्याहुति) ये निम्नलिखित मन्त्रों से सर्वत्र मङ्गल कार्यों में आठ आहुति देवे। "ओम् त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्" इत्यादि। ऋषि के ऊपर लिखित लेख से स्पष्ट है कि ये दोनों आहुतिसमूह पूर्णाहुति प्रकरण नहीं है। पूर्णाहुति प्रकरण तो केवल प्राजापत्याहुति तक ही है।

ऋषि ने साप्ताहिक यज्ञपद्धति अथवा बृहद्यज्ञपद्धति का कहीं उल्लेख नहीं किया। गृहाश्रम प्रकरण में पक्षयज्ञ का उल्लेख है। ऋषि लिखते हैं इस प्रकार पक्षयाग, अर्थात् जिस के घर मे अभाग्य से अग्निहोत्र ही न होता हो तो सर्वत्र पक्षयागादि यथायोग्य करे।

आर्यसमाजो के साप्ताहिक सत्सगों तथा बृहद्यज्ञों में ऋषि सम्मत निम्नलिखित विधि के अनुसार ही यज्ञ करना चाहिए।

१. प्रथमविधि: (ऋत्विग्वरणम्) ओमावसो: सदने सीद-इत्यादि।
२. द्वितीयविधि: (आचमनम्) ओम् अमृतोपस्तरणमसि इत्यादि तीन मन्त्रों से।
३. तृतीयविधि: (अङ्गस्पर्श:) ओम् वाङ्म आस्येऽस्तु-इत्यादि मन्त्रों से।
४ चतुर्थविधि: (स्तुतिप्रार्थनोपासना) ओम् विश्वानि देव-इत्यादि आठ मन्त्रों से (अर्थ सहित)
५ पञ्चमविधि: (स्वस्तिवाचनम्) ओम् अग्नीमीळे-इत्यादि इकतीस मन्त्रों से
६. षष्ठविधि: (शान्तिकरणम्) ओम् श न इन्द्राग्नी-इत्यादि अठाईस मन्त्रों से
७. सप्तमविधि: (समिदाधानम्) संस्कार-सामान्य प्रकरण।
८ अष्टमविधि: (अग्न्याधानम्) ओम् भूर्भुवः स्वः। ओ भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना) इत्यादि
९ नवमविधि: (अग्निसमिन्धनम्) ओम् उद्बुध्यस्वाग्ने इत्यादि मन्त्र से
१० दशमविधि: (समिदाधानम्) ओम् अयन्त इध्म इत्यादि चार मन्त्रों से
११ एकादशविधि: (पञ्चाहुतय:) ओम् अयन्त इध्म- इस मन्त्र से
१२ द्वादशविधि: (जलसिञ्चनम्) ओम्-अदितेऽनुमन्यस्व इत्यादि चार मन्त्रों से
१३ त्रयोदशविधि: (आघारावाज्यभागाहुतय:) ओम् अग्नये स्वाहा इत्यादि चार मन्त्रों से
१४ चतुर्दशविधि: (प्रधान होम) प्रात:काल के मन्त्र ओं सूर्यो ज्योति से लेकर ओम् अग्ने नय सुपथा तक। आहिताग्निहो-' ओम् अग्निर्ज्योति से ओम् आपो ज्योती रसोऽमृतम् तक। इसके पश्चात् चार पवमानाहुति और अष्टाज्याहुतियां देनी चाहिए। यदि वेद के अन्य मन्त्रों की आहुति देनी हों तो वे भी देवें। इस के पश्चात् ही पूर्णाहुति प्रकरण आरम्भ करे।
१५. पञ्चदशविधि: (पूर्णाहुतिप्रकरणम्) आघारावाज्यभागाहुति चार देवे।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

चौ० सुलतानसिंह द्वारा प्रो० शेरसिंह तथा चौ० देवीलाल की आलोचना करना

कृतघ्नता

रोहतक १८ अक्तूबर। हरयाणा रक्षा वाहिनी के प्रचार मन्त्री बाबू रघुवीरसिंह ने अपने एक प्रेस वक्तव्य में चौ० सुलतानसिंह सदस्य राज्य सभा के उस भाषण की निन्दा की है, जो उन्होंने गत सप्ताह रोहतक की एक सार्वजनिक सभा में बोलते हुए कहा था कि--प्रो० शेरसिंह तथा चौ० देवीलाल ने पजाब के पूर्व मुख्यमन्त्री श्री प्रतापसिंह कैरो के साथ समझौते पर हस्ताक्षर करके हरयाणा के साथ गद्दारी की थी। उन्होंने दावा भी किया था कि यदि उनका आरोप झूठा सिद्ध हो जावे तो वे राज्य सभा की सदस्यता से त्याग-पत्र दे देंगे। उनकी सदस्यता की अवधि खत्म हो रही है, और वे त्याग-पत्र देने की थोथी बात न कहें, वे वैसे ही सदस्यता से कुछ महीनों में हटने वाले हैं।

बाबू रघुवीरसिंह ने वास्तविक स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा कि १९५६ में श्री प्रतापसिंह कैरो के साथ अबोहर फाजिल्का के सम्बन्ध में प्रो० शेरसिंह तथा चौ० देवीलाल का जो समझौता हुआ था, उसी को आधार मानकर हरयाणा सरकार ने मैथ्यू आयोग के समक्ष अपना पक्ष प्रस्तुत किया है और प्रो० शेरसिंह जी को भी उस उप-समिति मे सम्मिलित किया है जो हरयाणा के हितों की रक्षार्थ पक्ष प्रस्तुत करने के लिए हरयाणा सरकार ने गठित की है। इसके अतिरिक्त मैथ्यू आयोग के न्यायालय मे हरयाणा सरकार के वकील बाबू आनन्दस्वरूप को भी प्रो० शेरसिह के पास तथ्यो की जानकारी भेजनी पड़ती रहती है इन परिस्थितियो में चौ० सुलतानसिंह द्वारा प्रो० शेरसिह पर तथा चौ० देवीलाल पर गद्दारी करने का आरोप शर्मनाक ही नहीं अपितु कृतघ्नता है।

चौ० सुलतानसिंह तथा चौ० भजनलाल ने अबोहर फाजिल्का के क्षेत्र हरयाणा को सौंपे जाने से पूर्व ही चण्डीगढ़ खाली करने की तैयारी करके अपने वचन को भग किया है। यदि अबोहर फाजिल्का के हिन्दी-भाषी क्षेत्र हरयाणा को मिलेंगे तो प्रो० शेरसिह तथा चौ० देवीलाल के प्रयत्नों से मिलेंगे। आपने स्मरण कराते हुए कहा कि हरयाणा में प्रो० शेरसिह ही सर्वप्रथम हरयाणा के हितो के लिए आवाज बुलन्द करने वाले है। उनके प्रयास से ही श्रीमती इन्दिरा गांधी ने १९७० मे फाजिल्का अबोहर हरयाणा को दिया था। हरयाणा पर अकालियों के प्रत्येक प्रहार का उत्तर प्रमाण सहित देने का श्रेय प्रो० शेरसिह को ही है। अब भी पजाब सरकार ने हरयाणा सरकार के विरुद्ध मैथ्यू आयोग के समक्ष अपना पक्ष प्रस्तुत करते हुए प्रतिवेदन दिया है, उनके तथ्यों का हरयाणा रक्षा वाहिनी की ओर से मैथ्यू आयोग को दिए गए ज्ञापन मे प्रो० शेरसिह ने खण्डन किया है और उसकी बातों का उत्तर कल मैथ्यू आयोग को भेज रहे है।

हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल तथा उनके चमचे चौ० सुलतानसिह अपने उस वचन को भूल गये हैं जो कि उन्होंने चण्डीगढ़ में सम्पन्न हुई हरयाणा के सभी दलों की बैठक मे सर्वसम्मति से निश्चय किया था कि हरयाणा के साथ अन्याय होने पर अन्य दलों के साथ कांग्रेस के भी सासद तथा विधायक त्याग-पत्र दे देंगे। क्या सुलतानसिह ने अपना वचन निभाते हुए त्याग-पत्र दिया है? इन नेताओं ने बार-बार यह भी घोषणा की थी कि यदि चण्डीगढ़ के बदले अबोहर फाजिल्का हरयाणा को नही मिला तो चण्डीगढ़ खाली नहीं करेंगे। पंजाब समझौते के आधार पर २६ जनवरी १९८६ को चण्डीगढ के स्थान पर नई राजधानी बनाने की तैयारी कर रहे है। चाहिये तो यह था कि चौ० देवीलाल के लोकदल के विधायकों की भाँति हरयाणा के हितों की रक्षा न होने पर कांग्रेस दल के सांसद तथा विधायक भी तुरन्त त्याग-पत्र देकर अपने वचन को पूरा करते। परन्तु वे उल्टे हरयाणा के हितों की रक्षा करने वाले नेताओ पर आरोप लगा रहे हैं।

हरयाणा को पुनः मानचित्र पर लाने का श्रेय भी प्रो० शेरसिह चौ० देवीलाल तथा हरयाणा के स्वर्गीय नेता प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती, चौ० लहरीसिंह आदि को ही है। उन दिनों हरयाणा के वर्तमान शासक हरयाणा बनवाने के संघर्ष में कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होते थे। यही चौ० सुलतानसिंह रोहतक और दूसरी जगहों के मंचों पर इन दोनों नेताओं के गीत भी गा चुके हैं। एक समय पर गीत गाना और दूसरे समय पर उन्हीं नेताओं पर आरोप लगाना उनका पेशा रहा है और इसी का दिया वे जीवन भर खाते रहे हैं।

प्रेस वक्तव्य के अन्त में बाबू रघुवीरसिंह ने चौ० सुलतानसिंह को कांग्रेस पद से हटाये जाने पर सन्तोष प्रकट करते हुए कहा कि राजीव गाँधी को भ्रष्टाचार समाप्त करने के वचन को पूरा करने के लिए चापलूस, अवसरवादी तथा भ्रष्ट नेताओं का शीघ्र सफाया करना चाहिए। आपने हरयाणा की जनता से अपील की है कि हरयाणा के हितों की रक्षा करनेवाले नेताओं को सहयोग देकर और दूध पीने वाले मजनुओं से सावधान रहते हुए हरयणा से हो रहे अन्याय तथा पक्षपात के व्यवहार का डटकर मुकाबला करना चाहिए।

(पृष्ठ ५ से आगे)

१६ षोडशविधि: (व्याहृत्याहुतयः) चार देवें।
१७ सप्तदशविधि: गायत्री मन्त्र की तीन आहुतियां
१८ अष्टादशविधि: (स्विष्टकृदाहुति) एक
१९. नवदशविधि. (प्राजापत्याहुति) एक
२०. विंशविधि: (पूर्णाहुतयः) ओ सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।
२१. एकविंशविधि: (वामदेव्यगानम् महावामदेव्यम्)।
२२. द्वाविंशविधि: (दक्षिणा दानम्)
२३. त्रयोविंशविधि: (आशीर्वादः)
२४. चतुर्विंशविधि. (शान्तिपाठः)
२५ पञ्चविंशविधि. (सत्कार.) पश्चात् जो कोई देखने ही के लिए आये हों उनको सत्कारपूर्वक विदा करें।

(ज्ञातव्य) स्विष्टकृदाहुति का ही दूसरा नाम प्रायश्चित्ताहुति है। उसका स्थान पूर्णाहुति से पूर्व ही होना चाहिए अन्यत्र नहीं। महर्षि ने भी स्वलिखित संस्कारविधि में प्रायः सभी संस्कारों में स्विष्टकृदाहुति का अन्त में ही विधान किया है।

(पृष्ठ २ का शेष)

उन्होंने किया। पर एक मर्यादा यहाँ भी उन्होंने रखी--अपनी ख्याति का माध्यम उस पत्र को नहीं बनाया। जबकि वह चाहते तो किसी न किसी रूप में उसके हर अंक में छाये रहते। आर्यसमाज के किसी इसी तरह के पत्र या लेख में यदि सिद्धान्तविहीन कोई चर्चा आजाय तो सिद्धान्ती जी की कलम उठ जाती थी। चाहे वह कोई संन्यासी हो अथवा वेदो का प्रकाण्ड विद्वान् उनकी पैनी निगाह से वह बचकर निकल नही सकता था।

हमारे समाज की पता नहीं कब से यह परम्परा बन गई है—व्यक्ति का मूल्यांकन उसके जीवन में कम होता है। जाने के बाद एक-एक करके उसके गुणों और कार्यों की चर्चा प्रारम्भ हो जाती है। पर उसके सिवाय अगली पीढ़ी को प्रेरणा मिलने के उस व्यक्ति को क्या लाभ मिला। चार आदमी उसके कार्यों की सराहना ही कर दें तो भी वह अपने श्रम और तप को सफल मानता है। बहुत से राजनेता तो कुछ न होते हुए भी अपनी प्रशंसा के पुल बंधवाते रहते हैं। पर समाज-सेवी न केवल इस कला से अपरिचित हैं अपितु श्रद्धा और सम्मान के पात्र व्यक्तियों को भी श्रद्धेय स्थान नहीं दे पाते। मृतक-श्राद्ध की प्रथा जीवितों का श्राद्ध करनेवालों में भी आती जा रही है। काश! श्री जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती के सम्बन्ध में हम यह भूल न करें।

एक संस्मरण

श्री पं० शिवकुमार शास्त्री

जहां तक मुझे स्मरण है मैं सन् १९३० में जब श्री स्वामी सर्वदानन्द जी के आश्रम में पढ़ता था तब मैंने पहले-पहल श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती का नाम सुना था। नाम सुनने का कारण यह था कि श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज ने सन्मार्ग-दर्शन नाम का एक ग्रन्थ लिखा था और उसमें आर्यसमाज की मान्यता के विपरीत चार वेदों का ज्ञान भिन्न भिन्न चार ऋषियों के हृदय में न मानकर "एक ही ऋषि के हृदय में चारों वेदों का प्रकाश हुआ" यह लिखा था। इस मान्यता पर सर्वप्रथम आपत्ति श्री सिद्धान्ती जी ने की और इस पर शास्त्रार्थ करने के लिए भी चुनौती दी।

आश्रम क्योंकि श्री स्वामी सर्वदानन्द जी का था। इसलिए वहां [illegible] वाले सभी विद्वान् श्री स्वामी जी के परम श्रद्धालु भक्त थे। यों तो श्री स्वामी जी की प्रतिष्ठा सारे आर्यजगत् में बहुत अधिक थी। इसलिए श्री सिद्धान्ती जी द्वारा श्री स्वामी जी को दी गई चुनौती का साम्मुख्य करने के लिए प्राय: प्रत्येक समय आश्रम में चर्चा होती रहती थी। पुस्तकों में प्रमाण खोजे जाते थे। एक बात जो मुझे अब तक स्मरण है और जिसके लिए चारों वेदों को छान मारा गया, यह थी कि वेदों में अग्नि, वायु आदित्य और अङ्गिरा कहीं पर्याय के रूप में प्रयुक्त हुए हैं अथवा नहीं? आश्रम में अच्छा खासा वह दृश्य उपस्थित था जो किसी दंगल में भाग लेने के लिए व्यायामपरायण अखाड़े के पहलवानों का होता है। एक जिस व्यक्ति के कारण आश्रम का उस समय का वायुमण्डल शक्तिमय था, उसका नाम था जगदेवसिंह सिद्धान्ती। मैं उस समय बालक ही था पर इस हलचल को देखकर मन में यह विचार आता था कि कितना प्रभाव-शाली वह व्यक्ति होगा जिसके लिए ये संवर लंगोटे कसे जा रहे हैं।

इस चुनौती की परिणति कब और क्या हुई यह हम लोगों को तो उस समय ज्ञात न हो सकी। किन्तु एक चर्चा करते हुए अपने गुरुजनों से सुना कि श्री स्वामी के साथ श्री सिद्धान्ती जी ने बहुत सम्मान का व्यवहार किया और श्री स्वामी जी ने भी श्री सिद्धान्ती जी को सुनकर उस स्थल को ठीक करने का वचन दिया। उसके बाद आठ दस वर्ष तक श्री सिद्धान्ती जी के नाम की कोई चर्चा नहीं सुनी।

एक बार हैदराबाद सत्याग्रह के बाद की बात है मैं महाविद्यालय गुरुकुल धाम जेहलम में पढ़ता था, वहां से अलीगढ़ आया। दिल्ली से रेलगाड़ी चलती थी और दो घण्टों से कुछ अधिक का समय मेरे पास था। अत: मैं स्नानादि से निवृत होने के लिए आर्यसमाज दीवान हाल चला आया। वहीं सर्वप्रथम श्री सिद्धान्ती जी के दर्शन किये। श्री सिद्धान्ती जी उन दिनों महाविद्यालय किरठल से आये ही थे, कुछ स्वास्थ्य भी ठीक नहीं था और दिल्ली में अपना कुछ काम काज प्रारम्भ करना चाहते थे। बहुत थोड़ी देर उनसे बात चीत हुई और फिर मैं अलीगढ़ चला गया।

श्री सिद्धान्ती जी से अधिक सम्पर्क का अवसर तब आया जब आ० प्र० सभा पंजाब पर हरयाणा वालों का अधिकार हुआ। मैं सभा की ओर से दिल्ली में वेदप्रचार का अधिष्ठाता था। एक छोटा सा कार्यालय आ० स० दीवान हाल में मेरे पास रहता था। श्री स्वामी वेदानन्द जी महाराज सभा के मन्त्री बने। किसी भी दल की दलदल में फंसने की वृत्ति भगवान् ने मुझे दी ही नहीं। विद्वान् और सज्जनों का आदर मैं सदा ही करता रहा हूं। दीवानहाल में रहने के कारण आर्यसमाज दीवानहाल के अधिकारी [illegible] कृपालु मित्र सदा रहे अब भी हैं किन्तु श्री स्वा० वेदानन्द जी ने भूल से मुझे उस धड़े का समझ लिया और कार्यालय मुझसे लेलेना चाहा। पहला आदेश उनका आया कि मैं सभा के समस्त [illegible] की एक लिस्ट भेज दूं। [illegible] आज्ञा का पालन कर दिया। दूसरे दिन मध्याह्न श्री स्वामी जी ने [illegible] वाटिका में मुझे बुलाया और कहा—सभा का कार्यालय [illegible] है अत: आप अपनी डाक भी यहीं आकर भेजा करें। जब मुझसे यह बात कही जा रही थी उस समय श्री स्वामी जी के पास श्री सिद्धान्ती जी तथा श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री बैठे हुए थे। रघुवीरसिंह जी शास्त्री बैठे हुए थे। श्री रघुवीरसिंह जी शास्त्री को उस दिन मैंने पहली बार देखा।

श्री स्वामी को मैंने परामर्श दिया कि दिल्ली के आर्यसमाजों को यह व्यवस्था दयानन्द वाटिका की अपेक्षा दीवान हाल से होनी अधिक उपयुक्त है। आर्यसमाजों के अधिकारी जब भी अपने अपने कार्य से चांदनी चौक आदि आते हैं, वे आर्यसमाज का भी काम करते जाते हैं। कार्यालयों में काम करने वालों को भी वहां आने में सुविधा रहती है। दयानन्द वाटिका सर्वथा एक कोने पर पड़जाती है आगे आप जो उचित समझें।

मैं अपनी बात करके चला आया। दूसरे दिन मुझे सूचना पहुंची कि मेरा काम यथापूर्व दीवानहाल से ही होगा। श्री स्वामी के इस रुख में परिवर्तन के मूल में ये दोनों महानुभाव थे। किन्तु श्री स्वामी जी के व्यवहार का मेरे मन पर बहुत बुरा प्रभाव हुआ। बार-बार किसी शायर का यह शेर स्मृति पटल पर उभर आता था—

"कल बहुत नाज़ा उरूजे वक्त पर सैयाद था।
बात इतनी थी कि मैं था कैद वह आज़ाद था।

श्री स्वामी जी मुझसे जैसे निपटना चाहते थे वह इन दोनों महानुभावों को पसन्द नहीं आया और इनकी इच्छा के विपरीत चलने की क्षमता तो श्री स्वामी जी में कहां थी?

अकस्मात् एक दिन सायंकाल श्री वेदानन्द जी का हृदय गति रुक जाने से दयानन्द वाटिका में ही शरीरान्त हो गया और सभा का मन्त्रिपद फिर श्री सिद्धान्ती जी को सम्भालना पड़ा। बस श्री सिद्धान्ती जी के व्यक्तित्व के निखार का यह काल था। मैंने इन दिनों बहुत समीप से इस महान् व्यक्ति में जो कार्यकुशलता, दृढ़ता, अनुशासनप्रियता, कार्यसम्पादन-क्षमता, स्पष्टवादिता और विनम्रता देखी, वह अब तक किसी दूसरे व्यक्ति में मुझे देखने को नहीं मिली। सभा के मन्त्रिपद के दायित्व, चाहे वह गुरुकुल और कालिज के क्षेत्र से सम्बन्धित था और चाहे प्रचार के क्षेत्र से और चाहे साहित्य निर्माण की दृष्टि से प्रत्येक विभाग को बड़ी योग्यता से सम्भाला और उनमें उन्नति हुई। श्री पं० लेखराम की अमर कृति कुल्लियात आर्य मुसाफिर का हिन्दी अनुवाद भी सिद्धान्ती जी के समय का आर्यजगत् को अमूल्य उपहार है। श्री सिद्धान्ती जी की दृढ़ता देखी तब जब कि जालन्धर में सभा कार्यालय पर दूसरे पक्ष ने अधिकार करने का यत्न किया।

श्री सिद्धान्ती जी अकेले जालन्धर कार्यालय पर जा धमके। कार्यालय में उनके लिए न निवास की उचित व्यवस्था थी और न खान पान की। सभा कार्यालय में बस एक युवक केदारसिंह था जो जैसे तैसे उदरपूर्ति की सामग्री जुटा देता था। किन्तु श्री सिद्धान्ती जी थे कि जिन पर इन प्रतिकूल परिस्थितियों का रंचमात्र भी प्रभाव नहीं था। दो एक बार जालन्धर कार्यालय में मुझे उस समय भी जाने का अवसर मिला और मैंने श्री सिद्धान्ती जी को प्रसन्न और अविचल देखा। "मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दु:खन्न च सुखम्" भर्तृहरि के ये शब्द सर्वथा उनपर घटते देखे।

अनुशासन-प्रियता का भी एक उदाहरण मुझे स्मरण है। जालन्धर सभा कार्यालय में वेद प्र० अधिष्ठाता श्री पं० शान्तिप्रकाश जी थे और हरयाणा में वे० प्र० अधिष्ठाता श्री रामस्वरूप शान्त थे। किसी व्यवस्था के प्रश्न पर श्री शान्त जी ने श्री पं० शान्तिप्रकाश जी को कुछ कठोर शब्द लिख दिये। श्री पं० शान्तिप्रकाश जी ने यह शिकायत सभा मन्त्री श्री सिद्धान्ती जी को लिखी। यद्यपि यह मेरी निजी जानकारी है कि श्री सिद्धान्ती जी श्री शान्त जी का बहुत आदर करते थे। किन्तु इस अवसर पर वे डट गये और श्री शान्त जी से खेद [illegible]। स्पष्ट-वादिता की कमाल की है। जो बात [illegible] तो साफ-साफ और फिर चाहे कितनी भी हानि क्यों न हो उसे पूरी निष्ठा से निभाएंगे। ऊपर से रूखे दिख [illegible] इस महानुभाव का हृदय इतना कोमल और स्नेहार्द्र है कि [illegible] कोई उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता। इस सम्बन्ध में [illegible] सुनाई।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

ओ३म्

निमन्त्रण-पत्र

बाल्मीकि रामायण गोष्ठी

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक दिनांक 22 अक्तूबर, 1985

आर्यजगत् के विख्यात विद्वान् तथा नेता स्वर्गीय श्री पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती पूर्व लोक सभा सदस्य की 85वीं जयन्ती के अवसर पर (विजय दशमी) 22 अक्तूबर, 1985को प्रातः 8 से 1 बजे तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (विद्या सभा) के तत्त्वावधान में तथा हरयाणा साहित्य अकादमी के आर्थिक सहायता अनुदान के सहयोग से बाल्मीकि रामायण गोष्ठी का आयोजन किया गया है, जिसमे अनेक विद्वान् पधार रहे हैं।

आप से प्रार्थना है कि इस शुभ अवसर पर अपने साथियों सहित समय पर पधारकर गोष्ठी की शोभा बढ़ावे तथा स्वर्गीय सिद्धान्ती जी को अपनी श्रद्धांजलि भेंट करें।

निवेदक :

प्रो० सत्यवीर शास्त्री
मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

डा० यज्ञवीर
संयोजक, बाल्मीकि रामायण गोष्ठी

(पृष्ठ १ से आगे)

'ओ३म्' को अपना चुनाव चिन्ह नहीं बनाया। क्या यह घटना सिद्धान्ती जी की सिद्धान्त-प्रियता और ऋषि दयानन्द के प्रति अटूट आस्था तो प्रतिभाषित नहीं करती ?

हरयाणा जागृति के कर्णधार

हरयाणा के सार्वजनिक जीवन पर आर्यसमाज का अमिट प्रभाव है। इस प्रदेश का कोई ऐसा नेता किसी भी क्षेत्र का—नहीं है जो प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से आर्यसमाज से सम्बद्ध व प्रभावित हो। हरयाणा प्रदेश में जितने गुरुकुल हैं, उतने अन्य किसी प्रदेश में नहीं। इसका अधिकांश श्रेय पं० जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती जैसे महापुरषो को ही है। आपका जीवन— निजी व सार्वजनिक—सर्वथा निश्छल, निष्कपट और निष्कलंक सदा रहा और अब भी ऐसा ही है। आपका रहन-सहन, आहार-व्यवहार, भोजन पोशाक इत्यादि सर्वथा अपरिग्रहपूर्ण और सादगी-सरलता के मूर्तरूप हैं। सिद्धान्ती जी स्पष्टवक्ता और मित-भाषी हैं। निष्पक्ष रूप से आप अपने सुपरिचितों के सम्मुख भी कटु सत्य कह सकते हैं और सुन सकते हैं। आर्थिक मामलों में तो आपकी शुचिता अद्वितीय है। आर्यसमाज का यह गौरव है कि उसे ऐसे नरपुंगव का नेतृत्व उपलब्ध है।

मैं सिद्धान्ती जी का अभिनन्दन करता हुआ मंगलमय भगवान् से उनके दीर्घ जीवन की कामना करता हूं।

(पृष्ठ ७ से आगे)

सभाओं के गत संघर्ष मे सम्बन्धित अधिकारियों के पारस्परिक सम्बन्ध कड़वे और तीखे हो गये थे। किन्तु श्री सिद्धान्ती जी के मन में श्री सोमनाथ मर्वाह के लिए उतना खिचाव नहीं था। मेरे मित्र ने श्री सिद्धान्तीजी से प्रश्न किया कि सारे सभा के विवाद को कानूनी संरक्षण तो श्री मर्वाह से मिलता है फिर भी आपके मन मे उनके प्रति ... क्यों नही है ? श्री सिद्धान्ती जी ने उत्तर दिया कि श्री मर्वाह ... शिवकुमार शास्त्री के मित्र है इसलिए मैं उनका विशेष आदर करता हूं।

मैंने जब ये बात सुनी तो मैं इस सरलता पर मुग्ध हो गया।

कितने गुनी ये लोग हैं जो मिलके एक बार।
आंखों में जज्ब होगये दिल में समा गये॥

श्री सिद्धान्ती जी पर बहुत लिखा जा सकता है। उनका व्यक्तित्व अद्भुत है। एक सैनिक इतना निष्ठावान् आर्य बने कि फौज छोड़कर शास्त्री पास करके और फिर अपने सारे जीवन को वैदिक धर्म के ही अर्पण करदे। यह एक असाधारण बात है।

मैं इस अभिनन्दन के समय उनके स्वास्थ्य और दीर्घायुष्य के लिए प्रभु से प्रार्थना करता हूं। ऐसे आचारवान् उदार-चेता महानुभाव हमारे लिए प्रकाशस्तम्भ हैं जो उत्कृष्ट मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

३१ के० एम० मुंशीलेन, नई दिल्ली

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि नं० 23807/73 राज० न० P/RTK 4

सृष्टि संवत् १,९६,०८५३,०८५



सर्वहितकारी

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री   सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १२ अङ्क ४६   ७ नवम्बर १९८५   वार्षिक शुल्क १५)   विदेश में ५ पौंड   एक प्रति ३० पैसे

ऋषि नि[illegible] अंक- 'तमसो मा ज्योतिर्गमय'



वसुधा का कण-कण प्रमुदित हो,
ज्ञान तथा विज्ञान उदित हो,
बने व्यवस्था ऐसी भू पर
जिसमें जन कल्याण निहित हो,
क्षत-विक्षत हो महिमण्डल पर
विस्तृत जो अन्याय-अनय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय॥

प्रेम-दया की ज्योति जगे
द्वेष ईर्ष्या दूर भगे,
हिंसा का हो सर्वनाश अब
मानव, मानव को न ठगे,
तिमिर नष्ट हो भूमण्डल का,
मानव मन हो ज्योतिर्मय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय॥

सुख समृद्धि सफलता छाए,
कण-कण में समरसता भाए,
युग का बने प्रवर्तन ऐसा—
जन—जन में नवजीवन आए,
फैले आर्ष विचार धरा पर—
गूंज उठे संगीत मधुरतम।
तमसो मा ज्योतिर्गमय॥

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

ऋषि की स्मृति में—

सुनना पथिक जरा गाथा इस दीपक के प्रकाश की।
इसमें निहित एक भव्य कहानी भारत के इतिहास की॥

कोई साधारण जलन नहीं है इस दीये की बाती में,
किसी याद की कसक छुपी है इस मिट्टी की छाती मे।
उसकी क्रान्ति अंकित है इस लौ जगमगाती में,
जो मिटकर जीवन फूंक गया था सोई आर्य—जाति मे।
प्रखर ज्योति जलाई जिसने सत्यार्थप्रकाश की॥१॥

कांटों की तीखी नोकों पर भी आगे बढ़ता चला गया,
बलिहारी उसके भुजबल की पाखण्ड गिरि को हिला गया।
फूल गवाही देते हैं वह सूखी बगिया खिला गया,
सदियो से फैले ढोंगवाद को इक झटके में मिटा गया।
अपनी ब्रह्मचर्य शक्ति से गया दिशा पलट इतिहास की॥२॥

वह स्वदेशी का अग्रदूत अंग्रेज को एक चुनौती था,
सदियों के बाद जो मिलती है वह ऐसी एक मनौति था।
ज्योति लेकर आया था और खुद भी अनुपम ज्योती था,
माला की जिससे शान बढे ऋषि ऐसा दुर्लभ मोती था।
कहा मिसाल मिलेगी उसके नि:स्वार्थ संन्यास की॥३॥

आर्यसमाज सातरोड़ कलां (हिसार) का द्वितीय वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक 12, 13, 14 अक्तूबर 1985 को आर्यसमाज सातरोड़ कलां का द्वितीय वार्षिकोत्सव बड़े हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया जिसमें स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, आचार्य वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय, ब्र० चेतनदेव जी, श्री भरतलाल शास्त्री आदि ने अपने विचार रखे। स्वामी ओमानन्द जी ने विशेष रूप से शराब न पीने पर बल दिया। इतिहास के उदहारण दे दे कर लोगों को बताया की शराब से कितने खानदान व रजवाडे नष्ट होगये। अगर तुम भी नही चेते तो तुम भी बरबाद हो जाओगे। अत. शराब व मांस से स्वय बचो तथा अपनी सन्तान को बचाओ।

पं० ईश्वरसिह जी तूफान व प० चन्द्रभानु के शिक्षाप्रद भजन हुए। श्री अतरसिह आर्य क्रान्तिकारी ने इस सारे कार्यक्रम का विधिवत् संयोजन किया। बहन करुणा शास्त्री एवं श्री दलबीरसिह का इस उत्सव के कार्य मे सहरानीय योगदान रहा जिन्होंने बड़ी श्रद्धा से विद्वानो की सेवा की। इस उत्सव का गाव के नवयुवक बच्चो एव महिलाओं पर विशेष प्रभाव रहा।

मन्त्री आर्यसमाज सातरोड़ कलां

महर्षि दयानन्द का विषपान से ही बलिदान

(ले० श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती, आचार्य गुरुकुल झज्जर)

महर्षि दयानन्द के जीवनकाल में ही उनके भक्तों तथा विरोधियों की पर्याप्त बड़ी संख्या हो गयी थी। सच्चे वैदिक धर्म के पारखी और जिज्ञासु तो उनके उपदेश से सहज में उनके श्रद्धालु भक्त व शिष्य बन जाते थे। जैसे एक रिवाड़ी के राव राजा युधिष्ठिर पाखण्डी स्वार्थी ब्राह्मणों के बहकाने से अपने महल से हथियार बांधकर अपने घोड़े पर यह निश्चय करके सवार हुये थे कि हमारे देवी देवताओं और गंगा-यमुना आदि पवित्र नदियों का तथा तीर्थों का खण्डन वा निन्दा स्वामी दयानन्द ने आज अपने व्याख्यानों में की तो मैं अपनी तलवार से उनका सिर काट दूंगा। व्याख्यान के स्थान पर जब राव राजा युधिष्ठिर पहुंचे उस समय स्वामी दयानन्द का व्याख्यान गोरक्षा पर हो रहा था। अहंकार के वशीभूत अपने घोड़े पर सवार राव राजा युधिष्ठिर दूर से ही उनका व्याख्यान सुनने लगा। जब उसने ६ फुट ९ इंच लम्बे स्वामी दयानन्द की दिव्य मूर्ति के दर्शन किये और स्वामी जी का गोरक्षा पर युक्ति-युक्त प्रभावशाली व्याख्यान सुना तो उसका वज्र हृदय पिघलने लगा और उसमें श्रद्धा के अंकुर अंकुरित होने लगे। वह घोड़े से नीचे उतर कर महर्षि के उपदेशामृत का पान करने लगा। आया था प्राणघातक शत्रु बनकर किन्तु प्रभावित होकर महर्षि का भक्त व शिष्य बन गया। फलस्वरूप अपने साथियों सहित महर्षि दयानन्द के पवित्र कर-कमलों से यज्ञोपवीत धारण करके शिष्य बनने की दीक्षा ली और सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द की आज्ञानुसार रिवाड़ी में प्रथम गोशाला की स्थापना की।

महर्षि दयानन्द सत्य और धर्म के सच्चे पुजारी थे। वे प्राचीन सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार व उद्धार करने के लिए आये थे। कितने निर्भीक सत्यधर्म के प्रचारक और प्रसारक थे। सत्यार्थप्रकाश में लिखे उनके वचनामृत प्रमाण हैं "मनुष्य उसी को कहना कि मनन-शील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख दुःख और हानि लाभ को समझे, अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं, किन्तु, अपने सवसामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वह महाअनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हो, उनकी रक्षा उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ महाबलवान् और गुणवान् भी हो तथापि उनका नाश, अवनति, अप्रियाचरण सदा किया करे। अर्थात् जहाँ तक हो सके वहाँ तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही चले जावे परन्तु इस मनुष्यपन रूप धम से पृथक् कभी न होवे।" इस दयानन्द वचनामृत को पढ़कर प्रत्येक विचारशील व्यक्ति सहसा कह उठेगा कि इस पांच हजार वर्ष के समय में अर्थात् महर्षि व्यास के पीछे दयानन्द के समान कौन आचाय सच्चे वैदिक धर्म अर्थात् वेद आर्षज्ञान, वैदिक सिद्धान्तों का प्रचारक हुआ है। क्या दयानन्द के समान दूसरा वेदसर्वस्व वा वेदप्राण मनुष्य दिखाया जा सकता है?

कोई माने या न माने वर्त्तमान युग में एकमात्र वेदप्राण पुरुष और आर्षज्ञान का अद्वितीय प्रसारक दयानन्द ही हुआ है। उसने इस पवित्र कार्य के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। उनका यह दृढ़ निश्चय था कि "यथा राजा तथा प्रजा" अर्थात् जैसा राजा होता है वैसी ही उसकी प्रजा होती है। यह विचार कर राजाओं के सुधार के लिए उन्होंने राजस्थान की ओर अपना मुख किया था। उनकी धारणा थी कि उदयपुर और जोधपुर आदि प्रदेशों के राजा उनके उपदेश से प्रभावित होकर बदल गये तो उनके सुधरने से वैदिक धर्म के प्रचार का कार्य सरलता से शीघ्र हो जायेगा। वे दुःखी होकर अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं "ऐसे शिरोमणि देश को महाभारत के युद्ध ने ऐसा धक्का दिया कि अब तक भी यह अपनी पूर्व दशा में नहीं आया। क्योंकि जब भाई को भाई मारने लगे तो नाश होने में क्या सन्देह है। जब बड़े-बड़े विद्वान राजा-महाराजा, ऋषि महर्षि लोग महाभारत युद्ध में बहुत से मारे गये और बहुत से मर गये तब विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार नष्ट हो चला। जो बलवान् हुआ वह देश को दबाकर राजा बन बैठा। वैसे ही सर्व आर्यावर्त देश में खण्डमण्ड राज्य हो गया। पुनः द्वीप द्वीपान्तर के राज्य की व्यवस्था कौन करे" यही विचार करके बचे-खुचे देशी राजाओं के सुधार के लिए जयपुर, शाहपुरा, उदयपुर, जोधपुर आदि राज्यों में प्रचारार्थ गये।

उस समय ये सभी राज्य अंग्रेजों के अधीन तो थे ही। प्रायः सभी राजे महाराजे बुरी तरह भोग विलास में फंसे हुए थे। जोधपुर राज्य को ही ले लीजिए। उस समय के महाराजा यशवन्तसिंह के भाई अपने स्वलिखित जीवन चरित्र में लिखते हैं—मेरे आने से पहले जोधपुर रियासत पर साठ लाख रुपया कर्जा था इसमें से बारह लाख रुपया सूद और काट का था। तीस लाख रुपया ब्रिटिश सरकार का था। इस प्रकार जोधपुर राज्य कर्जे के नीचे दबा हुआ था। जोधपुर राज्य अजमेर की मशहूर फर्म सेठ सुमेरमल (उमेदमल) से दरबार [illegible] किया जाता था। उस पर एक प्रतिशत मासिक सूद हो [illegible] इस [illegible] कर्जे का कारण राजाओं का मूर्खतापूर्ण व्यय ही [illegible]

सर प्रतापसिंह अपनी जीवनी में लिखते हैं कि उनकी दो बहिन इन्द्रकंवर बाई जी और केशवकंवर बाई जी का विवाह जयपुर के महाराजा रामसिंह जी के साथ हुआ। इस अवसर पर जयपुर से बहुत धूमधाम के साथ बारात आई। बीस हजार आदमी इस बारात के साथ थे। राजा रामसिंह जी की सवारी पांच सौ सवारों के साथ आगे चली आ रही थी। वे लिखते हैं रात को नाच रंग, शराब भांग के दौर शुरु हुए। इस बारात को जब एक मास होने को आया तो उनके दीवान पं० शिवदीन जी ने प्रार्थना की कि अब अवकाश लेना चाहिए। बीस हजार आदमी हैं उनके खाने पीने पर बहुत व्यय हो रहा है जोधपुर दरबार की ओर से तो कोई कमी नहीं किन्तु हमें स्वय विचार करना चाहिए बीस हजार मनुष्यों के अतिरिक्त हजारों पशु अर्थात् हाथी, घोड़े ऊँट, बैल आदि भी हैं उनके चारे और खुराक का प्रबन्ध भी जोधपुर को ही करना पड़ता है. जयपुर के महाराजा रामसिंह ने जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह जी से जब अवकाश चाहा तो उन्होंने हंसकर यह उत्तर दिया कि आना आपके हाथ में था जाना हमारे हाथ में है। पं० शिवदीन के बहुत अनुरोध पर यह निर्णय हुआ कि महाराजा रामसिंह दो हजार आदमियों के साथ अभी कुछ दिन और ठहरें। उधर जयपुर से बार-बार सन्देश आते थे कि रियासत के काम में बाधा हो रही है आप जल्दी पधारें। इस तरह राजे महाराजे धन का बुरी तरह अपव्यय करते थे। अपनी प्रजा के सुख दुःख का उन्हें कोई ध्यान नहीं था।

सर प्रतापसिंह ने सुधार के कार्य किए। वे राजपूतों के विषय में दुःख से कहा करते थे कि उन्हें शराब और वेश्यागमन ने नष्ट कर दिया है। यही दशा मुगलों की थी और यही अवस्था राजपूतों की हो रही है। सर प्रतापसिंह जी स्वामी दयानन्द की शिक्षा से प्रभावित भी हुए। उनके पांच विवाह हुए थे। इसके अतिरिक्त तीन स्त्रियां पास रखते थे। यह शिकार के बड़े शौकीन थे और मांसाहारी थे। ऐसी ही अवस्था इनके बड़े भाई जोधपुर के महाराजा जशवन्तसिंह की थी। इनकी भी बहुत सी रानियां, रखैल और वेश्यायें थीं जिनमें से वेश्या नन्ही भक्तन के षड्यन्त्र से महर्षि दयानन्द को विष दिया गया। कुछ स्वार्थी लोग यह सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहे हैं कि महर्षि दयानन्द को जोधपुर में विष नहीं दिया गया, वह रोगी होकर स्वर्ग सिधारे। यह एक योजनाबद्ध कार्य है। जोधपुर का राजघराना भी इसमें मुख्य रूप से भाग ले रहा है। उस समय जोधपुर राज्य के शासक स्वयं भी अपनी लापरवाही के कारण ऋषि की मृत्यु के लिए दोषी थे। अतः उस समय के लोगों ने भी और इस समय का राज परिवार भी इस कलंक से बचने के लिए प्रत्येक सम्भव ढंग से यत्न कर रहा है।

इस समय "सर प्रतापसिंह और उनकी देन" नाम की एक पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसके लेखक विक्रमसिंह एम. ए हैं जो राजघराने के एक स्कूल चोपासनो जोधपुर में अध्यापक हैं। इस पुस्तक में एक अध्याय इसी विषय पर दिया गया कि स्वामी दयानन्द को जोधपुर में विष नहीं दिया गया। क्योंकि लेखक का जीवन-निर्वाह जोधपुर के राजघराने की सहायता या वेतन से ही होता है। वह तो राजघराने को महर्षि दयानन्द की मृत्यु से जो कलंक लगा है उसे धोने का यत्न करता है। ऐसे ही कई लेखक इस योजना में सम्मिलित हैं या किसी स्वार्थ, ईर्ष्या या द्वेष के कारण अन्य भी कई लेखक इस बात पर उतारू हैं कि स्वामी दयानन्द का देहान्त विष देने से नहीं हुआ किन्तु निमोनिया वा दस्तों के लगने से हुआ। ये सब इनकी कपोलकल्पना हैं। जितने भी जीवन चरित्र आरम्भ में तथा आज तक लिखे गए उन सबसे यही सिद्ध होता है कि महाराजा जसवन्तसिंह की रखैल नन्ही भक्तन ने रुष्ट होकर उनके रसोइये के द्वारा दूध में भयंकर विष दिलवाया। जोधपुर निवासी श्री भैरोंसिंह ने अपना सारा ही जीवन इसी शोध कार्य में लगाया है। उनके पास इसके बहुत अधिक प्रमाण हैं। वे तो स्पष्ट और छाती ठोककर कहते हैं कि नन्ही भक्तन और रसोइया ही इस पाप के दोषी नहीं थे किन्तु अंग्रेजी सरकार और जोधपुर का राजघराना भी इस षड्यन्त्र में सम्मिलित था।

मैं अजमेर में जब महर्षि की अर्द्ध निर्वाण शताब्दी हुई उसमें गया था। उस समय तक बहुत से ऐसे व्यक्ति जीवित थे जिन्होंने महर्षि दयानन्द के दर्शन किये थे। उस समय मैंने भी उन सभी के दर्शन किये। उनमें से कुछ व्यक्ति ऐसे थे जिन्होने महर्षि की अन्तिम दिनों में रुग्ण अवस्था में श्रद्धापूर्वक सेवा की थी। उनके मुख से जिससे भी मैंने पूछ-ताछ की स्पष्ट यही शब्द निकले कि महर्षि दयानन्द को भयंकर विष दिया गया था। जोधपुर के राजघराने के एक आर्य सज्जन अजमेर में रहते हैं। मैं उनसे श्री दत्तात्रेय बाब्ले के साथ मिला। उनके पास महर्षि दयानन्द का एक हाथ का बनाया हुआ चित्र था। मैं उस चित्र को उनके पास से लाया था। मैंने उनसे भी यही प्रश्न पूछा था—क्या महर्षि दयानन्द को जोधपुर में विष नहीं दिया गया तो उन्होंने साफ कहा कि हम जोधपुर राजघराने के लोग महर्षि दयानन्द के मृत्यु के कलक से बचने के लिए झूठ बोलते हैं। यथार्थ में इनको विष दिया गया था और विष से ही उनकी मृत्यु हुई थी। सभी जीवन चरित्र व इतिहास लेखकों का एक ही मत है कि महर्षि दयानन्द का देहावसान कालकूट विष देने के कारण ही हुआ।

हरयाणा के भजनोपदेशक महर्षि दयानन्द का जीवन गाते हुए यह गाते थे कि जब जगन्नाथ विष को रगड़ रहा था तो उसके हाथ कांप रहे थे। वे पंक्तियां जो गाई जाती थीं इस प्रकार हैं—"रगडूं ना रगड़ा जाय हाथ मेरे कांप रहे" जिस डाक्टर अलीमर्दान खां ने जोधपुर के राजघराने की व्यवस्था से स्वामी दयानन्द की चिकित्सा की थी उस नीच ने औषध के स्थान पर स्वामी दयानन्द को विष ही दिया जिससे प्रतिदिन तीस से भी अधिक दस्त आते रहे।

रोग बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की। महर्षि दयानन्द की अवस्था जोधपुर में ही सर्वथा बिगड़ गई थी और वे मरणासन्न हो गये थे। शरीर की सब शक्ति समाप्त हो गई थी। अलीमर्दान खां की चिकित्सा से विकराल काल के गाल में ऋषिवर चले गये थे। इस बार जोधपुर में मैंने पता लगाया कि यह व्यक्ति कहां का था। श्री भैरोंसिंह जी ने भी बताया कि उत्तर प्रदेश का था। मैंने उस समय भैरोंसिंह जी को एक सच्ची घटना जो रहस्यपूर्ण है इस डाक्टर अलीमर्दान खां के विषय में सुनाई। यह डाक्टर अलीमर्दान खां जो जोधपुर से उत्तर प्रदेश में चला गया। यह हस्तिनापुर के पास रहता था और यह पागल हो गया था। उसी गांव के पास आर्यसमाज के सन्यासी स्वामी शान्तानन्द जी रहते थे। उन्होंने इस डाक्टर अलीमर्दान खां को पागल अवस्था में अनेक बार देखा। वह बार-बार रोता था और उसके मुख से यही शब्द निकलते थे कि मैंने भारी पाप किया। महान् अपराध किया कि एक ऋषि को, एक महात्मा स्वामी दयानन्द को विष दिया। अनेक वर्ष तक ऐसी ही अवस्था में दु:खी होकर वह मर गया।

डा० अलीमर्दान खां उत्तर प्रदेश का ही था और वह भी महर्षि दयानन्द को विष देने के षड्यन्त्र में सम्मिलित था। महर्षि दयानन्द को योजनाबद्ध षड्यन्त्र करके जोधपुर में भयंकर विष दिया गया। जिसके कारण उनका अमर बलिदान हुआ। हो सकता है आगे चलकर यह भी सिद्ध हो जाए कि नन्ही भक्तन व रसोइया के अतिरिक्त जोधपुर का राजघराना व अंग्रेज सरकार भी विष देने में सम्मिलित थे।

इस बार जोधपुर में कुछ व्यक्ति ऐसे मिले जिन्होंने नन्ही भक्तन के विषय में ऐसा बताया—रामलियावास ५० घर का एक छोटा सा ग्राम जिला नागौर में है। इसकी ग्राम पंचायत करड़ाया है। इस नन्ही भक्तन का जन्म तथा ननिहाल इसी ग्राम का था। यह नन्ही भक्तन दूर के कुएं से पानी लेने के लिए आ रही है। जोधपुर के राजा जशवन्तसिंह इसकी सुन्दरता के कारण इसे जोधपुर ले आये। किसी समय इस नन्ही भक्तन ने महाराजा से यह वचन ले लिया था कि मेरे इस ननिहाल के ग्राम में एक अच्छा कुआं और भगवान् कृष्ण का मन्दिर बनवा दो। महाराजा ने इस मांग को पूरा किया। श्री कृष्णजो महाराज का मन्दिर तथा बहुत सुन्दर कुआं वहां पर बनवाया। कुएं का पानी दो सौ फुट गहराई पर निकला किन्तु जल उसका खारा है। उस मन्दिर में पुजारी नन्ही भक्तन के ननिहाल का ही रहता है। उस गांव में यह प्रसिद्ध है कि नन्ही भक्तन ने स्वामी दयानन्द को विष दिलवाया था। इसी के कारण स्वामी दयानन्द की मृत्यु हुई। स्वामी दयानन्द को विष दिलवाकर उस नन्ही भक्तन ने महान् पाप किया था। इसी के कारण कुएं का पानी खारा है। उस ग्राम में धार्मिक व्यक्ति चला जाता है तो उस ग्राम का अन्न व जल ग्रहण नहीं करता ऐसा धार्मिक व्यक्ति ही कहते हैं कि इस पापन भक्तन नन्हो जान ने महानात्मा स्वामी दयानन्द को विष देकर मारा था। इसके कारण इस ग्राम का अन्न व जल ग्रहण नहीं करना चाहिए।

ये सारी बात यही सिद्ध करती है कि महर्षि दयानन्द का बलिदान विष पान से ही हुआ और उनको विष देने के षड्यन्त्र में महाराजा जोधपुर की वेश्या नन्ही भक्तन का पूरा हाथ था। इस नन्ही भक्तन के पास लाखों रुपये की सम्पत्ति थी। इसके नाम का एक विशाल मन्दिर जोधपुर में भी बना हुआ है। इसके प्रभाव से जोधपुर के राजा भी दबे हुए थे। अन्य सभी राज्याधिकारी इससे डरते थे। इसलिए यह भेद इन्हीं कारणों से बहुत दिनों तक जोधपुर में छिपा रहा किन्तु आज जोधपुर के जाने माने लोग सभी यह जानते हैं कि महर्षि दयानन्द की मृत्यु का कारण विषपान ही था और रसोइये के द्वारा विष दिलाने में नन्ही भक्तन का पूरा हाथ था तथा इस षड्यन्त्र में डा० अलीमर्दान खां भी सम्मिलित था। श्री प्रो० राजेन्द्र जी जिज्ञासु ने एक छोटी पुस्तक "महर्षि का विषपान अमर बलिदान" लिखी थी। पाठक अधिक जानना चाहें तो उसे अवश्य पढ़ें।

उपरोक्त सच्चाई का अनुमोदन अथवा पुष्टि शाहपुरा के कुछ आर्य सज्जन भी करते हैं। जगन्नाथ रसोइया को शाहपुर के राजा नाहर-सिंह ने महर्षि दयानन्द का भोजन बनाने के लिए भेजा। क्योंकि जो रसोइया उदयपुर से उनके साथ आया था, वह वृद्ध होने से सेवा करने में असमर्थ था इसलिए उसके स्थान पर राजा नाहरसिंह ने अपना पाचक जगन्नाथ स्वामी जी की सेवा में साथ भेज दिया। जगन्नाथ के कई नाम थे। एक नाम धूलिया वा धूरिया भी था। जन्म का ब्राह्मण होने से इसे धौड़ मिश्र भी कहते थे। अधिकतर लेखकों ने यही लिखा है कि महर्षि दयानन्द को विष देने वाला जगन्नाथ रसोइया था। किसी-किसी लेखक ने धौड़ मिश्र भी लिखा है। अब इससे यही सिद्ध होता है कि जगन्नाथ और धौड़ मिश्र एक ही व्यक्ति के नाम थे और वह शाहपुरा का रहने वाला था। इसके प्राण बचाने के लिए महर्षि दयानन्द ने इसको रुपयों की थैली देकर भगा दिया था। यह जोधपुर से भागकर कहां-कहा गया भली प्रकार से विदित नहीं। कुछ लोग कहते हैं कि नेपाल भाग गया था। किन्तु शाहपुरा के आर्य सज्जन यही बताते हैं कि अपने अन्तिम जीवन में बहुत वर्ष तक शाहपुरा में ही रहता रहा और उसके बाल बच्चे भी वहीं रहते रहे। शाहपुरा के राजा नाहरसिंह ने उसको पूरा संरक्षण दे रखा था। शाहपुरा राज्य से उसे पेंशन मिलती थी।

(शेष पृष्ठ १० पर)

महर्षि दयानन्द विष-प्रकरणम्

लेखक.—सोहनलाल शारदा शाहपुरा जिला भीलवाड़ा (राजस्थान)

—❀—

पूरी एक शताब्दी बीत जाने के बाद श्री ओंकारसिंह ने राजस्थान पत्रिका के ७ फरवरी १९८४ के अङ्क पृष्ठ संख्या ५ पर एक लेख में यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि "स्वामी जी को विष दिये जाने की बात अत्यन्त सन्देहास्पद है और विश्वास करने योग्य नही हैं।" इसी वाक्यांश को लेकर श्री भवानीलाल जी भारतीय ने विविध समाचार पत्रों में अपना वक्तव्य प्रकाशित कराया। तथा श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु ने भी सार्वदेशिक के ४ मार्च सन् १९८४ के अङ्क में अपने विचार प्रकट किए।

विचारना यह है कि वस्तुस्थिति क्या है। महर्षि के स्वार्गारोहण के पश्चात् ही सम्भवत: आद्य जीवनी लेखक श्री रावगोपाल हरी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ दयानन्द दिग्विजयार्क मे जो निम्न श्लोकानुसार जेष्ठ शुक्ला प्रतिपदा संवत् १९४४ में पूर्ण होकर प्रकाशित हुआ लिखा है कि:—७ वां मयूख (३ अध्याय)

(युगवेदाङ्कचन्द्रेब्दे ज्येष्ठमासे सिते दले।
एकम् रविवारेऽयम् ग्रन्थो य पूर्णतां गतः।)

मे कि "आश्विन कृष्णा एकादशी गुरुवार के दिन प्रथम कुछ लेष्मा अर्थात् जुकाम श्री महाराज को हुआ। उसके चौदहवें दिन अर्थात् चतुर्दशी की रात्री को धूळ मिश्र पाकाध्यक्ष से जोकि शाहपुरा का रहने वाला था दूध पीकर सोये। रात्रि भर में तीन वमन हुये।"

इसी धूळ मिश्र को आगे चल कर लेखराम, देवेन्द्र बाबू ने धौल मिश्र न मालूम क्यों लिखा। वास्तव में इसका नाम धूळ मिश्र ही है। बोलचाल की भाषा में इधर यह नाम कई व्यक्तियों के हैं। धूळ नाम रखना इधर आम बात है। धौल नहीं। यह व्यक्ति संभवत: सन् २७ या ३० तक जिन्दा रहा। शाहपुरा में ही रहता था। महर्षि के स्वर्गवास के पश्चात् शाहपुरा आगया था। इसी के कथनानुसार महर्षि के अनन्य भक्त उदयपुराधीश के पश्चात् आजीवन परोपकारिणी सभा के (दिसम्बर १८९३ से) अध्यक्ष शाहपुरा नरेश सर नाहरसिंह के० सी० आई० ने ४२ वर्ष बाद मथुरा शताब्दी में अपना वक्तव्य दिया जो निम्न प्रकार से है। स्मरण रहे यह जन्म शताब्दी फरवरी सन् १९२५ को मनाई गई थी। "स्वामी जी अपने लिये रसोई बनाने वाला आदमी मुझ से ले गये थे। स्वामी जी को विष दिया गया था यह बात गलत है। मैं ख्याल भी नही कर सकता कि उनको विष दिया गया था। जो लोग उनके पास रोटी बनाने वाले थे वे अभी तक मेरे यहां नौकरी करते हैं। उनका नाम श्रीकृष्ण व कल्लू है।"

इसी वक्तव्य को लेकर जब आर्यजगत् में समाचारपत्रों में चर्चा चली तो पूज्यपाद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने श्री भगवान्स्वरूप जी न्यायभूषण को इस धूळ मिश्र के बयान लेने की कही। उन्होंने इसके बयान लेकर स्वामी जी की सेवा में भेज दिये। जो "अलंकार" गुरुकुल कांगड़ी स्नातक मण्डल का मुखपत्र के मई १९२५ के अङ्क पृष्ठ ३७६-३७८ पर प्रकाशित हुआ। इस बयान से प्रथम जो आपत्ति श्रद्धेय भवानी लाल जी भारतीय ने उठाई वह यह है कि अब श्रीकृष्ण व कल्लू नाम के रसोइये थे तब यह धौल मिश्र कौन है कि जिसके बयान लिये जा रहे हैं

बात ऐसी है कि जब महर्षि के अत्यन्त श्रद्धालु भक्त राजाधिराज शाहपुरा ने महर्षि का जोधपुर पधारना जाना तो उन्होंने अपना विश्वास पात्र रसोइया इसी धूळा जोशी वास्तविक नाम व जात जिसको मिश्र की पदवी थी, दे दिया। इसी धूळा मिश्र का नाम श्री राव गोपाल हरी ने धूळ के बजाय धूड लिखा सो कभी-कभी वदिक उच्चारण में भी ळ के बजाय ड का उच्चारण करते हैं। जब यह रसोइया श्री महर्षि की सेवा में राजाधिराज ने देना चाहा तो स्वाभाविक ही है कि महर्षि को यह नाम पसन्द ही न था। कहते हैं कि राजाधिराज को कहा गया कि हमारे साथ धूळा अर्थात् मिट्टी देते हो। तो राजाधिराज ने इसका ही नाम बदलकर श्रीकृष्ण कर दिया। लेकिन यह नाम दोनों तक यानि राजाधिराज व महर्षि तक ही सीमित रहा। आम जनता में इसका नाम धूळा जोशी ही विख्यात रहा। इसी ने ही चतुर्दशी को दूध में संखिया दिया था। जैसाकि पीर इमाम अली के पास दवा लाने वाले ने कहा था कि महाराज ने कहा है कि मुझे संखिया दिया गया है। कांच की कल्पना सर्वथा सृष्टि नियम के विरुद्ध है। क्योंकि कांच चाहे कितना ही बारीक क्यों न पीसा जाय दूध में घुल ही नहीं सकता। यह लिखना क्षितीश जी वेदालङ्कार का ११ मार्च १९८४ आर्यजगत् में कि कांच राजस्थान में संखिया को कहना आम बात है हास्यास्पद है। क्योंकि प्रत्येक जीवनी लेखक कांच व संख्या को अलग-अलग ही मानते हैं।

अब विचारना यह है कि राजाधिराज ने जन्म शताब्दी के अवसर पर ऐसा भाषण क्यों दिया जो भ्रमोत्पादक है। इस सम्बन्ध में हमारा विचार यही है कि स्वयं राजाधिराज यद्यपि बुद्धिमान् श्रद्धालु सत्सङ्गी होते हुए भी अक्षरज्ञान से निरे शून्य थे। वे हस्ताक्षर भी करना नहीं जानते थे। अपना हस्ताक्षर लिखकर उसकी छाप बनाकर छोड़ी थी जो उनके मंजूरी के पत्रों पर स्वय लगा देते थे। उस हाथ पर नाहरसींग ऐसा वाक्य है। पत्रों में जो भी विचार प्रकाशित होते यद्यपि सुनाने वाले उन्हें सुनाते लेकिन जीवनी लेखकों ने दयानन्द विषप्रकरण को जीवनचरित्र तक ही सीमित रखा। किसी भी आर्यसमाजी पंडित ने राजाधिराज को यह सुझाव नही दिया कि इस विषय की कानूनी जांच कर इसे सजा दिलाई जाय। वह इसीलिए सम्भवत: नहीं कहा गया था कि महर्षि की विचारधारा महान् थी। वे हमेशा ही अपने जहर देने वाले को यह कहकर छुड़वा देते थे कि मैं ससार को कैद से मुक्त करने आया हूं न कि कैद में डालने को। इसी सिद्धान्त को मानकर किसी ने कुछ भी शिकायत राजाधिराज के पास नहीं की। तब राजाधिराज जिसको कि तत्कालीन रियासतों के सभी अधिकार प्राप्त थे। न्याय का तकाजा यही है कि जब तक कोई दूसरा व्यक्ति उसके खिलाफ कुछ नही कहे तो जो वादी कहता है वही सत्य माना जाता है। इसलिए राजाधिराज ने उपर्युक्त वचन जन्मशताब्दी में कहे।

अत: यह निर्विवाद ही है कि महर्षि को जहर दिया गया। वह जहर अन्य कुछ भी न होकर संखिया ही था। उसका देने वाला धूळा जोशी (मिश्र) शाहपुरा का ही था। लेकिन आगे चलकर चिकित्सक डा० अलीमर्दान खा ने जो केलोमाल भिन्न-भिन्न तरीकों से २६ ग्रेज पहुंचा दिया। यही उनकी मृत्यु का मूल कारण है। अत: अब पूरी शताब्दी बाद इस प्रश्न को पुर्नविचार के लिए प्रस्तुत करना कोई औचित्य नही है। आज देश काल परिस्थिति को देखते हुए हमें नई पीढ़ी को आय बनाने पर हो कुछ करना है। महर्षि ने तो कहा है कि मैंने काम पूरा कर दिया है। सत्यार्थप्रकाश वगेरह सब कुछ जितना लिखना चाहिए लिख दिया है। जोधपुर के ही राजा जवानसिंह के एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि मेरा काम आर्यसमाज ही पूरा करेगा। इसी पर ही मेरा पूर्ण विश्वास है। यही महर्षि का अन्तिम सन्देश है। हमें पूर्णतया त्याग तप बलिदानी भावनाओं से ऋषि कार्य पूरा करना है। इसके लिए प्रत्येक आर्यसमाज मन्दिर में महर्षिकृत ग्रन्थों की पढ़ाई चालू होवेगी तभी सुधार हो सकेगा। अन्यथा कुछ भी नहीं होने वाला। इति

हरयाणा में शराब के ठेकों पर धरने का यह क्रम जारी रहेगा

जब-जब समाज में अज्ञान (पाखण्ड) अन्याय व शोषण का दायरा दिनों दिन बढ़ता है, इसका कारण है कि राष्ट्र के तात्कालीन कर्णधार अचेत अवस्था मे निद्रामग्न हैं। आज देश भ्रष्टाचार, अनाचार, शोषण, बेईमानी, बेइन्साफी शराबखोरी का पदे-पदे शिकार बनता जा रहा है। आज प्रबुद्ध वर्ग को एक तरफ विज्ञान के बढने से अत्यधिक खुशी है वहां दूसरी तरफ आचारहीनता से चहु ओर निराशा ही निराशा दृष्टिगोचर होती है। आज सारा संसार चारित्रिक पतन के कारण पीड़ित है। जहा तक मेरा अपना विचार है मै शराब को ही इसका मूल कारण मानता हू। वैसे जिस प्रकार से एक बिमारी (रोग) के अनेक कारण हो सकते हैं, लेकिन मुख्य कारण एक ही होता है। ठीक यही हालत चरित्र की शराब के सम्बन्ध मे है। जैसा मैंने पूर्व लेख मे कहा है कि शराब की जन्मदात्री व पोषक स्वयं हमारी सरकार है। आय प्रतिनिधि सभा हरयाणा इस विषय मे विशेष योग-दान कर रही है।

अनेक स्थानों के ठेके उठवाने के बाद अब फिरोजपुर बागर (ओचन्दी बार्डर) पर देशी व अंग्रेजी शराब के ठेकों को बन्द करवाने के लिए दि० १ नवम्बर (हरयाणा दिवस) पर धरना प्रात: ८ बजे प्रारम्भ कर दिया गया है। शराब के ठेको की सबसे बडी विशेषता यह है कि वे शिक्षण सस्थाओं, जी० टी० रोड व पनघटों के सिर पर थोपे गये हैं। इतना ही नही बल्कि पंचायत एक्टों को खुले ग्राम सरकार द्वारा होली जलाई जाती है। फिरोजपुर बागर का ठेका भी उनमे से एक है जहां पर विशेष कर लड़कियां, माता बहनें, अक्सर शराबियों का शिकार बनती हैं। सरकार यहा इस बात की दुहाई देती है कि यदि पंचायत वर्ष के प्रारम्भ अर्थात् मार्च, अप्रैल में उठवाने का प्रयत्न करे तो शराब ठेका बन्द हो सकता है। लेकिन ये सब लोगों को गुमराह व बेवकूफ बनाने की योजना है। इसके मैं जीते जागते कई प्रमाण दे सकता हूं। सोहटी व हसनगढ गांव इत्यादि। हमारी विचार प्रणाली यह कहती है कि किसी व्यक्ति को किसी भी अवस्था व समय में यह आभास हो जाता है कि यह सत्य है, यह असत्य है तो वह तुरन्त असत्य को छोड सत्य को धारण कर सकता है। जब यहा (फिरोजपुर बागर) के व्यक्तियो को यह इल्हाम हुआ कि शराब ही हमारी सन्तानो को घुन को तरह खाये जा रही है तो उन्होने एक सिर जुट होकर यह शुभ कदम उठा ही लिया। सरकारी ताकत इस न्याय (सत्याग्रह) को कुचलने का असफल प्रयास भले ही करे। लेकिन सत्य की हमेशा विजय निश्चित है। इस धरने को सफल बनाने हेतु एक "शराब बन्दी सघर्ष समिति जटराणा, फिरोजपुर बांगर (सोनीपत)" का सगठन किया है। जिसमे जटराणा के आठ गाव व नाहरी गाव का विशेष सहयोग मिल रहा है। अभी तक शराब के ठेकेदार अवैध तौर तरीकों से शराब बेच रहे हैं। यह सारा सैकड़ों पुलिस कर्मियो की आखो के सामने सरे आम होता है। इस धरने की सफलता का सुप्रयास भी इससे और आभासित होता है जब इलाके के गावो की स्त्रियो की अपार भीड सुबह ७ बजे से रात ६ बजे तक मेले के रूप मे देखी जा सकती है। इलाके में धरने के विषय मे लोगों की राय है कि यदि सरकार अपनी शक्ति का प्रदर्शन करती है तो पीपली गाव, जो नजदीक में ही है, उसका कांड हो सकता है। स्त्री, पुरुष, नौजवान व बच्चों में उत्साह देखते ही बनता है। "उठा मसाले चल पड़ हैं लोग मेरे गाव के" यह छ. महीने पहले नाहरी मे गाई जाने वाली पक्तिया पुन. फिरोजपुर बांगर मे भाई डा० वीरेन्द्रसिह जी द्वारा साकार हो उठी हैं। नौजवान ग्रामीण सेवा समिति व ग्राम पचायत फिरोजपुर बांगर अब इस शक्ति व योग्यता से एकजुट होकर पिशाचिनी शराब के ठेकों को उखाड़ फैंकने के सुप्रयास कर रहे हैं। आशा ही नही बल्कि पूर्ण विश्वास है कि यह पापों की जड़ शराब शीघ्र ही समाप्ति के कगार पर होगी। अगली बार शीघ्र ही ठेके की समाप्ति पर सघर्ष में भाग लेने वाले स्त्री पुरुषों व नौजवानों के बारे में विस्तार से लिखा जायेगा।

संयोजक:—
ब्र० महेन्द्रसिह शास्त्री
शराब बन्दी सघर्ष समिति जटराणा

मेला कपाल मोचन समिति

मेला कपाल मोचन के प्रबन्ध के लिए नीचे लिखी प्रबन्ध समिति बनाई गई है।

१- श्री मामचन्द जी चबूतरों, पोस्ट चौली, तह० जगाधरी – प्रधान।
२- श्री वीरसिह जी चबूतरों, पोस्ट चौली तह० जगाधरी —मन्त्री।
३- श्री जयसिंह जी मछरौली, पो० खास —उपप्रधान
४- रूवेलसिंह जी, रानीपुर, पो० मुग़लवालो, तह० जगाधरी —उपमन्त्री
५- श्री मास्टर बलवन्तसिह जी, एहड़ वाला, पो० कपाल मोचन —कोषाध्यक्ष
६- श्री मेहरसिह जी, कोटडा खास, पो० खास
७- श्री स्वामी सदानन्द जी, वैदिक साधन आश्रम, यमुनानगर
८- श्री गेन्दाराम जी आर्यसमाज छोटा माडल टाउन, यमुनानगर
९- श्री रामचन्द्र जी मोहड़ी, पो० कपाल मोचन।
१०- प० हरिश्चन्द्र जी भजनोपदेशक

— भरतसिह वानप्रस्थी, वेद प्रचार अधिष्ठाता

अन्तरंग सभा के महत्त्वपूर्ण निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरग सभा की बैठक दिनांक ३ नवम्बर रविवार को प्रात: ११ बजे सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक में सभा प्रधान माननीय प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में सर्वसम्मति से निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण निश्चय किये गये:—

बूचड़खाने पर धरना दिया जायेगा

मेवात मण्डल के नगर फिरोजपुर झिरका (रगाला चौक) में बूचड़खाना बनाये जाने का सभा ने विरोध करते हुए हरयाणा सरकार से अनुरोध किया है कि इस बूचडखाने के निर्माण को तुरन्त बन्द किया जाये। यदि सरकार ने कोई कार्यवाही नही की तो यहां आर्यजनता धरना देगी। हरयाणा की जनता गोकशी को किसी भी मूल्य पर सहन नही करेगी। हरयाणा मे कानून के अनुसार भी गोहत्या बन्द है, परन्तु मेवात क्षेत्र के स्थानीय लोकसभा सदस्य तथा विधायक गोवध करने वाले अपराधियों को सरक्षण तथा प्रोत्साहन देकर कानून का स्वय उल्लघन करते हैं।

इस सम्बन्ध में सभा के प्रधान जी के नेतृत्व मे मेवात मण्डल के आर्यसमाजों का एक शिष्ट मण्डल शीघ्र ही हरयाणा के मुख्यमन्त्री से भेंट करेगा।

सभा ने यह भी निश्चय किया है कि इस सम्बन्ध मे मेवात मण्डल में सर्वखाप पचायत की एक बैठक बुलाकर गोवध करने वालो के विरुद्ध नियम बनाये जावेंगे। इस पंचायत में मेवों को भी आमन्त्रित किया जावेगा।

शराब के ठेके पर धरने का स्वागत

जिला सोनीपत के ग्राम फिरोजपुर बागर के निकट ओचन्दी बार्डर के पास शराब के ठेके को उठवाने के लिए स्थानीय ग्रामीण जनता ने १ नवम्बर से पुरुषों तथा स्त्रियों ने धरना प्रारम्भ कर रखा है। इस धरने की कार्यवाही का सभा ने स्वागत करते हुए जनता को मार्गदर्शन तथा पूरा सहयोग देने का विश्वास दिलाया है। सभा के प्रधान माननीय प्रो० शेरसिंह ९ नवम्बर को प्रात. ११ बजे आर्य कार्य-कर्त्ताओं की बैठक को सम्बोधित करेंगे। धरने का सफल करने के लिए सभा के उपदेशक ब्रह्मचारी महेन्द्र शास्त्री तथा सभा की भजन मण्डली ग्रामों में शराब के सेवन के विरुद्ध प्रचार कार्य कर रही है। खरखोदा मण्डल के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ता भी सहयोग कर रहे हैं।

—सत्यवीर शास्त्री सभा मन्त्री

हरयाणा रक्षा वाहिनी की बैठक के निर्णय

हरयाणा रक्षा वाहिनी की बैठक ३ नवम्बर को दयानन्दमठ, रोहतक में प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में हरयाणा के कोने कोने से सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। बैठक में महत्त्वपूर्ण निर्णय निम्न प्रकार किये गये:—

१. मैथ्यू आयोग को हरयाणा का पक्ष रखने पर प्रो० शेरसिंह की सराहना:—

बैठक में उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को प्रो० शेरसिंह ने चण्डीगढ़ के बदले पंजाब के हिन्दी भाषी क्षेत्रों का निश्चय करने वाले मैथ्यू आयोग के समक्ष हरयाणा रक्षा वाहिनी की ओर से दिये गये ज्ञापन तथा उसके पश्चात् अकालियों एवं पंजाब सरकार द्वारा उसके उत्तर का प्रत्युत्तर देने पर प्रकाश डाला और बताया कि पंजाब के पूर्व मुख्यमन्त्री सरदार प्रतापसिंह कैरो के समय जो रीजनल फार्मूला बनाया था, उसमें अबोहर फाजिल्का तथा १०५ ग्रामों को हिन्दी भाषी क्षेत्र माना गया था। इसी प्रकार शाह आयोग ने चण्डीगढ़ को हिन्दी भाषी मानकर हरयाणा में मिलाने का निर्णय दिया था, परन्तु अकालियों के सन्तों ने आत्मदाह करने की धमकी दी। स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सन्तों की जान बचाने के लिए चण्डीगढ़ पंजाब को देने तथा उसके बदले अबोहर फाजिल्का के क्षेत्र हरयाणा को देने का एवार्ड दिया। उस समय हरयाणा की जनता ने इसका विरोध किया जिसमें पुलिस की गोली से ७ नवयुवक मारे गये जबकि पंजाब सरकार ने दीपमाला जलाकर इसका स्वागत किया था, परन्तु अब वही अकाली सरकार चण्डीगढ़ तथा अबोहर-फाजिल्का को हरयाणा मे देने का विरोध कर रही है।

प्रो० शेरसिंह ने पंजाब सरकार द्वारा १९८१ में कराई गई जनगणना को अनुचित बताते हुए कहा कि पंजाब के सरकारी कर्मचारियों ने अपनी मनमानी से हिन्दी भाषी जनता को पंजाबी भाषी अंकित किया था। अतः हरयाणा को १९८१ की जनगणना स्वीकार्य नहीं है। इन सभी तथ्यों का उल्लेख हरयाणा रक्षा वाहिनी की ओर से ज्ञापन तथा प्रत्युत्तर में किया गया है। आयोग के समक्ष प्रो० साहब द्वारा दिये गए तर्कपूर्ण तथ्य प्रस्तुत करने पर उपस्थित कार्यकर्त्ताओं ने प्रो० शेरसिंह की सराहना की।

२. पंजाब सरकार के आतंकवाद की निन्दा:—

अबोहर के वयोवृद्ध नेता मा० तेगराम जी पूर्व विधायक के पत्र का उल्लेख करते हुए प्रो० शेरसिंह ने कार्यकर्त्ताओं को बताया कि अबोहर-फाजिल्का के जिन सरपंचों तथा पंचों ने मैथ्यू आयोग के समक्ष हरयाणा में मिलने के लिए अपने शपथ-पत्र प्रस्तुत किए हैं, उनके विरुद्ध पंजाब की अकाली सरकार दमन चक्र चलाकर सरकारी अधिकारियों द्वारा उनसे उनकी इच्छा के विरुद्ध उल्टे शपथ-पत्र लिखवा रही है और दबाव डालते हुए कोरे कागजों पर उनके हस्ताक्षर करवा रही है। इस प्रकार ९० प्रतिशत सरपंच तथा पंच सरकार के आतंकवाद से भयभीत होकर हरयाणा तथा राजस्थान में जा छिपे हैं।

हरयाणा रक्षा वाहिनी भारत सरकार से अनुरोध करती है कि अपनी घोषणाओं के अनुसार अबोहर-फाजिल्का की हिन्दी भाषी जनता को पंजाब सरकार के आतंकवाद से तुरन्त बचाया जावे।

३- "राजीव-लोंगवाल समझौते के अनुसार चण्डीगढ़ के बदले जब तक हरयाणा को अबोहर-फाजिल्का आदि के हिन्दी भाषी क्षेत्र नहीं स्थानान्तरित हो जाते तब तक हरयाणा सरकार को चण्डीगढ़ राजधानी को खाली नहीं करना चाहिए और हरयाणा के लिए नई राजधानी का स्थान निश्चय करने की योजना को स्थगित कर देना चाहिए।

४- अकालियों के सहयोग से पंजाब के किसान सतलुज-यमुना लिंक नहर की खुदाई को बन्द करने के लिए जो धरना दे रहे हैं, उनकी निन्दा करते हुए हरयाणा रक्षा वाहिनी के कार्यकर्त्ताओं में बड़ा रोष उत्पन्न हुआ और चेतावनी दी कि यदि यह धरना जारी रहा तो हरयाणा की जनता में इसकी तीव्र प्रतिक्रिया होगी जिसके गम्भीर परिणाम निकल सकते हैं। जिसकी सारी जिम्मेदारी अकाली सरकार की होगी।

५- हरयाणा रक्षा वाहिनी उन विधायकों का धन्यवाद करती है जिन्होंने हरयाणा के साथ अन्याय होने पर त्यागपत्र दिए हैं। जिन्होंने अपने पूर्व निश्चय के अनुसार त्यागपत्र नहीं दिये हैं, उनसे पुन: अनुरोध करते हुए हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए त्यागपत्र देने की मांग की है। यदि वे ऐसा न करके हरयाणा के साथ गद्दारी करेंगे तो उन्हें आनेवाली पीढ़ी कभी क्षमा नहीं करेगी।

अतः हरयाणा के सभी दलों से मांग है कि वे दलगत भावना से ऊपर उठकर हरयाणा मंच के नाम पर संगठित हो जावें और सामूहिक रूप में हरयाणा के हितों की रक्षा करें। हरयाणा रक्षा वाहिनी हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए सांझे मंच में कन्धे से कन्धा मिलाकर पूर्ण सहयोग देगी।

रघुवीरसिंह
प्रचार मन्त्री हरयाणा रक्षा वाहिनी

महर्षि का निर्वाण दिवस और हम

हम आर्यजन प्रतिवर्ष महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस (दीपावली पर्व) मनाते हैं। इस दीपावली से अच्छा खासा इतिहास जुड़ता है। हर मज़हब वाले किसी न किसी रूप में मनाते रहे हैं और मनाएंगे। कई महापुरुषों की जीवनियां जुड़ी हुई हैं—ये ऋतुपर्व भी है चौमासा गया शरद ऋतु ने भी अपना जादू चलाना शुरू कर दिया। अच्छा पहना अच्छा खाना सुहाना लगता है। गर्म वस्तु सुहानी लगती है। घरों की सफाई आदि भी साथ जुड़ी है। दीपावली पर लाखों दीपक जगाते थे आज युग बदला मशीनरी का युग है करोड़ों बिजली के छोटे-छोटे बल्ब लगाते हैं। वह पुरानी परिपाटी उत्तम है। दीया हमारा एक प्रकार से शरीर है तेल रूपी वीर्य है बुद्धि रूपी लाइट है जिससे अपने जीवन में प्रकाश ही प्रकाश पैदा करते हैं वरना हम मुर्दा समान हैं अल्पज्ञ ही अल्पज्ञ हैं बिलकुल अज्ञानी हैं। मानो जड़वादी बन जाते हैं। इसी कारण हम असलियत को नही समझ पाते। प्रभु और उसके संसार की समझ तो एक तरफ रही अपने को भी नहीं समझ पाते। १९वीं शताब्दी में एक महान् तरुण तपस्वी वीतराग महापुरुष का जन्म हुआ जिन्हें हम महर्षि दयानन्द सरस्वती कहते हैं, हुए जिन का बालकाल का नाम मूलशंकर था। शिवरात्री की शुभ घड़ी थी पिता की आज्ञा मान व्रत रखा। शिवलिंग पर चढ़े चढ़ावे को चूहों ने अपना भोग्य समझा वह असली शिव कहां था। मूलशंकर टिकटिकी लगाये रहे। एक प्रकार से मूल ने मूल को खूब समझा ज्ञान की ज्योति जगी। मूल में विचारों का सागर उमड़ पड़ा। वैराग्य हुआ। यह लम्बा इतिहास है। सैकड़ों भक्तों योगियों से ज्ञान पाया पर जीवन की गुत्थी न सुलझी मथुरा में सच्चे गुरु विरजानन्द जी से सही प्रकाश पाया एक प्रज्ञाचक्षु व्याकरण के महान् योगी ने महर्षि दयानन्द को जो बाहर की आंखों से जगत् को देख सकते थे उन्हें हो दण्डी विरजानन्द जी ने महर्षि का सही निर्माण किया। वैदिक प्रणाली के प्रचार के लिए आज्ञा दी इस तपस्वी सन्त दयानन्द ने भारत ही क्या सारे संसार के हर मज़हब के विद्वानों के दिल दिमाग को एक प्रकार से हिल्ला दिया। धार्मिक जागृति के साथ-साथ राजनीति का सही ढांचा भी रखा। अंग्रेजी सत्ता भी हिल गई। सत्यार्थप्रकाश जैसा एक लाइट हाउस तैयार किया। वैदिक प्रचारार्थ १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना की। १०-१२ वर्षों में सर्व मज़हबों को अपनी औकात का पता लगने लगा। विरोधी जल उठे। जोधपुर के राजा की नन्हीजान वेश्या द्वारा जिस में मुस्लिम डाक्टर और अंग्रेजी सत्ता का हाथ था, इनके सेवक जगन्नाथ द्वारा कांच का चूरा बारीक पीस दूध में मिला ऋषि को पिलाया गया। यह जहर शरीर की रग-रग में समा गया। ये १७वां जहर जो ऋषि को दिया कितना त्याग इस महायोगी का है। संसार के निर्माण करने में निर्वाण को प्राप्त हुए। आर्यो आज देश की सामाजिक धार्मिक और राजनीतिक कितनी हालत बिगड़ी हुई है ऋषि के निर्वाण दिवस को मनाते अपको महर्षि की शपथ है उनके निर्वाण से हम अपना निर्माण करें यही दीपावली एवं ऋषि निर्वाण की सच्ची याद है। इसलिये मैंने लिखा महर्षि का निर्वाण दिवस और हमारा निर्माण हो ॥ इति ॥

लेखक—पं० चन्द्रसैन आर्य
वैदिक मिशनरी सोनीपत

ऋषि-निर्वाण उत्सव

(डा० देशराज खीरबॉट, इन्दिरा कालोनी, रोहतक)

दीवाली हर वर्ष आती है और हम सब आर्यजन उस दिन उत्सव मनाते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि ऋषि ने तीन वर्ष पहले अपने पत्र में जो उन्होंने कर्नल अल्काट को लिखा था कि समय थोड़ा है और इस थोड़े समय में अंग्रेजी पढकर विदेशों में प्रचार नहीं किया जा सकता, और अन्त में उन्होंने अन्त समय "प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो" शब्द उच्चारण किया। इससे यह बात सिद्ध होती है कि उन्हें इस आने वाले समय का पूर्व ज्ञान था कि अब और अधिक कार्य नहीं हो सकेगा। परन्तु इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है कि ऋषिवर को विष दिया गया। एक बार नहीं अनेकों बार। आखिर क्यों? ऋषिवर की जीवन लीला समाप्त करने के प्रयत्न किये गये? और वह शक्ति कौन सी थी जिस ने यह प्रयत्न किया? और वह शक्ति आज तक भी कार्य नहीं कर रही? जिस कार्य को ऋषिवर ने आरम्भ किया था वह संगठित रूप से होता रहे, उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की। क्या वह शक्ति आर्यसमाज को समाप्त करने पर नहीं तुली हुई? यह सब विचार करने को हैं, और इन्हें भुलाया नहीं जा सकता।

वह कार्य क्या था, जिस को ऋषिवर ने स्वयं किया और करने के लिए आर्यसमाज की स्थापना की? ऋषिवर लिखते हैं कि—पांच सहस्र वर्षों से पूर्व वेद मत से भिन्न दूसरा कोई भी मत न था, और सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था। परन्तु ऐसे शिरोमणि देश को महाभारत के युद्ध ने ऐसा धक्का दिया कि अब तक भी यह अपनी पूर्व दशा में नहीं आया। क्योंकि जब भाई को भाई मारने लगे तो नाश होने में क्या सन्देह?

महाभारत के युद्ध में बड़े-बड़े विद्वान् राजा, ऋषि, महर्षि लोग मारे गये, तब विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार नष्ट हो चला। अविद्वान् लोग गुरु बन बैठे और धर्म के नाम पर अधर्म को फैलाने लगे। इस प्रकार मूर्ख, लम्पट, विषयी, कपटी, ब्राह्मण बन बैठे और मनमाने ग्रंथ रच कर अपने-अपने मत फैलाने लगे। वैसे तो अनेकों मत फैले परन्तु इनमें मुख्य चार थे—पुराणी, जैनी, किरानी और कुरानी। अब इन चारों की शाखा एक हजार से कम नहीं। इन सब मतवादियों, इनके चेलों और अन्य सब को परस्पर सत्यासत्य का विचार करने में अधिक परिश्रम न हो इस लिए सत्यार्थप्रकाश ग्रंथ रचा है। वह यह भी लिखते हैं कि यदि मेरे इस कर्म से उपकार न माने तो विरोध भी न करे। क्योंकि मेरा तात्पर्य्य किसी की हानि करना वा विरोध करना नहीं किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने कराने का है। इसी प्रकार सब मनुष्यों को न्यायदृष्टि से बर्तना उचित है। मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य के निर्णय करने कराने के लिए है, न कि वादविवाद विरोध करने कराने के लिये। इसी मतमतान्तर के विवाद से जगत् में जो जो अनिष्ट फल हुए, होते हैं और होंगे उनको पक्षपातरहित विद्वज्जन जान सकते हैं।

परन्तु हुआ क्या? यह सब मतवादी अपने पक्ष को शास्त्रार्थ में सिद्ध न कर सके। तो यह सब लोग, पुराणी, जैनी, किरानी और कुरानी ऋषिवर की जान के लेवा बन गये। और इन लोगों ने वेदोक्त नीति, साम, दाम दंड, भेद को ही अपनाया।

साम—समझाने से वह ऋषिवर को अपने साथ न मिला सके और उन की युक्तियों के सामने टिक न सके तो दाम, दंड के द्वारा अपना कार्य सिद्ध करने लगे, अनेकों बार विष दिया गया, और अन्त में रसोइये जगन्नाथ द्वारा विष दिलवाया गया। परन्तु यह कार्य समाप्त न हुआ, और जब तक आर्य जन ऋषिवर के बताये वेद मार्ग पर चलते रहे तो इस शक्ति ने ही किसी के पेट में छुरा मारा, तो किसी के सीने में गोली मारी, किसी के सिर पर लाठिया मारीं, और किसी की आंखों में मिरची डाली।

इस पर ही नहीं यह शक्ति आर्यत्व का मुखोटा लगाकर आर्यसमाज में घुसी और भेद (फूट) डालने में लग गई। जिस से आर्यजनों मे वाद-विवाद खड़ा होगया और आज यह हालत हो गई है कि कोई यह नहीं जानना चाहता कि सत्यार्थप्रकाश में क्या लिखा है। गुरुकुलों मे बच्चों को कोई भेजने का नाम नहीं लेता। आश्रम व्यवस्था तथा वर्ण व्यवस्था सत्यार्थप्रकाश में ही पड़ी है। लोगों को ठगने के लिए और अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए, और सत्ता प्राप्त करने के लिए कोई संन्यासी बन रहा है तो कोई वानप्रस्थी। घर बार छोड़ना नहीं, धन का लालच छोड़ना नहीं, स्वाध्याय करना नहीं। संन्यासी होकर भी यह सोचते हैं कि किसी समाज के प्रधान बन जावें, लोग हाथ जोड़ते रहे अथवा M L A. अथवा M P. बन जावे। कहीं से मन्त्री पद मिल जावे, और इसके लिये पक्षपात, अन्याय, असत्य का सहारा लेते हैं।

यह सब लिखने का मेरा यह भाव है, यदि आप लोग ऋषिवर के अधूरे कार्य को पूरा करना चाहते हैं तो आप लोगों को उस शक्ति को पहचानना होगा और जो आर्यत्व का मुखोटा लगाकर अपने कार्य की सिद्धि में लगे हैं उनको पहचानना होगा। और उनको आर्यसमाज से बाहर निकालना होगा। और यह भी देखना होगा कि सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर हमारा कितना जीवन है। यदि इस विषय में हम नहीं सोच पाते तो मैं समझता हूं कि हम भी उन्हीं हत्यारों की पंक्ति में खड़े हैं जिन्होंने ऋषिवर को विष दिया था।

आओ सब मिलकर संकल्प करे कि वेद मार्ग पर चलते हुए ऋषि कार्य को पूरा करने का प्रयत्न करेंगे।

—※—

हरकिशनसिंह मलिक की निर्मम हत्या

(निज संवाददाता) आर्यजगत् को यह सूचना देते हुए अत्यन्त दुःख हो रहा है कि सुविख्यात आर्यनेता, पूर्वसत्र न्यायाधीश (शेसनजज) एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरग सदस्य चौ० हरकिशनसिंह मलिक, जिनकी आयु ६२ वर्ष थी, को ३ नवम्बर को दिन में उनके निवास स्थान ४ सी० सी० कालोनी दिल्ली में किन्हीं अज्ञात बदमाशों ने उनकी निर्मम हत्या कर दी और हत्यारे भागने में सफल हो गये। वे अविवाहित थे। न्यायाधीश पद से सेवानिवृत्त होकर उन्होंने अपना सारा समय समाज सेवा तथा आर्यसमाज के प्रचार प्रसार को दे रखा था। अपनी लाखों रुपयों की सम्पत्ति को अपनी पूज्या माता-पिता जी की स्मृति में द्राक्षादेवी प्यारेलाल परोपकारी ट्रस्ट बना रखा था। ट्रस्ट किसी कारण टूट जाने पर उस सम्पत्ति की सुरक्षा का अधिकार आर्यप्रतिनिधि हरयाणा को दे रखा था। आप ट्रस्ट की सम्पत्ति की आय से वैदिक साहित्य के लेखन, प्रचार प्रसार तथा अपने ग्राम जसराणा जिला सोनीपत मे धर्मार्थ औषधालय एवं आर्यसमाज के प्रचारादि कार्यों में व्यय करते थे। आप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा सार्वदेशिक सभा के अवैतनिक कानूनी परामर्शदाता थे।

इनके शोक समाचार की सूचना मिलते ही सभा का कार्यालय तुरन्त बन्द कर दिया गया और सभा अधिकारी तथा कार्यालय कर्मचारी उनके अन्तिम संस्कार मे सम्मिलित होने के लिए निगम बोध घाट दिल्ली पहुच गये। इस अवसर पर सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जो सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री राम गोपाल वानप्रस्थी, मन्त्री श्री ओमप्रकाश त्यागी तथा स्थानीय वकील एवं सैकड़ों की संख्या में अन्य श्रद्धालू उपस्थित थे। स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करके उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली मे १० नवम्बर को प्रात १० बजे शोक सभा का आयोजन किया गया है।

प्रो० शेरसिंह द्वारा—

अकालियों को मुंहतोड़ जवाब

हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने मैथ्यू आयोग के समक्ष दावा किया कि चूकि सघीय क्षेत्र चण्डीगढ की राजधानी परियोजना और अबोहर व फाजिल्का हिन्दीभाषी क्षेत्र है इसलिये वैध रूप से वे हरयाणा से सम्बद्ध होने चाहिए। उन्होने कहा कि 1957 के सीमाकन के अनुसार कदूखेडा गाव हिन्दी भाषी था। इसलिये उसे मलोट से हस्तातरित करके अबोहर तहसील के अन्तर्गत लाया गया था। श्री शेरसिह ने कहा कि अकाली अपने आन्दोलनो के सहारे सीमा आयोग के फैसले के विपरीत 327 हिन्दी भाषी गाव लेने मे सफल रहे है।

प्रो० शेरसिह ने कहा कि यदि 1966 मे शाह आयोग की सिफ़ारिश के अनुसार चण्डीगढ हरयाणा को दिया जाता तो वे सभी 327 गाव हरयाणा को मिल जाने थे।

उन्होने कहा कि यदि इन गावो और चण्डीगढ के बदले हरयाणा को पर्याप्त क्षतिपूर्ति की जानी है तो राज्य को दस हजार करोड़ रुपये मूल्य की जमीन, संपत्ति तथा अनुदान दिया जाना चाहिये।

भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री ने पूछा कि यदि आयोग हरयाणा को हिन्दी भाषी क्षेत्रो के अलावा और कुछ नही दे सकता तो फिर हरयाणा को चण्डीगढ के बदले क्या मिलेगा—और तब आयोग की सही भूमिका क्या होगी ? (दैनिक ट्रिब्यून से 5 नवम्बर)

अधिवेशन सम्पन्न

दिनाक ५, ६ अक्तूबर ८५ को गुरुकुलों के आचार्यों का सम्मिलन वेद विद्यालय ११६, गौतमनगर नई दिल्ली-४९ मे सम्पन्न हुआ। इस मीटिंग का आयोजन श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ ने किया था।

इस बैठक मे ५ अक्तूबर के दिन अध्यक्षता उपकुलपति श्री स्वामी धर्मानन्द जी ने की। ६ अक्तूबर को अध्यक्षपद श्री स्वामी ओमानन्द जी कुलपति श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ ने गौरवान्वित किया।

सर्वप्रथम विभिन्न प्रान्तो के गुरुकुलो से आये आचार्यों का परस्पर परिचय कराया गया तदनन्तर निम्नलिखित विषय पारित हुए—

१- असम्बद्ध शिक्षणालयो को श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ c/o झज्जर गुरुकुल (रोहतक) से तो सम्पृक्त किया ही जावे, उन गुरुकुलो को भी पुन मिला लिया जावे जो पूर्वकाल मे सयुक्त थे, किन्तु मध्य मे विच्छिन्न हो गये थे। इन द्विविध विद्यालयो से प्रतिवर्ष सम्बद्धता शुल्क न लेकर इकट्ठा ही पाँच सौ रुपये लिये जावे।

२- हिन्दी भाषा को शास्त्री मे भी अनिवार्य किया जावे।

३- परीक्षा केन्द्रो की स्थापना झज्जर व नरेला से अन्यत्र भी होनी चाहिए।

४- विद्यापीठ से सम्बद्ध गुरुकुलो का निरीक्षण करने के लिए निरीक्षक मण्डल नियुक्त किया जावे।

५- त्रैमासिक, षाण्मासिक परीक्षाएं भी कराई जावें।

६- विशिष्ट विद्वानो को अपने अपने गुरुकुलो मे आमन्त्रित करके उनसे अध्यापनकला और दुरूह विषयो पर विचार किया जावे।

७- वेदाङ्गो मे ज्योतिष का प्रावधान भी रक्खा जावे।

८- विद्यापीठ के पाठ्यक्रम मे निर्धारित पुस्तको की समस्या का समाधान सभी गुरुकुल आर्थिक सहयोग करके करें, इससे पुस्तकें प्रकाशित होती रहेंगी।

९- केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री को बुलाकर उनके सामने सस्कृत विद्यालयो तथा गुरुकुलो की समस्यायें रक्खी जावे।

१०- सभी आचार्य ऐसा प्रयास करें कि कोई भी छात्र विद्यापीठ या विश्वविद्यालय की परीक्षा मे नकल करने की प्रवृत्ति न रखे।

११- विश्वविद्यालय के मध्यमा प्रमाणपत्र में जन्मतिथि अवश्य हो।

१२- देवव्रत व्यायामाचार्य को सभी गुरुकुल शारीरिक प्रशिक्षण एव आसन सीखने के लिए बुलावें और शिविर लगावें।

—वेदानन्द वेदवागीश

आर्यसमाज भोगपुर कनालसी का उत्सव सम्पन्न

27 से 29 अक्तूबर को बड़ी धूम-धाम से हुआ। जिस में प० हरिश्चद्र भजन मण्डली और स्वामी अरुण मुनि महाराज तथा कुवर लछमनसिह बेमोल जी के भजन हुए। हजारो की सख्या मे लोगों ने धर्म लाभ उठाया।

सभा को वेद प्रचार मे ३०१/- रुपये प्राप्त हुए।

हरिश्चन्द्र
सहायक अधिष्ठाता, वेदप्रचार

गुरुकुल शुक्रताल का
२१वां वार्षिक महोत्सव

वैदिक योगाश्रम शुक्रताल का इक्कीसवा वार्षिक महोत्सव आश्रम के विशाल प्रागण मे कार्तिक शुक्ला द्वादशी से पूर्णिमा तक तदनुसार २४ से २७ नवम्बर १९८५ तक भारी घूमधाम के साथ मनाया जायेगा।

महोत्सव मे अनेक विद्वनो-महात्माओ-भजनोपदेको केन्द्रीय एवं प्रान्तीय नेताओ तथा गणमान्य अधिकारियों को आमन्त्रित किया गया है।

स्वामी आनन्द वेश
(बलदेव नैष्ठिक)

श्रम के दीप जलावें

(स्वर्गीय कवि बनवारीलाल "शादाँ" वैद्य)

आओ दिवाली पर्व मनावे,
खुशहाली घर-घर मे लावे।
हम बने परिश्रम करने वाले,
श्रम करने से सब सुख पावे।

नाली सडक सहन आगन घर।
इनको सुथरा साफ बनावे॥
विद्या की उजियाली लाकर,
अविद्या का अन्धकार मिटावें।

नही गन्दगी मिले कही पर,
देख-देख कर मन हर्षावे।
हों लुभावने गाव नगर सब,

मेहनत से हो प्रेम हमारा,
झूठ कपट धोखे को त्यागे।
आपस के झगडो को तजकर,
प्रेम सगठन मे सब लागे।

चिन्ता और निराशाओ को
मन अपने से दूर भगावे।
अनाचार और पाप मिटाकर,
जीवन अपना शुद्ध बनावे।

बाल वृद्ध जवान सभी मिल,
अपना देश महान् बनावे।
जीवनदाता श्रम है हमारा,
शादां इससे ध्यान लगावे।

आर्य सत्याग्रह हैदराबाद के बारे में सूचना

१९३९ ई० में हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लेने वालों के लिए भारत सरकार के गृह मन्त्रालय ने स्वाधीनता सेनानी सम्मान दिए जाने की स्वीकृति दे दी है। पूरी योग्यता के स्पष्टीकरण के लिए यह सभा प्रयत्न कर रही है। इस योग्यता के अन्तर्गत पेन्शन के अतिरिक्त अन्य भी अनेक प्रकार की सुविधाएं केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर घोषित हो चुकी हैं। आवेदन कर्त्ताओं को उसका पूरा विवरण मिल सकेगा। गृह मन्त्रालय के आदेश से यह लगता है कि केन्द्र के अलावा राज्य सरकारें भी ऐसे लोगों को पेंशन तथा सुविधाएँ देगी। उसका पता वहां से करना चाहिए। भारत सरकार के गृह मन्त्रालय के अन्तर्गत स्वाधीनता सेनानी सम्मान प्रभाग के निदेशक को लोकनारायण भवन, सुजानसिंह पार्क के निकट, नई दिल्ली के पते पर आवेदन पत्र भेजना चाहिए।

इस सम्बन्ध में की गई कार्यवाही और उसके परिणामों से इस सभा को कृपया अवगत कराते रहें। जिससे उचित परामर्श दिया जा सके। कारावास और दण्ड के आदेश की प्रतिलिपि और जेल में रहने का प्रमाण-पत्र (उसकी सत्यापित प्रतिलिपि) आवेदन करते समय सरकार को अवश्य भेजी जाये। सम्बन्धित आवेदन फार्म सम्बन्धित कार्यालयों से प्राप्त करके भेजें।

—ब्रह्मदत्त स्नातक
अवै० प्रेस एवं जनसम्पर्क सलाहकार
(साभार सार्वदेशिक साप्ताहिक 3 नवम्बर, 1985)

इन्दिरा नगर नाम पर लोकदल को एतराज

रोहतक, १३ अक्तूबर (जनसत्ता) अगर हरयाणा की राजधानी का नाम इन्दिरा नगर रखा गया तो लोकदल आन्दोलन शुरु करेगा। लोकदल के राज्य सचिव रणसिंह मान ने यह जानकारी दी। उन्होंने आरोप लगाया कि हरयाणा के मुख्यमन्त्री भजनलाल इन्दिरा नगर नाम रखे जाने का सुझाव देकर कोरी खुशामदी होने का सबूत दे रहे हैं।

उनका कहना था कि हरयाणा को राजधानी के लिए तो नहीं, हां अगर वह (मुख्यमंत्री) चाहे तो अपने परिवार व सबंधियों की इमारतों को इंदिरा भवन नाम दे सकते हैं।

श्री मान के मुताबिक हरयाणा को राजधानी के लिए सर छोटू का नाम दिया जा सकता है या उस स्थान को ही हरयाणा की राजधानी का नाम दिया जाए जो स्थान हरयाणा की राजधानी के लिए चुना जाए।

उन्होंने कहा कि विपक्षी दलों को भी राज्य की राजधानी के लिए नाम का सुझाव देने वाली समिति में शामिल किया जाना चाहिए।

(दैनिक जनसत्ता)

ऐसे भी नेता हैं !

नैरोबी, २५ अक्तूबर (प्रेट्र)। तंजानिया के राष्ट्रपति जूलियस न्येरेरे ने, जो अगले सप्ताह पद छोड़ने वाले हैं, लोगों से अपील की है कि उन्हें उपहार न भेजें।

श्री न्येरेरे १९६१ में अपने देश की आजादी के बाद से लगातार सत्तारूढ़ रहे हैं। लेकिन न उनके पास जमीन है, न अपनी कार न कोई कारोबार। वह दुनियां के सबसे कम धनी नेताओं में गिने जायेंगे। उनके पद छोड़ने के अवसर पर देशवासी उन्हें तरह तरह के उपहार भेज रहे हैं। अब तक उन्हें एक ट्रेक्टर, खेत जोतने की एक मशीन काफी पशु, बीज और लगभग १० हजार डालर उपहार में मिल चुके हैं।

श्री न्येरेरे ने अपने बयान में कहा है कि उनके पास यह उपहार रखने की जगह ही नहीं है। अपने गांव में उनका एक छोटा-सा घर है, वहीं से वह अपनी पार्टी का काम चलायेंगे।

राष्ट्रपति न्येरेरे १९६७ से ४००० शिलिंग (२७५० रु०) वेतन लेते रहे हैं, जो उनके मंत्रियों के वेतन से ७०० रु० कम है। वेतन में कमी उन्होंने इस आधार पर खुद की थी कि उन्हें राष्ट्रपति पद का भत्ता भी मिलता है। (दैनिक ट्रीब्यून २६-१०-८५)

संस्कृत में फैसला

इलाहाबाद १७ अक्तूबर, (वार्ता)। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के इतिहास में आज एक नया अध्याय जुड़ गया जब न्यायमूर्ति श्री बनवारी लाल यादव ने पांच फंसले संस्कृत में दिये।

विद्वान् न्यायमूर्ति ने पांचों फैसलों का हिन्दी व अंग्रेजी रूपान्तर भी प्रस्तुत किया है।

भाषण-प्रतियोगिता

अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के उपलक्ष्य में एक जिला स्तरीय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन आर्य माध्यमिक पाठशाला न्यू कालोनी पलवल में किया गया। प्रतियोगिता का संयोजन आर्य वीर दल पलवल उपमण्डल के महासचिव श्री संजीव मंगला (मोनू) ने किया। प्रतियोगिता का वक्ता "१९८५" पुरस्कार श्री वीरपालसिंह को दिया गया। जबकि द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार क्रमशः श्री कृष्णकान्त एवं रमेशचन्द को दिया गया।

टंकारा में शिवरात्रि पर ऋषि मेला

आर्य जनता को यह सूचित करते करते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि आर्यसमाज के प्रसिद्ध वानप्रस्थी महात्मा दयानन्द जी की टंकारा में ऋषिबोधोत्सव पर जो कि ७, ८, ९ मार्च, १९८६ को मनाया जायेगा-जाने की स्वीकृति आ गई है। और वहां पर जो एक सप्ताह पहले से पारायण यज्ञ होता है, उस यज्ञ के ब्रह्मा भी इस बार वे ही होंगे।

मुझे पूरी आशा है कि समस्त आर्य जन अभी से उक्त तिथियों में टंकारा पधारने की तैयारी में जुट गये होंगे। विस्तृत कार्यक्रम प्रकाशित होने पर समस्त आर्यसमाजी पत्रों में एवं आर्यसमाजों को भिजवा दिया जायेगा।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री-महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा

आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर १३ अक्तूबर से २३ अक्तूबर तक आर्यसमाज फिरोजपुर-झिरका में सम्पन्न हुआ। शिविर में आर्य वीरों ने जूडो कराटे, लाठी, आसन व्यायाम आदि का व्यायाम शिक्षक श्री देवेन्द्रकुमार (हिमाचल) श्री अनिल आर्य (नगीना) श्री इन्द्रपालसिंह मलिक (मेरठ) आदि से प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर की अध्यक्षता गुड़गाव मण्डल में मण्डलपति श्री सत्येन्द्रप्रकाश शास्त्री ने की। शिविर में ३५ आर्यवीरों ने भाग लिया जिसमें ब्र० प्रवीण आर्य ने सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया।

भजनलाल आर्य, आर्यसमाज फिरोजपुर

गुरुकुल डिकाडला [करनाल] का स्थापना दिवस

९-१० नवम्बर, १९८५ को गुरुकुल डिकाडला जि० करनाल में स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया।

—ब्रह्मचारी ओमस्वरूप

संस्कार विधि पर शोधकार्य

पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में वैदिक शोध संस्थान के अध्यक्ष, आर्यसमाज इतिहास लेखक श्री डा० भवानीलाल जी के सान्निध्य में श्री धर्मदेव शर्मा शास्त्री ने "गृह्यसूत्रों के संदर्भ में महर्षि दयानन्दीय संस्कार विधि का एक अध्ययन" नामक शोध-प्रबन्ध लिखकर प्रस्तुत किया जिसको विश्वविद्यालय ने स्वीकृत कर ६ सितम्बर १९८५ के दिन पी-एच० डी० की उपाधि प्रदान की है।

इस शोध प्रबन्ध मे महर्षि दयानन्द सरस्वतीकृत 'संस्कार विधि' के वर्णित सोलह सस्कारों मे कितना भाग गृह्य सूत्रों के साथ-साथ अन्य ग्रन्थों से लिया है इसको स्पष्ट करके मन्त्र तथा श्लोकों की संख्या को सीमा में बाँधकर ग्रन्थ लेखन का उद्देश्य, संस्कारों का अर्थ समय, शारीरिक, मानसिक और सामाजिक महत्ता प्रदर्शित करके, प्रायः समस्त विधियों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

शोध-ग्रन्थ अपने में अनेक नूतन विशेषताएं संग्रहीत किए हुए है। प्रकाशित होने पर सम्भवतः जन-मन का सुन्दर ढंग से प्रेरणास्रोत सिद्ध हो सकता है। इस छोटी सी अवस्था वाले हरयाणा के फरीदाबाद मण्डलान्तर्गत राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में संस्कृत अध्यापक पद पर कार्यरत श्री धर्मदेव शर्मा शास्त्री का प्रयास सराहनीय है। प्रभु से प्रार्थना है कि इन्हें लम्बी आयु तथा उत्तम स्वास्थ्य प्रदान कर साहित्य लेखन में रुचि बढ़ाये।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में हरयाणा में आर्यसमाजों के उत्सवों के कार्यक्रम

आर्यसमाज सुण्डाना जि० रोहतक	९, १० नवम्बर
,, फतेहबाद जि० हिसार	८ से १० नवम्बर
,, रेवाड़ी जि० महेन्द्रगढ़	११, १२ नवम्बर
,, मतलोडा जि० करनाल	१३, १४ नवम्बर
,, डबवाली जिला सिरसा	१५, १६, १७ नवम्बर
,, गोशाला कैथल जिला कुरुक्षेत्र	१७, १९ नवम्बर
,, फिरोजपुर झिरका जि० गुड़गांव	२२ से २४ नवम्बर
,, सिवानी मण्डी जि० भिवानी	२० से २५ नवम्बर
,, बड़ा बाजार पानीपत जि० करनाल	२२ से २४ नवम्बर
,, मेला कपालमोचन त० जगाधरी (अम्बाला)	२५ से २७ ,,

जो आर्यसमाज अपने उत्सव अथवा अन्य प्रचार कार्यक्रम नवम्बर मास में रखना चाहते हैं, वे कृपया दूसरे तथा तीसरे सप्ताह मे तिथियां निश्चित करके सभा को सूचित करें ताकि उपदेशक तथा भजन मण्डलियों का कार्यक्रम बनाने मे सभा को सुविधा रहे।—सभामत्री

शोक-समाचार

महाशय सहजराम ढाकला (रोहतक) जिन्होंने आर्यसमाज के अनेक सत्याग्रहों हिन्दी रक्षा आन्दोलन, गौ रक्षा आदि सत्याग्रहों में भाग लिया था। ऐसे कर्मठ आर्यसमाजी का २७ अक्तूबर, १९८५ को स्वर्ग हो गया है अतः समस्त आर्यसमाज व गुरुकुलवासी इस शोक से ग्रस्त हैं और स्वर्गवासी आत्मा के लिये शुभ गति के लिये हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

म० फतहसिंह गुरुकुल झज्जर

पता-परिवर्तन

सभी आर्य बन्धुओं को सूचित किया जाता है कि अब मेरा स्थायी पता निम्नलिखित हो गया है। अतः इसी पते पर पत्र-व्यवहार करें—

ब्रह्मचारी सजयदेव
पो० चिड़िया (भिवानी)
हरयाणा

मेला कपालमोचन जिला अम्बाला में वेद प्रचार शिविर

प्रतिवर्ष को भान्ति इस वर्ष भी हरयाणा के प्रमुख मेले कपाल मोचन तह० जगाधरी जि० अम्बाला में जहां लाखों नरनारी धार्मिक भावना से आते हैं, २४ से २७ नवम्बर तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया जाएगा। शिविर की तैयारी हेतु सभा के प्रचारक आर्यसमाजों तथा दानियों से धन संग्रह कर रहे हैं। अतः आर्यसमाजें उदारतापूर्वक सहयोग प्रदान करें।

—सभा मन्त्री

(पृष्ठ ३ का शेष)

शाहपुरा के कुछ आर्य सज्जन तो यह कहते हैं कि महर्षि दयानन्द को विष देने की योजना में शाहपुरा के राजा भी सम्मिलित थे, क्योंकि वे अंग्रेजों के भक्त थे और अंग्रेजों का भी स्वामी दयानन्द को मरवाने में पूरा हाथ था। इस समय तो ईश्वर ही जानता है कि इसमें कितनी सच्चाई है। शाहपुरा में आज भी पूरी प्रसिद्धी है कि महर्षि दयानन्द को जगन्नाथ रसोइये ने ही विष दिया था। उसमें नन्हीं भक्तन और डा० अलिमर्दान खां का तो पूरा हाथ था ही जोधपुर नरेश और शाहपुरा नरेश इन दोनों का कितना हाथ था वा नहीं यह भविष्य की खोज पर निर्भर है। एक बहिन श्रीमती कमलादेवी जो मन्त्राणी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने चम्बा में महिला सम्मेलन में एक कविता पढ़ी वह भी महर्षि दयानन्द के विषपान को पुष्ट करती है।

"विश्व को अमृत पिला, विष आचमन तुमने किया है।
देशहित तप त्याग संयम का चयन तुमने किया है।।
देह की समिधा बनाकर प्राणघृत की आहुति दे,
धन्य ऋषिवर धन्य जीवन का हवन तुमने किया है।।"

जिला सोनीपत में मूले जाटों द्वारा वैदिक धर्म में प्रवेश

दिनांक १९-१०-८५ को ग्राम बसौदी जिला सोनीपत के अन्तर्गत हरयाणा में यज्ञ हवन सम्पन्न हुआ। जिसमें वहां के मूले जाटों ने स्वेच्छा से वैदिकधर्म ग्रहण किया। ग्राम बसौदी के ७० मूले जाटों ने इस्लाम मत को त्यागकर श्री सेवानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में पुनः वैदिक धर्म स्वीकार लिया। विश्व हिन्दू परिषद् की सेवा भारती तथा अखिल भारतीय शुद्धि सभा एवं हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति द्वारा उक्त कार्य सम्पन्न हुआ तथा उनके रोटी और बेटी का परस्पर सम्बन्ध स्थापित किया गया। साथ ही साथ उन्हें अपने मध्य सामाजिक मर्यादा दिलाई गई। इस सम्बन्ध में एक प्रीतिभोज का भी आयोजन किया गया तथा इसके पश्चात् उन्हें वैदिक साहित्य भी दिया गया। इस सम्बन्ध में सबसे बड़ा सहयोग मास्टर सुखवीरसिंह, राजेश तथा दीपचन्द शर्मा एवं बंसीलाल, रचना होटल पहाड़ गंज दिल्ली का है।

	पुराना नाम	नया नाम	संख्या
१.	अनवर सरपंच	मनोहरलाल	७
२	सन्नी	शकुन्तला	२
३.	रमानी	श्रीमती रामादेवी	७
४.	दिलशेर	दलबीरसिंह	२०
५.	दीना	दूनीराम	४
६.	फुलमां	फूलवती	६
७	चनिया	चमेली	४
८.	नन्हें	नान्हूराम	५
९.	अशर्फी	ऊषा देवी	६
१०.	सुखन	सुखवीर	९
		कुल	७०

भवदीय :

सेवानन्द सरस्वती महामन्त्री

हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति, हरयाणा

पौराणिक मन्तव्य तथा अकर्मण्यता

भारतवर्ष की शिथिलता या पिछड़ेपन का एक बड़ा कारण है पौराणिकों की देवी देवताओं के विषय मे गलत धारणा या मन्तव्य। यह बात सर्वविदित है कि भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त में पौराणिक मत का ही अधिक प्रचार और प्रसार है। अट्ठारह पुराण और उप-पुराणों की कथाएं और पाठ प्रायः सर्वत्र होते रहते हैं। बहुत से पौराणिक पण्डितों की आजीविका इन कथाओं पर निर्भर है। यदि कथाओं द्वारा जीवन और जागृति की भावना भरी जाए, तो देश की काया पलट सकती है। परन्तु देखने में आता है प्रायः ये कथावाचक श्रोताओं को थपकी दे-देकर गहरी मोह निद्रा में सुला देते हैं। परिश्रम और पुरुषार्थ की जीवनभरी ओजस्वी भावना भरने की ओर ध्यान नही देते। देवी देवताओं के भरोसे निष्कर्म होने की प्रेरणा देते हैं। अकर्मण्यता पनपती रहती है। महर्षि दयानन्द ने अपने अनुपम ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में स्थान-स्थान पर बडे खेद के साथ कहा है कि इन पाषाणपूजकों ने जितनी सेवा चढ़ावा आदि द्वारा इन पाषाण प्रतिमाओं की की है यदि उतनी सेवा किसी श्रीकृष्ण या शिवाजी जैसे शूरवीर योद्धा की करते तो वह इन प्रतिमाभंजक या मूर्ति तोड़ने वाले मलेच्छों के मार-मार कर धुर्रे उड़ा देता। जब महमूद गजनवी ने देश पर आक्रमण किया तो देशी राजा और क्षत्रिय मुहतोड़ जवाब देने की तैयारी में थे तो इन मूर्ति-पूजकों ने कहा कि कुछ भी करने की आवश्यकता नही है। हमें स्वप्न में महादेव जी ने दर्शन देकर कहा है कि भैरव, हनुमान, वीरभद्र और दुर्गा आदि इन म्लेच्छों को भगा देंगे। सब शत्रुओं का सहार कर देंगे और हमें सब प्रकार की सुख-सम्पदाओं से भरपूर कर देंगे। महर्षि ने लिखा है समय पर एक भी मूर्ति उड़कर शत्रुओं के शिर पर न लगी। इस प्रकार अकर्मण्यता को बढ़ावा मिलता रहा और देश की अधोगति हुई। अभी इसी मास अक्तूबर की १३ तारीख को महिषासुरमर्दिनी दुर्गा का पर्व मनाया गया। अखिल भारतीय आकाशवाणी पर कई घण्टे तक दुर्गा का गौरव गान चलता रहा परन्तु असुर-संहार का संकल्प जनता से न करवाया। इति।

—समरसिंह वेदालंकार

दीपावली का दिव्य सन्देश—

हिन्दी की हत्या मत करो

लेखक—वेदपथिक धर्मवीर आर्य झण्डाधारी

अध्यक्ष धर्मवीर ग्रन्थ माला प्रकाशन, सराय रोहिल्ला, नई दिल्ली

आज भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा हिन्दी के होते हुए इस स्वतन्त्र भारतवर्ष में हिन्दी की हत्या हमारे ही हिन्दू भाई कर रहे हैं। राजधानी दिल्ली की दुकानों पर तथा अन्य कार्यालयों पर हिन्दी में कोई बोर्ड नहीं है।

दीपावली के पावन पर्व पर प्रतिज्ञा करें

दीपावली के पावन पर्व पर हिन्दी और हिन्द की रक्षा के लिए सभी भारतीय भाई बहिनें हिन्दी में ही अपना नाम पट बहीखाता पत्र व्यवहार हिन्दी में ही करने की प्रतिज्ञा करके हिन्दी को अपनाकर हिन्दी की रक्षा करें। आपस में हिन्दी मे वार्तालाप करने में ही अपना गौरव अनुभव करे।

दीपावली का पावन सन्देश

दीपावली के स्वर्ण सुअवसर पर भारतवर्ष के प्राचीन महर्षियों महात्माओं योगियों और साहित्यकारों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित हिन्दी को अपना कर करें।

ज्ञान गंगा

ज्ञान गंगा का प्रबल प्रवाह प्रवाहित करने के लिए आत्मज्ञान, वेद ज्ञान, रामायण और गीता और महाभारत एवं धर्मग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए हजारों लाखों करोड़ों अरबों वर्षों के शाश्वत शब्दों को, हृदय आकाश में सुनने के लिए साधना समाधि और मोक्ष सुख के लिए सच्ची शान्ति के लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी को विश्व के घर-घर में पहुंचाने के लिए दीपावली के पावन पर्व पर सामूहिक प्रतिज्ञा करें। मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी महाराज, नीतिनिपुण श्री कृष्ण जी महाराज, विश्ववन्दनीय महर्षि दयानन्द जी महाराज, कवि कालिदास, कविसम्राट् रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि महर्षियों महात्माओं युगपुरुषों सन्तों साधकों की स्वर्गत आत्माओं के पावन सन्देश को सुनकर हिन्दी की रक्षा तन मन धन से करें। याद रहे जो हिन्दी की हत्या करते हैं वे हतभाग्य और मृतक समान हैं, देशद्रोही हैं। विश्व के हिन्दू संगठित होकर राष्ट्र की अखण्डता के लिए भारत जननी की पुकार को सुनकर सदियों युगों की निद्रा को त्यागकर जागो। जागो। जागो। वसुधैव कुटुम्बकम् की भव्य भावनाओं से विश्व को, जनमानस भवन को भर दो, वसुधा समस्त को ही निज कुटुम्ब मानकर कर्मयोगी बनो। देशभक्त कहलाने का गौरव प्राप्त करो। हिन्दी साहित्य के सृजन और संरक्षण से विश्व को विनाश से बचा लो। विश्व कल्याण के लिए हिन्दी को अपनाओ यह भारत जननी का मौन सन्देश है।

जिसको न राष्ट्र भाषा हिन्दी के हित का ज्ञान है।
वह नर नही वह निरा पशु है और मृतक समान है।

आर्यवीर दल, जीन्द द्वारा वीर पर्व का भव्य आयोजन

विजयदशमी के पुनीत अवसर पर आर्यवीर दल जीन्द ने वीर पर्व का भव्य आयोजन किया। दल ने स्थानीय तीनों समाजो के संयुक्त सहयोग से आर्यसमाज मंदिर जीन्द शहर में यह पर्व मनाया। सभा की अध्यक्षता देशराज जी पूनिया एडवोकेट, प्रधान आर्यसमाज जीन्द शहर ने की। श्री रामस्वरूप जी आर्य के मधुर भजन हुये तथा श्री विद्यासागर जी सुमन, पुरोहित आर्यसमाज जीन्द शहर ने विजयदशमी और भगवान् राम के जीवन पर प्रकाश डाला तथा ओजस्वी विचार रखे। मंच संचालन श्री सुभाष आर्य मन्त्री आर्य वीर दल, जीन्द और आभार प्रदर्शन श्री कृष्णदेव जी शास्त्री, मन्त्री आर्यसमाज जीन्द शहर ने किया। आयोजन प्रातः 8 से 11 तक चला। सभी आर्य नर नारियों ने बड़े उत्साह और सहयोग का परिचय दिया। आर्य वीरो ने लाठी के खेल का भी प्रदर्शन किया जो सराहनीय था।

प्रो० ओमकुमार आर्य

बौद्धिकाध्यक्ष

आर्य वीरदल, हरयाणा

मुस्लिम राजपूतों की सामूहिक शुद्धि

हाथरस २३ अक्तूबर। हाथरस तहसील से २० किलोमीटर दूर अलहंपुर गांव मे २३ अक्तूबर को भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के नौ मुस्लिम राजपूतो के सामूहिक शुद्धि सस्कार के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने वैदिक धर्म को राष्ट्र धर्म की सज्ञा देते हुए कहा कि क्षेत्र के सभी राजपूत भाई राणा प्रताप और नेपाल नरेश के वशज हैं। अत: देश भर की हिन्दू बिरादरी की ओर से मैं आप लोगो का स्वागत करता हूं। उन्होने कहा—छत्रपति शिवाजी महाराज को यज्ञोपवीत के तीन धागों को प्राप्त करने के लिए काशी के पण्डितों को ७ करोड रुपया दक्षिणा में देना पड़ा था किन्तु महर्षि दयानन्द की कृपा से आज वैदिक धर्म के दरवाजे खोल दिए गए हैं और बिना दक्षिणा के पं० धर्मेन्द्र शास्त्री जी ने आप लोगों को यज्ञोपवीत देकर वैदिक धर्म में दीक्षित किया है।

उन्होंने कहा कि आर्यसमाज विदेशों से आरहे पैट्रो डालर का करारा जवाब देने की क्षमता रखता है। राजपूत भाइयो से उन्होंने कहा कि आप अब प्रतिज्ञा करो कि इस्लामीकरण की विदेशी लहर का जवाब देकर आप भारत माता के राष्ट्र धर्म की रक्षा करेंगे।

हर्ष और उल्लास के वातावरण में आबाल-वृद्ध राजपूत भाइयों को यज्ञोपवीत पहनाए गए। इस अवसर पर दूर-दूर से आर्यसमाज तथा हिन्दू जाति के हितैषी भारी सख्या मे उपस्थित थे। सबने अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज द्वारा चलाए गए शुद्धि आन्दोलन को जारी रखने का व्रत लिया।

सूचना

आकाशवाणी रोहतक केन्द्र से सुखदेव शास्त्री का भाषण दिनांक 12-10-85 दीपावली के दिन सायकाल 7-00 बजे, विषय साम्प्रदायिक सद्भाव की प्रतीक दिवाली।

वाल्मीकि रामायण गोष्ठी सम्पन्न

२२ अक्तूबर १९८५ को सिद्धान्ती भवन, रोहतक में वाल्मीकि रामायण गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें अनेक वक्ताओं ने भाग लिया तथा श्रोतृवृन्द ने दूर-दूर के प्रदेशों एवं विभिन्न विश्वविद्यालयों से आए हुए विद्वानों के व्याख्यान सुने। डा० बलदेवसिह (प्रोफेसर एवं अध्यक्ष सस्कृत विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला) ने इस गोष्ठी की अध्यक्षता की तथा निम्नलिखित वक्ताओं ने अपने शोध निबन्धों को पढा।

श्री दयानन्द जी व्याकरणाचार्य हिसार, श्री लक्ष्मीचन्द जी शास्त्री गढवाल विश्वविद्यालय, डा० महावीर जी दिल्ली विश्वविद्यालय, श्री विष्णुमित्र जी विद्यामार्तण्ड, कन्या गुरुकुल खानपुर, श्री कृष्णलाल जी दिल्ली विश्वविद्यालय, श्री सुखदेव जी शास्त्री, उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा, डा० सुदर्शनदेव जी, नल्वा हिसार।

विद्वानों के लेखों पर अनेक व्यक्तियों ने शङ्काएं उठाईं तथा शङ्का समाधान के समय गोष्ठी अत्यन्त गम्भीर हो जाती थी। समय का अभाव हमेशा खटकता रहा तथा श्रोतृवृन्द की ओर से यही आवाज आती रही, कि गोष्ठी का समय और अधिक बढ़ाया जाए। गोष्ठी में भाग लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति का लेख सारगर्भित था। अध्यक्षीय भाषण में डा० बलदेव-सिह जी ने रामायण मे प्राप्त भाषाशास्त्रीय तत्त्वों का विशद विश्लेषण प्रस्तुत किया।

इस प्रकार गोष्ठी का आयोजन अत्यन्त सफल रहा।

अन्त में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री ने अभ्यागत विद्वानों एवं श्रोतृवृन्द का धन्यवाद किया।

डा० यज्ञवीर दहिया
संयोजक, वाल्मीकि रामायण गोष्ठी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रैस, रोहतक मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

रजिस्ट्रेशन नं० एवं डाक पंजि नं० 83207/73 पंजी० नं० P/RTK 4 फोन ४[redacted]

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्



सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सह-सम्पादक डा० यज्ञवीर

वर्ष १२ अङ्क ४८ २१ नवम्बर १९८५ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस पर—

दया के सागर ऋषि दयानन्द

वेदमित्र हापुड वाले, सदस्य हरयाणा विधानसभा
एवं सं० विकास अधिकारी, खादी ग्रा० कमीशन ग्रम्बाला कैंट

जीवन बीत जायेगा यूं ही चलते चलते ।
इस धरती से तुम को जाना होगा ।
जाना ही है तो कुछ काम करो प्रिय ऐसे ।
जिससे सत्ययुग साकार यहां पर आये ।।

ऋषि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर ऋषि की महत्तायें बरबस नेत्रों के सामने चमक जाती हैं। जहा गुरुवर युगद्रष्टा थे, वेदों के ज्ञाता थे, क्रांतिकारी थे, राजनीतिज्ञ थे, समाज सुधारक थे, योगी थे, वहां वे दया के सागर थे। अन्तर्दर्शी दयानन्द ने अपनी अन्तिम लीला में जगन्नाथ विष देनेवाले को भागने का दान देकर ससार में वह अलौकिक कार्य किया जो बड़े बडे महापुरुषों को भी प्राप्त नही हो सका। (घटना आश्विन कृष्णा चतुर्दशी संवत् १९४०, २९ सितम्बर १९८३)

अगर इस घटना पर गम्भीरतापूर्वक विचार करें तो शरीर कांपने लगता है, एक तरफ वह अत्याचारी जगन्नाथ जिसने पूरी निर्भयता से ऋषिवर को विष पिलाकर मारने का दुस्साहस किया तथा दूसरी ओर वह महान् व्यक्ति मृत्युशैया पर पड़ा है, जो अपने हत्यारे को रुपये देकर जान बचाने के लिये नेपाल चले जाने का आदेश देता है। क्या ससार के लोग इस अद्भुत दया पर विश्वास कर सकते हैं? दयानन्द वास्तव में तुम धन्य हो।

इस घटना की तथ्यता का पता चलता है कि जब जगन्नाथ विष पिलाकर और स्वामी जी से रुपये लेकर शाहपुराधीश के यहा पहुचा तो उन्होंने उसे न्यायालय को सौंप दिया, तब उसने अपना दुष्कम स्वीकार कर लिया। शाहपुराधीश अपना अपयश होने की वजह से जगन्नाथ को किसी से मिलने नहीं दिया करते थे। अपने पास मे भी उसे भगा दिया। जबकि स्वामी जी की सेवा के लिये जगन्नाथ को, ऋषिभक्त शाहपुराधीश ने ही भेजा था। इसके इस दुष्कर्म से महाराजा को महान् दुःख हुआ। जगन्नाथ का सारा ही वश नष्ट हो गया। ब्रह्महत्या का यही परिणाम होता है।

महर्षि के यह वाक्य कि "मैं ससार को कैद कराने नहीं, कद से छुड़ाने आया हूं।" धन्य है उस महापुरुष, योगी की आत्मा को पवित्रता तथा विशालता।

क्षमायाचना सहित आज मै तमाम आर्य भाइयो से निवेदन करना चाहता हू कि हम अपने गुरुवर क्षमाशील, दयानन्द ऋषि की यादगार में समस्त आर्यबन्धु भी एक दूसरे को क्षमा कर दे तथा समाजों प्रेम एव सद्भावना की गंगा को प्रवाहित करें। इसलिये उन सभी आर्यों से जो विशेषकर आर्यसमाज से प्रेम रखते है हमे कहना है कि ऋषि निर्वाण शताब्दी मे हम आर्यसमाज के सिद्धान्तों को फैलाने में तथा ऋषि के बताये मार्ग पर चलने का सकल्प लें तथा इसको पूरा करने के लिये तन, मन, धन से जुट जायें। प्रत्यक ऋषिभक्त आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति से चिन्तित है तथा उसमें गतिशीलता लाने एवं स्थिति सुधारने की तडप भी रखता है। परन्तु पहल कौन करे, सत्य तो यह है कि जीत उसी को होगी जो सामाजिक हित को ध्यान में रख कर तथा अपने आप हटकर इस सगठन को चलाने के लिये दूसरों को मौका दें (विशेषकर नवयुवकों को)। आर्यसमाज के दसवें नियम में स्पष्ट है कि "(सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये, और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें)"

आध्यात्मिक जीवन भी क्या विचित्र जीवन है, जहां मृत्यु का वरण करने वाला अमर बनता है, अपयश को प्रसन्नता से स्वीकार करने वाला यशस्वी बनता है और सामाजिक सगठन को दृष्टि में रखकर विरोधी विचारों वालों से स्वयं क्षमायाचना करनेवाला उदारहृदय विजय को प्राप्त करता है।

फिर एक बार तप, त्याग द्वारा गली-गली ग्राम-ग्राम में प्रचार शुरु कर दे। बड़े नम्रतापूर्वक निवेदन करना चाहता हूँ कि हम इस दिवस पर आत्मचिन्तन कर सभी आर्य आपसी मतभेद भुलाकर एक होगये तो मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि जो आज पाखण्ड तथा तरह-तरह के भगवान् अवतरित हुये हैं स्वयं ही लुप्त हो जायगे। क्योंकि पाखण्डी यह समझ बैठे हैं कि आर्य लोग आपस में लड रहे हैं हमें अब रोकने वाला कौन है। एक बार प्रेम से बोलो वैदिक धर्म की जय।

ऋषि दयानन्द को विष दिया गया था

आजकल ऋषि दयानन्द की मृत्यु की घटना पर एक नया विवाद खड़ा कर दिया गया है कि उनकी मृत्यु विषपान से नहीं, अपितु रोग से हुई थी। यह विवाद एकदम अनावश्यक और काल्पनिक है।

सौ वर्ष तक ऋषि दयानन्द की मृत्यु के कारण विषपान पर कोई विवाद नही खड़ा किया जा सका। ऋषि दयानन्द के जीवन के इतिहास की मूल रूप मे खोज करने वाले पुराने ऐतिहासिक विद्वानो ने एक स्वर से विषपान ही उनकी मृत्यु का कारण लिखा है। मुझे भी एक बार जोधपुर विश्वविद्यालय के कार्य से जाने का सयोग हुवा। जोधपुर विश्वविद्यालय महाराजा जोधपुर के महल मे ही स्थित है। विश्व-विद्यालय के कुछ सेवक जोधपुर राजघराने के पुराने सेवकों के वशज हैं। उनसे मैंने भी इस सम्बन्ध मे छानबीन की थी। सभी ने ऐकमत्य से महर्षि के विषपान की घटना की पुष्टि की।

अब सौ वर्ष के बाद यह विवाद खड़ा करने का सीधा सा कारण यही लगता है कि उस समय घटना के प्रमाण उपस्थित थे, वे लोग भी जीवित थे जो इस घटना के साक्षी थे। अब वे सब नही रहे, अतः इस तथ्य पर विवाद खड़ा करके इस को नकारना सरल हो गया। स्वामी ओमानन्द जी महाराज की यह आशङ्का पुष्ट होती प्रतीत होती है कि यह एक षड्यन्त्र है जिसके पीछे कुछ निहितस्वार्थ लोगों का हाथ है। आर्यसमाज के विद्वानो और नेताओं को ऐसे षड्यन्त्रों से सावधान रहना होगा जो ऋषि दयानन्द के मूलस्वरूप को ही बदलने के लिये चलाये जाते है।

ले० डा० महावीर
भूतपूर्व अध्यक्ष सस्कृत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय
रोहतक।

फिरोजपुर बांगर जि० सोनीपत में भी शराब का ठेका बन्द होगया

आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं तथा ग्रामीण जनता की शानदार विजय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से गत वर्ष से प्रदेश मे शराब बन्दी आन्दोलन आरम्भ कर रखा है। शराब जैसी सामाजिक बुराई को समाप्त करने के लिए शराब के ठेकों पर शान्तिपूर्ण धरणा देकर शराब की बिक्री बन्द करवाई जाती है तथा शराब पीने तथा पिलाने वालों को इस से होने वाली हानियों को प्रचार द्वारा समझाया जाता है। इसी के अन्तगत ग्राम बालावास जि० हिसार, ग्राम नाहरी जि० सोनीपत, ग्राम झाडसा जि० गुड़गावं में शराब के ठेको पर शान्तिपूर्ण धरणे देकर सफल परीक्षण किया गया। हरयाणा दिवस के अवसर पर १ नवम्बर को सभा के नवयुवक उपदेशक ब्रह्मचारी महेन्द्रसिह शास्त्री ने ग्राम फिरोजपुर बागर (ओचन्दी बार्डर) जि० सोनीपत मे शराब के ठेके पर धरणा आरम्भ कर दिया। आर्यसमाज फिरोजपुर बागर के प्रधान महाशय कर्णसिह आर्य अपने सहयोगियों के साथ धरणे को सफल करने में जुट गये। धरणे में बाहर से आनेवाले स्वयंसेवकों के निवास तथा उनके लिए भोजनादि की व्यवस्था अपने घर पर की। उनके इस शुभ कार्य में ग्राम की महिलाओ तथा स्कूल मे पढने वाली छात्राओं ने अनुकरणीय सहयोग दिया। ग्राम की ८, १० महिलाएं तो दिन रात धरणे पर ही जमकर बैठ गई और शराब के विरुद्ध गीत गाकर तथा नारे लगाकर अपनी वीरता का परिचय दिया। हरयाणा ग्राम सुधार समिति के नवयुवक कार्यकर्त्ताओं ने भी धरणे को सफल करने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी। फिरोजपुर बागर के चारो ओर के ग्रामों की पचायत बुलाकर ठेके को बन्द करवाने का प्रस्ताव पास करवाया तथा ६ नवम्बर को धरणा स्थल पर शराबबन्दी सम्मेलन करवाया। इसमें सभा के प्रधान प्रो० शेरसिह जी तथा अनेक सामाजिक कार्यकर्त्ताओ के व्याख्यान हुए। इस सम्मेलन को कार्यवाही से शराब के ठेकेदार के पांव उखड़ गये और उसने खतरे का प्रार्थना पत्र देकर पुलिस बुलवाली और उसके पहरे में शराब की बिक्री करने लगा। धरणे पर बैठे स्वय सेवकों ने अनुचित रूप से शराब की बिक्री का विरोध किया और १५ नवम्बर को प्रात: ५-४० पर एक ग्राहक को ठेके से शराब की बोतलें खरीदते हुए पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया परन्तु धरणे पर बैठी पुलिस ने कोई कार्यवाही न की। आर्यसमाज के प्रधान महाशय कर्णसिह जी इसकी शिकायत करने खरखोदा थाने में गये परन्तु थानाध्यक्ष सरदार रामसिह ने ठेकेदार के विरुद्ध कार्यवाही न करके शिकायत करनेवालों को ही गिरफ्तार करके अज्ञात स्थान पर कहीं बन्द कर दिया और उसी दिन सभा के उपदेशक ब्रह्मचारी महेन्द्रसिह शास्त्री, प० सुखदेव शास्त्री तथा ग्राम सुधार समिति के कार्यकर्त्ता श्री सत्यवीरसिह एवं श्री वीरेन्द्रसिह आदि को भी बिना वारण्ट जारी किये गिरफ्तार करके अज्ञात स्थान पर बन्द कर दिया।

सभा प्रधान जी के आदेशानुसार सभा के कार्यालयाध्यक्ष श्री केदारसिह आर्य इसकी जानकारी प्राप्त करने के लिए धरणास्थल पर गये तो वहाँ थानाध्यक्ष सरदार रामसिह ने उन्हे बताया कि पुलिस ने किसी को भी गिरफ्तार नही किया है। वहा सकडो की सख्या में पुलिस के सिपाही उपस्थित थे और शराब की बिक्री हो रही थी। उसके सामने ही धरणे पर आर्यसमाज के कार्यकर्ता तथा ग्रामीण महिलाएं शराब के विरुद्ध प्रचार कर रहे थे और शराब न खरीदने के लिए ग्राहकों को प्रेरणा कर रहे थे। यहां प्रतिदिन वानप्रस्थी महावीर जी, श्री मामचन्द जी आर्य, श्री मांगेराम आर्य आदि ने प्रातः यज्ञ तथा दिन में सत्संग की कार्यवाही सभामन्त्री जी के आदेशानुसार चालू रखी। महिलाए गीत सुनाती रही। १७ नवम्बर को प्रात: श्री केदारसिह आर्य गिरफ्तार कार्यकर्त्ताओं की जमानतें करवाने के लिए सभा अन्तरंग सदस्य बाबू रघुवीरसिह तथा चौ० राममेहर एडवोकेट के साथ खरखोदा तथा सोनीपत गये। परन्तु वहां किसी भी थाने में हमारे कार्यकर्त्ताओं का पता नही चल सका। सभा के प्रधान प्रो० शेरसिह ने पुलिस को इस अनुचित कार्यवाही की शिकायत प्रधान मन्त्री श्री राजीव गान्धी, हरयाणे के मुख्य मन्त्री श्री भजनलाल आदि को तार भेजकर को तथा दिल्ली में हरयाणा के मुख्यमन्त्री से भेंट करके शराब के ठेके को तुरन्त बन्द करने तथा पुलिस द्वारा अनुचित रूप से गिरफ्तार आर्य कार्यकर्त्ताओं को रिहा करने की मांग की और चेतावनी देते हुए कहा कि यदि ठेका बन्द नहीं किया गया तो आर्यसमाज की ओर से सत्याग्रह आरम्भ कर दिया जायेगा।

१८ नवम्बर को धरणा स्थल पर एक ओर शराब बन्दी सम्मेलन किया गया जिसमे स्वा धर्मानन्द, स्वा. शक्तिवेश तथा सभा के क्रान्तिकारी उपकदेशकी अतरसिह आर्य के जोशिले व्याख्यान तथा श्री खेमसिह की भजन मण्डली के शराब विरोधी भजन हुए। सभा की भजन मण्डली महाशय जयपाल आर्य तथा पं० तेजपाल आर्य ने फिरोजपुर बागर, सैदपुर, रामपुर, कुण्डल, गढी कुण्डल आदि ग्रामों में सत्याग्रही तैयार करने के लिए प्रचार किया अन्ततः आर्यजनता की सगठनशक्ति के सामने हरयाणा सरकार ने विवश होकर १8 नवम्बर को रात्रि को ठेका बन्द करके सील कर दिया और सभी कार्यकर्त्ताओं को रिहा कर दिया। आर्यसमाज की इस शानदार विजय पर हर्षोल्लास की लहर दौड़ गई। (निज संवाददाता द्वारा)

शराब के ठेकों को बन्द कराने में सहयोग की अपील

आपको समाचार पत्रों से ज्ञात ही होगा कि जिला सोनीपत के ग्राम फिरोजपुर बांगर (खरखोदा-दिल्ली मार्ग) ओचन्दी बार्डर पर शराब के ठेके को उठवाने के लिए १ नवम्बर से आर्य कार्यकर्त्ताओं की ओर से धरणा चालू है। निकट के ग्रामों के नर-नारी भी धरणे में सम्मिलित हो रहे हैं। शराब का ठेकेदार भी अपने असामाजिक तत्वों के सहारे धरणे का विरोध कर रहा है। परन्तु आर्य कार्यकर्त्ताओं ने ग्राहकों को समझा-बुझाकर ठेके से शराब की बिक्री बन्द करवा दी है, और धरणे पर वैदिक सत्संग को व्यवस्था सभा की ओर से कर दी गई है। सभा के उपदेशकों तथा भजन मण्डलियों द्वारा शराब के ठेके के निकटवर्ती ग्रामों मे रात्रि को शराब विरोधी प्रचार करवाया जा रहा है। हमारा आयसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने आर्यसमाजों की ओर से धरणों के सफलता पूर्वक संचालन हेतु अधिक से अधिक धनराशि सभा का भेजने को कृपा करें।

आशा है आप इस रचनात्मक कार्य में सभा को तन, मन तथा धन से सहयोग करते रहेंगे।

निवेदक :

ओमानन्द सरस्वती	प्रो० शेरसिह	रामकृष्ण
प्रधान	प्रधान	कोषाध्यक्ष
परोपकारिणी सभा	आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा	

भारत में नकली भगवानों की भरमार

भारत वर्ष में कुछ धर्मधूर्त, रजनीश जैसे भगवान् बनकर भारतीय वैदिक सस्कृति को मिटा रहे हैं।

रजनीश के पास अरबों रुपये की सपदा है, वह अपने आपको भगवान् कहता है।

आख के अन्धे ओर गाठ के पूरे लोग देश और विदेशों में उसके लाखों चेले और चेलिया हैं।

रजनीश व्यभिचार का प्रबल प्रचार करता है। संभोग को ही वह मोक्ष सुख मानता है। ऐसे धूर्त ठग महापापी को और उसके चेलों और चेलियों को समुद्र के खारे पानी में डूब कर मर जाना चाहिए।

विश्व के मानव समाज को ऐसे पाखण्डी धर्मधूर्तों (नकली भगवानों) से बचना चाहिए और इनका बहिष्कार करना चाहिए।

भारत सरकार से और अमेरिका सरकार से अरोनुध है कि रजनीश की सारी संपत्ति जप्त करके उसको कठोर दण्ड दें।

वेदपथिक धर्मवीर आर्य झंडाधारी उपदेशक
अध्यक्ष धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन, सराय रोहिला,
नई दिल्ली-5

झाड़सा के पश्चात् फिरोजपुर बांगर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा में ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थान कुरुक्षेत्र की एक बैठक में निर्णय किया था कि जिन पंचायतों द्वारा शराब के ठेके बन्द करवाने के प्रस्ताव हरयाणा सरकार को भेजने के बावजूद भी उन ग्रामों में शराब के ठेके खोल दिये जायेंगे, वहां ग्रामीण जनता के सहयोग से ठेकों को समाप्त करने के लिए धरणों का आयोजन किया जायेगा। इस प्रस्ताव को सर्वप्रथम कार्य रूप देने का श्रेय सभा के उपदेशक पं० अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी को है। उन्होंने सभा के उपमन्त्री डा० सुदर्शनदेव आचार्य की प्रेरणा तथा निर्देशन में ग्राम बालावास जि० हिसार में शराब के ठेके पर धरणा ... किया और आर्यजगत् के प्रमुख संन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती एवं सभा ... ... आदि नेताओं को शराब के ठेके पर ही शराब बन्दी सम्मेलन में ... आशीर्वाद प्राप्त किया और अपने साथियों के साथ धरणे पर तब तक दिन रात बैठे रहे जब तक शराब का ठेकेदार विवश होकर ठेका बन्द करके भाग नहीं गया। वहां आर्यसमाज के उपदेशकों तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं द्वारा निरन्तर शराब के विरुद्ध प्रचार करने पर शराब की बिक्री बन्द हो गई थी। शराब का ठेका बन्द होने पर अब वहां स्थायी प्रचार केन्द्र आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण हो रहा है।

इस सफलता से प्रोत्साहित होकर आर्यसमाज नाहरी जि० सोनीपत को आर्यजनता के सहयोग से सभा के नवयुवक उपदेशक ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री ने अपना मोर्चा सम्भाल लिया। यहां भी शराब बन्दी सम्मेलनों का आयोजन तथा आर्यसमाज के प्रचारकों द्वारा निरन्तर प्रचार प्रबन्ध किया गया। बालावास की भान्ति धरणे पर पुरुषों के साथ महिलाओं ने भी शराब की बुराई को बन्द कराने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। शराब का सेवन करने वाले पुरुषों की गतिविधियों का प्रभाव सबसे अधिक महिलाओं पर पड़ता है। शराबी पतियों तथा उनके बच्चों द्वारा उत्पात एवं धन के अपव्यय का मुकाबला उन्हीं को ही करना पड़ता है।

ग्राम की पंचायतों ने पंचायत के कानून के अनुसार शराब का ठेका बन्द कराने के लिए समय पर प्रस्ताव पास करके हरयाणा सरकार को भेज रखे थे। परन्तु शराब के ठेकेदारों ने रिश्वतखोर एवं भ्रष्ट अधिकारियों के सहयोग से ठेकों की निलामी करवा ली और शराब के ठेकों पर जहरीली शराब बेचकर पाप का अड्डा बना दिया। वहां दिन रात शराबी बदमाशों का ठिकाना बन गया। राह चलती बहन बेटियों के साथ छेड़ छाड़ करना इनका धन्धा बन गया। ठेके के चारों ओर असामाजिक तत्त्वों की अनुचित गतिविधियों से साधारण जनता परेशान होती है। परन्तु इन शरारती तत्त्वों के विरुद्ध आवाज उठाने का साहस विरले ही वीर मे होता है। नाहरी ग्राम में लम्बे संघर्ष के पश्चात् न्यायालय के आदेश द्वारा शराब का ठेका बन्द हो गया और वहां को साधारण जनता ने राहत की सांस ली।

नाहरी में कार्यकर्त्ताओं की विजय के पश्चात् शराब बन्दी आन्दोलन गतिशील हो गया। इसके पश्चात् सभा के उपदेशक ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री ने ग्राम झाड़सा जि० गुड़गांव में भी शराब के ठेके पर धारणा देने का कार्यक्रम बनाया। ग्राम झाड़सा के सरपंच तथा आर्यसमाज के अन्य कार्यकर्त्ताओं ने धरणे को सफल करने के लिए तन, मन तथा धन से सहयोग दिया। ठेकेदार ने पुलिस का सहारा लेकर आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं में आतक फैलाने का असफल प्रयत्न किया परन्तु आर्यसमाज की संगठन शक्ति के सामने ठेकेदार को झुकना पड़ा और ठेका बन्द हो गया।

इस धरणे में सफलता के पश्चात् सभा के उपदेशक ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री ने सर्वहितकारी के एक लेख द्वारा आर्य कार्यकर्त्ताओं को झाड़सा के बाद कहां मोर्चा लगाना चाहिए का निमन्त्रण दिया था। उनका निमन्त्रण आर्यसमाज फिरोजपुर बांगर जि० सोनीपत के प्रधान महाशय कर्णसिंह आर्य ने स्वीकार किया तथा १ नवम्बर से ओचन्दी बार्डर पर शराब के ठेके पर धरणा आरम्भ कर दिया। ३ नवम्बर को सिद्धान्ती भवन रोहतक में सभा की अन्तरंग बैठक में इस धरणे को सफल करने के लिए सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास किया गया। सभा के उपदेशक ब्र० महेन्द्र शास्त्री, प० सुखदेव शास्त्री सभा की भजन मण्डलियां प० तेजपाल जी, प० जयपाल आर्य के साथ फिरोजपुर बांगर के चारों ओर के ग्रामों में शराब के विरुद्ध प्रचार तथा धरणे में सम्मिलित करने के लिए कार्यकर्त्ताओं को तैयार करने में जुट गये। ग्राम की महिलाएं तथा स्कूलों में पढने वाली छात्राएं भी धरणे में उत्साह पूर्वक बैठने लग गई। प्रचार के प्रभाव से शराब की बिक्री न होने पर शराब के ठेकेदार ने पुलिस का सहारा ले लिया और उनकी उपस्थिति में शराब बेचने का असफल प्रयत्न किया। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने १५ नवम्बर को प्रात: ५-४० पर शराब की दो पेटिया खरीदते हुए एक ग्राहक को पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया, परन्तु पुलिस ने ठेकेदार के विरुद्ध कार्यवाही न करके म० कर्णसिंह श्री सत्यवीरसिंह को थाने में तथा के विरुद्ध प्रचार करने ... पं० सुखदेव शास्त्री को शराब गिरफ्तारियां थाने के रिकार्ड में दर्ज न करके ... दिन पृथक्-पृथक् थानों में बन्द रखा और उन्हें यातनाएं दी। जब पुलिस द्वारा शान्तिप्रिय कार्यकर्त्ताओं पर किये जा रहे दमन चक्र की सूचना आर्यजनता में पहुंची तो धरणे को सफल करने के लिए कार्यकर्ता अपनी पूरी शक्ति के साथ मैदान में आगये। इससे शराब का ठेकेदार घबरा गया और परिणामस्वरूप सरकार के आदेश से ठेका बन्द करना पड़ा। इस धरणे को सफलता के लिए आर्यसमाज के अनेक कार्यकर्त्ताओं ने कष्टों को हंस-हंस कर सहन किया। म० करणसिंह आर्य की एक सुपुत्री की मृत्यु भी उन्हीं दिनों में हो गई जब वे पुलिस की अनुचित हिरासत में बन्द पड़े थे। परन्तु उन्होंने साहस नही छोड़ा। इसी प्रकार आर्यसमाज रामपुर कुण्डल के प्रधान म० राजेराम, आर्यसमाज रोहतक के प्रधान म० इन्द्रसिंह म० दरयावसिंह आर्य, आर्यसमाज खरखोदा के कार्यकर्त्ता श्री ताराचन्द आर्य तथा सभा के उपदेशक पं० अर्जुनदेव आर्य आदि कार्यकर्त्ताओं ने दिन रात परिश्रम करके धरणे को सफल बनाने में अनुकरणीय योगदान दिया। शराब के ठेके पर धरणा देने के चार मोर्चे सफल हो चुके हैं। अतः आर्य जनता को अब पाँचवें मोर्चे को तैयारी करनी चाहिए। देखना है अब फिरोजपुर बांगर के पश्चात् कौन से ग्राम का नाम इस ऐतिहासिक सूची मे लिखा जायेगा? यदि किसी ग्राम में २,३ आर्य परिवार तैयार हो जायें तो वहां सफलता अवश्यमेव मिल सकती है।

प्रो० सत्यवीरसिंह विद्यालंकार
सभा उपमन्त्री

५०० ईसाई परिवार पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित

आर्यसमाज कुमुण्डे (बलागीर) की विशाल यज्ञशाला मे २५ अक्टूबर को ५०० से अधिक ईसाई परिवार पुन: प्राचीन हिन्दू धर्म मे दीक्षित हुए। शुद्धि सस्कार उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के सयुक्त मन्त्री श्री प० विशिकेशन साहित्याचार्य एव श्री अखिलेश आचार्य गुरुकुल आमसेना ने कराया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री शुद्ध होने वाले बन्धुओ को आशीर्वाद देने के लिए विशेष रूप से उपस्थित थे।

सभी दीक्षित होने वाले सज्जनो को नये वस्त्र पहनाकर यज्ञशाला पर बैठाया जाता था। फिर विधिवत् वेदमन्त्रोच्चारण के साथ यज्ञोपवीत और गायत्री मन्त्र दिया जाता था। अछूत और विधर्मी माने जाने वाले हजारो व्यक्तियो के मुख से वेदमन्त्रोच्चारण सुनकर सभी का मन गद्‌गद् हो जाता था। यह सारा कार्यक्रम उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती गुरुकुल आलमेना की प्रेरणा एव अत्यन्त परिश्रम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेक आर्य बन्धुओ के साथ कन्या गुरुकुल आमसेना के मुख्याध्यापक डा० वामदेव जी एव अनेक विद्वान् उपस्थित थे। शुद्धि सस्कार के पीछे एक विशाल भोज का भी आयोजन हुआ।

आर्य प्रचारक पं० मंगलदेव वैद्य का निधन



आर्यसमाज मडलौडा जि० करनाल मे १४-११-८५ को उत्सव के कार्यक्रम के समय श्री दयाचन्द जी आर्य गाव कई द्वारा अश्रुधारा के मध्य सूचना दी गई कि आर्यजगत् के विद्वान् भजनोपदेशक प० मंगलदेव जी वैद्य दिनाक १०-११-८५ को स्वर्ग सिधार गए है। जिस पर सभी उत्सव मे शामिल आर्य धर्म प्रेमी सज्जनो व बहनो की आखो मे अश्रु आगए। उत्सव में सम्मिलित सभी धर्मप्रेमी सज्जनों द्वारा दो मिनट का मौन धारण करके दिवगत आत्मा की शान्ति की प्रार्थना की गई तथा परिवारजनों को सदमा सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

पूर्णचन्द
मन्त्री आर्यसमाज मडलौडा

ग्राम पंचायत द्वारा आर्यसमाज मन्दिर के लिए भूदान

आर्यजगत को जानकर अति हर्ष होगा कि आर्यसमाज कवारी के प्रधान अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी के विशेष यत्न से आर्यसमाज मन्दिर हेतु ग्राम पचायत के 1½ एकड जमीन हाई स्कूल के पास हिसार तोशाम रोड पर दान दी है। उसके लिए पचायत का बहुत-बहुत धन्यवाद। इस जगह स्वर्गीय पण्डित तालेराम आर्य की स्मृति मे एक विशाल भवन बनाया जाएगा। इसके अलावा यज्ञशाला, लाईब्रेरी, अखाड़ा कुश्ती एव छूआछूत, दहेज, शराबखोरी को खत्म करने के लिए विशेष कार्यक्रम चलाया जाएगा। आर्यसमाज मन्दिर मे वेदकथा एव शिविरो के माध्यम से नवयुवको को राष्ट्रभक्ति, ब्रह्मचर्य पालन, आर्षग्रन्थों का स्वाध्याय एव वैदिक धर्म के अनुसार जीवन जीने की कला सिखाई जाएगी।

दानी महानुभावो से हमारा नम्र अनुरोध है कि इस मन्दिर के निर्माण हेतु दिल खोलकर अपनी धर्म की कमाई में से दान दे। 500 रु० देने वाले का नाम पत्थर पर खुदवाया जाएगा और 5000 रु० देनेवाले का पत्थर लगवाया जायेगा।

निवेदक :

अत्तरसिह आर्य क्रान्तिकारी	प० ओमप्रकाश आर्य	वजीरसिह आर्य
प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री

आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल
सिरसा के समाचार

1-सिरसा जोन के जोनल टुर्नामैंट संजय स्टेडियम मे 29-30-31अक्तूबर को खेले गए। इनमे आर्य सी० सै० स्कूल सिरसा के खिलाड़ियो ने निम्न स्थान प्राप्त किए।

1. हाकी—प्रथम 2. कबड्डी—द्वितीय 3. अथलेटिकस—

I 5000 मीटर रेस — प्रथम स्थान प्राप्त किया। [धर्मपाल IX B]

II रेले रेस 17 वर्ष से कम — प्रथम स्थान प्राप्त किया। [ ]

II रेले रेस 19 वर्ष से कम — द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

IV ऊंची कूद — प्रथम स्थान प्राप्त किया। [मुकेशकुमार X C]

V लम्बी कूद — द्वितीय स्थान प्राप्त किया। [रामनिवास VIII A]

VI कुश्ती 30 से 35 Kg. — द्वितीय स्थान [वेदपाल IX A]

,, 35 से 40 Kg — प्रथम स्थान [रामनिवास VIII A]

,, 55 Kg. से ऊपर —द्वितीय स्थान [राजेन्द्रसिंह X A]

प्रिन्सिपल
आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल सिरसा

2—आर्य सी० सै० स्कूल में दिनांक 28-10-85 को हरयाणा राज्य के शिक्षा मन्त्री श्री जगदीश नेहरा जिला स्तर पर आयोजित संगोष्ठी में उपस्थित हुए। इस संगोष्ठी का विषय "शिक्षा की चुनौती" था।

इसमे अध्यक्ष पद विद्यालय के प्रबन्धक मान्यवर डा० आर० एस० सांगवान ने सुशोभित किया। इस संगोष्ठी में अनेक विद्वानों ने अपने विचार रखे। इनमें प्रमुख रूप से श्री जयमलसिंह एडवोकेट, प्रिंसिपल के० के० दीपक व पूरन मुद्गल आदि हैं। डा० सांगवान ने अपने अमूल्य विचार रखते हुए कहा कि नई शिक्षा नीति में पाठ्यक्रम की समानता पर अवश्य बल दिया जाएगा।

अन्त में मान्यवर श्री जगदीश नेहरा ने यह विश्वास दिलवाया कि नई शिक्षा नीति देश के लिए लाभकारी सिद्ध होगी।

अन्त में माननीय प्रिंसिपल श्री द्वारकाप्रसाद जिन्दल ने सबका धन्यवाद किया।

महर्षि पर फिल्म बनी पूरी हो चुकी हो तब ?

आज से लगभग दो या तीन मास पहले मैं वेद प्रचार व्यवस्था को सुदृढ बनाने के लिये आयोजित एक गोष्ठी में गया था। वहां फिल्म बनने के विरोध में प्रस्ताव पास करके उच्च स्तर पर विरोध प्रगट करना था। पक्ष और विपक्ष में सहमति व्यक्त करने को कहा गया तो कुछ दो-चार आर्य सज्जन इस पक्ष में थे कि चित्र बनने के पश्चात्, जो कि आधुनिक माध्यम है, के द्वारा महर्षि और उनके विचार घर-घर एवम् जन मानस तक पहुंच जायेंगे। यद्यपि अधिकतर चित्र न बनने के ही पक्ष में थे। वाद-विवाद में हमारी सभा के एक भूतपूर्व उपदेशक जो चित्र बनने के समर्थक थे, उन्होंने कहा कि:— क्या बात करते हो फिल्म तो लगभग पूरी हो चुकी है। अब काहे का विरोध प्रदर्शन।

१ अब आर्य महानुभावो विचारना यह है कि यद्यपि एक दीर्घ समय से सूचना मिलते ही पर्याप्त संख्या में सैद्धान्तिक आर्य विचारों द्वारा एवम् प्रस्ताव आदि द्वारा चित्र का विरोध कर रहे हैं आज तक।

२ इसी वाद-विवाद में पता चला कि आर्यों के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक सभा के कर्णधार अधिकारी भी भागीदार हैं। ये खेद का विषय है।

३ इसका अर्थ यह हुआ कि आर्यों का विरोध एक प्रलाप एवम् रोदन तुल्य होकर गया है। यदि चित्र बनकर लोगों तक पहुंच गया तब।

४ विचारना यह है कि चित्र बनने के पश्चात्! क्या आर्य जो विरोधी हैं कुछ विचारेंगे

५. क्या चित्र बनानेवाले निर्माता, को दोषी ठहराकर तथा इनके सहायकों के विरुद्ध कोई अनुशासनात्मक कार्यवाही करेंगे। क्योंकि ये निर्माता भी अपने आपको वैदिक धर्मी, आचार्य एवम् वैदिक सिद्धान्तों का सजग प्रहरी कहते हैं।

६ क्या इनसे आर्य स्पष्टीकरण मांगने की आकांक्षा करेंगे। तो कैसे ?

७ क्या हम अपने सिद्धान्तों की रक्षा के लिये न्यायालय तक पहुंचने की चेष्टा करेंगे?

८ चित्र बन गया तो बन गया। परन्तु फिर भी सरकार से अनुरोध करके इस चित्र को आम लोगों तक न पहुंचने के लिये प्रतिबन्ध लगवा सकते हैं।

९. प्रान्तीय सभायें इसमें क्या कर्त्तव्य रखेंगी।

नोट:— क्योंकि आधुनिकता को अपनाने वाले निर्माता जी (आचार्य जी) आम फिल्मों के फारमूले भी चित्र की सफलता के लिये क्रियान्वित करेंगे। असफलता पर आर्थिक दृष्टि से सारा आचार्यत्व धरा रह जायेगा।

सारांश : उपरोक्त पर विचार करके हमें प्रत्येक स्थिति के लिये तैयार रहना चाहिये। धन्यवाद

इस विषयक चर्चा को प्रकाशित करके सभी आर्यों तक विचारार्थ पहुंचा दें।

भवदीय :
आर्य सत्यपाल विमल
आर्यसमाज खारवन (अम्बाला)

उन्हें ऋषि ने बचाये थे

रचयिता—कविराज छाजूराम शर्मा शास्त्री

चंगेज डाकू आये नादिर हलाकू महमूद,
बिन कासिम ने जुल्म अति ढाये थे।
गदा से प्रहार कर मूर्तियों को तोड़ा और,
भारत में कितने ही मन्दिर गिराये थे ॥
वहां मस्जिदें बनाई रोवें मठ के गुसाई,
हाथ जोड़ें यवनों के पोप घबराये थे।
सारी सम्पत्ति लुटाई-थी न धर्म की कमाई,
कुछ पेश न जाई बन्दी सैकड़ों बनाये थे ॥१॥

मठ दम्भ के अखाडे जहाँ दिन के दहाड़े,
शर्मनाक पाप किये और करवाये थे।
जड देव के भरोसे बैठे रहे मठाधीश,
शत्रु के विरुद्ध हाथ-पैर न हिलाये थे ॥
किन्तु लुटेरों ने खूब लूटे और कितने ही,
रक्षकों को मार काट भूमि पं सुलाये थे।
जैसे किये कर्म आई उनको नहीं शर्म
मर्म धर्म का न जाने फल वैसे ही पाये थे ॥२॥

सब फैला इस्लाम हुआ देश यों गुलाम,
सत्य-न्याय दया धर्म यहाँ से भगाये थे।
लोभ और भय दिखा अपनी सभ्यता सिखा,
लाखों हिन्दुओं को फिर इस्लामी बनाये थे ॥
लगे पढ़ने कुरान तज गीता व पुरान,
वेद शास्त्र पढने छोड़े और छुड़ाये थे।
बिगड़ी हिन्दू की शक्ल उसे आई नहीं अक्ल,
किया देश यों तबाह दुःख भारे उठाये थे ॥३॥

सैकड़ों ही वर्ष आर्य सभ्यता खदेड़ी गयी,
धर्म और कर्म सभी धूल में मिलाये थे।
हिन्दुओं के पास कमी दौलत की रही नहीं,
शूरवीरता में श्रेष्ठ विश्व में कहाये थे।
सोचें दयानन्द हिन्दू बने हैं गुलाम क्यों,
संगठित नहीं ये विचार मन में आये थे।
"छाजूराम" जो भी कुछ शेष रहे हिन्दू,
निज देके बलिदान उन्हें ऋषि ने बचाये थे ॥४॥

कन्या गुरुकुल पंचगांव का उत्सव

दिनांक २६ २७ अक्तूबर ८५ को कन्या गुरुकुल पचगांव का वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी चेतनदेव, श्री सुदर्शनदेव आचार्य, श्री सुखदेव जी शास्त्री के उपदेशो का लोगों पर बहुत प्रभाव हुआ। श्री सत्यवीर जी शास्त्री मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा ने लोगों से गुरुकुल को अपनाने की अपील की। श्री सुमेरसिह, श्री ईश्वर सिह तुफान और श्री मुन्शीलाल के भजनो ने समा बाध दिया। सामाजिक बुराइयों जैसे मद्यपान, दहेज लेना आदि के खण्डन और अन्धविश्वास को छोड़ने के भजनों का काफी प्रभाव हुआ। सेठ श्री जगदीश प्रसाद गुरीरा ने ३१००, रु० श्री नोरगराम सिवानी ने २१०० रु०, श्री गोविन्दराम देवराला ने २१०० रु० तथा श्री फूलचन्द भारीवास ने ५०० रु० और गुरुकुल के प्रधान श्री बनवारीलाल ने ५०० रु० का दान दिया। इन्हें धन्यवाद है। सभा को वेदप्रचार के लिए ५५१ रु० का योगदान गुरुकुल की ओर से किया।

हरिसिंह मन्त्री

राष्ट्रीय-एकता दिवस तथा हरयाणा दिवस

दुजाना 5 नवम्बर, राजकीय महाविद्यालय दुजाना (रोहतक) के प्रांगण में 'राष्ट्रीय-एकता दिवस तथा हरयाणा दिवस' दिनांक 5-11-85 को बड़े उत्साह के साथ प्राचार्य श्री आर० पी० कत्याल की अध्यक्षता में मनाया गया। समारोह का प्रारम्भ "सांस्कृतिक गतिविधियों के समन्वय अधिकारी" प्रो० प्रकाशवीर दलाल ने किया। दूसरे वक्ताओं में प्रो० यशपाल चावला, डा० जगदेवसिह तथा प्रो० रामजीवन दलाल सम्मिलित थे जिन्होंने विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। छात्रों मे श्री विजयेन्द्रकुमार, श्री महेशप्रकाश तथा कुमारी दर्शना का सहयोग प्रशसनीय रहा। अन्त में प्राचार्य महोदय ने अपने सारगर्भित तथा प्रेरणादायक अध्यक्षीय भाषण में दिवसद्वय की महत्ता बतलाई। मञ्च का सञ्चालन श्री सत्यवीरसिह ने बडे उत्तम ढग से किया।

राष्ट्रीय सेवा योजना

पिछले सप्ताह इसी कालेज के प्रागण में राष्ट्रीय सेवा योजना का एक 'एक दिवसीय' शिविर कार्यक्रम अधिकारी श्री प्रकाशवीर दलाल की देखरेख मे लगा जिसमे 43 छात्र-छात्राओं ने भाग लेकर 120'×80' खेल के मैदान की सफाई की। इस कार्य मे श्री जगवीरसिह डा० जगदेवसिह, डा० जयचन्द त्यागी व श्री राजपाल शर्मा ने भी श्रम दान का कार्य किया। अन्त मे उस दिन के कार्यवाहक प्राचार्य श्री वी० वी० गुप्ता श्री यशपाल चावला ने स्वयसेवको के द्वारा किए गए का का निरीक्षण किया और उन्हे बधाई दी। बाद मे प्राचार्य महोदय ने भी श्री एस० एल० गक्खड के साथ उक्त शिविर के दौरान दिए गए श्रमदान का अवलोकन किया और कार्य को खूब सराहा।

नीरू रानी
सदस्या सलाहकार समिति (N.S,S)

पोप पाल के भारत आगमन पर छोटा नागपुर में गरीब हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन की घोषणा से जनता में असंतोष

स्वतंत्र भारत में ईसाईकरण के षड्यंत्र को सहन नहीं किया जाएगा। हजारी बाग में सार्वदेशिक सभा के प्रधान की सिंहगर्जन

हजारी बाग (बिहार) १० नवम्बर आज आर्य वीरदल शिविर का दीक्षान्त समारोह दयानन्द उच्चतर विद्यालय हजारी बाग के प्रांगण में बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न किया गया। हजारी बाग तथा रांची के अनेक गणमान्य महानुभाव इस अवसर पर उपस्थित थे। छोटा नागपुर क्षेत्र से उराव मुंडा जाति के आदिवासी इस समारोह में भारी सख्या में शामिल हुए।

आर्य वीरदल शिविर का समापन समारोह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री रामगोपाल शालवाले के सभापतित्व में बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्य वीरों को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान ने कहा कि देश धर्म तथा समाज की रक्षा के लिए आर्य वीरदल की स्थापना की गई है।

श्री शालवाले ने छोटा नागपुर क्षेत्र में विदेशी ईसाई मिशनरियो की भारत विरोधी गतिविधियो की चर्चा करते हुए भारत सरकार से माग की कि विदेशी धन के बल पर गरीब जनता का धर्मपरिवतन बन्द होना चाहिए। सरकार विदेशी पादरियो की गतिविधियो पर अकुश लगाए

श्री शालवाले ने कहा कि इस क्षेत्र में आने के पश्चात् उन्हे यह बताया गया है कि आगामी मास पोप पाल के भारत आगमन पर छोटा नागपुर के विदेशी पादरी १ लाख हिन्दुओ का धर्म परिवर्तन करके उन्हें ईसाई बनाकर पोप साहब का स्वागत करेंगे।

श्री शालवाले ने कहा यदि यह सत्य है तो देश के लिए इस प्रकार का धर्म परिवर्तन बड़ा घातक होगा। इससे जनता में कटुता एव साम्प्रदायिक विद्वेष प्रज्वलित होगा।

श्री शालवाले ने भारत सरकार से अपील करते हुए कहा कि गरीब हिन्दुओं पर इस आतकपूर्ण अन्याय को रोका जाय अन्यथा देश भर में इसकी व्यापक प्रतिक्रिया होगी।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

शराब के विरोध में मौन जलूस

आर्यसमाज नरवाना के तत्त्वावधान मे नरवाना की सभी आर्य शिक्षण सस्थाओ के हजारो बालको ने दिवाली पर होने वाले पाखण्ड शराब तथा जुए के विरोध मे एक विशाल मौन जलूस नरवाना शहर मे निकाला। जलूस मे बडे-बडे शराब विरोधी नारे व चित्र बालको ने उठाये हुए थे। दिवाली से एक दिन पहले नरवाना और नरवाना के निकट देहात के हजारो छात्र एस डी एम कोर्ट मे पहुचे जहा एस डी एम नरवाना को बालको की तरफ से एक ज्ञापन देकर हरयाणा मे पूर्ण नशाबन्दी की माग की गई। जलूस का नेतृत्व मन्त्री श्री रामकुमार जी आर्य, प्रि० जसवन्त जी और धर्मपाल जी तथा धर्मदेव जी विद्यार्थी ने किया। बालको के इस भावनात्मक मौन जलूस की सभी नगरवासियों ने सराहना की।

शोक समाचार

आर्यजगत् के लिये बडे दु ख का विषय है कि दिनाक २८-१०-८५ को श्री ला० जोतिप्रसाद जी आर्य मन्त्री आर्यसमाज बराडा जिला अम्बाला स्वर्ग सिधार गये है। आप की आयु ६५ वर्ष की थी। आप अपने क्षेत्र मे आर्यसमाज के लिये तन-मन-धन से कार्य करते रहे। आर्यसमाज से आप को दिली लगन थी। आज ३-११-८५ को सत्सग आर्यसमाज बराडा मे आप की आत्मा की शान्ति के लिये मौन प्रार्थना की गई। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति दे तथा सम्बन्धियो को इस भारी वियोग के सहने की शक्ति दे।

चिरजीलाल आर्य, आर्यसमाज बराडा, जिला अम्बाला

आकाश-वाणी

आकाशवाणी रोहतक केन्द्र से ३ दिसम्बर को साय-काल ६-२० बजे श्री हर्ष की काव्य प्रतिभा विषय पर प्रो० प्रकाशवीर की एक वार्ता प्रसारित होगी।

शिला न्यास

आर्यसमाज कोसली मे दिनाक १९-११-८५ को "महर्षि दयानन्द सरस्वती भवन' का शिला न्यास प्रधान अशोक आर्य की अध्यक्षता मे महत सूरजपुरी के करकमलो द्वारा सम्पन्न हुआ जिसके उपलक्ष्य मे प० तेजपाल जी के मनोहर भजन व स्वामी व्रातानन्द जी (ब्रह्मचारी चन्द्रूलाल) के मधुर प्रवचन हुये। इस क्षेत्र के सभी लोगो ने प० तेजपाल जी की मण्डली की प्रधान जी को बधाई दी और कहा कि ऐसे कर्मठ व नौजवान उपदेशको की आज देश को आवश्यकता है। इस अवसर पर आर्यसमाज कोसली जि० रोहतक ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को २५१ रु० दान दिये।

कन्याओं को वेदाचार्य बनाने के लिये

कन्या वेदगुरुकुलम् बरेली में कन्याओं को प्रविष्ट कराइए

यहा कन्याओ को आरम्भ से वेद पढाया जावेगा। बनारस सस्कृत यूनिवर्सिटी की प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री, वेदाचार्य को परीक्षाए दिलाई जावेगी। इन परीक्षाओ के द्वारा कन्याए हाई स्कूल, इण्टर, बी० ए०, एम० ए० परीक्षाय भी कर सकती हैं।

आश्रम तथा भोजन व्यवस्था गुरुकुल मे रहेगी। स्वतन्त्र स्थानीय कन्याए भी पढने आ सकती है। कन्या की आयु कम से कम दस बारह वर्ष और पाचवी कक्षा उत्तीर्ण हो। प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री, वेदाचार्य कक्षाओ मे भी प्रवेश हो सकता है यदि किसी ने पूर्व परीक्षाए पास की हुई हो।

निवेदक

वेदाचार्या सावित्री देवी शर्मा एम० ए०

वेदमन्दिर, १०३ बाजार मोतीलाल, बरेली (उ० प्र०)

दिवाली पर खेल उत्सव मनाया गया

महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर आर्यसमाज फतेहपुर द्वारा १०, ११, १२ नवम्बर को खेल उत्सव धूमधाम से मनाया गया जिसका सचालन श्री सुभाष एडवोकेट ने किया। उद्घाटन चौ० प्रभव-सिंह चेयरमैन मार्किट कमेटी ने किया। बलिदान दिवस समारोह १२ नवम्बर को दिवाली के दिन बी० डी० प्रो० श्री जे० डी० ववधा की अध्यक्षता में मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि कर्नल इन्द्रजीत जी ने महर्षि दयानन्द को श्रद्धाजलि देते हुए आर्यसमाज के कार्यों की प्रशसा की और विजयी खिलाड़ियों को पुरस्कार बाटे।

भाषण प्रतियोगिता

दिनाक २५ दिसम्बर, १९८५ को आर्यसमाज फतेहपुर द्वारा भाषण व भजन प्रतियोगिता की जा रही है अतः सभी शिक्षण सस्थाओं व आर्य वीर दल की शाखाओं से निवेदन है कि अपनी सस्था/शाखा से दो वक्ताओं का एक दल अवश्य भेजें। पुरस्कार किसी ख्यातिप्राप्त नेता द्वारा बाटे जायेंगे। भोजन नि शुल्क होगा।

धर्मदेव विद्यार्थी, मन्त्री

आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल सिरसा

३—दिनाक 14 नवम्बर को आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल में 'बाल दिवस' भाषण प्रतियोगिता के रूप मे मनाया गया। इस अवसर पर हरयाणा राज्य के अनेक विद्यालयो से विद्यार्थी वक्ताओं ने भाग लिया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय श्री वेदप्रकाश ने की। चल विजयोपहार सनातन धर्म वरिष्ठ ·· विद्यालय नरवाना ने प्राप्त किया। इस भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अनुराग गुप्ता · ने प्राप्त किया। तृतीय स्थान कर्णवीर सिंह ने प्राप्त किया। तृतीय स्थान सगीता विमलेश ने प्राप्त किया। इन्हें आकर्षण पुरस्कार दिए गए।

इस अवसर पर प्रबन्ध समिति के प्रबन्धक डा० आर० एस० सागवान ने ओजस्वी विचार रखे और स्व० पडित जी के पदचिन्हों पर चलने का आह्वान किया। कार्यक्रम के अन्त में विद्यालय के प्रिंसिपल श्री द्वारकाप्रसाद ने सबका हार्दिक धन्यवाद किया।

इस अवसर पर श्री आहुजा जी ने 2200 रु० विद्यालय को दिए। सभी बच्चो को लड्डू वितरित किए गए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आह ! महर्षि दयानन्द देश का उपकार कर गया
जाते जाते वेदो का प्रचार कर गया
मेरे ऋषि की यही है निशानी
जीवन की घटनाओं से आखों में आता पानी
आर्यसमाज बनाकर सब का उद्धार कर गया
जाते ·· ····· ········ ·· (१)

वेदो का हम नाम तक थे भूले हुए
गहरी नींद में थे हम भूले हुए
सबको जगाकर हमें हुशियार कर गया
जाते · · ··· ····· ····· (२)

संस्कृत मातृभाषा जो थी खोई हुई।
पाखण्डियो की घोर घटाए थीं छाई हुई।
सब को आर्य बना कर वेदों का अधिकार दे गया।
जाते ·· · · · · · · ··· (३)

धर्म को डूबती किश्ती थी बचाई।
बहनों ने भी गुरुकुल की शिक्षा थी पाई।
जगह-जगह "ओ३म्" का प्रचार कर गया।
जाते ···· · · · · (४)

मामचन्द आर्य, कबूतरों (अम्बाला)

महर्षि दयानन्द के बलिदान दिवस पर
आर्यो चिन्तन करो

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी ने आज के दिन अपना बलिदान देते समय कहा था कि आर्यसमाज के दरवाजे खोल दो। हे आर्यो क्या आप समझते हैं कि इसका अर्थ क्या था। महर्षि का यह सन्देश था कि धर्म का ढोंग रचाने वाले सभी धर्मावलम्बियों ने आर्यजाति (हिन्दुओं) के आने के दरवाजे बन्द कर रखे थे, कोई आ नहीं सकता आ सकता था। चाहे इरानी पुरानी कुरानी कुछ भी बने इसलिए आर्यसमाज के दरवाजे सब के लिए खुले रहें। आर्यो जरा सोचो कहीं आपके भी दरवाजे बन्द तो नहीं पड़े। आज हम जहां भी जाते हैं शहर हो चाहे देहात लोग यही कहते हैं कि आर्यों को सांप सूंघ गया। पहले आर्य गांव-गांव घर-घर जाकर प्रचार करते थे अब तो आर्यों के दर्शन भी नहीं होते। जिन गांवों में विधिवत् आर्यसमाज चलता था आज वहां आर्यसमाज का नाम लेने वाला कोई नहीं रहा। क्या कभी सोचा है कि इसका कारण क्या है आइए मेरा कारणों की खोज करें।

१. बहुत से आर्यसमाजों के प्रधान अनार्य बन बैठे हैं जिनमें बहुत से व्यसन हैं मांस, बीड़ी, सिग्रेट, जुआ आदि आदि। जिसके कारण दूसरे तो घृणा करते हैं सच्चे आर्य भी आर्यसमाज से दूर हो जाते हैं।

२. पहले हर आर्यसमाज के पास कई-कई भजन पार्टियां होती थी सभाओं के पास तो बीस-बीस पार्टियां हुआ करती थी। वे कन्धे पर पेटी रख कर गांव घर-घर में जाकर प्रचार करते थे। भजनीक ही आर्यसमाज की जान माने जाते थे।

३. आर्यसमाज का जो भी पर्व या उत्सव होता था खुले मैदान में होता था। जिससे दूसरे लोगों को शामिल होने का अवसर मिलता था। अब आर्यसमाज का कोई प्रोग्राम हो बड़े से बडा विद्वान् आ जाए ये नामधारी आर्य उस विद्वान् की आवाज आर्यसमाज की चार दिवारी से बाहर नहीं निकलने देते क्योंकि उनको एक तो यह भय रहता है कि कहीं लोग तेरे जीवन पर ना बोलने लग जाए। दूसरे आर्यसमाज मन्दिर से बाहर प्रोग्राम करने से कष्ट होता है। स्टेज लगाना, दरिया बिछाना, मन्जूरी लेना आदि-आदि। यह तो बिछी बिछाई दरियों पर बैठने वाले जो रहे।

४. आर्यसमाज की रीढ की हड्डी है आर्य वीरदल जो आर्यों की हर विपत्ति में ढाल बनकर हमेशा आगे आया है और आए भी गा। इस समय बहुत से समाजों के प्रधान किसी राजनैतिक पार्टी के होने के कारण प्रधान बनते ही आर्य वीरदल की सहायता करने की बजाय उसे समाप्त करने पर तुल जाते हैं। यहां तक कि उसकी शाखाएं भी बन्द करा देते हैं। उनके दिमाग में यही रहता है कि आर्य वीरदल ताकतवर होगा तो हमें कौन पूछेगा।

अब पढ़िए इन चारों समास्याओं का समाधान

समस्या नं० १ का समाधानः—

बहुत ही सरल और आसान है कुछ आर्यसमाज ऐसा करते भी हैं इसलिए वे आर्यसमाज स्वच्छ और साफ हैं जो आर्यसमाज अपने ही नियमों का पालन नही करते वे समाज अपने रास्ते से भटक जाते हैं। उन्हीं समाजों की आज देदयनीय दशा है जो आर्यसमाज अपने नियम धारा ४ पर नहीं चलते उनमें ही गलत अधिकारी बनते हैं। धारा ४ क का पालन दृढता से किया जाए तो अनार्यों को क्या हिम्मत जो समाज के अधिकारी बन जाएं। यदि आर्यसमाज को आर्यसमाज रहना है तो एक दिन ऐसा करना ही होगा।

२. भजनी आर्यसमाज की जान माने जाते थे। अब पहले तो कोई भजनी बनता ही नहीं मुट्ठी भर भजनी हैं जिसमें में कुछ प्रभावशाली हैं वे कहां-कहां पहुंच पाएंगे। फिर वे महंगे भी बहुत पडते हैं उन्हें कम से कम तीन हजार रुपये मासिक वेतन, एक हजार रुपये मासिक खर्च चाहिए। फिर इस महंगाई में जिस गृहस्थ में तीन आदमी तीन दिन टिक जाते हैं दुबारा नाम नहीं लेता। इसलिए इस विज्ञान के युग में नया सस्ता उपयोगी साधन अपनाना होगा। मेरा सुझाव है कि भारत के हर जिला में एक-एक गाड़ी प्रचार के लिए छोड़ी जाए। जिसमें लाउडस्पीकर टेपरिकार्ड हो जिसमें हमारे गिने चुने अच्छे-अच्छे भजनी हैं उनके टेप भजन और भाषण, पूरा वैदिक साहित्य विशेषकर के सत्यार्थप्रकाश गाड़ी में भरा हो। यह गाड़ी हर रोज तीन-चार गांवों में प्रचार करे तभी कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम् के नारे की ओर पहुंच सकेंगे।

३. अब आर्यसमाज अपने मठ और मन्दिर सिर्फ तीन कामों के लिए सुरक्षित कर दे। दैनिक सत्संग, साप्ताहिक सत्संग तथा मीटिंग। बाकी अपने सभी पर्व व उत्सव आदि खुले मैदान में मनाए जिससे लोग आर्यसमाज को समझ सके। आर्यसाज को यदि वेद का प्रचार करना है तो चार दिवारी से बाहर निकालना ही होगा।

४ वैसे तो समस्या न० १ का समाधान होते ही इस समस्या का समाधान हो जाता है कुछ विशेष भी करना होगा। हर आर्यसमाज अपने बजट का एक चौथाई आर्य वीर दल पर खर्च करे। आर्यसमाज की अन्तरग सभा मे आर्य वीर दल के कम से कम दो सदस्य अवश्य लिए जाए। सभी आर्य अपने दस से बीस वर्ष तक के बच्चे आय वीर दल, आर्य विरागना दल में अवश्य भेजे पहले ही हमारे नौजवानों को राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ खींच रहा है। नौजवानों के बिना हमारा समाज खोखला रह जाएगा।

आज हम आर्य प्रतिज्ञा लें कि सच्चे आर्य (श्रेष्ठ) बनेंगे।

मीताराम आर्य, हिसार (हरयाणा)

ऋषि लगर आर्य प्रतिनिसभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक हेतु

स्वामी धर्मानन्द जी द्वारा अन्नसंग्रह

१. श्री ओमप्रकाश आर्य, श्री भीमसिंह आर्य, मा० रामप्रकाश आर्य आदि द्वारा ग्राम लाढौत जि० रोहतक ३॥ मन अन्न

२. श्री मनफूलसिह जी आर्य, श्री दीवानसिह जी आर्य, श्री महावीरसिह वानप्रस्थी आदि द्वारा ग्राम बोहर जि० रोहतक ३॥ मन अन्न

३. श्री सूरजाराम मु० श्री सीताराम, श्री सुलतानसिह आर्य, श्री सुलतानसिह सुपुत्र श्री छोटूराम, श्री सुलतानसिंह सुपुत्र श्री भरतसिंह, सूबेदार रिसालसिह, सूबेदार बनवारीसिह, श्री हरलाल, श्री रतीराम इन्सपैक्टर, श्री रतीराम आर्य मन्त्री, श्री सूरजमल प्रधान आर्यसमाज, प रामचन्द्र आदि भालोट जिला रोहतक आदि द्वारा ४ मन अन्न

सभा की ओर से स्वामी धर्मानन्द जी (पूर्व दलीपसिह आर्य) तथा अन्नदाताओं का बहुत-बहुत धन्यवाद।

प्रो० सत्यवीर शास्त्री, सभा मन्त्री

सफल शराब बन्दी आन्दोलन

"सफल शराब बन्दी आन्दोलन" नामक पुस्तक का प्रकाशन शराब बन्दी सीमिति बालावास (हिसार) ने किया है। इसके सम्पादक डा० सुदर्शनदेव जी आचार्य एम० ए०, पी–एच० डी० तथा सग्रहकर्ता एव सह-सम्पादक श्री अत्तरसिंह जी आर्य क्रांतिकारी है।

इस पुस्तक मे आर्यसमाज के उत्साही कार्यकर्त्ता श्री अत्तरसिंह जी द्वारा २५ ग्रामो की पचायत व कई प्रान्तो के आर्य सन्यासी, विद्वान्, उपदेशक, भजनोपदेश तथा अन्य सभी कार्यकर्त्ताओ के सहयोग से ग्राम बालावास जिला हिसार में शराब के ठेके को उठाने हेतु चलाये गये आन्दोलन एव भूख हडताल का विस्तृत वर्णन है।

यह गाथा आर्य सज्जनो के लिये प्रेरणाप्रद है। आर्यो के स्तुत्य प्रयत्न से प्रेरणा लेकर ही नाहरा-नाहरी जिला सोनीपत तथा भाडसा जिला गुड़गांव की जनता ने अपने ग्रामों से शराब के ठेकों को उठवाकर श्लाघनीय कार्य किया है।

सभी आर्यो से नम्र निवेदन है कि वे इस पुस्तक को जन-जन तक पहुचाये जिससे राष्ट्र मे पापाचार, दुराचार, अत्याचार और भ्रष्टाचार की जननी शराब का पीने छूने की तो बात ही क्या दर्शन, न करने का भी व्रत ले।

पुस्तक पढने तथा वाचनालय और पुस्तकालय में रखने योग्य है। मूल्य ५/- रुपये।

वेदव्रत शास्त्री

अखिल भारतीय प्राच्य विद्या महासम्मेलन

अहमदाबाद (गुजरात) विश्वविद्यालय मे अखिल भारतीय प्राच्य विद्या महासम्मेलन ६ से ८ नवम्बर, १९८५ को हुआ जिसमे भारत भरके और कुछ विदेश के भी लगभग एक सहस्र विद्वानो ने भाग लिया।

हमे यह समाचार देते हुवे अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि इस महासम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण में सर्वप्रथम और सर्वप्रमुख रूप से आर्य विद्वान् डा० महावीर के नवीनतम ग्रन्थ 'Samartha theory of panini and Sentence Derivation' को अद्भुत और अभूतपूर्व ग्रन्थ कह कर भूरि-भूरि प्रशसा की गई जिस मे पाणिनि ऋषि के गूढतम और अभी तक अज्ञात सिद्धान्तों को सप्रमाण खोजकर लिखा गया है। अध्यक्षीय भाषण मे कहा गया कि यह ग्रन्थ विश्वभर के विद्वानो को महावैयाकारण पाणिनि का वास्तविक स्वरूप समझने और उनके गहनतम भाषिक सिद्धान्तों की खोज करने में प्रकाश-स्तम्भ का काम करेगा।

अनेक विद्वानो ने डा० महवीर को इस दिशा मे सर्वथा नया और मौलिक नेतृत्व प्रदान करने के लिये हार्दिक बधाइयां दी। डा० महावीर के उक्त ग्रन्थ का उद्घाटन पिछले वर्ष फिलाडेलफिया (अमेरिका) में होने वाले विश्वसंस्कृत महासम्मेलन में हुवा था।

आर्य कवि सम्मेलन

वेद प्रचार समिति ऋषि नगर सोनीपत की ओर से एक शानदार कवि सम्मेलन आचार्य हरिदेव जी की अध्यक्षता मे हुआ। जिस में, बेदार 'सरस', मुनव्वर सरहदी, बर्क गोहानवी, 'नाज' सोनीपती, बेताब अलीपुरी, 'नाज' लायलपुरी, निश्तर, अश्क, गुमराह आदि आर्य कवियों ने भाग लिया। मच संचालन बेदार साहब ने किया। दीवान गन्नौरी तथा नाज सोनीपती का मुलतानी स्लाम बेहद पसन्द किया गया। उत्सव की कार्यवाही दो दिन और चली, डा० बिक्रमसिंह, श्री वेदव्यास, डा० प्रशान्तकुमार के प्रवचनों से समाँ बन्ध गया। अन्तिम दिन ऋषि नगर मे हजारों नर-नारियों ने सह-भोज में शामिल होकर भोजन किया। आयोजको का प्रबन्ध प्रशसनीय था।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।